प्रयोग और प्रयोग

वी. रा. जगन्नाथन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधुनिक हिंदी भाषा के इस संदर्भ ग्रंथ में व्याकरण और शब्द प्रयोग के नियमों का आधिकारिक विवेचन किया गया है और प्रयोग संबंधी विस्तृत विवरण दिये गये हैं. ग्रंथ में शब्द प्रयोग, वाक्य तथा रूप-रचना संबंधी नियम, उच्चारण तथा लेखन की समस्याएं और भाषा के प्रयोग के नये आयाम आदि विविध विषय सम्मिलित हैं. तुरंत संदर्भ की दृष्टि से विवेच्य विषयों को अकारादि क्रम से रखा गया है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रयोग और प्रयोग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

प्रयोग और प्रयोग

वी० रा० जगन्नाथन

दिल्ली
ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
बंबई कलकत्ता मद्रास
1981

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

समर्पण

हिंदी के मेरे आदि गुरु

पूज्य पिता जी

तथा

समस्त गुरु वृंद को

जिन के प्रोत्साहन, परामर्श तथा लेखन से

मैंने कुछ सीखा, कुछ पाया.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

दो शब्द

हिंदी में कई व्याकरण ग्रंथ लिखे गये हैं, जिनमें कामताप्रसाद गुरु, किशोरीदास वाजपेयी, आर्येंद्र शर्मा के ग्रंथ उल्लेखनीय हैं. इनमें कई जगह मौलिक व्याकरण चिंतन भी दिखायी पड़ता है. दर्जनों स्कूली व्याकरण हैं, जो स्कूल-कालिजों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रख कर लिखे गये हैं. दूसरी ओर देश-विदेश के भाषा-वैज्ञानिकों ने हिंदी संरचना के विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है. विवेचन की नवीनता तथा जटिलता के कारण ये कार्य बृहत पाठक वर्ग तक नहीं पहुँच पाते हैं. प्रस्तुत ग्रंथ में इन दोनों क्षेत्रों की विशेषताओं को ले कर, हिंदी भाषा के वर्तमान स्वरूप को ध्यान में रखते हुए हिंदी भाषा के उच्चारण, लिपि, वर्तनी, शब्दार्थ तथा शब्द प्रयोग, संरचना आदि पक्षों पर विवेचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विवरण देने का यत्न किया गया है. यह ग्रंथ एक मायने में आधुनिक हिंदी भाषा का संदर्भ ग्रंथ है.

मैंने हिंदी का अध्ययन 13–14 साल की उम्र में ही शुरू किया था, लेकिन मुझे हिंदी भाषा के स्वरूप का वास्तविक परिचय मिला इलाहाबाद में, जहाँ मैंने एम०ए० की पढ़ाई के दो वर्ष बिताये थे. मैंने उसी समय अनुभव किया था कि अध्येता के रूप में मुझमें बहुत-सी कमियाँ हैं. ज्ञान-पिपासा से प्रेरित हो कर मैंने भाषा के सामान्य परिचय से ले कर प्रगाढ़ता तक की लंबी दूरी तय की है और लगभग 20 वर्ष के अनवरत प्रयास के बाद अब मैं इस स्थिति तक पहुँचा हूँ कि दक्षता में हिंदी भाषियों के समकक्ष होने का दावा कर सकूँ. यह ग्रंथ इन्हीं 20 वर्षों की रोमांचक अनुभव-यात्रा की कहानी है, जिसमें भटकाव तथा राह मिलने के संतोषप्रद क्षण थे, सही रास्ते पर होने की व्याप्त आशंका तथा गंतव्य तक शीघ्र पहुँचने की ललक थी; और इसमें थी खोज की थकान और प्राप्ति के संतोष के क्षण. बीच-बीच में मूर्धन्य विद्वानों के लेखन या भाषणों से नया ज्ञान प्राप्त करने के सुखद अनुभव इस कठिन यात्रा में विश्राम स्थल का कार्य करते रहे हैं. इस लंबी, अन्वेषक यात्रा ने ही मुझे हिंदी भाषा की प्रकृति, स्वरूप तथा आत्मा को पहचानने की दृष्टि दी है और इस ग्रंथ में मैं अपने प्रयासों, तत्संबंधी अनुभवों तथा उद्भूत विचारों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ.

इस ग्रंथ का प्रणयन लगभग 10–12 वर्ष पहले शुरू हुआ, जब मैं समय-समय पर मन में उठने वाली शंकाओं का संकलन करने लगा और उनके समाधान के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदर्भ में विचार करते हुए शोध करता रहा. ग्रंथ का वास्तविक लेखन लगभग छह वर्ष पूर्व बड़े ही सीमित उद्देश्य को ले कर प्रारंभ हुआ कि मैं उन विचारों को यथावत प्रस्तुत करूँ. लेकिन इस बीच हिंदी भाषा और संरचना के क्षेत्र में देश-विदेश में जो कार्य हुए हैं और विपुल सामग्री रची गयी है, उनके संदर्भ में महत्त्व-पूर्ण विषयों पर सोचने तथा अपनी ओर से कुछ कहने की अदम्य लालसा जागरित हुई और ग्रंथ का कलेवर बढ़ता गया. अब भी प्रकाशक आग्रह न करते तो इसमें और कई विषयों को जोड़ने का इरादा था.

जब लेखक पुस्तक की योजना बनाता है, तो आम तौर पर पहला सवाल यही उठता है कि इसका पाठक वर्ग कौन-सा है. इस ग्रंथ में प्रथमत: मैंने अहिंदी भाषी अध्येताओं को ध्यान में रखा है. चूँकि मैं इस भाषा को सीखने में कठिन संघर्ष और परिश्रम से गुज़रा हूँ और सीखने के अनुभवों को भोगे हुए क्षण के रूप में पहचानता हूँ, मैं विश्वास करता हूँ कि यह आत्मकथा अन्य अध्येताओं के लिए दिशादर्शक के रूप में रहेगी. अन्वेषण से ही नये रास्ते मिलते हैं और सीखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं होता. यह ग्रंथ लिखते-लिखते भी मैंने कई नयी बातें सीखी हैं और अहिंदी भाषी इसी तरह खोज के रास्ते पर चलते स्वयं भाषा की आत्मा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.

ऊपर बतायी बात का आशय यह नहीं है कि इस ग्रंथ से हिंदी भाषियों को कोई लाभ नहीं होगा. हिंदी भाषी अपनी भाषा को व्यवहार के स्तर पर ज़रूर जानते हैं, लेकिन विश्लेषण की दृष्टि से वे भी भाषा के प्रयोग के मर्म तक नहीं पहुँच पाते. शायद यही कारण है कि मुझे अपनी बहुत-सी जिज्ञासाओं का समाधान पूर्ववर्ती कार्यों में नहीं मिला. अहिंदी भाषी होने के नाते तथा अन्य कुछ भाषाओं के स्वरूप से परिचित होने के कारण मेरा ध्यान बरबस ऐसे अनबूझ सवालों की की ओर गया और उनसे सहायता लेते हुए मैं विश्लेषण की गहराई तक पहुँच सका हूँ. हिंदी भाषी इस विश्लेषण-प्रक्रिया से निश्चय ही लाभ उठा सकेंगे.

यह बात सही है कि लेखक को कभी आत्म-तोष नहीं मिल सकता. समय के लंबे अंतराल में बिखरी हुई इन प्रविष्टियों में मैं जो कहना चाहता था, वह शायद अब भी संतोषजनक ढंग से उभर नहीं सका है. हिंदी में काल और पक्ष पर मेरी एक नयी दृष्टि बन पायी है, शायद वह ठीक से अभिव्यक्त नहीं हो सकी है. काल हमारे समय-बोध से जुड़ता है और पक्ष की व्यवस्था कथन के समय या वर्तमान में एक व्यापार के रूप में उसके समाप्त होने की स्थिति या व्यापार के रूप में उसकी विद्यमानता को दर्शाती है. इसी तरह रंजक क्रिया, अ-लोप, प्रेरणार्थक क्रिया आदि प्रकरणों में मैंने नयी दृष्टि देने का यत्न किया है, जो हिंदी के क्षेत्र में कार्य कार्य करने वाले भाषावैज्ञानिकों के लिए भी रुचिकर विषय होंगे. प्रकाशक की ओर से विराम चिह्नों पर कुछ लिखने का आग्रह था, लेकिन मुझे लगा कि इस

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषय पर फ़िलहाल 'नेति-नेति' की पद्धति से ही कुछ कहा जा सकता है. इसी कारण यद्यपि इस ग्रंथ में लिपि, वर्तनी आदि की दृष्टि से एकरूपता लाने का यत्न किया गया है, विराम चिह्नों के संदर्भ में इस ग्रंथ में एकरूपता का अभाव ही मेरी अनिश्चितता का द्योतक है. (इसी तरह प्रेस की कठिनाई के कारण पुराना रूप ह, और कहीं क्र ही ग्रंथ में प्रयुक्त हुआ है).

इस तरह के प्रयोग या संदर्भ के ग्रंथ भाषा के प्रयोग के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी होंगे. *भभ्भड़, भब्भड़* इनमें कौन-सा सही है, इस विवाद को भाषा की प्रकृति को जाने बिना कोशकार कैसे निपटा सकता है ? 'हिंदी भाषा' में हाइफ़न होना चाहिए या नहीं, यह किस आधार पर निश्चित किया जा सकता है ? *विद्‌वान, विद्वान, विव्दान* इनमें कौन-सा उपयुक्त है और किस आधार पर इस प्रश्न का समाधान हो, 'मैंने यह फिल्म देखी हुई है' जैसे प्रयोग मानक हिंदी में कहाँ तक स्वीकृत हैं, *गल्ती* में वास्तव में क्या गलती है—इस प्रकार के सैकड़ों अन्य सवाल हैं, जिनपर या तो कहीं चर्चा नहीं की गयी है या वैयाकरणों ने व्यक्तिनिष्ठ रूप से अपने-अपने निर्णय दिये हैं. प्रयोग के ग्रंथों से ही इन प्रश्नों का समाधान हो सकता है और वैयाकरण, कोशकार, भाषावैज्ञानिक, पाठ्यपुस्तक निर्माता आदि इनसे सहायता ले सकते हैं.

मैंने इस ग्रंथ में उपर्युक्त प्रश्नों पर निष्पक्ष तथा वस्तुनिष्ठ रूप से विचार करने का यत्न किया है और हिंदी के कल्पित तथा प्रचलित मानक रूप के आधार पर प्रयोगों की विविधता का विश्लेषण किया है. 'भाषा का मानक रूप' विवादास्पद विषय है, क्योंकि यह एक अमूर्त संकल्पना है. शायद ही कोई हिंदी भाषी हो जो 'मानक' हिंदी का प्रयोग करता हो. व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न मात्राओं में उस मानक रूप से विचलन मिलता है, जिसके पीछे अज्ञान, शैली की सृष्टि आदि वैयक्तिक कारक हैं, क्षेत्रीय विशेषताएँ, भाषा की परिवर्तनशीलता आदि सामाजिक कारक हैं. भाषा की इकाइयों के संदर्भ में हम सब एक दूसरे से भिन्न होते हैं; फिर भी जहाँ तक मानकता का सवाल है, वे इकाइयाँ जो सबसे अधिक लोगों द्‌वारा स्वीकृत हैं, मानक प्रयोग कहलाती हैं और सामाजिक स्वीकृति की अपेक्षा में व्यक्ति विभिन्न इकाइयों के मानक रूपों को ग्रहण करते चलते हैं. मानकीकरण एक ओर प्रयोगबहुलता पर आधारित है; दूसरी ओर भाषा की आंतरिक संरचना से प्राप्त व्यवस्थाएँ सही-गलत का संकेत देती हैं. इसी कारण यद्‌यपि मैंने प्रयोगाधिक्य को सर्वत्र प्रधानता दी है, कुछ संदर्भों में मुझे व्यवस्था की माँग के कारण निर्धारक (prescriptive) दृष्टि अपनानी पड़ी है. मैं हिंदी के जिस मानक रूप को पहचान सका हूँ, उसी के संदर्भ में यह ग्रंथ लिखा गया है और मैं यह जानता हूँ कि (वैयक्तिक अंतरों के होने के कारण) प्रायः हिंदी भाषी इस ग्रंथ के सभी तथ्यों या विश्लेषणों से व्यक्तिगत स्तर पर सहमत नहीं होंगे. अगर यह

CC-0. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माना जा सके कि मैंने वस्तुनिष्ठ ढंग से विश्लेषण किया है, तो मेरा यह श्रम सार्थक होगा.

मेरे सहयोगियों, मित्रों तथा परिचितों और विद्वानों ने समय-समय पर विचार-विमर्श द्वारा मेरा ज्ञान-वर्धन किया है. पूर्ववर्ती लेखकों के कार्यों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है. उन सब का अलग-अलग नाम न लेते हुए सबके प्रति हृदयपूर्वक आभार प्रकट करना चाहूँगा.

वी० रा० जगन्नाथन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकेत

प्रविष्टियाँ मोटे अक्षरों में दी गयी हैं. किसी प्रविष्टि का अन्यत्र उल्लेख भी मोटे अक्षरों में किया गया है. ऐसे उल्लेख में वाक्य रचना के आग्रह से कहीं प्रविष्टि के शब्द बदले हो सकते हैं.

पुस्तक में किन्हीं स्थलों पर कही गयी बात पर बल देने के लिए भी उक्त कथन को मोटे अक्षरों में छापा गया है. जहाँ प्रविष्टि से भ्रम होने की गुंजाइश थी, वहाँ रेखांकन का सहारा लिया गया है.

पाठ के भीतर आने वाले उदाहरण प्राय: तिरछे अक्षरों में हैं.

~	वैकल्पिक प्रयोग
=	समान प्रयोग
≠	असमान प्रयोग
/	किसी रचना के अंतर्गत अतिरिक्त प्रयोग
/ /	उच्चरित रूप
< >	लिखित रूप
√	क्रिया धातु
*	असंभव प्रयोग
!	संभावित प्रयोग
?	संदिग्ध प्रयोग
>	के रूप में निष्पन्न
<	से व्युत्पन्न
→	में परिवर्तित या रूपांतरित
स	स्वर
व	व्यंजन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंकेक्षण यह शब्द 'ऑडिट' के अर्थ में लेखापरीक्षण का पर्याय है. देखें **लेखा.**

अंग्रेज़ी शब्दों का हिंदी में लिंग निर्धारण 1. लिंग हिंदी में व्याकरणिक कोटि है; अंग्रेज़ी में लिंग का स्थान तो है, लेकिन यह व्याकरणिक कोटि नहीं है. अतः हर अंग्रेज़ी शब्द का लिंग नहीं होता, लेकिन इन्हें हिंदी में लेते हैं, तो सब को पुल्लिंग या स्त्रीलिंग की कोटि में रखना पड़ता है.

2. कैलाशचंद्र भाटिया ने (1967) अपनी किताब में अंग्रेज़ी शब्दों के लिंग निर्णय के दो आधार बताये हैं : शब्द के अर्थ के अनुसार तथा शब्द के रूप के अनुसार. रूप की दृष्टि से ईकारांत शब्द (*एजेंसी, कंपनी, कमेटी, चिमनी, टाई, डिग्री, डायरी, टैक्सी* आदि) स्त्रीलिंग हैं, -ई प्रत्ययांत शब्द (*अफ़सरी, इंजीनियरी, डाक्टरी, कलक्टरी, मिनिस्टरी*) स्त्रीलिंग हैं, -इंग प्रत्ययांत शब्द (*राशनिंग, मीटिंग, एक्टिंग, प्रिंटिंग* आदि) (डा. भाटिया इन्हें /-इङ्/, 〈-ing〉 अंत वाले शब्दों का वर्ग मानते हैं और इसमें *स्प्रिंग* को भी शामिल करते हैं तथा *रिंग* को अपवाद मानते हैं. मैं केवल -ing प्रत्यय को स्त्रीलिंग प्रत्यय मानता हूँ) स्त्रीलिंग हैं. आप ने अर्थ की दृष्टि से ऐसे कई शब्दों की सूची दी है, जो हिंदी में उपलब्ध पर्याय के कारण उसी के लिंग के वर्ग में आते हैं, जैसे बुक (किताब), *बोट* (नाव), *आर्ट* (कला), *कमान* (आज्ञा), *कांग्रेस* (सभा), *गवर्नमेंट* (सरकार), *मेडिसिन* (दवा), *चेन* (जंजीर), *लिस्ट* (सूची), *प्लेट* (तश्तरी), *लाइन* (रेखा), *वाच* (घड़ी). अगर कोशिश की जाए, तो यह सूची बहुत लंबी बन सकती है और मैं अपनी ओर से भी कुछ जोड़ रहा हूँ, *माचिस* (दियासलाई), *बोतल* (शीशी), *बेडशीट* (चादर), *मैगज़ीन* (पत्रिका), *लाइट* (बत्ती), *मशीन* (कल), *सील* (मुहर), *स्कीम* (योजना), *स्पीड* (गति, रफ़्तार), *सीट* (जगह, कुर्सी), *बीट* (गश्त), *नोटिस* (सूचना?), *अपील* (प्रार्थना).

3. उपर्युक्त विवेचन के संदर्भ में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं :

रूप तथा अर्थ के आधारों में रूप को पहला स्थान मिलता है. उससे बचे शब्दों के संदर्भ में ही अर्थ वाली बात देखी जाती है. इस संबंध में एक रोचक शब्द है *फ़िनिश*. 'पकड़, समझ' की तरह धातु रूप में संज्ञा होने के कारण यह स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है. यही बात *स्टार्ट*, (कपड़े की) *प्रेस, डिमांड* आदि पर लागू होती है, जहाँ रूप लिंग निर्धारण का प्रमुख कारक है.

दोनों ही प्रसंगों में हिंदी में लिंग विधान का पहला नियम–मनुष्य जाति के संदर्भ में लिंग लैंगिकता (sex) से निश्चित होता है–तोड़ा नहीं जाना चाहिए.

डा. भाटिया *रेल, बस* आदि को गाड़ी होने के नाते स्त्रीलिंग मानते हैं. लेकिन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्कूटर, ट्रक, प्लेन, *शिप*, राकेट आदि भी यान हैं और पुल्लिंग में आते हैं. इन शब्दों में रूप का आधार नहीं है. *साइकिल*, *बस*, *रेल* सभी वाहन/यान हमारे लिए नयी वस्तुएँ हैं, जिनके हिंदी पर्याय नहीं थे. यही बात *रेडियो*, *कुकर*, *टी.वी.* (स्त्रीलिंग), *टेलीविज़न* पर लागू होती है. जहाँ रूपगत आधार नहीं और समान शब्द भी नहीं हैं, वहाँ कठिनाई हो सकती है. फिर ऐसे भी कुछ शब्द मिलते हैं, जिनका पर्याय विपरीत लिंग में होता है. ऐसे शब्दों में लिंग भेद का कारण प्रयोग ही है. कुछ उदाहरण हैं : *जेल* (कारागार, कैदख़ाना), *मोटर* (यंत्र).

दूसरी तरफ़ किसी शब्द के दो पर्याय या निकट अर्थ के शब्द विपरीत लिंग में मिलते हैं. *लेटर* (पत्र–पु., चिट्ठी–स्त्री.), *शर्ट* (कमीज़–स्त्री., कुर्ता–पु.), *बेड* (पलंग–पु., खाट–स्त्री.), *लाइसेंस* (फ़रमान–पु., अनुमति–स्त्री.) ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण हैं. इन्हीं स्थानों में **उभयलिंगी शब्द** बनने की संभावना रहती है.

4. रूप तथा अर्थ के बीच में एक क्षेत्र है प्रत्ययों का. इस क्षेत्र का भी अध्ययन और इसमें मानकीकरण के उपाय होने चाहिए. अंग्रेज़ी के कई प्रत्यय लिंग निर्धारण में सहायता दे सकते हैं. ऊपर हमने -ई, -इंग की बात की. और कुछ प्रत्यय देखिए :

-शिप (स्त्री.)–*स्कालरशिप*, *ओनरशिप*, *सेंसरशिप*

-ज़न (पु.)–*डिवीज़न*, *टेलीविज़न*, *प्रोवीज़न*

अंग्रेज़ी से आगत स्वन हिंदी में अंग्रेज़ी से आगत तीन स्वर हैं–ऍ, ऐ, ऑ. इन तीनों के हिंदी की स्वन व्यवस्था में स्थान तथा प्रभाव के बारे में देखेंगे.

1. ऍ–यह स्वन हिंदी के उच्चारण में भी दिखायी पड़ता है, लेकिन हिंदी में इसके लिए कोई नया, स्वीकृत वर्ण नहीं है. इसे हम निम्नलिखित अंग्रेज़ी के या अंग्रेज़ी से हिंदी में गृहीत शब्दों के उच्चारण में देखते हैं–Elvis, Elsa, bell, mess, men, women, lens, sense, settle, best, gentle, pen, metric, tent, leather, pressure, get. बहुधा यह वर्ण हिंदी में स्वतंत्र रूप से /ए/ तथा व्यंजनों के साथ मात्रा 〈े〉 से दिखाया जाता है. *एल्विस*, *मेस*, *लेन्स*, *मेट्रिक*, *टेंट*, *प्रेशर* आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं. लेकिन इस पद्धति में परेशानी हो सकती है, क्योंकि 〈ए〉 तथा 〈े〉 हिंदी में दीर्घ स्वर के द्योतक हैं और हम इस ह्रस्व उच्चारण को भी इन्हीं चिह्नों से दिखाते हैं, तो दोनों में उच्चारण का अंतर कर पाना कठिन हो जाता है. ऐसे व्यतिरेक के कुछ उदाहरण देखिए :

बेल (bell)	*बेल*, *बेलन*
गेट (get)	*गेट* (gate)
मेन (men)	*मेन* (main)
सेंट (scent)	*सेंट* (saint)
सेल (cell)	*सेल* (sale)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शायद इस अंतर के कारण ही कुछ लोग ह्रस्व स्वर को ⟨ऐ⟩ तथा ⟨ै⟩ के चिह्नों से लिखते हैं. बैल, सैंट, टैंट, मैट्रिक आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं. इससे भी समस्या सुलझती नहीं, इसे आगे स्पष्ट करेंगे.

2. ऐ–अंग्रेज़ी के निम्नलिखित शब्दों के उच्चारण में, जो हिंदी में प्रयुक्त होते हैं या गृहीत हुए हैं, इस स्वर का उच्चारण सुन सकते हैं–man, bank, camp, sandwich, bag, matter, battery, lamp, packet, Samuel. इस स्वन को हिंदी में ⟨ै⟩ की मात्रा से दिखाया जाता है, जैसे बैंक, कैंप, बैग, मैटर, सैमुअल, पैंट, टैंक आदि. (अ) शब्द के शुरू में यह स्वर आए, तो उसे ⟨ए⟩ (ऐ नहीं) से दिखाया जाता है. एड्वोकेट (advocate), एक्टर (actor), एशट्रे (ash-tray), एन्ड्रूज़ (Andrews), एम्स्टरडैम (Amsterdam), एन्थनी (Anthony). इस तरह कोई भी अंग्रेज़ी शब्द प्रथमाक्षर में ⟨ऐ⟩ से नहीं लिखा जाता. (आ) ऊपर 1 में हमने देखा कि ह्रस्व /ऍ/ के लिए कहीं ⟨ॅ⟩ का, कहीं ⟨ै⟩ का चिह्न लिखा जाता है. एक अन्य अंग्रेज़ी स्वर भी ⟨ै⟩ से लिखा जाता है. इस तरह हिंदी के लेखन में एक समस्या-सी पैदा हो गयी है. इस का कारण यह है कि हमारे पास दो वर्ण हैं और अंग्रेज़ी के तीन स्वन.

स्वन हिंदी में वर्ण
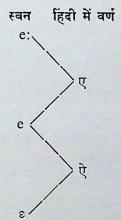
इस कारण जब तक तीनों व्यंजनों के लिए तीन अलग चिह्न न बना लें, तब तक यह कठिनाई बनी ही रहेगी. कुछ लोग कह सकते हैं कि हिंदी में ह्रस्व 'ऍ' का उच्चारण है, जो निम्नलिखित शब्दों में सुनायी पड़ता है–मेहर, मेहतर, पहनना, सेहरा आदि. यह उच्चारण एक निश्चित स्वनगत परिवेश तक सीमित है ('अ' या 'ए' के बाद /ह/) तथा इस उच्चारण के लिए अलग से लिपि चिह्न नहीं है.

वर्तमान में इस समस्या के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव हैं–(अ) ह्रस्व /ऍ/ को सिर्फ़ एक ही लिपि चिह्न से दिखाया जाए, चाहे वह ⟨ॅ⟩ हो या ⟨ै⟩. मैं अपनी तरफ़ से कहना चाहूँगा कि ⟨ॅ⟩ का प्रयोग ग्रहणीय है, क्योंकि ⟨ॅ⟩ से ह्रस्व

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्चारण की व्यवस्था पहले से भी है और ⟨ॅ⟩ इस उच्चारण से भिन्न है. (आ) अगर ह्रस्व /ऍ/ मात्रा ⟨ॅ⟩ से ही लिखा जाए और इसके लिए नया चिह्न न बनाया जाए, तो काम चल सकता है. कई भाषाएँ बिना लिपि पद्धति में परिवर्तन किये भी कई सौ साल तक उच्चारण की विशेषता को अपनाये रखती हैं. भाषाविज्ञान की चर्चा के लिए ⟨ऍ⟩ तथा ⟨ऑ⟩ पर्याप्त हैं.

3. अंग्रेज़ी से आगत स्वर ऑ निम्नलिखित शब्दों में सुनायी पड़ता है–*डाक्टर*, *ला* (law), *कामन* (common), *कालिज/कालेज*, *माडल* आदि. इस स्वर तथा इसके लिपि चिह्न के बारे में निम्नलिखित बातें द्रष्टव्य हैं–(अ) थोड़े-से अंग्रेज़ी के शुद्ध उच्चारण में दीक्षित व्यक्ति ही इसका उच्चारण करते हैं. दिल्ली के अधिकतर व्यक्तियों के मुख से /माडल/ ही सुनने को मिलता है, /मॉडल/ नहीं. (आ) लेखन में या मुद्रण में यह चिह्न बहुत कम देखने को मिलता है. (इ) हिंदी टंकण में या टेलीप्रिंटर में यह चिह्न है भी नहीं. (ई) *फ़ार्म* (form), *राबर्ट* जैसे कुछ प्रचलित शब्दों में मैंने यह चिह्न कहीं देखा ही नहीं. हिंदी में बहुत कम शब्दों में यह चिह्न लिखा जाता है, जबकि अंग्रेज़ी में हज़ारों शब्दों में इसका उच्चारण है–जैसे water, Mall, ball, call, pot, morning, dawn, lawn, wrong, long, law, raw, saw.

उपर्युक्त बातों के संदर्भ में लगता है कि चिह्न ⟨ॅ⟩ को जल्दी छोड़ देना उचित होगा. वैसे भी कुछ साल बाद यह चिह्न अपने आप हटने वाला है, इसके लक्षण दिखायी पड़ रहे हैं.

4. हिंदी में अंग्रेज़ी से गृहीत दो व्यंजन हैं–फ़ तथा ज़. इन दोनों के चिह्न उर्दू से गृहीत समान उच्चारण के व्यंजनों के लिए भी प्रयुक्त होते हैं. इसी तरह अन्य विदेशी भाषाओं के चिह्नों के लिए भी इनका प्रयोग होता है. विस्तृत चर्चा के लिए देखिए **विदेशी व्यंजन**.

5. अंग्रेज़ी से आये हुए स्वनों में /थ/ और /द्/ (देखें **अंग्रेज़ी स्वनों का नागरी में लेखन**) के संदर्भ में उल्लेखनीय बात यह है कि यहाँ नये लिपि चिह्नों की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि विदेशी स्वन हिंदी में बदल कर लिये गये हैं और इन्हें वर्तमान वर्णों से दिखाया जाता है.

अंग्रेज़ी स्वनों का नागरी में लेखन इस प्रकरण में अंग्रेज़ी शब्दों को नागरी में लिखने के सामान्य, प्रचलित प्रकारों की चर्चा की जा रही है. लेकिन यहाँ इसकी चर्चा नहीं की गयी है कि अंग्रेज़ी के किसी एक स्वन को हिंदी लेखन में कितने प्रकार से दिखाया जा सकता है. ऐसी चर्चा प्रस्तुत ग्रंथ की सीमा के बाहर की बात है. यहाँ क्रम से स्वरों और व्यंजनों का विवरण है. अंतरराष्ट्रीय लिपि चिह्न उच्चारण की ओर इंगित करते हैं, आगे नागरी का लिखित रूप तथा शब्दों के लिखित रूप (उच्चारण नहीं) दिये गये हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूलस्वर :

I इ–*इटालियन, इंडिया, पिन, ब्रिटानिया, मिल, ब्रिज.*

i ई–*टी, टीम, कमेटी, पालिसी, जीन्स, फ़ी.*

1. शब्दांत में कहीं 'इ' का उच्चारण नहीं होता, अतः अंग्रेज़ी शब्दों के अंत में 'इ' नहीं लिखा जाता.

2. इस नियम को हम अक्षरांत स्वरों पर भी लागू कर सकते हैं. अक्षरांत 'इ' को भी इस कारण 'ई' ही लिखा जाता है जबकि मूल शब्द में ह्रस्व स्वर है. *टेलीफ़ोन, टेलीविज़न, एडीटर, इंजीनियर, पेटीकोट* आदि शब्द देखे जा सकते हैं. इस नियम से *सिनीमा* बनता, लेकिन शायद मूल वर्तनी के कारण या इस लिखित शब्द के अटपटेपन के कारण यह *सिनेमा* लिखा जाता है. बोलचाल का *सनीमा* द्रष्टव्य है. कमेटी दूसरा उदाहरण है.

e ए–यह स्वर अंग्रेज़ी में ह्रस्व है. इसे हिंदी में 'ए' से लिखा जाता है और कहीं-कहीं 'ऐ' से लिखाने की प्रवृत्ति भी दिखायी पड़ती है: *पेन, सेंटर, मेस, टेंपरेरी, बेल, डेस्क, रेजीमेंट, बेंच.*

æ ए (शब्दारंभ में)–*एक्ट, एड्वोकेट, एम्बुलेंस, एशट्रे, एन्थनी*

ऐ (अन्यत्र)–*पैड, मैन, लैंप, कैंटूनमेंट, बैंड, बैटरी, गैस*

a आ–*ड्रामा, पार्ट, बार* (bar), *कार, मार्च, पार्क.* अंग्रेज़ी शब्दों में ऐसे शब्दों में 'र' का उच्चारण नहीं होता, लेकिन मूल वर्तनी के कारण हिंदी में 'र' लिखा और बोला जाता है.

ɔ ऑ–*कॉलिज, लॉ, कॉल, बॉल, हॉल.* (अ) ɔ, æ, e इन तीनों स्वरों के संदर्भ में देखिए **अंग्रेज़ी से आगत स्वन**. वहाँ इन स्वनों के हिंदी में स्थान, प्रकार्य तथा समस्याओं के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी है. (आ) अंग्रेज़ी के æ के कुछ शब्द (गारंटी, स्टांप∼स्टैंप, राशन) तथा ɔ के कई शब्द (कापी, लाटरी, पालिश, आपरेशन, आर्डर, कांग्रेस) वर्तमान में 'आ' से ही लिखे जाते हैं. æ तथा ɔ के शब्दों में स्वन परिवर्तन के कारण हिंदी 'अ' का उच्चारण कई शब्दों में देखा जा सकता है (टंकी, मनेजर, कप्तान, बक्सा, बम, अफ़सर).

ə, ə: इन दोनों के लिए 'अ' का चिह्न है. इन्हें क्रमशः देखें :

ə *वाटर, बटर, अरेंज, इन्कम, अकाउंट*

ə: *अर्थ* (earth), *बर्ड* (bird), *बर्थ* (birth), *नर्स* (nurse), *टर्न* (turn)

ʌ अ–*ब्रश, रबड़, कट* (cut), *मग, ट्रंक.* (अ) ऊपर के तीनों स्वन हिंदी में एक ही लिपि चिह्न ⟨अ⟩ से दिखाये जाते हैं. (आ) शब्द मध्य में इन तीनों में से कोई स्वन आए और उसे हिंदी 'अ' से लिखा जाए तो हिंदी में **अ-लोप** के कारण उच्चारण को पहचान पाना मुश्किल हो सकता है. अतः ऐसे स्थानों में हिंदी में इन स्वनों को 'ए' से लिखा जाता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

pharmacy (फ़ार्मसी)	फ़ार्मेसी
professor (प्रोफ़सर)	प्रोफ़ेसर
library (लाइब्ररी)	लाइब्रेरी

जिन शब्दों में इन्हें 'ओॅ' से लिखा जाता है, वहाँ मूल शब्द से वर्तनी की समानता की भी बात देखी जा सकती है.

photograph	फोटोग्राफ़
society	सोसाइटी
gramophone	ग्रामोफ़ोन

(इ) 'र' से रहित शब्दांत /अ/ हमेशा 'आ' से ही लिखा जाता है. *आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, अमेरिका.*

u ऊ–*बूट, सूट, रूम, शू, मूड, ज़ू, स्कूल*

ʊ उ–*फ़ुट, कुक, एम्बुलेंस*

नोट : शब्दांत 'उ' मिलता है, जैसे टु (to).

मूल स्वरों के बारे में निम्नलिखित बातें द्रष्टव्य हैं : (अ) इ, ई, उ, ऊ, अ, आ वर्ण हिंदी में हैं. इनके समान वर्ण बिना अधिक परिवर्तन के गृहीत हुए हैं. (आ) ɘː तथा ʌ का हिंदी में स्थान नहीं है. अतः ये बिना व्यवस्था में परिवर्तन किये 'आ' में शामिल हो गये. (इ) e उच्चारण भिन्नता के कारण समस्या पैदा करता है. इसके बारे में प्रकरण **अंग्रेज़ी से आगत स्वन** भी देखें. (ई) æ तथा ɔ स्वन हिंदी में नहीं हैं. इन्हें क्रमशः 'ऐ' तथा 'औ' के चिह्न देने में वर्तमान व्यवस्था में समस्या पैदा होती है. उल्लेखनीय है कि इनका प्रयोग क्षेत्र हिंदी में मूल भाषा के गृहीत शब्दों की कुल संख्या की तुलना में बहुत सीमित है.

संध्यक्षर स्वर–अंग्रेज़ी से आये शब्दों में निम्नलिखित प्रमुख संध्यक्षर स्वर मिलते हैं, जिन्हें एक-एक उदाहरण के साथ देखें :

ei	mail	ए	मेल
ou	boat	ओ	बोट
ai	light	आइ	लाइट
au	town	आउ	टाउन
iə	beer	इय	बियर
ɛə	chair	एय	चेयर
uə	poor	उअ	पुअर
ɔi	boy	वॉय	ब्वॉय

प्रथम दो स्वन सामान्य रूप से क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' लिखे जाते हैं. अन्य उदाहरण देखें : जेल, टेन, ब्रेन, सेल, गेम, गेट, टेप, पेंट (paint), प्लेन (plain, plane), मेन, सेंट (saint); बोट, कोट, रोम, बोर, गोल (goal), रोड आदि.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिंदी में ह्रस्व एँ तथा ए को अलग न दिखा सकने के कारण कई शब्द युग्म ऐसे बनते हैं, जहाँ मूल शब्द को पहचान पाना मुश्किल हो जाता है, जैसे

सेंट scent	सेंट saint
गेट get	गेट gate

इस असंगति को किसी तरह अपनाना ही होगा. वैसे देखा गया है कि बोलियों में ह्रस्व की जगह दीर्घ का उच्चारण होता है. अनपढ़ व्यक्तियों के लिए वह ठीक है, लेकिन अंग्रेज़ी के माध्यम से काम करना चाहने वालों के लिए स्वन के परित्याग से भी लाभ नहीं है.

ai तथा au के शब्द देखें: *हाई, टाई* (tie), *लाइट, राइट, टाइम, टाइप, माइक, फ़ाइन*. इस स्वर को लिखने के तीन रूप मिलते हैं: साइकिल, साईकिल, सायकिल (cycle). 'आई' में दो दीर्घ स्वरों का योग-सा लगता है. अतः इन्हें कोई अक्षर मान सकता है, जबकि सारे संध्यक्षर स्वर अंग्रेज़ी में तथा हिंदी में एकाक्षर हैं. 'आय' अन्य स्थानों में भी आता है, अतः 'आइ' ग्रहणीय है. ध्यान दें कि शब्दांत में हमेशा 'आई' ही आएगा, 'आइ' नहीं. 'हाई स्कूल' दो शब्दों का योग है, अतः यहाँ 'हाई' ही रहेगाः *हाऊ* (how), *टाउन, साउथ, राउंड, पाउंड, साउंड, लाउड*. यहाँ लेखन में दो रूप मिलते हैं: *टाउन, टाऊन*. ऊपर बताये अनुसार 'आऊ' को केवल शब्दांत के लिए सुरक्षित रखना ठीक होगा. अन्यत्र 'आउ' का प्रयोग ग्रहणीय है. अन्य चार संध्यक्षर स्वर बहुत कम शब्दों में देखने को मिलते हैं. iə (बियर) में 'इअ' के रूप से परहेज़ करना अच्छा है, क्योंकि यह हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है. <'एय'> केवल तीन-चार शब्दों में मिलता है, यथा, 'चेयर, चेयरमैन, शेयर'. इन स्थानों में यह एकाक्षर है और इसके उच्चारण को अलग नहीं किया जा सकता. तुलना के लिए देखें : चेयर–मेयर <मे+यर>. <उअ> का रूप ठीक है, क्योंकि यह हिंदी की प्रकृति के अनुकूल है. ɔi के हिंदी में एक से अधिक रूप मिलते हैं: boy *ब्वॉइ, ब्वॉइ, ब्वाय, ब्वॉय, ?बाइ, बॉइ, बॉय, बाय, ?बॉई*. अगर हिंदी से <ॅ> चला जाता है, तो इन रूपों की संख्या आधी रह जाएगी. वैसे <ब्वा> तथा <ॅ> एक ही प्रयोजन के लिए आये हैं; दोनों को एक साथ रखने से भी कोई फ़ायदा नहीं है. अतः मध्य में 'वाइ' तथा अंत में 'वाय' रूप ही रखा जाए, तो ठीक होगा. अन्य शब्द देखें : *न्वाइज़, ज्वाइन, ब्वाय*. चूँकि ये शब्द कम हैं और उच्चारण में भेद के कारण समस्या भी पैदा नहीं करते, मैं अपनी तरफ़ से इन्हें *नाइज़, जाइन, बाय* ('बाई' रखना मुश्किल है, क्योंकि वह 'bye', 'by' के लिए रूप है) लिखना पसंद करूँगा.

व्यंजन स्वन : व्यंजनों में b <ब>, p <प>, g <ग>, k <क>, j <ज>, ch <च> (जहाँ यह उच्चारण हो), m <म>, n <न>, y <य>, r <र>,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

l <ल>, v <व>, s <स>, sh <श>, h <ह>, इन स्वनों का उच्चारण लगभग दोनों भाषाओं में समान होने के कारण अंग्रेज़ी शब्दों को हिंदी में लिखते समय ज़्यादातर बिना समस्या के इन्हीं चिह्नों का प्रयोग करते हैं. हम यहाँ केवल उन चिह्नों की चर्चा करेंगे, जिनमें भिन्न व्यवस्था दिखायी पड़ती है या कोई समस्या है.

w–यह अंग्रेज़ी का विशेष स्वन है. इसे हिंदी में 'व' से ही लिखा जाता है. *वाटर, वाशिंगटन, वेस्ट, वेदर* (weather) आदि.

z–यह संघर्षी व्यंजन अंग्रेज़ी शब्दों में ही नहीं, उर्दू के शब्दों में भी देखने में आता है. *ज़ू, ज़ोन, प्राइज़, साइज़.*

f–यह संघर्षी व्यंजन भी अंग्रेज़ी के साथ उर्दू के शब्दों में भी आता है. इसका चिह्न है 'फ़'. *फ़ार्म, फ़िज़िक्स, फ़ूड* आदि.

इन दोनों के बारे में विस्तृत चर्चा के लिए देखें **विदेशी व्यंजन.**

t, d–ये दोनों व्यंजन क्रमशः 'ट' और 'ड' लिखे जाते हैं. *टेंट, टेंपो, टूर, टाइम, डाउन, डीन, डाक्टर, डेस्क.*

Th–यह स्वन अंग्रेज़ी में एक लिपि-चिह्न से दिखाया नहीं जाता, लेकिन इसका उच्चारण विशिष्ट है. इसे अंतरराष्ट्रीय स्वन लिपि में θ लिखते हैं और हिंदी में इसे '*थ़*' से दिखाया जाता है. *थ्रो* (throw), *थ्रू* (through), *थ़ाइमस* (thymus), *थ़र्मस* (thermos), *होमियोपैथ़ी* (homeopathy).

th–यह उपर्युक्त 'θ' का घोषस्वन है और इसे अंतरराष्ट्रीय स्वन लिपि में ð लिखते हैं और हिंदी में इसका रूप 'द' है, *देयर* (there), *फ़ादर* (father), *मदर* (mother) आदि.

अ 1. यह हिंदी की वर्णमाला का पहला वर्ण है. अन्य तीन वर्ण *आ, ओ, औ* इसी से बनते हैं. कुछ वर्ष पहले वर्धा समिति ने सुझाव दिया था कि हिंदी के सभी स्वर <अ> से ही बनें जैसे, *अ आ अि अी अु अू अे अै ओ औ.* इस सुझाव के अनुरूप, विशेषकर महाराष्ट्र में, कई पुस्तकें छपीं, जिनमें मुद्रण में यही स्वर-व्यवस्था थी. लेकिन इस सुझाव का उत्तर में अधिक प्रभाव नहीं पड़ा. आज भी महाराष्ट्र के कई शिक्षक, छात्र आदि हिंदी के स्वर इसी रूप में लिखते हैं. यह सुधार अपना स्थान नहीं बना पाया. आज के संदर्भ में <अि, अी, अु, अू, अे, अै> अमानक हैं, त्याज्य हैं.

2. हिंदी में और सभी स्वरों की कोई मात्रा है, <अ> की अपनी कोई मात्रा नहीं है. वर्णमाला में हम व्यंजनों को जिस रूप में दिखाते हैं, उसी रूप में व्यंजन+अ का संयोजन भी लिखा जाता है. शब्द के मध्य में संस्कृत में /म/ स्वरांत उच्चरित होता था, /म्, म/ व्यंजनांत. लेकिन स्वन परिवर्तनों के कारण आज हिंदी में <क> कहीं /क/ पढ़ा जाता है, कहीं /क्/. *अवतरण* को कोई

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

/अव्तरण्/ पढ़ता है, तो कोई /अवत्रण्/ पढ़ सकता है. *परगना* का उच्चारण /पर्गना/ है, *पकड़ना* का /पकड़्ना/. <अ> के संबंध में उच्चारण की इन व्यावहारिक कठिनाइयों के बारे में **अ-लोप** में चर्चा की गयी है.

3. जब हमें वर्ण से 'अ' स्वर का लोप या अभाव दिखाना होता है, तब हम **हलंत** लगा कर या अन्य तरीकों से आधा वर्ण बना लेते हैं। शब्द के आरंभ या मध्य आदि में आधे वर्ण आते हैं, तो उच्चारण संबंधी भ्रम नहीं होता, क्योंकि कहीं आधे वर्ण का अकार युक्त उच्चारण नहीं होता. *क्रम* और *करम* के उच्चारण में स्पष्ट अंतर तो है ही, लेकिन स्वन परिवर्तन के कारण हिंदी में *शर्म-शरम, गर्म-गरम, बर्फ़-बरफ़, नर्क-नरक, धर्म-धरम, जन्म-जनम, भ्रम-भरम, श्रम-शरम* जैसे वैकल्पिक रूप प्रचलित हैं. ऐसे शब्दों में वर्तनी और उच्चारण की विस्तृत चर्चा के लिए **गरम** देखिए.

4. <अ> शब्दादि में आता है. शब्द मध्य में <उ, ऊ> के बाद <अ, आ> आता है, कहीं <व> नहीं. *सुअर*~**सुवर*, *कुआँ*~**कुवाँ*, *पुआल*~**पुवाल*, *धुँआ*~**धुँवा*, *कुँअर*~?*कुँवर*, *जुआ*, *दुआ*. *कुँवर* का एक ऐतिहासिक कारण है. यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है, जो 'कुमार' से व्युत्पन्न है. /म/ बाद में /वँ/ बना, जिस कारण यहाँ *कुँवर* मूल रूप है, *कुँअर* सुधारा हुआ रूप. उल्लेखनीय है कि हिंदी में <कुँआरा> (कुमार) ही अधिक प्रचलित है, <कुँवारा> नहीं.

ऊपर की बात उपसर्गों के बाद लागू नहीं होती. *सुवचन*, *सुवास*, *कुवात*.

अ → आ हमने **धातु रूप में संज्ञा** नामक प्रकरण में देखा कि बहुधा हिंदी के धातु जब संज्ञा के रूप में प्रयोग में आते हैं, तब स्त्रीलिंग में होते हैं. *दौड़, पहुँच, डाँट, पकड़, मार, पुकार, साध, उपज, ख़रीद, चिढ़, समझ* आदि संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में आती हैं. लेकिन इस नियम के 'अपवाद' मिलते हैं. *उबाल, उभार, निखार* आदि संज्ञाएँ पुल्लिग में हैं. ये देखने में *उबालना, उभारना, निखारना* से बने शब्द लगते हैं. आगे के शब्दों को देखिए :

उबाल	(< उबलना)	*उबार*	(< उबरना)
उभार	(< उभरना)	*निखार*	(< निखरना)
उतार	(< उतरना)	*बिगाड़*	(< बिगड़ना)
सुधार	(< सुधरना)	*निकास*	(< √निकस)
उफान	(< उफनना)	*पसार*	(< पसरना)

यह दिखाया गया है कि *उबाल* 'उबालना' से नहीं 'उबलना' से है. इसके दो आधार हैं. अर्थ की दृष्टि से प्रस्तावित व्युत्पत्ति ही ठीक बैठती है. पानी में उबाल आता है, हम किसी व्यक्ति के (पानी के) *उबाल* की बात नहीं करते. दूध उफनता है तो उसमें *उफान* की बात कहते हैं. दूसरा आधार है **उफानना*, **निकासना* जैसे सकर्मक रूपों का अभाव. ये सारे पुल्लिग शब्द हैं. हम कह सकते

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं कि धातु के /अ/ के दीर्घ होने से जो संज्ञाएँ बनती हैं, वे पुल्लिंग में आती हैं.

2. इसकी एक शर्त है. यह नियम दो अक्षर वाली धातुओं पर ही लागू होता है, जिनमें दूसरा स्वर /अ/ हो. मुझे ऐसा कोई धातु नहीं मिला है जो इस तरह का हो, जिसमें पहला दीर्घ स्वर हो और जिससे संज्ञा व्युत्पन्न हुई हो. अगर शब्द एकाक्षरिक हो, तो यह नियम लागू नहीं होता. *दाल* (<दल(ना)), *चाल* (<चल), *दाब* (<दब), *लाग* (<लग) स्त्रीलिंग शब्द हैं. **ध्वन्यात्मक शब्द** के रूपों से भी इस तरह के शब्द व्युत्पन्न होते हैं–*थाप* (थप), *भाड़* (भड़), *धाड़*~*दहाड़* (धड़), *टाप* (टप).

3. इस विश्लेषण में समस्यात्मक शब्द है *उछाल* (<उछलना), जो स्त्रीलिंग शब्द है. *संभाल* (स्त्रीलिंग) संभलने की क्रिया नहीं, संभालने की क्रिया है; अतः स्त्रीलिंग है.

अक्सर इसका दूसरा रूप *अकसर* भी चलता है. *अक्सर* अधिक प्रचलित है. देखें **अ-लोप.**

अगरचे उर्दू में यह शब्द 'अगरचह' लिखा जाता है, लेकिन यह ऊपर के अनुसार ही उच्चरित होता है. यह शब्द 'यद्यपि' का पर्याय है. *अगरचे वह बीमार था, लेकिन उसने इम्तहान देकर ही छोड़ा.* उल्लेखनीय है कि **हालाँकि** कार्य करने के बाद आता है (*उसने फ़िल्म नहीं देखी, हालाँकि उसके पास टिकट था*). 'यद्यपि' के प्रभाव के कारण अब 'अगरचे' का प्रयोग बहुत सीमित हो गया है.

अतएव यह अतः+एव से बना है. स्वर से पहले विसर्ग का लोप हो जाता है. इसे मिला कर एक शब्द के रूप में लिखना चाहिए.

अदा, अता 1. देखने में समान लगने वाले ये शब्द अर्थ में भी समान हैं. *अदा करना* पैसे भरना, देना आदि अर्थों में आता है. *मैंने उन्हें सलाम अदा किया. मैंने पैसा अदा किया और रसीद ली.* *अता करना* दान देने या सम्मानित ढंग से कुछ देने के अर्थ में आता है. *उन्हें अकादमी की सदस्यता अता की गयी.* (**अदा की गयी*). *मैं गरीब हूँ, कुछ अता फ़रमाइए* (**अदा फ़रमाइए*)

2. *अदा* अविकारी विशेषण है. इससे संज्ञा *अदायगी* (भुगतान) बनता है. *अता* अविकारी **विदेशी संज्ञा शब्द** है. इससे *अतानामा* (दानपत्र) आदि शब्द व्युत्पन्न होते हैं.

अति- 1. देखें **प्रति-.**

2. विशेषण के रूप में 'अति' बहुत का अर्थ देता है : *अति तीव्र, अति वेग से.* यह साहित्यिक शब्द है.

2.1. इसी अर्थ में 'अति' संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है, *उसने अति कर दी*~*हद कर दी.* *अति करना* एक **संयुक्त शब्द** है.

अतिसुधार हिंदी में /ज़/ की जगह सर्वत्र /ज/ बोलने की प्रवृत्ति कुछ अंचलों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में दिखायी पड़ती है. कुछ हिंदी भाषी इस प्रवृत्ति को किन्हीं कारणों से अशुद्ध मानते हैं और दोनों उच्चारणों में अंतर करना चाहते हैं. इस कारण वे उन शब्दों में तो /ज़/ बोलते ही हैं, जहाँ यह है, साथ ही सही प्रयोगों को भी 'शुद्ध' कर देते हैं जहाँ वास्तव में /ज/ होना चाहिए. यह प्रवृत्ति **अतिसुधार** कहलाती है. *रिवाज, मजबूर, जनाब, गजब, तवज्जुह, दर्ज, इलाज, जुर्म, इजाज़त, वजह, वाजिब* ऐसे कुछ शब्द हैं, जिनमें /ज़/ का प्रयोग करना अतिसुधार कहलाएगा. मूल रूप से अपरिचय अतिसुधार का आधार है.

2. अतिसुधार प्रायः विदेशी शब्दों में विदेशी स्वनों के उच्चारण को लेकर होता है. ऊपर उर्दू शब्दों में /ज/ के अतिसुधार की चर्चा की गयी है. अंग्रेज़ी शब्दों में अनावश्यक रूप से /ऑ/ का प्रयोग अतिसुधार कहलाएगा. प्रायः देखा गया है कि ये सुधार उन-उन भाषाओं के शब्दों तक ही सीमित रहते हैं. आम तौर पर *जाना, आज, सूरज, बजाना, लज्जा* जैसे शब्दों में अतिसुधार नहीं होता. लेकिन आम भाषा भाषी शब्द प्रयोग में भाषा के शब्दों के स्रोतों को तो नहीं जानता; अर्थात बहुत कम व्यक्ति जानते हैं कि *आज* 'अद्य' से प्राप्त है. ऐसी स्थिति में यह कहना बहुत कठिन है कि किस तरह यह नियंत्रण काम करता है. बिना गहराई में गये, यही उल्लेख करना पर्याप्त समझूँगा कि कई भाषिक, सामाजिक और मानसिक कारक (factors) हैं जो इस नियंत्रण में काम आते हैं.[1] हम यह भी

[1]इस संदर्भ में तमिल भाषा की एक रोचक स्थिति की ओर इंगित करना चाहूँगा. तमिल में क, ग आदि अघोष तथा घोष व्यंजनों में लेखन के स्तर पर अंतर नहीं किया जाता. तमिल के अपने शब्दों में इन दोनों में परिपूरक वितरण था :

अघोष व्यंजन–शब्दादि में घोष व्यंजन–नासिक्य के बाद

लेकिन संस्कृत के प्रभाव के कारण संस्कृत से तथा हिंदी से सैकड़ों शब्द आये, जिनमें शब्दादि में घोष व्यंजन हैं. लेखन में अंतर न करने की स्थिति में भी ये शब्द कई शताब्दियों से (जी हाँ, शताब्दियों से) मूल रूप में घोष व्यंजन के साथ उच्चरित होते रहे हैं, जबकि तमिल भाषी यह नहीं जानता कि ये 'विदेशी' या 'बाहरी' शब्द हैं. कुछ उदाहरण देखिए (मूल संस्कृत शब्द दिये जा रहे हैं)–'दूर, भय, भाव, जाल, दान, देश, देह, भुवन, भवन, भूमि, घोर, गान, गीत, जग, दाह, ध्यान, द्वार, ज्योति, गुरु, गर्जन, ग्रह, जन्म, जननि, जाति, जीर्ण, दिशा, दीन, दृढ़, दृष्टि, दोष, द्रव, भाषा, भोजन, भस्म, भूत (प्रेत), धान्य.' हिन्दी के पुराने तथा नये गृहीत कुछ शब्द हैं–डेरा, दमड़ी, बोहनी, बूंदी, बिरयानी, दोना, गुलाबजामुन, गुमाश्ता, गारा, गाँजा, भाँग, दाढ़ी, बीड़ी. उल्लेखनीय है कि गृहीत 'कोप, काल, ताप, पर्व, पोषण' आदि सैकड़ों शब्द अघोष व्यंजनों से ही उच्चरित होते हैं. अतिसुधार की प्रवृत्ति बहुत थोड़े-से शब्दों में, वह भी आधुनिक शब्दों में ही दिखायी पड़ती है, जैसे बूरी (पूरी), जीनी (चीनी), गजाना (ख़ज़ाना). यह वास्तव में मानव मन के कार्य करने की विधि का अद्भुत उदाहरण है कि बिना लिपि में परिवर्तन किये कोई भाषा, बिना वितरण की पूरकता के, सैकड़ों शब्दों में सदियों से अंतर बनाये हुए है और उन शब्दों की उच्चारण व्यवस्था में अधिक अंतर भी नहीं आया है. इस नियंत्रण का आधार ढूंढना वर्तमान स्थिति में हमारे बस का कार्य नहीं है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं जानते कि अतिसुधार करने वाला व्यक्ति किस हद तक अपने कार्य के प्रति सचेत रहता है. लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अतिसुधार व्यक्तिगत विशेषता है, जो थोड़े-से लोगों में दिखायी पड़ता है. यह भाषा के स्वन-परिवर्तन की सामुदायिक प्रवृत्ति नहीं है.

2.1. दूसरी तरफ़ भाषा में हुए आंतरिक परिवर्तनों के कारण कुछ प्रयोगों को संस्कारित करने की प्रवृत्ति होती है, जैसे /करम/ को फिर से /कर्म/ कहना, 'धरम' को 'धर्म' लिखना संस्कारित प्रयोग हैं. जहाँ सही शब्दों में इस तरह 'शुद्ध' रूप लिखने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है, वहाँ अतिसुधार होता है. 'नरक' को 'नर्क' लिखना अतिसुधार है. यहाँ अतिसुधार के कुछ और उदाहरण दिये जा रहे हैं : *क्षात्र* (छात्र), *इक्षा* (इच्छा), *प्रज्ज्वलित* (प्रज्वलित), *नमष्कार* (नमस्कार), *समश्या* (समस्या), *बुद्धवार* (बुधवार), ⟨*विप्रीत* (विपरीत)⟩, ⟨*सक्रय* (सक्रिय)⟩. *कैलाश* ऐसा ही अतिसुधार का शब्द है, जो प्रयोगाधिक्य के कारण मानक बन गया है और मूल (सही) रूप *कैलास* से अधिक प्रचलित हो गया है.

2.2. अतिसुधार लेखन में भी होता है, उच्चारण में तथा वाक्य संरचना में भी. ऊपर हमने दो शब्दों को देखा. लेखन में 'य' तथा स्वर को ले कर लोग धारणा बना लेते हैं और अपने ढंग से शब्दों की रचना करते हैं. जैसे, य+स्वर मानने वाला *कोयी*, *कयी*, *भायी* आदि नियमित रूप से लिखने लगे, स्वर मानने वाला *स्थाई*, *गाँओं* आदि लिखने लगे, तो यह अतिसुधार कहलाएगा. हिंदी भाषी अगर *मैंने हँसी हँसी* कहे, तो यह अतिसुधार होगा, क्योंकि वह इसे सकर्मक वाक्य मानता है और 'ने' का प्रयोग आवश्यक समझता है. यहाँ कुछ हद तक सादृश्य भी है.

3. यहाँ हमें अतिसुधार और भाषा के स्वाभाविक स्वन परिवर्तन में अंतर करना होगा. हिंदी में ⟨फ⟩ के लिए 'फ़' का उच्चारण अतिसुधार नहीं है, क्योंकि हम जानते हैं कि उर्दू के शब्दों में /फ/ नहीं आता, और संस्कृत शब्दों में /फ़/ नहीं है. साथ ही /फ़/ का उच्चारण कुछ चुने हुए शब्दों में सुधार करने के उद्देश्य से नहीं होता, जैसे ⟨ज⟩ के संदर्भ में होता है. कई हिंदी भाषी *फाटक*, *फल*, *फूल*, *फन*, *फावड़ा*, *फुदकना*, *फोड़ना*, *फाड़ना*, *फाँसी*, *फुंसी*, *फूट*, *फिर*, *फेर*, *फूफा*, *फूफी*, *फेफड़ा*, *सफल*, *कफ* सभी शब्दों में /फ़/ का उच्चारण करते हैं. यह आगामी स्वन परिवर्तन की दिशा का द्योतक है.

4. भाषा सीखने की प्रक्रिया में जो गलतियाँ होती हैं, वे भाषा दोष हैं, अति-सुधार नहीं. अतिसुधार की प्रवृत्ति मातृभाषा भाषियों में या उस भाषा में दक्षता पाने वालों में ही दिखायी पड़ती है.

अधि- देखें **प्रति-**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिकतर, अधिकांश अधिक+तर से बना तुलना का शब्द (संबंधित प्रविष्टि देखें) अंग्रेज़ी के संदर्भ में 'से अधिक' का अर्थ नहीं देता, बल्कि most, mostly के अर्थ में प्रयुक्त होता है. *अधिकतर लोग व्यवस्था में परिवर्तन चाहते हैं.* 'ज़्यादातर' इसका पर्याय है. *हम ज़्यादातर सवेरे ही खाना खा लेते हैं.*

अधिक+अंश यौगिक शब्द है, जिसका अर्थ है 'अधिक अंश, ज़्यादा हिस्सा' *दिन का अधिकांश समय, अपनी अधिकांश संपत्ति, मेरी अधिकांश शक्ति.* कई लोग 'अधिक, अधिकतर' के अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं, जो त्याज्य है. **गाँव के अधिकांश लोग, *आज अधिकांश लोग स्कूल नहीं आये हैं.*

अन अन् से प्राप्त हिंदी **उपसर्ग** /अन/ के लिए कोई स्वनिक नियंत्रण नहीं है. यह व्यंजन स्वनों से पहले, कुछ शब्दों से पहले आता है–*अनमोल, अनपढ़, अनबूझा ~अबूझा, अनसुना, अनदेखा, अनमना.*

/-अन/[1] 1. -अन प्रत्यय वाले (सिद्ध रूप 〈न〉) कृदंत संज्ञा शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं. इसके बीसियों उदाहरण मिलते हैं–*कुढ़न, जलन, टूटन, घुटन, ऐंठन, कतरन, अकड़न, तपन, धड़कन, थिरकन, सूजन, भटकन, सीलन, खुरचन, उलझन.* इन शब्दों में 〈ा〉 जोड़िए और आपको 'कुढ़ना' आदि क्रियार्थक संज्ञा के रूप मिल जाएँगे.

2. निम्नलिखित पुल्लिग संज्ञा शब्द इस नियम के अंतर्गत नहीं आते, क्योंकि ये संस्कृत से मूल रूप से पुल्लिग में प्राप्त संज्ञा शब्द हैं, जबकि ऊपर 1 के शब्द क्रिया धातु में -अन जोड़ने (या क्रियार्थक संज्ञा रूप से /आ/ छोड़ने से) बने शब्द हैं. सहन (सहना), *?जलन* (जलना), *गलन, मिलन, पालन, छेदन, गठन, गर्जन* इसके थोड़े से उदाहरण हैं. हिंदी में शब्द लेने की प्रक्रिया यह माननी होगी :

√पाल (संस्कृत)	पालन (पुल्लिग)	पालना
√टूट (हिंदी)	टूटना	टूटन (स्त्रीलिंग)

3. संस्कृत के णकारांत संज्ञा शब्दों में /ण/ इसी प्रत्यय में स्वन परिवर्तन के कारण है. संस्कृत √मृ (मर)+अन–*मरण.* ऊपर 2 के अनुसार मान सकते हैं कि सभी णकारांत धातु से बने शब्द (अ) संस्कृत के होंगे और (आ) पुल्लिग होंगे. *भरण, पोषण, मरण, करण, राष्ट्रीयकरण, उद्धरण, मारण, विचरण* 'इसके उदाहरण हैं. सौभाग्य से इनकी तुलना में धातु से प्राप्त **भरन, *पोसन* (~पोषन) आदि शब्द नहीं हैं.

4. व्यंजनांत धातुओं में हम -अन प्रत्यय की बात देखते हैं. इसका एक उपरूप है /न/ जो स्वरांत धातुओं में लगता है. देन (देना), लेन-देन. ये शब्द भी स्त्रीलिंग हैं.

/-अन/[2] 1. उर्दू प्रत्यय -अन (शब्दों में सिद्ध रूप 〈-न〉) 'से', 'के तौर पर' के अर्थ में आता है. इसका प्रयोग सीमित शब्दों के साथ ही होता है. *अंदाज़न*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'अंदाज़ से', *कानूनन, आदतन, अमूमन* (<आम) 'आम तौर पर', *उसूलन, मसलन* (<'मिसाल' उदाहरण) 'मिसाल के तौर पर', *तकरीबन, करीबन* (<करीब) 'लगभग' आदि आम बोलचाल के शब्द हैं. *एहतियातन, वक्तन-फ़वक्तन* 'कभी-कभी' आदि उर्दू शैली के शब्द कहलाएँगे.

2. *आम, करीब* संज्ञा शब्द नहीं हैं. अतः उनके रूप परिवर्तन पर ध्यान दीजिए. इसी तरह *मिसाल* से *मसलन* बनता है.

3. यह प्रत्यय संस्कृत के प्रत्यय तः~तया का पर्यायवाची है.

आदतन	नियमतः, नियमतया
मसलन	उदाहरणतः, उदाहरणतया

अन्- 1. स्वरों से प्रारंभ होने वाले शब्दों में अन् विलोम उत्पन्न करता है. उस स्थिति में 〈न्〉 स्वर के साथ मिल जाता है. देखें **अन-.**

अघ	अनघ	उदार	अनुदार
आकर्षक	अनाकर्षक	उचित	अनुचित
आदर	अनादर	एक	अनेक
इच्छा	अनिच्छा	औपचारिक	अनौपचारिक

अनुतान 1. अनुतान को सामान्य भाषा में लहजा कह सकते हैं. वाक्य के उच्चारण में एक ओर स्वनों का उच्चारण होता है, दूसरी तरफ़ उस पूरे वाक्य को बोलने का ढंग होता है. इसी को अनुतान कहते हैं. अनुतान में अंतर मुख्य रूप से सुर भेद के कारण होता है, जो संगीत में अलग-अलग स्वरों में अंतर करने का भी काम करता है. इस सुर भेद के कारण अनुतान के तीन भेद होते हैं.

सामान्य (निश्चयार्थक) वाक्यों में अवरोही (गिरता) सुर होता है. प्रश्न या आश्चर्य प्रकट करने वाले वाक्यों में आरोही (उठता) सुर होता है. अधूरे वाक्यों में, अस्वतंत्र उपवाक्य के उच्चारण में सम सुर होता है. एक ही वाक्य को हम तीनों अनुतानों में बोल सकते हैं, जिससे अनुतान के अनुसार अलग-अलग अर्थ निकलें.

अवरोही	*राम घर गया.*
आरोही	*राम घर गया ?* (प्रश्न)
	राम घर गया ! (आश्चर्य)
सम	*राम घर गया . .* (तो मैं भी जाऊँगा)

2. जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से देख रहे हैं लिखित भाषा में अनुतान को विराम चिह्नों से दिखाते हैं. लेकिन विराम चिह्न अनुतान के सभी प्रमुख भेदों को दिखाने में अक्षम होता है. इस बात को निम्नलिखित उदाहरणों में देख सकते हैं. (लिखित रूप में मैं अंतर की तरफ़ इशारा मात्र कर सकता हूँ. अहिंदी भाषी किसी मातृभाषी व्यक्ति द्वारा उच्चारण कराके उच्चारण के अंतर को देखें.)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

↓ *अच्छा, जाओ.*
(मैं चलूँ ?) *अच्छा.*
↑ (वह तो जेल में बन्द है) *अच्छा !*
बहुत अच्छा !
अच्छा ! वह पास हो गया ?
कौन ? मोहन ? अच्छा, तुम बोल रहे हो ?
| *अच्छा, चलूँ ?*
अच्छा, फिर ?

3. अनुतानों में सूक्ष्म भेद है, जिसे सीखने वाला सतत अभ्यास द्वारा ही पहचान और सीख सकता है. अगर कोई व्यक्ति भाषा के स्वर-व्यंजनों पर अधिकार प्राप्त कर ले, तो भी अनुतान पर स्वाभाविक रूप से अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता. इस सूक्ष्म अंतर को हम दिखा भी नहीं सकते. यही कारण है कि हम प्रश्न और आश्चर्य दोनों में आरोही अनुतान की बात करते हैं, जबकि दोनों में निश्चित अंतर है. इसी तरह प्रसंगानुसार् निश्चयार्थक वाक्यों में भी अंतर होता है. साधारण बातचीत, भाषण, कहानी सुनाना—हर संदर्भ में निश्चयार्थक वाक्यों के लहजे में अंतर होता है.

अनुनासिकता 1. अनुनासिकता स्वरों के उच्चारण की वह विशेषता है, जिसमें स्वर का उच्चारण करते समय हवा नाक से भी निकलती है और स्वर में नाक से बोलने-जैसा गुण आ जाता है. यह गुण हिंदी भाषा के शब्दों में अर्थभेदक है. /सास/, /साँस/ इन दोनों शब्दों में अनुनासिकता का ही अंतर है और यह अंतर दोनों शब्दों में अर्थ के अंतर का संकेत करता है.

2. सैद्धांतिक रूप से सभी स्वर अनुनासिकता के साथ उच्चरित हो सकते हैं, लेकिन भाषाएँ शब्द रचना में सभी अनुनासिक स्वरों का प्रयोग नहीं करतीं. हिंदी में /अइ, अउ, एँ, ओँ/ तथा विदेशी स्वर अनुनासिक नहीं होते. कुछ भाषाओं में अनुनासिक स्वर शब्द के सभी स्थानों में नहीं आते. हिंदी में अनु-नासिक स्वरों के प्रयोग में ऐसा बंधन नहीं है. कुछ उदाहरण देखिए : *अँगीठी, आँख, माँ, बिंदिया, नींद, नहीं, मुँदना, मूँदना, जूँ, गेंद, करें, ऐंठ, मैं, गोंद, हों, रौंदना.* यद्यपि हिंदी में सभी स्वर अनुनासिक होते हैं, अधिकतर दीर्घ अनुनासिक स्वरों से बने शब्द ही अधिक संख्या में हैं. /अँ, इँ, उँ/ से बने शब्द हिंदी में कम हैं. मेरी जानकारी में शब्दांत में कोई ह्रस्व अनुनासिक स्वर नहीं आता.

3. /आँतर/ में अनुनासिक स्वर है, /आंतर/ में **अनुस्वार** नासिक्य व्यंजन /न/ का तथा /आन्/ के क्रम का संकेत करता है. पहले शब्द में चार स्वन हैं /आँ त अ र/, जबकि दूसरे में पाँच /आ न त अ र/. इन शब्दों में दो-दो अक्षर हैं आँ+तर, आन+तर. शब्द का ऐसा उच्चारण करें कि दोनों अक्षरों के बीच में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रुकें, तो /आँ/ तथा /आन्/ का अंतर पहचान सकते हैं. (आँ) में मुँह बंद नहीं होता, (आन्) में जीभ ऊपर छूती है. /आँ/ का उच्चारण /आ/ से दीर्घ, /आन्/ से छोटा होता है.

4. हिंदी के लेखन में अनुनासिकता के दो चिह्न हैं. 〈ँ〉 उन वर्णों के ऊपर लिखा जाता है, जिनकी शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा नहीं है. जैसे, *अँतड़ी, आँत, इँगुआ, रुँधना, ऊँट, लाएँ*. ऊपर के मात्रा युक्त शब्दों में 〈ं〉 लगता है, जैसे *निंदिया, ईंट, नींद, गेंद, ऐंठ, हैं, ओंठ, पोंछना, औंधा, रौंदना*. यह अंतर भिन्न वर्तनी के शब्दों में या एक ही शब्द के व्युत्पन्न रूपों में स्पष्टता से देखा जा सकता है, जैसे *जाएँ, जायें; करूँ, करें; कुआँ, कुओं; चिड़ियाँ, चिड़ियों*.

5. अनुनासिकता, **अनुस्वार** दोनों को एक ही चिह्न 〈ं〉 से दिखाने के कारण कहीं-कहीं अंतर करना मुश्किल हो जाता है. इस मुश्किल को हल करने के लिए दोनों के प्रयोग की कुछ विशेषताओं को देख सकते हैं :

(अ) शब्दांत में हिंदी में केवल अनुनासिकता ही आती है और शब्दांत नासिक्य व्यंजन पूरे ही लिखे जाते हैं. शब्दांत नासिक्य को अनुस्वार से नहीं दिखा सकते : *कलं (कलम).

(आ) यह समझना ज़रूरी होगा कि संस्कृत शब्दों में अनुनासिकता नहीं है. यह हिंदी के अपने तथा उर्दू मूल के शब्दों की विशेषता है. अगर हमें शब्द के स्रोत का ज्ञान हो, तो हम व्युत्पन्न शब्दों की वर्तनी तथा उच्चारण के बारे में अनुमान कर सकते हैं. यह हिंदी की सामान्य प्रकृति है कि व्युत्पन्न शब्दों में उच्चारण की विशेषता प्रभावित नहीं होती (अन्यथा नियम न हो तो). आगे के शब्दों को देखिए, जिनमें हर जगह अनुस्वार है :

अंश, कालांश, लाभांश, आंशिक, सारांश
अंतर, आंतरिक, कालांतर, दिशांतर
दंपति, दांपत्य
पंडित, पांडित्य
संस्कृत, सांस्कृतिक
संसार, सांसारिक

आगे के शब्दों में अनुनासिकता है :

बाँट, बाँटना, बँटना, बँटवारा, बँटाई, बँटवाना
काँटा, कँटीला
काँपना, कँपाना, कँपकँपी ('कंपन, कंपित' संस्कृत शब्द हैं. इनमें नासिक्य /म/ है.)
सिंचना, सींचना, सिंचाई ('सिंचित' संस्कृत शब्द है. इसमें नासिक्य /ञ/ है.)
नींद, निंदिया, उनींदा (तुलना करें–संस्कृत शब्द 'निंद्रा' में नासिक्य /न/ है.)
दाँत, दाँता, दाँती, दँतुअन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(इ) हिंदी में संस्कृत से व्युत्पन्न कुछ तद्भव शब्द हैं, जिनमें अनुनासिकता है. (लेकिन यह नहीं कि हर तद्भव शब्द में अनुनासिकता ही हो. 'दंड' से 'डंडा', 'डाँड़' दोनों ही रूप मिलते हैं.) कुछ उदाहरण देखिए–

पंच	*पाँच*	*कंपन*	*काँपना*
मुंडन	*मूँड़ना*	*कंटक*	*काँटा*
बंधन	*बाँधना*	*चंद्र*	*चाँद*

(इसका यह भी आशय नहीं कि तद्भव शब्द में अनुनासिकता हो, तो मूल शब्द में भी नासिक्य व्यंजन होगा. साँप < सर्प, ऊँट < उष्ट्र, बाँका < वक्र आदि इस अकारण अनुनासिकता के उदाहरण हैं.)

6. संस्कृत के ह्रस्व स्वर तद्भव में दीर्घ तथा अनुनासिकता युक्त बनते हैं, इस कारण कई लोग दीर्घ स्वरों के साथ हर जगह अनुनासिकता देखते हैं. लेकिन यह सत्य नहीं है. *मांस* (*माँस), *सारांश* (*साराँश), *देहांत* (*देहाँत) जैसे शब्दों की वर्तनी तथा उच्चारण पर ध्यान दीजिए.

7. इसके विपरीत /अँ इँ उँ/ के उच्चारण में ह्रस्व स्वर के कारण अनुनासिकता बहुत क्षीण होती है और प्रायः सुनायी भी नहीं पड़ती. शायद यही कारण है कि इन शब्दों की वर्तनी में वैकल्पिक रूप से निरनुनासिक स्वर लिखे जाते हैं :

पुछल्ला (<पूँछ)	*सँपेरा~सपेरा* (<साँप)
जँचना~जचना (<जाँच)	*सिंचाई~सिचाई* (<सींचना)
बँटवारा~बटवारा (<बाँटना)	?*कँपकँपी~कपकपी* (<काँपना)

इन स्थानों में उच्चारण की कठिनाई हो, तो अनुनासिकता का उच्चारण न करना उतना गलत नहीं होगा, जितना अनुनासिकता की जगह नासिक्य व्यंजन का उच्चारण करना. कई अहिंदी भाषी /बण्टा/ (बँटा), /बन्धा/ (बँधा) आदि गलत उच्चारण करते हैं.

8. हिंदी के टंकण यंत्र के कुछ कुंजी पटलों में अनुनासिकता का चिह्न 〈ँ〉 नहीं है. टेलीप्रिंटर, मानोटाइप की छपाई आदि में भी यह चिह्न नहीं है. इस कारण कई ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं में सर्वत्र अनुस्वार का चिह्न ही दिखायी पड़ता है. अगर यही स्थिति रही, तो 20–25 साल बाद हिंदी में से अनुनासिकता का चिह्न ही हट जाएगा.

9. यद्यपि अनुनासिकता अन्य किसी व्यंजन से स्थानापन्न नहीं हो सकती, उर्दू के कुछ शब्दों में अनुनासिक स्वर की जगह स्वर+न का क्रम दिखायी पड़ता है : *ख़ाँ–ख़ान, नादाँ–नादान, बयाँ–बयान*. और चर्चा के लिए देखिए **उर्दू के शब्दों में अंत्य अनुनासिकता.**

अनुवाद अनुवाद संज्ञा शब्द है, जो एक भाषा की वस्तु (content) को दूसरी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषा के माध्यम से रूपांतरित करने के अर्थ में आता है. मैंने तमिल से मलयालम में दो कहानियों का अनुवाद किया है. मेरी किताब का अनुवाद कई भाषाओं में हुआ है. 'अनूदित' विशेषण शब्द है, जो अनुवाद का ही अर्थ प्रकट करता है. मेरी कहानी कई भाषाओं में अनूदित हुई है. 'अनूदित' से कोई अन्य शब्द नहीं बनता. अनुवाद से अनुवादक, अनुवादकर्ता, अनुवाद करने वाला बनता है. लेकिन अनुवाद से अनुवादित नहीं बनता.

अनुस्वार यह संस्कृत से हिंदी में आया लिपि चिह्न है, जो वर्ण के ऊपर बिंदी के रूप में लिखा जाता है. इसे वर्णमाला में 'औ' के बाद इस तरह से दिखाते हैं 〈···औ अं अः〉 (उच्चारण अम् या अङ् या अन् ?)

1. अनुस्वार का हिंदी में प्रकार्य संस्कृत से भिन्न है. यहाँ अनुस्वार से हमारा तात्पर्य सिर्फ़ उस चिह्न से है, जो संस्कृत से आया है. उच्चारण की दृष्टि से अलग-अलग स्थानों में इसका अलग-अलग महत्त्व है और यहाँ संस्कृत से भिन्न व्यवस्था है.

2. शिरोरेखा के ऊपर मात्रा वाले वर्णों पर **अनुनासिकता** को दिखाने के लिए अनुस्वार का प्रयोग होता है. ईंट, नींद, भेंट, ओंठ, गोंद आदि.

3. संस्कृत में सवर्गीय नासिक्य व्यंजनों से पहले उस वर्ग के नासिक्य व्यंजन की स्थिति में वह व्यंजन लिखा जाता था. जैसे अङ्क, पङ्ख, सङ्ग, सङ्घ, चञ्चल, लाञ्छन, मञ्जुल, कण्टक, कण्ठ, पण्डित, अन्त, पन्थ, मन्द, अन्धकार, कम्पन, गुम्फन, आलम्बन, आरम्भ. हिंदी की लिपि के सरलीकरण के लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रस्तावित संशोधित मानक नागरी लिपि में जो संशोधन सुझाया गया है, उसके अनुसार इन सारे शब्दों में नासिक्य व्यंजन की जगह पूर्ववर्ती वर्ण पर अनुस्वार का चिह्न लिखा जाएगा. इस पद्धति से लेखन में सरलीकरण हुआ है, सुविधा हुई है. नयी पद्धति में ये शब्द होंगे–अंक, पंख, संग, संघ, चंचल, लांछन, मंजुल, कंटक, कंठ, पंडित, अंत, पंथ, मंद, अंधकार, कंपन, गुंफन, आलंबन, आरंभ आदि. चूँकि इसका स्थान परवर्ती व्यंजनों पर आधारित है और अनुस्वार उसी वर्ग के नासिक्य व्यंजन का बोध कराता है, किसी को उसके उच्चारण को समझने में कोई भ्रम नहीं होगा.

3.1. क्ष, ज्ञ–इन वर्णों से पहले अनुस्वार /ङ/ का बोध कराता है, क्योंकि ये कंठ्य स्वन हैं.

4. अनुस्वार का तीसरा प्रकार्य वही है, जो संस्कृत शब्दों में था. लेकिन संस्कृत की तुलना में यहाँ उच्चारण भिन्नता दिखायी पड़ती है. संस्कृत में अनुस्वार का उच्चारण म है और लेखन में यह शब्द मध्य में केवल ऊष्म और अंतस्थ स्वनों से पहले आता है. संसार, संयम, संरक्षण, संलाप. स्वरों से पहले यह मकार बन जाता है. समाहार, समुच्चय समूह, समीक्षा, परमात्मा,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परमेश्वर. स्पर्श व्यंजनों से पहले यह सवर्गीय नासिक्य व्यंजन का उच्चारण प्राप्त करता है. परम्परा, सम्भव, सङ्गीत, सञ्चालन. हिंदी के संदर्भ में हम सिर्फ़ अंतस्थ और ऊष्म स्वनों के पहले अनुस्वार की चर्चा करेंगे.

व से पहले यह /म़/ है. *संवाद, संवेदना, संवेग* /सम्‌वाद/

य से पहले यह /ँ/ है. *संयम, संयोग, संयुक्त* /सँयोग/

ह से पहले यह /ङ/ है. *सिंह, सिंहासन, संहार* /सङ्‌हार/

('सिंह' में नासिक्य व्यंजन की अवस्थिति जानने के लिए इसकी 'मुँह' से तुलना कीजिये. आप पाएँगे कि 'सिंह' के उच्चारण में अधिक समय लगता है.)

र, ल से पहले यह /न/ है. *संरक्षण, संलग्न, संलाप*

स, श, ज़ से पहले यह /न/ है. *कंस, बंसी, पेंसिल, फुंसी*

अंश, वंशज, मुंशी

मंज़िल, मंज़ूर

4.1. *पेंसिल, मुंशी, मंज़िल* आदि शब्द अंग्रेज़ी या उर्दू के स्रोत से आये हैं. इस कारण इन शब्दों को ⟨न⟩ से भी लिखा जा सकता है. *पेन्सिल, मुन्शी, मन्ज़िल*. *फुंसी* देशज शब्द है. उस पर भी यह बात लागू होती है. *फुन्सी*. वास्तव में कई अंग्रेज़ी या उर्दू स्रोत के शब्द हैं, जो अनुस्वार से लिखे ही नहीं जाते. *जीन्स, जिन्स, टान्सिल*.

वैसे यह तो कहा ही जा सकता है कि हिंदी के ऐसे संस्कृत मूल के शब्दों में अनुस्वार की जगह कहीं नासिक्य व्यंजन का प्रयोग नहीं होता. *कन्स, *अन्श.

4.2. संस्कृत में शब्दांत अनुस्वार, ⟨म⟩ का विकल्प है. परं~परम्. हिंदी में शब्दांत में सिर्फ़ अनुनासिकता आती है और अनुस्वार नहीं आता. लेकिन संस्कृत से आये थोड़े-से शब्द शब्दांत अनुस्वार से भी लिखे जाते हैं, और ⟨म⟩ के साथ भी. दोनों ही स्थितियों में उच्चारण /म/ ही होता है.

/अहम्/	⟨अहं~अहम्~अहम⟩
/परम्/	⟨परं~परम्~परम⟩
/एवम्/	⟨एवं~एवम्~एवम⟩

शब्द खंड के रूप में ये मूल रूप में आते हैं. *अहंभाव, परंपरा, अपरंपार, अहंकार*. उल्लेखनीय है कि हिंदी के शब्दकोश 'अहङ्कार, अहम्भाव, अहन्ता' जैसे रूप नहीं देते, बल्कि सिर्फ़ अनुस्वार युक्त रूप ही देते हैं. 'परंपरा' में ज़रूर यह विकल्प मिलता है.

5. हिंदी में अंग्रेज़ी शब्दों के लेखन में जो अराजकता है, वह सर्वत्र अनुस्वार लिखने पर कुछ हद तक कम हो सकती है. *इंक, लंच, प्रिंट* जैसे शब्दों में कुछ लोगों को अनुस्वार अच्छा नहीं लगता. ये इन्हें 'न' से लिखते हैं. *इन्क, लन्च, प्रिन्ट*. कुछ लोग अंग्रेज़ी ⟨ट ड⟩ से पहले भी हर जगह 'ण' लिखते हैं. *पेण्ट, एण्ड,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाउण्ड. उल्लेखनीय है कि इन्क, लन्च हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं. <ण> को केवल संस्कृत तथा देशज शब्दों तक सीमित रखना उपयुक्त होगा. अंग्रेज़ी के शब्दों में भी स्पर्श से पहले हर जगह अनुस्वार लिखना उपादेय है.

अनेक, अनेकों, अनेकानेक हिंदी में कई लोग *सब* से *सबों* तथा *कई* से *कइयों* के रूप बनाते हैं. ये दोनों विकृत रूप अभी-अभी प्रयोग में आये हैं, मानक नहीं हैं. लेकिन अनेकों अब स्वीकृत व्यवस्था में आ चुका है.

1. *अनेक* 'अन+एक' के योग से बना शब्द है, 'कई, बहुत-से' के अर्थ में प्रयुक्त होता है. यह अभी साहित्यिक शैली का शब्द है, आम प्रचलन में नहीं है. *अनेक स्त्री-पुरुष, अनेक प्रकार के, अनेक बाधाएँ, अनेक नये विचार.* 'कई अनेक' में अनावश्यक पुनरावृत्ति है. 'बहुत्व, अधिकता' के अर्थ में *अनेकता* स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है. *अनेकता में एकता.*

2. 'अनेकानेक' 'कई-कई' की तरह पुनरुक्त शब्द है. देखें **पुनरुक्ति**. यहाँ शब्द संधि में आया है.

3. प्रयोग की दृष्टि से *अनेक* परिमाणवाचक विशेषणों के समकक्ष है, जबकि *कई* और *सब* सर्वनाम भी हैं. यह एक ओर संज्ञा के साथ अन्वित होकर तिर्यक रूप में आता है (*मैंने अनेकों लोगों से बात की*); और बिना तिर्यक रूप के भी आ सकता है (*अनेक डाक्टरों से परामर्श किया*). प्रयोग की दृष्टि से यह *लाख, लाखों* से तुलनीय है.

अन्विति भाषा में किसी एक शब्द की व्याकरणिक कोटि के आधार पर दूसरे शब्दों में कोटि की विशेषता का प्रभाव पड़े, तो उसे अन्विति कहते हैं. गुरु अपने व्याकरण में इसी को अन्वय कहते हैं और भाषाविज्ञान के ग्रंथों में agreement, concord आदि शब्द मिलते हैं.

पूर्ववर्ती वैयाकरणों ने अन्विति की समस्या को **वाच्य, प्रयोग** आदि शीर्षकों में देखने की कोशिश की. वाच्य केवल वाक्य रूपांतरण का विधान है और उसमें भी अन्विति दिखायी पड़ती है. लेकिन सिर्फ़ वाच्य से अन्विति का पूरा समाधान नहीं होता. प्रयोग व्याकरणिक परंपरा का एक प्रत्यय (concept) है और कुछ हद तक वाच्य के संदर्भ में व्याख्यायित किया जाता है. ये दोनों प्रकरण अन्विति की व्यवस्था को पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं करते.

1. हिंदी में अन्विति की व्यवस्था से प्रभावित होने वाले चार वाक्यांश हैं—कर्ता, कर्म, पूरक (विधेय विशेषण या उद्देश्य पूर्ति) तथा क्रिया. इन चार वाक्यांशों में कर्ता, कर्म तथा कुछ पूरक संज्ञाओं/सर्वनामों से बनते हैं. संज्ञाओं/सर्वनामों की तीन व्याकरणिक कोटियाँ हैं—लिंग, पुरुष, वचन. ये तीनों कोटियाँ क्रिया में प्रतिबिंबित होती हैं. इसी को हम अन्विति कहते हैं.

1.1. संज्ञा वाक्यांशों में, चाहे वे कर्ता आदि से इतर भी हों (जैसे स्थानवाचक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'मेरे घर में') विशेषण तथा संज्ञा की लिंग, वचन तथा कारक की कोटियों की अन्विति दिखायी पड़ती है. यह वाक्यांश के भीतर की अन्विति है और इसका प्रभाव कर्ता या कर्म आदि के माध्यम से, व्यवस्था हो तो, क्रिया पर भी पड़ता है. कारक केवल वाक्यांश स्तर की अन्विति है. वाक्यांश स्तर की अन्विति को यहीं देख लें. **संज्ञा रूप परिवर्तन** के प्रकरण में संज्ञा के रूपों का विवरण दिया गया है. संज्ञा शब्दों से पहले विशेषण का रूप निम्न प्रकार से होगा :

मेरा	सभी पुल्लिग एकवचन शब्द (प्रत्यक्ष)
मेरे	पुल्लिग एकवचन के तिर्यक तथा संबोधक कारक रूप
	सभी पुल्लिग बहुवचन शब्द
मेरी	स्त्रीलिंग शब्द

उदाहरण :

मेरा कमरा, मेरा मकान
मेरे कमरे में, मेरे बच्चे !
मेरे दो कमरे, मेरे कमरों में, मेरे बच्चो !
मेरी बच्ची, मेरी बहनें, मेरी बच्ची ! मेरी बहनो !

व्यंजनांत विशेषण तथा अविकारी आकारांत विशेषण कहीं बदलते नहीं.

लाल कपड़ा, लाल कपड़े, बढ़िया कपड़ा, बढ़िया कपड़े

1.2. उपवाक्य स्तर पर अन्विति को हम कर्ता, कर्म, पूरक तथा क्रिया के संबंधों में देख सकते हैं. अन्विति की व्यवस्था को इन वाक्यांशों से बने निम्नलिखित वाक्यों में देखिए :

कर्ता में प्रत्यक्ष संज्ञा शब्द वाली रचनाएँ–यहाँ क्रिया की अन्विति हमेशा कर्ता के साथ होती है.
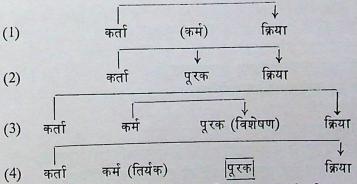
नोट–तीर का चिह्न दिखाता है कि किस वाक्यांश से किस वाक्यांश की अन्विति है. चौखटे में रखे गये शब्द का तात्पर्य है कि वह वाक्यांश अन्वित नहीं होता, हमेशा पुल्लिग एकवचन में होता है. कोष्ठक में सूचित वाक्यांश ऐच्छिक हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अब इनके उदाहरण देखें जो पुल्लिंग एकवचन में हैं. अन्य लिंग-वचन के रूप आप स्वयं निर्मित कर सकते हैं.

लड़का जाता है. लड़का जा रहा है. लड़का गया.
लड़का जाएगा. लड़का जा सकता है. लड़का जा चुका है.
लड़का जाने लगा है. लड़का जाना चाहता है.

ये वाक्य तथ्यपरक क्रिया रूपों से युक्त हैं. आगे तथ्येतर क्रिया रूपों के वाक्य हैं—वह जाए. तुम जाओ.

कर्मयुक्त वाक्य :

लड़का काम करता है. लड़का काम कर रहा है.
लड़का काम करेगा. लड़का काम कर सकता है.
लड़का काम कर चुका है. लड़का काम करना चाहता है.
लड़का काम करने लगा है.

2. पूरक वाक्य—लड़का छोटा/सोया हुआ है. लड़का छात्र है. इन वाक्यों में आगे कृदंत रूप /जाता, गया/ तथा सहायक क्रिया /था/ की अन्विति लिंग और वचन के लिए संज्ञा से होती है, तिङंत रूप (जाए, जाओ) तथा सहायक क्रिया /है/ की अन्विति पुरुष और वचन के लिए संज्ञा से होती है. पूरक विशेषण की अन्विति लिंग-वचन के लिए संज्ञा से है. कर्ता और पूरक संज्ञा का समलिंगी तथा समान वचन का होना अर्थ के संतुलन के कारण है. *लड़का गधे है, *लड़की अच्छा छात्र है. इस पर आगे और विचार करेंगे. पेड़ कटा, दरवाज़ा खुला आदि वाक्यों को हम वर्ग एक में मान सकते हैं, जहाँ 'पेड़, दरवाज़ा' आदि व्याकरणिक कर्ता हैं. इस विश्लेषण के अनुसार 'तुम, आप' बहुवचन शब्द हैं, भले ये एक ही व्यक्ति का संकेत करें. इसीलिए इनकी पूरक से बहुवचन में अन्विति होती है.

तुम अच्छे हो.
आप अच्छे हैं.
तुम क्यों इतने परेशान हो.

3. कर्म तथा पूरक की रचना के उदाहरण हैं :

आप यह कमीज़ छोटी कर दीजिए.
वह खंभे टेढ़े गाड़ रहा है.

इस रचना में पूरक संज्ञा नहीं आती.

4. ऊपर की रचना में कर्म तिर्यक हो, तो पूरक अविकारी रहता है.

डाक्टर, आप मुझे अच्छा कर दीजिये (*अच्छी कर दीजिए).
तुम सारे कपड़ों को गंदा कर रहे हो.
तुम क्यों उन लड़कों को गधा बना रहे हो (गधे बना रहे हो).

पूरक संज्ञा के बारे में आगे चर्चा की गयी है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्ता में तिर्यक संज्ञा वाली रचनाएँ : कर्ता में तिर्यक संज्ञा हो, तो क्रिया की अन्विति कर्ता से हट जाती है. उस स्थिति में क्रिया की अन्विति कर्म से होती है या वह अविकारी रहती है.

जहाँ कर्म के साथ अन्विति होती है, वहाँ भले कर्म का पुरुष हो, अन्विति केवल लिंग और वचन के लिए होती है. इस कारण पुरुष सूचक सहायक क्रिया 'हूँ, हो', क्रिया 'जाऊँ, जाओ' यहाँ नहीं आतीं.

कर्ता में तीन प्रकार की तिर्यक संज्ञाएँ (लड़के ने, लड़के से, लड़के को) आती हैं.

5. कर्ता |क्रिया|
   मैंने समझा. मैं छींका
   मुझे जाना है/होगा/पड़ेगा/चाहिए.
   मुझसे बैठा नहीं जाता/जा रहा/जाएगा/गया/···आदि

6. कर्ता कर्म क्रिया
   मैंने चाय पी. हमने चाय पीने की कोशिश की.
   मुझे चाय पीनी है/होगी/पड़ेगी/चाहिए.
   मुझे हिंदी आती है.
   मुझसे चाय नहीं पी जाती/जा रही/गयी/जाएगी.
   दीवाली में पटाखे छोड़े जाते हैं.
   मुझसे इतनी मेहनत नहीं होगी.
   मुझसे यह पेड़ नहीं कटेगा

ऊपर हमने चर्चा की थी कि !*पेड़ कटा* आदि में पेड़ को व्याकरणिक कर्ता मान लें, तो अन्विति की समस्या सुलझ जाती है. यही तर्क *पटाखे छोड़े जाते हैं* के लिए दिया जा सकता है. लेकिन यह वाच्य की रचना है और *चाय नहीं पी जाती, चाय पी जाए* से रचना साम्य रखती है. वास्तव में *पटाखे छोड़े जाते हैं* अकर्तृत्वबोधक रचना है और कर्ता की उपस्थिति उसके लोप में निहित है. अगर कर्ता रखें तो रूप होगा, !*हमसे दीवाली में पटाखे छोड़े जाते हैं*. यही बात '! मुझसे पेड़ कटा' पर लागू होती है. इनकी चर्चा **वाच्य, मिथ्या वाच्य** में देखें.

7. कर्ता पूरक क्रिया
   मुझे बुख़ार है.
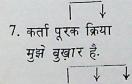
8. कर्ता कर्म पूरक क्रिया
   हमें कई बातें मालूम हैं.
   मुझे कपड़े छोटे करने हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैंने कमीज़ छोटी कर दी.

मुझसे रेखा सीधी नहीं बन रही है.

इस रचना में पूरक में संज्ञा नहीं आती.

9. कर्ता कर्म तिर्यक |क्रिया|

मैंने बच्चों को सुलाया.

मुझे उन लोगों को बुलाना है/होगा/पड़ेगा/चाहिए.

मुझसे बच्चों को उठाया नहीं जाता/जा रहा/गया/जाएगा···आदि.

10. कर्ता कर्म तिर्यक |पूरक| |क्रिया|

मैंने तुम लोगों को अपना समझा था.

मैंने उन लोगों को पाल-पोस कर बड़ा किया.

मुझे इन सब कमीजों को काट कर छोटा करना है.

!मुझसे बच्चों को बड़ा नहीं किया जाता.

ऊपर की सारी चर्चा के बाद भी एक प्रश्न लटका हुआ है. अविकारी पूरक की स्थिति केवल विशेषणों तक सीमित है. संज्ञाओं की अपनी स्थिति विचलित नहीं हो सकती. डाक्टर ने *सुशीला को अपनी पत्नी बनाया* यह वाक्य 10 के अनुसार है. लेकिन अविकारी होने का यह तात्पर्य नहीं कि संज्ञा के लिंग की स्थिति भी बदल जाए. 'अपनी' वाक्यांश के भीतर विशेषण-संज्ञा अन्विति के कारण है. *मैंने तुम लोगों को इतना नीच नहीं समझा था (?इतने नीच). मैंने तुम्हें अपना समझा था (?अपने).* इन वाक्यों में पूरक, क्रिया दोनों अविकारी हैं. *पिता जी, आप मुझे बच्ची/पगली क्यों समझ रहे हैं? मैं तुम्हें एक अच्छा डाक्टर बनाऊँगा/ एक अच्छी डाक्टर बनाऊँगा.* इन वाक्यों में पूरक संज्ञा शब्द हैं और कर्म के लिंग-वचन से मेल खाते हैं, भले ऐसे स्थानों में विशेषण अविकारी रहें. लेकिन कई संदेह के स्थल हैं—दोनों में कौन-सा वाक्य सही है, यह आप ही बताएँ.

(क) राजा ने उन लोगों को अपना अंगरक्षक नियुक्त किया~
राजा ने उन लोगों को अपने अंगरक्षक नियुक्त किया.

(ख) दल ने इंदिरा को अपना नेता चुना~
दल ने इंदिरा को अपनी नेता चुना.

कहीं-कहीं विशेषणों में भी संदेह हो जाता है :

(ग) पिता जी, आप मुझे क्यों छोटा समझ रहे हैं~
पिता जी, आप मुझे क्यों छोटी समझ रहे हैं?

(घ) आप ने मुझे इतना कमज़ोर क्यों बनाया~
आप ने मुझे इतनी कमज़ोर क्यों बनाया (*बनायी)?

तुम्हें मैं अच्छी लगती हूँ यहाँ 'मैं' कर्म नहीं, बल्कि कर्ता है.

मैंने तुम्हें पैसे दिये यहाँ 'तुम्हें' कर्म नहीं, प्राप्तिकर्ता है और वास्तविक कर्म 'पैसे' है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपना हिंदी में किसी एक उपवाक्य के भीतर अगर कर्ता का संबंध कारक (मेरा, तुम्हारा आदि) में उल्लेख आवश्यक हो, तो वहाँ सामान्य सर्वनाम की जगह 'अपना' का प्रयोग होता है. यह नियम तीनों पुरुषों पर लागू होता है. इस कारण *मैं मेरा, *तुम तुम्हारा, *वह उसका आदि प्रयोग, जहाँ दोनों से एक ही व्यक्ति का बोध हो, संभव नहीं हैं. इसके उदाहरण देखें :

तुम अपना नाम बताओ.
राम अपने घर गया. (देखें **गत्यर्थक क्रियाएँ**)
मैं अपनी किताब ढूँढ़ रहा हूँ.
वे लोग अपने स्कूल में एक नाटक करने वाले हैं.

2. जब हम भिन्न सर्वनाम का प्रयोग करते हैं, तो उससे उल्लिखित व्यक्ति कर्ता से भिन्न कोई दूसरा है.

वह उसके घर गया. (वह 'उसके' से निर्दिष्ट व्यक्ति से भिन्न है)
मैं आप को अपना मानता हूँ. (अर्थात, आप मेरे हैं)

3. जब वाक्य में कर्ता, कर्म दोनों हों, तो 'अपना' का संबंध कर्ता से ही जुड़ता है, कर्म से नहीं. *मैंने राम को अपनी कमीज़ दिखायी. राम, रमेश और दिनेश को अपने घर ले गया. आप मुझे मेरे हाल पर ही छोड़ दीजिये (?अपने हाल पर).*

4. अगर एक वाक्य में दो उपवाक्य हों, तो 'अपना' का प्रयोग संबद्ध उपवाक्य तक ही सीमित होता है, दूसरे उपवाक्य में उसका प्रयोग नहीं होता.

मैंने राम से कहा कि मेरे घर आओ.
मैंने राम से कहा कि तुम अपने घर जाओ.
(अर्थात राम अपने घर (मेरे घर नहीं) जाएगा)
सदाशिव ने अपने बच्चों को अपने मामा के पास भेजा.
(बच्चे सदाशिव के, मामा भी सदाशिव के)
सदाशिव ने अपने बच्चों को उनके मामा के पास भेजा.
(बच्चे अपने मामा के घर गये)

4.1. अगर हम 4 के दूसरे वाक्य को सरल वाक्य में रूपांतरित करें, तो रूप बनेगा—*मैंने राम से (अपने) घर जाने के लिए कहा.* याने इस वाक्य में राम अपने घर जा रहा हो, तो 'अपने' की आवश्यकता नहीं. अगर 'अपने' का इस्तेमाल किया ही जाए, तो उसका कर्ता 'राम' से संबंध जुड़ जाता है. इसी तरह अंतिम वाक्य में 'उनके' से भ्रम हो सकता है. 'उन' बच्चों के अतिरिक्त और भी कोई हो सकता है. *गणेश ने सदाशिव से कहा कि मैं अपने मामा के घर जा रहा हूँ. अपने बच्चों को भी मेरे साथ भेज दीजिये. सदाशिव ने अपने बच्चों को उनके मामा के घर भेज दिया.* ऐसे वाक्यों में भ्रम दूर करने के लिए दुहरे संबंध कारक का प्रयोग किया जाता है. जैसे, मैंने राम से उसके अपने घर

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाने को कहा *सदाशिव ने (अपने) बच्चों को उनके/अपने मामा के घर भेजा*
'अपना' के प्रयोग की समस्या के लिए **कर्ता की अवधारणा** देखें.

4.1.1. इस अर्थ में 'अपना' निजी के अर्थ में विशेषण भी है.

वे किराये के मकान में रहते हैं ? नहीं, उनका अपना मकान है.
यह आपके पास रमेश की किताब है ? नहीं, मेरी अपनी है.
आप रेलों की सुरक्षा करें. रेल आपकी अपनी संपत्ति है.

5. कर्ता के साथ 'अपना' का संबंध निश्चित हो जाए, तो हम कई वाक्यों में सही कर्ता का भी पता लगा सकते हैं, जिनके संबंध में मतभेद है. कई वैयाकरण *मुझे ज़ुकाम है* में 'ज़ुकाम' को कर्ता मानते हैं. नीचे के उदाहरण देखिए—

हमें अपना काम ख़ुद करना चाहिये.
मुझसे अपना ही काम नहीं होता, आपका काम कैसे करूँ ?
हमें बाढ़-पीड़ितों को अपनी इस्तेमाल की हुई चीज़ें दे देनी चाहिए.
(बाढ़-पीड़ितों को हमारी चीज़ें मिल जानी चाहिए)

तात्पर्य यह है कि 'अपना' का संबंध जिस शब्द से है, वही कर्ता है, भले उसमें परसर्ग लगा हो.

6. जब कर्ता बहुवचन में हो और कर्म का फल सबको अलग-अलग मिले या प्रभाव सब पर अलग-अलग पड़े, तो 'अपना' की **पुनरुक्ति** होती है.

तुम सब अपनी-अपनी जगह बैठो.
सबने अपनी-अपनी किताबें हाथ में उठायीं.
बच्चो, सब लोग अपना-अपना बस्ता यहाँ ला कर रखो.
सब लोग सिनेमा के बाद अपने-अपने घर चले गये.

7. कई अहिंदी भाषी 'अपना' की जगह संबंधकारक सर्वनामों का ही गलत प्रयोग करते हैं. **तुम्हारा नाम बताओ. *राम उसके घर गया. *(मैं) मेरी कोई चीज़ तुम्हें नहीं दूँगा.*

बिना आवश्यकता के 'अपना' का प्रयोग करना भी गलती है. **अपनी तो यही राय है कि···. *अपने को कुछ रुपये चाहिए. *अपना कोई नहीं है इस दुनिया में.*

8. द्रविड़ भाषाओं में उत्तम पुरुष बहुवचन के दो सर्वनाम हैं—एक जिसमें श्रोता सम्मिलित हैं और दूसरा जिसमें श्रोता सम्मिलित नहीं हैं. शायद इसके प्रभाव से या ऐसी ही समान व्यवस्था के अंतर्गत मध्य प्रदेश में श्रोता रहित सर्वनाम के रूप 'अपन', 'अपुन' का प्रयोग होता है. चूँकि हिंदी में एक व्यक्ति अपने लिए 'हम' का प्रयोग करता है, अपने लिए एक वचन में 'अपन', 'अपुन' का प्रयोग भी प्रचलित है. इसे स्थानीय विशेषता मान सकते हैं. ऐसे प्रसंगों में क्रिया बहु-वचन में होगी. *अच्छा, भाई ! अपन चलते हैं. अपन को इसकी कोई चिंता नहीं.* ऊपर 7 के 'अपना' को ऐसे स्थानीय प्रयोग के रूप में माना जा सकता है, लेकिन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानक हिंदी की दृष्टि से वह अभी स्वीकृत नहीं है.

9. संबंध कारक सर्वनाम को बल के साथ स्पष्ट करने के लिए 'अपना' का प्रयोग होता है. *यह तो मेरा अपना मामला है,* आप इसमें *दख़ल न दें. मेरी भी अपनी कुछ मजबूरियाँ हैं. यह हमारी अपनी जातीय विशेषता है.* इन प्रयोगों को शैलीगत विशेषता मान सकते हैं.

10. *अपना* से नाम धातु *अपनाना* तथा संज्ञा *अपनापन, अपनत्व* आदि शब्द बनते हैं. ये *अपना* के मूल अर्थ के साथ ही निष्पन्न हुए हैं.

अभि- देखें **प्रति-**

अभिवादन 1. मैं यहाँ अभिवादन से तात्पर्य उस प्रसंग से लेता हूँ, जहाँ दो व्यक्ति मिलते हैं और संपर्क स्थापित करते हैं. यह संपर्क हर दो व्यक्तियों के सामाजिक व्यापार या क्रिया-कलाप में दिखायी पड़ता है. प्रथम संपर्क में दो व्यक्ति परिचित होते हैं, बाद के संपर्कों में उनमें पूर्व परिचय के आधार पर परस्पर व्यवहार निश्चित हो चुका होता है, जो दोनों व्यक्तियों की शिक्षा, उम्र, सामाजिक स्तर, लिंग, जाति, विश्वास आदि कई कारकों पर आधारित होता है. इस परस्पर व्यवहार के आधार पर उनमें अभिवादन के कई रूप दिखायी पड़ते हैं. 'अभिवादन' के वृहत शीर्षक के अंतर्गत हम जिन सामाजिक प्रसंगों को लेते हैं, उन्हें निम्न प्रकार से एक आरेख द्‌वारा दिखा सकते हैं :
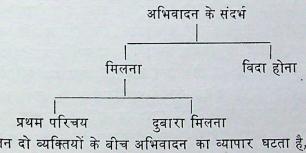
जिन दो व्यक्तियों के बीच अभिवादन का व्यापार घटता है, उन्हें निम्नलिखित आरेख द्‌वारा वर्गों में विभाजित कर सकते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
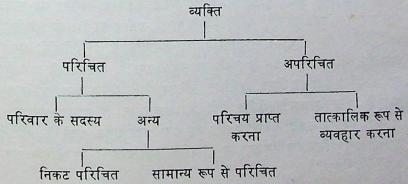
अभिवादन को प्रभावित करने वाले कारक निम्न प्रकार से हैं–उम्र, लिंग, जाति, पद या सामाजिक स्तर, शिक्षा, वैयक्तिक विश्वास (धार्मिक आदि), संगठन सदस्यता आदि.

2. अभिवादन तथा संपर्क करने के तीन रूप हैं :
   हाव-भाव
   मौखिक अभिव्यक्ति–संवाद
   अभिवादन शब्द का प्रयोग.

ये तीन रूप अकेले आ सकते हैं या तीनों या कोई दो एक साथ आ सकते हैं. हाव-भाव में एक ओर परिचय सूचक मुस्कान आदि अंग चेष्टाएँ हैं, दूसरी ओर समाज द्वारा स्वीकृत शारीरिक व्यापार हैं. ये व्यापार प्रायः मौखिक अभिवादन के शब्दों पर आधारित होते हैं. 'नमस्ते' के साथ हाथ जोड़ना, 'सलाम' के साथ हाथ माथे तक उठाना, 'गुड मार्निंग' के साथ हाथ मिलाना, 'जय हिंद' के साथ सैल्यूट करना स्वाभाविक रूप से जुड़ते हैं. इसी तरह अन्य वर्ग या संगठन या संस्थाएँ अपने लिए अलग व्यापार निश्चित कर लेते हैं. 'हेल हिटलर' कहते नाज़ी दायाँ हाथ सीधे आगे बढ़ाते थे. इन व्यापारों पर लिखित माध्यम से इससे अधिक विस्तार से कुछ कहना कठिन है.

संपर्क की स्थिति के कारकों तथा अभिवादन के प्रकार्यों के अनुसार हाव-भाव में भी अंतर होता है. जहाँ इस अभिवादन का उद्देश्य आदर देना होता है, वहाँ आदर देने और प्राप्त करने वाले के स्तर के अनुसार भिन्न व्यापार होंगे. आदर देने वाला बड़े के पैर छूता है या दंडवत करता है, बड़ा व्यक्ति आशीर्वाद की मुद्रा में सिर पर हाथ रखता है. या छोटा हाथ जोड़ता है तथा बड़ा स्वीकृति में सिर हिलाता है (यहाँ 'बड़ा', 'छोटा' उम्र के आधार पर नहीं, सभी कारकों से प्राप्त स्तर भेद के आधार पर हैं). जहाँ स्तर भेद नहीं है या स्तर भेद के बावजूद वर्ग सदस्यता के कारण समान अभिवादन स्वीकृत है, व्यक्ति एक दूसरे के अभिवादन को दुहराते हैं.

हिंदू पद्धति में बड़ों के सामने आदर प्रकट करने का तरीका था साष्टांग नमस्कार या दंडवत करना. व्यक्ति बड़े के सामने ज़मीन पर लेट कर, अपने हाथ दूसरे के पैरों तक जोड़ कर ले जाता है. यह व्यापार सरल होते-होते अब एक हाथ नीचे ले जाते हुए हल्के-से झुकने तक पहुँच गया है. आश्चर्य की बात है कि यह शारीरिक व्यापार बिना शारीरिक परिश्रम के मौखिक व्यवहार से प्रकट होता है. वक्ता *पालागौं* (क्षेत्रीय भेदों के आधार पर *पा लागी*, *पालागन* या *पा लगी* भी कह सकता है) या दंडवत कह कर आदर प्रकट करते हैं. संबोधित व्यक्ति यहाँ अभिवादन दुहराता नहीं, बल्कि हाव-भाव से या मौखिक रूप से आशीर्वाद देता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2.1. मौखिक अभिव्यक्ति के संदर्भ में दो प्रकार के वाक व्यापार हैं : कहीं व्यक्ति औपचारिक रूप से अभिवादन के शब्द बोलते हैं, कहीं बिना औपचारिकता के संवाद करते हैं.

औपचारिक शब्दों में स्तर भेद युक्त प्रसंग (ऊपर के अनुसार) आदर देने तथा प्रतिक्रिया करने के संदर्भ में घटित होते हैं. इस अभिव्यक्ति को देखिए :

वक्तव्य	**प्रतिवक्तव्य**	
नमस्कार	खुश रहो	
प्रणाम	जीते रहो	पुरुष से
पालागौं, दंडवत	चिरंजीव रहो	पुरुष से
	जीती रहो	स्त्रियों से
	सौभाग्यवती रहो	स्त्रियों से

औपचारिक शब्दों में दूसरे वे हैं, जो वक्ता, प्रतिवक्ता दोनों से प्रायः समान रूप से प्रयुक्त होते हैं. व्यक्तियों में स्तर भेद न हो या व्यक्ति संगठन-सदस्य हों, तब यह स्थिति आती है. ऐसे अभिवादन में *नमस्कार*, *नमस्ते* अन्य रूपों से अधिक प्रचलित हैं तथा वर्ग-विशेष से बद्ध नहीं हैं. इनमें भी 'नमस्कार' अधिक प्रचलित है. दोनों का अर्थ है 'मैं तुम्हें नमन करता हूँ'. *आदाब अर्ज़*, *आदाब* (अर्थ 'आदर'), *सलाम* (अर्थ 'ठीक-ठाक होना') उर्दू पढ़े-लिखे लोगों में या मुस्लिमों द्वारा प्रयुक्त होते हैं. मुस्लिम प्रायः *अस्सलाम अलैकुम* (सलामत तुम्हें हो) और प्रतिवक्तव्य में *वलैकुम अस्सलाम* (तुम्हें भी सलामत हो) कहते हैं.

हिन्दू देवी-देवताओं पर आधारित *राम-राम*, *जय रामजी की*, *जय गणेश*, *जय श्री कृष्ण*, *जय सियाराम*, *जय गोपाल*, *जय बजरंग बली की*, *हरिओम*, *जय बम भोले की* आदि अभिवादन के शब्द हैं. दूसरा व्यक्ति इन शब्दों को दुहराता है. इन शब्दों की संख्या शायद उतनी ही है, जितने हमारे ग्रंथों में देवी-देवता हैं. इन शब्दों के प्रयोग का तात्पर्य है कि वक्ता तथा प्रतिवक्ता एक दूसरे को नमन नहीं करते, बल्कि दोनों मिल कर भगवान की स्तुति करते हैं.

जय हिंद, *बाबा नाम केवलम्*, *जय संतोषी माता* आदि अभिवादन संगठन-सदस्यों के बीच प्रचलित हैं.

2.2. अभिवादन का तीसरा प्रकार वह है, जिसमें व्यक्ति निश्चित, औपचारिक शब्दों का प्रयोग नहीं करता, बल्कि प्रश्न करता है और दूसरा उसका उत्तर देता है. ये प्रश्न श्रोता के स्वास्थ्य, परिवार की स्थिति आदि पर होते हैं और दूसरा समुचित उत्तर देता है. आगे प्रश्न तथा उत्तर के वाक्य दिये गये हैं, आप उचित उत्तर स्वयं ही ढूँढ़ सकते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य	प्रतिवक्तव्य
	(अ) पूछे गये प्रश्न के उत्तर में :
क्या हाल है?	मज़े हैं.
कहो, कैसे हो?	सब मज़े में हैं.
रमेश जी, क्या हालचाल है?	ठीक ही है.
कहिए, ठीक-ठाक है?	सब अच्छे हैं.
सब कुशल हैं?	सब आनंद-मंगल है.
सब मज़े में?	चल रहा है.
बाल-बच्चे ठीक हैं?	गाड़ी चल रही है.
कहो भाई, अच्छे हो?	ज़िंदगी कट रही है.
	(आ) पूछने के लिए कृतज्ञता-ज्ञापन
कहो भाई, ठीक हो?	सब दया है.
आइए, ख़ैरियत तो है?	मेहरबानी आप की.
कहिए जनाब, मिजाज़ कैसे हैं?	भगवान की कृपा है/ख़ुदा का शुक्र है/ कृपा है/इनायत है/दुआ है (आप की).

हिंदी में हमेशा प्रतिवक्ता प्रश्न का उत्तर देता है तथा (प्रायः) कृतज्ञता-ज्ञापन करता है. फिर आगे दोनों अन्य बातें करने लगते हैं. लेकिन प्रति प्रश्न और प्रत्युत्तर भी संभव हैं, जो अंग्रेज़ी उदाहरण के अनुसार दुहराना मात्र नहीं होते.

(अ) कहो भाई, कैसे हो?
(आ) ठीक ही है. आपके घर पर सब कुशल-मंगल?
(अ) हाँ, सब मज़े में हैं.

3. अब हम व्यक्तियों के संदर्भ में अभिवादन के प्रकारों को देखें. सामान्य रूप से अभिवादन दिन में एक बार, याने प्रथम बार मिलते समय किया जाता है. अंग्रेज़ी परिवार में बच्चे तथा माँ-बाप 'गुड मार्निंग' से दिन शुरू करते हैं, रात को सोते समय 'गुड नाइट' कहते हैं. भारत में बहुत-से परिवारों में यह तरीका चलता है. ऐसे परिवारों में हर व्यक्ति दूसरे से दिन में एक बार ये शब्द बोलता है. लेकिन जिन परिवारों में ये शब्द बोलने की परंपरा नहीं है, वहाँ व्यक्ति एक दूसरे का किसी औपचारिक शब्द से अभिवादन नहीं करता. लेकिन उल्लेखनीय है कि 'गुड मार्निंग' तथा 'गुड नाइट' का व्यवहार पढ़े-लिखों में बढ़ता ही जा रहा है.

कुछ लोगों ने इन शब्दों के हिंदीकरण का यत्न करते हुए *सुप्रभातम*, *शुभ रात्रि* या *शुभ यामिनी* जैसे रूप गढ़े हैं. ये रोचक हैं, अव्यवहृत हैं. परिवार के सदस्य प्रायः दिन में पहली बार मिलने पर समयानुकूल कोई वाक्य बोल सकते हैं, जो संवाद बढ़ाए. जैसे,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बच्चे से—*आ, उठ गया मेरा राजा बेटा?*

अस्वस्थ पिता से—*पिता जी, रात को नींद आयी थी?*

बहन भैया से—*भैया, उठ गये. चलो, चाय तैयार है.*

3.1. निकट परिचय के लोग भी अक्सर औपचारिक शब्दों से अभिवादन नहीं करते. ये प्रायः सीधे संवाद पर आते हैं. मैं अपने अनुभव से एक संवाद दुहरा रहा हूँ.

क ख ग : *अबे साले, गुप्ता के बच्चे, क्या कर रहा है?*

श्री गुप्ता : *अबे गधे, काहे बाहर से चिल्ला रहा है, अंदर तो आ.*

ये पंक्तियाँ दो व्यक्तियों के बीच लड़ाई का वर्णन नहीं, दो मित्रों के बीच 'अभिवादन' का दृश्य है. लोगों के बीच जितनी गहरी मित्रता और समीपता होगी, उसी अनुसार इस संवाद का रूप बनेगा. आवश्यक नहीं कि मित्र गाली देकर ही मिलें. ऊपर के संवाद का विश्लेषण करें, तो पता चलेगा कि यहाँ **गाली** देने का उद्देश्य निकटता जताना है, जो वास्तव में है नहीं. क ख ग दूसरे को थोड़े ही दिन से जानता है, क्योंकि वह नाम से ('रमेश' आदि) संबोधित न करके 'गुप्ता' कहता है. दोनों थोड़े दिन पहले ही मिले होंगे और 'गुप्ता जी' से अभी 'गुप्ता' तक पहुँच पाये हैं. लेकिन अपने को निकट के सिद्ध करने के उद्देश्य से ये गालियों का बेधड़क प्रयोग कर रहे हैं. सामान्य रूप से निकट परिचय के व्यक्ति सीधे संवाद से 'कुशल-क्षेम' पूछते हुए बातचीत आगे बढ़ाते हैं.

3.2. सामान्य रूप से परिचित व्यक्तियों के बीच ही औपचारिक अभिवादन घटित होता है. यह अभिवादन सामाजिक कारकों के आधार पर भिन्न-भिन्न होता है. ऊपर हम जाति, धर्म, लिंग तथा संगठन के नारों के अभिवादन के बारे में देख चुके हैं. लिंग के बारे में मेहरोत्रा (1978) का कथन है कि स्त्रियाँ *जय बजरंग बली की, जय भोले की* आदि से अभिवादन नहीं करतीं. शायद इसलिए कि ये दोनों क्रमशः बल तथा विनाश के देवता हैं. स्त्रियाँ शारीरिक रूप से दंडवत नहीं करतीं, बल्कि धीरे-से पैर छूती हैं या 'पालागन' कहती हैं (कई घरों में स्त्रियाँ अपने माँ-बाप के पैर नहीं छूतीं. इस संदर्भ में विस्तार देना यहाँ संभव नहीं है). अन्यथा स्त्री-पुरुष के अभिवादन का रूप समान है.

जाति की दृष्टि से घर में उम्र से छोटे अपने से बड़ों को तथा निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों को (प्रायः ब्राह्मणों को) पालागन कहते हैं. इसका प्रयोग प्रायः शहरों में तथा पढ़े-लिखों में कम हो रहा है—विशेषकर धार्मिक प्रसंग को छोड़ कर अन्य संदर्भों में दो व्यक्ति *नमस्कार* का प्रयोग ही अधिक करते हैं.

शिक्षा के कारण भेद कम होते जा रहे हैं. शिक्षित व्यक्ति *नमस्कार, नमस्ते, आदाब* तथा *हलो, गुड मार्निंग, गुड नाइट* आदि तक अपने को सीमित करता जा रहा है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उम्र के हिसाब से परिचित व्यक्तियों में ही आदर देने तथा उत्तर में आशीर्वाद देने वाली बात दीखती है. आशीर्वाद भी पैर छूने, *प्रणाम, पालागौं* कहने के संदर्भ में दिया जाता है, *नमस्कार* के उत्तर में नहीं. अन्य औपचारिक अभि-वादनों में प्रायः वही शब्द दुहराया जाता है. अतः यहाँ उम्र के कारण कोई अंतर नहीं है. लेकिन देखा गया है कि उम्र में बड़े व्यक्ति भी अपने मालिकों के बच्चों के पैर छूते हैं या ब्राह्मण भी गुरु के पैर छूते हैं जो उम्र में छोटा होता है. यहाँ उम्र अन्य कारकों से प्रभावित होती है.

3.3. किसी व्यक्ति से परिचय प्राप्त करते समय भी उक्तियाँ प्रायः सुनिश्चित होती हैं. जब व्यक्ति दूसरे से मिलता है, परिचय प्राप्त करने के लिए कोई औप-चारिक शब्द बोलता है; साथ में या उसकी जगह कोई वाक्य बोलता है. ये संवाद निम्न प्रकार के हो सकते हैं :

लगता है आपको कहीं देखा है? आपका शुभनाम?

सुनिए आप ही श्री···हैं?

रेल गाड़ी में : *वह पत्रिका देख सकता हूँ?* (थोड़ी देर बाद) *हैदराबाद जा रहे हैं?*

इसके मुकाबले वह संवाद अधिक समीचीन है, जहाँ परिचय तीसरा व्यक्ति कराता या देता है. एक उदाहरण देखें :

अ–*गोपाल, इनसे मिलो, सेठ रमाकांत जी. सेठ जी, यह मेरा दोस्त है, गोपाल.*

गोपाल–*नमस्कार.*

सेठ–*नमस्कार.*

दूसरा उदाहरण–समान स्तर के लोगों में :

अ–*गोपाल जी, इनसे परिचय कराता हूँ/आपसे परिचय है? ये/आप हैं श्री रमेश, हमारे स्कूल के नये अध्यापक. रमेश जी, ये/आप श्री गोपाल हैं, गणित के अध्यापक.*

रमेश–*नमस्कार.*

गोपाल–*नमस्कार.*

जहाँ एक व्यक्ति स्तर से बहुत ऊँचा हो, वय से बड़ा हो या जिसके घर लोग पहुँचते हों, वहाँ उस व्यक्ति का परिचय मान लिया जाता है. सिर्फ़ एक ही व्यक्ति का परिचय दिया जाता है :

अ–*पिता जी, यही है रमेश. कल इसके बारे में बताया था न.*

रमेश–*नमस्कार.*

पिता जी–*नमस्कार.*

3.4. जहाँ दूसरे व्यक्ति से परिचय प्राप्त करना अभीष्ट नहीं है, बल्कि उससे

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिर्फ़ काम है, वहाँ परिचय या अभिवादन से ज्यादा **संबोधन** प्रमुख रहता है. उच्चपद के व्यक्तियों से *नमस्कार* के बाद बात शुरू की जाती है. टिकट खिड़की पर *सुनिए*, सड़क पर आम व्यक्ति से *सुनना भाई*, संभ्रांत व्यक्ति से *जनाब*, *भाई साहब* आदि के बाद बात की जाती है. प्रतिवक्ता 'नमस्कार' के उत्तर में *नमस्कार* कहता है, अन्य प्रसंगों में बिना प्रत्युत्तर के उत्तर देता है. काम पूरा होने के बाद वक्ता प्रायः *धन्यवाद*, *मेहरबानी*, *शुक्रिया* आदि कह कर कृतज्ञता प्रकट करता है.

4. अभिवादन के चार प्रमुख प्रकार्य हैं. (अ) बड़ों को आदर देना और बड़ों की ओर से आशीर्वाद या शुभ संदेश. यह प्रकार्य परिचित तथा बड़े व्यक्तियों के साथ संपर्क में ही होता है. लेकिन जब अपना काम निकालना होता है, वहाँ तात्कालिक व्यापार में भी व्यक्ति दूसरे के प्रति आदर और नम्रता का भाव बढ़ाता जाता है. (आ) परिचय प्राप्त करना. प्रथम परिचय तथा बाद के संपर्कों में अभिवादन के द्वारा परिचय में आत्मीयता और निकटता बढ़ती है. (इ) अभिवादन संगठन-सदस्यता का सूचक है, वर्ग-पहचान का आधार है. (ई) अभिवादन दो व्यक्तियों में वार्तालाप प्रारंभ करने का पहला सोपान है.

मेहरोत्रा (1978) का कथन है कि औपचारिक शब्द उसी रूप में दुहराये जाते हैं और उनमें अन्य प्रतिवक्तव्य की गुंजाइश नहीं है. लेकिन यह बात हमेशा सत्य नहीं है. अगर कोई व्यक्ति *नमस्कार* कहे तो दूसरा *आदाब* कह सकता है. अगर मैं आनन्द मार्ग में विश्वास न करूँ, तो वर्ग-पहचान के अभिवादन के उत्तर में सिर्फ़ *नमस्कार* कह सकता हूँ. सिर्फ़ प्रकार्यों के पूरे होने से मतलब है, शब्द प्रयोग से नहीं.

वे यह भी कहते हैं कि *मैं आप के हाथ जोड़ता हूँ*, *मैं आप के पैर पड़ता हूँ* आदि में क्षमायाचना एक प्रकार्य है. ये वास्तव में अभिवादन नहीं हैं, बल्कि यहाँ अभिवादन के बाद के परस्पर व्यवहार की स्थिति है आपने स्वयं ही बताया है कि अभिवादनकर्ता पूरे वाक्य में *आप को दंडवत करता हूँ* नहीं कहता, फिर नमस्कार के लिए *आप के पैर पड़ता हूँ* क्योंकर होगा. न इससे संवाद शुरू हो सकता है. यहाँ वक्ता संवाद के दौरान अपने को दयनीय बताता है और दूसरे व्यक्ति को आदर का पात्र बना कर कृपा की याचना करता है.

5. अंत में हम अभिवादन के संदर्भ में विदा लेते समय के व्यापारों के बारे में देखेंगे. सिर्फ़ उर्दू पढ़े-लिखे लोग तथा मुस्लिम विदाई के समय अलग शब्द का प्रयोग करते हैं. वे परस्पर *ख़ुदा हाफ़िज़* (ईश्वर रक्षक है) का प्रयोग करते हैं. प्रायः अन्य सभी संदर्भों में हाव-भाव तथा औपचारिक शब्द वही रहते हैं, अर्थात व्यक्ति मिलते-बिछुड़ते दोनों बार *राम-राम* आदि कहता है.

औपचारिक शब्द से पहले संवाद द्वारा बातचीत समाप्त की जाती है. उस

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समय के वाक व्यवहार के कुछ उदाहरण देखिए :

	वक्ता	प्रतिवक्तव्य
सूचना—	अच्छा, मैं चलता हूँ	अच्छा
आज्ञा लेना—	अच्छा, मैं चलूँ?	अच्छा, अपना ख़याल रखना
	इजाज़त दीजिए	सब को मेरा नमस्कार कह दीजिए
		अच्छा, आते रहिए
		अच्छा, फिर कब आना होगा?
		ख़ुशी हुई आप से मिल कर (प्रथम परिचय में)

अंग्रेज़ी के प्रभाव से आजकल गुड बाई, बाई, टाटा (बच्चों में) आदि का प्रयोग बढ़ रहा है.

अमुक 1. इसका प्रयोग किसी की बात दुहराने में, किसी कही हुई बात के बदले में होता है, जिसका हवाला दूसरा वक्ता न जानता हो, या न देना चाहता हो.

(मैं 'हैंडलूम हाउस' से एक कमीज़ ख़रीद लाया हूँ) उसने कहा कि वह अमुक जगह से अमुक चीज़ ले आया है.

(मैं परसों कलकत्ता जा रहा हूँ) उसने बताया कि वह अमुक दिन अमुक जगह जा रहा है.

2. अमुक का पर्याय **फ़लाँ/फ़लाना** है. उसने पूछा कि फ़लाँ आदमी कहाँ रहता है. उसने कहा था कि मैं फ़लाँ दिन फ़लाँ तारीख़ को आप के घर आऊँगा, लेकिन वह उस दिन नहीं आया था.

3. 'अमुक' या 'फ़लाँ' प्रत्यक्ष उक्ति में नहीं आते. *मुझे फ़लाँ आदमी से मिलना है. बल्कि मुझे एक/किसी आदमी से मिलना है. *आप अमुक दिन आइए बल्कि आप किसी दिन/15 तारीख़ को आइए. इन्हीं वाक्यों की पुनः अभिव्यक्ति देखें— उसने कहा कि उसे फ़लाँ आदमी से मिलना है. उन्होंने कहा कि मैं अमुक दिन, अमुक जगह उससे मिलूँ.

अर्थ सामीप्य दिखाने वाले प्रयोग जब हम कहते हैं मैंने दो रुपये ख़र्च किये, वहाँ रुपयों की संख्या असंदिग्ध है. लेकिन ऐसे प्रसंग आते हैं, जहाँ हम ऐसी निश्चित जानकारी दे नहीं सकते और सिर्फ़ अनुमान से ही जवाब दे सकते हैं. ऐसे प्रसंगों को हम इस प्रकरण में देखेंगे.

1. जब हमें निश्चित जानकारी न हो तो हम शायद, करीब, लगभग आदि का प्रयोग करते हैं.

वहाँ शायद सौ लोग होंगे. वे शायद कल नहीं आये थे.
वे लोग शायद रेलगाड़ी से जाएँगे. मैं कल शायद नहीं जा सकूँगा.
मैं करीब सात बजे वहाँ पहुँचा था

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वे लोग अपना काम करीब-करीब पूरा कर चुके थे.

लोगों की संख्या करीब चार सौ होगी~चार सौ के आसपास /के करीब/ के निकट होगी~लगता है/मेरा अंदाज़ है कि वहाँ सौ आदमी होंगे.

ध्यान दीजिए कि अंदाज, करीब आदि के साथ तथ्यात्मक क्रिया 'है' का प्रयोग नहीं होता, भविष्य रूप 'होगा' का प्रयोग होता है. 'है' निश्चयात्मक स्थिति सूचित करने वाली क्रिया है.

अनिश्चय की स्थिति में निश्चय सूचित करने वाले शब्द प्रयुक्त नहीं हो सकते. **मैं करीब चार बजे ठीक वहाँ पहुँचा.* **शायद वे लोग कल की मीटिंग में ज़रूर जाएँगे.*

2. गिनती के शब्दों के साथ अर्थ सामीप्य प्रकट करने वाले निम्नलिखित प्रयोग मिलते हैं :

2.1. दो अलग संख्याओं का प्रयोग–*वहाँ चार-पाँच लोग बैठे हैं. मीटिंग में सौ-दो सौ लोग थे.* मेरे बीस-पच्चीस रुपये इसी चक्कर में ख़र्च हो गये. संख्याओं के योग का भी विधान है, प्रयोगकर्ता अपनी ओर से चाहे किन्हीं दो संख्याओं को मिला नहीं सकता. **चार-सात*, **दस-पच्चीस*. छोटी संख्याओं में दो निकटस्थ संख्याएँ साथ चल सकती हैं, दो-तीन, *चार-पाँच*, *सात-आठ*; दो निकटस्थ सम संख्याएँ साथ चल सकती हैं, दो-चार, *आठ-दस*, *दस-बारह*, विषम संख्याओं में *पाँच-सात* प्रचलित है, बड़ी संख्याओं में पाँच या दस के अंतर से निकटस्थ संख्याएँ चल सकती हैं (30-40, 60-65) और बड़ी संख्याओं में इसी तरह के अंतर के साथ निकटवर्ती संख्याओं का योग हो सकता है (साठ-सत्तर हज़ार, लाख-दो लाख, दस-बीस करोड़ आदि). प्रायः छोटी संख्या पहले रहती है और बड़ी संख्या बाद में आती है. उक्त कारणों से **431-432*, **सत्तर-पैंसठ हज़ार*, **तीस-पचास लाख*, *?21-23* आदि संख्याएँ अमानक हैं.

2.2. इन संख्याओं के साथ 'कोई' का प्रयोग ऐच्छिक है. *उसके पास कोई तीस-चालीस किताबें होंगी (?हैं).* सिर्फ़ 'कोई' से भी अर्थ सामीप्य प्रकट कर सकते हैं. *वहाँ कोई सौ आदमी थे.* इस स्कूल में कोई हज़ार (*~हज़ार-बारह सौ*) *छात्र होंगे.*

2.3. अगर बड़ी संख्याओं में अनुमान प्रकट करते हुए भी सही संख्या का प्रयोग करना हो तो *शायद/करीब/आसपास/लगभग/या* का प्रयोग कर सकते हैं :

अनुमान–*आंध्र प्रदेश के विधायकों की सख्या* करीब *300* है~*300* के आस-पास है

कोई *300* होगी.

250-300 है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संख्या में भ्रम– *मेरे ख़याल से* *आ० प्र० के विधायकों की संख्या*
अगर मैं गलत न होऊँ तो *294 है*
जहाँ तक मेरी जानकारी है
शायद

आ० प्र० के विधायकों की संख्या 294 या 295 है (मुझे ठीक याद नहीं है).

3. हिंदी में *चाय-वाय* आदि **पुनरुक्ति** के प्रयोग उल्लिखित वस्तु के समीप का अर्थ देते हैं. जब चाय सामने हो, तो *चाय-वाय पी लो* नहीं कह सकते. *चाय पिओगे?* में आफ़र सिर्फ़ चाय का है, अन्य किसी चीज़ ('वाय') का नहीं. जब आप पूछते हैं *चाय-वाय पिओगे?*, तो आप चाय या इसी तरह की कोई और चीज़ पिलाने का वादा कर रहे हैं. इसी तरह किसी भी ऐसे शब्द का अर्थ 'क या उसके निकट का ऐसा कोई' से स्पष्ट कर सकते हैं. लेकिन निश्चित अर्थ के संदर्भ में यह पुनरुक्ति गलत होगी. हिंदी भाषी इस अर्थ-सामीप्य का आलंकारिक प्रयोग करते हैं. जिससे 'चाय-वाय' के लिए पूछा जाता है, वह इसका निकट अर्थ 'चाय' नहीं, बल्कि 'चाय के साथ की खाने की चीज़ें' ले कर *चाय छोड़ो, वाय चल सकती है* कहता है. निकट अर्थ क्या है, यह वक्ता और श्रोता के बीच का समझौता है.

3.1. जो शब्द वर्ग निश्चित अर्थ देते हैं, उनमें पुनरुक्ति नहीं हो सकती. जैसे सर्वनाम (**तुम-उम*), व्यक्तिवाचक संज्ञा (**राम-वाम*) इसी वर्ग में आते हैं. विशेषणों में अर्थ सामीप्य की और व्यवस्था है (देखें नीचे 4.1.) और संख्यावाचक शब्दों में भिन्न व्यवस्था है (देखें ऊपर 2). अतः इनमें भी पुनरुक्ति सामान्य रूप से संभव नहीं (**चार-वार, बड़ा-वड़ा*).

3.2. लेकिन कथोपकथन में वक्तव्य से असहमति प्रकट करते हुए इन शब्दों में पुनरुक्ति का प्रयोग हो सकता है.

यह मकान अच्छा है	*अच्छा-वच्छा कुछ नहीं.* (अर्थात अच्छा तो है नहीं, 'अच्छा' के निकट भी कहीं नहीं)
दिल्ली की बात सुनो.	*दिल्ली-विल्ली की बात छोड़ो.* (अर्थात दिल्ली या इस तरह की किसी बात में मेरी रुचि नहीं है)
वहाँ पचास आदमी थे	*पचास-वचास कुछ नहीं, सिर्फ़ दस-पंद्रह आदमी थे.*

4. 'जैसा, -नुमा, -वत' समानता सूचित करने वाले रूप हैं, जो संज्ञादि शब्दों में जुड़ते हैं. *हाथी-जैसा आकार, बच्चों-जैसी बात, घर-जैसा वातावरण, रोने-जैसी आवाज़, पत्थरनुमा वस्तु, मातृवत प्रेम, मूर्तिवत बन जाना.* -नुमा अविकारी रहता है.

4.1. विशेषणों में -सा लगता है. *मुझे एक बड़ी-सी मेज़ चाहिए* में बड़ी की स्थिति संदिग्ध है. वक्ता 'बड़ा' के आसपास की किसी भी स्थिति के लिए तैयार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है. लेकिन एक मेज़ को देख कर आप यही कहेंगे :

*यह मेज़ उससे बहुत बड़ी है (*बड़ी-सी है)*

4.2. विलोमपरक संयुक्त शब्दों से हम दोनों स्थितियों तथा बीच की स्थितियों का आशय प्रकट करते हैं. मेरे पास *कई छोटे-बड़े तौलिये हैं* से हम तौलियों के आकार की विविधता सूचित करते हैं. यही कारण है कि सिर्फ़ दो चीज़ों के संदर्भ में यह प्रयोग नहीं आ सकता, क्योंकि वहाँ हमें निश्चित सूचना देनी होती है.

मेरे पास एक बड़ा और एक छोटा तौलिया है.

**मेरे पास दो छोटे-बड़े तौलिये हैं.*

मेरे पास तीन-चार छोटे-बड़े तौलिये हैं

अ-लोप हिंदी के शब्दों के अंत में आने वाले व्यंजन हलंत में तो नहीं लिखे जाते, लेकिन उनका व्यंजनांत (स्वर रहित) उच्चारण होता है. इस पर सभी विद्‌वान सहमत हैं कि 'कान, नाक, कार, दाल, कमल, नगर' जैसे शब्दों के अंत में व्यंजन उच्चरित होते हैं, स्वर नहीं. इसे हलंत कहने पर कई विद्‌वानों को आपत्ति होती है, क्योंकि संस्कृत व्याकरण की परंपरा में हलंत से तात्पर्य है बिना स्वर का वर्ण, जो चिह्न 〈्〉 से लिखा जाता है (द् प् क् ह् आदि).

मैंने भी उच्चारण तथा वर्तनी के स्तर पर इस अंतर को बनाये रखने का यत्न किया है. इस ग्रंथ में 'हलंत' ऐसे आधे वर्णों के लिए प्रयुक्त हुआ है और उच्चारण के स्तर पर स्वर रहित उच्चारण को मैंने व्यंजनांत शब्द कहा है. हलंत चिह्न न हो और आधा वर्ण बने (क, प, त, स, आदि), तो उसे आधा वर्ण कहा है. कहीं-कहीं संकेत स्पष्ट नहीं होगा (जैसे 'शरद्' हलंत शब्द भी है और व्यंजनांत भी). लेकिन इसे वर्तनी या उच्चारण के स्तर पर लें, तो भ्रम नहीं होगा.

कई भाषावैज्ञानिकों ने शब्द के मध्य या अंत में व्यंजनांत उच्चारण के बारे में विचार किया है. उनके अनुसार इन स्थलों पर /अ/ का उच्चारण था (या सैद्‌धांतिक रूप से है) जो अब लुप्त हो गया है. इसी कारण इस चर्चा को वे /अ/ के लोप की संज्ञा देते हैं. यह बात लंबे इतिहास के संदर्भ में सही है, क्योंकि हम जानते हैं कि संस्कृत 'समरस' में 〈म〉 अकारांत उच्चरित होता था. अब भी द्रविड़ भाषाओं में 〈म〉 का उच्चारण /म/ होता है, /म्/ नहीं. दूसरी ओर कई शब्दों में रूप रचना के आधार पर कहीं से /अ/ लुप्त हो जाता है और कहीं आ जाता है. इस बात को नीचे के उदाहरणों से जान सकते हैं (उच्चारण दिखाने की सुविधा के लिए स्वर रहित वर्ण हलंत से दिखाये गये हैं)

लड़्का	लड़क्पन्
गवारा	नाग्वार्
बनावट्	बनाव्टी
आदत्	आद्तन्

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस कारण अ-लोप की संज्ञा सार्थक है.

भाषावैज्ञानिकों ने (और वैज्ञानिकों की तरह) इस प्रवृत्ति के नियम ढूँढने और नियम निश्चित करने का प्रयत्न किया है और कुछ दूर तक सफल भी हुए हैं. लेकिन भाषा की जटिल व्यवस्था, विस्तृत प्रयोग क्षेत्र, भाषिक पृष्ठभूमि आदि के कारण निरपवाद नियम बन नहीं पाये हैं. दूसरी ओर मैंने अनुभव किया है कि समस्या के समाधान के लिए सिर्फ़ उच्चारण संबंधी नियम देने की जगह वर्तनी को भी साथ लिये चलना अधिक उपयोगी होगा. भाषा के शिक्षक के नाते मैं उच्चारण, वर्तनी दोनों पर ध्यान देना चाहूँगा. पूर्ववर्ती कार्यों में इस बात का अभाव है.

2. अपनी बात शुरू करने से पहले ही मैं स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि यह विश्लेषण भाषा के सामान्य मानक रूप पर आधारित है. यद्यपि कुल मिला कर सब हिंदी भाषियों के सामान्य व्यवहार के संदर्भ में प्रस्तुत विश्लेषण को सही साबित कर सकते हैं, हो सकता है किसी एक वक्ता में सारी विशेषताएँ न दिखायी पड़ें. कई भाषिक, सांस्कृतिक तथा वैयक्तिक कारणों से कोई एक ही शब्द को अलग-अलग संदर्भों में दो तरह से बोलता होगा (*द्वारका~द्वार्का*) या एक जैसे दो शब्दों में भिन्न उच्चारण करता होगा (*पाग्लों, दानवों*). इस अंतर के रहते हुए यह अध्ययन एक कारण से महत्त्वपूर्ण है. यह अ-लोप की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है, न कि वास्तविकता पर.

मैं इस संदर्भ में उपलब्ध समस्त साहित्य देख गया हूँ. पूर्ववर्ती अध्ययन केवल भाषा के उच्चारणिक पक्ष पर आधारित हैं और प्रस्तुत अध्ययन वर्तनी, उच्चारण दोनों पर आधारित है. इस कारण मैं पहले के अध्ययनों की चर्चा करना नहीं चाहूँगा. लेकिन एक बात बताना आवश्यक है. विद्वान नियम बनाते हैं और जो शब्द नियम के ख़िलाफ़ पड़ते हैं, उन्हें मानने से इनकार कर देते हैं या मान लेते हैं कि अमुक शब्द में अ-लोप नहीं हुआ है और एक अतिरिक्त नियम बना देते हैं. मंजरी ओहाला (1973) मानती हैं कि 'आमरण, असमय', आदि में क्रमशः ⟨म, स⟩ में अ-लोप नहीं होता (उनकी शब्दावली में 'कतई नहीं' नहीं होता, क्योंकि अन्यथा उनका नियम बेकार हो जाता है). वे मानती हैं कि *केसरिया, समझिए* में अ-लोप नहीं होता, क्योंकि बाद में ⟨इया, इए⟩ है. इसके लिए नया नियम बन गया. इसी तरह उनके अनुसार *आदतें, मुसीबतें* आदि में अ-लोप नहीं होता. लेकिन स्पष्ट नहीं होता कि ऐसी मान्यताओं के पीछे क्या आधार है? बहुधा ये मान्यताएँ, जिन पर नियम आधारित होते हैं, आत्मनिष्ठ हैं या इनके पीछे प्रत्यक्ष अनुभव हो, तो भी वह प्रतिनिधि उच्चारण नहीं है. वे कहती हैं कि ⟨कलावती⟩ कभी /कलाव्ती/ नहीं हो सकता. मैं यह नहीं कहता कि होना चाहिए, बल्कि कहना चाहता हूँ कि /बनाव्टी/ संभव है, तो हिंदी भाषा में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

/कलाव्ती/ की भी संभावना है, जबकि /परम/ कभी /पर्म/ नहीं बन सकता.

इस संदर्भ में एक रोचक बात याद आ रही है. दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के छात्र संघ के उद्घाटन का अवसर था. छात्राओं ने प्रार्थना गीत गाया–'वर् दे वीणा वादिनी वर् दे'. उद्घाटनकर्ता थे अज्ञेय. आपने भाषण शुरू करते ही कहा, 'मैंने गीत सुना. बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आज के छात्र-छात्राओं को सही उच्चारण में गीत भी नहीं गाना आता.' /वर्/ पर उन्हें आपत्ति थी. /वर/ की जगह /वर्/ रखने पर गीत का माधुर्य ख़त्म हो जाता है, यह सही है. लेकिन छात्राओं ने हिंदी की प्रकृति के अनुरूप शब्द का उच्चारण किया था. यही बात प्रायः हर संदर्भ में देखने में आती है. कोई /जाग्रण्/ बोले, तो दूसरा उसे अज्ञानी समझता है. कोई /आरती/ बोले तो दूसरा उसे पंडिताऊ भाषा मानता है. /नमकीन्/ बोलने वाला निश्चित रूप से दक्षिण का हिंदी का छात्र समझा जाएगा.

3. आगे हम अ-लोप के नियम देखें. नियम से पहले नियम लेखन की आधार-भूमि का अवलोकन कर लें. यहाँ नियम चार वर्ण तक के शब्दों के दिये गये हैं. यह माना जाता है कि हर वर्ण में एक स्वर है ('अ' समेत) और लोप की चर्चा केवल /अ/ के वर्ण पर लागू होती है. संयुक्त व्यंजन भी (क्त, न्त) एक ही वर्ण गिने गये हैं. लेखन की विशेषता के कारण अनुस्वार अगले वर्ण का हिस्सा है.

अंधा अ+न्धा

अ-लोप का भाषिक आधार यह है कि हिंदी में अक्षर कम करने की उच्चारण की प्रकृति है. नीचे के नियमों के अनुसार वक्ता शब्द में क्रम से कम अक्षरों का उच्चारण करता है. लेकिन तीन अक्षरों का एक अक्षर या चार का एक अक्षर बनना नियमाधीन नहीं है.

नियम 1. शब्द में कम से कम एक अक्षर होना चाहिए. इस कारण एकाक्षरिक शब्दों में अ-लोप नहीं होगा. उदाहरण–न, व, ब.

नियम 2. शब्दांत में अ-लोप होता है.

कुछ विद्वान मानते हैं कि शब्दांत गुच्छों में (*सत्य, विश्व* आदि) /अ/ का लोप नहीं होता. शब्दांत गुच्छ के /य, व/ अर्धस्वर हैं और इनमें स्वर-जैसी विशेषता ज़रूर होती है, लेकिन यहाँ स्वर /अ/ नहीं है. इन शब्दों को संस्कृत या द्रविड़ भाषाओं की परंपरा से बोला जाए, तो दूसरी बात है जहाँ /अ/ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है. सामान्य बोलचाल में हिंदी में यहाँ अवकारांत उच्चारण नहीं है. आप चाहें तो सामान्य हिंदी /सत्य/ तथा तेलगु या कन्नड़ /सत्य/ को सुन कर अंतर देख सकते हैं.

नियम 3. दो अक्षरों वाले शब्दों में दूसरे वर्ण में अ-लोप होता है. तीन अक्षर वाले शब्दों के तीसरे वर्ण में अ-लोप होता है, चार वर्ण वाले शब्दों में दूसरे तथा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चौथे वर्ण में अ-लोप होता है (जहाँ इन स्थानों में 'अ' वाले वर्ण हों). इसे मैं मान्य नियम कहना चाहूँगा, क्योंकि इनमें अपवाद नहीं मिलते. उदाहरण देखिए :

कल् काल् कल्प् पंख् मार्ग् कांत् कमल् कमाल् पारस् चालान् परास्त्
समर्थ् पसंद् आनंद् परास्त् कामार्थ् निर्मल् शंकर् निर्माण् पंडाल् ग्राहक्
स्वभाव् प्रसव् प्रसाद् सौंदर्य् काव्यांग् प्राचार्य् स्थापत्य् वार्धक्य् प्रख्यात्

बर्गद् वर्दान् मात्हत् मार्पीट् बर्द्वान् दर्द्नाक् व्याक्रण्
कार्य्क्रम् प्राण्दान् कर्म्चक्र् चक्र्व्यूह् प्रेम्पत्र् श्लाघ्नीय् संप्र्दाय्
पर्गना पर्वाना आम्दनी कार्ख़ाना चन्द्र्प्रभा कर्म्चारी ग्राम्सभा
श्रम्जीवी देश्द्रोही बनावट् पानीपत् करामात् पारावार् गुंजाइश्
प्रकाशक् सभागृह् विंध्याचल् संयुक्तांक् विशेषांक् ज़िलाधीश्

नियम 4. उल्लिखित स्थानों में 'अ' न हो, तो तीन वर्ण वाले शब्दों में दूसरे वर्ण में अ-लोप होता है, चार वर्ण वाले शब्दों में दूसरे तथा चौथे वर्ण दीर्घ स्वर युक्त हों तो तीसरे वर्ण में अ-लोप होता है. उदाहरण देखिए :

कम्ला काम्ना आद्तें मेंढ्की पाद्री निर्म्ला नर्म्दा सांग्ली व्यस्नी
ग्यार्हों ज़्याद्ती अकाद्मी बनाव्टी विशेष्ता उतार्ना संभाव्ना
प्रस्ताव्ना कलाव्ती प्रभाव्ती बिराद्री गीतांज्ली संजीद्गी

परिणति, अनुमति जैसे शब्दों में तीसरे वर्ण में अ-लोप नहीं होता. इस संदर्भ में मैंने पहले के अपने एक लेख (1966) में प्रस्ताव किया था कि इन शब्दों के ह्रस्व स्वरों का इतना ह्रस्वीकरण होता है कि ये आक्षरिक नहीं रह जाते. इस कारण /पर^{इ}णत^{इ}, अन^{उ}मत^{इ}/ जैसे दो अक्षर मात्र रह जाते हैं. इसी कारण यहाँ उक्त नियम से अ-लोप नहीं होता.

नियम 5. व्यंजन गुच्छ अपने से पहले के अक्षर को दीर्घ करते हैं. इस कारण गुच्छ के शब्दों में वही नियम लागू होंगे, जो दीर्घ स्वर के होने के कारण लगते हैं.

कमंड्ली सिकंद्रा समग्र्ता विनम्र्ता
गुमास्ता परस्ती आनंदी सामग्री अवस्था पलंगों बुलंदी बेसब्री

नियम 6. स्वर संयोग में नियम 4 तथा 5 नहीं लगेंगे. *तुरई कतई बुढ़ऊ बंबई दंगई चंपई प्रणयी प्रभामयी*. नियम 4 तथा 5 को मैं वैकल्पिक नियम कहना चाहूँगा, क्योंकि अ-लोप लगभग आधे लोगों में ही होता है. शायद यही कारण है कि मंजरी ओहाला *आदतें, कलावती* जैसे शब्दों में अ-लोप नहीं मानतीं.

4. उक्त नियमों के संदर्भ में कुछ गलत प्रयोग भी दिखायी पड़ते हैं. हमने उल्लेख किया कि अक्षर कम करने की भाषिक प्रकृति अ-लोप का आधार है. शब्द में या शब्दखंड में दो अक्षर कहीं-कहीं द्वितीय वर्ण के अ-लोप से एकाक्ष-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रिक बनते हैं. 'गलत' को कई /गल्त्/ बोलते (और लिखते भी) हैं और दिल्ली में रोज़ /तिल्क नग्र/ जाने वाले कई लोग हैं. इन्हें दोषयुक्त प्रयोग मानना चाहिए. इसी तरह /अ अ अ आ/ के शब्दों में, जहाँ पहले से ही दूसरे वर्ण में अ-लोप है, कई लोग तीसरे वर्ण में भी अ-लोप करते हैं. जहाँ सिद्धांततः दूसरे तथा तीसरे व्यंजन हिंदी की प्रकृति के अनुसार गुच्छ बना सकें, गुच्छ बनते हैं.

परगना /पर्ग्ना/	बरगदों /बर्ग्दों/
मतलबी /!मत्ल्बी/	अजनबी /?अज्न्बी/
निकटता /*निक्ट्ता/	निकलता /?निक्ल्ता/

4.1. उक्त नियमों के संदर्भ में समस्या का क्षेत्र है 'परगना', जिसके दो रूप हो सकते हैं–/पर्गना/~/परग्ना/. सामान्य रूप से शब्द का रूप न जानने पर व्यक्ति पहला ही उच्चारण करेगा. दूसरा उच्चारण तीन वर्ण के शब्दों में -ना (*निकलना, पकड़ना, समझना, उतरना*), -ता (*सुगमता, सुघड़ता, समग्रता, विनम्रता*) जैसे रूप जोड़ने पर होता है. अर्थात, मूल रूप ही व्युत्पन्न शब्द के उच्चारण को नियंत्रित करता है. *सम्झाना, कर्वाना, पक्ड़ाना, लग्वाना* जैसे उच्चारण को नियम 3 के अनुसार समझ सकते हैं.

4.2. इसी तरह अन्य व्युत्पन्न रूप भी लें–*असमर्थ, असमान, नापसंद, नासमझ,* बेकसूर जैसे शब्दों में पूर्व प्रत्यय है. इनमें नियम 3 के अनुसार उच्चारण वैकल्पिक होता है, /अस्मर्थ्~असमर्थ्/. लेकिन /बेव्कूफ़्, अन्शन्/ आदि में केवल नियमानुसार उच्चारण होता है. कुछ लोग कारण बताते हैं कि हिंदी में 'वकूफ, नशन' जैसे शब्दों का अभाव नियमित उच्चारण का कारण है. लेकिन वह बात कुछ हद तक ही सही है. /अस्मर्थ्/ इस समय लगभग स्वीकृत उच्चारण है. /अप्लक्, अस्मय्/ में भी नियम की तरफ़ झुकाव देखा जा सकता है, जबकि वक्ता 'पलक, समय' से परिचित हैं ही. पूर्वोक्त लेख के संदर्भ में द्रष्टव्य है कि *अतिशय, अनियम* एक ही जैसे उच्चरित होते हैं. यहाँ अ-लोप के निश्चित नियम नहीं बना सकते, भाषा की प्रकृति ही देख सकते हैं.

5. अ-लोप के नियमों के संदर्भ में वर्तनी की कुछ विशेषताएँ देख सकते हैं.

'कमल' /कम्ल/ या /कम्ल्/ नहीं बन सकता. इसी तरह /कर्म/ 'करम' नहीं लिखा जा सकता. प्रभाव उच्चारण के कारण /पर्भाव्/ नहीं बोला जा सकता, न 'परभाव' लिखा जा सकता है. परास्त 'परासत' नहीं लिखा जा सकता, न /परासत्/ बोला जा सकता है.

ऐसे स्थानों में, तीन अक्षर वाले शब्दों में उच्चारण तथा वर्तनी में संयोजन है और हम एक से दूसरे को पहचान सकते हैं. शर्म, शरम जैसे शब्दों की चर्चा के लिए आगे 6 देखिए.

5.1. 'कमला' जैसे शब्दों में मध्य वर्ण में अ-लोप होता है. यह बात वर्तनी से

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट नहीं होती है. 'कर्ता', 'करता' दोनों का उच्चारण एक है. इसी कारण उर्दू के शब्दों में परदा-पर्दा, वरना-वर्ना, गर्मी-गरमी, बरफ़ी-बर्फ़ी, जैसे विकल्प मिलते हैं. लेकिन संस्कृत के शब्दों में हम यह विकल्प नहीं देख सकते.

इसी उच्चारण के शब्दों में, जहाँ मध्य में नासिक्य व्यंजन हो और बाद में सवर्गीय स्पर्श, मध्य व्यंजन आधा ही होगा, पूरा नहीं. *अंधा* (*अनधा), *डंडा* (*डणडा), *चंपा* (*चमपा). यही बात सवर्गीय व्यंजन गुच्छ पर लागू होती है. *सच्चा* (*सचचा), *अच्छा* (*अचछा), *बुड्ढा* (*बुडढा), *गन्ना* (*गनना).

5.2. यहाँ हमें प्रत्यय युक्त शब्दों की वर्तनी पर विचार करना है. (अ-युक्त) व्यंजनांत शब्द के बाद प्रत्यय लगने पर, मूल शब्द की वर्तनी नहीं बदलती, भले उच्चारण बदल जाए (जब तक संधि नियम न हो).

कात, सुन, जान, मान, देख, कर, रुक, लग + | ना / ता / कर

आवश्यक, स्वतंत्र, पृथक (क्?), विवश + ता

पसंद, बुलंद + गी

5.3. चार वर्ण वाले शब्दों में दूसरे वर्ण में अ-लोप होता है और ये शब्द मध्य गुच्छ वाले तीन वर्ण के शब्द के बराबर उच्चरित होते हैं :

बरगद	*बर्तन*	*अकबर*	*अक्सर*
परगना	*नर्मदा*	*करवाना*	*मर्यादा*

संस्कृत शब्दों में वर्तनी की दृष्टि से विकल्प नहीं है. लेकिन उर्दू या अंग्रेज़ी आदि विदेशी शब्दों में उच्चारण की समानता के कारण वर्तनी में विकल्प मिलता है. ऐसे कई उदाहरण हैं :

बिल्कुल	*बिलकुल*	*इन्सान*	*इनसान*
सर्कस	*सरकस*	*इन्कार*	*इनकार*
बर्तन	*बरतन*	*पल्टन*	*पलटन*
?पर्वाह	*परवाह*	*जान्वर	*जानवर*
बर्बाद	*बरबाद*	*दर्बार	*दरबार*

अंतिम दो उदाहरणों के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि ये क्रमशः जान, दर के योग से बने होने के कारण आधा वर्ण नहीं बनते. यही बात पुनरुक्त शब्दों में होती है. *खटपट, थरथर, सनसन, मरघट, पनघट, सरहद, सरदार, जानकार, सरकार, खटमल* जैसे शब्दों में इसी कारण आधे वर्ण नहीं होते.

5.3.1. ऊपर के 5.1. के संदर्भ में सही रूप हैं—*अच्छाई* (*अचछाई), *पंडाल* (*पणडाल), *चंपक* (*चमपक), *सत्तर* (*सततर), *गद्दार* (*गददार), *पच्चीस* *(पचचीस). लेकिन जहाँ दो रूप हों, तो शब्द मिलते हैं—*बददुआ* (*बद्दुआ),

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपपद (*उप्पद).

6. केलकर (1968) ने हिंदी तथा उर्दू के शब्दों में अ-लोप के बारे में एक बहुत रोचक बात बतायी है. उनके अनुसार हिंदी भाषी संस्कृत मूल के शब्दों में *धर्म*, *कर्म*, *भस्म* आदि का उच्चारण करेगा और उर्दू मूल के शब्दों में *बरफ़*, *फ़रक* आदि. उर्दू भाषियों में इससे भिन्न स्थिति देखी जा सकती है, जो *धरम*, *करम*, *भसम*, *बर्फ़*, *फ़र्क* आदि उच्चारण पसंद करेंगे. यह बात *कर्म*/*करम* के भेद (देखें **संस्कारित शब्द**) को बनाये रखने की प्रवृत्ति के बाद सत्य है. यहाँ अ-लोप संरचनात्मक कारणों से नहीं है, क्योंकि भाषा दोनों विकल्पों की छूट देती है. अंग्रेज़ी के शब्दों में भी *फ़ारम*/*फ़ार्म* जैसे प्रयोग देखे जा सकते हैं. इस छूट के बाद अ-लोप का नियंत्रक कारक सामाजिक है, भाषिक परंपरा है.

7. चार वर्ण तक के शब्दों के विश्लेषण के बाद मेरी हिम्मत न रही कि मैं पाँच या छह वर्ण के शब्दों को इस विश्लेषण में सम्मिलित करूँ. लेकिन कुछ सामान्य बातें बताना चाहूँगा. *करमजली*, *समझदार*, *कलमदान*, *पतनशील*, *नकबजनी*, *शरमदार*, *निकलवाना* जैसे शब्दों में तीसरे और अंतिम वर्ण में अ-लोप होता है. इन शब्दों में इन्हीं वर्णों के बाद रूप का अंत होता है. *बेहतरीन*, *मनपसंद*, *अवतरण*, *खटखटाना*, *चंद्रवदन* जैसे शब्दों में दूसरे और अंतिम वर्ण में अ-लोप होता है. इन शब्दों में इन्हीं वर्णों के बाद रूप का अंत होता है. पाँच वर्ण के शब्द प्रायः दो रूपों से बने होते हैं और इस कारण इनका उच्चारण परिचित ही होता है. यह शोध का विषय हो सकता है कि 'कमरतन' जैसा काल्पनिक शब्द हिंदी भाषियों से पढ़वाया जाए, तो कितने लोग /कम रतन/ पढ़ेंगे और कितने /कमर तन/.

अवग्रह संस्कृत में संधि में ए, ओ के बाद शब्द अ से शुरू हो, तो उस 'अ' का लोप हो जाता है और उसकी जगह चिह्न ऽ लिखा जाता है. इसी चिह्न को अवग्रह कहा जाता है, उद० *ते+अपि–तेऽपि*, *मनः+अनुकूल–मनो+अनुकूल–मनोऽनुकूल*. लेकिन हिंदी में उधार के शब्दों में भी अवग्रह का प्रयोग नहीं होता, केवल संस्कृत के उद्धरणों में ही यह देखने को मिलता है.

अविकारी विशेषण शब्द अन्विति के प्रकरण में हमने देखा कि आकारांत विशेषण शब्द संज्ञा के साथ लिंग-वचन के लिए अन्वित होते हैं. लेकिन ऐसे कई आकारांत विशेषण शब्द हैं, जो नहीं बदलते. यहाँ ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है–(अ) *बढ़िया*, *घटिया* हिंदी के शब्द हैं. (आ) *ज़रा-सी बात*, *ताज़ा सब्जी*, *आला दरजे का*, *उम्दा लोग*, *बकाया राशि*, *ज़िंदा मछली*, *पुख़्ता इमारत*, *अदना आदमी*, *आवारा औरत*, *ज़्यादा लोग*, *ख़स्ता हालत*, *चोखा रंग* उर्दू के विशेषण शब्द हैं. (इ) पैदा (*तुम्हारी लड़की किस साल पैदा हुई*), जुदा (*वे दोनों जुदा हो गये*), जमा (*वहाँ कई लोग जमा थे*), फ़िदा, ख़फ़ा (*वह लड़की मुझ पर ख़फ़ा*/

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फ़िदा है), अदा (*आप रुपये वहाँ अदा कीजिए*), विदा (*वे लोग 10 बजे विदा होंगे*), सफ़ा (*इस क्रीम से सारे बाल सफ़ा हो जाएँगे*), फ़ना (*एक दिन सारी दुनिया फ़ना हो जाएगी*), ज़िंदा (*मछली ज़िंदा है*) उर्दू के विधेय विशेषण हैं. यह रोचक बात है कि *आवारा* वचन के लिए अन्वित होने लगा है (*आवारे लड़के*), लेकिन लिंग के लिए नहीं (**आवारी लड़की*). (ई) कुछ प्रत्यय अविकारी हैं. ये हैं– -तरफ़ा, -नुमा, -आना, -दा, -दाँ. *दुतरफ़ा बातचीत, ख़ुशनुमा शक्ल, सालाना बैठक, वह शर्मिंदा हो गयी, चुनिंदा चीज़, नादाँ लोग, पेचीदा मसले, वह मुझे ज़लील करने पर आमादा है.*

2. आपने ग़ौर किया होगा कि 'बढ़िया, घटिया' के अलावा शेष सभी अरबी-फ़ारसी के शब्द हैं. क्रमशः 'बढ़ना, घटना' से बने ये विशेषण अविकारी हैं. अरबी-फ़ारसी के शब्द तथा प्रत्यय अपनी भाषा में इसी तरह रूप सिद्ध होते हैं. हिंदी में आये ऐसे सैकड़ों शब्द धीरे-धीरे हिंदी की प्रकृति के अनुसार व्यवहार करने लगे हैं. लेकिन अभी अधिकतर विशेषण बिना बदले ही प्रयोग किये जा रहे हैं. थोड़े-से शब्द हिंदी के अनुसार बदल गये हैं, कुछ बदल रहे हैं. कुछ समय पहले 'सादा' अविकारी था (*सादा कपड़ों में*), अब यह विकारी है. अभी 'ताज़ा' भी विकारी बन रहा है और *ताज़ी हवा, ताज़े फल* आदि प्रयोग सुनायी पड़ते हैं. बहुत पहले से ही 'गंदा' विकारी है. अब 'सस्ता' भी विकारी हो गया है.

अव्यक्त कथन (Euphemism) अंग्रेज़ी 'यूफ़ेमिज़्म' से हमारा तात्पर्य है डर, आशंका, घृणा, आदर आदि कई कारणों से वस्तु, व्यापार या विचार को सीधे शब्दों से न प्रकट करके संकेतात्मक रूप से या घुमा-फिरा कर अन्य शब्दों से व्यक्त करना. अंग्रेजी के विद्वान पार्ट्रिज (1947) के अनुसार यह धार्मिक प्रवृत्ति से ले कर व्यवहार की शिष्टता तक की मानवीय धारणाओं के कारण निष्पन्न भाषिक विशेषता है. अर्थात, लोग शिष्टता के कारण *मूतना* नहीं कहते, बल्कि *पेशाब करना* कहते हैं या और अधिक शिष्टता में *लघुशंका करना* कहते हैं. इस तरह अन्य प्रकार से अपनी बात कहना ही अव्यक्त कथन है. इस प्रकार के कथन में जो शब्द वर्जित हैं, उन्हें अंग्रेज़ी में 'टैबू' शब्द कहते हैं. वर्जित शब्द समाज के स्तर भेद के साथ भिन्न होते हैं. किसी स्तर पर *मूतना* वर्जित है, *पेशाब* स्वीकृत है, किसी और स्तर पर दोनों वर्जित हैं, *लघुशंका* या *बाथरूम जाना* स्वीकृत हैं. अर्थात, अव्यक्त कथन का स्तर भेद है और स्तर भेद के साथ भाषा में अंतर भी दिखायी पड़ता है.

2. वर्जित शब्दों का भाषा में अपना इतिहास भी है. जब कोई शब्द वर्जित शब्द के स्थान पर अव्यक्त कथन में प्रयुक्त होता है, तब उस शब्द का संबंध उस अर्थ के साथ जुड़ जाता है. धीरे-धीरे वह शब्द भी वर्जित होता जाता है. मलत्याग के स्थान के लिए शुरू में *टट्टी* (आड़ या पर्दा), *पाख़ाना* (पैर रखने

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की जगह) अव्यक्त कथन में प्रयोग में आये. अब ये शब्द भी वर्जित हो चले हैं और इनका प्रयोग समाज के किन्हीं स्तरों में अशिष्ट माना जाता है. वास्तव में वह व्यापार या वस्तु या विचार सामाजिक कारणों से अकथ्य है, वर्जन शब्द का होता है.

जब शब्द का वर्जन होता है, लेकिन उक्त विचार आदि का उल्लेख आवश्यक होता है, दूसरे शब्द का प्रयोग होता है, जो संकेत से उस विचार को प्रकट करता है. ऐसे सांकेतिक शब्द भी भाषा के अन्य शब्दों की तरह यादृच्छिक तथा स्वीकृत होते हैं. *टट्टी* मलत्याग का अर्थ देता है, लेकिन यह अन्य कई व्यापारों के लिए भी संकेत बन सकता था. इस दृष्टि से अव्यक्त कथन के शब्द भी शब्द कोश के अंग हैं, **गुप्त भाषा** की तरह तुरंत निर्मित शब्द नहीं. मूल वर्जित शब्द भी शब्द कोशों में बने रहते हैं और वर्जना की व्यवस्था में प्रच्छन्न रूप से उपस्थित रहते हैं.

3. शब्दों का वर्जन निम्नलिखित विचार क्षेत्रों में दिखायी पड़ता है.

3.1. घृणा, जुगुप्सा, लज्जा उत्पन्न करने वाले वस्तु या व्यापार—हम बचपन से ही यौन से संबंधित हर बात को गोपनीयता तथा लज्जा से जोड़ते हैं. अतः यौन अंगों के नाम वर्जित माने जाते हैं. इनका उल्लेख *गुप्तांग* (छिपा हुआ अंग) कह कर करते हैं. यौन व्यापार शर्म से अधिक घृणा का भाव पैदा करता है, क्योंकि यह दांपत्य में भी गोपनीय है और दांपत्य के बाहर धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से पाप और कलंक है. मल-मूत्र त्याग जुगुप्सा उत्पन्न करते हैं. इसी कारण इन सब के लिए भिन्न-भिन्न शब्द प्रयुक्त होते हैं. मलत्याग के लिए प्रचलित शब्द देखिए—*टट्टी, पाख़ाना, जंगल जाना, दिशा जाना, फ़रागत* (छुटकारा), *मैदान जाना, पोखरे जाना, शौच जाना* (शौच=शुद्धि), *विलायत जाना, हल्का हो लेना* तथा आधुनिक भाषा में *टॉयलेट जाना*. संभव है अन्य कई स्थानीय प्रयोग हों और अन्य भाषाओं में तो और भी कई प्रयोग होंगे.[1]

3.2. हम जिन बातों से डरते हैं, जिनके होने की आशंका रहती है, उनसे संबंधित शब्द भी वर्जित हो जाते हैं. भूत को *हवा*, साँप को *रस्सी* या *कीड़ा*, चेचक को *माता* (यहाँ दैवी प्रकोप का अंध विश्वास भी साथ में काम करता है) इसी कारण कहा जाता है. भारतीय नारी के लिए वैधव्य सबसे बड़ा दुर्भाग्य है और 'विधवा' कहलाना सबसे दुखद स्थिति है. इसी कारण वैधव्य को प्राप्त होने पर इसे *सुहाग लुटना, माँग पुछना, घर-संसार लुटना* आदि शब्दों में घुमा-फिरा कर अभिव्यक्त करते हैं. मौत भी बड़ी विपदा है. हम *मर गया* नहीं, *चल बसा, गुज़र गया* कहना शोभनीय समझते हैं.

[1]तमिल में 'पिछवाड़े जाना, बाहर जाना, खेत जाना' आदि प्रयोग भी हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्यपि हम सामान्य रूप से रहते हैं, भविष्य की सोचते हैं और उन्नति की कामना करते हैं, हमारे मन में हमेशा अनहोनी की आशंका बनी रहती है. इसी लिए व्यक्ति घमंड से *मैं ऐसा करूँगा* नहीं कहता, बल्कि *भगवान ने चाहा, तो ऐसा हो जाएगा* कहता है. अज्ञात का डर हमारी भाषा में कई जगह प्रकट होता है. *भगवान की कृपा से*···, *जो 'वह' चाहता है* आदि. अनहोनी के इसी डर के कारण व्यक्ति अपनी उपलब्धियों को कम करके देखता है. इसके पीछे 'नज़र' लगने का अंध विश्वास भी कारण है. कई व्यक्ति अपने सुंदर बच्चे को *कालू* नाम देते हैं, बहुत प्रतीक्षा के बाद उत्पन्न पुत्र को *घूरे* (त्याज्य) या *भीखू* (भिक्षा में मिला) कहते हैं.

3.3. शब्दों के वर्जन का एक मुख्य आधार श्रोता के प्रति आदर भाव है. इस आदर भाव के कारण व्यक्ति अपने से बड़े बाहर के व्यक्तियों को रिश्ते के शब्दों से संबोधित करता है. उम्र तथा पारिवारिक संबंधों के कारण भाई, बहन, भाभी, चाचा, चाची, माँ~माता, ताऊ, ताई, मौसी, बाबा आदि संबोधन में आते हैं. मैंने उत्तर भारत में पहली बार अपने एक मित्र को उसके अपने मित्र के पिता को 'पिता जी' कहते सुना, तो बहुत आश्चर्य में पड़ गया. तमिल में पिता ही 'पिता' होता है, अन्य कोई नहीं. वैसे अन्य स्त्रियों को कोई *माँ जी, माता जी* भले कहे, *माँ* शब्द तो सिर्फ़ अपनी माँ के लिए ही है. आधुनिक युग में पारिवारिक संबंध के बाहर व्यक्तियों को नाम ले कर बुलाने की परंपरा अधिक प्रचलित हो रही है.

पति-पत्नी एक दूसरे को नाम ले कर नहीं बुलाते (कुछ पहले की ही या गाँवों की बात है) (देखें **रिश्ते-नाते**). इस संबंध में कई विद्वानों ने कई रोचक उदाहरण दिये हैं. उमाशंकर 'सतीश' (1976) ने उदाहरण दिया है कि एक स्त्री पति का नाम 'तारा' होने के कारण 'तारे डूबे हैं' न कह कर *'मुन्ने के पापा'* डूबे हैं कहती है. मालूम नहीं यह उदाहरण कितना वास्तविक है, लेकिन अकल्पनीय नहीं है. स्त्री पति का तो नाम नहीं लेती, उस नाम से व्यक्त अन्य वस्तुओं के संदर्भ में भी उस शब्द का उच्चारण नहीं करती. मैंने देखा है कि कई लोग अपने पिता का नाम पुत्र को नहीं देते, क्योंकि वे बड़ों का नाम नहीं ले सकते. अगर किसी वजह से दादा का नाम पोते को मिल जाए, तो वास्तविक संबोधन का नाम भिन्न हो जाता है.

यह आदर भाव कई अन्य संदर्भों में भी देखने को मिलता है. उर्दू में व्यक्ति स्वयं बोलते समय *अर्ज़* (निवेदन) करता है, दूसरों से *फ़रमाने* (आज्ञा देने) को कहता है. इसी तरह उसका अपना घर *गरीबख़ाना* है, श्रोता का *दौलतख़ाना*. लोग ख़ुद को *नाचीज़* तथा श्रोता को *हुज़ूर* कहते हैं. बड़ों के मरने पर *मर गया* नहीं, *स्वर्ग सिधारे, ख़ुदा को प्यारे हो गये, हमें अनाथ कर गये* आदि उक्तियों से

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदरपूर्वक उल्लेख करते हैं.

धार्मिक श्रद्धा इस तरह से अव्यक्त कथन का प्रबल आधार है. हम ईश्वर को पृथ्वी की सब बातों से श्रेष्ठ मानते हैं. अतः सामान्य भाषा का धार्मिक संदर्भ में प्रयोग प्रायः त्याज्य होता है. राम चप्पल या *जूता* नहीं पहनते थे; वह तो *पादुका* है, और अधिक श्रद्धा के कारण *श्री पादुका* है. इसी तरह नव विकसित शब्द उस वर्ग-विशेष की भाषा (jargon) का अंग बन जाते हैं. चरणोदक, *भोग लगाना*, *दिव्य दर्शन* आदि अव्यक्त कथन में व्यवहृत हुए थे, अब धर्म के पारिभाषिक शब्द हैं.

4. वर्जित शब्दों के स्तर भेद के बारे में ऊपर देखा था. शिक्षा, विवेच्य विषय, सामाजिक स्तर, विश्वास आदि वर्जना की भावना के पीछे हैं. छोटे बच्चे खेल में, अशिक्षित व्यक्ति झगड़े में बिना वर्जना की भावना के यौनांगों के शब्दों का प्रयोग करते हैं. हम उम्र में या सामाजिक स्तर से बड़े होते जाते हैं, तो अधिक शिष्ट बनते जाते हैं. अक्सर दूसरे की उक्ति दुहराने में भी इन शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकते. शिक्षित व्यक्ति भय या अंध विश्वास की भावना से दूर हो गया है. वह चेचक को 'चेचक' कहने से नहीं डरता. विवेच्य विषय की दृष्टि से चिकित्सा या कानून के ग्रंथों में 'लिंग', 'योनि' (वैसे भी ये शिष्ट पारिभाषिक हैं, बोलचाल के शब्द नहीं) आदि शब्द सामूहिक रूप से दुहराये जाते हैं. यही कारण है कि मैं इस ग्रंथ में बिना (अधिक) झिझक के गालियों की बौछार लगा रहा हूँ, जबकि दैनंदिन जीवन में 'साला' जैसी भद्र गाली भी नहीं बोलता.

वर्जित शब्दों के संदर्भ में दूसरी भाषा के शब्द अधिक अशोभनीय नहीं लगते. यही कारण है कि हम 'मल' परीक्षण के संदर्भ में इस शब्द की अपेक्षा stools की बात अधिक सहजता से करते हैं.

5. इस संदर्भ में द्विभाषिक 'टैबू' के सिद्धांत को जानना बहुत उपयोगी हो सकता है. मेरे एक सहकर्मी कक्षा में कुंडी बोलते थे, तो दक्षिण के छात्र-छात्राएँ हँसते थे. मैंने मित्र को समझाया कि दक्षिण की तीन भाषाओं में इसका अर्थ 'चूतड़' है. यद्यपि उन्हें उन भाषाओं के वर्जन से मतलब नहीं था और वे जानते थे कि छात्र नहीं जानते कि उन्हें उस शब्द का दूसरा अर्थ मालूम है, फिर भी वे संकोच के कारण आगे वह शब्द नहीं बोल पाये. किसी भाषा भाषियों से व्यवहार करते समय, उन्हें पढ़ाते समय इस बात को याद रखना अच्छा होगा कि वह आप से मिलता है, तो अपनी सारी भावनाओं और मान्यताओं को ले कर. वह जिसे वर्जित समझता है, उसका आप धड़ल्ले से प्रयोग करें, तो उसे मानसिक क्लेश पहुँचेगा ही.

6. वर्जित शब्दों के कारण भाषा में कुछ शब्दों की अवनति होती है और वर्जन की सीमा बढ़ती है. हिंदी में *डालना*, *घुसा देना* अव्यक्त कथन हैं, यौन व्यापार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की ओर संकेत करते हैं. लेकिन अब इन शब्दों को अपने मूल अर्थ में भी प्रयोग करते समय मन में आता है कि कहीं किसी प्रसंग में छिपा अर्थ प्रकट न हो. इस तरह ये शब्द स्वयं वर्जित बनने लगे. इसी तरह कभी कोई व्यक्ति एक *शंका* है कहता है, तो कोई मज़ाक में पूछ सकता है *लघु* (मूत्र विसर्जन) या *दीर्घ* (मल विसर्जन). इस गति से कुछ समय बाद 'शंका' बोलते समय भी संकोच होने लगे, तो कोई आश्चर्य नहीं.

पढ़े-लिखे लोगों में, लेखकों में वर्जना की प्रवृत्ति से छुटकारा पाने की ललक दिखायी पड़ती है. अब महिलाएँ भी ख़ूब गालियों के शब्द बेझिझक लिखने लगी हैं (शायद यह बिक्री बढ़ाने का साधन हो!). पहले की अपेक्षा खुलापन अधिक दिखायी पड़ता है. अंग्रेज़ी में यौन व्यापार या संभोग के लिए पचासों अन्य शब्द हैं—enter, deflower, mount, do, give, violate, molest, copulate, make love आदि. इनमें हर शब्द का अपना अर्थ है—इंगित व्यापार से सर्वथा भिन्न. लेकिन ये भी वर्जना की कोटि में पहुँच गये हैं. यह देखकर एक लेखक कहता है—'इतने सारे शब्द. सब वही कहते हैं, जो वे नहीं कहना चाहते. सीधा-सा शब्द है 'फ़क'. पता नहीं, यह कहने में क्या परेशानी है.' शायद इसी नवयुगी विद्रोह के कारण अब बहुत-से वर्जित शब्द वर्जित नहीं रहे, बहुत-से अन्य शब्द अनावश्यक पड़ने लगे हैं.

असमर्थता सूचक वाक्य कर्ता या उल्लिखित व्यक्ति की असमर्थता को प्रकट करने वाले निम्नलिखित वाक्य संरचनाएँ हैं :

मैं नहीं जा सकता (देखें **सकना**)
मैं नहीं जा पाऊँगा. (**पाना**)
मुझसे नहीं किया जाता. (**वाच्य**)
मुझसे नहीं होगा. (**वाच्य**)
मुझसे करते नहीं बनता. (**बनना**)

1. इन वाक्यों में असमर्थता का स्तर तथा गुण भेद है. 'सक' का प्रयोग सामान्य असमर्थता के लिए किया जाता है, जो किसी छोटे-मोटे कारण से उद्भूत हो. *कल बारिश थी, मैं बाज़ार नहीं जा सका गले में दर्द के कारण मैं बोल नहीं सका.* साथ ही 'सक' वक्ता के हल्के विरोध को भी प्रकट करता है. वह उसके कार्य या व्यापार करने की अनिच्छा प्रकट करता है. *मुझे आप की आदत से शिकायत है. मैं पैसे नहीं दे सकता.* भविष्य में 'सक' असमर्थता की संभावना प्रकट करता है. *कल शायद मैं नहीं आ सकूँगा. आप क्षमा कर दें.*

2. 'पाना' को असमर्थता सूचक वाक्यों में अक्षमता बोधक की उप-कोटि की संज्ञा दे सकते हैं 'अक्षमता' से हमारा यहाँ तात्पर्य अयोग्यता नहीं बल्कि 'क्षमता का अभाव' है. *वह दौड़ते-दौड़ते गिर पड़ा, फिर लाख कोशिश करने पर भी उठ नहीं*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाया. आप मुझे इतना खाना न दीजिए. मैं खा नहीं पाऊँगा. बेकार में कोशिश मत करो. तुम यह काम नहीं कर पाओगे (~किसी भी हालत में नहीं कर सकोगे). उदाहरण से ही स्पष्ट हो सकता है कि न कर पाना, किसी भी हालत में न कर सकना के बराबर है. इस अंतर को निम्नलिखित उदाहरणों में देखिये :

यह बात तुम नहीं समझ पाओगे (~सकोगे).
आप मेरी आवाज़ सुन सकते हैं? (*पाते हैं).
अगर हो सके (*पाये), तो कल मेरे घर आ जाना.
यह कलम ले लो. उससे तुम नहीं लिख पाओगे (~सकोगे).
कैसे नहीं लिख पाऊँगा? मैं तो इससे ख़राब कलम से भी लिख सकता हूँ (*पाता).

3. मुझसे खाना नहीं खाया जाता वाच्य का वह भेद है, जिसमें कर्ता का भी उल्लेख होता है और इस का प्रयोग केवल कर्ता की असमर्थता प्रकट करने के लिए होता है (याने, इस संरचना में 'नहीं' का प्रयोग अनिवार्य है). कर्ता सदैव 'से' के साथ आता है.

3.1. 'सकना' का प्रयोग सामान्य असामर्थ्य के लिए होता है. लेकिन सामान्य वर्तमान में तात्कालिक व्यापार के लिए 'सक' का प्रयोग नहीं होता. *मैं खाना नहीं खा सक रहा हूँ. *पैर में चोट है. मैं नहीं चल सक रहा हूँ (चल नहीं पा रहा हूँ ठीक है). दोनों वाक्यों में 'सक' वक्ता की असमर्थता के साथ ही आगे से उसके व्यापार न करने का अर्थ प्रकट करता है, उस क्षण में व्यापार में असमर्थता का नहीं. ऐसे प्रसंगों में मुझसे···नहीं···जाता की रचना आती है. मुझसे खाना नहीं खाया जा रहा है. मुझसे चला नहीं जा रहा है. यहाँ वाच्य 'सक' का पूरक है.

3.2. उपर्युक्त 2 और 3 के योग से नहीं किया जा सकता (~नहीं किया जा रहा है) का प्रयोग भी मिलता है.

हमें खेद है कि आप का लेख प्रकाशित नहीं किया जा सका (~हो सका).
किसी भी हालत में आप को छुट्टी नहीं दी जा सकती (~नहीं मिल सकती).
हमारा अनुमान है कि यह काम एक महीने में पूरा नहीं किया जा सकेगा (~नहीं हो पाएगा~नहीं हो सकेगा).

इन वाक्यों में वाच्य अकर्तृत्वबोधक है और सक असमर्थता सूचक है. यही कारण है कि अकर्तृत्वबोधक रचना (देखें **वाच्य–अकर्तृत्वबोधक**) के विकल्प के रूप में होना का प्रयोग संभव है और असमर्थतासूचक रचना में पाना का विकल्प संभव है.

4. यह काम मुझसे नहीं होगा (देखें **वाच्य–अकर्तृत्वबोधक**) के संदर्भ में उल्लि-खित प्रकरण में हम देख चुके हैं कि मैं नहीं ... आदि वाक्यों में अकर्मक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिया के प्रयोग के अकर्तृत्वबोधक वाच्य का प्रयोग मिलता है. कर्ता रहित वाक्यों में पेड़ कट गया, मकान बन रहा है आदि प्रयोग मिलते हैं और असमर्थतासूचक वाक्यों में कर्ता मुझसे, तुझसे आदि का प्रयोग मिलता है. असमर्थता दिखाने के लिए 'नहीं' का प्रयोग अनिवार्य है. *यह काम मुझसे नहीं होगा. छोड़ो यार, तुमसे नहीं बनेगा.* बहुत सीमित अर्थ में ही इन वाक्यों को इसी अर्थ में वाच्य से दिखा सकते हैं.

5. असमर्थता सूचक वाक्यों में पाँचवाँ भेद 'बनना' से बनता है. वैसे 'बनना' से दोनों प्रकार के वाक्य मिलते हैं.

मुझसे खाना नहीं बना~बनेगा. (ऊपर का वर्ग 4)

मुझसे पढ़ते नहीं बन रहा है. (वर्ग 5)

इस वर्ग की क्रियाओं में 'तिर्यक वर्तमानकालिक कृदंत + नहीं + बन' की रचना मिलती है. यह रचना व्यापक है और कई क्रियाओं के साथ आती है. *हँसते नहीं बनना, खाते नहीं बनना, ?सोते नहीं बनना, ?उठते नहीं बनना, देखते नहीं बनना, लिखते नहीं बनना* इसके कुछ और उदाहरण हैं.

5.1. यह रचना असमर्थताबोधक वाच्य का पर्याय है.

मुझसे चलते नहीं बन रहा है⇒मुझसे चला नहीं जा रहा है.

मुझसे बोलते नहीं बना⇒मुझसे बोला नहीं गया.

अक्षर 1. पहले हिंदी में 'लेटर' (letter) के लिए 'अक्षर' शब्द था, साथ ही 'वर्णमाला' शब्द भी था. भाषाविज्ञान के 'सिलेबिल' के लिए इस ग्रंथ में अक्षर का प्रयोग किया गया है और 'लेटर' के लिए 'वर्ण'.

भाषाविज्ञान के अनुसार एक साँस में उच्चरित उच्चारण खंड एक अक्षर है. हर अक्षर में एक आक्षरिक स्वन होता है तथा अक्षर के अंदर के अन्य स्वन. हिंदी में सभी स्वर आक्षरिक हैं, सभी व्यंजन साथ के अनाक्षरिक स्वन. इस कारण **अ-लोप** को छोड़कर अन्य स्वर गिन लें, तो हम एक शब्द के सभी अक्षरों की संख्या बता सकते हैं.

आ	एक अक्षर	आ
जानवर	दो अक्षर	जान्-वर्
बनाना	तीन अक्षर	ब-ना-ना
परिस्थिति	चार अक्षर	प-रिस्-थि-ति

2. एक अक्षर में कम से कम एक स्वर आना चाहिए, चाहे व्यंजनों की संख्या कितनी भी क्यों न हो. हिंदी का सबसे छोटा अक्षर *आ* है और सबसे बड़े स्वास्थ्य (स् व् आ स् थ् य्), तंत्र्य (स्वातंत्र्य) (त अ न् त् र् य) आदि हैं. लेकिन इन शब्दों में अंत्य अ-लोप मानने वाले इन्हें दो अक्षर वाले शब्द मानेंगे :

CC-O. Dr Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वास्थ्य	स्वास्-थ्य	तंत्र्य	तन्त्-र्य

3. अपने एक पूर्व लेख में (1966) मैंने उल्लेख किया था कि अक्षरों की संख्या में कमी करना हिंदी की प्रवृत्ति है. प्रायः अक्षरांत ह्रस्व /इ, उ/ इतने क्षीण हो जाते हैं कि अनाक्षरिक रह जाते हैं. इसी कारण 'अनिवार्य' तीन की जगह दो अक्षर का रह जाता है. रीति, प्रीति, रात्रि जैसे शब्दों में अंत्य ह्रस्व के क्षीण होने के कारण इनका एकाक्षरिक होना इतिहास सिद्ध बात है. ये शब्द तद्भव रूप से रीत, प्रीत ही बन गये हैं. यह बात **अक्षरांत अय, अव, अह** पर लागू होती है, जहाँ ये एकाक्षरिक बन जाते हैं.

अक्षरांत 〈अय, अव, अह〉 1. जिन अक्षरों के अंत में ये तीनों वर्णक्रम आते हैं, वहाँ उच्चारण की विशेषता दिखायी पड़ती है. पहले दो वर्णक्रम क्रमशः ह्रस्व /ऐ॑, औ॑/ उच्चरित होते हैं. लेखन में /जय/ के लिए 〈जै〉 तथा /माधव/ के लिए 〈माधौ〉 इस प्रवृत्ति के उदाहरण हैं. यद्यपि वर्तनी को बनाये रखने के कारण हमेशा ऐसी स्वनगत वर्तनी नहीं होती, अधपढ़ लोगों की भाषा में ऐसा दोष प्रायः देखा जा सकता है. यहाँ दोनों के उदाहरण दिये जा रहे हैं.

अय–*तय, जय, भय, लय, मलय, विजय, विलय, विनय, प्रलय, आलय, प्रणय, विषय, आशय, जयमाल, भयभीत, तयशुदा.*

अव–*रव, लव, भव, नव, शव, मानव, दानव, नीरव, यादव, राघव, माधव, गौरव, मानवता, गौरवशील, नीरवता.*

1.1. इनके बाद स्वरादि प्रत्यय लगें, तो पुनः /अ/ का उच्चारण होता है या स्वर-लोप होता है और /य/, /व/ का पुनरागम होता है और /य, व/ स्वर के साथ मिल जाते हैं. ऐसे शब्द हैं–*जया, विजयी, दानवी* (दा न वी~दान् वी), *विषयों, भयाक्रांत.*

1.2. यही बात उन प्रत्ययों के संबंध में है, जो देखने में एक व्यंजन जैसे हैं, लेकिन शब्द तथा प्रत्यय का योग स्वर से होता है–*विषयक* (वि ष यक्), *समयक* (स म यक्).

1.3. हिंदी में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो 〈ऐ, औ〉 से लिखे जाते हैं. ये हैं रौ, लौ, पौ, सौ, नौ, हैं, मैं. लेकिन उच्चारण की दृष्टि से लव, लौ आदि में अंतर है. यहाँ स्वर मात्रा के कारण बहुत सूक्ष्म अंतर है. हम सामान्य रूप से भय, भै को उच्चारण की दृष्टि से समान मान सकते हैं. शायद यही कारण है कि 〈मय, मै〉 दोनों रूप 'मयखाना' में संभव हैं.

उलटे हम यह भी देख सकते हैं कि दक्षिण के हिंदी के छात्र प्रायः रौ, लौ, है, मैं को क्रमशः /रउ~रव्, लउ~लव्, हइ~हय्, मइँ~मँय्/ जैसे बोलते हैं. उनके उच्चारण में 'मय-मैं' का व्यतिरेक उच्चारण में निम्न प्रकार से है–/म् अ य् अ ~म अ य्–म् अँ इ~म् अँ य्/.

2. 〈अव〉 के उच्चारण के [illegible] प्रकार है. एकाक्षरिक शब्दों में ('वह

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अः

के अलावा) ऐ ह का उच्चारण होता है. देखें **ह**. जैसे रह, बह, शह, तह, यह, कह. तह और तय में स्वर समान हैं, स्वर की एक विशेषता में अंतर है. तह का स्वर मर्मरित है.

2.1. एक अक्षर से अधिक वाले शब्दों में ⟨अह⟩ का उच्चारण कुछ दीर्घ हो जाता है. तेरह उच्चारण कुछ /तेरा/ जैसा होता है. और उदाहरण देखिए– बारह, तेरह, चौदह, सोलह, सत्रह, अठारह, कलह, विरह, जिरह, तरह, वजह, सुलह. वैसे तेरह तथा तेरा के उच्चारण में अंतर है.

2.2. ऐतिहासिक रूप से उर्दू से आये हुए कई शब्दों में पहले शब्दांत ⟨अह⟩ था, जो कालांतर में हिंदी में ⟨आ⟩ बन गया. उर्दू में अब भी ये शब्द ⟨ह⟩ (याने हम्ज़ह = हम्ज़ा) से ही लिखे जाते हैं. ख़ानह → ख़ाना (दवाख़ाना), ज़मानह → ज़माना. ऐसे अन्य बदले हुए शब्द हैं–*अंदाज़ा, अंदेशा, अफ़साना, आईना, इज़ाफा, अलावा, इशारा, उम्दा, ओहदा, क़स्बा, काफ़िला, किनारा, किला, कुर्ता, ख़ज़ाना, ख़तरा, ख़ाता, गंदा, गुज़ारा, चमचा, चश्मा, चेहरा* आदि. ऐसे शब्दों की संख्या सैकड़ों में है. उल्लेखनीय है कि *गिरह, वजह, सुबह, तरह, जिरह, सुलह, सतह* जैसे शब्दों में यह परिवर्तन नहीं हुआ और ये सब शब्द स्त्रीलिंग हैं. जिन शब्दों में परिवर्तन हुआ है, वे सब पुल्लिग हैं. शायद यह भी एक आधार है कि कुछ भाषावैज्ञानिक हकारांत उर्दू शब्दों को बहुधा स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं. देखें **ह**.

2.3. संस्कृत के विसर्ग युक्त शब्दों में भी उच्चारण की दृष्टि से /ह/ जैसी ही व्यवस्था है. यह एक से अधिक अक्षरों वाले शब्दों में ही आता है. *पुनः, अतः, क्रमशः, प्रायः, संभवतः* आदि शब्दों में /अ/ के दीर्घत्व को देख सकते हैं.

अः 1. हिंदी वर्णमाला में यह स्वरों का आख़िरी तथा 13वाँ वर्ण है. यह वर्ण संस्कृत के विसर्ग का द्योतक है, जो संस्कृत भाषा में महत्त्वपूर्ण है. यह केवल शब्दांत में (*अतः, प्रायः, पुनः*) या प्रत्ययांत में (*अंतःकरण, निःसंदेह*) आता है, हिंदी के शब्दों के बीच में, एक रूप वाले शब्दों में विसर्ग नहीं आता (*दुःख, देखें **दुख**). इसके उच्चारण के संदर्भ में ऊपर का प्रकरण देखें.

आँसू इस शब्द का प्रायः बहुवचन में ही प्रयोग होता है. *मेरी आँखों में आँसू आ गये. आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली.* (देखें ब्रज में अँसुवन की धारा) *उसके चेहरे पर से अभी आँसू भी नहीं सूखे*···. *इन आँसुओं का मोल तुम नहीं जानते.* लेकिन जहाँ हम इस शब्द से वास्तविक स्राव का नहीं, बल्कि आँसू बहाने के व्यापार का उल्लेख करते हैं, वहाँ इसका प्रयोग पदार्थ के संदर्भ में एकवचन में भी होता है. *आँसू में वह ताकत है, जो तलवार में भी नहीं.* (देखें **पसीना**)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ- यह 'तक' के अर्थ में संस्कृत का उपसर्ग है. *आमरण* (मृत्यु तक), *आजीवन* (जीवित रहने तक). समास से पहले आ कर यह 'से⋯तक' का अर्थ देता है. *आसेतु हिमाचल* (सेतु से हिमाचल तक), *आपादमस्तक* (पाद से मस्तक तक). यह उपसर्ग हिंदी के शब्दों में इस्तेमाल नहीं होता है, बल्कि ऐसे संस्कृत के प्रचलित प्रयोग ही हिंदी में चलते हैं.

आगे, सामने, पीछे 1. समय, स्थान तथा स्थिति की दृष्टि से क्रम से एक व्यापार, स्थान या बात आगे होता, एक उसके पीछे. *क्यू में राम मेरे आगे था. मेरे पास कुछ नहीं, आगे जाओ. इसके आगे मैं कुछ नहीं कहना चाहता. आगे क्या होगा, कोई नहीं जानता. वह ज़िंदगी में आगे बढ़ता गया.*

1.1. आगे में पीछे से तुलनात्मक अर्थ प्रकट होने के कारण इससे पहले 'से' भी आता है. *वह कक्षा में सबसे आगे है. तुम मुझसे आगे नहीं जा सकते.*

1.2. 'से' अपादान के अर्थ में भी आता है. *गाँव से आगे एक पोखर था.*

2. 'सामने' में क्रम का अर्थ नहीं, बल्कि दो वस्तुएँ एक दूसरे की तरफ़ मुँह करें, तो स्थिति सामने से व्यक्त होगी.
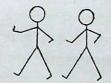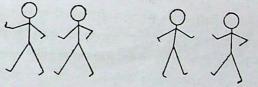
राम आगे है, कृष्ण पीछे.	*दोनों आमने-सामने हैं.*
राम कृष्ण से आगे है.	*राम के सामने कृष्ण है.*
कृष्ण के आगे राम है.	*कृष्ण के सामने राम है.*

3.1. कुछ स्थितियाँ ऐसी हैं, जिन्हें आगे, सामने दोनों से स्पष्ट कर सकते हैं. *मेरे आगे~सामने यही प्रश्न था, समस्या थी. हमें झूठ के आगे~सामने झुकना नहीं चाहिए. दूसरों के आगे~सामने हाथ पसारना अच्छी बात नहीं है.*

4. आगे के दो विशिष्ट अर्थ हैं. *तुम आगे जाओ* में कोई स्पष्ट क्रम नहीं दिखायी पड़ता, लेकिन अपनी स्थिति से आगे की स्थिति वाली बात है. यही कारण है कि *आगे बढ़ना, आगे रहना, आगे आना* जैसे मुहावरेदार प्रयोगों में *आगे* स्तर भेद सूचित करते हुए प्रमुखता, विशिष्टता आदि का अर्थ देता है, जबकि *सामने* प्रायः भौतिक स्थिति के अर्थ में ही आता है. *आगे* का दूसरा अर्थ क्रम में आगे-पीछे होने का है. इस कारण पीछे या उससे व्युत्पन्न *पिछड़ना* 'आगे' का दोनों ही अर्थों में विलोम है. *क्यू में मैं राम के पीछे था. कक्षा में मैं सबसे पीछे था. ज़िंदगी की दौड़ में मैं पीछे रह गया. वह उन्नति नहीं कर सकता, पिछड़ गया है.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदि, आदी

4.1. समय की दृष्टि से आगे या पीछे का अंतर करना मुश्किल है. कई लोग आगे को भविष्य और पीछे को भूतकाल का प्रयोग मानते हैं. *आगे क्या होगा, कोई नहीं जानता.* ?*भगवान बुद्ध ने पीछे कहा था.* इसके विपरीत कई प्रादेशिक प्रयोग मिलते हैं, जिनमें *आगे* भूतकाल में आता है और *पीछे* 'बाद में' के अर्थ में भविष्य में. (*आगे ज़िंदगी में मैंने कई परेशानियाँ झेली हैं. उसने कहा कि तुम जाओ, मैं पीछे आऊँगा.*) वक्ता किस काल की तरफ़ देख कर बोल रहा है, इसी से शायद कालक्रम का निर्धारण होता होगा.

आदि, आदी देखने में समान लगने वाले ये दोनों शब्द भिन्न हैं. *आदि* संस्कृत का अव्यय है, 'वग़ैरह' का अर्थ देता है (*चावल, गेहूँ आदि कई चीज़ें*). *आदी* 'आदत' से बना विशेषण शब्द है (*मैं मेज़ पर बैठ कर खाने का आदी हूँ~मुझे मेज़ पर बैठ कर खाने की आदत है*). 'आदत' से हिंदी में 'आदती' नहीं बनता, यह अमानक प्रयोग है.

आन, आ कर पुरानी हिंदी में *आन पड़ी है, आन पहुँचा* आदि रूप मिलते हैं, जो क्रमशः 'आ पड़ा, आ पहुँचा' के समानार्थी हैं. *आन* शायद आ कर का रूप होगा. तभी *आन मिलो* (आ कर मिलो) बनता है. *आन* की तरह अन्य रूप नहीं मिलते. ?*जान पहुँचा,* ?*जान मिले.* अभी भी *आन* बोलियों में सुरक्षित है.

-आन 1. गुरु अपने व्याकरण में 'लिंग' प्रकरण में कहते हैं कि कृदंत आनांत (अर्थात *-आन* से अंत होने वाले) संज्ञा शब्द पुल्लिग में आते हैं. शायद उनके समय में यह बात हो, लेकिन आज ऐसी स्थिति नहीं है. उन्होंने छह उदाहरण दिये हैं—खान, पान, उठान, *मिलान, नहान* तथा *लगान*. 'पान' संस्कृत शब्द है, 'पी' से बना कृदंत रूप नहीं है. खान केवल खान-पान में आता है, अकेले नहीं (?*मेरा खान, सवेरे का खान*). बृहत् हिंदी कोश, संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर दोनों के अनुसार उठान स्त्रीलिंग शब्द है, शेष तीनों पुल्लिग.

2. उठान, *थकान*, *उड़ान* स्त्रीलिंग शब्द हैं. तीनों क्रमशः 'उठना, थकना, उड़ना' के धातुओं में *-आन* प्रत्यय लगने से (उठ+आन) बने शब्द हैं. यह प्रत्यय स्त्रीलिंग शब्दों का निर्माण करता है. मेरा विचार है कि गुरु *नहान, मिलान,* उठान आदि के ऊपरी रूप साम्य के कारण विश्लेषण में चूक गये हैं. इसी के अनुसार स्त्रीलिंग शब्द *लदान* को हम 'लदना' से व्युत्पन्न मान सकते हैं, 'लादना' से नहीं.

3. *मिलान, नहान, लगान* तीनों क्रमशः 'मिलाना, नहाना, लगाना' से व्युत्पन्न शब्द हैं. धातु में -न लगने से ये शब्द प्राप्त हुए हैं. आकारांत धातुओं में -न प्रत्यय पुल्लिग शब्दों का निर्माण करता है. ऐसे अन्य शब्द हैं—*निपटान, भुगतान*.

4. इस विश्लेषण के अनुसार समस्या है स्त्रीलिंग शब्द मुस्कान (*मुस्का+न*).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5. 'उफान' शब्द बृहत् हिंदी कोश के अनुसार स्त्रीलिंग है, संक्षिप्त शब्दसागर

के अनुसार पुल्लिग. समान शब्दों के अनुसार इसे पुल्लिग मानने का प्रबल आधार है, विस्तृत चर्चा के लिए देखें **अ → आ**. ध्यान रहे कि यह 'थक (ना) + आन' जैसा शब्द नहीं, बल्कि यहाँ धातु 'उफन' का 'उफान' हुआ है.

6. दो अन्य पुल्लिग शब्द हैं, *वखान* (< व्याख्यान?), *चलान* (< चलाना?). अगर *वखान* **नामधातु** है, तो कृदंत तथा प्रत्यय की चर्चा आवश्यक नहीं है. अगर *चलान* 'चलाना' से बना है, तो ऊपर के 3 के अनुसार इसका पुल्लिग में होना ठीक है. यह 'चलना' से निष्पन्न नहीं होगा, क्योंकि *चलान* का अर्थ 'चलने की क्रिया' नहीं है.

आना 1. *आना* **गत्यर्थक क्रिया** है. यहाँ वक्ता या उल्लिखित व्यक्ति की ओर गति (आने) का अर्थ व्यक्त होता है. उद्गमन स्थान का उल्लेख 'से' से तथा गंतव्य स्थान का उल्लेख ϕ या 'तक' से होता है.

2. यह एक **रंजक क्रिया** है, जिसके दो प्रकार्य हैं. *झुक आना, घिर आना, भर आना, उमड़ आना* आदि में धीमी गति में या धीरे से प्रवाह या गति की सूचना मिलती है. *आ* + *धमकना, झपटना, गुजरना, अटकना* आदि में वक्ता या उल्लिखित व्यक्ति की दिशा में कार्य होने की सूचना मिलती है. अर्थात *आ* में दो तरह का रंजकत्व है.

3. कौशल जानने के संदर्भ में *आना* प्रयुक्त होता है. यहाँ ज्ञाता (कर्ता) में 'को' लगता है. *मुझे हिंदी आती है. मुझे तैरना नहीं आता. क्या तुम्हें टाइपिंग आती है?* यहाँ केवल अपूर्ण पक्ष की क्रिया आती है, 'आया, आ रहा है, आएगा' रूप नहीं आते. इसे हमें 'जानना' से बदल सकते हैं. *मैं हिंदी जानता हूँ* आदि. लेकिन 'मालूम' का प्रयोग कौशल जानने के लिए नहीं, विवरण जानने के लिए आता है. *मुझे हिंदी आती है* (**मुझे हिंदी मालूम है*). *मुझे उसका पता मालूम है* (**मुझे उसका पता आता है*). *जानना* दोनों ही वाक्यों में आता है.

4. शारीरिक व्यापार (*मुझे खाँसी/उलटी/मितली/नींद/सुस्ती आ रही है*) तथा मानसिक व्यापार (*मुझे उसपर प्यार/गुस्सा आया, मुझे वह बात याद आयी*) के लिए इसका प्रयोग होता है. 'पसंद आना' एक विशिष्ट प्रयोग है. *मुझे वह फ़िल्म पसंद नहीं आयी.*

5. 'आना' का एक विशेष अर्थ है 'अटना, फिट होना'. *मुझे ये कपड़े नहीं आएँगे. पहन कर देखो, यह कमीज़ तुम्हें ठीक आ जाएगी.* इसी तरह आधान पात्र में कोई चीज़ 'आती' है. *दो लिटर दूध इस बरतन में नहीं आएगा. यह पैकेट इस थैले में नहीं आएगा.* लगभग यही अर्थ निम्नलिखित वाक्यों में दिखायी पड़ता है--*रुपये में चार आम आते हैं. एक लिटर दूध तीन रुपये में आता है.*

6. जब हम गाड़ी में जा रहे हों, तो स्टेशन पहुँच कर कहते हैं *स्टेशन आ गया.* इसी तरह घर पहुँच कर कहते हैं *घर आ गया.* इसी को हम *स्टेशन/घर पहुँच*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गये भी कह सकते हैं. इसी तरह हम काल-गति में आगे बढ़ते हैं, लेकिन कहते हैं *गरमी आ गयी, जाड़े आ रहे हैं.*

7. होने, पैदा होने, विकसित होने के अर्थ में कई जगह 'आना' का प्रयोग होता है. *आम में बौर आ गये. इस वर्ष ख़ूब आम आये हैं. मेरा लड़का मेरे सीने तक आ गया है.*

-आना, -आनी ये दोनों उर्दू के प्रत्यय हैं, कुछ मिलते अर्थ में आते हैं और दोनों अविकारी हैं. प्रत्यय -आना उर्दू के -आनह रूप से निष्पन्न है और आकारांत में प्रयुक्त होता है. यह 'का, जैसा, वाला' का अर्थ देता है. *शायराना अंदाज़* शायरों /जैसी/ वाली स्थिति का अर्थ देता है. इसी तरह *शरीफ़ाना, नवाबाना, मालिकाना, आशिकाना* बनते हैं. ईकारांत शब्दों के साथ आने पर स्वर का ह्रस्वीकरण होता है, जैसे *वहशियाना*. समयवाचक 'रोज़, साल' में यह 'का' का अर्थ देता है. *रोज़ाना, सालाना* द्रष्टव्य हैं. आधुनिक हिंदी में *दोस्ताना, याराना* विशेषण के रूप में नहीं, मैत्री के अर्थ में संज्ञा की तरह प्रयुक्त होते हैं. -आना संज्ञा शब्दों के साथ ही आता है और *मस्ताना* में उपर्युक्त अर्थ का अभाव देख सकते हैं.

-आनी हिंदी के -इक, युक्त का अर्थ देता है. *जिस्मानी तकलीफ़, बरफ़ानी हवा/मंज़र, रूहानी मुहब्बत, नूरानी चेहरा* आदि में इस अर्थ को देख सकते हैं.

आये, आए 1. प्रस्तुत उदाहरणों के संदर्भ में हम देख सकते हैं कि हिंदी में कई क्रिया रूपों तथा विशेषण आदि में वर्तनी की विविधता है—*आएगा-आयेगा, नयी-नई* ऐसे कुछ उदाहरण हैं. ऐसे शब्दों में मानकीकरण के कई प्रयास हुए हैं और वैयाकरण भिन्न-भिन्न आधार ले कर अपनी बात प्रस्तुत करते हैं. इनमें प्रमुख आधार उच्चारण का है. कुछ विद्वान कहते हैं कि पूर्ण पक्ष की क्रिया *आया* आ+आ से बनती है और उच्चारण की सहजता के लिए दोनों स्वरों के बीच श्रुति /य/ का आगम होता है. लेकिन *आई, आए* आदि में दो स्वर बिना श्रुति के बोले जा सकते हैं, इस कारण 〈आया, आई, आए〉 रूप ठीक हैं.

वर्तनी के लिए उच्चारण का आधार लेना उचित है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि वर्तनी के मानकीकरण का आधार अकेले उच्चारण हो. वर्तनी के अपने नियम भी बन सकते हैं और वर्तनी की अपनी परंपरा भी हो सकती है. यह आवश्यक है कि वर्तनी में एकरूपता तथा सुगमता के गुण हों. और उच्चारण के संदर्भ में यह बात सिद्ध न हो, तो उच्चारण का सहारा छोड़ना भी उचित होगा. इन शब्दों के संदर्भ में भी यही बात है.

2. *आएगा, आयेगा, आवेगा, आयगा* ये चारों रूप मिलते हैं. *आवे, आवेगा* आदि रूप अल्प प्रचलित हैं और शायद बोलियों से उद्भूत प्रादेशिक रूप हैं. *आयगा* उच्चारण पर आधारित व्यावहारिक प्रयोग है. वास्तविकता यह है कि

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाएगा, आएगा जैसे शब्दों में हम सामान्य रूप से /जाय्गा, आय्गा/ जैसा उच्चा-

रण ही सुनते हैं. चूँकि करेगा आदि सैकड़ों शब्दों में /एगा/ मिलता है, हम एकरूपता की दृष्टि से *आएगा* को ले सकते हैं. इस तरह अब चयन का सवाल केवल दो शब्दों के बीच में है–*आएगा* और *आयेगा*.

2.1. हिंदी में क्रिया दो प्रकार की होती है–तथ्येतर और तथ्यपरक. तथ्येतर क्रिया रूपों की रचना संभावनार्थ रूप *आए*, *करे* आदि से होती है, जिनमें लिंग का भेद प्रकट नहीं होता. तथ्यपरक क्रियाओं में पूर्ण पक्ष के कृदंत के लिंग-वचन के भेद के आधार पर चार रूप मिलते हैं. मानकीकरण के संदर्भ में आवश्यक होगा कि हम तथ्येतर तथा तथ्यपरक क्रिया रूपों में अंतर कर सकें और सुगमता की दृष्टि से एकरूपता ला सकें. इस दृष्टि से उक्त दोनों रूपों की रचना का निम्न प्रकार से विधान किया जा सकता है–(अ) तथ्येतर क्रिया रूपों की रचना सर्वत्र स्वर से हो, जो व्यंजनों के ऊपर मात्रा के रूप में (*करे*, *देखे*, *पढ़ेगा*, *सुनेगा*) और स्वरों के बाद <ए> के रूप में (*जाए*, *पिएगा*, *छुए*, *सोएगा*) निष्पन्न हों. (आ) कृदंत के चारों रूप एक जैसे हों; चारों में मात्रा हो (*देखा*, *देखें*, *देखी*, *देखीं*) या चारों में स्वर हो (*हुआ*, *हुए*, *हुई*, *हुईं*). रूप स्वनिमिक कारणों से *लिया*, *सिया*, *खेया*, *सोया*, *रोया* आदि को मूल रूप मान सकते हैं. *सिया*, *पिया*, *किया*, *दिया*, *लिया* के स्त्रीलिंग रूप क्रमशः *सी*, *पी*, *की*, *दी*, *ली* हैं.

2.2. इस तरह तथ्यपरक और तथ्येतर क्रियाओं में वर्तनी के स्तर पर अंतर करने का एक फ़ायदा है. मैंने अनुभव किया है कि बहुधा अहिंदी भाषी छात्र *वे आये*–(अगर) *वे आये/आएँ* की रचना में अंतर नहीं कर पाता. यह कठिनाई इस कारण से भी है कि शर्त वाले वाक्यों में हिंदी के दुहरे रूप हैं–(अगर) *वे आये/आएँ*; (अगर) *वह आया/आए*, (अगर) *तुम आये/आओ*. वैसे (अगर) *पी/ पियें*, *लिया/लें* आदि संदर्भों में यह अंतर स्पष्ट है, लेकिन *आये*, *आए* आदि के संदर्भ में यह कठिनाई कम से कम वर्तनी के स्तर पर दूर हो सकती है.

पूर्ण पक्ष की क्रियाओं के मानकीकरण से हमें वर्तनी के क्षेत्र में एक और फ़ायदा भी मिल सकता है. संज्ञा तथा सर्वनामों में बहुधा स्वर /अ/आ+ई/ बिना श्रुति के आते हैं. अगर हम क्रियाओं की रचना <य> से करें, तो निम्नलिखित युग्मों में बिना प्रसंग के क्रिया और संज्ञा में अंतर कर सकेंगे–*आयी*-*आई* (माँ), *भायी*-*भाई*, *लायी*-*लाई*, *खायी*-*खाई*, *पायी*-*पाई*. साथ ही *राई*, *लेई*, *काई*, *दाई*, *मई* आदि शब्दों को देखते ही छात्र पहचान सकेंगे कि ये संज्ञादि शब्द होंगे.

2.3. यह बात वाक्य के भीतर पूर्ण पक्ष में आये कृदंतों पर भी लागू होगी, जैसे *बिना खाये*, *घबराये-से*, *लगी-लगायी*, *आये हुए लोग*, *मुँह बाये* आदि.

विधि के रूपों की रचना में भी 2.1. के नियम लागू हो सकते हैं (*करो*, *पढ़ो*, *आओ*, *पिओ*, *सोओ* आदि).

संज्ञा तथा विशेषण भी उक्त 2.1 के नियम से ही बनेंगे (*कुआँ*, *कुएँ में*,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रोआँ~रोयाँ, रोएँ~रोयें, सुआ, सुए, साया, साये; नया, नये, नयी, नयी)

आलस, आलस्य हिंदी में *आलस* स्वयं ही संज्ञा शब्द है (*क्यों आलस कर रहे* *तुम्हें आलस क्यों हो रहा है?*). 'आलस्य' संस्कृत के हिसाब से सही शब्द है; 'अलस' (विशेषण) से व्युत्पन्न है. इसी कारण बृहत् हिंदी कोश, हिंदी शब्दस दोनों 'आलस' को विशेषण मानते हैं. आज की हिंदी में *आलस* (संज्ञा), आल (विशेषण) स्वीकृत शब्द हैं और *आलस* का विशेषण में प्रयोग प्रायः नहीं मि (**वह बहुत आलस आदमी है*). *अलस* हिंदी में अप्रचलित है, *आलस्य* को सा त्यिक शब्द मान लेना चाहिए.

इंदिरा इंद्र देव की पत्नी का नाम इंद्राणी है. लेकिन इंदिरा लक्ष्मी का नाम इस शब्द को 'इंद्रा' लिखना गलत है.

इकाई के शब्द कोई 14–15 साल पहले की बात है. मेरे एक मित्र थे, संस्कृत ज्ञाता तथा हिंदी व्याकरण के अहम्मन्य पारखी. वे *दो साल पहले* नहीं कहते (सोचते होंगे कि सभी मूर्ख गलत बोल रहे हैं), *दो वर्षों के पहले* कहते थे. उन प्रयोग उसी समय (तभी मैंने हिंदी ठीक से बोलना प्रारंभ किया था) मुझे कु अटपटा लगता था. लेकिन मैं समझ नहीं पाया था कि कहाँ, क्या गड़बड़ है.

1. क्षण, पहर, याम, दिन, हफ़्ता, महीना, साल आदि समय नापने तथा सूचि करने के शब्द हैं. ये समय की अलग-अलग इकाइयाँ हैं. इंच, सेंटीमीटर, फ़ु गज़, मीटर, फ़र्लांग, मील आदि दूरी की इकाइयाँ हैं. रुपया, पैसा आदि मुद्रा व इकाइयाँ हैं. जब ये इकाई सूचित करने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषणों के सा आते हैं, तब इन का बहुवचन तिर्यक रूप नहीं बनता. कुछ उदाहरण देखिए *यह काम दो-चार महीने में पूरा हो जाएगा.* *यह मकान 50,000 रुपये में बना* *गाड़ी पचास मील की रफ़्तार से जा रही थी.* *वहाँ पाँच कमरे का एक मका है, सिर्फ़ तीन सौ रुपये में है.* अगर कोई इन संदर्भों में *!दो-चार महीनों मे* *?50,000 रुपयों में, *पचास मीलों की रफ़्तार, !पाँच कमरों का मकान, *ती सौ रुपयों में* कहता है, तो वह हिंदी की प्रकृति से अनभिज्ञ व्यक्ति है, या मेरे उक्त मित्र की तरह स्वघोषित वैयाकरण है.

1.1. जिन वाक्यों में निश्चित संख्या का उल्लेख नहीं होता, वहाँ बहुवचन इकाई के शब्दों का तिर्यक रूप में प्रयोग होता है (देखें **वचन**). एकवचन -जैसा शब्द तो अपनी जगह है ही. समान वाक्यों में तुलना देखिए :

वहाँ दो मील लम्बी कतार थी	*वहाँ मीलों लम्बी कतार थी*
कई साल पहले की बात है	*सालों पहले की बात है*
कई युग बीत गये	*!युगों बीत गये*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाँच मिनट में सारी भीड़ छँट गयी : मिनटों में सारी भीड़ छँट गयी
सौ-दो सौ टन अनाज बरबाद हो गया टनों अनाज बरबाद हो गया
कोई दो-तीन लाख लोग··· लाखों लोग···

1.2. दर्जन, सौ (सैकड़ों), हज़ार, लाख, करोड़ आदि भी इकाई के शब्द हैं.
ऊपर के उदाहरणों में आपने देखा होगा कि दो-तीन लाख की जगह (*दो-तीन
लाखों) लाखों का प्रयोग होता है. 'सौ' छोड़ कर उक्त संख्यावाचक शब्दों में
यह प्रयोग मिल सकता है. दर्जनों, हज़ारों, लाखों, करोड़ों. 'सौ' का रूप सैकड़ों है.
देखें **सैकड़ा**. 'बीस' और 'पचास' की इकाई न होने पर भी (*दो बीस, ?चार बीस)
इनके तिर्यक रूप इस संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं. बीसियों, पचासों.

2. इकाई के शब्द क्रियाविशेषण की तरह आते हैं, तब उनका तिर्यक रूप में
प्रयोग होता है. लेकिन वहाँ भी संख्यावाचक शब्द के साथ बहुवचन रूप नहीं
मिलता.

मैं मद्रास में चार महीने रहा (*चार महीनों).
तुम वहाँ दो-चार साल रहे. हम वहाँ सालों रहे.
तुम यहाँ कुछ हफ़्ते रहो. तुम यहाँ हफ़्तों रहो, हमें क्या परेशानी है?

2.1. कुछ लोग कहते हैं मैं वहाँ एक दिन रहा. मैं वहाँ एक हफ़्ता रहा.
मैं वहाँ एक महीना रहा. हम अन्यत्र देख चुके हैं (**क्रियाविशेषणों के तिर्यक
रूप**) कि समयवाचक क्रियाविशेषण तिर्यक रूप में ही आता है. मैं समझता हूँ कि
एक हफ़्ते/महीने रहा ही सही प्रयोग है. वैसे, इस समय दोनों का लगभग समान
रूप से प्रयोग होता है.

3. इकाई शब्दों की सूची बनाइए. कुछ मैं नीचे दे रहा हूँ—चार मंज़िल का
मकान, दो वित्ते का आदमी, पाँच हाथ की साड़ी, दो टके का आदमी, दो बीघा
ज़मीन, दो कौड़ी का आदमी/की औरत.

आगे के प्रयोग क्यों इकाई के शब्दों से निर्मित नहीं हैं, सोचिए-*100-200*
आदमियों की भीड़, पाँचों दिन, रातों रात, दो रंगों की छपाई.

इनकार, नकार 1. आदेश, सुझाव, मिन्नत के संदर्भ में व्यक्ति अपेक्षित कार्य करने
से इनकार करता है.

मैंने उससे रुपये माँगे. उसने देने से इनकार किया.
बड़ों की बात मानो. काम करने से इनकार न करो.
पैसे न मिलने के कारण रामू अख़बार डालने से इनकार करने लगा.

2. इस संदर्भ में कुछ लोग 'मना' का प्रयोग करते हैं. 'उसने पैसा देने को मना
किया' आदि. 'मना' का प्रयोग यहाँ त्याज्य है.

3. यह अरबी का शब्द है, न, क, र के संयोग से बना है. इस शब्द का
〈इंकार〉 का त्याज्य है क्योंकि इसमें /ङ्क/ का गलत उच्चारण होने की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संभावना है. ऐसे शब्दों में प्रायः द्‌वितीय वर्ण पूरा लिखा जाता है. 〈इनकार〉 ग्रहणीय है.

4. 'नहीं' करना 'नकारना' है. यह नया बनाया शब्द है और कई कोश मिल भी नहीं सकता. साहित्यिक प्रयोग में यह शब्द किसी चीज़ या व्य या विचार के अस्तित्व को मानने से इनकार करने का अर्थ देता है. *हम अ अस्तित्व को नकार रहे हैं.*

'नकारात्मक' उत्तर (नहीं में उत्तर) पहले से प्रचलित शब्द है.

इसलिए, चूँकि, क्योंकि 1. *इसलिए* दो स्वतंत्र उपवाक्यों को जोड़ता है और द में कारण-कार्य संबंध बताता है. *बारिश हो रही थी, इसलिए मैं स्कूल नहीं ग आप ने बुलाया, इसलिए आया हूँ.*

1.1. 'इसलिए' को तोड़ कर बीच में कारण संज्ञा+परसर्ग के रूप में स्पष्ट क सकते हैं. *इस काम के लिए, इस किताब के लिए.*

1.2. अगर वक्ता केवल कारण को सूचित करना चाहे, तो *इसलिए कि* क प्रयोग होगा.

आप क्यों आये हैं? इसलिए कि मैनेजर ने बुलाया था. (*इसलि मैनेजर···)

आप उसे क्यों मार रहे हैं? इसीलिए कि यह बहुत शैतानी करता (*इसीलिए यह बहुत···)

1.3. *इसीलिए* को कुछ लोग 'इसलिए ही' भी कहते हैं. इसीलिए ग्रहणीय है.

2. *इसलिए* कार्य सूचित करने वाले वाक्यों में लगता है, चूँकि कारण सूचि करने वाले वाक्यों में लगता है. दोनों वाक्यों का उपवाक्य क्रम एक ही होता है *चूँकि बारिश हो रही थी, मैं स्कूल नहीं गया. चूँकि आपने बुलाया, मैं आया हूँ*

2.1. कुछ लोग चूँकि वाले वाक्य में दूसरे उपवाक्य में 'इसलिए' भी जोड़ देते हैं. यह अनावश्यक प्रयोग है, त्याज्य है. **चूँकि आपने बुलाया, इसीलिए मैं आया हूँ.*

3. अगर वाक्य में कार्य-कारण संबंध बताया जाए, तो दूसरे उपवाक्य में क्योंकि लगेगा. *मैं स्कूल नहीं गया, क्योंकि बारिश हो रही थी. मैं सिनेमा नहीं देख सका, क्योंकि बारिश हो रही थी.*

3.1. यहाँ भी वक्ता सिर्फ़ कारण सूचक वाक्य का उच्चारण कर सकता है. *आपने सिनेमा क्यों नहीं देखा? क्योंकि बारिश हो रही थी.* इस तरह कारण वाले उपवाक्य *क्योंकि बारिश हो रही थी, इसलिए कि बारिश हो रही थी* दोनों पर्याय हैं.

3.2. यहाँ भी कई लोग एक साथ 'इसलिए, क्योंकि' का गलत प्रयोग करते हैं. **मैं इसीलिए स्कूल नहीं गया, क्योंकि बारिश हो रही थी.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. तीनों वाक्यों की रचना को निम्न प्रकार से बताया जा सकता है :

कारण उपवाक्य—अ कार्य उपवाक्य—ब

अ इसलिए **ब**, चूँकि **अ ब**, **ब** क्योंकि **अ**

5. अतः, अतएव इसलिए के पर्याय हैं और साहित्यिक या शिष्ट भाषा में प्रयुक्त होते हैं.

स्तेमाल अंग्रेज़ी, संस्कृत आदि के स्+व्यंजन वाले शब्दों में उच्चारण सुविधा के लिए हिंदी में आदि स्वरागम होता है, जैसे इस्कूल, इस्टेशन, इस्टूल. पढ़े-लिखे लोग इस प्रवृत्ति को रोकते हैं और /स्कूल/ आदि सही उच्चारण करते हैं. **अतिसुधार** की मनोवृत्ति के कारण इस्तेमाल को भी कोई-कोई स्तेमाल लिखते हैं. इस्तेमाल सही रूप है.

हिंदी में औरत को 'स्त्री' कहते हैं और धुले हुए कपड़े पर 'इस्त्री' होती है. स्वरागम से स्त्री का 'इस्त्री' होता है और अतिसुधार के कारण कुछ लोग कपड़े पर भी स्त्री करते हैं. दोनों शब्दों की सही वर्तनी का ध्यान रखिए.

उ- 1. यह उनींदा में उपसर्ग या पूर्व प्रत्यय की तरह लगता है. उनींदी आँखें अर्थात, नींद से भरी आँखें. हिंदी में उ- प्रत्यय एक विरल रूप है. इसका प्रयोग अन्यत्र किसी शब्द में नहीं मिलता.

1.1. इसी तरह उसाँस एक शब्द मिलता है. यहाँ का उ- प्रत्यय ऊपर के रूप से भिन्न होता है. उसाँस 'उच्छ्वास' (उत्+श्वास) का तद्भव रूप है. 'श्वास' से साँस बनता है और 'उच्छ्वास' से उसाँस.

2. इसी तरह उऋण का उ- भी विरल रूप है. यह ऊपर के दोनों उ- से भिन्न रूपिम है.

उक्त 'उक्त' के साथ आने वाले कुछ शब्दों में गलत संधि का भी प्रयोग दिखायी पड़ता है. उपरि+उक्त का निष्पादन उपर्युक्त, पुनः+उक्त का निष्पादन पुनरुक्त होता है. लेकिन गलती से इन्हें क्रमशः *उपरोक्त, *पुनरोक्त लिखा जाता है.

उत्-, सत्- प्रयोग की विविधता के कारण यहाँ संस्कृत के दो उपसर्ग उत् तथा सत् पर विस्तार से लिख रहा हूँ. आप देखेंगे कि किस प्रकार एक रूपिम के कई सदस्य हैं—(अ) स्वर से पहले /उद्, सद्/—उदधि, उदयन, उदयाद्रि, उदार, उदास, उदीच्य, सदानंद, सदाचार, सदिच्छा, सदुपयोग, सदाश्रय, सदुद्देश्य. (आ) क, त, प वर्ग के स्पर्श व्यंजनों तथा /य, व, र, स/ से पहले—अघोष व्यंजनों से पहले /उत्, सत/—उत्कर्ष, उत्थान, उत्तीर्ण, उत्पादन, उत्तर, उत्तम, उत्पन्न, उत्क्षेप, उत्खनन, उत्साह, उत्सर्ग, सत्कार्य, सत्कार, सत्पथी, सत्साहित्य. घोष व्यंजनों से पहले /उद्, सद्/—उद्गम, उद्गार, उद्घोष, उद्देश्य, उद्धार, उद्दाम, उद्दंड,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उद्भव, उद्यान, उद्योग, उद्रेक, उद्वेग, सद्भावना, सद्योग, सद्गुरु, सद्विचार. (इ) नासिक्य से पहले /उन् सन्/–उन्नति, उन्नयन, उन्मीलन, सन्मार्ग, सन्मति. (घ) च, ट वर्ग के स्पर्श व्यंजनों तथा /श, ल/ से पहले समी-करण--उड्डयन, उल्लेख, उल्लास, उज्ज्वल, उज्जीवन, उच्छेद, उच्छिष्ट (उत् + शिष्ट), उच्छ्वास (उत् + श्वास), सज्जन, सच्चरित्र, सच्चिदानंद, सच्छास्त्र (सत् + शास्त्र). इसी तरह शरच्चंद्र (शरत् + चंद्र), शरदवकाश (शरत् + अवकाश), चिदानंद (चित् + आनंद), चिदंबर (चित् + अंबर) आदि अन्य शब्द भी देखे जा सकते हैं, जो इसी रूप रचना पर आधारित हैं.

उधर 1. प्राय: अहिंदी भाषी 'कहाँ' आदि की जगह 'किधर' आदि का प्रयोग करते हैं. *?आप किधर जा रहे हैं? मैं बाज़ार जा रहा हूँ.* यह विशेषता ख़ासकर दिल्ली और दक्षिण के शहरों में सुनने को मिलती है. **गत्यर्थक** क्रियाओं के संदर्भ में 'वहाँ' आदि से गंतव्य का अर्थ प्रकट होता है, 'उधर' आदि से दिशा का.

आप कहाँ जा रहे हैं? मैं स्टेशन जा रहा हूँ.

आप किधर जा रहे हैं? मैं स्टेशन की तरफ़ जा रहा हूँ.

वहाँ कहाँ? एक दोस्त के घर.

स्थानवाचक क्रियाविशेषण के रूप में 'यहाँ' अन्य क्रियाओं के साथ आता है स्थान सूचित करता है. *कल यहाँ एक भाषण होगा* (*इधर).

कुछ प्रसंग ऐसे हैं, जहाँ दोनों संभव हैं और अर्थ का अंतर पहचाना जा सकता है.

बच्चे, यहाँ आओ (मेरे पास)

बच्चे, इधर आओ (मेरी तरफ़)

कई प्रसंगों में एक दूसरे से स्थानापन्न नहीं हो सकते. *तुम यहाँ बैठो* (*इधर). *तुम्हारी कमीज़ कहाँ* (*किधर) *है? तुम्हारा स्कूल कहाँ* (~किधर) *है? वह देखो, एक बस जा रही है न, तुम भी उधर ही जाओ* (*वहीं). *वहाँ~उधर देखो. एक मंदिर है न, वहीं~उधर ही आओ. देखो, वहाँ वे लोग क्या कर रहे हैं?* (*उधर).

2. इस अंतर को अन्य मुहावरेदार प्रयोगों में भी देख सकते हैं. *बोरी नीचे गिरी और सारे फल इधर-उधर बिखर गये* (*यहाँ-वहाँ). *तुम चीज़ें जहाँ-तहाँ रख देते हो* (*इधर-उधर).

2.1. *यहाँ से, इधर से* में स्पष्ट अंतर देख सकते हैं. यही बात 'तक' में भी है. *यह बस यहाँ से जाती है* (बस का उद्गम स्थान 'यहाँ' है). *यह बस इधर से जाती है* (बस के मार्ग में 'यहाँ' है). *यह बस यहाँ तक आती है* (*इधर तक). जिन वाहनों के मार्ग निश्चित हैं या मतलब के नहीं हैं, वहाँ केवल गंतव्य का उल्लेख होता है. *यह हवाई जहाज़ कहाँ जाता है?* (*किधर) *?यह रेल किधर*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाती है ?

उधार अनुवाद 1. यह शब्द अंग्रेज़ी loan translation का स्वयं उधार अनुवाद है और शब्द की रचना ही इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करती है. किसी भाषा से कोई शब्द उधार लेकर उसके खंडों का अनुवाद करना शब्द (विशेषकर पारिभाषिक शब्द) निर्माण की एक प्रक्रिया है. इसी को ऋण-अनुवाद भी कह सकते हैं. अंग्रेज़ी शब्दों में (प्रायः) हर जगह deputy के लिए उप, assistant के लिए सहायक, head के लिए प्रधान आदि लगाते चलें, तो हमें सैकड़ों शब्द बनाने की सुविधा मिल जाती है, अंग्रेज़ी शब्दों से परिचित व्यक्ति के लिए हिंदी को अपनाना आसान हो जाता है और शब्द निर्माण के लिए सुदृढ़ नींव बन जाती है. अगर बड़े शब्दों की कुछ इकाइयाँ भाषा में पहले से हों, तो केवल एक शब्द की रचना करने या उसे उधार (अनूदित) लेने पर अन्य कई शब्द बनाने की सुविधा हो जाती है, जैसे 'पार्लियामेंट' के लिए संसद बना, तो उधार अनुवाद पद्धति से संसद सचिव, संसद सदस्य, संसद अधिवेशन, संसद समिति आदि भी बनाये जा सकते हैं.

2. आज साहित्य में अस्तित्ववाद, एकाकीपन, नवलेखन, नयी दिशा, बुद्धिजीवी, समवेदना के स्तर पर, क्रुद्ध नवयुवक, समसामयिक राजनीति या समाचार पत्रों की भाषा में चरित्र हनन, विश्वास का संकट, वर्ग संघर्ष, ध्यानाकर्षण, अविश्वास प्रस्ताव, आर्थिक मामले, ग्रामीण विकास, प्रशासन की भाषा में संसद प्रश्न, अनापत्ति प्रमाणपत्र (no objection certificate), कल्याण अधिकारी, अतिरिक्त समय भत्ता, कार्योत्तर स्वीकृति (post facto sanction), विज्ञान की भाषा में भूभौतिकी (geophysics), नाभिकीय भौतिकी (nuclear physics), समद्विबाहु त्रिकोण आदि शब्द अंग्रेज़ी से उधार अनुवाद की प्रक्रिया द्वारा लिये गये हैं. सामान्य भाषा में भी अंग्रेज़ी से सैकड़ों मुहावरे या मुहावरेदार प्रयोग इस पद्धति से लिये गये हैं, आज भी लिये जा रहे हैं. कुछ उदाहरण देखिये—आसन ग्रहण करना, ···पर प्रकाश डालना, काला धन, काला बाज़ार, चाय लेना, कटु सत्य, लालफ़ीता शाही, बदला लेना, दिशा देना, इतिहास अपने को दुहरा रहा है, ध्यान देना, ध्यान आकृष्ट करना, प्रमुखता देना, विचारोत्तेजक, परीक्षा लेना, चुनाव लड़ना. हम नहीं कह सकते कि इस प्रवृत्ति के अभाव में आज हिंदी का क्या रूप होता. चूँकि सभी भारतीय भाषाएँ इसी प्रक्रिया से गुज़र रही हैं, सभी भाषाओं में यह सामान्य तत्त्व-सा बन गया है.

3. उधार अनुवाद के कारण भाषा की प्रवृत्ति भी बदल रही है और लेखन की भाषा बोलचाल की भाषा से कुछ दूर होती जा रही है. एक उदाहरण देखिए—···को कलात्मक सार्थकता प्रदान की है (धनंजय वर्मा). आम बोलचाल में हम कहते— ···कला की दृष्टि से सार्थक बताया है. इस प्रकार हिंदी में कई

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नयी वाक्य रचनाएँ, नये वाक्यांश आदि उधार अनुवाद की देन हैं. लेकिन
श्यकता इस बात की है कि शब्द निर्माण करने वाले हिंदी की प्रवृत्ति को भी
में रखें. अंग्रेज़ी में science department है, तो हिंदी में *विज्ञान विभा*
लेकिन scientific adviser हिंदी में *वैज्ञानिक सलाहकार* क्यों हो ? (
अवैज्ञानिक सलाहकार भी होता है ?). Finance minister के लिए *वित्त म*
financial adviser/matters के लिए *वित्तीय सलाहकार/मामले*. हिंदी में
मंत्री/मंत्रालय/सचिव/सलाहकार अच्छे शब्द हैं, *वित्त के मामले* अच्छा प्र
है. इसी तरह *आर्थिक नीति* की जगह *अर्थ नीति*, *केंद्रीय समिति* की ज
केंद्र समिति, *सामाजिक शास्त्र* की जगह *समाज शास्त्र*, *औद्योगिक विस*
की जगह *उद्योग विस्तार*, *शारीरिक रचना* की जगह *शरीर रचना*, प्रशास
मामले की जगह *प्रशासन के मामले*, *कार्यालयीन* की जगह *कार्यालय का* हि
की प्रवृत्ति के अनुरूप हैं, सहज प्रयोग हैं. हिंदी में अंग्रेज़ी के मुकाबले दो संज्ञा
को साथ में रखकर संयुक्त शब्द बनाने का तरीका अधिक प्रचलित है. *आर*
कक्ष, *मातृ प्रेम*, *मनुष्य जीवन* ऐसे कुछ सहज शब्द हैं. यह संयोग अंग्रेज़ी
संभव नहीं है. इस तरह की भाषिक विशेषताओं को ध्यान में रखे बिना उधा
अनुवाद करना भाषा के स्वरूप को बिगाड़ना होगा. लेकिन *पैतृक संपत्ति*
शारीरिक रचना, *वाणिज्यीय संपर्क*, *संघीय राज्य*, *शैक्षिक संगठन* आदि (व
अनावश्यक या अटपटे) प्रयोग उधार अनुवाद के कारण बढ़ते जा रहे हैं.

उपवाक्य व्याकरण ग्रंथ सरल वाक्य को वाक्य मानते हैं और मिश्र वाक्य के अस्व
तंत्र उपवाक्य को उपवाक्य. लेकिन भाषाविज्ञान सरल वाक्य को भी स्वतं
उपवाक्य मानता है. इस नयी मान्यता से **वाक्य** तथा उपवाक्य में प्रयोग औ
रचना की दृष्टि से अंतर किया जा सकता है. उपवाक्यों से वाक्य का निर्माण
होता है और उपवाक्य वाक्यांशों से निर्मित होते हैं.

उपवाक्य मुख्य रूप से तीन प्रकार के कहे जाते हैं—कर्मयुक्त उपवाक्य, अकर्मक
उपवाक्य तथा पूरक उपवाक्य. इनके अपने उपवर्ग हैं, कहीं इनसे भिन्न उपवाक्य
संरचनाएँ भी हैं. भाषाविज्ञान के ग्रंथ उपवाक्य की रचना, विशेषताएँ आदि की
विस्तृत चर्चा करते हैं.

अस्वतंत्र उपवाक्यों को प्रकार्य की दृष्टि से संज्ञा उपवाक्य आदि की संज्ञा देते हैं
रचना की दृष्टि से ये उपवाक्य कुछ विशेषताओं को छोड़कर स्वतंत्र उपवाक्य के ही
समान हैं. इन्हीं की तरह **वाक्यांश** रचना के भीतर विशेषण तथा क्रियाविशेषण
के विस्तार में क्रिया वाले खंड आते हैं. इन्हें भी उपवाक्य के समान विश्लेषित
करना होगा.

उपवाक्य स्तर पर वाक्य रूपांतरण का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है. भाषा के प्रमुख
उपवाक्य मिल जाएँ, तो इनमें लगभग हर वाक्य का अन्य कई वाक्यों में रूपांतर-

-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

रण संभव है. उदाहरण के लिए एक मूल वाक्य तथा उसके कुछ प्रमुख रूपांतरण देखिए :

	नौकर ने मेज़ लगायी.
वाच्य रूपांतरण	मेज़ लगायी गयी.
	नौकर से मेज़ नहीं लगायी जा सकी/गयी.
मिथ्या वाच्य रू०	मेज़ लगी.
	नौकर से मेज़ नहीं लगी.
प्रश्न रू०	क्या नौकर ने मेज़ लगायी ?
निषेध रू०	नौकर ने मेज़ नहीं लगायी.
प्रेरणार्थक रू०	मालिक ने नौकर से मेज़ लगवायी.

उपसर्ग 1. शब्द के आदि में लगने वाले प्रत्यय 'उपसर्ग' कहलाते हैं. भाषाविज्ञान के अनुसार ये पूर्व प्रत्यय कहलाते हैं. हिंदी में संस्कृत और उर्दू से आये हुए पूर्व प्रत्ययों के अलावा हिंदी के अपने उपसर्ग भी हैं. यहाँ उपसर्गों की सूची दी जा रही है :

संस्कृत उपसर्ग

अ, अन्	अकारण, अनादर
अति	अतिक्रमण, अत्यंत, अतीत
अधि	अधिकार, अध्यक्ष, अधीक्षक
अनु	अनुवाद, अन्वेषण
अप	अपमान
अभि	अभिलाषा, अभ्यास, अभीष्ट
अव	अवगुण
आ	आचरण
उत्	उत्कर्ष, उद्भाव, उन्माद, उल्लेख, उड्डयन, उच्छ्वास, उन्नति
उप	उपकार
कु	कुरूप
दुः	दुराचार, दुर्लभ, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुश्चरित्र
नि	निमग्न, न्यास
निः	निरादर, निर्दय, निश्चल, निष्कपट, निस्सीम, निश्शब्द, नीरोग
परा	पराक्रम
परि	परिहास, परीक्षा, पर्यंत
प्र	प्रताप
प्रति	प्रतिकार, प्रत्यक्ष, प्रतीक्षा
वि	विकार, व्यास
सं/सम्	संकोच, संयोग, सन्निकट, सम्मुख, संसार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सु	सुपुत्र

हिंदी उपसर्ग

अ	अथाह	नि (< निः)	निकम्मा
अन	अनमोल	बिन	बिनमाँगा
उन	उनसठ	भर	भरसक
औ (अव)	औगुन	स~सु	सपूत, सुपूत
क~कु	कुपूत, कपूत		

उर्दू के उपसर्ग

कम	कमउम्र	बा	बाकायदा
गैर	गैरकानूनी	बिला	बिलानागा
? दर	दरअसल	बे	बेचारा
ना	नापसंद	ला	लाजवाब
ब	बदस्तूर	सर	सरपंच
बद	बदनाम	हम	हमउम्र

2. मैंने साहस तो कर लिया कि उपसर्गों की एक सूची दूँ, लेकिन लिखते अब भी लग रहा है कि यह बहुत दुर्वह काम है. उपसर्ग प्रत्यय है, जिससे शब्द रचना होती है. लेकिन इसमें दो व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं. कहीं-कहीं कुछ प्रत्यय मिलते हैं, जो विरल होते हैं, जैसे कि उनींदा में **उ-** है. इसी तरह विदेशी भाषाओं के दो-एक शब्द कोई उपसर्ग अपने साथ लाते हैं. जैसे अरबी का अल (अलबत्ता), फ़ारसी का फ़िल (फ़िलहाल). ऐसे स्थानों में उपसर्ग अलग करके देखने में ज्ञान तो ज़रूर बढ़ता है, लेकिन इन्हें एक शब्द मानना अधिक व्यावहारिक होगा.

उपसर्ग केवल शब्द रचना के स्तर पर देखा जा सकता है और वाक्य संरचना के जो तत्त्व उपसर्ग जैसे लगते हैं, उन्हें अलग करना उचित होगा. 'आधा खुला' को *अधखुला* कहें, तो अध- उपसर्ग नहीं होगा. यह विशेषण है, बद्ध रूप है. दरअस्ल (अस्ल में) एक वाक्यांश संरचना है. लेकिन 'सु' या 'कु' विशेषण होने के बाद भी स्वतंत्र शब्द नहीं हैं. 'कम' स्वतंत्र होने पर भी आगे के पहले वाक्य में संरचना के स्तर पर विशेषण नहीं है, दूसरे में है :

वह कमउम्र लड़का है.

वह इतनी कम उम्र में भी इतना अच्छा गा लेता है.

3. इन सब कारकों (factors) के होते हुए भी, अगर उपसर्ग पर कुछ कहा जाए, तो उसके कुछ कारण होने चाहिए. हम उपसर्गों के संदर्भ में इनकी वर्तनी की विशेषताएँ देख सकते हैं. **संधि** के प्रकरण में तथा अन्य प्रविष्टियों में उपसर्गों की विशेषताओं की चर्चा की गयी है. उपसर्गों की चर्चा के आधार पर हम शब्दों की अर्थ संबंधी विशेषताओं को भी देख सकते हैं. अतः इस सूची को केवल

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरणार्थ माना जाए, न कि उपसर्गों के बारे में अंतिम विश्लेषण.

उपर्युक्त, उपरोक्त इन दोनों में प्रथम प्रयोग ग्रहणीय है. देखें **उक्त**.

उभयलिंगी शब्द 1. लिंग हिंदी के संज्ञा शब्दों की एक व्याकरणिक कोटि है, अर्थात हिंदी के सभी शब्द पुल्लिग या स्त्रीलिंग किसी एक वर्ग में आते हैं. लेकिन कुछ शब्दों में यह वर्गीकरण स्पष्ट नहीं है और शब्द दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं. ऐसे शब्दों को हम उभयलिंगी शब्द कह सकते हैं. *झंझट, दही, रिक्शा* (देखें **क्ष**), *खेल, गेंद, आत्मा, सहाय, तमाखू, विनय, सामर्थ्य* (देखें **-य**), *चर्चा, रामायण, कलम* उभयलिगी शब्द हैं और स्थानीय प्रयोग के आधार पर सूक्ष्मता से देखें, तो कुछ शब्द और मिल सकते हैं.

2. शब्दों के उभयलिंगी प्रयोग के कई कारण हैं. हम यहाँ इन कारणों की चर्चा करेंगे. संस्कृत से आये शब्दों में जहाँ लिंग परिवर्तन हुआ या होता जा रहा है, वहाँ कुछ व्यक्ति परिवर्तन को न अपना कर मूल लिंग का इस्तेमाल करते हैं. जैसे *मेरा आत्मा, मेरा देह* आदि. *जय, पराजय, विनय, सामर्थ्य* जैसे अकारांत शब्द हिंदी में स्त्रीलिंग कैसे हुए, यह मेरी समझ के बाहर की बात है. *सामर्थ्य* अब अधिकतर पुल्लिग में प्रयुक्त होता है. *विनय* उभयलिंगी है, *परिणय, राजनय* निश्चित रूप से पुल्लिग हैं. *जय* के पीछे शायद *जीत* (< जीतना), कारण हो. *गेंद* (< कंदुक), *दही, तमाखू* आदि शब्दों में भिन्नता का आधार शायद क्षेत्रीय, प्रयोगगत विशेषताएँ हैं.

खेल अगर 'खेलना' से व्युत्पन्न है (देखें **धातु रूप में संज्ञा**), तो इसका स्त्रीलिंग प्रयोग उचित है. अगर *खेल* शब्द से 'खेलना' का विकास हुआ है, तो हम शब्द के लिंग के बारे में प्रयोग के आधार पर ही बता सकेंगे. जिन व्यक्तियों के मन में पहली प्रक्रिया का असर होगा, वे इसका स्त्रीलिंग में प्रयोग करेंगे, अन्य व्यक्ति अकारांत होने के कारण पुल्लिग में. *चर्चा* के बारे में हमने **लिंग** में देखा कि हिंदी भाषियों के लिए यह स्त्रीलिंग है, उर्दू भाषियों के लिए पुल्लिग. *कलम* में इसी का उलटा असर देख सकते हैं. कई हिंदी भाषियों के लिए लिखने का *कलम* पुल्लिग शब्द है, जबकि उर्दू में स्त्रीलिंग. *रामायण* पुस्तक ('ग्रंथ' क्यों नहीं) होने के नाते शायद स्त्रीलिंग में भी प्रयुक्त होता है. वैसे ऐसे नामों में शब्द के अनुसार ही लिंग माना जाता है, किसी सामान्य नियम से नहीं. *'कामायनी' अच्छी है, 'साकेत' अच्छा है,* तुलसीदास की *'कवितावली', हरिऔध* का *'प्रिय प्रवास'* आदि. इस पद्धति से *'रामायण'* भी पुल्लिग ही होना चाहिए, लेकिन प्रयोग की बात है.

3. कुछ अन्य शब्द उभयलिंगी तो नहीं हैं, लेकिन दोनों लिंगों में प्रयुक्त शब्द युग्म मिलते हैं. ऐसे शब्द संस्कृत मूल के हैं और हिंदी तथा अन्य भाषाओं में भी यह लिंग भेद दिखायी पड़ता है. कोई भाषा पुल्लिग शब्द प्रयोग में लाती है, कोई

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्त्रीलिंग शब्द. किसी भाषा में दोनों शब्द प्रयुक्त होते हैं. *आलोचन-आलोचना, गर्जन-गर्जना, विवेचन-विवेचना, स्थापन-स्थापना* आदि.

हिंदी में समान अर्थ में, भिन्न रूपों में तथा भिन्न लिंगों में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द हैं. यह विशेषता संस्कृत व्याकरण के कारण है, जिसमें दोनों प्रकार के शब्द व्युत्पन्न होते हैं. *मैंने सिंह का गर्जन सुना–मैंने सिंह की गर्जना सुनी.* अन्य शब्द हैं–*विवेचन-विवेचना, वर्णन-वर्णना.* इनमें हिंदी में पुल्लिग शब्द ही अधिक प्रचलित है. इसी तरह *प्रेरणा, घोषणा, स्थापना, याचना, आलोचना* से बने नकारांत पुल्लिग शब्द हिंदी में कम ही प्रयुक्त होते हैं.

4. अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी में लिंग निर्धारण में कठिनाई होती है, क्योंकि बहुधा अंग्रेज़ी शब्दों का लिंग नहीं होता और हर शब्द का नये सिरे से हिंदी में लिंग निर्धारण करना होता है (देखिए **अंग्रेज़ी शब्दों का हिंदी में लिंग निर्धारण**). इस कठिनाई के बावजूद बहुत कम शब्द हिंदी में उभयलिंगी हैं. *पैंट, रिपोर्ट, टिकट* उभयलिंगी अंग्रेज़ी शब्दों के कुछ उदाहरण हैं. अन्य विदेशी या भारतीय भाषाओं से लिये गये शब्दों का कहीं न कहीं लिंग निर्धारण हो चुका है. अब समस्या है उन शब्दों की जो विदेशी तथा भारतीय भाषाओं से आगे लिये जाएंगे. आवश्यकता इस बात की है कि पहले से लिंग निर्धारण के नियम बना लिये जाएँ. यह काम मुश्किल नहीं है. स्वनिक आधार पर शब्दांत स्वरों के अनुसार लिंग निर्धारण वैज्ञानिक पद्धति है. रही बात अकारांत शब्दों की; इस संवंध में डा० व्रजेश्वर वर्मा ने एक बार व्यक्तिगत चर्चा में कहा था कि वर्तमान अंग्रेज़ी शब्दों में भी जहाँ संदेह हो, पुल्लिग में प्रयोग को तरजीह दी जानी चाहिए. मेरा सुझाव है कि सारे नये गृहीत अकारांत शब्द पुल्लिग ही माने जाएँ.

उम्मीद अब हिंदी में इस शब्द का यही रूप लगभग निश्चित हो चुका है. पहले उमेद, उमीद, उम्मेद आदि रूप भी चलते थे. अब भी *उम्मीदवार, उम्मेदवार* दोनों रूप चलते हैं.

उर्दू के 'पूर्वसर्ग' 1. हिंदी में परसर्ग 'ने, से, को' आदि संज्ञादि के बाद आते हैं. अंग्रेज़ी के preposition संज्ञादि से पहले आते हैं. अतः परसर्ग की तुलना में मैं 'पूर्वसर्ग' की बात कह रहा हूँ. फ़ारसी पूर्वसर्ग की भाषा है, याने फ़ारसी के पूर्वसर्ग ए, दर, अज़ आदि संज्ञादि से पहले आते हैं. हिंदी से विपरीत स्थिति होने के कारण वाक्य रचना में भी अंतर आ जाता है. इस अंतर को निम्नलिखित उदाहरणों में देखिए :

पंजाब का शेर	*शेर-ए-पंजाब*	Tiger of Punjab
असल में	*दर असल*	in reality
→ *नये सिरे से*	← *अज़-सरे-नौ*	again from the beginning

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. फ़ारसी मूल के उर्दू के शब्दों में तीन पूर्वसर्ग मिलते हैं. ए की चर्चा संबंधित प्रकरण में है. यह 'का' प्रत्यय का समानार्थी है. दर–यह 'में' का समानार्थी है. *दरअसल* (असल में), *दरकिनार* (किनारे में), *दरमियान* (बीच में). *!दरअसल में*, *!दरमियान में* शायद कल के प्रयोग होंगे, लेकिन आज अमानक हैं. अज़–*अज़हद* (हद से, अर्थात बेहद, बहुत), *अज़ख़ुद* (स्वयं से, अपने आप).

2.1. इन प्रयोगों के संदर्भ में पहली बात यह है कि ये पूर्वसर्ग हिंदी में उत्पादक नहीं हैं. हम अपनी इच्छा से *!दरमहफ़िल*, *!दरकिताब*, *!अज़बेचैनी*, *!अज़अमन* जैसे प्रयोग नहीं बना सकते. दूसरी बात यह है कि ये रूढ़ प्रयोग भी बहुत सीमित हैं– लगभग ऊपर बताये प्रयोगों की सीमा तक ही. अन्य अधिक प्रयोग (दरसूरत, दरहक़ीक़त) भाषा को उर्दू शैली में ले जाएँगे.

3. *दर*, *अज़* जैसे पूर्वसर्गों के अप्रयोग के दो कारण हैं. परसर्ग आदि भाषा के आधारभूत शब्द होते हैं और प्रायः दूसरी भाषाओं से लिये नहीं जाते. यही कारण है कि *अज़हद*, *दरअसल* जैसे वाक्यांश हिंदी में रूढ़ अर्थ में विशिष्ट शब्द के रूप में आये हैं और इसी कारण *दरअसल में* आदि प्रयोग कुछ हद तक तर्कसंगत भी हैं. दूसरी तरफ़ पूर्वसर्ग होने के कारण ये हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुरूप नहीं हैं. शायद यही कारण है कि उर्दू में भी ये रूढ़ प्रयोग हैं, उत्पादक पूर्व- या परसर्ग नहीं.

उर्दू के शब्दों में अंत्य अनुनासिकता उर्दू के प्रायः फ़ारसी मूल के दर्जनों शब्दों के अंत में आयी अनुनासिकता हिंदी में कहीं अनुनासिकता से और कहीं /न/ से दिखायी जाती है. उर्दू में भी ऐसे शब्दों के बाद स्वर आए, तो अनुनासिकता की जगह /न/ आता है, जैसे,

नादाँ	*नादानी*	*जाँ*	*जानी*
नुक्ताचीं	*नुक्ताचीनी*	*आसमाँ*	*आसमानी*
ज़बाँ	*ज़बानी*	*जवाँ*	*जवानी*

2. अनुनासिकता युक्त शब्द हैं–*ज़बाँ*~*ज़ुबाँ*, *ख़ाँ*, *ज़मीं*, *आसमाँ*. *जहाँ*, *जाँ*, *जवाँ* अनुनासिकता युक्त कुछ प्रत्यय हैं–*दाँ* (*क़द्रदाँ*, *सियासतदाँ*, *नादाँ*), *नशीं* (*पर्दानशीं*), *चीं* (*नुक्ताचीं*), *स्ताँ* (*हिंदोस्ताँ*, *क़ब्रस्ताँ*), *तरीं* (*बेहतरीं*, *ताज़ातरीं*). ऐसा नहीं कि सभी उर्दू के शब्दों में यह विकल्प मिलता हो. *इन्सान*, *शान*, *ईमान*, *फ़ौरन*, *आसान* तथा बहुवचन प्रत्यय /न/ में अनुनासिकता नहीं आती.

3. हिंदी में इन शब्दों के प्रयोग में विविधता दिखायी पड़ती है. सामान्य प्रवृत्ति /न/ युक्त शब्दों के प्रयोग को अपनाने की है. इससे /न-नी/ की रूपावली को अपनाने में सुविधा होती है. *ज़मीन*, *आसमान*, *जान*, *हिंदोस्तान* आदि शब्दों में अनुनासिकता का प्रयोग हो, तो उसे शिष्ट, साहित्यिक उर्दू शैली माना जाएगा. *जहाँ* शब्द *जहाँगीर*, *शाहजहाँ* आदि में सुरक्षित है. लेकिन बोलचाल की भाषा में *जान*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है तो जहान है की कहावत में नकारांत शब्द देख सकते हैं.

4. अर्थ की दृष्टि से कुछ विशेषताएँ देखी जा सकती हैं, जहाँ दोनों रूपों में अर्थ का अंतर दिखायी पड़ता है. हिंदी जमीं अब पारिभाषिक शब्द है, जो 'बैक ग्राउंड' का अर्थ देता है (*कलाकार की ज़मीं*). *ज़मींदोज़, जमींदार* में मूल रूप देखे जा सकते हैं, जबकि *ज़मीनदार* भी प्रचलित शब्द है. *जवाँमर्द* का अर्थ है 'धीर', लेकिन *!जवान मर्द* कहें, तो अर्थ होगा 'वह आदमी, जो जवान है'.

5. मजनूँ, *समाँ* दोनों शब्दों से हिंदी में अनुनासिकता हट चुकी है. *फ़लाँ* का एक और रूप *फ़लाना* है, **फ़लान* नहीं चलता. चूँकि, *हालाँकि, चुनाँचे* एक शब्द के रूप में व्यवहृत होते हैं और इनमें 〈न〉 नहीं आता. *दुनिया* सही रूप है, *दुनियाँ* नहीं.

उलटा इस शब्द का वैकलिपक रूप *उल्टा* इतना प्रचलित है कि कभी लगता है कि दूसरा ही सही है, *उलटा* गलत. **गलती** के प्रकरण में हमने चर्चा की है कि गलत+ई से बनने के कारण 'गल्ती' गलत प्रयोग है. इसी तरह उलट (ना)+आ से बने होने के कारण इसका सही रूप *उलटा* ही है. **अ-लोप** के संदर्भ में मध्य के वर्ण के व्यंजनांत उच्चारण के कारण बहुधा इसे आधा वर्ण बना दिया जाता है. *उलटा* रूप से ही *उलटना, उलटे हुए, उलट कर* आदि अन्य शब्दों को समझने में आसानी होती है.

उषा, ऊषा ये दोनों रूप प्रचलित हैं. लेकिन हिंदी में *ऊषःकाल* नहीं मिलता. उच्चारण माधुर्य शायद पहले शब्द में है और वही हिंदी में अधिक प्रयुक्त है.

ऋषि यह शब्द जब समास में दूसरे स्थान पर आता है, तो ऋ का लोप तथा उसकी जगह /र्/ का स्थापन होता है. जैसे महत्+ऋषि–महर्षि, सप्त+ऋषि–सप्तर्षि. **महऋषि* जैसे प्रयोग असाधु हैं.

ऋषिकेश यह शब्द लोक व्युत्पत्ति (folk etymology) का सबसे अच्छा उदाहरण है. शायद इस समय ऋषि और केश के संबंध को प्रकट करने वाली कोई दंतकथा भी चलती हो. यह मूलतः भगवान का नाम है, जो दो शब्दों का समस्त पद है. हृषीक+ईश से बनने वाले *हृषीकेश* का अर्थ है इंद्रिय का ईश, अर्थात वह जो इंद्रियों को अपने वश में कर ले.

ॠ पता नहीं क्यों, अब भी कई हिंदी के विद्वान ऋ के दीर्घ रूप तथा लृ ॡ जैसे वर्णों का हिंदी में स्थान मानते हैं. किसी भी हिंदी के ग्रंथ में, तुलनात्मक अध्ययन में, व्याकरण आदि में इन वर्णों का उल्लेख न होना जरूरी है. इससे

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सीखने वालों का भ्रम बढ़ता है, भाषा पर बोझ पड़ता है.

ॡ ऌ देखें **ऋ**.

ए 1. यह **उर्दू के 'पूर्वसर्ग'** 'का' के अर्थ में आता है और 'दर, अज़' की तुलना में इससे बनने वाले अधिक रूढ़ प्रयोग हिंदी में हैं. यह प्रायः पहले शब्द में व्यंजन के साथ मिला कर लिखा जाता है (मात्रा के रूप में) और स्वरों के बाद स्वर के रूप में लिखा जाता है. कुछ उदाहरण देखिए :

शेरे पंजाब	पंजाब का शेर
जानेमन	दिल की जान (बहुत प्रिय व्यक्ति)
दर्दे दिल	दिल का दर्द
शामे गज़ल	गज़लों की शाम
दरबारे आम	आम (आदमियों) के लिए दरबार
बालाए ताक	ताक के ऊपर (अलग, दूर)
सज़ाए मौत	मौत की सजा

2. यह 'पूर्वसर्ग' हिंदी में व्युत्पादक नहीं है और हर वाक्यांश रचना में इसका प्रयोग नहीं कर सकते. **राते क़त्ल, *मददे ग़रीब* जैसे प्रयोग संभव नहीं हैं.

3. इस ए का 'और' के अर्थ में प्रयुक्त *व~ओ* से (देखें **व**) भ्रम न करें.

4. हिंदी में प्रयुक्त शब्द दो संज्ञाओं के ही मिलते हैं, लेकिन 'घर के अंदर' आदि इस रूप में ए से नहीं बनते. मैंने एक गज़ल में *करीबे दिल* सुना था; ऐसे प्रयोग सामान्य रूप से प्रचलित नहीं हैं.

एक 1. **पूरक वाक्य** में हमने चर्चा की कि वर्ग सदस्य+जातिवाचक की रचना में 'एक' का प्रयोग होता है. *शेर एक जानवर है. गुलाब एक फूल है. लौकी एक तरकारी है.* यहाँ प्रायः 'एक' नहीं छूटता. *?शेर जानवर है.* इसी तरह व्यक्तिवाचक संज्ञा+वर्ग की रचना में भी 'एक' आता है. *राम एक अच्छा लड़का है. आगरा उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक शहर है.* यहाँ 'एक' के अभाव में भिन्न प्रकार की रचना होती है. *राम बड़ा अच्छा लड़का है. आगरा प्रसिद्ध शहर है.* यहाँ 'राम, आगरा' पूर्वोक्त शब्द हैं, जबकि ऊपर के वाक्यों में पहली बार इनका उल्लेख हुआ है.

2. वर्ग सदस्य की इकाइयों के लिए संख्यावाचक विशेषण के रूप में एक का प्रयोग होता है. *अंदर एक मेज़ पड़ी है. वहाँ कुछ कपड़े पड़े हैं. तुम एक लेकर आओ. क्या आप मुझे एक रुपया दे सकते हैं? मैंने एक केला खाया.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. ऊपर के संदर्भ में अंग्रेज़ी में a का प्रयोग होता है, लेकिन पहले से निर्दिष्ट वस्तु के लिए the आता है. हिंदी में दूसरे संदर्भ में सिर्फ़ वह संज्ञा आती है. साथ में कभी-कभी निर्देशक सर्वनाम 'यह, वह' भी आते हैं. नीचे के वाक्य देखिए :

मेज़ पर क्या है? मेज़ पर एक किताब है.

*किताब कहाँ है? (वह) किताब मेज़ पर है. (*एक किताब कहाँ है?)*

कुछ चीज़ें ऐसी हैं, जो विशिष्ट होती हैं और प्रायः आदमी के पास एक ही होती है. ऐसे संदर्भों में एक की आवश्यकता नहीं है. ऐसे प्रसंगों में एक का प्रयोग करने पर लोग कहते हैं कि अंग्रेज़ी a का हिंदी में अनावश्यक प्रयोग है.

क्या तुम्हारे पास रेडियो/फ़्रिज/टी० वी० है?

4. अनिर्दिष्ट स्थान या समय की संज्ञाओं के साथ एक का प्रयोग होता है. अनिश्चय की सूचना 'किसी' से भी दे सकते हैं.

एक~किसी दिन एक आदमी मेरे पास आया.

एक~किसी ज़माने में एक~किसी देश में एक राजा था.

आगे के प्रयोग देखिए—*?एक साल, किसी साल, *एक महीने, किसी महीने, एक बार, एक समय~किसी समय.* ऐसा लगता है कि *साल, महीना, हफ़्ता, घंटे, मिनट* आदि में एक का प्रयोग संख्यावाचक विशेषण के रूप में ही होता है, अनिश्चय की सूचना देने के लिए नहीं. विकल्प के साथ अनिश्चय एक न एक से भी प्रकट होता है.

1.1. अन्य कुछ क्रियाविशेषणों में भी 'किसी' की जगह 'एक' का प्रयोग देख सकते हैं. *एक प्रकार से, एक हिसाब से.*

4. एक शब्द रचना में पूर्व रूप बन कर 'एक में शामिल, समन्वित' आदि का अर्थ देता है. बनने वाला शब्द एक ही होता है, अतः शब्द बिना स्थान या हाइफ़न के लिखा जाता है. *एकमत होकर, एकमुश्त राशि, एकदम, एकतंत्र, एकतरफ़ा~इकतरफ़ा, एकनिष्ठ, एकवचन* (यहाँ अर्थ पारिभाषिक है), *एकरूप.* तुलना के लिए देखिए *उसने चुनाव एक मत से जीता. इस विषय पर सब एकमत हो गये.*

6. हिंदी में *हर एक~हरेक, कुछ एक~कुछेक,* कई एक जैसे प्रयोग दिखायी पड़ते हैं. यहाँ एक का अर्थ की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं है, यह अनिश्चय की सूचना देता है. *हर आदमी को दो रुपये दो~हर एक आदमी को दो रुपये दो.* लेकिन लगता है कि 'हरेक' रूप स्वतंत्र कर्ता के रूप में अधिक प्रचलित है. *हर आदमी यही चाहता है~हरेक यही चाहता है.* संख्यावाचक शब्दों के साथ एक लगभग का अर्थ देता है. *वहाँ दस एक (~दसेक?) आदमी थे. ज़्यादा नहीं, कोई पाँच एक आदमी होंगे अंदर.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकमत 1. एकमत, एकजुट, एकदम, एकमुश्त–ये एक शब्द हैं. एक मत दो शब्द हैं. दोनों में अर्थ में अंतर है. *हमें एकमत हो कर काम करना चाहिए* *हर व्यक्ति एक मत का अधिकारी है*. अतः ऊपर के शब्दों को मिला कर लिखना चाहिए.

2. एक मत आदि विशेषीकृत संज्ञा वाक्यांश हैं, जबकि ऊपर के शब्द क्रमशः विशेषण, क्रियाविशेषण और विशेषण हैं. देखिए **एक.**

एकत्र, एकत्रित वाजपेयी एकत्र को सही मानते हैं और *एकत्रित* को गलत. *सभी लोग बीच के मैदान में एकत्र हुए*~*एकत्रित हुए*. मैंने हाल में कुछ छात्रों की भाषा में 'प्रयोगित' शब्द देखा था. -इत प्रत्यय अब बहुत व्यापक होता जा रहा है. लेखक भी *विस्तारित, प्रचारित, व्याख्यायित* जैसे नये प्रयोग ला रहे हैं. संभवतः अगली दशाब्दी तक एकत्र अप्रचलित प्रयोग बन चुका होगा.

एकाएक 1. इसके दो वैकल्पिक रूप हैं–*यक ब यक* तथा *यकायक*. एकाएक उर्दू *यक ब यक* का संस्कारित रूप है. यह उर्दू शब्द साहित्यिक प्रयोग है. हिंदी में एकाएक ही प्रचलित है. 'एक' से परिचय के कारण तथा श्रवण-माधुर्य के कारण यही रूप ग्राह्य भी है.

2. एकाएक के उच्चारण में प्रथम स्वर का ह्रस्व उच्चारण होता है.

-एण यह 'से' के अर्थ में संस्कृत शब्दों में तृतीया विभक्ति है. हिंदी में संस्कृत से लिये हुए तृतीया विभक्ति के कुछ प्रयोगों में यह दिखायी पड़ता है, जैसे, *येन-केन प्रकारेण* (किसी न किसी प्रकार से), *पूर्ण रूपेण* (पूर्ण रूप से). लेकिन हिंदी में यह उत्पादक प्रत्यय नहीं है.

ऐ, औ 1. ये दोनों स्वनिम हैं, जिनके दो संस्वन हैं :

/ऐ/ [ऐ]–व्यंजनों से पहले या शब्दांत में
[अइ/अय्]–स्वरों से पहले
/ओ/ [ओ]–व्यंजनों से पहले
[अउ/अव्]–स्वरों से पहले

भाषाविज्ञान का सहारा ले कर मैंने 'स्वरों से पहले' की बात कह दी, जबकि वास्तविकता में केवल /अ/ तथा /आ/ से पहले ही ये स्वर मिलते हैं. दो स्वरों के बीच में वर्तनी में श्रुति /य, व/ का आगमन होता है. इस कारण कह सकते हैं कि 〈य, व〉 से पहले क्रमशः 〈ऐ, औ〉 का उच्चारण /अइ, अउ/ होता है. उदाहरण देखिए :

/ऐ/ ऐब, ऐनक, पैसा, मैना, है, बैर
/अइ/ ऐयाश, ऐयारी, तैयारी, मैया, सैयद, नैया, तलैया, मड़ैया, भूल-भुलैया, गैया, रवैया, गवैया (उच्चारण क्रमशः /अय्याशी, अय्यारी,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तय्यारी/ आदि)

/औ/ औरत, औसत, नौ, पौधा, रौनक, कौन, लौटना

/अउ/ चौवन, यौवन, पौवा, कौवा, बुझौवल, मनौवल (उच्चारण क्रमशः /चव्वन, यव्वन, पव्वा/ आदि)

2. उच्चारण के अनुरूप वर्तनी को बदलने की प्रवृत्ति के कारण कई शब्दों में, ख़ासकर उर्दू के शब्दों में, वर्तनी की अनेकरूपता दिखायी पड़ती है–*ऐयाशी-अय्याशी*, *सैयद-सय्यद*, *तैयब-तय्यब*, *ऐयारी-अय्यारी*. *अय्यूब* (? ~*ऐयूब*) व्यक्ति-वाचक शब्द है और भाषा का शब्द नहीं है, *अव्वल* में केवल बदला हुआ रूप है, नियमसम्मत रूप (*औवल*) नहीं.

3. द्रविड़ भाषाओं में मूल स्वर /ऐ, औ/ का उच्चारण नहीं है और हर जगह /अइ, अउ/ का उच्चारण मिलता है. दक्षिण भारत के लोग तथा मराठीभाषी हिंदी में मूल स्वर का उच्चारण नहीं कर पाते. इन्हें इन स्वरों के उच्चारण का अभ्यास कराने की ज़रूरत है. गुजराती भाषा में दोनों स्वर (ऐ तथा अइ, औ तथा अउ) हैं, लेकिन दोनों भाषाओं के कई शब्दों के उच्चारण की व्यवस्था में अंतर है. संस्कृत शब्द तथा कई देशज शब्द भी 〈ऐ, औ〉 से लिखे जाते हैं और इनका उच्चारण क्रमशः /अइ, अउ/ होता है. लेकिन कई जगह 〈ए, ओ〉 का उच्चारण हिंदी के समान /ऐ, औ/ होता है. प्रायः ऐसे शब्द एकाक्षरिक होते हैं (दवे : 1967).

लिखित रूप	उच्चारण	अर्थ
में	मैं	मैं का तिर्यक रूप
खेंच	खैंच	खींच
भों	भौं	भूमि
मोत	मौत	मौत
सोंप	सौंप	सौंप

पूरब की भाषाएँ बोलने वालों के लिए भी मूल स्वर /ऐ, औ/ के उच्चारण में कठिनाई होती है. बंगाली तथा असम के व्यक्ति के लिए इनका उच्चारण क्रमशः /ओइ, ओउ/ है.

3.1. दक्षिण की भाषाओं में *अय्यर*, *अय्या* (*तिम्मय्या*, *राजय्या* आदि व्यक्ति-वाचक नामों में) आदि शब्द मिलते हैं. इन्हें हिंदी की उच्चारण-वर्तनी व्यवस्था के अनुसार ऐयर, *ऐया* लिखा जा सकता है. हिंदी में 〈य्य〉 की अधिकता न होने के कारण हिंदी भाषी *ऐयर* को प्राथमिकता देता है, अपनी वर्तनी के कारण तमिल भाषी *अय्यर* को. उल्लेखनीय है कि दोनों भाषाओं में दोनों वर्तनी में उच्चारण का अन्तर नहीं है. द्रष्टव्य है कि पंजाबी में *नैयर* की अपेक्षा *नय्यर* अधिक प्रचलित है,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. हिंदी में इन स्वरों वाले शब्दों में वर्तनी की अनेकरूपता तथा तज्जन्य वर्तनी दोषों का आभास मिलता है. ऊपर हम *ऐयाश~अय्याश* आदि की चर्चा कर चुके हैं. **शब्दांत** 〈**अय, अव्**〉 क्रमश: 〈ऐ, औ〉 लिखा जाता है, जैसे *जै* (*जय*), *नौ* (*नव*). शब्द के भीतर भी प्रादेशिक प्रयोगों में या गलती से इसी तरह का लेखन मिलता है. *औतार* (*अवतार*), *नैन* (*नयन*). बहुत सीमित तथा प्रादेशिक संदर्भों में ही मूल स्वर /ऐ, औ/ के लिए 〈अइ/अउ〉 जैसे रूप आते हैं–*कइसा, अउर, भइया, पउआ*. मानक हिंदी में यह दुहरापन नहीं है. *कौवा, कौआ* दोनों रूप प्रचलित हैं. *शय्या* को गलती से कई 'शैया' लिख देते हैं.

ऐन उर्दू का यह शब्द 'ठीक' के अर्थ में हिंदी में बहुत सीमित संदर्भों में प्रयुक्त होता है. ऐन (उसी~ठीक) *वक्त पर* इसका मात्र एक प्रचलित प्रयोग है.

ओ 'और' के अर्थ में उर्दू के शब्दों में *ओ* के प्रयोग के लिए **व** देखें.

ओर 1. यह 'देखना, जानना' जैसी क्रियाओं के साथ दिशा सूचित करने वाला परसर्गीय शब्द है. देखें **परसर्ग**. 'तरफ़' इसका पर्याय है. दोनों ही परसर्गीय शब्दों को स्त्रीलिंग माना जा सकता है, क्योंकि इनके पहले हमेशा 'की' आता है. *लोग बाज़ार की तरफ़ जा रहे थे. वह मेरी ही ओर देख रही थी.*

2. लेकिन जब इनके पहले 'दोनों, चारों' आदि संख्यासूचक विशेषण आएँ तो पहले 'की' की जगह 'के' आता है. *नदी के दोनों तरफ़, घर के चारों ओर.*

औ देखिए **ऐ, औ**

और 1. यह योजक है और वाक्यांश के भीतर के शब्दों को जोड़ता है. *राम और कृष्ण, आना और जाना, मैं और तुम, लाल और पीला, आज और कल.* चूंकि यह वाक्यांश के भीतर की रचना है, यह वर्गीय शब्दों को ही जोड़ता है और भिन्न वर्ग के शब्दों को नहीं. **राम और अच्छा, *कल और लाल.* लेकिन *मैं और चोरी, यह तो असंभव बात है* में वास्तव में 'मैं' और 'चोरी' दो गौण, संक्षिप्त उपवाक्य हैं, एक वाक्यांश के घटक नहीं.

राम और कृष्ण को उदाहरण के तौर पर लीजिए. यहाँ यह विवाद उठता है कि यह एक वाक्यांश का विस्तार है या दो अंतर्निहित उपवाक्यों का संयोजन है. आर्येंद्र शर्मा (1958) मानते हैं कि *सीता और कमला बहनें हैं* आदि वाक्यों को छोड़ कर सर्वत्र 'और' अंतर्निहित उपवाक्यों का संयोजन दिखाता है. उपर्युक्त विवेचन के संदर्भ में मैं कहना चाहूँगा कि जब तक संरचना के पुष्ट आधार न हों, उनका कथन व्यक्तिगत धारणा ही हो सकता है. अगर अंतर्निहित उपवाक्यों की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कल्पना की जाए, तो 'कपड़े' आदि बहुवचन शब्दों में भी एक से अधिक उपवाक्य देखे जा सकते हैं (नानी की चिड़ियों वाली कहानी की तरह).

2. वाक्यांश में शब्द संयोजन भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं. ऊपर मैंने बताया कि बहुवचन एक व्याकरणिक व्यवस्था है, इसमें एक-एक कर कई के संयोजन की बात नहीं है. संयुक्त शब्दों में घर-बार, कपड़े-लत्ते आदि ध्वन्यात्मक कारणों से प्रयुक्त होते हैं, 'बार, लत्ते' का हिंदी में स्वतंत्र प्रयोग नहीं है; *बाल-बच्चे, सीधा-सादा, दाल-रोटी, काम-काज, जान-पहचान* आदि रूढ़ संयुक्त शब्द हैं, जिनमें दो पर्यायवाची शब्द समन्वित अर्थ में आते हैं. इन दोनों वर्गों में 'और' का स्थान नहीं माना जा सकता. *लाल-पीले* (अर्थात, बहुरंगी), *लड़के-लड़कियाँ* (युवा वर्ग), *आना-जाना* (निकटता) आदि में विपरीत अर्थ वाले शब्द भी रूढ़ तथा समन्वित अर्थ में आते हैं. यहाँ भी 'और' का स्थान नहीं है.

2.1. 'और' केवल उन वाक्यांशों में आता है, जहाँ अधिक शब्दों के स्थान पर किसी एक शब्द के आने की गुंजाइश हो. *मैं आम और सेब खाऊँगा* की जगह *मैं आम खाऊँगा* आ सकता है. दोनों वाक्यों की संरचना एक ही है. 'और' दो शब्दों के बीच में या कई शब्द हों, तो उपांत्य शब्द के साथ आता है. कहीं-कहीं 'और' के न आने की भी संभावना रहती है. जैसे, *यह एक गाढ़ा, काला, लसदार पदार्थ है*. लेकिन सभी शब्दों के संयोजन में 'और' का प्रकार्य समान नहीं है. इसे आगे की रचनाओं में देखेंगे.

दो संज्ञाओं का संयोजन कर्ता, कर्म और पूरक वाक्यों में मिलता है. *राम और कृष्ण जा रहे हैं* दोनों के एक साथ जाने का भी अर्थ दे सकता है, अलग-अलग जाने का भी, जबकि दो उपवाक्य शायद एक साथ जाने का अर्थ नहीं देंगे. ऐसे वाक्यों में अधिक इकाइयाँ हों या समन्वित अर्थ हो तो वाक्यांश 'आदि', 'सभी' जैसे शब्दों से सीमित किया जाता है. 'आदि' वाले वाक्यों में उपवाक्य ढूँढ़ना आसान नहीं है. पूरक वाक्यांश में वास्तव में उपवाक्य होते हैं, यहाँ वाक्यांश विस्तार की बात नहीं है. यही कारण है कि *?मैं डाक्टर और खिलाड़ी हूँ* सहज वाक्य नहीं है, बल्कि *मैं डाक्टर हूँ और खिलाड़ी भी* अधिक सहज है. यहाँ 'भी' दूसरे उपवाक्य का संकेत करता है. मैंने अपनी एक पूर्व कृति में (1969) उल्लेख किया था कि बहुधा विशेषण, जब तक वे अलग अर्थ-क्षेत्र के न हों, समन्वित अर्थ देते हैं. जैसे *गांधी जी जैसे सच्चरित्र, गुणी, सदाचारी व्यक्ति*. इन शब्दों को भिन्न-भिन्न उपवाक्यों में देखना कहीं-कहीं भ्रामक हो सकता है. भिन्न अर्थ-क्षेत्र के विशेषण 'और' से नहीं जुड़ते. जैसे *गाँव से आया हुआ एक सोलह वर्ष का ग्रामीण* (बालक). एक-अर्थ क्षेत्र के विशेषण (जैसे रंग, आकार, संख्या आदि के शब्द) परिपूरक होते हैं और एक साथ आ भी नहीं सकते. **काला और सफ़ेद कोट, *मोटा और दुबला आदमी, *चार और पाँच*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साल. इनमें परिपूरकता के कारण 'या' आ सकता है. इसी कारण *चार-पाँच साल* में 'या' का संबंध है, 'और' का नहीं. **या** प्रकरण में हमने चर्चा की है कि 'या' का संबंध वाक्यांश विस्तार का नहीं, उपवाक्य संयोजन का है. यही बात समय-वाचक तथा स्थानवाचक क्रियाविशेषणों पर लागू होती है. *मैं कल-परसों आऊँगा* में 'या' का संबंध है. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण गुणवाचक विशेषणों की तरह अक्सर समन्वित अर्थ देते हैं (*धीरे, शांति से*). इस कारण इन्हें भी प्रायः उपवाक्य संयोजन नहीं मान सकते.

अगर हम यह मानते हैं कि हर उपवाक्य में एक क्रिया होती है, तो फलतः यह भी माना जा सकता है कि हर क्रिया वाक्यांश के विस्तार में अंतर्निहित उपवाक्य संरचनाएँ हैं. शायद यही कारण है कि एक उपवाक्य में अधिक क्रियाओं का संयोजन नहीं मिलता. विशेषकर क्रमिक घटनाओं की क्रियाएँ एक साथ (प्रायः) नहीं आतीं और *!मैं वहाँ जाऊँगा, रुकूँगा और लौटूँगा* जैसा वाक्य सहज नहीं है. *मैं वहाँ जाऊँगा, दो-चार दिन रहूँगा और 15 को लौटूँगा* जैसे वाक्य में अन्य शब्दों के कारण निश्चित रूप से उपवाक्यों का संयोजन है.

2.2. जब भाषाविज्ञान के ग्रंथ कहते हैं कि दो उपवाक्यों में एक वाक्यांश में अंतर हो, तो वह वाक्यांश 'और' से जोड़ा जा सकता है. जैसे *राम आया, कृष्ण आया → राम और कृष्ण आये*. लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि केवल ऐसे संदर्भों में ही संयोजन होता है. वास्तव में 'और' उपवाक्यों के बीच बहुत शिथिल संयोजन प्रदर्शित करता है, जबकि 'या' इसके मुकाबले निश्चित और व्यवस्थित संयोजन दिखाता है. कारण-कार्य संबंध (*बारिश हुई और हरियाली छा गयी*), क्रमिक घटना-क्रम (*राम और कृष्ण गये*), समकालिक घटना-क्रम (*बच्चे दौड़ रहे हैं और बड़े हँस रहे हैं*), विपरीत घटना क्रम (*उसने कहा और तुम मान गये, मैं बोल रहा हूँ और तुम सुन नहीं रहे हो*), तुलनात्मक स्थिति (*वह कितना शांत है और तुम !*) आदि कई संबंध 'और' के द्वारा व्यक्त होते हैं.

हिंदी में 'कर' अंतर्निहित उपवाक्य है (*राम मुझसे कह कर गया*). इसे कहीं-कहीं 'और' से अलग भी कर सकते हैं. लेकिन 'कर' के प्रकरण में हमने देखा कि भिन्न कर्ता वाले उपवाक्य 'और' से ही जुड़ सकते हैं, 'कर' से नहीं. *उसने कहा और हम चले गये* ~ **वह कह कर हम चले गये*. 'कर' वाले सभी वाक्यों में भी 'और' का प्रयोग सहज नहीं है. *तुम यहाँ रख कर जाओ* सहज विधि है; लेकिन *तुम यहाँ रखो और जाओ* में बहुधा तिरस्कार व्यंजित होता है. इस कारण मैं 'और' के सभी वाक्यों में हर जगह अंतर्निहित उपवाक्य का सिद्धांत मानने के पक्ष में नहीं हूँ.

3. और योजक शब्द ही नहीं, बल्कि विशेषण की तरह भी कार्य करता है. अगर किसी जगह पाँच लोग हों और किसी समय दो ही दिखायी पड़ें तो आप

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूछेंगे और तीन/और लोग कहाँ हैं? और यहाँ 'अन्य, दूसरा' का पर्याय है. जिस तरह विशेषण सर्वनाम की तरह प्रयुक्त होते हैं (बड़ों का आदर करो) 'और' भी सर्वनाम-सा प्रयुक्त होता है. *औरों की बात मत सुनो. औरों को आने दो. यह बात मुझसे नहीं, औरों से कहो.*

3.1. यह सामान्य विशेषण की तरह वर्ग के अनुपस्थित सदस्यों की सूचना देता है–*मेरे पास और घड़ियाँ भी हैं. और सामान कहाँ है? ये बच्चे ही नहीं, और बच्चे भी आ रहे हैं.* विशेषणों की तरह यह पूरक का भी स्थान लेता है. *एक लड़का और है. अंदर चार लोग और हैं. मेरे पास घड़ियाँ और हैं, दिखाऊँ?*

विशेषण शब्द प्रश्नवाचक शब्दों के साथ नहीं आते, लेकिन *और* आता है. *और कहाँ जाना है* का वास्तविक अर्थ है 'यहाँ नहीं तो और···'. अन्य प्रयोग हैं *और कहाँ, और कब, और कितना, और क्या, और किधर, और कैसा, और कैसे.* इसी तरह *और* अन्य समय तथा स्थानवाचक शब्दों को विशेषीकृत करता है. *आप और कभी आइए. तुम और कहीं चले जाओ.* 'कोई, कुछ' सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त विशेषण शब्द हैं. *और* इन्हें भी विशेषीकृत करता है. *वहाँ और कोई आदमी है? आप और कुछ लेंगे?* इन सब प्रयोगों में प्रयोग-बहुलता के आधार पर *और* बाद में भी आता है–*कभी और, कहीं और, कोई और, कुछ और.* प्रश्न-वाचक शब्दों के साथ यह विपर्यय अधिक प्रचलित नहीं है.

'ज़्यादा' के अर्थ में क्रिया वाक्यांश से पहले *और* आता है–*हमें और मेहनत करनी चाहिए. और देखो.*

4. 'बहुत' की तरह *और* प्रबलक (intensifier) है और विशेषण तथा क्रिया-विशेषण का विशेषण बनता है. *और छोटा, और बड़ा, और अच्छा, और दूर, और नज़दीक, और तेज़ी से, और पास.* 'और थोड़ा' पहले की मात्रा में 'थोड़ा' जोड़ने का अर्थ देता है, 'और छोटा' 'छोटा' से भी छोटे का अर्थ देता है.

5. 'और' के साथ हिंदी में दो (या तीन) अन्य शब्द हैं–एवं, तथा, व. 'व' के संदर्भ में (देखें **व**) हमने चर्चा की कि वह आधुनिक हिंदी का प्रचलित प्रयोग नहीं है. *एवं, तथा* संस्कृत से आये योजक हैं, प्रायः संस्कृत या कुछ लोगों की अपनी शैली के शब्द हैं. हिंदी में इनका विशिष्ट प्रयोग संदर्भ नहीं है, लेकिन किसी-किसी वाक्य में कई जगह 'और' का प्रयोग आवश्यक हो, तो इनमें से एक 'और' की उबाऊ पुनरावृत्ति को तोड़ सकता है. जैसे, *भारत और पोलैंड में संधि-वार्ता तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम. रतन और हमीद ने पंजाब और महाराष्ट्र के अंतिम मुकाबले में पंजाब की ओर से भाग लिया एवं विजयी रहे.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कंकरीट, कांक्रीट अंग्रेज़ी संज्ञा शब्द concrete के लिए हिंदी में ये दोनों ही रूप हैं. दोनों में 'र' के प्रयोग में अंतर देखिए.

कतई 1. आधुनिक हिंदी में कतई का प्रयोग 'बिलकुल' के अर्थ में होने लगा है, जैसे *यह बात कतई वाजिब है. मुझे यह बात कतई नापसंद है.* वास्तव में कतई···नहीं सही प्रयोग है. *मैं यह बात कतई नहीं मानता. मुझे यह कतई पसंद नहीं है.* 'नहीं' के बिना 'कतई' का प्रयोग त्याज्य है.

2. इसका उच्चारण स्वर संयोग होने के कारण /कतई/ होता है, /कत्ई/ नहीं. देखें **अ-लोप** का नियम 6.

कद्दू एक ही सब्ज़ी के लिए चार अलग-अलग शब्दों का प्रयोग हिंदी में मिलता है. ये हैं–*कद्दू, सीताफल, काशीफल, कुम्हड़ा.* दुर्भाग्य से इन शब्दों के प्रयोग के सामाजिक अंतर या प्रादेशिक अंतर पर कोई विवरण नहीं मिलता. जहाँ *काशीफल* या *कुम्हड़ा* का प्रयोग मिलता है, वहाँ *कद्दू* अन्य किसी शब्द के लिए आता है. इस कारण आप संदर्भ तथा प्रयोग जाने बिना इन शब्दों का प्रयोग करें, तो भ्रम में पड़ सकते हैं. यही बात लौकी/घीया पर लागू होती है.

कम जिस क्षेत्र में ज़्यादा के लिए 'जास्ती' का प्रयोग होता है, वहाँ कम के लिए 'कमती' का प्रयोग होता है. वह भी अमानक प्रयोग है. 'कम' ही मानक प्रयोग है. इससे हिंदी में संज्ञा 'कमी' तो बनता है, लेकिन 'कमती' का विशेषण में प्रयोग त्याज्य है.

करता, करता है, करता था ये तीनों क्रिया रूप अपूर्ण कृदंत 'करता' से बने हैं. **क्रिया** प्रकरण में हमने चर्चा की कि अपूर्ण पक्ष का तात्पर्य क्या है. इन क्रिया रूपों से द्योतित व्यापार क्रिया के उल्लेख के समय में पूर्ण नहीं हुए. 'करता' में सिर्फ़ अपूर्ण पक्ष की सूचना है, 'करता है' में कथन के समय तक वह व्यापार पूर्ण नहीं है और उसका अस्तित्व सत्य है. *गोपाल ने कहा कि राम झूठ बोलता है.* कथन (गोपाल के) तक राम द्वारा झूठ बोलने का व्यापार पूर्ण नहीं हुआ और सत्य था. यह कथ्य फिर रमेश द्वारा बाद में दिया जाए, तो भी कथन का सत्य गोपाल के कथन के समय तक ही सीमित है. 'करता था' अपूर्ण पक्ष की क्रिया है, भूतकाल में प्रयुक्त है. *राम ने कहा, 'गणेश झूठ बोलता था'.* राम भी अनुभव करता है कि कथन का सत्य कथन के समय नहीं है. यह मान सकते हैं कि कथन के समय में ये क्रिया व्यापार अपूर्ण रहे/हैं और काल-बोध 'है/था' से होता है. आगे हम तीनों क्रिया रूपों की चर्चा करेंगे.

1. करता–इसमें सिर्फ़ पक्ष (अपूर्णता) है, काल-बोध नहीं. जब व्यक्ति 'पढ़ता हूँ' कहता है, वह कथन के समय में भी कथन की सत्यता का अर्थ प्रकट करता है, 'पढ़ता था' में सत्यता का, जो कथन के समय नहीं है. 'करता' में यह काल भेद नहीं दिखायी पड़ता.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1.1. इस क्रिया रूप के चार प्रयोग संदर्भ हैं. पहला है *अगर राम जाता, तो मैं भी चला जाता. अगर तुमने गलती की, तो मैं तुम्हें मारूँगा.* यहाँ मारने के व्यापार की शर्त के रूप में वक्ता 'गलती करना' की पूर्णता को मान लेता है. यही कारण है कि यहाँ 'भूतकाल' की क्रिया भविष्य में आ रही है. वास्तव में शर्त में काल है ही नहीं. गलती तो शायद आगे ही होगी. 'अगर राम जाता' में कार्य की पूर्णता नहीं है. काम तो हुआ ही नहीं, तो पूर्णता कैसे ? यह वर्तमान में सत्य नहीं है, जिस तरह 'राम जाता है' है. 'अगर राम जाता' का अंतर्निहित अर्थ है 'राम नहीं गया'. इस कारण प्रायः माना जाता है कि यह भूतकाल में है. इसी तरह का एक दूसरा प्रयोग देखिए—*अगर मैं राजा होता तो*···. यहाँ निश्चित सूचना है 'मैं राजा नहीं हूँ.' इसे भूतकाल (मैं राजा नहीं था) के साथ कतई नहीं जोड़ सकते. *अच्छा होता अगर तुम रोज़ एक गिलास दूध पीते.* यहाँ न पीने की निश्चित सूचना नहीं है, न ही 'अच्छा होता' का आशय केवल भूतकाल में ही सार्थक है. यह वर्तमान में भी इसी तरह सत्य है. इस कारण से इसे भूतकाल की क्रिया मानना गलत होगा. यह कालरहित व्यापार है. अपूर्ण पक्ष कार्य न होने का संकेत करता है.

1.2. दूसरा संदर्भ है, हम पिछले समय के वर्णन के दौरान अपूर्ण व्यापार के द्योतन के लिए 'उठता, पूजा करता' आदि का प्रयोग करते हैं. निश्चित व्यापार को सूचित करने के कारण यह अपूर्ण पक्ष की क्रिया है. इसकी कालरहितता को नीचे के उदाहरणों में देख सकते हैं. पहला उदाहरण देखिए—*एक राजा था. वह बड़ा ही धार्मिक प्रकृति का था. *वह रोज़ उठता है, पूजा करता है*···. भूतकाल में वर्तमान का प्रयोग नहीं मिल सकता. दूसरा उदाहरण देखिए—*एक राजा था. वह बड़ा ही धार्मिक प्रकृति का था. *वह रोज उठा, पूजा की*···. यहाँ एक में काल है, दूसरे में पक्ष. इस कारण यह गलत है. तीसरा उदाहरण देखिये—*एक राजा था. वह बड़ा ही धार्मिक प्रकृति का था. ?वह रोज उठता था, पूजा करता था*···. यह प्रयोग संदिग्ध है, चल सकता है. यहाँ काल की समानता है. लेकिन संदिग्धता का आधार अपूर्ण पक्ष में भूतकाल का प्रयोग है. *मैं होटल में खाता था* इस वाक्य से सूचित होता है कि कथन के समय व्यापार सत्य नहीं है, अर्थात 'मैं अब नहीं खाता'. साथ ही 'था' के कारण कथन से पहले का कोई समय इंगित है. ऊपर की कथा में 'रोज उठता था' से किस समय से पहले उठता था और किस समय में नहीं उठता के प्रश्न उठ सकते हैं, जिनका उत्तर संभव नहीं है और जिनके विवरण अभीष्ट नहीं हैं. यही कारण है कि यहाँ कालरहित क्रिया का प्रयोग अधिक उचित लगता है. सही प्रयोग होगा—*एक राजा था*···*वह रोज़ सबेरे उठता, पूजा करता और शिकार करने निकलता.*

1.3. *मैं नहीं करता* 'मैं करता हूँ' का नकारात्मक वाक्य है. **न, नहीं, मत** में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हमने चर्चा की कि किस तरह नकारात्मक शब्द अर्थ की बारीकियों को समाप्त कर देता है. *नहीं जाता* में 'जाता है, जाता था' दोनों का नकार निहित है. *नहीं पूछा* 'पूछा है, पूछा था' दोनों के संदर्भ में आता है. काल के अंतर के महत्त्व के विलुप्त होने के कारण यहाँ कालरहित क्रिया का प्रयोग मिलता है. जहाँ काल में अंतर दिखाना अभीष्ट हो, वहीं 'नहीं' के साथ भूतकाल का प्रयोग होता है. उदाहरण देखिए :

आप चाय पीते हैं ?	मैं चाय नहीं पीता/हाँ, पीता हूँ.
आप चाय पीते थे ?	मैं चाय कतई नहीं पीता/हाँ, पीता था (*…हूँ) नहीं, मैं नहीं पीता था (अर्थात शायद 'अब पीता हूँ')

1.4. *बच्चे, सड़क पर ऐसे नहीं चलते* अप्रत्यक्ष निषेध है और **विधि** का उपवर्ग है. यह केवल मध्यम पुरुष में प्रयुक्त होता है और 'नहीं+करता' से भिन्न प्रयोग है. इस वाक्य में वाच्य परिवर्तन भी दिखायी पड़ता है. *ये चीज़ें इस तरह नहीं रखी जातीं*. यहाँ वाच्य भी मध्यम पुरुष के संदर्भ में ही प्रयुक्त होता है. अपशब्द बोलने वाले व्यक्ति के सामने ही व्यक्ति कहता है *ऐसे नहीं बोला जाता*. इस तरह के निषेध वाक्य कभी किसी काल में नहीं आते, न ही पूर्ण पक्ष में आते हैं (**?ऐसे नहीं बोलते हैं, *ऐसे नहीं बोलते थे, *ऐसे नहीं बोले*).

सामान्य विधि (*जाओ*) और निषेध (*मत जाओ*) में तथा इस क्रिया में संदर्भ की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण अंतर है. विधि तथा निषेध का व्यापार प्रायः वास्तविक नहीं है, संभावित है. सुझाव के बाद ही वह वास्तविक व्यापार बनेगा, जबकि किसी व्यक्ति को करते देख कर ही हम *ऐसा नहीं करते* की अभिव्यक्ति करते हैं. इस दृष्टि से यहाँ व्यापार वास्तविक है और निषेध उस व्यापार का है, जो सत्य है. इस कारण यहाँ अपूर्ण पक्ष की क्रिया आयी है. चूँकि निषेध प्रस्तुत संदर्भ से जुड़ा है, यहाँ काल का उल्लेख अनावश्यक है और काल की दृष्टि से भेद नहीं है.

2. 'करता है' वर्तमान काल की क्रिया है—कथन के समय में क्रिया पूर्ण नहीं हुई और व्यापार उपस्थित है. काल-बोध 'है' से होता है. **क्रिया** प्रकरण में हमने देखा कि 'करता' को अ-पूर्ण पक्ष की क्रिया कहा जा सकता है. वास्तव में यही शीर्षक उपयुक्त होता, क्योंकि 'पूर्ण पक्ष' निश्चित कोटि है, उससे बचे रूप 'करता' में अंतर्भुक्त हो जाते हैं. 'करता' **भाषा में फुटकर खाता** है. कुछ साल पहले मैंने 'करता है' के रूपों को वर्तमान माना और यह देखने की कोशिश की कि 'वर्तमान' काल के कितने प्रयोग मिलते हैं और इनमें कितने वास्तव में वर्तमान नहीं हैं. नीचे ऐसे प्रयोगों की सूची दे रहा हूँ :

1. आदत मैं रोज़ सवेरे दूध पीता हूँ.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. नित्यता	सूरज पूरब में उगता है.
3. निरंतरता	मैं कालेज में पढ़ता हूँ.
4. बारंबारता	यहाँ हर साल मेला लगता है.
5. शौक, व्यासंग	मैं तस्वीर बनाता हूँ.
6. गुणधर्म	पानी 100 से० के तापमान पर उबलता है.
7. भावना	मैं आशा करता हूँ···, हम उम्मीद करते हैं···
8. ज्ञान	मैं जानता हूँ···, हमें लगता है···, प्रतीत होता है···
9. प्रगामी कार्य	तुम बैठो, मैं अभी आता हूँ.
10. कथन	वह कहता है कि···, सरकार कहती है···, मैं पूछता हूँ···
11. सहमति	मैं मानता हूँ···
12. अनुमति	अच्छा, मैं चलता हूँ.
13. अंतःकथन	(किताबों में प्रसंग से हटी सूचना—कोष्ठकों में) (राम उठता है. श्याम उसके पास आता है. फिर दोनों बैठते हैं.)
14. इच्छा, प्रार्थना	मैं चाहता हूँ···, हम प्रार्थना करते हैं···
15. स्थिति	यह पंखा चलता है.

सच मानिए कि यह सूची, जो अर्थ और प्रयोग पर आधारित है, बहुत लंबी है और कहीं भी लोगों का वर्गीकरण समान नहीं हो सकता. मैं भी दुबारा कोशिश करूँ, तो भिन्न प्रकार की ही सूची बनेगी. कहने का तात्पर्य यह है कि 'क्रिया' को छोड़ कर बाकी सब जगह अपूर्ण पक्ष में हम 'करता+है/था' का प्रयोग करते हैं (देखें **रहा**). इन्हीं प्रयोगों को लीजिए, प्रगामी कार्य के लिए 'करता' का प्रयोग सिवाय 9 के और कहीं नहीं होता. 9 की चर्चा **क्रिया** में की गयी है. 13 में अपूर्ण पक्ष का प्रयोग नाटकों में ही बहुधा किया जाता है. चूँकि नाटक वर्तमान काल पर आधारित होता है, उसमें पूर्ण पक्ष का प्रयोग सही नहीं बैठता. उदाहरण देखिए :

मोहन : तुम क्या कर रहे हो? यहाँ आओ
?(सोहन उठा और मोहन के पास आया)
सोहन : बोलो, क्या चाहते हो ?

उदाहरण से ही स्पष्ट है कि प्रस्तुत प्रसंग में पूर्ण पक्ष का प्रयोग खटकता है, क्योंकि पक्ष की विसंगति के कारण अर्थ ग्रहण आसान नहीं होता. *सोहन उठता था* में काल की विसंगति है.

3. 'करता था' भूतकाल में अपूर्ण पक्ष वाली क्रिया है. भूतकाल को स्पष्ट करने के लिए हमें 'पहले, पिछले साल, उन दिनों, जब···थे' आदि समयवाचक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्दों/वाक्यखंडों का प्रयोग करना होगा. चूँकि 'करता था' आदि रूप सातत्य सूचित करते हैं, हम निश्चित समय बिंदु का उल्लेख नहीं कर सकते (देखें **रहा**). *मैं पहले चाय पीता था* (**मैं पहले चाय पी रहा था*). **मैं कल शाम को 7 बजे चाय पीता था.* ऊपर के उदाहरणों में 2, 6 'करता था' के साथ नहीं आ सकते, क्योंकि हमारी समझ में इन व्यापारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, न होता है. लेकिन कभी परिवर्तन होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता. 13 की हम चर्चा कर चुके हैं. सामान्य रूप से माना जा सकता है कि 'करता है' के सभी रूप भूतकाल के संदर्भ में 'करता था' बनते हैं.

करता, कर्ता 1. करता हिंदी का कृदंत रूप है (*मैं काम करता हूँ*). कर्ता संस्कृत √कृ (कर्) से व्युत्पन्न संज्ञा शब्द है (*कार्यकर्ता*). दोनों शब्दों की वर्तनी तथा अर्थ भेद पर ध्यान दें.

करीब 1. यह 'लगभग' के अर्थ में प्रयुक्त उर्दू शब्द है. करीब और तकरीबन समान अर्थ में समान संदर्भों में प्रयोग में आते हैं. दूसरा शब्द उर्दू शैली में आता है. पहला शब्द आम बोलचाल की भाषा का है.

2. 'करीब' स्वयं ही **अर्थ सामीप्य** दिखाने वाला शब्द है. इसका पुनरुक्त शब्द 'करीब-करीब' कार्य व्यापारों के साथ अनिश्चयार्थ सूचित करता है, 'करीब' संख्याओं में अनिश्चयार्थ सूचित करता है. *मेरा काम करीब-करीब हो गया है* (**करीब*). *वहाँ करीब दस लोग थे* (*?करीब-करीब*). 'लगभग' तथा 'तकरीबन' पुनरुक्त नहीं होते.

3. परसर्गीय शब्द 'के करीब' स्थानवाचक है, 'के निकट' का पर्याय है. *हम लोग स्टेशन के करीब हैं. मंदिर के करीब पहुँच कर···. ?के करीब-करीब* का भी प्रयोग नहीं है.

करे देखें **संभावनार्थ क्रिया**.

करेगा 1. इस क्रिया रूप को प्रायः सभी वैयाकरण भविष्यत् काल या भविष्य काल का रूप कहते हैं और वर्तमान काल 'करता है', भूतकाल 'किया' की तुलना में में तीसरे काल की स्थापना करते हैं. इस धारणा का आधार अंग्रेज़ी व्याकरण है, जहाँ इसे future tense की संज्ञा दी जाती है. क्रिया के संदर्भ में चर्चा करते समय मैंने क्रिया के दो रूप बताये—तथ्यपरक तथा तथ्येतर. तथ्यपरक क्रियाओं में ही पक्ष (पूर्ण और अपूर्ण) तथा काल (है, *था* से व्यक्त वर्तमान तथा भूतकाल) का व्यतिरेक दिखायी पड़ता है. तथाकथित भविष्य काल में पक्ष तथा काल का अंतर नहीं है. इस काल की धारणा की आवश्यकता निम्नलिखित क्रिया रूपों के कारण हुई होगी :

करता है	करता था	करता होगा
किया है	किया था	किया होगा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है	था	होगा
?	किया	करेगा

2. तथ्य की दृष्टि से भविष्य नाम का कोई काल नहीं हो सकता. व्यापार की वास्तविकता है या था में ही दिखायी पड़ सकती है. इस बात की पुष्टि कई भाषाओं में होती है, जहाँ *आज छुट्टी है*–*कल छुट्टी है* के ही वाक्य मिलते हैं. *कल छुट्टी होगी* में व्यक्ति सूचना नहीं दे रहा है, अनुमान कर रहा है. आगे के समय का हम अनुमान ही कर सकते हैं, तथ्य के रूप में नहीं कह सकते. *कल छुट्टी है, कल इतवार है* के वाक्य उस सत्य का अर्थ देते हैं, जो आने वाले संदर्भ में आज सत्य है. आज शनिवार है तो कल इतवार है. इस सत्य में उल्लेख आने वाले समय का ज़रूर है, लेकिन वर्तमान में कथ्य का सत्य अपनी जगह है. लेकिन हम **कल मुझे दर्द है/भूख है/गुस्सा है* के वाक्य नहीं दे सकते. ये केवल वर्तमान में सत्य हैं, आगे के लिए सिर्फ़ अनुमान कर सकते हैं.

अपूर्ण पक्ष की क्रिया से ही तात्पर्य है कि वह स्मृति की बात नहीं, वर्तमान में भी सच है. *सूरज पूरब में उगता है* यह कथन जितना आज सच है, उतना ही भविष्य में भी है. *मैं चाय नहीं पीता* यह कथन आज सच है, तो कल भी है, कल के लिए भी है. मैं कल चाय नहीं पिऊँगा उक्त कथन का (और सच का) भविष्य काल नहीं है. वास्तविकता का भविष्य में सच होना तथाकथित भविष्य काल द्वारा प्रकट नहीं होता.

3. आगे के तीन वाक्य देखिए–*राम रोज़ आता है. राम कल आया. राम कल आएगा*. इन तीनों वाक्यों में आगे-पीछे का क्रम है. फिर क्यों न तीन काल मान लिये जाएँ? तीन काल मानने में क्या आपत्ति है, भले तीसरा वाक्य घटना के संदर्भ में वास्तविकता नहीं है. *आएगा* हिंदी का एक सहज प्रयोग है, एक निश्चित अर्थ देता है, जो अन्य दोनों वाक्यों से भिन्न है. सुविधा के लिए इस ग्रंथ में मैं भी इसे भविष्य रूप कहता हूँ. इसे काल न मानने के कुछ कारण हैं. जैसे ऊपर बताया है, तथ्यपरक क्रियाओं में ही काल और पक्ष की व्यवस्थाएँ दिखायी पड़ती हैं. *करता+है/था, किया+है/था*. *करेगा* इन चारों के मुकाबले अकेला है. इस व्यतिरेक को केवल काल का व्यतिरेक क्यों और कैसे कहा जाए?

जब हम भविष्य की बात कहते हैं, तब कई वैयाकरण पूर्ण भविष्य, अपूर्ण भविष्य आदि की भी चर्चा करते हैं. *करेगा* तथाकथित भविष्य काल की सहायक क्रिया 'होगा' से बहुत भिन्न है. *करता होगा* और *किया होगा* को वैयाकरण भविष्य काल के रूप मानते हैं. *करता होगा* का अर्थ यह नहीं कि आने वाले समय में वह व्यापार अधूरा होगा या *किया होगा* का अर्थ भविष्य में वह व्यापार पूर्ण है (या होगा). व्याकरणों ने मुझे यही सिखाया था और इस भटकाव से उबरने में मुझे बहुत समय लगा. ये दोनों व्यापार कालातीत हैं और *होगा* यहाँ केवल अनुमान

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की सूचना देता है. उदाहरण देखिए :

क्या रमेश कालेज में पढ़ता है? हाँ, कालेज में पढ़ता है.
शायद पढ़ता होगा. मालूम नहीं.
वैसे बहुत छोटा है. स्कूल में पढ़ता होगा.

वे दोनों कहाँ थे? मालूम नहीं. शायद अंदर होंगे. खेलते होंगे.

कल शाम को मैं आऊँगा, तब सब लोग यहीं बैठकर खाते होंगे.

उसने कल पैसे दे दिये थे? मालूम नहीं, दे दिये होंगे.

मैं लौटूँगा, तब तक सब ने खा लिया होगा.

होगा के बावजूद पक्ष की व्यवस्था सुदृढ़ है. जिन व्यापारों का, जिस समय बिंदु के संदर्भ में उल्लेख है, वास्तविकता का अनुमान मात्र है. अगर अनुमान सही हो, तो वे व्यापार उस समय में क्रिया रूप के अनुसार क्रमशः अपूर्ण या पूर्ण होंगे. *होगा* से काल संबंधी कोई सूचना नहीं, घटना के सत्य का अनुमान मात्र प्रकट होता है. अन्य उक्तियों से ही काल की सूचना मिल सकती है. इस कारण *होगा* को भविष्य काल की सहायक क्रिया मानना भ्रामक होगा. यही बात स्वतंत्र क्रिया *होगा* पर भी लागू होती है. संदर्भ न हो, तो हम नहीं कह सकते कि *वह अंदर होगा* का किस काल में प्रयोग हुआ है. इस तरह हमें *करेगा* तथा *करता/किया होगा* के रूपों के प्रकार्य में अंतर करने की आवश्यकता है.

3.1. यहाँ मैं अंत में विवक्षा सूचक क्रिया 'हो' तथा अनुमान सूचक क्रिया 'होगा' में फिर अंतर देखना चाहूँगा. 'हो' से केवल इच्छा आदि की बात होती है (*मैं चाहता हूँ कि बारिश हो*) या संदेह प्रकट होता है (*आवाज़ हो रही है. शायद बारिश हो*). यह संदेह आगे के संदर्भ में किया जाए, तो वाक्य होगा–*शायद वे लोग आज रात को आएँ*~*शायद वे लोग आज रात को आएँगे*. 'शायद' के साथ दोनों क्रिया रूपों का प्रयोग दर्शाता है कि तथ्येतर क्रियाएँ प्रयोग के स्तर पर समान हैं. *होगा* से हम अधिक पुष्ट अनुमान प्रकट कर सकते हैं (*वह ज़रूर पास होगा*, **वह ज़रूर पास हो*); जितना पुष्ट अनुमान होगा, उतने ही हम तथ्यपरक क्रियाओं के निकट चले आएँगे. तभी हम तीसरे काल के बारे में सोचने लगते हैं.

कर्ता की अवधारणा कर्ता की अवधारणा या प्रत्यय (concept) बहुत पहले से ही विवाद का विषय रहा है. *राम बत्ती जला रहा है*, इसमें राम कर्ता है, लेकिन *बत्ती जल गयी* में कई विद्वान बत्ती को कर्ता मानते हैं और कई नहीं मानते. फ़िलमोर का कारक व्याकरण *राम बत्ती जला रहा है* से निष्पन्न सभी वाक्यों में *राम* को कर्ता मानता है, *बत्ती* को कर्म. कुछ आधुनिक वैयाकरण इस कठिनाई से निपटने के लिए तीन तरह के कर्ता मानते हैं, तार्किक या वास्तविक कर्ता, व्याकरणिक कर्ता तथा प्रासंगिक कर्ता (शेफ़, चार्ल्स ली (सं.) 1976, में). राम

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने *आलू छीले* में *राम* तीनों तरह का कर्ता है, *आलू राम से नहीं छिले* में *राम* वास्तविक कर्ता है, *आलू* व्याकरणिक तथा प्रासंगिक कर्ता है, *आलू, जो राम ने नहीं छीले* में *आलू* प्रासंगिक कर्ता है, *राम* शेष दोनों तरह का कर्ता. प्रासंगिक कर्ता से हमारा तात्पर्य उस विषय से है, जो उस प्रसंग का वर्ण्य विषय है.

कीनन (चार्ल्स ली (सं.) 1976, में) लिखते हैं कि कर्ता एक निश्चित प्रत्यय नहीं हो सकता, वह कई संरचनात्मक, संदर्भगत तथा आर्थिक प्रयोग-विशेषताओं का सामूहिक नाम है, बहुआयामी विचार है. कुछ कर्ताओं में कुछ विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं, किसी में कुछ भिन्न विशेषताएँ होती हैं. इस समस्या का कारण यह है कि भाषा में स्थिति, व्यापार आदि की भिन्न रचनाएँ मिलती हैं; जड़, चेतन आदि के व्यापार या स्थिति की सूचना दी जाती है और वाक्य की संरचनागत विशेषताएँ भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रकट होती हैं. इसलिए कर्ता की परिभाषा देना कठिन होता है. हिंदी में अंग्रेज़ी, तमिल आदि की तुलना में यह स्थिति और जटिल हो गयी है. हिंदी में कई वाक्यों में कर्ता के साथ परसर्ग आता है (भले वह तीनों प्रकार का कर्ता क्यों न हो—*राम ने आलू छीले*) और क्रिया कर्म के अनुसार बदलती है. इस कारण *मुझसे चाय नहीं पी जाती* में कुछ लोग *चाय* को कर्ता मानते हैं. *मुझसे बैठा जाता* में *मुझसे* व्याकरणिक कर्ता नहीं है, तो कौन-सा शब्द कर्ता है ? आगे हम इसी संदर्भ में कर्ता की कुछ विशेषताओं के बारे के चर्चा करेंगे, जो कर्ता की अवधारणा स्पष्ट कर सकें.

1. **अपना** के प्रकरण में हमने देखा कि *अपना* सिर्फ़ कर्ता के साथ का विशेषण है और अन्य संज्ञाओं के साथ नहीं आता. *राम*$_1$ *अपने*$_1$ *घर जा रहा है.* **यह तो अपनी किताब है.* 'अपना' अन्य मनुष्येतर तथा जड़ वस्तुओं के साथ भी आ सकता है. *गाड़ी अपने गंतव्य की ओर भागे जा रही थी. कीड़ा भी अपने दुश्मन को पहचानता है. संसार में हर चीज़ का अपना महत्त्व है.* ध्यान दें कि परसर्ग के साथ आने पर भी कर्ता *अपना* के प्रयोग को नियंत्रित करता है. *मुझे अपने घर जाना है. मुझसे अपना ही बोझ नहीं उठाया जाता.*

अगर वाक्य में दो उपवाक्य हों, तो 'अपना' हर उपवाक्य के कर्ता के साथ आता है.

मैं$_1$ चाहता हूँ कि तुम$_2$ अपने$_2$ घर जाओ

तुम$_2$ मेरे$_1$ घर जाओ

जब 'अपना' अंतर्निहित वाक्यों में आता है, वाक्य के कर्ता को हम आंतरिक संरचना से पहचान सकते हैं.

तुम मुझे अपने घर जाने दो.

वाक्य 1 तुम (वाक्य$_2$) दो
वाक्य 2 मैं अपने घर जा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी अंतर्निहित रचना के कारण 'अपना' 'तुम' के साथ नहीं आता. लेकिन इस संदर्भ में कई वाक्य समस्यात्मक हैं :

आप$_1$ मुझे$_2$ अपनी$_{1,2?}$ किताब पढ़ने दीजिए

यहाँ वाक्य 2 में *आप की किताब पढ़*··· या में *अपनी किताब पढ़*··· दोनों हो सकता है. इस समस्या को वाक्य का शब्द क्रम कुछ हद तक निपटा सकता है.

आप$_1$ अपनी$_1$ किताब मुझे$_2$ पढ़ने दीजिए

आप$_1$ मुझे$_2$ अपनी$_2$ किताब पढ़ने दीजिए

इसी तरह एक अन्य अंतर्निहित वाक्य भी समस्यात्मक है. मैंने$_1$ *राम*$_2$ से *अपने*$_{1,2?}$ *घर जाने को कहा*. लेकिन संदर्भ के कारण मैंने *राम को अपने घर आने को कहा* में 'अपना' का संबंध मैं से आसानी से जुड़ता है. ऐसे कुछ समस्यात्मक वाक्यों को छोड़ दें, तो कहा जा सकता है कि 'अपना' का संबंध सिर्फ़ कर्ता से जुड़ता है.

2. **कृदंत-पूर्वकालिक** में हमने देखा कि कर तथा अंतिम क्रिया समकर्तृक होती हैं. हिंदी में दोनों क्रियाओं के कर्ता भिन्न नहीं हो सकते. मैं *खाना खा कर बाहर आया*. **मैं प्रश्न पूछ कर गोपाल ने उत्तर दिया*. 'कर' की इस विशेषता के कारण हम वाक्यों के कर्ता के बारे में निश्चित विवेचन कर सकते हैं. मुझे *यहाँ आये पाँच साल हो गये*. इस वाक्य का मूल रूप कोई मुझे···हो गये मान सकते हैं. यह वाक्य वास्तव में सरल वाक्य नहीं, समस्त वाक्य है, जिसके दो मूल तथा अंतर्निहित वाक्य हैं–मैं *आया*, *पाँच साल हुए*. चूँकि यहाँ भिन्न कर्ता हैं, दोनों वाक्य कर से नहीं जुड़े (**मुझे यहाँ आ कर पाँच साल हो गये*). इस वाक्य में मुझे, *पाँच साल* दोनों ही कर्ता हैं; इसमें दो उपवाक्य हैं.

हिंदी में कर के प्रयोग पर कुछ पाबंदियाँ हैं. दो समकर्तृक वाच्य के वाक्य भी कर से नहीं जुड़ते.

(राम से) चोर पकड़ा गया
,, ,, पीटा गया } → *चोर पकड़े जा कर पीटा गया.

वास्तविक कर्ता अलग होने पर भी ये दोनों वाक्य कर से जुड़ सकते हैं.

वह (मुझसे) पिटा
वह भागा/गया } → वह (मुझसे) पिट कर भागा/गया.

यह देखा जा सकता है कि किसी भी उपवाक्य में वाच्य आने पर वाक्य कर से नहीं जुड़ता. इसके पीछे कर तथा कर्ता के संबंध की कोई विशेषता है.

3. रमेश *घर जाना चाहता है* में 'चाहता' सिर्फ़ कर्ता से जुड़ता है. *राम मेरा *घर जाना चाहता है* (अंतर्निहित वाक्य मैं–घर–जा न कि स्थानवाचक मेरे घर). वास्तव में यहाँ दो वाक्य हैं और दोनों समकर्तृक हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रमेश$_1$ (वाक्य$_2$) चाहता है

वाक्य 1 रमेश$_1$–घर–जा

अगर ऐसे वाक्यों में भिन्न कर्ता आएँ, तो 'कि' उपवाक्य आएगा. *रमेश चाहता है कि मैं घर जाऊँ.* इस दृष्टि से रमेश$_1$ *चाहता है कि वह$_{1,2}$?* घर जाए समस्यात्मक वाक्य हो सकता है. लेकिन संदर्भ से ही यह बात स्पष्ट हो सकती है.

3.1. इसी तरह *तुम्हें जाना चाहिए* आदि वाक्यों को दो भिन्न उपवाक्यों में ले सकते हैं, जो हमेशा समकर्तृक होंगे.

तुम्हें जाना चाहिए → तुम्हें चाहिए कि तुम जाओ.

भिन्न कर्ता यहाँ संभव नहीं, क्योंकि यह एक सरल वाक्य से निष्पन्न है. **गोपाल को चाहिए कि राम जाए.* यही वाक्य (भिन्न कर्ताओं का) होगा–*गोपाल की इच्छा है/चाहता है कि राम जाए.* यद्यपि हमारे पास *बारिश होनी चाहिए, मकान बनने चाहिए* आदि वाक्य हैं, **बारिश को चाहिए कि वह हो; *मकानों को चाहिए कि वे बनें* आदि रूपांतरण संभव नहीं हैं. क्योंकि *गोपाल को चाहिए* में हम ऐसे कर्ता का प्रयोग करते हैं, जो इच्छा कर सके, तत्संबंधी योजना बना सके. कर्ता की विशेषता पर ही कई संरचनाओं की व्याख्या आधारित है.

4. हिंदी में कर्ता एक अनिवार्य घटक है. बिना कर्ता के वाक्य नहीं बनते, जबकि तमिल आदि द्रविड़ भाषाओं में ऐसी रचना संभव है. *दक्षिण में चावल खाते हैं* तमिल का सहज वाक्य है. अहिंदी भाषी जब *पेड़ काटा* कहता है, तब यह पता लगाना मुश्किल हो जाता है कि वह 'पेड़ कटा' के अर्थ में यह वाक्य बोल रहा है या बिना कर्ता के वाक्य दे रहा है. शायद ऐसे ही व्यतिरेकों के कारण वाक्य में कर्ता का होना अनिवार्य है.

अगर किसी वाक्य में कर्ता का अभाव हो, तो वह भी संरचनात्मक विशेषताओं के कारण ही. झिड़कने या समझाने के उद्देश्य से *बच्चे ! सड़क पर ऐसे नहीं चलते/चला करते* कहते हैं, जो केवल मध्यम पुरुष के प्रसंग में ही आता है. यह (तुम) करो जैसे वाक्य के समान है, जहाँ कर्ता लुप्त है. इसी तरह अकर्तृक वाच्य कर्ता के अभाव में ही बनता है. यों कह सकते हैं कि कर्ता का उल्लेख आवश्यक हो, तो वाच्य परिवर्तन ही नहीं किया जाएगा.

वाच्य का दूसरा प्रकार अक्षमता बोधक है. अक्षमता मानसिक भावना है. इस कारण सचेतन कर्ता के संदर्भ में ही यह वाच्य परिवर्तन होता है. मुझसे *चला नहीं जाता. *हवा से चला नहीं जाता. *पेड़ से कटा नहीं गया* (पेड़ नहीं *कटा*∼पेड़ *कट नहीं सका* के लिए).

5. हिंदी में पूर्ण पक्ष की क्रिया आने पर कर्ता में 'ने' लगता है. *राम ने रोटी नहीं खायी. गणेश ने मुझे पाँच रुपये दिये.* यह देखा गया है कि कई वक्ता अचेतन तथा जड़ वस्तुओं के संदर्भ में भी व्याकरणिक कर्ता में 'ने' का प्रयोग करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

!हवा ने पत्ते हिलाये. !चाकू ने हाथ काटा. इन वाक्यों में अर्थ या संरचना की दृष्टि से कोई असंगति नहीं है. लेकिन 'ने' का प्रयोग वास्तविक कर्ता के साथ ही होना चाहिए, वही उचित है. उपर्युक्त वाक्यों में 'हवा, चाकू' दोनों जड़ हैं, दोनों उल्लिखित व्यापारों के कारण या साधन हैं, प्रेरक कर्ता नहीं. इस कारण *हवा में पत्ते हिले, चाकू से हाथ कटा* आदि वाक्य ही हिंदी की प्रकृति के अनुकूल हैं. ऐसे कुछ वाक्य आगे देखिए—*दरवाज़े से मेरा सिर लगा (*दरवाज़े ने मुझे लगा दिया). उस ग्रंथ से मुझे प्रेरणा मिली (!उस ग्रंथ ने मुझे प्रेरित किया). गुलामी के कारण भारत की आत्मा सुप्त हो गयी थी (?गुलामी ने भारत की आत्मा सुप्त कर दी थी). बुख़ार में/के कारण उसका शरीर आधा रह गया था (?बुख़ार ने उसका शरीर आधा कर दिया था). आपकी मदद से मैं बच गया (*आप की मदद ने मुझे बचा लिया).*

कलम (pen) यह एक **उभयलिंगी** शब्द है. लेकिन बालों की कलम निश्चित रूप से स्त्रीलिंग शब्द है.

कवयित्री 'कवि, कवयित्री' दोनों संस्कृत के √कव् से बने हैं. व्युत्पत्ति के कारण दोनों रूपों में अंतर है. *कवियित्री* की वर्तनी गलत है.

कसमें-वादे 1. कसम : वक्ता अपनी बात की सचाई, विश्वसनीयता तथा अपने वचन की दृढ़ता प्रकट करने के लिए अपने बाहर किसी शक्ति या व्यक्ति का आधार लेता है. सामान्य धारणा यह है कि ईश्वर का नाम लेकर गलत बात कहने पर अपना अहित होगा और अपने प्रिय व्यक्ति के नाम पर गलत बात कहने पर उस व्यक्ति का अहित होगा. इसलिए अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए किसी पवित्र वस्तु का नाम लिया जाता है. (*ख़ुदा की कसम, अल्लाह की कसम, गीता की कसम, भगवान की कसम, धर्म की कसम, गंगा मैया की कसम, क़ुरान पाक की कसम*) या अपने सबसे प्रिय व्यक्ति (जिसमें वह स्वयं भी है) का नाम लेता है (*माँ की कसम, बच्चे की कसम, तुम्हारी कसम, मेरी कसम, बीवी-बच्चों की कसम*).

1.1. कसम खाने की आवश्यकता तभी होनी चाहिए, जब व्यक्ति की बातें गलत मान ली जाएँ और अपने को सही सिद्ध करने का उसके पास कोई उपाय न रह जाए. लेकिन बोलचाल की भाषा में कसमें तकियाकलाम बन गयी हैं, जिनकी सार्थकता प्रसंग के अनुकूल अधिक नहीं है. उदाहरण देखिए :

अ : कितने बजे आओगे ? पाँच बजे तक आ जाओगे ?

आ : हाँ यार, कसम से. ठीक पाँच बजे आ जाऊँगा.

1.2. 'कसम' के लिए दो प्रमुख शब्द हैं—उर्दू मूल से 'कसम' और हिंदी मूल से 'सौगंध'. 'सौंह' दूसरे शब्द का क्षेत्रीय प्रयोग है. 'कसम' सबसे अधिक प्रचलित है. जो व्यक्ति 'कसम' का सहारा लेता है, वह कसम *खाता* है, जो व्यक्ति दूसरों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से कसम खाने को कहता है, वह कसम देता है या *दिलाता है* (*मेरी कसम, तुम सच्ची बात बता दो~कसम से बोलो*); कसम खाने वाला कसम उतार कर उसके बंधन से मुक्त हो जाता है.

1.3. भाषा की दृष्टि से कसम खाने के निम्नलिखित प्रकार हैं—*भगवान की सौगंध, मेरी कसम, बच्चों की कसम, मैं अपने बच्चों के सिर पर हाथ रख कर कहता हूँ···, गंगाजल हाथ में ले कर कहता हूँ···, भगवान के नाम पर कहता हूँ···, कसम से कहता हूँ···, भगवान जानता है कि..., ईश्वर साक्षी है कि···.*

2. शपथ : यह 'कसम' के निकट अर्थ में प्रयुक्त शब्द है; 'कसम' बोलचाल का शब्द है, 'शपथ' पारिभाषिक शब्द है. इस कारण यह शब्द 'कसम' की तरह सब जगह प्रयोग में नहीं आता. अदालत में लोग ईश्वर के नाम पर शपथ लेते हैं कि वे सच बोलेंगे (*कसम खाते हैं); चुने गये विधायक या अधिकारी शपथ लेते हैं कि वे ठीक से कर्तव्य पालन करेंगे. लोग अदालत में या कार्यालयों में किसी बात की सचाई के लिए शपथपत्र दाखिल करते हैं. 'हलफ़नामा' 'शपथ-पत्र' का पर्याय है.

शपथ किसी पवित्र ग्रंथ या वस्तु की ली जाती है, प्रिय वस्तु की नहीं. बोलचाल के प्रसंगों में **मेरी शपथ*, **मैं तो शपथ से कहता हूँ* आदि प्रयोग नहीं मिलते. जो व्यक्ति शपथ लेने वाले के समक्ष औपचारिकता से शपथ के वाक्य बोलता है, वह शपथ दिलाता है.

3. प्रतिज्ञा, संकल्प, प्रण : जब कोई व्यक्ति कोई काम करने का दृढ़ निश्चय कर लेता है, उसे प्रतिज्ञा आदि कहते हैं. *उन्होंने प्रतिज्ञा की कि दुश्मनों का नाश करेंगे. हमने प्रण किया है कि कभी झूठ नहीं बोलेंगे. यह हमारा दृढ़ संकल्प है.* प्रतिज्ञा करने वाला अपने मनोबल के लिए अपने से बड़ी, प्रायः ईश्वरीय शक्ति का सहारा लेता है. प्रतिज्ञा पूरी करने का यत्न करता है, लेकिन प्रतिज्ञा पूरी न हो, तो पाप या कलंक नहीं लगता. इस प्रतिज्ञा को वह कसम के शब्दों से भी प्रकट कर सकता है. *खुदा कसम, मैं यह लड़ाई जीत कर रहूँगा.* अन्यथा वह स्पष्ट शब्दों में ईश्वर से सहायता माँगता है. *भगवान मुझे शक्ति दे कि मैं दुश्मन का मुकाबला कर सकूँ.* जो व्यक्ति दूसरे से संकल्प करने को कहता है, वह भी ईश्वरीय शक्ति का सहारा लेता है. *भगवान का नाम ले कर काम शुरू कर दो.*

4. वचन, वादा : 'वचन', 'वादा' प्रतिज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, जहाँ व्यक्ति अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए कोई काम करने का दृढ़ निश्चय करता है या सूचित करता है, वचन दिया जाता है, वादा किया जाता है. इन दोनों में वचन बड़े, महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए आता है (*मैंने आपको वचन दिया था कि हर मुसीबत में आप की मदद करूँगा*), जबकि वादा छोटे काम के लिए भी आता

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है (*मैंने पाँच बजे आने का वादा किया*).

जो व्यक्ति वादा करके उसका पालन करता है, वह वादे का पक्का होता है, पालन न करने वाला वादे से मुकर जाता है. पक्का वादा निश्चय की दृढ़ता सूचित करता है. जो वचन का पालन नहीं करता, उसका काम 'वचन भंग' कहलाता है. वचन देकर अनुरूप कार्य करने वाला अपना वचन पूरा करता है.

वचन या वादे की दृढ़ता को सूचित करने के लिए कसम के शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है—*कसम से कह रहा हूँ. यह मेरा पक्का वादा है. भगवान की सौगंध, मैंने तुझे बचाने का वचन दिया है.*

5. तोबा : गलत या अनुपयोगी काम करने के बाद, फिर से वैसा काम न करने की प्रतिज्ञा 'तोबा' है. यह विस्मयादिबोधक शब्दों की तरह प्रयुक्त होता है (*तोबा! तोबा!*) या वाक्य में आता है (*मैंने तोबा किया*). तोबा करके उससे मुकर जाने वाला व्यक्ति तोबा तोड़ता है.

कहना, बोलना, बताना ये तीनों शब्द मुँह से अभिव्यक्ति के संदर्भ में आते हैं और इनमें प्रयोग का अंतर है. हम तीनों को कुछ हद तक क्रमश: say, speak तथा tell का पर्याय मान सकते हैं, लेकिन अंग्रेज़ी के सहारे या प्रयोग गिना कर इन तीनों का अंतर स्पष्ट नहीं कर सकते, क्योंकि इनमें कहीं पुनरावृत्ति है और हर जगह अंग्रेज़ी से यही अनुवाद हो, यह ज़रूरी नहीं है.

1. विश्लेषण की दृष्टि से 'बताना' शायद सबसे आसान है. यह 'बात' से व्युत्पन्न **नाम धातु** हो सकता है, यद्यपि हमारे पास 'बात बताना' जैसा प्रयोग भी है. कोई सूचना या जानकारी देने के अर्थ में 'बताना' का प्रयोग होता है. *उसने बताया कि···. तुम अपना नाम/पता बताओ. उसने एक मज़ेदार बात बतायी. साहब, यह कैसे करूँ? ठहरो, अभी बताता हूँ.* कहानी, कविता, आदि बतायी नहीं जाती, सुनायी जाती हैं.

2. 'बोलना' का प्रमुख अर्थ है मुँह खोल कर उच्चारण करने का भौतिक व्यापार. *चिड़िया चीं-चीं बोलती है. कुछ लोग ज़ोर-ज़ोर से बोलते हैं.* जड़ वस्तुओं के कारण उत्पन्न आवाज़ों को हम 'बोलना' से सूचित नहीं करते. *यह दरवाज़ा बहुत आवाज़ करता है.* घड़ी टिक-टिक करती है (**बोलती है*), *चिड़िया चीं-चीं बोलती है~करती है.* लेकिन आवाज़ के प्रकार के उल्लेख के अभाव में *दूर कहीं साइरन बोला* जैसे प्रयोग संभव हैं, यद्यपि *दूर कहीं साइरन की आवाज़ सुनायी दी* अधिक अच्छा प्रयोग है.

भाषण देने/करने के अर्थ में 'बोलना' आता है. *कल मीटिंग में कौन-कौन बोलेंगे? आप कितनी देर बोलेंगे? किस विषय पर बोलेंगे? क्या आप कुछ बोलना चाहते हैं? आप चुप क्यों हैं, बोलिए.* बोलना सामान्य रूप से 'ने' के बिना आता है, लेकिन अगर इसके साथ कर्म आ जाए, तो 'ने' का प्रयोग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैकल्पिक है. मैंने सच/झूठ बोला. लेकिन 'हिंदी बोलना', 'तमिल बोलना' जैसे प्रयोग शायद मूलत: 'हिंदी में बोलना' के विकल्प हैं और यहाँ 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता. दोनों में प्रयोग का अंतर भी है. मैं हिंदी बोलता हूँ (*मैं हिंदी बोला) अर्थात, मैं हिंदी जानता हूँ. मैं कल मीटिंग में हिंदी में बोला (*हिंदी बोला).

3. 'कहना' सकर्मक रूप है, 'ने' युक्त है और कर्म के कथन की ओर संकेत करता है. राम ने कहा कि···. आप ने अभी क्या कहा? मैं कुछ कहना चाहता हूँ···.

4. *तुम अपना नाम कहो असंभव प्रयोग है. मुझे सारी बात बोलो अमानक तथा प्रादेशिक प्रयोग है. ऐसे प्रयोगों के अलावा कई ऐसे प्रयोग मिलते हैं, जहाँ तीनों शब्द आते हैं, जिनके अर्थ को संदर्भ से ही समझ सकते हैं. राम ने कहा··· में पुन: कथन है, राम ने बताया··· में बतायी गयी बात या सूचना की ओर संकेत है. मैंने मीटिंग में कहा/बताया, मैं मीटिंग में बोला तीनों वाक्यों को ऊपर के संदर्भों के अनुसार अलग कर सकते हैं.

सच बोलो में 'सच' संज्ञा है, सच~सच में कहो, सच-सच बताओ में यह क्रिया-विशेषण का स्थान लेता है (*मैंने एक सच कहा, *उसने एक सच बताया).

आप तीनों शब्दों में प्रयोगगत अंतर की सूक्ष्मता को प्रयोग में ही देख सकते हैं, अधिक स्पष्ट करना कठिन कार्य है. लेकिन ऊपर के सामान्य संदर्भों को ध्यान में रखें, तो वाक्यों को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं–बाहर किसी के बोलने की आवाज़ सुनायी पड़ी (*कहने/बताने). मैंने पूछा तो उसने कुछ कहने/बताने/बोलने से इनकार किया. मैं अभी क्या कह/बोल/बता रहा था? जब वह बोलता है··· (*कहता/बताता). कहिए, क्या हाल हैं (*बोलिए/बताइए). बोलो/बताओ, वह किताब कहाँ गयी? (*कहो). रुको, अभी बताता हूँ (*कहता/बोलता) कसम से कहता हूँ, मैंने चोरी नहीं की (*बोलता, ?बताता)

5. 'बोलना' व्यापार मात्र सूचित करता है, उसमें श्रोता का होना ज़रूरी नहीं. यों कह सकते हैं कि इसके साथ वक्ता का उल्लेख नहीं होता. 'कहना' में श्रोता का उल्लेख 'से' से होता है. मैं राम को/से बोला प्रादेशिक, अमानक प्रयोग है. राम ने गणेश से कुछ कहा. गणेश ने रमेश से कुछ कहा. आप मैनेजर से कहिए. 'बताना' द्विकर्मक वाक्यों की तरह है, क्योंकि बात सूचना की तरह श्रोता को दी जाती है–मैंने सब को बताया कि···. क्या बात है? मुझे बताइए. 'राम से कहना', 'राम को बताना' के अंतर पर ध्यान दीजिए.

5.1. कई अहिंदी भाषी ऊपर के 'कहना/बताना' के अर्थ में 'बोलना' का प्रयोग करते हैं, जो अमानक है. *मैनेजर को बोलो. *साहब को बोल दो कि मैं आया था (साहब को बता दो~साहब से कह दो···). *मैं मम्मी को बोलता हूँ (मैं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मम्मी को बताता हूँ). इन वाक्यों में श्रोता का उल्लेख तथा संदर्भ 'बोलना' के प्रयोग को अमानक बनाता है, लेकिन दिल्ली, बंबई, हैदराबाद सब जगह 'बोलना' लगभग 'कहना' तथा 'बताना' को स्थानापन्न करते हुए अधिक प्रचलन में आया है और अभी भी आ रहा है.

काफ़ी 1. यह शब्द 'पर्याप्त' के अर्थ प्रयुक्त विशेषण है. *इतने रुपये काफ़ी हैं. हमारे लिए यह मकान काफ़ी है.*

2. इधर 'काफ़ी' का प्रयोग 'बहुत' के अर्थ में प्रबलक के तौर पर हो रहा है. *वह कार्यक्रम काफ़ी अच्छा था.* *यह गाड़ी काफ़ी तेज़ जाती है.*

3. 'कई', 'अधिक', 'बहुत' के अर्थ में 'काफ़ी' का विशेषण में प्रयोग त्याज्य है (**वहाँ काफ़ी लोग थे, *मैंने काफ़ी मिठाइयाँ खा लीं*), क्योंकि एक ओर इसके लिए 'बहुत' शब्द है, दूसरी ओर पर्याप्त के अर्थ से अंतर करना कठिन हो जाता है.

4. 'अपर्याप्त' के अर्थ में *नाकाफ़ी* शब्द है.

कारक व्याकरण की परंपरा के दो सिद्धांत भाषाओं के व्याकरण के लेखन में मान्य हो चुके हैं–ये हैं भाषा के शब्दों के संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्द वर्ग मानना; विकारी शब्दों के रूप विकार को दिखाने के लिए कारकों की कल्पना. शब्दों के रूप परिवर्तन तथा प्रयोगगत विशेषताओं को जानने की दृष्टि से ये व्यवस्थाएँ उपयोगी हैं, लेकिन ये सार्वभौम सिद्धांत नहीं, जिनका सभी भाषाओं में इसी रूप में प्रयोग किया जाए. हिंदी के व्याकरणों की कमी यह है कि उनमें भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखे बिना आठ कारक मान लिये गये हैं. पाल राबर्ट्स ने (1954) भारोपीय परिवार की भाषाओं में कारक के स्थान का अच्छा विश्लेषण किया है. उनके अनुसार संस्कृत में आठ कारक हैं, लेकिन रूप और अर्थ का सीधा संबंध नहीं है. ये कारक हैं–कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन. लेकिन कारकों के साथ हम जो अर्थ जोड़ते हैं, उनसे भिन्न प्रयोग भी मिलते हैं. ग्रीक में केवल पाँच कारक हैं (करण, अपादान, अधिकरण नहीं हैं), लैटिन में छह कारक हैं (करण, अधिकरण नहीं), आधुनिक जर्मन में चार (करण, अपादान, अधिकरण, संबोधन नहीं) और रूसी में छह हैं (कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, संबंध तथा एक नया कारक 'परसर्गीय' हैं).

1. अर्थ की दृष्टि से कारकों में भेदक तत्त्व ढूँढने तथा उन्हें अलग वर्गों में रखने की बात हिंदी में कठिन हो जाती है. हिंदी में कर्म तथा अपादान दोनों का रूप एक ही है (को). *मैंने राम को मारा.* *मैंने राम को रुपये दिये.* *राम को आम पसंद है.* भाषावैज्ञानिक दूसरे वाक्य में 'राम को' को गौण या अप्रत्यक्ष कर्म मानते हैं. तीसरे वाक्य का विश्लेषण जो भी हो, 'राम को' को संप्रदान नहीं कहा जा सकता. ऐसे ही वाक्यों के संदर्भ में अंग्रेज़ी के कार्य तथा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संप्रदान के बारे में व्याख्या करते हुए एस्पर्सन (1922) कहते हैं कि यह बताना कठिन है कि कहाँ कर्म है और कहाँ संप्रदान. अर्थ के आधार पर कारक के बारे में हम जो धारणा बनाते हैं, उससे यह कठिनाई होती है. आगे के दो वाक्यों में अर्थ की दृष्टि से अंतर नहीं है, लेकिन ये दो अलग कारकों में रखे जाते हैं–*राम को बताओ. राम से कहो.*

1.1. ग्रीक, जर्मन, रूसी आदि में कारकों की भिन्न संख्याओं का कारण कारकीय संबंधों का अभाव नहीं. ये संबंध आप सभी भाषाओं में किसी न किसी रूप में देख सकते हैं. अगर किसी भाषा में संज्ञाओं में कोई परिवर्तन न हो और 'को, से' जैसे 20 रूप मिलें, तो परंपरा के अभाव में कोई आठ कारकों की कल्पना ही नहीं कर सकता. वहाँ वैयाकरण संज्ञा की बात करेंगे और 20 रूपों का उल्लेख करेंगे, जिनसे संज्ञा से वाक्यांश बनते हैं. इस तरह कारक का सिद्धांत रूप पर आधारित है; कारकों की संज्ञा का, भाषा की संरचना से अलग कोई आधार नहीं है. शायद इसी कारण आधुनिक वैयाकरण अंग्रेज़ी में दो ही कारकों की बात करते हैं–संज्ञा तथा संबंध. कुछ स्थान के आधार पर कर्म (क्रिया के बाद कर्म) को कारक मान सकते हैं और कुछ संप्रदान भी (क्रिया और कर्म के बीच संप्रदान) मानते हैं. यह लचर तर्क है, परंपरा को बनाये रखने का मोह है.

2. हिंदी में कारक का एक और अर्थ हो सकता है–वाक्यांश रचना में संज्ञादि शब्दों में रूप परिवर्तन. ये रूप परिवर्तन तीन हैं :

प्रत्यक्ष रूप या मूल रूप या शब्दकोशीय रूप	संज्ञा, सर्वनाम, क्रियार्थक संज्ञा जब बिना परसर्ग के आएँ–विशेषण भी यहाँ कारक के लिए अन्वित होते हैं.
तिर्यक रूप	ऊपर के शब्दों में जब परसर्ग लगें–विशेषण भी अन्वित होते हैं. क्रियाविशेषण शब्द (संज्ञादि से बने) भी तिर्यक रूप में आते हैं.
संबोधन रूप	संज्ञा शब्द–विशेषण भी अन्वित होते हैं.

ध्यान दें कि कुछ शब्द प्रकट रूप से तिर्यक नहीं होते, जैसे घर, घर को. लेकिन अन्विति से तिर्यक रूप देखे जा सकते हैं–*मेरा घर, मेरे घर में.* यहाँ हम शब्द के रूपों को वाक्यांश रचना से अलग करते हैं (संज्ञा कर्ता भी हो सकती है, कर्म भी) और साथ ही परंपरात्मक अर्थ में कारकों से भी अलग कर रहे हैं. इस आधार पर भाषावैज्ञानिक भाषा में नये अर्थ में तीन कारकों की बात करते हैं.

3. परंपरा से प्राप्त आठ कारकों का विश्लेषण करें. कर्ता तथा कर्म संज्ञा वाक्यांश हैं (संज्ञादि से बने). संबंध संज्ञा वाक्यांश है और पूरक के स्थान में आता है. संबंध कारक के बारे में कहा जाता है कि उसका क्रिया से संबंध नहीं है. यह

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बात पूरक वाक्यांश पर लागू नहीं होती. संबंध कारक पूरक (*यह किताब राम की है*) निश्चित रूप से क्रिया से जुड़ती है. संबंध विशेषण के तौर पर (*राम की किताब*) वाक्यांश के भीतर की रचना है. संबोधन अपने में एक वाक्य है.

शेष चारों कारक क्रियाविशेषण वाक्यांश हैं. करण प्रकार सूचित करता है, अपादान और अधिकरण दोनों से स्थानवाचक तथा समयवाचक क्रियाविशेषण सूचित होते हैं. संप्रदान प्राप्तिकर्ता का अर्थ देता है, जिसे कुछ विद्‌वान उपकर्म या गौण कर्म भी मानते हैं. कारकों से हम कुछ ही क्रियाविशेषण वाक्यांशों की रचना स्पष्ट कर पाते हैं.

4. उपर्युक्त चर्चा के संदर्भ में इस प्रकरण पर मैं अपने विचार प्रस्तुत करना चाहूँगा. परंपरा की दृष्टि से हमें कारक शब्दों की आवश्यकता होगी, लेकिन प्रारंभिक शैक्षिक व्याकरणों में इसका महत्त्व नहीं है. वहाँ कारक के सिद्‌धांत को कर्ता वाक्यांश, कर्म वाक्यांश आदि से स्पष्ट कर सकते हैं.

शब्दों के रूप परिवर्तन को 'कारक' से अभिहित करना भ्रामक हो सकता है. 'मूल रूप' तथा 'तिर्यक रूप' इसके लिए पर्याप्त होंगे. 'संबोधन कारक' एक शब्द के रूप में रख लिया जाए, तो भ्रम नहीं होगा. विकल्प में 'संबोधन रूप' भी चल सकता है.

कार्रवाई, कार्यवाही 1. इनमें पहला शब्द पहले से ही विद्‌यमान है, दूसरा अभी-अभी पारिभाषिक अर्थ में प्रचलन में आया है. दोनों क्रमश: action तथा proceedings के पर्याय हैं. *बताइए, आगे क्या कार्रवाई करें? सरकार की तरफ़ से चुनाव की कार्रवाइयाँ हो रही हैं. हम जानना चाहते हैं कि इस मामले में क्या कार्रवाई हो रही है.*

2. अतिसुधार की प्रवृत्ति के कारण कुछ लोग 'कार्रवाई' को 'कार्यवाही' लिखते हैं, जो त्याज्य है. इसका केवल ऊपर बताये अर्थ में प्रयोग होना चाहिए. *आप के पास पिछली बैठक की कार्यवाही की रिपोर्ट भेजी जा रही है.*

इस से बना विशेषण acting का अर्थ देता है. कार्यवाहक निदेशक निदेशक के स्थान पर तात्कालिक रूप से काम करने वाला व्यक्ति है. यहाँ कार्य को चलाने से तात्पर्य है और इसी अर्थ में 'कार्यवाही' भी है.

काल काल की चर्चा के लिए **क्रिया** तथा 'करना' से बनने वाले क्रिया रूपों की प्रविष्टियाँ देखिए.

किण्वन यह अंग्रेज़ी 'फ़र्मेन्टेशन' के लिए बनाया गया नया शब्द है. हिंदी में /ण/ के साथ अन्य व्यंजनों का योग उच्चारण की दृष्टि से हिंदी भाषियों के लिए कठिन होता है (देखें **ण**). इस कारण पहले से प्रचलित *अक्षुण्ण, विषण्ण* शब्दों का प्रयोग ही न सीमित किया जाए, बल्कि *किण्वन* जैसे नये शब्दों के निर्माण से बचा जाए, तो अच्छा होगा.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किया 1. यह कालरहित पूर्ण पक्ष की क्रिया है. कालरहित क्रिया से हमारा तात्पर्य है कि वक्ता के कथन या कथ्य के समय से इस क्रिया का काल नहीं जुड़ता. इसमें यह पता नहीं चलता कि वक्ता अपने समय-वोध के संदर्भ में अपने जीवन या घटना-क्रम में इसे कहाँ रखता है. उदाहरण देखिए—*एक राजा था. वह एक दिन घोड़े पर सवार हो कर जंगल में गया. वहाँ उसने एक हिरन को देखा. हिरन बहुत ही प्यारा था. राजा ने सोचा कि मैं इसे ज़िंदा पकड़ूँगा. वह घोड़े पर से उतरा और धीरे-धीरे हिरन के पास पहुँचा. लेकिन हिरन को गंध मिल गयी और वह भाग निकला.* इस प्रकरण में सभी क्रियाएँ कालरहित हैं ('था' को छोड़कर) और यहाँ हम बीती कई घटनाओं को क्रम से देखते हैं. 'मिल गयी' का प्रयोग पूर्वज्ञान के आधार पर हुआ है, क्योंकि हमें (श्रोताओं को) राजा की उपस्थिति की जानकारी है (देखें **रंजक क्रिया**). कहानी को आगे बढ़ाइए—*राजा सोचने लगा, 'मुझे अच्छा अवसर मिला था, लेकिन···'. वह उदास घर लौटा.* 'मिला था' भूतकाल में है, क्योंकि राजा के कथन के समय से पहले अवसर मिला (पूर्ण पक्ष), लेकिन कथन के समय वह अवसर नहीं था (भूतकाल).

2. पूर्ण पक्ष की क्रिया 'किया' की कालरहितता को निम्नलिखित उदाहरणों से देख सकते हैं.

(क) सेठ : *रामू, इधर आओ.*
रामू : *आया, हुज़ूर.*

(ख) गोपाल : *रमेश, तुम बैठो, मैं अभी आया.*

इन उदाहरणों के संदर्भ में बताया जाता है कि भूतकाल की क्रियाएँ भविष्य में प्रयोग में आती हैं. 'किया' को 'काल' मान लेने के कारण ही यह भ्रम होता है. साथ ही हम मान सकते हैं कि 'आया है' जितना वर्तमान में सत्य है, उतना ही आगे आने वाले समय में भी, वह सत्य तब तक है, जब तक स्थिति बनी रहे या विचार मान्य रहे. इस अर्थ में भूतकालिक रूप 'किया था' कभी वर्तमान या बाद के समय के लिए प्रयुक्त नहीं होगा.

वक्ता यहाँ अपनी तत्परता दिखाने के लिए पूर्ण पक्ष का प्रयोग करता है. मानो वह कह रहा हो 'समझो मैं आया'. इस बात को निम्नलिखित उदाहरणों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं—*देर क्यों होगी साहब. समझो, बस हुआ. देर नहीं होगी. यह गया, यह आया.*

3. क्रिया प्रकरण में हमने 'अगर···आया' के रूपों की चर्चा की थी. यहाँ व्यक्ति पहले क्रिया व्यापार की पूर्णता को मान लेता है और उसके आधार पर अन्य व्यापारों से उसका संबंध जोड़ता है :

भगवान, यह नौकरी मिल गयी, तो रु० 101 चढ़ाऊँगा.
तुमने मेरी बात नहीं मानी, तो बहुत पछताओगे.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्या कहा, नहीं आओगे ? नहीं आये, तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा.

इन प्रसंगों में मिलने, मानने तथा आने का व्यापार अतीत में नहीं हुआ. ये व्यापार तो भविष्य में ही घटित होंगे. व्यक्ति इन व्यापारों की पूर्णता की कल्पना कर लेता है और उसे अपने कथन का आधार बना लेता है. इस संदर्भ में यह प्रयोग *अगर···आएगा/आए* से भिन्न है. पैसा चढ़ाने का व्यापार नौकरी मिलने के व्यापार की पूर्णता पर आधारित है. पहला व्यापार अपूर्ण हो, तो दूसरा व्यापार नहीं होगा.

4. काल या पक्ष की चर्चा करते समय वैयाकरणों ने केवल अकेले उपवाक्य वाली क्रियाओं को ही देखा, लेकिन किसी ने वाक्य के भीतर वाक्यांशों में अंतर्निहित (embedded) क्रिया रूपों का विश्लेषण नहीं किया. यहाँ ऐसे वाक्यांशों के उदाहरण हैं[1] :

(ग) *वह बिना पूछे चला गया/जाता है/जाएगा.*

(घ) *वह बिस्तर पर लेटे कुछ पढ़ रहा था.*

(च) *लगे हाथ यह भी काम पूरा कर लूँ.*

(छ) *मरे को क्यों मारा जाए ?*

इनमें (ग) को छोड़ शेष तीनों क्रिया रूप कृदंत विशेषण शब्द हैं, प्रथम तीन क्रियाविशेषण वाक्यांश हैं, चौथा परसर्ग युक्त है. अतः चारों तिर्यक रूप में आये हैं. अंतर्निहित क्रिया रूप पूर्ण पक्ष में हैं, क्योंकि उस क्रिया के पूर्ण होने के संदर्भ में ही पूरे वाक्य का अर्थ है. प्रथम वाक्य में आप देख सकते हैं कि (न) पूछने का व्यापार दूसरे व्यापार से पहले समाप्त (पूर्ण) होता है, चाहे आगे की क्रिया का काल जो भी हो. पहले को काल में मानें, तो वाक्य में असंगति आ जाती है, क्योंकि हम कहीं पूर्व क्रिया और बाद की क्रिया को भिन्न कालों या पक्षों में नहीं देख सकते—**वह सवेरे आया है और काफ़ी पीता था. *वह कल आया था और काफ़ी पीता है.* लेकिन 'बिना पूछे' तथा अन्य रूप सभी कालों की क्रियाओं के साथ आते हैं, जैसे (घ) का विश्लेषण निम्न प्रकार से ही संभव है :

लेटना – पूर्ण ··· पढ़ता है/पढ़ा/पढ़ेगा/पढ़े/पढ़ो

कृदंत वाले वाक्य को योजक से जुड़े दो अलग वाक्यों में बाँटें, तो ये वाक्य बनेंगे :

लेटा था	पढ़ रहा था
लेटा है	पढ़ रहा है
लेटा होगा	पढ़ेगा

[1]यहाँ पूर्ण पक्ष के प्रयोग का विश्लेषण है. समान परिस्थितियों में 'पूछ कर आना', 'जाने के बाद' आदि में पूर्ण पक्ष की क्रिया क्यों नहीं आती है, इसका उत्तर नहीं दिया गया है. जिज्ञासु पाठकों के लिए सूचना है कि गलत प्रयोग 'गये बाद' इस प्रश्न का आंशिक उत्तर हो सकता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेटा हो पढ़े

लेटे रहो (लेटो) पढ़ो

इन विशेषताओं को अकेले पूर्ण पक्ष की क्रिया 'लेटे' अपने में समेट लेती है, क्योंकि इसमें काल नहीं है, सिर्फ़ पूर्णता की ध्वनि है.

5. ऊपर के खंड 1 में एक कहानी है, जिसमें कालरहित पूर्ण पक्ष की क्रिया का प्रयोग है. कहानियों में, किसी घटना के वर्णन में, इतिहास के प्रसंग में तथा ऐसे वर्णनात्मक प्रसंगों में प्रायः 'किया' का प्रयोग होता है. निम्नलिखित प्रसंगों में भी इस क्रिया का प्रयोग होता है, इन प्रसंगों में बहुधा संदर्भ से वक्ता और श्रोता के सामने काल का संदर्भ स्पष्ट हो जाता है और फिर उसका उल्लेख अनावश्यक हो जाता है :

(अ) प्रश्नों में हम प्रायः ऐसी बातों के बारे में पूछते हैं, जो विवरणात्मक होती हैं—*तुम किस साल पैदा हुए? हमें कब स्वतंत्रता मिली?* कभी कालयुक्त कथनों के उपरांत कालरहित क्रिया का प्रयोग करते हैं, लेकिन प्रसंग से हट कर प्रश्न करें, तो काल का उल्लेख अनिवार्य होगा. नीचे एक व्यक्ति से तीनों प्रश्नों का क्रम देखिए :

*गोपाल आया है? कब आया? (*कब आया है) कहाँ टिका है?*

आगे एक वक्तव्य तथा क्रम से तीन प्रतिवक्तव्यों को देखिए :

मेरे पहुँचने से पहले ही वे लोग चले गये थे.

क्यों चले गये? (?क्यों चले गये थे?)

*क्या कह कर गये? (*क्या कह कर चले गये थे?)*

फिर तुम्हारे भाषण तक वापस आ गये थे? (?आ गये?)

कालरहित पूर्ण पक्ष के वाक्यों के प्रतिप्रश्नों में काल का आना कहीं नहीं मिलता :

उसने मुझे गाली दी.

*क्यों/कब/कहाँ पर गाली दी? (*दी थी)*

(आ) जिन मिश्र वाक्यों में पहले उपवाक्य में भूतकाल रहता है, वहाँ दूसरे उपवाक्य में सिर्फ़ कालरहित उपवाक्य आना भी संभव है. अगर हम दूसरे उपवाक्य को स्वतंत्र रूप से बोलते, तो शायद काल का उल्लेख अनिवार्य होता :

मैं दिल्ली से लौटते आगरा में उतरा था.

जब मैं दिल्ली से लौट रहा था, तो आगरा में उतरा.

घर लौटते रास्ते में मुझे राम मिला था.

मैं घर लौट रहा था, तो रास्ते में राम मिला.

उस दिन वह काम करते-करते बेहोश हो गया था.

उस दिन वह काम कर रहा था, तो अचानक बेहोश हो गया (?गया था).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(इ) पूर्ण पक्ष में 'नहीं' के आने पर प्राय: 'है' अनावश्यक हो जाता है. जो हुआ ही नहीं, उसकी स्थिति या सत्यता का सवाल कहाँ है?

आपने कोई कपड़ा दिया है? हाँ, दिया है (*दिया)
नहीं, कोई नहीं दिया~दिया है

क्या गोली लगने से कोई मर गया है? हाँ, दो मर गये हैं
नहीं, कोई नहीं मरा (?मरा है)

सब लोग आ गये हैं? सिर्फ़ गोपाल नहीं आया~आया है

तुलना करें :

*सब लोग आ गये हैं. गोपाल भी आ गया है (*आ गया)*

6. काल की आवश्यकता वक्ता के समय तथा व्यापार के संदर्भ में होती है. लेकिन अगर हम उक्ति को सिर्फ़ सूचना या विवरण में प्रस्तुत करें, तो काल-रहित क्रिया का भी प्रयोग कर सकते हैं.

(क) रमेश कल शाम को पाँच बजे मेरे घर आया था.
रमेश कल शाम को पाँच बजे मेरे घर आया.

(ख) वे लोग कल शाम को आये थे और एक होटल में ठहरे हैं.
वे लोग कल शाम को आये और एक होटल में ठहरे.

(क) के दोनों वाक्यों के लिए हम प्रश्न कर सकते हैं—वह तुम्हारे घर कितने बजे *आया?* (ख) के वाक्यों के लिए प्रश्न बनेंगे—*वे लोग कब आये और कहाँ ठहरे हैं? वे लोग कब आये और कहाँ ठहरे?*

किया (है), कर लिया (है) आगे के चार वाक्यों को देखिए :

मैंने 1950 में ताजमहल देखा.

तुम ताजमहल देखने के लिए आगरा गये थे. तुमने ताजमहल देख लिया?

बाहर देखो. कितने लोग आये हैं?

हमारे दफ़्तर के सभी लोग हड़ताल में शामिल हो गये हैं.

इनमें आयी चारों क्रियाओं को हम निम्न प्रकार से विश्लेषित कर सकते हैं.

किया	व्यापार की पूर्णता
कर लिया	व्यापार की पूर्णता, व्यापार के बारे में श्रोता का पूर्वज्ञान
किया है	व्यापार की पूर्णता, वर्तमान में सत्य
कर लिया है	व्यापार की पूर्णता, पूर्वज्ञान और वर्तमान में सत्य

'किया' या 'लिया' का कृदंत रूप व्यापार की पूर्णता दर्शाता है, रंजक क्रिया 'ले' से श्रोता के पूर्वज्ञान वाली बात स्पष्ट होती है और काल सूचक 'है' व्यापार के वर्तमान में सत्य होने या व्यापार की स्थिति बने रहने का अर्थ प्रकट करता है. इन बातों को आप **क्रिया** तथा **रंजक क्रिया** के प्रकरणों में देख सकते हैं.

किया (है/था) 1. इस प्रविष्टि के शीर्षक में हमने 'किया' के रूपों को लिया है,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फिर भी यहाँ मुख्य रूप से 'आया' के प्रयोग की चर्चा करेंगे. 'किया' मात्र प्रति-निधि शब्द है.

हमारे विवेचन के अनुसार 'आया' कालरहित क्रिया रूप है, काल का द्योतन 'है', 'था' से होता है. इसे निम्नलिखित उदाहरणों में देख सकते हैं :

राम आया	घटना वर्तमान से पहले किसी समय हुई, व्यापार समाप्त या पूर्ण है, कथन के समय से जुड़ा नहीं है.
राम आया है	व्यापार वर्तमान से पहले पूर्ण हुआ, व्यापार का सत्य वर्तमान में भी विद्यमान है.
राम आया था	व्यापार पूर्ण हुआ, कथन के समय उस व्यापार का सत्य वर्तमान में नहीं है.

बहुत संक्षेप में समझने-समझाने की दृष्टि से 'आया है' को 'आया' और 'है' मान सकते हैं; 'आया था' को 'आया' और 'था'. निम्नलिखित आरेख देखिए :

वर्तमान/कथन
का समय

आया ______________________________

आने का व्यापार किसी समय-बिंदु पर हुआ ← △

व्यक्ति का आया
होना सत्य है

आया है ______________________________

आने का व्यापार किसी समय-बिंदु पर हुआ ← △

(10 बजे)
आया था

○ → व्यक्ति के होने की सूचना नहीं है
____

10 बजे △
आने का समय-बिंदु

2. ऊपर के आरेख से आप देख सकते हैं कि 'आया है' और 'आया था' में गुणात्मक अंतर है, कालक्रम का नहीं. कुछ वैयाकरण इन्हें क्रमशः निकट भूत-काल और दूरवर्ती भूतकाल मानते हैं, जो गलत है. दोनों क्रिया रूप कथन के काल से किसी रूप में जुड़ते हैं—व्यापार की सत्यता के संदर्भ में. यह प्रासंगिक है कि 'आया था' में समय-बिंदु सूचित होता है, लेकिन यह 'आया था' का निहित गुण है और अनिश्चित भी रह सकता है, जैसे—*वह कुछ साल पहले यहाँ आया था.*

समय-बिंदु का उल्लेख 'आया' में भी कर सकते हैं—*राम 15 अगस्त 1978 को मेरे घर आया.*

समय-बिंदु का उल्लेख 'आया है' के साथ नहीं होता, लेकिन व्यापार की सत्यता

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की अवधि समय-बिंदु के उल्लेख के साथ कर सकते हैं.

*राम *10 मिनट पहले आया है.*

राम दो दिन से आया है. (देखिए **कृदंत-विशेषण**)

3. व्यापार के सत्य को हम वर्तमान समय में उसके प्रभाव के संदर्भ में भी देखते हैं. *वेदों में कहा गया है कि आत्मा अमर है.* कथन का सत्य अभी विद्यमान है. *वेदों में कहा गया था कि आत्मा अमर है.* वक्ता उस उक्ति के सत्य को अब नहीं मानना चाहता; आगे वह इसका खुद खंडन करेगा या अन्य किसी विरोधी मत का उल्लेख करेगा. *कोपरनिकस ने कहा है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है.* कथन का सत्य अभी भी विद्यमान है. *कोपरनिकस ने कहा था कि पृथ्वी सूरज के चारों ओर घूमती है.* यद्यपि हम जानते हैं कि कथन का सत्य विद्यमान है, फिर भी 'था' का प्रयोग उक्त मत में कोई संशोधन या परिवर्तन करने के उद्देश्य से किया गया है. *कोपरनिकस ने 16वीं सदी में कहा था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है.* यहाँ वर्तमान में सत्य की सूचना नहीं है, बल्कि भूतकाल में व्यापार समाप्त होने का उल्लेख है. लेकिन जब तक आगे उल्लेख न किया जाए, हम वर्तमान सत्य के बारे में नहीं जान सकते, न ही हम समय-बिंदु और सत्य की सूचना एक साथ दे सकते हैं. *कोपरनिकस ने 16वीं सदी में कहा है . . . .*

मैं जिन अहिंदी भाषी या विदेशी छात्रों को पढ़ाता था, सभी के मन में यह गलत धारणा बैठी थी कि 'किया है' का समय वर्तमान के निकट है और 'किया था' कुछ दूर. मैं उन्हें दो वाक्य दे कर समझाता था कि यह गलत है. ये वाक्य हैं—*गोपाल एक सेकेंड पहले यहाँ आया था. कालिदास ने कई नाटक लिखे हैं.* कालिदास के नाटक भौतिक रूप में हमारे सामने विद्यमान हैं. अगर न होते तो हम इस क्रिया रूप का प्रयोग नहीं कर सकते थे. कालिदास की कृतियाँ पूर्ण रूप से विलुप्त होने की सूचना या जानकारी हो, तो हम कहेंगे *कालिदास ने कई नाटक लिखे थे.* एकाध मिलते हों, तो कहेंगे *कालिदास ने कई नाटक लिखे थे, जिनमें एक उपलब्ध है* (*लिखे हैं जिनमें . . .). अगर उनके किसी नाटक के होने का भी अनुमान हो, तो वाक्य बनेगा—*कहा जाता है/मालूम हुआ है कि/संभवतः/ अनुमान किया जाता है कि कालिदास ने कई नाटक लिखे हैं.* लेकिन आगे के वाक्यों में पहला संभव नहीं है, और दूसरा ठीक है—**कालिदास ने कई संस्कृत नाटक लिखे हैं और एक भी उपलब्ध नहीं है. कहा जाता है कि कालिदास ने कई नाटक लिखे हैं, लेकिन उनमें एक भी उपलब्ध नहीं है.*

4. 'आया है' से हम दो भिन्न प्रकार की स्थितियाँ देखते हैं. दोनों कथन के समय सत्य हैं :

क्या गोपाल यहाँ आया है? हाँ. *कई बार आया है* (अभी होने की सूचना नहीं)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाँ, *आया है* (अर्थात यहाँ है; पहले कभी आने की सूचना नहीं)

पहले अर्थ में आप दिल्ली में रहते हुए कह सकते हैं *मैं बंबई गया हूँ.* 'मैं' के संदर्भ में आप दूसरे अर्थ में कोई वाक्य नहीं दे सकते. 'कई बार आया है' वास्तव में *आया था+आया था+आया था* ··· *+आया है/था* का सम्मिलित रूप है. ऐसे अलग करने पर व्यापारों के क्रम में अंतिम क्रिया 'है' से युक्त हो सकती है.

5. कुछ क्रियाओं में विशेष अवसरों के ही संदर्भ में हम 'किया है' का प्रयोग करते हैं–ऐसे व्यापार जो विशिष्ट, स्मरणीय, कामित या/तथा उल्लेखनीय हों और जिनका वर्तमान में प्रभावी होना स्पष्ट हो. *मैंने ह्वेल देखी है. हमने बंबई शहर देखा है. क्या तुमने बियर पी है?* इसी कारण ! *मैंने खाना खाया है. ?क्या तुमने पानी पिया है?* आदि वाक्य असुंदर प्रयोग कहलाएँगे. खाना तो व्यक्ति रोज़ ही खाता है, इसमें व्यापार का वर्तमान में सत्य होना महत्त्व नहीं रखता. ये ही वाक्य विशेषीकृत हो कर सही बन जाएँगे–*मैंने ताजमहल होटल में खाना खाया है. मैंने गंगाजल पिया है.*

आगे इन असुंदर प्रयोगों के संदर्भ में दूसरे सही प्रयोग हैं, जो पूर्वानुमानित व्यापारों का अर्थ स्पष्ट करते हैं–*मैंने खाना खा लिया है. क्या तुमने पानी पी लिया?* (?मैंने ताजमहल होटल में खाना खा लिया है, ?मैंने गंगाजल पी लिया है). इस संबंध में अधिक चर्चा के लिए **किया (है), कर लिया (है)** देखिए.

विशेष अवसरों की बात गत्यर्थक तथा स्थितिसूचक वाक्यों पर लागू नहीं होती–वहाँ स्थिति में परिवर्तन ही वर्तमान सत्य का आधार है.

कुछेक देखें **हरेक.**

कुदरत इस शब्द को कामता प्रसाद गुरु ने कुद्रत लिखा है. शायद उनके ज़माने में यह रूप प्रचलित रहा हो, लेकिन अब नहीं है.

कृदंत–क्रियाविशेषण यहाँ हम चार कृदंत क्रियाविशेषणों की चर्चा करेंगे–करते (हुए), किये, करते ही, करते-करते. ये वाक्यांश वाक्य की मूल क्रिया में जुड़ते हैं.

1. करते-करते : यह उस व्यापार की सूचना देता है, जिसका मूल क्रिया वाक्यांश परिणाम है. *मैं काम करते-करते थक गया. लिखते-लिखते मेरा हाथ दर्द करने लगा.* कुछ वाक्यों में व्यापार तथा परिणाम का प्रत्यक्ष संबंध नहीं है. *वह भागते-भागते मेरे पास पहुँचा. पानी नल से ऊपर चढ़ते-चढ़ते गरम हो जाता है.*

यह कई जगह सह-व्यापार की सूचना देता है–*उसने हँसते-हँसते कहा. वह रोते-रोते बोली. बाहर निकलते-निकलते उसने देखा था* ···. बाद की क्रिया के संदर्भ में पहली क्रिया के वास्तविक न होने की बात दिखायी पड़ती है. *वह मरते-मरते बच गया* (अर्थात, मरा नहीं) *मैं जाते-जाते रह गया* (अर्थात, नहीं गया).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुछ जगह पूर्वापर क्रम वाली क्रियाएँ इस रचना में मिलती हैं–*वह चलते-चलते अचानक गिर पड़ा. घड़ी चलते-चलते अचानक बंद हो गयी. वह दौड़ते-दौड़ते एकदम रुक गया.*

गहराई से देखें तो अर्थ की दृष्टि से और कई भेद मिल सकते हैं.

2. करते ही : जब दो व्यापारों में समय की दृष्टि से निकटता हो (*बारह बजते ही तेज़ हवा चल पड़ी*) या दोनों में कारण-कार्य संबंध हो (*उसे देखते ही सब हँस पड़े*) तो यह क्रियांश आता है. 'करते-करते' तथा मूल क्रिया का कर्ता एक ही होता है. लेकिन 'करते ही' के साथ भिन्न कर्ता भी होते हैं. भिन्न कर्ता हों, तो 'करते ही' का कर्ता 'के' के साथ आता है. अचेतन कर्ता में प्रायः 'के' नहीं लगता. *घर पहुँचते ही मैंने अपना काम शुरू कर दिया. मेरे अंदर जाते ही सब लोग शांत हो गये. गाड़ी स्टेशन के अंदर आते ही सब लोग दौड़ पड़े. दूसरा मकान मिलते ही मैं यह मकान ख़ाली कर दूँगा. बारिश बंद होते ही हम चले जाएँगे. कल तुम्हारे जाते ही तुम्हारे पिता जी का टेलीफ़ोन आया था.*

3. करते हुए : यह सह-व्यापार सूचित करता है. यह प्रयोग 'करते-करते' से अधिक भिन्न नहीं है. *उसने हँसते हुए कहा ⋯. कल शाम को घर जाते मैंने तुमसे कहा था कि ⋯. चाय पीते हुए उसने एक बार ऊपर देखा. वह पान चबाता हुआ मेरे पास आया.*

समय सूचित करने वाले संदर्भों में 'हुए' का प्रायः लोप होता है. *वह सोते-जागते हर वक्त पैसे जुटाने की धुन में रहता है. मुझे आज शाम को घर लौटते देर हो जाएगी. घर जाते~जाते समय मुझसे मिल लेना.* अंतिम वाक्य में इसे समय सूचक विशेषण भी मान सकते हैं.

कई वाक्यों में कारण-कार्य संबंध भी सूचित होता है. *ऐसी बातें करते तुम्हें शर्म नहीं आती.* विशेषण की तरह प्रयोग के लिए **कृदंत विशेषण** देखिए.

4. दौड़े-दौड़े : कार्य की रीति बताने वाला यह क्रिया रूप अब अधिकतर विशेषण की तरह लिंग-वचन के लिए अन्वित होने लगा है. *वह लड़की दौड़े-दौड़े (~दौड़ी-दौड़ी) आयी.* यह बात 'भागते-भागते', 'भागे' इन दोनों पर भी लागू होती है. *वह लड़की भागे (~भागी) चली जा रही थी. वह भागते-भागते (~भागता-भागता) मेरे पास आया.* उल्लेखनीय है कि कर्ता में 'ने' हो, तो क्रिया-विशेषण अविकृत रहते हैं. *उसने हाँफते-हाँफते कहा (*हाँफता-हाँफता).*

कृदंत–निरंतरता बोधक हिंदी में व्यापार की निरंतरता सूचित करने वाले चार समस्त क्रिया वाक्यांश हैं, जो कृदंतों से बनते हैं–*करता रहना, करता जाना/आना, करता चलना, किया करना.* यहाँ इन चारों का क्रमशः विवेचन करेंगे.

1. *करता रहना* में 'रहना' का प्रकार्य वही है, जो *कर रहा है* में *रहा* का है (देखें **रहा**). *कर रहा है* किसी एक समय-बिंदु में कार्य की सूचना देता है, *करता*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रहता है किसी कालावधि में कार्य व्यापार सूचित करता है.

वह इस समय कुछ लिख रहा है.

वह दिन भर कुछ लिखता रहता है.

वह अभी कुछ बोल रहा है.

वह हर वक्त कुछ न कुछ बोलता रहता है.

ध्यान दें कि करता है किसी काल की सीमित अवधि से वद्ध नहीं है.

1.1. अपूर्ण कृदंतों के अतिरिक्त पूर्ण कृदंत रूप भी 'रहना' के साथ निरंतरता सूचित करते हैं. 'करता रह' में 'पड़ा रह' भी सम्मिलित मान लें. दोनों पक्षों के कृदंत विशेषण की तरह कर्ता के साथ अन्वित होते हैं. वह हमेशा गाती रहती है. वे लोग हमेशा लड़ते रहते हैं. वह लड़का हर वक्त बिस्तर पर पड़ा रहता है. मेरी अटैची हमेशा यहीं रखी रहती थी. तुम्हें हर वक्त इस तरह बिस्तर पर पड़ा रहना नहीं चाहिए.

1.2. करता रहता है की निरंतरता हमेशा, हर वक्त, दिन भर आदि समयवाचक क्रियाविशेषणों से सूचित होती है. इस क्रिया रूप का प्रयोग काल, पक्ष तथा अर्थ के सभी संदर्भों में होता है. करता रहता है, करता रहा, करता रहेगा, करता रहे, करते रहो कुछ उदाहरण हैं. लेकिन वृत्तिसूचक क्रियाओं के साथ यह नहीं आता. ?मैं करता रह सकता हूँ. *हम बोलते रहने लगे. *मुझसे करता नहीं रहा जाता.

1.3. यहाँ पूर्ण पक्ष का कृदंत प्रायः अकर्मक रूपों में ही आता है (पड़ा रह, लेटा रह, रखा (हुआ) रह, सोया रह, बैठा रह, *खाये रहो, *देखो रहो, *काटे रहो). लेकिन रखा तथा पकड़ा के साथ प्रयोग की विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं :

तुम यह किताब अपने पास रखे रहो.

वह किताब कई दिन तक मेरे पास रखी रही.

तुम थोड़ी देर रस्सी पकड़े रहो.

*रस्सी थोड़ी देर तक पकड़ी रही.

2. करता जाना का प्रयोग व्यापार में समय की गति के साथ गुणात्मक परिवर्तन (विकास या ह्रास) सूचित करता है. इसे नीचे के आरेख से स्पष्ट कर सकते हैं :

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
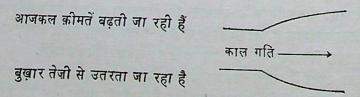
करते रहो तथा करते जाओ के अंतर को हम निम्नलिखित वाक्यों में देख सकते हैं:

मैं जब तक न आ जाऊँ, तुम लिखते रहो (*लिखते जाओ)

एक-दो कहानियाँ वापस आ गयीं तो क्या? हिम्मत न हारो. लिखते जाओ.

(यहाँ काल के साथ लिखने में गुणात्मक वृद्धि भी सूचित है)

तुम थोड़ी देर खेल देखते रहो (*देखते जाओ)

आगे क्या होगा, देखते जाओ (*देखते रहो–आगे की घटनाओं के क्रम के साथ गुणात्मक अंतर भी सूचित है)

2.1. लोगों ने रोका नहीं, हम बराबर बोलते गये. तूफ़ान के साथ नदी में पानी बढ़ता गया. इन वाक्यों में बराबर, तूफ़ान के साथ आदि से काल क्रम तथा गुणात्मक अंतर की पृष्ठभूमि सूचित होती है. यह करता रहना की तरह वृत्ति-सूचक क्रियाओं के साथ या वाच्य में नहीं आता, शेष काल, पक्ष, अर्थ के संदर्भों में आता है. करता गया, करता जा रहा है, करता जाएगा, करते जाओ, करते जाएँ, *करते जाने लगा, *करते जा चुका है, *करते जा सकते हैं.

2.2. पूर्ण कृदंत (किये जाओ, बोले जाओ) अर्थ की दृष्टि से अपूर्ण कृदंत (करते जाओ, बोलते जाओ) से भिन्न नहीं हैं. अर्थात दोनों समानार्थी हैं. लेकिन पूर्ण कृदंत का प्रयोग सीमित है और खाना, करना, कहना, पीना, देखना, बोलना, पढ़ना आदि कुछ ही क्रियाओं के साथ 'जाना' का प्रयोग आता है. यह प्रयोग भी केवल अ-भूतकाल (किये जाते/जा रहे हैं) तथा विधि (किये जाओ) तक ही सीमित है.

2.2.1. दोनों पक्षों की अन्विति में अंतर है. करता जाना में कृदंत की अन्विति कर्ता के साथ है, जबकि किये जाना में कृदंत अविकारी रहता है. लेकिन अर्थ और अन्विति दोनों दृष्टियों से मरे जाना विशिष्ट प्रयोग है. अरे, यार क्यों मरे जा रहे हो में मरे जाना शैलीगत प्रयोग है और मरते जा रहे हो से स्थानापन्न नहीं होता. यहाँ पर काम के लिए अधिक और अधिक मरना (अर्थात डरना) का तात्पर्य है. यहाँ मरी जा रही है अन्विति की दृष्टि से वैकल्पिक प्रयोग है. 'किये जाना, बोले जाना, कहे जाना' अविकारी रहते हैं.

2.3. किताब लिये जाओ वास्तव में ले कर आओ **(पूर्वकालिक कृदंत)** का स्थानापन्न रूप है, किये जाओ की तरह गुणात्मक अंतर वाली निरंतरताबोधक क्रिया नहीं. इसी तरह लेते जाओ∼लिये जाओ पूर्वकालिक कृदंत रूप हैं. लेते जाओ भी ले कर जाओ का पर्याय है.

3. कहता जा रहा हूँ में गुणात्मक दृष्टि से अधिक और अधिक कहने के क्रम का उल्लेख है, कहता आ रहा हूँ में प्रायः लंबे काल क्रम में वर्तमान समय तक निरंतर व्यापार करने का अर्थ सूचित है. हम कई पीढ़ियों से यहाँ पूजा करते आ रहे हैं ऋषि-मुनि कहते आये हैं कि· · ·. वर्तमान तक के काल क्रम के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण यहाँ विधि का प्रयोग नहीं मिलता. ?तुम रोज़ एक पृष्ठ लिखते आओ. यहाँ पूर्ण पक्ष का कृदंत भी नहीं आता. *किये आ रहे हैं, *कहे आ रहे हैं.

3.1. ऊपर 2.3. की तरह किताब लेते आओ/लिये आओ आदि प्रयोग वास्तव पूर्वकालिक कृदंत रूप हैं, निरंतरता बोधक प्रयोग नहीं. (देखें **कृदंत–पूर्वकालिक**).

4. करता चलना में निरंतरता सोपानों में सूचित होती है, जिसे निम्न प्रकार से आरेख से स्पष्ट कर सकते हैं :

∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ ∘ व्यापार क्रम

———————————————— काल क्रम

इतने सारे काम क्यों एक साथ देखते हो? एक-एक कर निपटाते चलो. सब लोग लाइन में एक-एक करके आते चलो. आप उस तरफ़ की दुकानों के बोर्ड देखते चलें, मैं इस तरफ़ के बोर्ड देखता हूँ. अभी से बच्चों की शादी के लिए पैसा इकट्ठा करते चलें, तो अच्छा है. कदम-कदम बढ़ाते चलो.

4.1. करता चलना में 'चलना' का प्रयोग विशिष्ट अर्थ में होने के कारण बहुत कम क्रियाओं के साथ आता है. इस अर्थ वैशिष्ट्य को एक-एक करके, थोड़ा-थोड़ा करके आदि क्रियाविशेषण स्पष्ट करते हैं.

4.2. पूर्वोक्त कृदंत रूपों की तरह इसका प्रयोग वृत्तिसूचक छोड़, अन्य पक्ष, काल, अर्थ के संदर्भों में हो सकता है. यहाँ पूर्ण कृदंत का प्रयोग नहीं होता. *किये चलो.

5. निरंतरता सूचित करने वाला एक और प्रयोग है किया करना, जिसमें 'किया' अविकारी रहता है. यह प्रयोग अधिकतर अपूर्ण पक्ष (किया करता हूँ), विधि (किया करो) में प्रयुक्त होता है; पूर्ण पक्ष में (*किया किया, *बोला किया) तथा 'रहा' के साथ (*किया कर रहा हूँ) इसका प्रयोग नहीं है; भविष्य रूप (किया करूँगा) विरल है. तुम नियमित रूप से व्यायाम किया करो. मैं अक्सर शाम को बाज़ार जाया करता था. इस तरह बीच में बोला मत करो.

5.1. यहाँ हम किया करता हूँ या किया करता था के संदर्भगत अर्थ के बारे में देखेंगे. करता है से एक लंबे व्यापार का अर्थ स्पष्ट होता है (वह बी.ए. में पढ़ता है) या व्यापार की श्रृंखला का, जो वर्तमान में भी सत्य है (मैं चाय पीता हूँ. वह रोज़ फ़ुटबाल खेलता है. वह अक्सर यहाँ आता है). किया से ऐसे व्यापार का अर्थ व्यक्त होता है, जो समाप्त हो गया है (वह एक बार आया) या कई व्यापारों का, जो समाप्त हो गये हैं और गिने जा सकते हैं (वह चार बार/कई बार यहाँ आया). इसी तरह विधि में करो सिर्फ़ एक का (गिना जाए, ऐसे व्यापार का) अर्थ देता है. वह आता है में व्यापार वर्तमान में सत्य है, अतः आगे भी व्यापार होने की संभावना निहित है. जो रोज़ आता है, वह कल भी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ सकता है. *किया करना* इन दोनों पक्षों की विशेषताओं को प्रकट करता है. व्यापार गिने भी जा सकें और हर व्यापार अपने में पूर्ण हो तथा ऐसे व्यापारों की शृंखला भी बतायी जाए, ऐसे संदर्भों में *किया करो, किया करता है* का प्रयोग होता है. *वह कई बार आया है* में भविष्य में व्यापार की संभावना नहीं है, जो अपूर्ण पक्ष के *करता है* के कारण प्रकट होती है. इस निरंतरता के द्योतन के कारण ही *किया किया जैसा रूप नहीं मिलता.

5.2. गुरु इसे अभ्यासबोधक कहते हैं. इस नाम से इस क्रिया की एक विशेषता प्रकट होती है–वह व्यापार जो आदत के तौर पर किया जाए. तात्पर्य यह है कि *व्यायाम किया करो* को 'व्यायाम करने की आदत डालो' भी कह सकते हैं.

5.3. *देखा किये, जाना किये, बोला किये* आदि प्रयोग कुछ दशक पहले की हिंदी में देखे जा सकते हैं. आज भी उर्दू (शायरी) की शैली में ये रूप मिलते हैं. इसी तरह *करना चाहता हूँ* के लिए *किया चाहता हूँ* आदि प्रयोग उर्दू शैली के हैं. सामान्य बोलचाल की हिंदी में ये प्रयोग नहीं मिलते.

6. इस प्रकरण में हमने पाँच क्रिया रूप देखे, जो काल क्रम या कालावधि के साथ व्यापार की निरंतरता सूचित करते हैं. इनमें चार प्रमुख रूप से अपूर्ण कृदंत से बने हैं, पाँचवाँ पूर्ण कृदंत से. यद्यपि इन्हें भी समस्त क्रिया कहा गया है, ये भिन्न व्यापारों के समस्त रूप *बोलते (हुए) जा रहे हैं* आदि से अलग हैं. *करता जाना* आदि में 'जाना' क्रिया रचना का अंग है, उसकी विशेषता दर्शाता है, जबकि *बोलते (हुए) जा रहे हैं* में 'जाना' मुख्य व्यापार है, बोलना सह व्यापार. (देखें **कृदंत–क्रियाविशेषण**). इस कारण यहाँ कृदंत की पुनरुक्ति संभव नहीं है, जैसे *पढ़ते-पढ़ते सो गया* आदि में है. **कीमतें बढ़ती-बढ़ती जा रही हैं.*

चूँकि *बोलते (हुए) जाना* और *बोलता जाना* देखने में समान लगते हैं, इनके प्रयोग के संदर्भों को स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है; तभी और जटिल समस्त क्रियाओं की रचना को समझ सकेंगे. *लोग भागे चले जा रहे थे* में दोनों प्रकार की समस्त क्रियाएँ समाविष्ट हैं.

चल → चला जाना → भागे (हुए) *चला जाना. आँख खोले तमाशा देखते चलो, खिंचे चले आएँगे, लेटे लिखते रहते हैं, बिना सोचे बकबक किये जा रहा है* आदि ऐसे कुछ समस्त क्रिया वाक्यांश हैं. चार स्थान से अधिक लंबी क्रिया रचनाएँ वास्तव में मूल क्रिया वाक्यांश नहीं, बल्कि दो से अधिक वाक्यांशों के समस्त रूप हैं.

कृदंत–पूर्वकालिक 1. 'कर' को गुरु पूर्वकालिक कृदंत कहते हैं. उनका आशय यह है कि मूल क्रिया के घटने के समय से पहले के व्यापार को 'कर' द्वारा सूचित किया जाता है. एक उदाहरण देखिए–*मैंने खाना खाया. मैं बाहर गया → मैं खाना खा कर बाहर गया.* सभी परवर्ती विद्वान इस शब्द को इसी रूप में लगभग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी आशय के साथ लेते हैं. मेरे हिसाब से भूत काल, वर्तमान काल की तरह 'पूर्व काल' नामक कोई काल-व्यवस्था नहीं है. और भी कई क्रिया रूप हैं (बिना किये, करने पर भी, करते ही) जिनसे 'पूर्व काल' प्रकट होता है. लेकिन सुविधा के लिए मैं उक्त शब्द को मान लेता हूँ.

वान आल्फ़न ने 'कर' के पाँच प्रमुख प्रयोग बताये हैं :

अ. क्रिया समाप्ति–वह सो कर उठा

आ. कारण कार्य–हमें देख कर वह गदगद हो उठा

इ. करण–उन्होंने तालियाँ बजा कर हमारा स्वागत किया

ई. रीति–गर्दन हिला कर चलना

उ. विपरीत कार्य–ब्राह्मण हो कर तुम ऐसी बात करते हो !

गुरु ने ऐसा वर्गीकरण न कर, आठ उप प्रकरणों के अंतर्गत 'कर' के प्रयोग दिये हैं. वान आल्फ़न के कथनानुसार हर जगह पूर्व काल का कोई निश्चित आधार नहीं है. वे स्वयं मानते हैं कि ये प्रयोग पाँच की सीमा में भी नहीं बाँधे जा सकते. अतः 'पूर्व काल' तथा प्रयोग की संख्या-सीमा दोनों बातें ठीक नहीं. मैं अपनी तरफ़ से मानता हूँ कि 'कर' के प्रमुख प्रयोगों में हम वास्तव में दो ही अंतर्निहित वाक्य संरचनाएँ देख सकते हैं–और/या तथा लेकिन. ऊपर के पाँच प्रयोगों में पहले के चार और वाले हैं, पाँचवाँ लेकिन वाला. इन अंतर्निहित संबंधों को अन्य वाक्यों में भी देख सकते हैं–वह डर कर भी नहीं रोया (लेकिन). कुछ लोग भरपेट खा कर भी संतुष्ट नहीं होते (लेकिन). तुमसे शादी करके मुझे क्या मिला ? (और मुझे क्या मिला ?, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला ?) डरा-धमका कर (या/और).

1.1. कुछ प्रयोग ऐसे हैं, जिनमें इस तरह का वाक्यगत संबंध नहीं है. वे वाक्यांश स्तर तक सीमित रूढ़ प्रयोग हैं. कुछ उदाहरण हैं–कुल मिला कर, सवेरे से ले कर शाम तक, तुमसे बढ़ कर और कौन · · · , मेरा मकान सड़क से हट कर है, चार बज कर दस मिनट हुए.

2. 'कर' की प्रमुख विशेषता है कि यह एक उपवाक्य में एक ही बार आता है. द्रविड भाषाओं में ऐसा प्रयोग संभव ही नहीं, बहुत सहज है–मैं सवेरे उठकर, हाथ-मुँह साफ़ करके, काफ़ी पी कर घर से बाहर आया. हिंदी में यही वाक्य होगा–(अ) मैं सवेरे उठा, हाथ-मुँह धोया और काफ़ी पी कर घर से बाहर आया. (आ) मैंने सवेरे उठ कर हाथ-मुँह धोया और काफ़ी पी कर घर से बाहर आया. यहाँ 'कर' वाक्यों के विस्तार की दिशा में ऊपर 1 का स्पष्टीकरण देख सकते हैं. इसी तरह आगे के वाक्य में 'या' का संबंध स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है. मार कर या डाँट कर (*मार कर, डाँट कर, *मार-डाँट कर).

2.1. एक उपवाक्य में दो 'कर' न आने की बात को आप संयुक्त धातुओं के संदर्भ में भी देख सकते हैं. पक्ष युक्त क्रिया रूपों में दोनों धातुओं में रूप-सिद्धि

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होती है (*खाया-पिया, खाते-पीते, खाऊँ-पिऊँ, खाने-पीने*), लेकिन 'कर' सिर्फ़ दूसरे धातु में (या के बाद) लगता है (*खा-पी कर, रो-धो कर, कर-कराके*). पक्ष वाले रूप एक से अधिक की संख्या में एक उपवाक्य में आ भी सकते हैं (*उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते हर समय वह* · · ·). विश्लेषण जो भी हो, 'कर' के धातु से अलग लिखने का यह भी एक आधार है.

3. 'कर' की एक प्रमुख विशेषता है, जिसकी तरफ़ गुरु का ध्यान गया, लेकिन वे उक्त विशेषता को आग्रहपूर्वक सामने नहीं ला सके. 'कर' तथा अनुवर्ती क्रिया का कर्ता एक ही होता है. तमिल में इससे भिन्न, सहज व्यवस्था है, जहाँ भिन्न कर्ताओं के उपवाक्य 'कर' से जुड़ सकते हैं. कुछ उदाहरण देखिए :

मैं खाना खा कर तुम्हारा पेट भर जाएगा क्या ?

तुम कह कर, वह नहीं सुनेगा.

इन वाक्यों की रचनागत विशेषता में हम नहीं जा रहे; कहने का यही तात्पर्य है कि हिंदी में 'कर' तथा मुख्य क्रिया समकर्तृक हैं. गुरु ने विरोध में जो थोड़े-से उदाहरण दिये हैं (*आज अर्ज़ी पेश होकर यह हुक्म हुआ, परिश्रमी का दुख मिट कर चित्त नया-सा हो गया है*), वे आज के संदर्भ में अमानक हैं. यही कारण है कि अचेतन कर्ता वाले वाक्यों में 'होना' तथा 'मिलना' (प्राप्त हो) आदि के 'कर' युक्त रूप नहीं बनते—**बारिश हो कर चार दिन हो रहे हैं.* **तनख़ाह मिल कर पाँच दिन हो गये.* ये वाक्य पूर्ण पक्ष के कृदंत 'हुए, मिले' आदि से ही बनेंगे. *बारिश हुए* · · · , *तनख़ाह मिले* · · · . इसी तरह दोनों उपवाक्यों में भिन्न कर्ता हों, तो भिन्न रचनाएँ होती हैं—*मुझे आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई.* (मैं मिला, मुझे ख़ुशी हुई). *मुझे आपसे मिले दस दिन हो गये* (मैं · · · मिला, दस दिन हुए). *मेरे कहने पर भी उसने नहीं माना* (मैंने कहा, उसने नहीं माना).

ऊपर के 1.1 के रूढ़ प्रयोगों को इस चर्चा से दूर रखना आवश्यक है.

3.1. चूँकि हिंदी में एक वाक्य में सामान्यतः दो 'कर' वाले उपवाक्य अंतर्निहित नहीं होते, निम्न प्रकार के वाक्य नहीं मिलते. **वह निकल कर भाग कर आगे बढ़ा.* **मैं सो-उठ कर बाहर निकला.* इससे यह तात्पर्य निकलता है कि संयुक्त धातु, जिनमें 'कर' लगता है (खी-पी कर, पूछ-पाछ कर, कर-कराके, काट-कूट कर, मार-वार कर) वास्तव में दो भिन्न क्रिया व्यापारों का समास नहीं, बल्कि दोनों क्रिया रूप एक ही समन्वित व्यापार की ओर संकेत करते हैं.

4. *तुम मुझसे मिल कर जाओ* इस वाक्य की अंतर्निहित रचना होगी—*तुम मिलो—तुम जाओ.* इसका निषेधात्मक रूप होगा—*तुम मुझसे मिले बिना मत जाओ.* इसी तरह के अन्य कुछ वाक्यों के संदर्भों में 'न' की स्थिति देख कर विद्वानों ने घोषणा की है कि 'कर' वाले रूप का नकारात्मक रूपांतरण नहीं होता. जैसे,

वह खाना खा कर नहीं आया (~**वह न खाना खा कर आया*)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह कथन आंशिक रूप से ही सही है. वान आल्फ़न के वाक्य प्रकारों के संदर्भ में देखिए :

*वह सो कर नहीं उठा (*न सो कर उठा)*

हमें न देखकर वह परेशान हो गया. (या देख कर ख़ुश नहीं हुआ)

*उन्होंने तालियाँ बजा कर · · · स्वागत नहीं किया (*न तालियाँ बजा कर)*

*गर्दन हिला कर नहीं चलना (*न गर्दन हिला कर)*

वास्तव में 'कर' के साथ नकारात्मक प्रयोग का संरचनागत संबंध नहीं है, बल्कि अंतर्निहित वाक्यों के संदर्भ में ही नकारात्मक प्रयोग विश्लेषित किये जा सकते हैं. *वह सो कर उठा* में *सोया* और *उठा* का संबंध है, *नहीं सोया* और *उठा* संभव भी नहीं है. इस पूरे का निषेध करना चाहें, तो नियमानुसार 'नहीं' (देखें **न, नहीं, मत, ना**) क्रिया से पहले आएगा. जैसे *नहीं (सोया और उठा)* → *सो कर नहीं उठा. वह डर कर भी नहीं रोया* में 'डरना' वास्तविक है, रोने का निषेध है. इसी संदर्भ में *सोया* + *(नहीं) उठा* का भी रूप यही बनेगा, जो एक भ्रमात्मक स्थिति है. *वह अंतिम रात अपने बिस्तर पर सो कर फिर कभी नहीं उठा.* लेकिन प्रायः इस वाक्य रचना को वक्ता 'तो', 'और' आदि से ही बोलते हैं. · · · *सोया, तो फिर कभी नहीं उठा.* इसके विपरीत *नहीं (· · ·) और/लेकिन (· · ·)* वाली वाक्य रचनाओं में पहली क्रिया के साथ 'न' आता है. *तुमने मेरी बात न सुन कर मेरा अपमान किया है. उसने चावल न ले कर उसकी जगह धान ले लिया था. मैं शादी न करके पछता रहा हूँ* (और). *मैं शादी न करके पछता नहीं रहा हूँ* (लेकिन).

4.1. आगे के तीनों वाक्यों के अर्थ के अंतर को देखिये :

वाक्य	अंतर्निहित संबंध
तुम मुझसे मिल कर नहीं जाओ.	नहीं (मिलो+जाओ)
तुम मुझसे न मिल कर · · · जाओ.	नहीं मिल+जाओ
तुम मुझसे मिले बिना मत जाओ.	नहीं मिल+जाओ–ऐसा नहीं

ये तीनों ही वाक्य अर्थपूर्ण हैं और पहले दो की ऊपर चर्चा कर चुके हैं. प्रथम का आशय है *नहीं (मिलो–जाओ)* और दूसरे का *नहीं (मिलो)+जाओ*. दूसरे वाक्य का आशय होगा–*तुम मुझसे न मिल कर (अपने दौरे पर) चले जाओ*. तीसरा इन दोनों से भिन्न अर्थ देता है. वहाँ 'मिलना' जाने से पहले की शर्त है. इसलिए उसे प्रस्तुत प्रकरण के संदर्भ में केवल नकारात्मक मानना ठीक नहीं होगा.

5. 'कर' के प्रयोग पर कुछ पाबंदियाँ हैं. 'कर' रंजक क्रिया, वृत्तिसूचक क्रियाएँ, वाच्य (*गुरु पकड़ कर लाया गया* का उदाहरण देते हैं–ऐसे आधुनिक प्रयोग भी हैं–*?चोर पकड़े जा कर जेल भेज दिया गया*) तथा (बारिश) होना, (पैसा) मिलना आदि पाबंदी के स्थल हैं. यहाँ 'कर' का प्रयोग नहीं होता.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5.1. सभी विद्‌वानों ने संकेत किया है कि हिंदी में प्रायः 'कर' का लोप हो जाता है. उतर (कर) *आना*, *लिखा* (कर) *लाना*, उठ (कर) *बैठना* आदि. (देखिए **रंजक क्रियाएँ**). इन स्थानों में लुप्त 'कर' के साथ भी दूसरा प्रकट 'कर' नहीं आता. इस तरह ये रूप रंजक क्रिया की ही तरह व्यवहार करते हैं. *वह उतर आया और*··· (*वह उतर आ कर), *तुम लिख लाओ और*··· (*तुम लिख ला कर). शायद यही कारण है कि कई विद्‌वानों ने रंजक क्रिया 'झुक आना' तथा कृदंत क्रिया 'उतर आना' को प्रयोग के स्तर पर एक ही माना. लेकिन अर्थ की दृष्टि से ये निश्चित रूप से भिन्न हैं. यह भी उल्लेखनीय है कि हर जगह 'कर' का लोप नहीं हो सकता (*जा देखो, *देख लिखो, *गिर मरा). प्रायः द्‌वितीय 'आ, जा, ला' क्रियाओं के साथ ही 'कर' का लोप मिलता है. जहाँ 'कर' लोप से रंजक क्रिया के साथ भ्रम होने की संभावना हो, वहाँ प्रायः लोप नहीं होता.

देख लेना	*देख कर लेना*
कह जाना	*कह कर जाना~कह जाना*
उठा देना	*उठा कर देना*
चल जाना	*चल कर जाना* (देखें **चलना**)

'रखना' रंजक क्रिया है, लेकिन स्थितिसूचक होने के कारण भौतिक स्थिति के संदर्भ में इसके दोनों प्रयोगों को अलग करके देखना भी मुश्किल है.

माँ ने खिचड़ी बना रखी है~बना कर रखी है.

मैंने एक मेज़ ले रखी है~?ले कर रखी है.

इन्हीं सब समस्याओं में कारण 'कर' अभी भी अनबूझ पहेली है. हो सकता है अन्य भाषाओं के व्याकरणों से इस पर अधिक प्रकाश पड़ सके.

कृदंत विशेषण 1. पूर्ण पक्ष का कृदंत (*आया, दिया*) तथा अपूर्ण पक्ष का कृदंत (*करता, जाता*) दोनों ही विशेषण की तरह संज्ञा से पहले या पूरक के स्थान में आते हैं. ये विशेषणों की तरह संज्ञा से लिंग-वचन के लिए अन्वित होते हैं.

आया हुआ आदमी, एक आदमी आया हुआ है.

आते हुए लोग, एक आदमी आता दिखायी पड़ा.

2. इन दोनों के प्रयोग में एक महत्त्वपूर्ण अंतर है. पूर्ण कृदंत के प्रयोग में केवल अकर्मक में क्रिया कर्ता का विशेषण बनती है.

एक लड़का आया → आया (हुआ) लड़का

वह लड़की सोयी → सोयी (हुई) वह लड़की

सकर्मक वाक्यों में क्रिया कर्ता का नहीं, बल्कि कर्म का विशेषण बनती है. *मैं आम लाया → लाया* (हुआ) *आम. मैंने किताब नीचे रखी → नीचे रखी* (हुई) *किताब*. अगर कर्ता का उल्लेख ज़रूरी हो तो 'मेरे द्‌वारा' जुड़ सकता है (?)–?उनके द्‌वारा भेजी हुई पुस्तकें. अगर कर्तृत्व का उल्लेख करना ही हो, तो वह संबंध-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारक से जुड़ेगा—राम की लिखी पुस्तकें, उनका भेजा पत्र, मेरी बतायी बात. अन्य प्रयोग हैं—यह किताब मेरी लिखी हुई है. यह बात मेरी बतायी हुई है. यह कपड़ा मेरा दिया हुआ है. यह फ़िल्म मेरी देखी हुई है.

2.1. **वाच्य** भी अकर्तृत्व बोधक होता है. अतः 'भेजी हुई पुस्तक' और 'भेजी गयी पुस्तक' में अंतर करना आवश्यक हो जाता है. अकर्मक प्रयोगों (टूटी हुई, आयी हुई) में वाच्य संबंधी व्यतिरेक नहीं है. सकर्मक वाक्यों में इनके अंतर्निहित मूल वाक्यों को देखिए :

मैंने आप को एक किताब भेजी → आप को भेजी हुई किताब
मेरी आप को भेजी हुई किताब

आप को एक किताब भेजी गयी → आप को भेजी गयी किताब
(*मेरी/मुझसे) आप को भेजी गयी किताब

विशेषण के रूप में वाच्य या पूर्ण कृदंत के चयन का आधार वही है, जिससे हम अंतर्निहित मूल वाक्यों में चयन करते हैं. इस कारण मैंने रुपये भेजे के संदर्भ में हम भेजे हुए रुपये तथा सूचना दी गयी के संदर्भ में दी गयी सूचना का प्रयोग करते हैं.

3. अपूर्ण कृदंत का प्रयोग अकर्मक में समान है ((सोता हुआ आदमी, पढ़ते हुए बच्चे), लेकिन सकर्मक में क्रिया कर्ता का विशेषण बनती है, न कि कर्म का. सड़क पर काम करते (हुए) लोग (*करता हुआ काम), खाना खाते लोग (*खाता खाना). अगर अपूर्ण पक्ष में कर्म को विशेषीकृत करना हो, तो वाच्य या मिथ्या वाच्य ही आ सकता है. किया जाता/जा रहा काम, बनता/बन रहा मकान.

3.1. दूसरा महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि समस्त क्रिया को छोड़ सामान्य पूरक वाक्य में अपूर्ण कृदंत पूरक स्थान पर नहीं आते.

वह आया हुआ है — *वह आता हुआ है.
वह सोया हुआ है — *वह सोता हुआ है.
? — *वह खाता हुआ है.

वास्तव में यही काम क्रमशः आ रहा है, सो रहा है, खा रहा है कर रहे हैं. समस्त क्रिया रूपों में यह क्रिया कर्म के पूरक के रूप में आती है. मुझे राम आता (हुआ) दिखायी पड़ा. वह लड़की हमेशा कुछ पढ़ती (हुई) नज़र आती है. वे लोग कुछ बोलते (हुए) सुनायी पड़े.

3.1.1. यहाँ भी पूर्ण और अपूर्ण रूपों में वही अंतर है, जो ऊपर हम देख चुके हैं. सकर्मक में पूर्ण कृदंत कर्म का विशेषण बन कर आता है. वह काम करता नज़र आता है/आया. काम होता नहीं नज़र आता. (*काम करता ...) *उसने/वह काम किया नहीं नज़र आता. !काम पूरा किया नहीं नज़र आता. लेकिन जिन वाक्यों में एक ही व्यक्ति दोनों व्यापारों का कर्ता हो, वहाँ दोनों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पक्ष के कृदंत आ सकते हैं. वहाँ दोनों व्यापार एक ही समय में चलने वाले होते हैं. इस समकालिकता के कारण विद्वान कृदंत रूप को क्रियाविशेषण भी मानते हैं. इसी कारण कृदंत दुहरे रूप में आता है—*वह काम करता (हुआ)~करते (हुए) कुछ बोल रहा है. वह लेटा (हुआ)~लेटे (हुए) कुछ पढ़ रहा था.* इनके अंतर्निहित मूल वाक्य हैं—*वह काम कर रहा था. साथ में कुछ बोल रहा था. वह लेटा हुआ था. साथ में कुछ बोल रहा था.* दोनों पक्ष के कृदंतों के प्रयोग में अंतर के कारण एक वाक्य अपूर्ण पक्ष की क्रिया के वाक्य से रूपांतरित है, दूसरा पूर्ण पक्ष के पूरक विशेषण से. अतः समस्त क्रिया को विशेषण या क्रियाविशेषण की संज्ञा देना बहुत वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं है, यादृच्छिक हल है.

कृति, कृती 'कृति' निर्मित रचना को कहते हैं (*कलाकृति, काव्यकृति*) और 'कृती' रचनाकार या करने वाले को. 'सुकृती' अच्छे काम करने वाले का अर्थ देता है.

कृपया यह शब्द 'कृपा' से बना है, जिसका अर्थ है 'कृपा करके'. दोनों ही प्रयोग हिंदी में चलते हैं. कहीं-कहीं इसकी वर्तनी दिखायी पड़ती है 'कृप्या', जो त्याज्य है.

केंचुआ, केंचुली केंचुआ साँप जैसे उस कीड़े को कहते हैं, जो खेतों में, मिट्टी के अंदर रहता है और बारिश के समय ऊपर भी आता है (बहु० केंचुए). इसे अंग्रेज़ी में 'अर्थवर्म' कहते हैं. केंचुली साँप की वह ऊपरी खाल है, जिसे साँप दो-तीन महीनों में एक बार उतार देता है.

कोश, कोष, कोशिका 1. इनमें पहला शब्द शब्दों के संग्रह (डिक्शनरी) के लिए प्रयोग में आ गया है, फिर भी कुछ संग्रहों में शब्द कोष भी दिखायी पड़ता है. *शब्दकोश, कोशकला, कोशकार* आदि इससे व्युत्पन्न शब्द हैं.

2. 'कोश' शब्द शरीर के अवयवों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है, जैसे *अंडकोश, पित्तकोश* आदि. 'कोशिका' शरीर रचना की सबसे छोटी इकाई (सेल) के संदर्भ में प्रयुक्त होता है. 'कोशिका' में **लघुता सूचक प्रत्यय** है.

3. 'कोष' का अर्थ धन संग्रह या निधि के संदर्भ में स्पष्ट हो सकता है. *कोषाध्यक्ष, सहायता कोष* आदि इससे व्युत्पन्न शब्द हैं.

क्योंकि देखें **इसलिए, चूँकि, क्योंकि.**

क्रिया हिंदी की क्रिया रचना के संबंध में श्रीवास्तव कहते हैं कि भाषा में काल होता है और वास्तविक समय-बोध भाषा के काल-भेद से भिन्न है. "भाषा अध्ययन के संदर्भ में हम जिस 'काल' अथवा 'काल-बोध' की चर्चा उठाते हैं, वह भौतिक जगत में स्वीकृत 'समय' से भिन्न होता है. समय एक अविच्छिन्न धारा के समान रहता है, जहाँ जो कुछ भी है, वह या तो 'भूत' होता है, अथवा 'भविष्य'. ··· जो भौतिक धरातल पर समय है, वह भाषा में वर्णित 'काल' नहीं. 'काल' एक व्याकरणिक कोटि है, भाषा की रचना के स्तर पर एक निश्चित रूप (फ़ार्म) है जो भौतिक जगत के समय के अविच्छिन्न धारा-प्रवाह को निश्चित खंडों में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभाजित करने की एक विशेष दृष्टि प्रदान करता है. कभी-कभी इस विशेष दृष्टि से बोधित 'काल-बोध' और भौतिक धरातल पर बुद्धिग्रहीत समय-चेतना आपस में टकरा भी जाते हैं" (श्रीवास्तव : 1973).

अगर श्रीवास्तव के कथन को मान लिया जाए, तो व्यक्ति की समय को देखने की दृष्टि तथा भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति में अंतर है, हो सकता है. अगर व्यक्ति की भाषा को उसके व्यक्तित्व तथा जीवन-सत्यों को देखने की उसकी दृष्टि का प्रतीक मानें, तो उनका कथन कमज़ोर पड़ता है. व्यक्ति सत्य को अलग ढंग से देखे और अलग ढंग से प्रतिपादित करे, यह बात न संभव लगती है, न स्वाभाविक. उनका तथा उन जैसे विद्वानों का शायद यह तर्क है. हिंदी में भूतकाल का प्रयोग भविष्य समय के लिए होता है (*रामू इधर आओ—अभी आया*) या वर्तमान का प्रयोग भूत समय में होता है (*एक राजा था. वह रोज़ जंगल में जाता, शिकार करके लौटता*). श्रीवास्तव का उक्त लेख महत्त्वपूर्ण हैं. वे हिंदी में पहली बार काल और पक्ष के सिद्धांत को उद्घाटित करते हैं. उनसे पहले के विद्वान हिंदी के क्रिया रूपों का अपने-अपने ढंग से वर्गीकरण करते थे और सारे रूपों को काल मान लेते थे. आगे तीन विद्वानों के वर्गीकरण दिये जा रहे हैं. केलाग का वर्गीकरण पक्ष पर आधारित है, गुरु का वर्गीकरण वृत्ति पर आधारित है और धीरेंद्र वर्मा का वर्गीकरण दोनों के बीच में है और मुख्यत: रूप पर आधारित है :

केलाग	**गुरु**	**धीरेंद्र वर्मा**
चलूँ	चलता है	चला
चलूँगा	चला है	चलेगा
चले/चलो	चला	चले (संभावना)
—	चलता था	चलता
होता	चला था	चले (आज्ञा)
होता है	चलेगा	चलना
होता था	—	—
होता हो	चलता हो	चलता है
होता होगा	चला हो	चलता था
करता होगा	चले	चलता होगा
—	—	चलता हो
हुआ	चलता होगा	चलता होगा
हुआ है	चला होगा	—
हुआ था	—	चला है
हुआ होगा	चलना	चला था

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केलाग	गुरु	धीरेंद्र वर्मा
हुआ होता	—	चला होगा
	चलना	—
	चलता होता	चला हो
	चला होता	चला होता

ऐसा नहीं है कि इन विवरणों में केवल वर्गीकरण का अंतर है और क्रिया रूपों के नाम समान हैं. गुरु 'चलेगा' को निश्चयार्थक मानते हैं, केलाग में यह भिन्न है. गुरु 'चलता होगा', 'चला होगा' को संभावनार्थ मानते हैं, धीरेंद्र वर्मा इन्हें निश्चयार्थ मानते हैं. तात्पर्य यह है कि हर विद्वान क्रिया रूपों को अपने-अपने ढंग से देखता है और उसका वर्णन बहुत दूर तक आतमपरक होता है. इसी तरह आगे के विद्वानों ने भी क्रियाओं के वर्णन में मनमानी दिखायी है. कालीचरण बहल (1974) ने पक्ष और पक्षहीनता को आधार बना कर बाईस क्रिया रूप दिखाये हैं. साउथवर्थ ने (1971) बीस क्रिया रूपों की सूची दी है. उनकी सूची अधूरी है और उन्हीं के विश्लेषण के अनुसार उसमें तीन-चार रूप और जुड़ सकते हैं. मैकग्रेगर ने (1972) कालों की संख्या नहीं बतायी है, लेकिन उनका विश्लेषण भी परंपरात्मक है. हिंदी के ये थोड़े-से क्रिया रूप विद्वानों के दृष्टि-भेद के कारण शब्दजाल में फँस कर दुरूह समस्या बन गये. इसी अराजकता में श्रीवास्तव ने परंपरा से हट कर काल और पक्ष के अस्तित्व को अलग करके देखने का यत्न किया है. वे हिंदी में तीन काल (वर्तमान, भूत, और भविष्य) और चार पक्ष (सामान्य, आवृत्तिमूलक, सातत्यपरक और पूर्णकालिक) मानते हैं. आपने व्याख्या के साथ सिद्धांत स्पष्ट किये हैं, लेकिन क्रिया रूपों की संख्या नहीं गिनायी है.

इस प्रकरण की इस जटिलता का कारण जान लें. परंपरात्मक ढंग से 'काल' के तीन भेद किये जाते हैं–भूत, वर्तमान और भविष्य. यह विभाजन बहुत तर्कसंगत लगता है, क्योंकि हम वस्तु जगत से अपने संबंध इसी संदर्भ में देखते हैं–जो बीत चुका है, जो है और जो आगे होने वाला है. इसी कारण व्याकरण में भी इसी पद्धति को स्वीकार किया गया है. लेकिन हिंदी में क्रिया रूपों की संख्या तीन ही तो नहीं है. सब को समेटने में ही कठिनाई उपस्थित होती है. दूसरे, इन रूपों को तालिका में रखें तो मालूम होगा कि तालिका कहीं अधूरी रह गयी है. उदाहरण के लिए हम गुरु की तालिका को ले सकते हैं, जिसमें उन्होंने काल और पक्ष के आधार पर क्रियाओं का स्थान निश्चित किया है :

काल पक्ष	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
वर्तमान	चलता है	चल रहा है	चला है
भूत	चला	चल रहा था, चलता था	चला था
भविष्य	चलेगा	—	—

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिया रूपों का वितरण देखिए, आप को असंगति का पता चल जाएगा. इस असंगति को नीचे दिये क्रिया रूपों में भी देख सकते हैं :

चला	*चला है*	*चला था*
?	*चलता है*	*चलता था*

'चला' सामान्य भूत है तो वर्तमान में उसका समान रूप क्या है ?

गुरु ने 'रहा' के रूपों को अपूर्ण में रखा है, जबकि उनकी क्रिया रूपों की सूची में 'रहा' के रूप नहीं हैं. इसी तरह समय-समय पर अन्य विद्वानों ने भी कभी 'रहा' के रूपों को विश्लेषण में सम्मिलित किया, कभी कुछ विद्वानों ने *-ना* रूपों को भी सम्मिलित किया और एक समन्वित चित्र उपस्थित करने की कोशिश की. क्रिया पर जितना लिखा गया है शायद ही हिंदी के अन्य किसी अंग पर लिखा गया हो. लेकिन अभी तक हम उसके सही विश्लेषण के पास भी नहीं पहुँचे हैं.

आगे मैं अपनी तरफ़ से हिंदी के क्रिया रूपों का विश्लेषण प्रस्तुत कर रहा हूँ (एक और यत्न सही) और आगे इस विश्लेषण का आधार बताऊँगा.
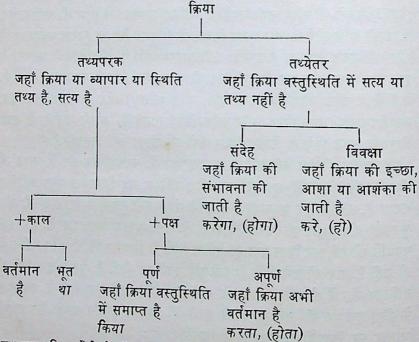
तथ्यपरक क्रियाएँ वे हैं, जिनकी वास्तविकता एक भौतिक सत्य है. जब हम कहते हैं *वह आया*, तो उस क्रिया के पूर्ण होने की सूचना मिलती है, जब तक कि वक्ता का कथन ही निराधार या असत्य न निकले. *मैं पढ़ता हूँ* से हम वक्ता के उस क्रिया व्यापार के सत्य को मान लेते हैं; संदेह हो, तो वक्ता के चारित्रिक गुण

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के कारण ही. तथ्येतर क्रियाएँ वे हैं, जिनके होने के बारे में सुदृढ़ अनुमान ही किया जा सकता है, लेकिन उक्त क्रिया अभी वास्तविकता नहीं है. वह भौतिक सत्य नहीं है. जब हम कहते हैं *सूरज कल भी पूरब में उगेगा* तो हम अपने पूर्व-ज्ञान के आधार पर पुष्ट अनुमान ही कर रहे हैं, उस कथन का जीवन में सत्य होना उस व्यापार के घटित होने पर ही हो सकता है. जब कोई कहता है *मैं आऊँगा*, तो वह वास्तव में अपनी इच्छा तथा निश्चित योजना की सूचना दे रहा है, उसका 'आगमन' सत्य नहीं है, जब तक कि वह घटित न हो जाए.

जो व्यापार सत्य है, तथ्य है, उसी के संदर्भ में हम काल और पक्ष की चर्चा करेंगे. हिंदी क्रियाओं का जितना साहित्य मिलता है, कहीं भी *है, था* को अलग से क्रिया रूपों में दिखाया नहीं जाता. ये दोनों अपने में स्वतंत्र क्रियाएँ हैं, काल की सूचना देती हैं. *आज इतवार है. कल शनिवार था.* ये पक्ष सूचक क्रियाओं के साथ भी आती हैं. *वह करता है/करता था.* उसने · · · *देखा है/देखा था.*

काल तथ्येतर क्रियाओं के साथ नहीं आते. पक्ष धातुमूलक क्रियाओं की ही विशेषता है. पूर्ण पक्ष से हम कथ्य के समय तक उस व्यापार के पूरे हो जाने की सूचना देते हैं. अपूर्ण पक्ष की क्रिया का व्यापार कथ्य के समय में पूर्ण नहीं हुआ है. लेकिन बिना काल के, पक्ष के समय का वक्ता या अभिव्यक्ति के समय से कोई संबंध नहीं है. अभिव्यक्ति के समय का कथ्य के समय से संबंध काल के कारण जुड़ता है. आगे के उदाहरणों में इस बात को स्पष्ट करेंगे.

पूर्ण और अपूर्ण पक्ष में एक महत्त्वपूर्ण अंतर है. पूर्ण पक्ष सामान्य रूप से एक समय में होने वाली एक घटना (*उसने पानी पिया*) या कई बार में की गयी एक क्रिया (*उसने कई बार पानी पिया, उसने कई बार पत्थर फेंका*) का संकेत करता है. अपूर्ण पक्ष की क्रिया घटना के इस तरह समय-सीमित होने से मुक्त है. अतः जब हम कहते हैं *वह कहता है* तो निश्चित रूप से 'कहना' का व्यापार समाप्त नहीं है और वह सिर्फ़ एक घटना भी नहीं है, जिसकी सत्यता घटना के रूप में बीत चुकी है. अर्थात, अपूर्ण पक्ष की क्रियाओं में या तो एक घटना है, एक व्यापार या स्थिति है, जिसकी सत्यता कथन के समय तक समाप्त नहीं हो गयी है; हम अपूर्ण क्रियाओं से ऐसे किसी व्यापार की कल्पना करते हैं, जो एक घटना के रूप में समाप्त होने पर भी आवर्तक है, अपने को दुहराता है. यों कहें कि अपूर्ण पक्ष के भीतर अनेक पूर्ण पक्ष की क्रियाएँ सम्मिलित हैं और ऐसे व्यापारों की घटना के समय तथा बाद भी होने की संभावना है.

राम चावल खाता है (राम ने परसों चावल खाये, कल चावल खाये, आज चावल खाये, · · · आगे भी खा सकता है)

राम चावल खाता है $\neq$ *राम ने कई बार चावल खाये.*

अर्थात, अपूर्ण पक्ष की क्रियाओं में कई पूर्ण पक्ष की क्रियाएँ शामिल हैं, लेकिन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उनके आगे और भी कुछ है, जिससे हम इसे 'अपूर्ण' कहते हैं.

वैसे अपूर्ण कहने में यह अर्थ ध्वनित होता है कि व्यापार शुरू हुआ है और अभी तक चल रहा है. जबकि *राम चावल खाता है* में यह सूचित नहीं होता कि वर्तमान में वह व्यापार विद्यमान है, चालू है और अधूरा हुआ है. इसी कारण अपूर्ण की जगह अ-भूत शब्द अधिक उपयुक्त लगता है. हिंदी में काल दो हैं—भूत और वर्तमान. इन्हें कुछ भाषावैज्ञानिक ग्रंथों में भूत या अभूत कहते हैं. वास्तव में 'भूत' और 'वर्तमान' को मैं इसी अर्थ में लेना चाहूँगा, परंपरात्मक शब्द सिर्फ़ सुविधा के लिए हैं. वर्तमान में ही भविष्य भी सम्मिलित है और जिसे हम व्याकरण में भविष्यत् काल कहते हैं, वस्तु-सत्य नहीं है. यही कारण है कि कई भाषाओं में आगे आने वाले समय के संदर्भ में वर्तमान काल का ही प्रयोग होता है—*आज छुट्टी है, कल छुट्टी है (?होगी). आज इतवार है, कल सोमवार है (*होगा).* 'होगा' का इस संदर्भ में प्रयोग अनुमान की स्थिति दिखाता है, आगे के काल की नहीं.

क्या कल छुट्टी है? हाँ, है
नहीं, नहीं है (निश्चयात्मक स्थिति)
पता नहीं, शायद होगी (अनुमान की स्थिति)

इसी तरह जब हम कहते हैं *वह रोज़ सिनेमा देखता है* तो हम वर्तमान काल से आगे आने वाले समय में भी कथन की सत्यता प्रकट करते हैं. वास्तव में यहाँ अपूर्णता ही इस क्रिया के सत्य को भविष्य की परिधि में ले जाती है.

काल का बोध वक्ता के कथन के समय से जुड़ता है. हम अपने समय बोध के आधार पर ही काल बोध की स्थिति दर्शाते हैं. *है* से संपन्न क्रियाओं से हम व्यापार या स्थिति की सत्यता को अपने कथन के सत्य से जोड़ते हैं. *है* वास्तव में वक्ता के रूप में कथन के समय हमारे समक्ष है; जब वह स्थिति या व्यापार कथन के समय समक्ष न हो तो हम *था* का प्रयोग करते हैं. इसी संदर्भ में पुनः उल्लेख करना चाहूँगा कि व्यापार की विद्यमानता वास्तव में क्रिया की वर्तमानता भी है, कथन के सत्य की भी बात है. कुछ हद तक पूर्ण पक्ष तथा भूतकाल में अतिव्याप्ति दिखायी पड़ती है—दोनों स्थितियों में व्यापार हमारे सामने उपस्थित नहीं है. शायद यही कारण है कि व्याकरण में पूर्ण पक्ष की क्रियाओं को हम भूतकाल कहते आये हैं. लेकिन फिर *आया, आया है, आया था* के तीन रूपों के विश्लेषण में बाधा पड़ती है.

सिर्फ़ *है, था* काल हैं. ये स्थितिसूचक वाक्यों में अकेले आते हैं, पक्ष की क्रियाओं के साथ भी आते हैं. इस तरह काल और पक्ष को अलग-अलग देखने में हमें एक सुनिश्चित विश्लेषण की पद्धति मिलती है. पहले के वैयाकरणों ने पूरे क्रिया रूपों को एक इकाई माना था, अतः विश्लेषण सही नहीं कर पाये. इन्हें

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अलग ले कर देखें, तो हम हर क्रिया रूप के खंडों को घटकों के संदर्भ में देख सकेंगे. इन घटकों से बनने वाले क्रिया रूपों को पहले सूचिबद्ध कर लें.

1. है	9. करता
2. था	10. करता है
3. किया	11. करता था
4. किया है	12. करता हो
5. किया था	13. करता होगा
6. किया हो	14. करता होता
7. किया होगा	15. करेगा
8. किया होता	16. करे

ऊपर की तालिका तथा चर्चा के संदर्भ में इनका नामकरण या विश्लेषण स्पष्ट है. इन क्रिया रूपों के बारे में अलग-अलग स्थानों पर इन्हीं शीर्षकों के अंतर्गत विस्तृत चर्चा की गयी है.

कुल मिला कर कह सकते हैं कि अपूर्ण पक्ष से हमारा तात्पर्य वर्तमान में कार्य होने का नहीं (बल्कि यह सूचना *रहा* से व्यक्त होती है), बल्कि वर्तमान काल तक उस व्यापार के घटना के स्तर पर सत्य होने का है, जबकि पूर्ण पक्ष का व्यापार वस्तु जगत में व्यापार के भूतकाल में सत्य होने का अर्थ देता है. इस तरह भूत और वर्तमान पक्ष के संदर्भ में काल के प्रवाह के खंड नहीं, बल्कि व्यापार घटित होने की भिन्न परिस्थितियों के वर्णन की व्यवस्था है. काल जो था और जो है के संदर्भ में हमारे कथनों को समय की गति के साथ जोड़ता है. पक्ष और काल के संयोजनों से हम अपने कथनों को घटना के समय से भिन्न-भिन्न प्रकार से जोड़ते हैं.

क्रिया रूप कुछ साल पहले की बात है. आगरा में एन०सी०ई०आर०टी० की तरफ़ से एक संगोष्ठी हुई, जिसमें हिंदी के कई प्रसिद्ध तथा मूर्धन्य विद्वान आये थे. इस संगोष्ठी में मैंने सीखा कि हिंदी क्रिया की पाँच स्थानीय रचनाएँ होती हैं. जैसे *खा लिया जाता रहा है*, *खा लिया जा सकता है*, *खा लिया जाना चाहिए होगा*, *खा लिया जाने लगा है*. इस नयी 'जानकारी' से मेरा उत्साह बढ़ा और मैंने क्रिया के पाँच स्थानों की बात गाँठ बाँध ली. आगे और विद्वानों से छह या सात स्थानों वाली बात सुनी. जैसे *खा लिया जाने लग रहा है*, (*बिना*) *खाये-पिये बोलना पड़ रहा होता*, *कर लिया जाना पड़ रहा है*. जिज्ञासा बढ़ी, भ्रम अधिक हुआ और मोह टूटने लगा. ऐसे क्रिया रूप हज़ारों की संख्या में व्याकरण, हिंदी स्वयंशिक्षक तथा तुलनात्मक व्याकरण के ग्रंथों में मिलते हैं. अभी हाल में मैंने एक हिंदी 'स्वयंशिक्षक' में कुछ वाक्य देखे–*मैं प्यार किया जाता हूँगा*, *तुम प्यार की जाती होगी*, *वे लोग प्यार किये जाते होंगे*. मोहभंग पूर्ण

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो गया.

1. यहाँ मैं हिंदी में क्रिया रचना के बारे में सामान्य रूप से विचार करना चाहूँगा. सब से पहले स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि मुझे कहीं पाँच स्थानीय क्रिया रूप देखने को नहीं मिले. ऊपर की *?खा लिया जाता रहा* है आदि क्रियाएँ सोचने पर सहज लगती हैं और सिद्धांत रूप में संभव लगती हैं, लेकिन किन्हीं कारणों से सामान्य भाषा में लंबे क्रिया रूपों का प्रयोग नहीं होता. केवल चार स्थानों तक की क्रियाओं का प्रयोग सहज है, जैसे दे *दिया गया है* या *दिया जा सकता है*. मेरा अनुमान है कि चार की सीमा का आधार भाषायी नहीं, मानसिक है. सामान्य वक्ता अधिक लंबी तथा जटिल रचना को दूर करता होगा. इससे स्वतः स्पष्ट होता है कि जो लंबी क्रियाओं का प्रयोग, प्रयोग के तौर पर करना चाहते होंगे, कर सकेंगे. लेकिन चार स्थानों से बड़ी क्रियाएँ आम प्रचलन में नहीं हैं.

2. क्रिया के एकस्थानीय रूप बहुत कम हैं. ये हैं काल (*है, था*), विधि (*कर, करो, कीजिए, करना*), संभावनार्थ (*करे, करें*) तथा भविष्य (*करेगा*), कालरहित क्रिया रूप (*करता, किया*). एक से अधिक स्थान वाली सैकड़ों रचनाएँ हैं. इन बहुस्थानीय क्रिया रूपों के घटकों को निम्न प्रकार से तीन वर्गों में बाँट सकते हैं :
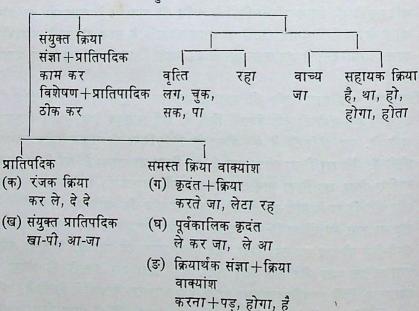
3. आगे हिंदी के क्रिया रूपों की तालिकाएँ दी जा रही हैं, जिनमें हिंदी की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूल, संयुक्त, समस्त, सभी क्रियाओं के संभव रूप दिये जा रहे हैं. तालिका का दोष (या मेरा अज्ञान) कारण हो सकता है; अन्यथा सभी संभव रूप यहाँ आ गये हैं, कोई असंभव रूप इससे नहीं बनना चाहिए.

तालिकाओं के संदर्भ में कुछ विशेष बातें द्रष्टव्य हैं :

जिन शाखाओं के आदि में + चिह्न हैं, वे प्रत्यय हैं, शेष स्वतंत्र शब्द. प्रत्यय मूल रूप से रूपस्वनिमिक नियमों के अनुसार जुड़ते हैं, जैसे कर+ *आ→किया. आ+आ→आया, कर+गा→करेगा, ना* (विधि; ना+चाह) के अलावा *ना, आ, ता,* ए, *गा,* रहा, है/*था* में **अन्विति** की व्यवस्था है.

कई क्रियाएँ है (*था*) में रुकती हैं, कुछ *ओ, गा* आदि में ही. *ता/आ* प्रत्यय है के साथ भी आते हैं, स्वतंत्र रूप से भी. इसलिए इन्हें कोष्ठक में रखा गया है.

*ए यहाँ अगर · · · के वाक्यों में मिलता है, इच्छा सूचक वाक्यों में नहीं.

1. *ना*[1] केवल विधि का सूचक है *ना* क्रियार्थक संज्ञा का प्रत्यय है.

2. प्रश्न चिह्न उस क्रिया रूप के प्रयोग की वास्तविकता पर संदेह प्रकट करता है. 3. निरंतरता सूचक कृदंत. 4. यह थोड़े-से स्थितिसूचक कृदंतों–पड़ा, लेटा, बैठा, निकला–के साथ आता है. 5. वाच्य. 6. निरंतरता सूचक क्रिया का वैकल्पिक रूप

धातु रूप से निष्पन्न हिंदी की क्रियाएँ

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
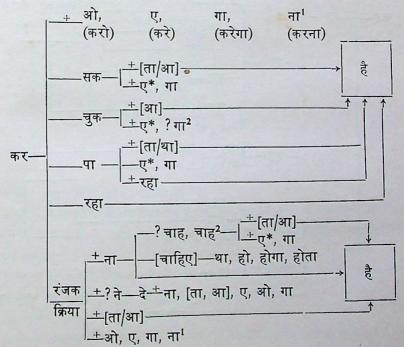
पूर्ण तथा अपूर्ण पक्ष के कृदंतों से निष्पन्न हिंदी के क्रिया रूप

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
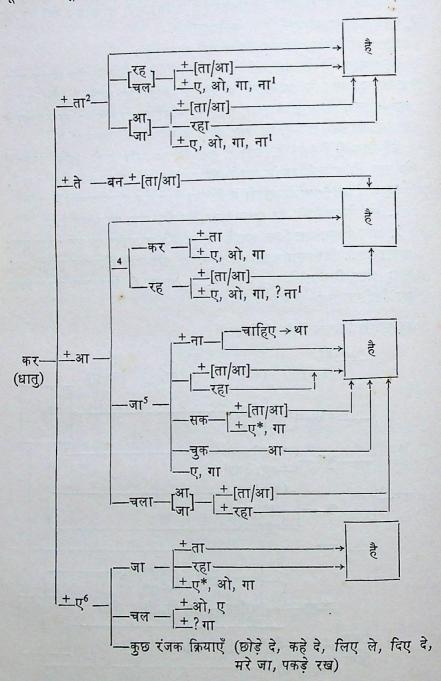
क्रियार्थक संज्ञा के रूप से निष्पन्न हिंदी की क्रियाएँ
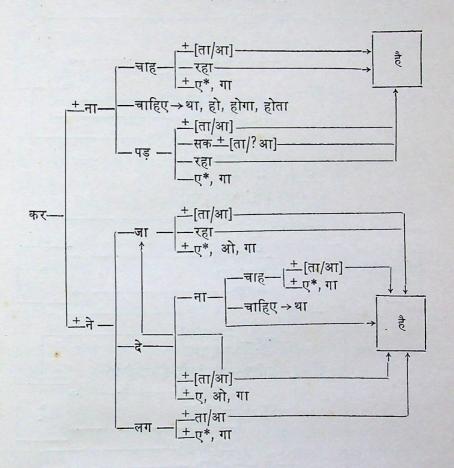
नोट : करने *दिया जाओ* संभव नहीं है.

आगे हिंदी क्रिया के वे रूप दिये गये हैं, जो निषेधात्मक *मत* या नकारात्मक *न* या *नहीं* के साथ आते हैं. आप देखेंगे कि निषेध या नकार की स्थिति में कई क्रियाएँ नहीं आतीं :

[नोट : 1. न/नहीं/मत का वाक्य में स्थान बदल सकता है. करना मत~मत करना.

2 नहीं करता है का है लुप्त हो सकता है.

3. इस तालिका में न/नहीं/मत के विवरण का हर जगह उल्लेख नहीं है.]

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
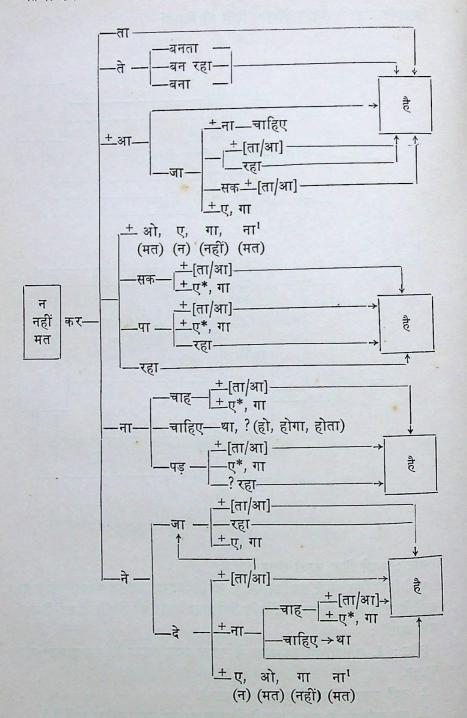
क्रिया वाक्यांश 1. *जाओ*, *जाएगा* आदि क्रियाएँ धातु में प्रत्यय लगने से बनी हैं. वाक्यांश विस्तार में हमें अक्सर चार स्थान वाली क्रियाएँ (*भेज दिया गया है*) मिलती हैं, जिन की प्रयोगगत विशेषताओं को समझना उनके विश्लेषण तथा ज्ञान के लिए आवश्यक होता है. यहाँ हम एक से अधिक शब्द वाले क्रिया रूपों के बारे में देखेंगे.

(1) धातु विस्तार

(अ) समस्त धातु–*खा-पी*, *पढ़-लिख*, *ले-दे*

(आ) पुनरुक्त धातु–*देख-दाख*, *पी-पा*, *खा-वा*

ये धातु हाइफन से लिखे जाते हैं और दोनों धातु रूपसिद्ध होते हैं. कहीं ये अलग अर्थ भी प्रकट कर सकते हैं, लेकिन प्रायः ये एक समन्वित अर्थ प्रकट करते हैं.

(इ) क्रियेतर शब्द से धातु-विस्तार – संयुक्त धातु

मदद करना, *कोशिश करना*, *बंद करना*, *ठीक करना*, *अच्छा होना*

इन क्रियाओं के संदर्भ में चर्चा का विषय है कि कहाँ इन्हें एक समन्वित क्रिया मानें और कहाँ कर्म+क्रिया का संयोग मानें. विस्तृत चर्चा के लिए **संयुक्त धातु** देखें.

(2) व्याकरणिक संबंध दिखाने वाले शब्द

(ई) सहायक क्रिया–*है*, *था*, *होगा*, *हो*, *होता*, *होता है*, *रहता है*. ये रूप काल, संभावना आदि का अर्थ प्रकट करते हैं. पूरक वाक्य रचना में (*यह किताब है*) ये अकेले आते हैं और कृदंतों के साथ भी आते हैं.

(उ) वाच्य–*जाना*

(ऊ) *रहा*

(3) विस्तृत क्रिया वाक्यांश–इस वर्ग में कई ऐसे क्रिया रूप आते हैं, जो एक दूसरे के पूरक हैं (अर्थात, दो एक साथ नहीं आते). ये सामान्य क्रिया वाक्यांश में अर्थ की कोई विशेषता प्रकट करते हैं.

(ऋ) रंजक क्रिया–*कर देना*, *कर लेना*, *आ जाना*

(ए) वृत्तिसूचक क्रिया–*लग*, *सक*, *चुक*, *पा*; आरंभ सूचक–*करने जा*

(ऐ) निरंतरतासूचक क्रिया–*बोलता जाना*, *बोलता आना*, *करता रहना*, *करता चलना*; अभ्याससूचक क्रिया–*किया करना*

(ओ) अनुज्ञासूचक क्रिया–*करने देना*

(4) समस्त वाक्यांश–जहाँ एक से अधिक क्रिया वाक्यांश हैं. इनके इतने प्रकार हैं और विश्लेषण की इतनी अधिक जटिलताएँ हैं कि लगता है कि निश्चित विश्लेषण तक पहुँचने में अभी लंबा रास्ता है.

(औ) पूर्वकालिक कृदंत–*देख कर आओ*, *ख़रीद कर लाओ*. इस रचना में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'कर' का कई जगह लोप होता है और *उठ बैठो, ले जाओ, उठा लाओ* आदि रूप मिलते हैं. प्राय: देखा गया है कि 'कर' का लोप तभी होता है, जब बाद में कोई गत्यर्थक क्रिया होती है (दे *आना*, ले *जाना*, ले *पहुँचना*). ऐसी गत्यर्थक क्रियाएँ हैं—*आ, जा,* पहुँच, *भाग,* चल, *?*फेंक, *?निकल.* अन्य स्थानों में 'कर' का लोप नहीं दिखायी पड़ता (*बैठ *पढ़ना*, *देख *लिखो*, *खा *सोओ*). 'कर' के लोप से बनी क्रियाएँ देखने में रंजक क्रिया लगती हैं और कई विद्‌वान रंजक क्रिया के प्रसंग में 'कर' लोप की क्रियाओं का उदाहरण दे भी देते हैं. इसकी पक्की पहचान है पुन: 'कर' के प्रयोग की संभावना तथा दोनों क्रियाओं का अर्थ की दृष्टि से अपना स्वतंत्र अस्तित्व. जहाँ 'कर' लोप से ऐसी क्रिया बने जो रंजक क्रिया लगे, वहाँ 'कर' का लोप नहीं किया जाता.

खा कर जाओ	खा जाना
(~* खा जाओ)	
ले जाओ	?

जल (कर) मरा, डूब (कर) मरा आदि प्रयोग इस रूप में रूढ़ हो चुके हैं और ऐसे और भी क्रिया रूप मिलेंगे, जहाँ 'कर' का लोप अन्य क्रियाओं के साथ भी होता दिखायी पड़ता है (काट *खाना*, फाड़ *खाना*, मर *खपना*).

(क) *करना*+*है, था, होगा,* √पड़, चाहिए

करना+√चाह

(ख) कृदंत क्रियाविशेषण – करने (के लिए)—मैं *खाना खाने घर जा रहा हूँ.* यह प्रयोग ऊपर (ए) के 'करने जा' (*हम जल्दी ही एक स्कूल खोलने जा रहे हैं*) से भिन्न है. यहाँ भी पहचान है 'के लिए' के आने की संभावना.

करते हुए—*वे लोग बात करते जा रहे हैं.* यह प्रयोग ऊपर (ऐ) के निरंतरता सूचक क्रिया रूप से भिन्न है, क्योंकि यहाँ अन्य क्रियाएँ भी आती हैं (*लोग दौड़ते आ रहे हैं*); और निरंतरता सूचक 'करता जाना' में कभी 'हुए' से विस्तार नहीं होगा. पिये (हुए)—पूर्ण पक्ष की यह क्रिया बाद के क्रिया वाक्यांश से भिन्न वाक्यांश है—*वह आदमी पिये पड़ा (हुआ) है.* निरंतरता सूचक क्रिया में भी पूर्ण पक्ष की क्रिया आती है—*दिल छोटा न करो. कोशिश किये जाओ* (देखें **कृदंत रूप—निरंतरता बोधक**). यहाँ भी ऊपर बताये अनुसार **किये हुए जाओ* नहीं आता. करते ही—*वे लोग अंदर आते ही हँसने लगे.* करते-करते—*मैं काम करते-करते थक गया.* इन संयुक्त क्रिया वाक्यांशों को अलग कर लें, तो बचे हुए क्रिया वाक्यांशों का विश्लेषण करना आसान होगा.

क्रियाविशेषणों के तिर्यक रूप 1. **गत्यर्थक** क्रियाओं के संदर्भ में हमने देखा कि गंतव्यसूचक शब्द तिर्यक रूप में आता है, जैसे, *मैं हवाई अड्डे जा रहा हूँ. तुम उस जगह आओ.* यह बात अन्य क्रियाविशेषणों पर भी लागू होती है. क्रिया-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विशेषणों का प्रयोग तिर्यक रूप में होता है, जिसे हम पुल्लिग शब्दों या निर्देशक सर्वनामों के रूप परिवर्तन से जान सकते हैं.

2. क्रियाविशेषण कई प्रकार के हैं, जिनमें स्थानवाचक, समयवाचक तथा रीतिवाचक प्रमुख हैं और अन्य क्रियाविशेषणों की रचना भिन्न अर्थ-प्रयोजनों से परसर्गों के द्वारा होती है. इन क्रियाविशेषणों के रूप से प्रकट होता है कि क्रियाविशेषण तिर्यक रूप में आते हैं. *मेरे कमरे में, अगले मंगलवार को, छोटे-से चाकू से* आदि **परसर्ग** युक्त वाक्यांश हैं, जो तिर्यक रूप में आते हैं. लेकिन कई क्रियाविशेषण ऐसे हैं, जिनमें कोई परसर्ग नहीं लगता, फिर भी वे तिर्यक रूप में आते हैं (तुलना कीजिए, *सवेरे–कमरे में*). कुछ विद्वानों का मत है कि 'सवेरे' आदि में पहले परसर्ग का प्रयोग होता था, लेकिन परसर्ग के लोप के बाद भी तिर्यक रूप बने रहे. मैंने भी अपनी तरफ़ से इसके प्रमाण ढूँढ़ने के प्रयत्न किये और असफल रहा; लेकिन पुष्ट प्रमाणों के अभाव में मैं ऊपर का तर्क मानने में असमर्थ हूँ.

3. आगे हम तीन प्रमुख क्रियाविशेषणों के कुछ रूपों को देखेंगे. पहले से ही यह कह देना आवश्यक होगा कि परंपरा से ही ऐसे तिर्यक रूपों का प्रचलन हुआ है और हम हर जगह अपनी तरफ़ से परसर्ग छोड़ कर तिर्यक रूप नहीं अपना सकते.

3.1. स्थानवाचक शब्द–*इस/इसी, उस/उसी जगह* (*इस जगह में, इस स्थान में, *इस स्थान), *के यहाँ* (अर्थात, *के घर में*, *के यहाँ में), *के घर* (*राम के घर एक लड़का हुआ है* ~*के घर में*), *इस ओर, उस तरफ़, इस/इसी रास्ते*.

3.2. समयवाचक शब्द–प्रायः काल की इकाई सूचित करने वाले शब्द **क्षण**, *दिन* के साथ परसर्ग नहीं आते. उदाहरण देखिए :

इस/इसी/उस/उसी + क्षण/दिन/हफ़्ते/महीने/साल
(*यह/यही/वह/वही) (*हफ़्ता/महीना)
अगले/पिछले/दूसरे + क्षण/दिन/हफ़्ते/महीने/साल
(*अगला/पिछला/दूसरा) (*हफ़्ता/महीना)
मैं इस साल बंबई जा रहा हूँ (*यह साल)
वह दूसरे दिन मेरे घर पहुँचा (*दूसरा दिन, *मेरा घर)
तुम अगले हफ़्ते/महीने आओ (*तुम अगला हफ़्ता/महीना आओ)
हम पिछले साल कलकत्ता में थे (*पिछला साल)
उस दिन मैं बंबई में था (*वह दिन)

3.2.1. बहुवचन शब्दों के प्रयोग देखिए :

इन/इन्हीं/उन/उन्हीं + दिनों

उन दिनों मैं बंबई में था (?उन दिनों में, *वे दिन/वो दिन). परंपरा के अभाव

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के कारण ही हम निम्नलिखित वाक्य नहीं बोल सकते, क्योंकि ये खटकते हैं.

?अगले युग एक महापुरुष का अवतार होगा.

?अगली शताब्दी इस देश का विकास होगा.

निम्नलिखित वाक्यों में विकल्प की संभावना देखिए :

*मैं सितंबर में नया व्यापार शुरू कर रहा हूँ (*सितंबर).*

आप पिछले सितंबर/सितंबर में यहाँ आये थे.

इम्तहान सोमवार को है (?सोमवार है).

अगले सोमवार/सोमवार को मेरे घर एक पार्टी है.

तुम इतवार को आओ (?इतवार)

*1970 में वहाँ अधिवेशन हुआ था (*1970)*

3.3. रीतिवाचक शब्द–बहुत से रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्द संज्ञा में 'से' लगने से बनते हैं. ऐसे शब्दों में 'से' का लोप संभव नहीं है. कुछ क्रियाविशेषण शब्द विशेषणों से निष्पन्न हैं और हमेशा एकारांत में आते हैं. इन रूपों को आप तिर्यक रूप मान सकते हैं. उदाहरण देखिए–अकेले (अकेला), धीरे-धीरे (? < धीरा), धीमे-धीमे (तुलना कीजिए–धीमी गति), आहिस्ते, आहिस्ते-आहिस्ते, हौले-हौले (? हौला–विशेषण). रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्दों का प्रयोग देखिए–*इस/इसी, उस/उसी, जिस+तरह/प्रकार* (~*इस/उस/जिस तरह से*). परंपरा के अभाव में *जिस रीति, *उस रीति, *इस पद्धति आदि प्रयोग नहीं मिलते.

4. अन्य क्रियाविशेषणों के प्रयोग हैं–*इसलिए, इस बहाने, इसी मारे* आदि.

5. परसर्गीय शब्दों की रचना में भी तिर्यक रूपों की बात देखी जा सकती है. परसर्गीय शब्दों से पहले 'के/की' आते हैं, कहीं 'का' नहीं. इन शब्दों में अगर बाद में कोई आकारांत पुल्लिग शब्द आता हो, तो वह भी तिर्यक रूप में प्रयुक्त होता है. *के लिए, के वास्ते, के मारे, के बहाने, के सहारे, के बदले, के आसरे,* आदि. *द्वारा, बिना* आदि संस्कृत शब्द हैं, *अलावा, सिवा* (~सिवाय) फ़ारसी शब्द हैं. इस कारण ये बिना बदले, मूल रूप से प्रयुक्त होते हैं.

6. इसी तरह क्रियाविशेषण या अव्यय वाक्यांशों के बीसियों प्रयोग मिलते हैं, जहाँ इनका तिर्यक रूप ही प्रयुक्त होता है. कुछ अन्य उदाहरण देखिए–*आप के कहे अनुसार, कहे बिना, मुझसे जाने-अनजाने गलती हो गयी, तुम्हारे समय पर न आने के कारण, बिना सोचे-समझे, इस बार.*

7. जहाँ कृदंत रूप क्रियाविशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं, वहाँ भी उनका तिर्यक रूप देखा जा सकता है. *लेटे-लेटे, आते ही, जाते-जाते* आदि. इनकी विस्तृत चर्चा के लिए देखिए–**कृदंत क्रियाविशेषण**.

क्रियार्थक संज्ञा 1. क्रियार्थक संज्ञा में क्रिया रूप (*जाना, आना, पढ़ना* आदि) संज्ञा की तरह प्रयुक्त होता है. यह पुल्लिग संज्ञा शब्द है (*टहलना अच्छा होता है.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करने में), लेकिन कभी बहुवचन में नहीं आता. *सवेरे टहलना अच्छी आदत है* इस वाक्य में *टहलना* इस वाक्य के व्याकरणिक कर्ता के रूप में आता है. लेकिन यह मात्र व्यापार है और व्यापार का वास्तविक कर्ता कोई तो होगा. यहाँ *टहलना* अन्य सभी कृदंत विशेषणों की तरह अंतर्निहित वाक्य संरचना है, जिसे निम्नलिखित वाक्यों में देख सकते हैं :

टहलना अच्छी आदत है → यह अच्छी आदत है कि (कर्ता?) टहले
यह अच्छी आदत है
कर्ता + टहले

मेरा जाना आवश्यक है → यह आवश्यक है कि मैं जाऊँ
यह आवश्यक है
मैं जाऊँ

यद्यपि *मेरा जाना, तुम्हारा बोलना* आदि विशेषण-विशेष्य की संरचना जैसे लगते हैं, वास्तव में अंतर्निहित संरचना में इनमें कर्ता-क्रिया का संबंध है. यही कारण है कि व्याकरणिक कर्ता आदि कर्ता के किसी गुण को प्रकट नहीं करते (देखें **कर्ता की अवधारणा**).

2. बहल इसे (शायद ऊपरी साम्य के कारण) क्रिया रचना के भीतर लेते हैं. आपके अनुसार 'जाना' के रूप — Aspect + Indicative हैं. आपका वर्गीकरण उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है (बहल 1967) :

		पक्ष		**पक्षरहित**	
		पूर्ण	**अपूर्ण**	**निश्चयार्थक**	**अनिश्चयार्थक**
काल	+ भूत	गया था	जाता था	जाना था	
	+ अभूत	गया है	जाता है	जाना है	
अर्थ	+ अनुमान	गया होगा	जाता होगा	जाना होगा	जाएगा
	— अनुमान	गया हो	जाता हो	जाना हो	जाए
शर्त		गया होता	जाता होता	जाना होता	

हम पहले ही देख चुके हैं कि क्रियार्थक संज्ञा अंतर्निहित रचना है. ऊपरी रचना साम्य के अलावा ऐसा कोई संरचनात्मक गुण नहीं है, जिससे *करता है—करना है* आदि को समान माना जा सके. प्रयोग के तौर पर क्रियार्थक संज्ञा को संज्ञा ही मानना विश्लेषण का एक प्रकार है :

मैं (संज्ञादि) चाहता हूँ.
मुझे (संज्ञादि) चाहिए.
मुझे (संज्ञादि) है.
मैं (संज्ञादि) पसंद करता हूँ.

संज्ञादि → संज्ञा शब्द
क्रियार्थक संज्ञा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिस तरह से *मुझे (बुख़ार) है* में *मैं* अनुभवकर्ता है और *बुख़ार* उसकी (शारीरिक) स्थिति का विवरण देता है, उसी तरह *मुझे जाना है* में *जाना* मानसिक स्थिति का विवरण देता है. इस तरह *करना है* आदि को क्रिया रचना न मान कर संज्ञा+स्थिति तथा काल सूचक क्रिया *है* की रचना मानना अधिक तर्कसंगत होगा.

2.1. यह सवाल उठ सकता है कि अगर *मुझे करना है* को कर्ता+पूरक+है की रचना मान सकते हों, तो इसी रूप में *वह करता है* को वह+पूरक विशेषण+है की रचना क्यों न मानें? फिर इन दोनों रचनाओं में कहाँ अंतर रह जाता है? यहाँ भी सवाल ऊपरी साम्य के आधार पर ही उठ सकता है और दोनों रचनाओं में कई आधारभूत अंतर हैं. (अ) भाषाओं में आम तौर पर संज्ञा और क्रिया के वर्गों का अंतर होता है; यह भाषाओं का सार्वभौम तत्व है. क्रियाओं में भी स्थिति सूचक क्रियाएँ होती हैं, व्यापार सूचक क्रियाएँ होती हैं. यह भी सार्वभौम तत्व है. अगर ऊपर के सवाल को सही मान लें, तो हिंदी में कोई व्यापार सूचक क्रिया नहीं रह जाएगी. (आ) मुझे · · · है की रचना में केवल स्थिति की सूचना दी जाती है. यहाँ रचना के आग्रह से केवल कोई संज्ञा शब्द आ सकता है. इस कारण *जाना* आदि संज्ञा हैं, अर्थात *करना* और *करता* क्रमशः संज्ञा और विशेषण हो सकते हैं. इस तरह दोनों रचनाओं को एक नहीं मान सकते. (इ) यद्यपि *वह सोता/सोया है* में बीच में विशेषण की बात कर सकते हैं, ये वास्तव में विशेषण नहीं हैं. इस अंतर को निम्नलिखित व्यतिरेक में देख सकते हैं:

मैं एक बार बंबई गया हूँ *मैं दो दिन से यहाँ आया* (*हुआ*) *हूँ*

विशेषण के रूप में कृदंतों के प्रयोग के लिए देखें **कृदंत-विशेषण**. (ई) दोनों में चौथा प्रमुख अंतर यह है कि *मैं जाना चाहता हूँ* में मैं+संज्ञा+चाह की रचना है. ऊपर के तर्क के अनुसार यहाँ मैं+संज्ञा+विशेषण+है की रचना माननी होगी, जो हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है. इन आधारों पर हम कह सकते हैं कि *करता है*, *करना है* आदि क्रिया रूप केवल ऊपरी साम्य रखते हैं; *करना है* समस्त क्रिया रूप है.

3. जिन वाक्यों में कर्ता में परसर्ग लगता है, उनमें क्रिया की अन्विति कर्म के अनुसार होती है. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियार्थक संज्ञा में अन्विति के कारण रूप परिवर्तन देखें:

हमें काम करना है/था	हमें मेहनत करनी है/थी
चाहिए	चाहिए
पड़ेगा	पड़ेगी
होगा	होगी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊपर के तर्क के आधार पर हमें कर्ता है, है आदि क्रिया और *काम करना* पूरक संज्ञा. फिर संज्ञा वाक्यांश के अंदर ऐसी अन्विति कैसे ? यह वास्तव में टेढ़ा सवाल है और इसका उत्तर मेरे पास नहीं है. लेकिन हिंदी में वैकल्पिक व्यवस्थाओं तथा परिवार की भाषाओं में समान व्यवस्थाओं में उत्तर ढूँढ़ा जा सकता है.

गुजराती में जहाँ संयुक्त क्रिया का उल्लेख होता है, वहाँ संज्ञा और क्रिया का संबंध कर्ता और क्रिया जैसा होता है और क्रिया के स्तर पर भी अन्विति दिखायी पड़ती है. *प्रयत्न करवो* (पुल्लिग), *काम करवुं* (नपुंसक लिंग), *महेनत करवी* (स्त्रीलिंग) 'प्रयत्न करना' आदि के अर्थ में द्रष्टव्य हैं. सिवा विकृत रूप *करवा मांड्यो* 'करने लगा' के, और सब जगह संयुक्त क्रियाएँ इसी रूप में आती हैं. हिंदी में मुझे + · · · +*है/था* आदि रचनाओं में ही करना/करनी आदि रूप मिलते हैं. निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त क्रिया धातु एक पुल्लिग संज्ञा शब्द के रूप में आता है :

(1) मुझे तस्वीर बनाना आता है

(1.1) मुझे तस्वीर बनाना पसंद है/अच्छा लगता है

(2) मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ

(3) मैं तस्वीर बनाना जानता हूँ

(4) तस्वीर बनाना मुश्किल है

(4.1) तस्वीर बनाने में बहुत समय लगता है

(5) सिगरेट पीना मना है

पंजाबी में वाक्य (1), (3) और (4) क्रमशः *मैं नू तस्वीर बनावणी आंदी है, मैं तस्वीर बनावणी जाणदा आं/तस्वीर बनावणी मुश्किल है* आएँगे और (2) की जगह *मैं तस्वीर बनावणी चाहवांगा*. (4.1) में गुजराती में हर जगह अविकारी, तिर्यक रूप *करवा* आदि है, पंजाबी में *करण* आदि. अतः यहाँ लिंग की समस्या नहीं है. (1) तथा (3) दोनों में मराठी, गुजराती में कृदंत रूप 'करता' आदि आता है. अतः यहाँ विकार की समस्या नहीं है. अन्यथा मराठी यहाँ हिंदी के समान है. इस तरह यद्यपि पंजाबी में क्रिया का उल्लेख करते समय क्रियार्थक संज्ञा में भी अन्विति नहीं होती, दोनों भाषाओं में हर जगह संज्ञा+क्रिया के उल्लेख में आंतरिक अन्विति है. हिंदी में कुछ हद तक यह प्रवृत्ति है. आजकल दिल्ली की हिंदी में, पंजाबी के प्रभाव से *टिकट/चाय मिलनी मुश्किल है, बारिश होनी शुरू हो गयी/लग पड़ी, मुझे हिंदी बोलनी आती है* जैसे नये प्रयोग प्रचलन में आ रहे हैं. उल्लेखनीय है कि अभी तक कहीं **मैं फिल्म देखनी चाहता हूँ* का प्रयोग प्रचलन में नहीं आया है.

3.1. हिंदी में अन्विति की व्यवस्था को निम्नलिखित उदाहरणों में देख सकते

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं. (अ) *करना पड़ेगा* के संदर्भ में अन्विति की तिहरी व्यवस्था है. अधिकतर हिंदी भाषी *काम करना पड़ेगा, मेहनत करनी पड़ेगी* के वाक्यों में संज्ञा के अनुसार करना में लिंग-वचन की अन्विति दिखाते हैं. बहुत थोड़े-से लोग *करना पड़ेगा* आदि को अविकारी मानते हैं. उर्दू शैली में *करना* में विकार नहीं होता, केवल *पड़ेगा* में अन्विति दिखायी पड़ती है. *मुझे काम करना पड़ेगा/मेहनत करना पड़ेगी.* लेकिन बाद के दोनों प्रयोग मानक, बोलचाल की भाषा में नहीं हैं, इनका प्रयोग सीमित वर्ग द्वारा होता है. (आ) *मुझे तस्वीर बनानी आती है, मुझे रुपये कमाने आते हैं* आदि प्रयोग फिलहाल दिल्ली तक ही सीमित हैं, शायद कल की भाषा की व्यवस्था बन जाएँ. ऊपर 3 की चर्चा के संदर्भ में यहाँ *बनाना* का विकारी होना अनावश्यक है. (इ) दिल्ली की हिंदी में *घड़ी चलनी शुरू हो गयी, लोग आने शुरू हो गये* के प्रयोग मिलते हैं. हिंदी में दोनों ही वाक्य 'लग' से बनेंगे. *घड़ी चलने लगी. लोग आने लगे.* अगर कोई वाक्य 'शुरू करना' से बनाना हो, तो दूसरा वाक्य बनेगा *लोगों का आना शुरू हुआ.* यहाँ वर्ण्य विषय 'आना' है, न कि 'लोग'. अतः अन्विति 'आना' के साथ है, *शुरू हुआ* 'आना' के संदर्भ में प्रयुक्त है.

4. अंतर्निहित वाक्य रचना होने के कारण *आना* का **संभावनार्थ क्रियाओं** से घनिष्ठ संबंध देखा जा सकता है. अहिंदी भाषी प्रायः क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग करते हैं, जहाँ संभावनार्थ रूप की आवश्यकता होती है.

*सरकार चाहती है (कि) पेड़ काटना. (कि पेड़ काटे जाएँ)
*मैं चाहता हूँ (कि) कहीं दूर जाना. (कि कहीं दूर जाऊँ)
*कहाँ चलना (कहाँ चलें~कहाँ चलना है~कहाँ चला जाए)
*अच्छा है सब चलना (सब चलें, तो अच्छा है)
*मुझे भी एक मिलना (मुझे भी एक मिले)

4.1. मैं बहल के विश्लेषण के एक आधार से सहमत हूँ. हिंदी क्रिया में पक्ष तथा काल के आधार पर क्रिया रूप वर्गीकृत हैं. लेकिन अगर हम बिना पक्ष-काल व्यवस्था के उस व्यापार का उल्लेख करना चाहें, तो *करना* वहाँ काम आता है. चूँकि वह व्यापार मात्र है, संज्ञा की तरह आता है. यही कारण है कि यह आसानी से कर्ता, कर्म, पूरक आदि स्थानों में आ जाता है और लगभग सभी क्रियाएँ क्रियार्थक संज्ञा के रूप में प्रयोग में आती हैं. **विधि** रूप *तुम आना/जाना/सोना* आदि में भी हम केवल व्यापार का संकेत देते हैं, आज्ञा नहीं देते.

ख 1. इस वर्ण का पुराना रूप है ख, जो मानक लिपि में स्वीकृत नहीं है. वह पुराना रूप र+व का वर्ण गुच्छ समझा जा सकता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. [ख] अघोष महाप्राण कंठ्य स्वन है. महाप्राण ध्वनि होने के कारण गुच्छों में इसका स्थान अघोष अल्पप्राण स्पर्श के बाद होगा, जैसे *मक्खी*, *उत्खनन*.

ख़िलाफ़ 1. हिंदी में के *ख़िलाफ़* परसर्गीय शब्द है. *विद्रोहियों ने देश के ख़िलाफ़ कार्य किये.*

2. *ख़िलाफ़* से बनने वाले संज्ञा शब्द के बारे में कुछ भ्रम है. कुछ जगह *ख़िलाफ़ी* का प्रयोग होता है और कुछ जगह *ख़िलाफ़त* का. इनमें पहला शब्द ख़िलाफ़ कार्य करने के अर्थ में ठीक है. *ख़िलाफ़त* सही नहीं है. *ख़िलाफ़त* का वास्तविक अर्थ है 'ख़लीफ़े की पदवी'. *ख़िलाफ़* से अरबी व्याकरण से बनने वाला दूसरा संज्ञा शब्द *मुख़ालिफ़त* हिंदी में पंडिताऊ प्रयोग है. *ख़िलाफ़ी* संयुक्त शब्दों में भी दिखायी पड़ता है, जैसे, *वादाख़िलाफ़ी*.

खोमचा, खोंचा हमने **अ-लोप** में चर्चा की कि तीन वर्ण वाले शब्दों में मध्य में 〈म〉 आदि नासिक्य आने पर उसे अनुस्वार से लिखा नहीं जा सकता. **खोमचा** शब्द का कहीं-कहीं *खोंचा* रूप मिलता है. उन दोनों में उच्चारण भेद तो है ही, साथ ही वर्तनी के स्तर पर एक रोचक तुलना भी है. *खोमचा* संज्ञा शब्द है, *खोंचा* 'खोंचना' का पूर्ण पक्ष रूप. इस कारण ये दोनों अलग शब्द हैं, एक शब्द की वैकल्पिक वर्तनी वाले शब्द नहीं.

-ख़ोर, -ख़ोरी '-ख़ोरी' का अर्थ 'खाना' है और '-ख़ोर' का 'खाने वाला'. कुछ शब्द देखिए—*घूसख़ोर*, *घूसख़ोरी*, *हरामख़ोर* (बिना मेहनत किये बैठकर खाने वाला), *आदमख़ोर* (आदमी को खाने वाला शेर आदि), *चुगलख़ोर* (कान भरने वाला), *हवाख़ोरी* (हवा खाने अर्थात सैर करने निकलना). 'खाना' के या उस जैसे कई मुहावरेदार प्रयोग 'ख़ोर' के साथ भी मिलते हैं, जबकि दोनों भिन्न स्रोत के हैं.

गत्यर्थक क्रियाएँ 1. हिंदी में कुछ क्रियाएँ गत्यर्थक हैं, याने एक जगह से दूसरी जगह जाने का अर्थ प्रकट करती हैं. गत्यर्थक क्रियाओं में, इस तरह दो स्थानवाची शब्द होते हैं, भले हर जगह उनका उल्लेख न किया जाए. *राम बंगलूर गया. राम यहाँ से गया. राम यहाँ से बंगलूर गया* एक स्थान को हम उद्‌गम तथा दूसरे को गंतव्य कहेंगे.

2. गत्यर्थक क्रियाओं की संज्ञा सीमित है—*आना*, *जाना*, *पहुँचना*, *चलना*, *भागना* इसके प्रमुख उदाहरण हैं. अगर गत्यर्थक क्रियाओं के साथ गंतव्य का उल्लेख हो, तो हिंदी में वह बिना परसर्ग के आता है, लेकिन तिर्यक रूप में आता है. आकारांत पुल्लिग शब्द एकारांत बन जाते हैं. संज्ञा से पहले के अन्य निर्देशक सर्वनाम तथा विशेषण भी तिर्यक रूप में आते हैं. *मैं राम के घर गया. तुम शाम को*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हवाई अड्डे आ जाओ. मैं ठीक साढ़े दस बजे अपने दफ़्तर पहुँचा. आप लोग उस जगह जाइए. तुम इस किनारे आ जाओ.

3. गंतव्य सूचित करने वाले शब्द में परसर्ग 'को' या 'में' नहीं लगता. *मैं मेले में जा रहा हूँ. पिता जी एक शादी में गये हैं. याद है, आज मीटिंग में चलना है. मैं पढ़ाई के बाद सेना में जाना चाहता हूँ.* इन वाक्यों में जाना/चलना के साथ गंतव्य का उल्लेख नहीं है. ये ऐसे कार्य/संस्था/संगठन हैं, जिनमें व्यक्ति प्रतिभागी या सदस्य की हैसियत से शामिल होता है, भाग लेता है. यहाँ गंतव्य तथा कार्य में योगदान इन दोनों प्रयोगों में अंतर देखा जा सकता है.

मैं बंबई जा रहा हूँ (यात्री का गंतव्य)

मैं आप के गाँव में आया हूँ (प्रेक्षक या निवासी बन कर)

वह फ़िलिप्स कंपनी गया है (क्षणिक काम के लिए)

वह फ़िलिप्स कंपनी में जा रहा है (नौकरी पर)

**वह सेना जा रहा है* ('सेना' गंतव्य नहीं)

वह सेना में जा रहा है

**वह एक/कोई गाँव जा रहा है* (गंतव्य का स्पष्ट उल्लेख नहीं है)

मैं एक गाँव में जा रहा हूँ/गया था

हम नदी किनारे जा रहे हैं

**हम नदी किनारे में जा रहे हैं* ('नदी किनारा' गंतव्य ही हो सकता है, संस्था या संगठन नहीं)

4. यद्यपि यह कहा गया था कि गत्यर्थक क्रियाओं वाले वाक्यों में गंतव्य के साथ 'में, को' आदि परसर्ग नहीं लगते, फिर भी इनके साथ 'तक' का प्रयोग देख सकते हैं. *आप कहाँ जा रहे हैं? बाज़ार तक जा रहा हूँ. बस, यहीं, स्कूल तक जा रहा हूँ. चलो मेरे साथ, फ़ौवारे तक.* वास्तव में 'बाज़ार, स्कूल, फ़ौवारे' गंतव्य स्थान नहीं हैं, बल्कि गंतव्य की ओर संकेत मात्र कर रहे हैं. संभव है, जो स्कूल तक जा रहा है, उसका स्कूल में कोई काम न हो और वह स्कूल के सामने या आसपास किसी के घर जा रहा हो. 'तक' गंतव्य का अर्थ नहीं देता, लेकिन कभी-कभी गंतव्य के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है. स्टेशन जाने वाला कह सकता है, *बस स्टेशन तक गया था.*

5. गत्यर्थक क्रियाएँ 'जाना' और 'चलना' परिपूरक हैं. जब किसी व्यक्ति के साथ जाने की बात आती है, तब वक्ता और श्रोता के बीच 'चलना' का प्रयोग होता है, अन्य व्यक्तियों के साथ 'जाना'. इसे निम्न प्रकार से एक आरेख से दिखाया जा सकता है :

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
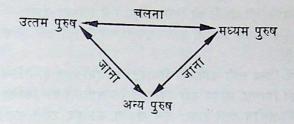
*मैं तुम्हारे साथ चलूँगा. आप मेरे साथ बाज़ार चलिए. चलिए, हम कहीं चाय पीने चलें (*जाएँ). तुम चलो, मेरे साथ. राम मेरे/तुम्हारे/आप के साथ जाएगा. तुम उन लोगों के साथ जाओ. मैं उसके/उन लोगों के साथ नहीं जाऊँगा.*

5.1. किसी संस्था या संगठन में शामिल होने के अर्थ में 'चलना' का प्रयोग संदिग्ध है. *मैं शाम को एक शादी में जा रहा हूँ. तुम भी चलोगे?* इसमें दूसरा उपवाक्य गत्यर्थक ही है, क्योंकि श्रोता उस शादी का सदस्य नहीं है. यह बात निम्नलिखित वाक्यों से स्पष्ट हो सकती है—**मैं तुम्हारे साथ एक गाँव में/सेना में/फ़िलिप्स कंपनी में चलूँगा. ?मैं यह नौकरी छोड़ कर सेना में चला जाऊँगा. तुम भी चलो.*

5.2. चूँकि 'चलना' श्रोता और वक्ता के बीच में ही प्रयुक्त होता है, संवाद में *साथ चलना* मुहावरे के रूप में प्रयुक्त होता है—*तुम साथ चलो. आप बाज़ार जा रहे हैं? मैं भी साथ चलूँगा.* लेकिन 'साथ जाना' कोई मुहावरा नहीं हो सकता, वहाँ संज्ञा का प्रयोग अनिवार्य है. *मैं उसके साथ जाऊँगा. *कई लोग स्टेशन जा रहे हैं. मैं भी साथ जाऊँगा. वे लोग बाज़ार जा रहे हैं. मैं भी उनके साथ जाऊँ? (*मैं भी साथ जाऊँ).*

गरम, गर्म; गरमी, गर्मी हमने **अ-लोप** के संदर्भ में देखा कि तीन अक्षर वाले अक्षरों में अंतिम अ-लोप होता है और अंतिम दीर्घ स्वर के कारण मध्य अ-लोप होता है. इस कारण *गरमी, गर्मी* दोनों के उच्चारण समान हैं, भले इनमें वर्तनी की भिन्नता क्यों न हो. लेकिन *गर्म* तथा *गरम* भिन्न रूप में उच्चरित होते हैं. तीन अक्षर के अकारांत शब्दों में मध्य अ-लोप आम तौर पर नहीं होता. **गल्त, *तिल्क (<तिलक), *उल्ट (<उलट).* इस कारण *गरम* का उच्चारण *गर्म* बनना अधिक सही नहीं लगता. *गरम* तथा *गर्म* भिन्न उच्चारण वाले विकल्प हैं. हमें नीचे के दोनों युग्मों से अपने उच्चारण के अनुसार एक को चुनना होगा :

गरम /गरम्/, गरमी /गर्मी/, गरमियों /गर्मियों/

गर्म /गर्म्/, गर्मी /गर्मी/, गर्मियों /गर्मियों/

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्तनी का चयन उच्चारण के प्रचलन पर आधारित होगा. अर्थात, उच्चारण /गर्म्/ या /गरम्/ ही वर्तनी को निश्चित करने में सहायक होगा.

गलती गलत+ई से बने होने के कारण इसका रूप **गल्ती* नहीं हो सकता. *गलती* शुद्ध रूप है.

गाली हिंदी में (अन्य सभी भाषाओं की तरह) गालियाँ बहुत हैं, लेकिन 'गाली' पर साहित्य नहीं मिलता. शायद यही कारण है कि गालियों का विश्लेषण करने में भी लोगों को संकोच होता होगा. इस संकोच को दूर रखते हुए इसपर कुछ लिख रहा हूँ.

हर भाषा में गाली होती है, समाज का हर व्यक्ति गाली देता है. *गधा* कहना भी गाली है, कहते अधिक झिझक नहीं होती. इन प्रयोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अर्थगत महत्त्व पर प्रकाश डालना ही मेरा उद्देश्य है. गाली ऐसी उक्ति होती है, जिससे श्रोता या वर्ण्य व्यक्ति का अवगुण प्रकट हो और इसका उद्देश्य प्रायः उस व्यक्ति का दिल दुखाना होता है. किन्हीं कारणों से उस व्यक्ति से रुष्ट या असंतुष्ट या पीड़ित होने पर व्यक्ति गाली देता है.

2. भाषाविज्ञान की दृष्टि से गाली का शब्द दुहरा प्रतीक होता है. *गधा* शब्द उस प्राणी का प्रतीक है, गाली के रूप में गधे का कोई गुण (अवगुण?) उस व्यक्ति के चरित्र या स्वभाव का प्रतीक होता है, जिसे हम अपमानित करना चाहते हैं. इस दुहरी प्रतीकात्मकता में हमारी संस्कृति कार्य करती है. *भिंडी* तमिल में गाली है, हिंदी में नहीं. यहाँ वस्तु का गुण गाली का कारण नहीं, बल्कि शब्द का स्वनिक रूप है, तमिल में दुम लाड़ का शब्द है (बंदर का संकेत), हिंदी में झिड़कने का. जब कोई शब्द गाली के रूप में प्रतीक बनता है, तब वह समाज द्वारा स्वीकृत शब्द बनता है. हम अपनी इच्छा से वस्तु के अन्य गुणों का प्रतीकत्व नहीं ले सकते. मेहनती आदमी की प्रशंसा *वह गधे की तरह काम करता है* से नहीं कर सकते. किसी नौकरानी को *कुतिया की तरह वफ़ादार* नहीं कहा जा सकता. स्वीकृत प्रतीक अपने अर्थ से विचलित नहीं होते. अन्य भाषिक शब्दों की तरह गाली के शब्द भी भाषा-सापेक्ष होते हैं; उनका प्रतीकत्व यादृच्छिक होता है.

गाली के दो रूप हैं—संबोधन तथा अप्रत्यक्ष कथन. संबोधन की गालियों में संबोधनकारक में संज्ञा पद (*गधे*), विधि में वाक्य (*भाड़ में जाओ*), निश्चयार्थ वाक्य या/तथा कहावतें आते हैं. अप्रत्यक्ष गालियों में संज्ञा पद (*गधा*), संभावनार्थ वाक्य (*भाड़ में जाए*), निश्चयार्थ वाक्य (*वह तो उल्लू है*) या/तथा कहावतें आते हैं.

3. यहाँ हम उस कच्चे माल के बारे में देखें, जिससे गालियाँ बनती हैं.

सब्जी—*बैंगन, कद्दू, टिंडा*

जानवर—*गधा, सुअर, उल्लू, भैंस, गधे की दुम, कुतिया, कुत्ता*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शरीर के अंग (सिर्फ़ यौनांग)–लौंड़ा, लौंड़े का, चूतिया
रिश्ते के शब्द–साला, साली, ससुरा, ससुरी
मनुष्य जाति–म्लेच्छ, नीच, अधम
पैदाइश– · · · की औलाद, हरामी, हरामज़ादा, दोगला, बदज़ात
अकुशलता–बेवकूफ़, मूर्ख, नादान, नासमझ, सिरफिरा
दुर्गुण–चोर, बदमाश, उचक्का, कमीना, चुगलख़ोर
अंग दोष–लूला, लंगड़ा, काना, बहरा, अंधा, पागल, लंबू~ऊँट, बंदर-सा मुँह
पेशा–वेश्या, रंडी, चमार, मोची, बनिया
यौन व्यापार–गाँड़, मादरचोद (<मादर फ़ारसी–माँ) तथा इस तरह बहन, बेटी आदि रिश्तों के साथ के यौन व्यापार के शब्द.

इन वर्गों में विस्तार तथा गालियों की संख्या में वृद्धि वक्ता अपनी रुचि तथा अनुभव से कर सकते हैं. हर जानवर गाली का प्रतीक नहीं बनता, हर पेशा गाली का रूप नहीं बनता. *चमार*, *मोची* आदि निम्न जाति के पेशे होने के कारण गाली गिने जाते हैं. *बनिया* कंजूसी का प्रतीक है. कुछ रिश्ते के शब्द पत्नी के रिश्तेदारों के प्रति समाज के विचारों के कारण गाली बनते हैं. वही सब्ज़ी गाली होती है, जो सस्ती होती है, अतः उपेक्षा या तिरस्कार के योग्य है. अतः तिरस्कार या अपमान की मात्रा के अनुसार इन शब्दों का गाली के रूप में प्रयोग होता है. शारीरिक दोष वाला व्यक्ति स्वयं ही हीन वृत्ति से ग्रस्त होता है. उसे प्रकट रूप से व्यक्त कर उसका दिल दुखाया जा सकता है. यौनांग या यौन व्यापार की गालियों का अपना सांस्कृतिक कारण है. पत्नी के साथ संभोग को गाली नहीं कह सकते, क्योंकि यह मान्य सामाजिक व्यवस्था है. लेकिन सामाजिक व्यवस्था में बेटी, बहन या माँ के साथ यौन संबंध सबसे घृणित व्यापार है. अतः इन गालियों से व्यक्ति श्रोता के बारे में अपनी अतीव घृणा का भाव प्रकट करता है. वक्ता का श्रोता की पत्नी के साथ संभोग की गाली अपमानित करने के उद्देश्य से दी जाती है. इसी तरह *रंडी* कहना तीव्र अपमान करना होता है. इस प्रकार सब्ज़ियों के नाम से लेकर गर्हित यौन संबंधों तक भिन्न संकेतों और भिन्न प्रभाव वाली गालियों की एक शृंखला है.

4. यहाँ हम गालियों के प्रकार्यों के बारे में देखें–(अ) झिड़कना : छोटी-मोटी गलतियों पर असंतोष या हल्का गुस्सा प्रकट करने के लिए हल्की गालियाँ दी जाती हैं. *बंदर*, *गधा*, *उल्लू*, *सुअर कहीं का*, *बैंगन*, *कद्दू*, *कम्बख़्त*, *अंधा है क्या*, *अक्ल नहीं है क्या* इस वर्ग की गालियाँ हैं. यहाँ व्यक्ति व्यंग्य का भी सहारा लेता है. (आ) अपमानित करना : इस वर्ग में तीव्र गालियाँ आती हैं–रिश्ते, अंग दोष, जाति, पेशा, दुर्गुण के शब्द और वक्ता की हिम्मत के आधार पर यौन के शब्द

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भी. इस तरह शुरुआत हल्की गालियों से होती है. (इ) तीव्र वाक युद्ध : यौन की गालियाँ ऊपर की गालियों के क्रम में आती हैं. व्यक्ति शब्दों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि वाक्य स्तर पर भी गाली देता है–*जाओ, अपनी माँ चुदाओ* तथा इसी तरह यौन आचरण संबंधी अन्य गालियाँ. गाली की तीव्रता लड़ाई की तीव्रता के अनुरूप होती है. (ई) मित्रता में : **अभिवादन** में हमने देखा कि दो मित्र अनन्यता प्रकट करने के लिए आपस में गालियों का बराबर आदान-प्रदान करते हैं. जितनी अधिक गालियाँ, जितनी तीव्र गालियाँ, उतनी प्रगाढ़ मित्रता. यहाँ उद्देश्य दिल दुखाना नहीं होता. गालियों के चयन में कहीं कोई सीमा नहीं रहती; तीव्रता की सीमा परस्पर समायोजन के अनुरूप होती है. (उ) शाप देना : अपने दोष या क्षोभ के कारण व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शाप देता है; याने दूसरे के विनाश की कल्पना करता है. भाषावैज्ञानिक दृष्टि से इनका रूप विधि वाक्यों का होता है और विनाश की गति सूचित होती है. *तेरा करम फूटे, तेरा सत्यानाश हो, तू भाड़ में जाए, तेरा नास पिटे.* (ऊ) बच्चों से लाड़ में भी लोग गालियों का इस्तेमाल करते हैं. *बदमाश, पागल, बंदर/बंदरिया, शैतान, उल्लू* ऐसे थोड़े-से शब्द हैं. ये बच्चों की चंचलता, नटखटपन आदि की प्रशंसा में कहे जाते हैं. मैंने कुछ परिवारों में बच्चों को और तीव्र गालियाँ (परिहास में) देते सुना है. (ऋ) तकिया कलाम : कई लोग अपने वार्तालाप में कई जगह विरामादि चिह्नों की तरह *साला, ससुरा, कम्बख़्त* आदि शब्द बोलते रहते हैं. उनके लिए ये शब्द निरुद्देश्य हैं, निष्प्रयोजन हैं. अधिकतर ये शब्द खीझ या झल्लाहट के कारण बोले जाते हैं. कुछ लोगों की भाषा में ये सिर्फ़ आदत के कारण हैं. ये भाषण क्रम में स्थान पूर्ति के लिए आते हैं. एक उदाहरण देखिए–*बारिश आ गयी साली अचानक. आसपास देखूँ, तो साला कहीं कोई स्कूटर ही नज़र न आये.* कुछ व्यक्ति *बैनचोद* (<बहन) जैसे तीव्र शब्दों का भी तकिया कलाम के रूप में प्रयोग करते हैं. उन्हें फ़र्क नहीं पड़ता, वे तो वाक्य खंडों के बीच 'कामा' ही लगा रहे हैं, सुनने वालों की मुसीबत हो जाती है–ख़ासकर जब पास में महिलाएँ हों. सभी झेंप के मारे परेशान हो जाते हैं.

5. गालियों के चयन में व्याकरण का लिंग योगदान करता है. आदमी के लिए *गधा, कुत्ता, बंदर, भैंसा* कहेंगे, औरत के लिए *गधी, कुत्ती~कुतिया, बंदरिया, भैंस* आदि. उम्र का भेद गालियों के लिए महत्त्व नहीं रखता. खीझ में जब व्यक्ति बेजान वस्तुओं के लिए गाली निकालता है, तो भी लिंग की अन्विति के साथ. ख़राब हो गये पंखा, रेडियो, स्कूटर आदि के लिए *साला* या *ससुरा*; बत्ती, घड़ी, गाड़ी, साइकिल आदि के लिए *साली, ससुरी*.

इस संबंध में *ससुरा* और *ससुरी* पर विचार कर लें. रिश्ते के *ससुर* तथा *सास* शब्द गाली नहीं हैं. तिरस्कार में बहू 'सासू' भी कहती है. लेकिन ये रिश्ते के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द गाली नहीं हैं. ससुरा 'ससुर' से व्युत्पन्न है, [आ] का आगमन शायद उच्चारण सुविधा के लिए है. ससुरी इसका स्त्रीलिंग शब्द है, वास्तविक रिश्ते से कटा हुआ. गाली के चयन में भी लिंग का अपना स्थान है. औरतें *साला* या *साली* नहीं बोलतीं, क्योंकि उनका ऐसा कोई रिश्ता नहीं है. वैसे भी औरतें यौन के मामले में संकोचशील रहती हैं, अतः औरतें यौन संबंधी गालियाँ कम देती हैं. मद्रास का एक दिन का किस्सा याद आता है. मैंने सरे बाजार एक निम्नवर्गीय औरत को तमिल में दूसरी औरत से कहते सुना *मैं तेरे बाप को ··· दूँगी*. जैविक दृष्टि से बहुत अटपटी बात है. अगर वह ऐसा कर सकती है, तो भी कलंक उसी का होगा. लेकिन कहने वाली का उद्देश्य दूसरी औरत का अपमान करना है, न कि कथ्य व्यापार की कल्पना. इस उदाहरण से स्पष्ट है कि औरतें चाहें तो गाली में आदमी का मुकाबला कर सकती हैं. लेकिन लज्जा, परंपरा आदि के कारण वे अधिक मुखर नहीं होती.

6. गालियाँ वर्जित शब्द हैं. खुले यौन की चर्चा असभ्यता का लक्षण है. वैसे भी सज्जनता तथा सौहार्द की माँग है कि व्यक्ति लोगों को गाली न दें. इस भावना के विकास के साथ व्यक्ति में गालियों के शब्द कम होते जाते हैं. इस वर्जना के कारण व्यक्ति ख़ुद भी गाली नहीं देता, दूसरे की गाली को भी दुहराते हिचकता है. यह बात प्रायः लोगों के इस पुनः कथन में देखी जा सकती है—*उसने ऐसी गालियाँ दीं कि मुँह से कहते शरम आती है.*

कहानियों, उपन्यासों में पात्रों के मुख से पहले तीव्र गालियों का प्रयोग नहीं होता था. लेकिन अब लोग खुलेपन की ओर उन्मुख हो रहे हैं और कृष्णा सोबती, राही मासूम रज़ा जैसे लेखक गालियाँ लिखने से नहीं हिचकते. लेकिन अब भी गुप्तांगों के शब्द, यौनाचार के शब्द सहजता से नहीं लिखे जाते हैं और **अव्यक्त कथन** द्वारा गाली का संकेत किया जाता है. *मैं तेरी माँ* ···, *बहन* ···, *ब* ··· *द* आदि अव्यक्त कथन के लिखित रूप हैं.

गुप्त भाषा पंडे, दुकानदार अपने ग्राहकों से, चोर, ठग अपने शिकार से, सैनिक अपने दुश्मन से अपने इरादे, योजनाएँ छिपाना चाहते हैं, जिससे दूसरे के अज्ञान का लाभ उठाया जा सके. इस तरह वे एक वर्ग बना लेते हैं और अन्य व्यक्तियों के सामने बात करने के लिए गुप्त भाषा का प्रयोग करते हैं. गुप्त भाषा वर्ग-विशेष की भाषा होती है और अपरिचित व्यक्ति उस भाषा को समझ नहीं पाता. इस तरह पंडों की गुप्त भाषा, व्यापारियों की गुप्त भाषा, ठगों की गुप्त भाषा आदि भाषिक रूप मिलते हैं.

गुप्त भाषा में इशारे होते हैं और स्वीकृत शब्दों की जगह वर्ग-विशेष अपने शब्दों का प्रयोग करता है. इन नये शब्दों को उस वर्ग के व्यक्ति ही समझ पाते हैं. भक्ति मलिक (1977) के लेख से चोर-बदमाशों की भाषा के कुछ रोचक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरण दे रहा हूँ (कोष्ठक में उद्दिष्ट अर्थ दिये गये हैं) :

बंगाल में–*अढ़ाई पैसा* (पच्चीस रुपये), *इलाका गरम* (पुलिस से घिरा क्षेत्र), *कली* (औरत के होंठ), *कालीबाड़ी* (वेश्या का अड्डा)

बिहार में–*कागज़* (रुपये का नोट), *काँटा* (पुलिस का सिपाही), *काँटाघर* (पुलिस स्टेशन), *खोल* (पिस्तौल), *घड़ा* (औरत का नितंब), *खुल्लम खुल्ला* (सोने की अँगूठी)

गुप्त भाषा में केवल थोड़े-से शब्द बदले जाएँ, तो सुनने वाले संभाव्यता के सिद्धांत के आधार पर अर्थ ग्रहण कर सकते हैं. इस संभावना को भी दूर करने के लिए भाषा में कुछ ऐसे विकार पैदा किये जाते हैं, जिनके कारण समझना कठिन हो जाए. अनावश्यक स्वन परिवर्तन, व्याकरणिक नियमों का उल्लंघन, रूप परिवर्तन न करना, क्रिया पदों में लिंग-वचन आदि कोटियों का भेद न रखना ऐसे विकार के कुछ उदाहरण हैं.

गुरु 1. *गुरु* ही इस शब्द का सही रूप है. लेकिन जब से इसका व्यंग्यार्थ में प्रयोग होना शुरू हुआ है, इसके रूप में परिवर्तन आता जा रहा है. आश्चर्य नहीं अगर 20–25 साल में *गुरू* ही सही माना जाए.

2. अब स्कूल के अध्यापक 'मास्टर जी' या 'मास्साव' कहलाते हैं और विश्वविद्यालय के अध्यापक 'डाक्टर साहब'. *गुरु जी* का संबोधन बहुत सीमित हो गया है. लेकिन बोलचाल की भाषा में *गुरू*··· का संबोधन मित्रों में प्यार से और व्यंग्य में किसी के लिए भी होता है. ध्यान रहे कि यहाँ गुरु के साथ 'जी' नहीं लगता. सही मायने में किसी कला या विषय में प्रवृत्त करने वाले व्यक्ति को 'गुरु' कहने की प्रवृत्ति साहित्यिक या उच्च सामाजिक स्तर की भाषा में है. *कथा गुरु* आदि द्रष्टव्य हैं. इसी तरह किसी व्यक्ति से मिला सत्परामर्श *गुरुमंत्र* भी है.

3. *वह तो बड़ा गुरू है* **व्यंग्य** में व्यक्ति के चालाक या बदमाश होने का अर्थ देता है. *गुरु घंटाल* बदमाशों में बदमाश का या बहुत चालाक का अर्थ दे सकता है. धार्मिक नेता *गुरु जी* या *गुरुजी महाराज* कहलाते हैं.

ग्रहण, गृहीत संज्ञा के रूप में *ग्रहण, अनुग्रह, उपग्रह* आदि रूप हैं. विशेषण के रूप में *गृहीत, अनुगृहीत* आदि. **ग्रहीत, *अनुग्रहीत* गलत रूप हैं.

घर, गृह 1. यद्यपि *घर* 'गृह' से व्युत्पन्न शब्द है और दोनों कुछ अर्थ तक पर्याय हैं, *गृह* को पंडिताऊ (pedantic) शैली का शब्द तथा कुछ क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्द मानना उचित होगा. सामान्य बोलचाल में कोई *!मैं गृह जा रहा हूँ, !मेरा गृह* आदि का प्रयोग नहीं करता.

2. *गृहिणी, गृह प्रवेश, गृहनिर्माण* (घर बनाना) आदि पुराने पारिभाषिक शब्द

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं और इनमें 'घर' का प्रयोग नहीं होता.

3. नये पारिभाषिक शब्दों की रचना में यह किसी संस्था या संगठन के आंतरिक गठन से संबंधित शब्द है. *गृह मंत्रालय* देश की आंतरिक व्यवस्था से संबंध रखता है, *गृह युद्ध* देश के अंदर लोगों में आपसी युद्ध है, दूसरे देश से नहीं, *गृह प्रबंध* किसी संस्था के अपने प्रबंध की व्यवस्था सूचित करता है.

घिग्घी, घुग्घू, भब्भड़, झज्झर, घग्घर 1. कोई घी-घी करता रहे, तो कह सकते हैं कि उसकी घिग्घी बँध गयी. डर या आतंक के कारण घिग्घी बँध जाती है और गले से घी-घी की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ नहीं निकलती. *घिघियाना* भी यही अर्थ देता है. हम देख चुके हैं (देखें **नामधातु**) कि घिघियाना भी घी-घी करने का पर्याय है. इस तरह *घी-घी, घिघियाना, घिग्घी* तीनों को जोड़ने का आधार मिलता है. प्रथम अक्षर के ह्रस्व बनने के कारण व्यंजन /ग/ का आगम हुआ है. इसी तरह घू घू करने वाला पक्षी (उल्लू) घुग्घू कहलाता है.

भब्भड़ को *भड़भड़* से व्युत्पन्न संज्ञा मान सकते हैं. भड़भड़ करते हुए अधिक संख्या में लोगों का गुज़रना ही भब्भड़ है. अगर *भड़भड़* से *भब्भड़* मानें, तो झरझर से झज्झर (पानी का बरतन) है. इसी तरह घग्घर (एक नदी) घड़घड़ से है. इन पाँचों शब्दों की उच्चारण संबंधी एक विशेषता है. सामान्य रूप से हिंदी में /ब्भ/ तथा /ज्झ/ का योग अन्य किसी शब्द में नहीं है. /ग्घ/ भी एक और शब्द 'बग्घी' में मिलता है, और कहीं नहीं. इस विरलता के कारण शब्दकोशों में 'भभ्भड़', 'झज्जर' आदि वैकल्पिक रूप दीखते हैं. अंतिम तीन शब्दों में वर्तनी की एक सामान्य विशेषता है. *भड़भड़* आदि में व्यंजन का समीकरण (अनुवर्ती महाप्राण से) दीखता है. चूँकि हिंदी में महाप्राण+महाप्राण का योग नहीं मिलता, समीकरण वर्गीय हुआ है, पूर्ण नहीं. इस अनुमान को मान लें, तो इनकी व्युत्पत्ति, वर्तनी दोनों बातें स्पष्ट हो जाती हैं तथा प्रयोग वैविध्य का कारण भी मिल जाता है.

2. *घिघियाना, रिरियाना, मिमियाना, चुचुआना, धुंधुआना* आदि शब्दों के क्रमशः घीघी, रीरी, मेमे, चूचू, धूँधूँ से निष्पन्न होने का अनुमान किया जा सकता है (देखें **नामधातु**). अगर यह अनुमान सही है, तो ये नामधातु पूर्ण पुनरुक्त ध्वन्यात्मक शब्द माने जाएँगे. *घिघियाना* के मूल में घी घी तथा *मिमियाना* के मूल में मेमे को मानने का आधार है. इसी आधार पर *रिरियाना* के मूल में *रीरी* या *!रेरे* को मान सकते हैं, लेकिन ऐसे किसी अनुकरणात्मक शब्द का हिंदी में अभाव है. द्रष्टव्य है 'री-आवाज़' (बृहत् हिंदी कोश). नामधातु के बनने के बाद शायद मूल शब्द खो गया हो. √चू से चुचुआना, धूँ-धूँ करके जलना (<धूम्र) से अंतिम दो शब्द बने होंगे. हिंदी की प्रकृति के अनुरूप ये अनुकरणात्मक रूप दीर्घ में हैं और नामधातु में ह्रस्वीकरण हुआ है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घोषीकरण हिंदी के ऐतिहासिक विकास में शब्द में आये कई कंठ्य अघोष व्यंजन घोष बन गये. ऐसे कुछ, जिनके दोनों रूप प्रचलित हैं, यहाँ दिये जा रहे हैं— *भक्त-भगत, प्रकट-प्रगट, लोक-लोग, शाक-साग.*

चमत्कारक यह शब्द 'चमत्कार पैदा करने वाला' के अर्थ में -क प्रत्यय से व्युत्पन्न है. चमत्कारिक गलत शब्द है.

(के) चलते यह 'के कारण' के अर्थ में प्रयुक्त स्थानीय प्रयोग है और पूर्वी हिंदी की विशेषताओं में एक है. जहाँ-कहीं के चलते दिखायी पड़े, वहाँ इसकी जगह के कारण रखकर आप वाक्य का अर्थ पहचान सकते हैं. *बारिश के चलते हमारा सारा काम बिगड़ गया.*

चलना हिंदी में चलना शब्द के कई विशिष्ट प्रयोग हैं. आगे इन प्रयोगों को देखेंगे. 1. चेतन प्राणियों की, चलने के अवयवों से, जैसे पैरों से एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गति चलना से द्योतित होती है. *मनुष्य पैरों से चलता है. घोड़ा तेज़ चलता है. कछुआ धीरे-धीरे चलता है. क्यों दिनभर बिस्तर पर पड़े रहते हो? उठ कर चला करो. बच्चा आठ-नौ महीनों में पैरों से चलने लगता है.* अन्य प्राणी, जिनके पैर नहीं होते या जिनके पैरों की गति नहीं दिखायी पड़ती, उनकी गति सूचित करने के अलग-अलग शब्द हैं. जैसे, *चिड़ियाँ उड़ती हैं* (या) *ज़मीन पर फुदकती हैं. चीटियाँ, साँप आदि रेंगते हैं. मछलियाँ तैरती हैं.* वैसे किसी भी जीवित प्राणी के एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाने को भी चलना से अभिव्यक्त करते हैं. *साँप के पैर नहीं होते? फिर वह कैसे चलता है? क्या चिड़ियाँ ज़मीन पर चल सकती हैं? मछलियाँ एक जगह से चल कर . . .*

2. चलना एक गत्यर्थक क्रिया है. इस प्रयोग से किसी वस्तु या प्राणी का एक जगह से चल कर दूसरी जगह (गंतव्य) पहुँचने का अर्थ प्रकट होता है. इस अर्थ में चलना 'जाना' का पूरक है, उसका एक उपभेद है. विस्तृत चर्चा के लिए **गत्यर्थक क्रिया** देखिए.

3. चलना ऐसी मशीन के, जिसमें चलने वाले पुर्ज़े हों, काम करने का अर्थ प्रकट करता है. *यह घड़ी कल तक ठीक चल रही थी, आज अचानक बंद हो गयी. यह मोटर डीज़ल से चलती है. यह पंखा ख़राब है, नहीं चलता.* इस अर्थ में हम **मेज़ नहीं चलती, *अलमारी नहीं चलती* का प्रयोग नहीं देख सकते.

4. चलना अप्राणिवाचक वस्तुओं के संदर्भ में गतिसूचक है. इस अर्थ में पहाड़ भी चल सकता है, हवा तो चलती ही है. *यह गाड़ी तेज़ चलती है. जहाज़ पानी में चलता है, नदी में गति तो है,* लेकिन इसके लिए 'जाना' का प्रयोग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करते हैं.

5. चलना गति में आने तथा चलने के व्यापार के आरंभ का अर्थ प्रकट करता है. *हम लोग ठीक आठ बजे चलें. सीटी बजी और गाड़ी चली.* इस अर्थ में रंजक क्रिया 'चल देना' भी प्रयोग में आ सकती है.

6. चलना किसी कार्य व्यापार की अवधि का सूचक है. *यह फ़िल्म कई दिन से चल रही है. दोनों देशों के बीच सात साल तक लड़ाई चली. कार्यक्रम रात के ग्यारह बजे तक चला.*

7. चलना कृदंतों के साथ निरंतरता सूचित करता है. ऐसे प्रयोग हैं *करते चलो, देखते चलो, बढ़ते चलो* आदि.

8. चलना का एक विशिष्ट अर्थ है. जब कोई साधन किसी काम के लिए उपयुक्त हो, तो वहाँ *चलना* या *चल जाना* का प्रयोग किया जाता है. *आपके पास सौ रुपये होंगे? मेरे पास पचास रुपये ही हैं. इनसे आपका काम चल जाएगा? मक्खन नहीं मिला. मार्जरीन लेकर आया हूँ. ठीक है, चलेगा. इतना ही आटा है? यह तो नहीं चलेगा* (अर्थात, यह काफ़ी नहीं है).

9. चलना के कई अन्य मुहावरेदार प्रयोग हैं, जिन्हें आप जगह-जगह देख सकते हैं. यहाँ कुछ उदाहरण देखिए:

उनके सामने मेरी एक न चली (अर्थात, मैं उन्हें धोखा नहीं दे सका या उन्हें अपने वश में न कर सका या उनके खिलाफ़ कुछ नहीं कर सका).

काम चलाऊ ढंग—ऐसा तरीका, जिसमें किसी तरह काम निकल जाए.

चलन में होना—*इस देश में डालर नहीं चलता. भारत में विदेशी फ़ैशन बहुत चलता है.*

चाल चलना या चालाकी करना—*तुम मेरे साथ यह चाल मत चलो.*

टिकाऊ रहना या सफल रहना—*नाइलोन के कपड़े बहुत दिन चलते हैं. खद्दर ज़्यादा दिन नहीं चलता. यह फ़िल्म ख़ूब चल रही है.*

ऐसे प्रयोगों की पूरी सूची देना न संभव है, न हमारा अभीष्ट है. आप ज़रूर ऐसे प्रयोगों की तरफ़ ध्यान दें.

चला आना, चला जाना 1. रंजक क्रियाओं का एक उपभेद है, जिसमें *चला आना* तथा *चला जाना* ये दो क्रियाएँ आती हैं. इसे उपभेद कहने का एक कारण है—रंजक क्रियाएँ सभी सामान्य वर्तमान सूचक 'रहा' के साथ नहीं आतीं (**मैं गिर जा रहा हूँ. *वे काम कर ले रहे हैं*), जबकि ये क्रियाएँ 'रहा' के साथ आती हैं. *लोग भागे चले जा रहे थे. तू इतने सवेरे कहाँ से चली आ रही है. क्या सब लोग चले गये? अच्छा हुआ आप यह मकान छोड़ कर यहाँ चले आये.*

2. अन्य रंजक क्रियाओं की तरह इस उपवर्ग की क्रियाओं के साथ भी 'नहीं' का प्रयोग नहीं मिलता (**मैं नहीं चला गया*).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. इस उपवर्ग की क्रियाओं में प्रथम क्रिया 'चला' है, द्‌वितीय 'जाना' तथा 'आना'. जिस तरह रंजक क्रियाओं में प्रथम क्रिया अर्थ प्रदान करती है और दूसरी व्यापार के संबंध में कोई विशेषता, वैसे इन क्रियाओं में 'चला' गत्यर्थक क्रिया है और 'जाना' या 'आना' गंतव्य की सूचना देता है. ऊपर के नियम 2 के अनुसार अगर निषेधार्थ में या अन्यत्र इसका प्रयोग करना हो, तो केवल द्‌वितीय क्रिया बचती है, जबकि रंजक क्रियाओं में सिर्फ़ पहली (कारण यह है कि दोनों में 'चला' समान कारक है और स्थिति भेद को नहीं सूचित कर पाता).

क्या सब लोग चले गये? नहीं, अभी नहीं गये.

क्या सब लोग चले आये हैं? नहीं, वे अकेले आये हैं

4. इस उपवर्ग की क्रियाओं की एक विशेषता है, जिससे ये अन्य रंजक क्रियाओं से भिन्न पड़ती हैं. पहला अंश 'चला' कर्ता के साथ अन्वित होता है, जबकि अन्य रंजक क्रियाओं में प्रथम अंश धातु रूप में रहता है और अविकारी होता है. जैसे *वह चला गया/चली गयी. लड़कियाँ चली गयीं. तुम कहाँ चले गये थे? माता जी गाँव से चली आयीं.*

5. मेरा अनुमान है कि **जा जाना* रूप न बनने के कारण *चला जाना* रूप बना होगा और उससे *चला आना* रूप बाद में बना होगा. इस समय दो रूप हैं–*चला आना, आ जाना*, जिनमें प्रयोग की दृष्टि से एक प्रमुख अंतर है. *आ जाना* में सिर्फ़ गंतव्य में पहुँचने का अर्थ प्रमुख है (*गाड़ी ठीक दस बजे आ जाती है, सब लोग आ गये, तुम सात बजे आ जाओ*), जबकि *चला आना* में उद्‌गम, गंतव्य दोनों का अर्थ निहित रहता है. वैसे कई संदर्भों में ये समानार्थी हैं. *यह गाड़ी सीधे कारख़ाने से चली आ रही है* (**आ जाती है*). *वह घर बेचकर यहीं आ गया* (~*चला आया है*). *रोज़ शाम को बारिश आ जाती है* (**चली आती है*– उद्‌गम से हमें क्या मतलब). *पता नहीं, इतने सारे कीड़े कहाँ से चले आते हैं* (~*आ जाते हैं*). *मुझे बुख़ार आ गया* (**चला आया*–बुख़ार आने में गति की सूचना जो नहीं चाहिए). *बत्ती सात बजे चली गयी थी* (**जा जाना* तो संभव नहीं) *और 10-15 मिनट में फिर आ गयी* (**चली आयी* की ज़रूरत क्या–वह कहीं से भी आयी हो).

चाबी यह पुर्तगाली भाषा के स्रोत से प्राप्त विदेशी शब्द है. मूल रूप में इसमें व (v) है, लेकिन हिंदी में 'चावी' रूप नहीं चलता. *चाबी* प्रचलित रूप है, लेकिन *चाभी* भी मिलता है. 'व' तथा 'भ' के संबंध के कारण ही शायद 'भ' का वैकल्पिक प्रयोग होता है. हिंदी में केवल *चाबी* अपनाया जाए तो ठीक होगा.

चाहिए 1. संज्ञादि शब्दों के साथ *चाहिए* मूल क्रिया के रूप में आता है. इस अर्थ में यह √ चाह का कुछ हद तक समानार्थी है. उल्लेखनीय है कि *चाहिए* के साथ कर्ता में 'को' आता है. *मुझे पीने के लिए पानी चाहिए* (=*मैं पीने के लिए*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पानी चाहता हूँ). राम को एक किताब चाहिए (=राम एक किताब चाहता है). चाहिए से आवश्यकता या अनिवार्यता प्रकट होती है, चाह से इच्छा. जहाँ इच्छा और अनिवार्यता में भेद कम हो, वहाँ दोनों क्रियाएँ आ सकती हैं.

1.1. चाहिए के साथ सहायक क्रिया 'है' नहीं आती, लेकिन शेष सभी आती हैं. मुझे एक कागज़ चाहिए था. इसे फेंको नहीं अंदर रख दो. कल-परसों फिर चाहिए होगा. पिताजी बुला रहे हैं. देखो, क्या बात है? शायद उन्हें कुछ चाहिए हो. (~?चाहिए) इसे बाहर ही रखो. हर वक्त चाहिए होता है. 'अगर' के साथ दो अर्थों में, दो रचनाएँ मिलती हैं–अगर तुम्हें चाहिए था, तो तुम एक ले लेते ('मुझे चाहिए था' के प्रतिवक्तव्य में). अगर उसे चाहिए होता, तो वह मुझसे कहता ('उसे नहीं चाहिए था' के पूर्वानुमान में).

2. क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ चाहिए अनिवार्यता आदि का अर्थ देता है. लेकिन यहाँ √चाह से प्राप्त वाक्य संरचना अलग अर्थ देती है. मैं सोना चाहता हूँ, मुझे सोना चाहिए समान प्रयोग नहीं हैं. इनमें क्रमशः इच्छा और अनिवार्यता की बात देख सकते हैं.

यहाँ क्रियार्थक संज्ञा की **अन्विति** कर्म के साथ होती है. कर्म रहित वाक्यों में क्रियार्थक संज्ञा पुल्लिग में रहती है. हमें काम करना चाहिए. हमें मेहनत करनी चाहिए. बच्चों को पाठ याद करने चाहिए. तुम्हें सारी किताब पढ़ लेनी चाहिए. बच्चों को आठ घंटे सोना चाहिए.

वर्मा (1974) ने इन वाक्यों के संदर्भ में उल्लेख किया है कि क्रियार्थक संज्ञा युक्त वाक्यों में केवल सहायक क्रिया 'था' आती है, अन्य नहीं. उसे जाना चाहिए था (जाना आवश्यक, लेकिन नहीं गया), *उसे जाना चाहिए हो, *उसे जाना चाहिए होगा, *उसे जाना चाहिए होता. ऊपर उल्लेख किया गया है कि ये अंतिम तीन वाक्य बिना 'चाहिए' के बनते हैं. द्रष्टव्य है कि चाहिए हो, चाहिए होता, चाहिए होगा अस्वतंत्र उपवाक्यों में ही आते हैं. इस तरह वर्मा का कथन केवल अंशतः सही है.

अन्विति के संदर्भ में ध्यान रखें कि 'चाहिए' में परिवर्तन नहीं होता. कुछ विद्वान !चाहिएँ आदि रूप अपनाते हैं, लेकिन यह प्रयोग वैयक्तिक प्रयास और सीमित मान्यता से आगे नहीं बढ़ा है.

ऊपर 1 में बताया गया है कि कर्ता में 'को' आता है. अगर वाक्य का व्याकरणिक कर्ता जड़ वस्तु हो या मनुष्येतर प्राणी हो, तो कर्ता में 'को' नहीं आता. उस स्थिति में क्रियार्थक संज्ञा की अन्विति सीधे कर्ता से होती है.

बहुत देर हो गयी, अब तो गाड़ी आनी चाहिए. (? गाड़ी को)
ये सारे पुराने मकान गिरने चाहिए. (*मकानों को)
देर हो रही है. सारे बैल लौटने चाहिए. (! बैलों को)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2.1. अर्थ की दृष्टि से चाहिए के प्रयोग में विविधता दिखायी पड़ती है.

अनिवार्यता–देर हो रही है, हमें अब चलना चाहिए.
तुम्हें नियमित रूप से दवा लेनी चाहिए.
यह पत्थर यहाँ से हटना चाहिए.
नौकरी पाने के लिए अभ्यर्थी को पढ़ा-लिखा होना चाहिए.

कामना, दुष्कामना–तुम्हें जल्दी ठीक हो जाना चाहिए,
खेत सूख रहे हैं, अब बारिश होनी चाहिए.
उसका सत्यानाश होना चाहिए.

अनुमान–बड़े-बड़े मकान दीख रहे हैं, यह कोई बड़ा स्टेशन होना चाहिए.
कपड़ों से लगता है कि यह किसी अच्छे घर का लड़का होना चाहिए.
ये कपड़े टिकाऊ होने चाहिए.

यहाँ पूरक वाक्य की क्रिया 'है' 'होना चाहिए' बनती है. इस कारण यहाँ कर्ता में 'को' नहीं लगता. तुम्हें लखपति का बेटा होना चाहिए (था) कामना का वाक्य है, अनुमान का नहीं. उल्लेखनीय है कि अनिवार्यता, कामना, अनुमान आदि में हम निश्चित अंतर हर जगह नहीं कर पाएँगे. व्यावहारिक रूप से कह सकते हैं कि जो व्यापार हमारे नियंत्रण में नहीं हैं, वहाँ कामना का अर्थ है और 'है' के रूपांतरण वाले वाक्य अनुमान के हैं.

3. 'चाहिए' वाले वाक्यों का रूपांतरण :

तुम्हें जाना चाहिए→तुम्हें चाहिए कि तुम जाओ.
उसे ठीक से काम करना चाहिए→उसे चाहिए कि वह ठीक से काम करे.
तुम्हें बोलना नहीं चाहिए था→तुम्हें चाहिए था कि तुम न बोलते.
आप को सो लेना चाहिए था→आप को चाहिए था कि आप सो लेते.

ये वाक्य (मूल तथा रूपांतरित) समानार्थी हैं और अनिवार्यता पर बल देने के लिए रूपांतरित वाक्य का प्रयोग होता है. इस रूपांतरण की तीन शर्तें हैं.

(अ) रूपांतरण केवल अनिवार्यता वाले वाक्यों में होता है और केवल चेतन कर्ताओं के संदर्भ में आता है. ?तुम्हें चाहिए कि तुम जल्दी ठीक हो जाओ. *बारिश को चाहिए कि वह हो. *लड़के को चाहिए कि वह बड़े घर का हो. ?पत्थर को चाहिए वह यहाँ से हटे. 'है' वाले अनिवार्यता सूचक वाक्य भी भिन्न प्रकार से रूपांतरित होते हैं. अभ्यर्थी को पढ़ा-लिखा होना चाहिए→यह ज़रूरी है कि अभ्यर्थी पढ़ा-लिखा हो. (आ) रूपांतरित वाक्य के दोनों उपवाक्यों में समान कर्ता होगा. राम को चाहिए कि वह जाए. *राम को चाहिए कि गोपाल उसके घर जाए. (इ) 'कि' उपवाक्य में संभावनार्थ क्रिया का प्रयोग होगा. *राम को चाहिए कि वह घर जा रहा है/गया/जाता है. मुझे तो यही चाहिए कि आप लोग ठीक से काम करें भिन्न प्रकार की वाक्य संरचना है, जो कामना सूचित करती है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिघाड़ 1. *चिघाड़ना* हाथी की आवाज़ है. धातु रूप में संज्ञा होने के कारण *चिघाड़* स्त्रीलिंग शब्द है. कहीं इसका रूप देखा था 'चिग्घाड़'. हिंदी में नासिक्य के बाद दो स्पर्श व्यंजन न आने के कारण यह रूप त्याज्य है.

चुक 1. 'चुका' एक वृत्तिसूचक (modal) क्रिया है. हिंदी में वृत्तिसूचक तीन हैं—*लग*, चुक और सक. अंग्रेज़ी में can, will, shall, may, could आदि वृत्ति-सूचक कहलाते हैं, क्योंकि ये शब्द धातु से बनी क्रिया रचना में काल, पक्ष से व्युत्पन्न क्रिया रूपावली से भिन्न ढंग से व्यवहार करते हैं. यद्यपि हिंदी के वृत्तिसूचकों का प्रकार्य अंग्रेज़ी से भिन्न है, फिर भी संयुक्त क्रियाओं की रचना में इनका विशेष स्थान है. इसी कारण इन्हें एक अलग वर्ग में रखते हैं.

2. इसे व्याकरण ग्रंथों में *चुकना* के शीर्षक में देखते हैं, यद्यपि यह रूप क्रियार्थक संज्ञा के संदर्भ में कहीं प्रयुक्त नहीं होता. इस क्रिया के रूप इस प्रकार हैं—चुका है, चुका था, चुका, ? चुकेगा.

3. *चुका है* कार्य की समाप्ति का अर्थ देता है. यह वास्तव में *कर लिया है*~*कर दिया है* का पर्याय है. अतः यह पूर्णता, श्रोता का पूर्वज्ञान तथा वर्तमान काल तीनों का अर्थ देता है. इन्हीं अर्थों के संदर्भ में यह *कर लिया है* आदि के स्थान पर आता है.

मैंने वह चिट्ठी भेज दी है → मैं वह चिट्ठी भेज चुका हूँ
मैंने खाना खा लिया है → मैं खाना खा चुका हूँ
वे लोग चले गये हैं → वे लोग जा चुके हैं
आपकी कमीज़ सिल गयी है → आप की कमीज़ सिल चुकी है
सारी तैयारियाँ हो गयी हैं → सारी तैयारियाँ हो चुकी हैं

3.1. इसका यह तात्पर्य नहीं है कि ऐसे सभी क्रिया रूपों के स्थान पर हम चुक का प्रयोग कर सकेंगे. चुक ज़्यादातर उन्हीं संदर्भों में आता है, जहाँ क्रिया वांछित हो या/और क्रिया की समाप्ति तक पहुँचने का यत्नपूर्वक व्यापार किया गया हो; यों समझिए कि जिन व्यापारों को हम 'समाप्त' कह कर सूचना देना चाहें. इस कारण *वह गिर गया है*, *बत्ती चली गयी है*, *वह फ़ेल हो गया है*, *मेरी कमीज़ फट गयी है*, *उसने मुझे परेशान कर दिया है* आदि वाक्यों में चुक का प्रयोग नहीं होता. इसके विपरीत है *मैं टूट चुका हूँ*; लेकिन यह मुहावरेदार प्रयोग है.

4. आगे हम चुक के असंभव रूपों की चर्चा करेंगे. (अ) चुक रंजक क्रियाओं के साथ नहीं आता. **कर ले चुका है*, **भेज/दे चुका है*, **चले जा चुके हैं*. (आ) चुक 'रहा' के साथ नहीं आता. **चुक रहा है*, **चुक रहा था*. (इ) चुक के अन्य कृदंत संभव नहीं हैं. **मैं कर चुकता हूँ*, **चुकते-चुकते*, **चुके-चुके*. (ई) चुक निश्चयार्थ के अलावा तथा *चुका* से बने रूपों के अलावा अन्य वृत्तियों या अर्थों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में नहीं आता. *मैं चाहता हूँ कि तुम काम कर चुको (संभावना), *तुम लोग खा चुको (विधि). संभावनार्थ चुका+है से बनते हैं. यह भी एक आधार है, जिसे हम सिर्फ़ चुका के प्रयोग के ख़िलाफ दे सकते हैं. (उ) 'नहीं' वाले वाक्यों में चुक नहीं आता. मैं काम कर चुका हूँ. *मैं काम नहीं कर चुका हूँ. ऐसे संदर्भ में ख़त्म या समाप्त से वाक्य बनेगा. मैंने काम ख़त्म~समाप्त नहीं किया है.

5. ऊपर 3 के उदाहरणों में आपने देखा होगा कि चुक के साथ कर्ता में 'ने' नहीं आता. चुक के प्रयोग में कर्ता और क्रिया की अन्विति होती है.

6. मैंने कई हिंदी भाषियों से सुना है कि हिंदी में चुका का रूप चुका है के विकल्प में आता है और कोई यह मानते हैं कि चुका रूप अधिक प्रचलित है. जिस तरह मूल क्रियाओं में *किया, किया है, किया था* ये तीन रूप मिलते हैं, उसी तरह *चुका, चुका है, चुका था* की कल्पना करना सहज है, लेकिन चुक एक वृत्ति-सूचक है और इसका प्रयोग क्रियाओं से भिन्न प्रकार से होता है.

'किया' एक कालरहित क्रिया है. ऐसी क्रियाओं से हम बिना परिचय के वाक्य शुरू कर सकते हैं. *एक दिन एक आदमी मेरे घर आया* या भूतकाल में, *कल शाम को मैं बाज़ार गया था*. हम चुक से ऐसे प्रसंग शुरू नहीं कर सकते. *कल शाम को मैं खाना चुका~चुका था. 'चुक' के प्रयोग के लिए पूर्वज्ञान की आवश्यकता है. यह प्रसंग में वर्तमान कालिक पूर्ण पक्ष की क्रिया की तरह है और इस क्रिया से वर्तमान काल के सत्य का आभास मिलता है—*मैं एक दिन डाकघर आया और मैंने एक चिट्ठी पेटी में डाली.* ?*मैं सवेरे डाकघर गया और चिट्ठी पेटी में डाल दी.* *मैं एक दिन डाकघर जा चुका और मैं एक चिट्ठी पेटी में डाल चुका. *मैं सवेरे डाकघर गया और चिट्ठी पेटी में डाल चुका. पूर्ण पक्ष के क्रिया रूपों में यह सिर्फ़ *कर लिया है* के समान है—*आज दो लोग आये हैं* (*आ चुके हैं). *वह शाम को बाज़ार गया* (*जा चुका). शोर सुन कर चोर *भाग गये* (*भाग चुके) इस कारण हम कहेंगे कि चुका और चुका है में कोई अंतर नहीं किया जा सकता. दोनों हैं तो समान अर्थ में ही प्रयुक्त हैं. वैसे 'चुका है' अधिक प्रचलित है.

5.1. *चुका था* का प्रयोग *कर लिया था* जैसा है. *मेरे जाने से पहले ही सब ने खाना खा लिया था* (खाना खा चुके थे). *मेरे पहुँचने से पहले ही भाषण ख़त्म हो गया था* (ख़त्म हो चुका था). *मैंने कल ही चिट्ठी भेज दी थी* (मैं ··· भेज चुका था). *चुका हो*—यह *कर लिया हो* का पर्याय है. *शायद उसने काम कर लिया हो~शायद वह काम पूरा कर चुका हो*. *चुका होगा*—यह *कर लिया होगा* का पर्याय है. *वे लोग जा चुके होंगे*. *बारिश बंद हो चुकी होगी*. *चुका होता*—यह *कर लिया होता* का पर्याय है. !*वह जा चुका होता, तो मुझे ख़बर मिल गयी होती*.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5.2. कहीं-कहीं 'कर लिया' की जगह 'चुका' का प्रयोग दिखायी पड़ता है. *जब सब जा चुके, तब मैं उठकर बाहर आया. क्या सब लोग खा चुके?* यह प्रयोग कितना प्रामाणिक है या प्रचलित है, इस संबंध में खोज करने की ज़रूरत है. एक बार मैंने इसी उद्देश्य से हिंदी के कई ग्रंथ देखे. *चुका है, चुका था* के मुझे कई रूप मिले, *चुका* के बहुत कम. मैं यह मानता हूँ कि *चुका है* की जगह *चुका* या *कर लिया* के विकल्प में *चुका* का प्रयोग अमानक है और अधिक प्रचलित नहीं है.

5.2.1. सिर्फ़ *चुका* का मुहावरेदार प्रयोग मिलता है–'नहीं' के अर्थ में. इसमें व्याकरणिक कर्ता क्रिया के बाद आता है–*वह जा रहा है? तब तो हो चुका काम.* (=*नहीं होगा*) *शांतिपूर्ण आंदोलन? मिल चुकी आज़ादी* (=*नहीं मिलेगी*).

5.3. चुकेगा–यह प्रयोग इतना कम प्रचलित है कि इसे अमानक रूप माना जा सकता है. प्रायः *चुका होगा* इसकी जगह आता है. *!तुम तो पाँच बजे तक काम पूरा कर चुकोगे न? !जब आप काम पूरा कर चुकेंगे, तब मैं पहुँचूँगा.*

चुनांचे इस का उर्दू में लिखित रूप 'चुनान्चह' है, लेकिन यह ऊपर के अनुसार ही उच्चरित होता है. इस शब्द का अर्थ है 'इसलिए'. यह आम बोलचाल की भाषा में कम होता जा रहा है, जिस तरह संस्कृत का *अतः* बोलचाल में नहीं है. दोनों की जगह 'इसलिए' का प्रयोग अधिक है.

चूँकि देखें **इसलिए, चूँकि, क्योंकि.**

छह, छः, छै इन तीनों रूपों में *छः* त्याज्य है, क्योंकि तद्भव शब्दों में विसर्ग नहीं लगता. 'छह' रूप अधिक मान्य लगता है. वाजपेयी (1959) इसकी व्युत्पत्ति 'षष्' से मानते हैं और इसमें <ह> की उपस्थिति ऐतिहासिक कारणों से सही मानते हैं. **ह** प्रकरण में हमने देखा कि हिंदी के इकारांत शब्दों को /ऐ/ से बोलने की प्रवृत्ति है, जैसे /कैहना/. इस आधार पर 'छैह' भी एक विकल्प हो सकता है, जिससे 'छै' बना हो. अन्यथा इस शब्द के <ऐ> का कोई स्रोत नहीं दीखता. *छहों* बनाने की सुविधा के कारण छह ग्रहणीय है.

छापाख़ाना स्थान के अर्थ में -ख़ाना लगे हुए इस शब्द का अर्थ है, वह जगह जहाँ छपाई होती है. इसे *छपाई ख़ाना* भी कहते हैं और अब *मुद्रणालय* भी प्रचलित हो चला है. इस शब्द के तिर्यक रूप में मूल शब्द, प्रत्यय दोनों का रूप बदलता है. *छापाख़ाना, छापेख़ाने में.* जबकि -वाला, -बाज़ आदि से पहले मूल रूप में ही मूल शब्द तिर्यक बन जाता है. *कपड़ेवाला, चनेवाला, मसख़रेबाज़, चूनेदानी, कूड़ेदान.*

छाया, साया ये दोनों संज्ञा शब्द की दृष्टि से लगभग समान हैं. पहला संस्कृत का

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्त्रीलिंग शब्द है, दूसरा फ़ारसी से आया पुल्लिग शब्द है. रोशनी की विपरीत दिशा में व्यक्ति या वस्तु की छाया पड़ती है या साया पड़ता है. इस अर्थ में परछाई पर्याय है. पेड़, मकान आदि के नीचे छाया होती है, या साया होता है, जहाँ व्यक्ति धूप से बचने के लिए आता है. इस अर्थ में छाँह इनका पर्याय है. इनका मुहावरेदार प्रयोग दोनों के प्रयोग में अंतर आता है. छत्रछाया तथा किसी व्यक्ति के साये में पलना–इन मुहावरों में ये शब्द नहीं बदलते. उल्लेखनीय है कि इन मुहावरों का अर्थ भी लगभग समान है.

ज़ 1. यह वर्ण ज के नीचे बिंदी लगाने से बनता है.

2. यह घोष वर्त्स्य संघर्षी स्वन का द्योतक है, /स/ का घोष रूप है. यह ध्वनि विदेशी है और उर्दू के शब्दों, ज़मीन, ज़ोर, इज़्ज़त, मज़ा, राज़ी, ज़िंदा, चीज़, रोज़, मंज़िल, मंज़ूर, ज़ुल्म आदि में तथा अंग्रेज़ी के शब्दों, जैसे ज़ेनिथ, प्रज़ेन्ट, ज़ीब्रा, ज़ोन, ज़ू आदि में आता है.

3. यह स्वन अंग्रेज़ी /श़/ (श का घोष रूप, IPA में ʒ) के तथा उर्दू के ژ के लिए भी आता है. जैसे अंग्रेज़ी टेलीविज़न, प्राविज़न, प्लेज़र, डिवीज़न.

4. चूँकि यह विदेशी ध्वनि है, हिंदी के सामान्य बोलचाल में तथा बोलियों में इसका उच्चारण /ज/ हो जाता है. जैसे ज्यादा, जोर, इज्जत, मजा, टेलीविजन, जोन. इस ध्वन्यंतरण के कारण वज़्म, जज़्ब आदि शब्दों के गुच्छ प्रभावित हो सकते हैं, लेकिन इन शब्दों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति उस सामाजिक स्तर के होते हैं, जो /ज़/ का ध्वन्यंतरण नहीं करते. लेकिन कई सामान्य तथा आम प्रचलित शब्दों में /ज़/ तथा /ज/ का चयन या ध्वन्यंतरण कई बातों पर निर्भर करता है. और कई जगह दोनों ही सहज रूप में अपनाये जाते हैं. जैसे जमींदारी~ज़मींदारी, बाजू~बाज़ू, जोर~ज़ोर आदि.

5. /ज़/ और /ज/ में चयन की गुंजाइश तथा दोनों में प्रयोग में स्तर भेद के कारण जब /ज़/ का बोलना अधिक संस्कृत होने का लक्षण है. इस कारण कई व्यक्ति अतिसुधार के कारण उर्दू के /ज/ वाले शब्दों को भी /ज़/ से बोलते हैं. *रिवाज़, *मज़बूर, *दरज़ी, *दर्ज़, *ज़ज़्बात, *अज़ीब, *मुज़ीब, *तवज़्ज़ुह, *तर्ज़ुमा, ज़लील (यह ज़लील 'नीच' से भिन्न है) ऐसे थोड़े से शब्द हैं.

6. मराठी, गुजराती भाषाओं में हिंदी 'झ' का वर्ण /ज़/ के रूप में उच्चरित होता है. इस कारण वहाँ अंग्रेज़ी /ज़/ वाले शब्द 'झ' से लिखे जाते हैं. मराठी भाषा नागरी में लिखी जाती है, अतः मराठी और हिंदी में 〈ज〉 के शब्दों में भिन्नता आ जाती है. धर्मयुग जैसी उच्चस्तरीय हिंदी की पत्रिका में भी विज्ञापनों में 'ज़' की जगह 'झ' का प्रयोग देखने को मिलता है जैसे *झेनिथ, *झू,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

*मझा, *आझाद. यह प्रयोग हिंदी भाषियों के लिए भ्रमात्मक हो सकता है, अतः त्याज्य है.

जगना वास्तविक रूप *जागना* और प्रेरणार्थक रूप *जगाना* हैं. *जगना* गलती से किसी सादृश्य के कारण प्रयोग में आया है. इसी तरह *भगना* का भी बहुत सीमित प्रयोग मिलता है. 'भागना' तथा 'भगाना' सही रूप हैं.

ज़बान, ज़ुबान, जबाँ, ज़ुबाँ हिंदी में इस शब्द के चारों रूप प्रचलित हैं. आगे शायद नकरांत रूप ही मानक रूप हो जाएँगे. इसी तरह *ज़बान* ही *ज़ुबान* से अधिक प्रचलित लगता है. देखें **उर्दू के शब्दों में अंत्य अनुनासिकता.**

जमना 1. यद्यपि क्रिया रचना दृष्टि से यह 'जमाना' का मिथ्यावाच्य है, फिर भी यह कई अन्य अर्थों में भी आता है. दोनों में अंतर देखिए :

(1) थपकी देकर मिट्टी को ठीक-ठाक जमाया	?
(2) मैंने चार थप्पड़ जमाये	?
(3) मैंने दही जमाया फ़्रिज में आइसक्रीम जमायी	(3) दही जम गया. आइसक्रीम जम गयी
?	(4) तुम इस सूट में बहुत जम रहे हो.
?	(5) हमने ज़म कर खाना खाया
?	आज जम कर बारिश हुई
?	(6) आज महफ़िल जम गयी

2. समान मुहावरों में रंग जमाना/जमना, धाक जमाना/जमना, ख़ून जमाना/जमना, काम जमाना/जमना, रोब जमाना/जमना आदि.

3. *जमा दही, जमा ख़ून, जमी बर्फ़* में आया कृदंत 'जमा' विकारी विशेषण है और यह अविकारी *जमा* से भिन्न है (देखें **जमा**).

जमा 1. यह अविकारी आकारांत विशेषण शब्द है. इस शब्द के विभिन्न प्रयोग देखिए–(क) *मैंने बैंक में पैसे जमा किये. बैंक में जमा राशि निकलवा कर मैंने बांड ख़रीद लिये* (इस अर्थ में यह *'अदा करना'* का पर्याय है). (ख) *वहाँ कई लोग जमा हो गये. पुलिस ने वहाँ जमा भीड़ को पीछे हटाया* (इस अर्थ में यह 'इकट्ठा' का पर्याय है). (ग) *मेरे पास कुल जमा चार सौ रुपये थे.* इस अर्थ में दूसरा वाक्य प्रयोग देखिए–*मेरी कुल जमा पूँजी चार सौ रुपये थी.*

2. यह क्रिया 'जमाना' और 'जमना' से भिन्न है.

जमा, धन 1. गणित की भाषा में जोड़ने के लिए 'जमा' शब्द का प्रयोग होता है. *दो जमा दो चार होते हैं.* 'धन' इनका आधुनिक पर्याय है. एक अन्य विकल्प है–*दस में चार जोड़ें, तो पंद्रह बनते हैं.* जोड़ने के क्रम को निम्न प्रकार से बता

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकते हैं—दो *जमा तीन जमा पाँच जमा सात जमा* · · · .

2. 'जमा' विशेषण शब्द है, जो सामान्य भाषा में जोड़ने या एकत्र करने के अर्थ में आता है. *उसने बहुत पैसा जमा कर लिया था. मेरे पास कुल जमा बीस रुपये हैं. वहाँ कई लोग जमा हो गये. जमा लोगों में* · · ·

3. 'धन' संपत्ति या पैसे के अर्थ में आता है. इससे *धनवान, धनी* आदि शब्द भी बनते हैं.

4. 'जोड़' के गणितीय चिह्न + को *धन चिह्न* कहा जाता है. गणित के संदर्भ से हटने पर भी यह चिह्न धन चिह्न ही कहलाएगा.

ज़मींदार, ज़मीनदार दोनों रूप प्रचलित हैं और सही हैं. देखें **उर्दू के शब्दों में अंत्य अनुनासिकता.** इनकी जगह *ज़मीन्दार* का रूप ठीक नहीं है, क्योंकि ज़मीन से बनने पर इसके रूप में परिवर्तन नहीं आना चाहिए और ज़मीं अब हिंदी में भिन्न अर्थ में आता है.

ज़रूर ज़रूर क्रियाविशेषण शब्द है. इसके पर्याय हैं 'अवश्य', 'निश्चित रूप से'. *मैं ज़रूर आऊँगा. यह कार्यक्रम ज़रूर होगा.* 'ज़रूर' निश्चयात्मक शब्द है और यह 'नहीं' के साथ नहीं आता. **मैं ज़रूर नहीं आऊँगा* (देखें **न, नहीं, मत, ना**). 'ज़रूरत' संज्ञा शब्द है और 'आवश्यकता' के अर्थ में आता है. *मुझे कुछ पैसों की ज़रूरत है. मुझे नौकरी की ज़रूरत नहीं है.* 'ज़रूरी' एक विशेषण है, जो 'आवश्यक' के अर्थ में आता है. *मैं एक ज़रूरी काम से बंबई जा रहा हूँ. मुझे अभी कुछ ज़रूरी काम है.*

जलवायु, आबोहवा दोनों स्त्रीलिंग शब्द हैं—शायद इस कारण कि दोनों का दूसरा शब्द स्त्रीलिंग है. दोनों शब्द समानार्थी हैं—पानी और हवा. पहला समास है, दूसरे में 'और' है—आब+ओ+हवा. दोनों अंग्रेज़ी climate के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं.

जाना 1. यह गत्यर्थक क्रिया है. हम एक जगह से दूसरी जगह जाने के व्यापार को इससे सूचित करते हैं. *जाना* हिंदी में अकेली क्रिया है, जिसका पूर्ण पक्ष का रूप *गया* पूर्ण रूप से बदल जाता है. लेकिन निरंतरताबोधक में *जाया करना* है, **गया करना* नहीं. 'जाना' की रंजक क्रिया *चला जाना* है, **जा जाना* नहीं.

2. वाक्य की रचना में क्रियाओं के पूर्ण पक्ष के कृदंत के साथ *जाना* आता है. *किया जाना, देखा जाना, बैठा जाना, पढ़ा जाना* वाच्य रूप हैं. स्वयं 'जाना' के वाच्य में कृदंत रूप 'जाया' (*जाया जाना*) आता है, 'गया' (**गया जाना*) नहीं. 'बिना' के साथ के प्रयोगों में कई लोग कृदंत रूप 'गये' (*गये बिना*) का भी प्रयोग करते हैं, जबकि कुछ लोग 'जाये' (*?जाये बिना*) का भी प्रयोग करते हैं. *गये बिना* प्रचलित रूप है. 'जाना' का प्रयोग निरंतरता बोधक क्रिया की रचना में होता है. जैसे *करता जा रहा है, किये जाओ* आदि.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. हिंदी में रंजक क्रिया के रूप में 'जाना' का प्रयोग अति व्यापक है. यहाँ हमें क्रिया 'जाना' तथा रंजक क्रिया 'जाना' के प्रयोगगत अंतर को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए. हर यौगिक (या संयुक्त क्रिया) की रचना में, जिसमें दूसरी क्रिया 'जाना' हो, हमें 'कर' के लोप का परीक्षण कर लेना चाहिए. 'कर' के लोप के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं. *मैं सामान अपने घर ले गया.* (~*ले कर गया*) *अपना पता यहाँ लिख जाओ* (~*लिख कर जाओ*). *तुम ज़रा आज उनसे कह जाओ.* (~*कह कर जाओ*) (देखें पूर्वकालिक कृदंत). यही बात **आना** पर भी लागू होती है.

4. रंजक क्रिया में कहीं 'कर' का विस्तार नहीं हो सकता. *मुझे चीनी मिल गयी* (**मिल कर गयी*). *पुलिस को देखते ही वह भाग गया* (**भाग कर गया*). (नोट–'भाग (कर) गया' के संदर्भ में भ्रम की गुंजाइश की वजह से इसमें से 'कर' का प्रायः लोप नहीं होता.)

4.1. रंजक क्रिया के रूप में 'जाना' के अर्थ को स्पष्ट करना बहुत कठिन कार्य है. यह रंजक क्रिया ज़्यादातर अकर्मक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होती है. यह उन क्रियाओं के साथ नहीं आती, जहाँ पूर्वज्ञान संबंधी कोई प्रसंग उपस्थित नहीं होता. अर्थात, जहाँ इसका प्रयोग होता है वहाँ पूर्वज्ञान संबंधी बात निश्चित रूप से देखी जा सकती है. *बारिश शुरू हो गयी* (जहाँ वक्ता-श्रोता को बारिश का इंतज़ार हो), *सब लोग आ गये?* (जहाँ आने वालों की सूचना हो). *तुम्हें चीनी मिल गयी? आज गोली चली और पचास आदमी मर गये* ('गोली चलने' से मरने संबंधी पूर्वसूचना मिल जाती है) आदि प्रसंगों में पूर्वज्ञान की बात देख सकते हैं. इस बात को निम्नलिखित उदाहरणों में देख सकते हैं–अख़बार की हेडलाइन–*आगरा में गोली चली–पचास व्यक्ति मरे.* ख़बर–*पता चला है कि पुलिस की गोली से कल यहाँ पचास से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी है और सौ से अधिक घायल हो गये हैं* (क्रमशः *हुई हैं, *हुए हैं). कुछ और उदाहरण–*चीनी के बरतन नीचे गिरे और टूट गये* (**टूटे*). *उसके घर में आग लगी और सारा सामान जल गया* (**जला*). *बच्चे जब बढ़ते हैं, तब उन्हें अधिक पोषण की ज़रूरत होती है* (**हो जाती है*). *लेकिन पोषण न मिलने पर उनका विकास रुक जाता है* (**रुकता है*). उपर्युक्त उदाहरणों के संदर्भ में रंजक क्रिया 'जाना' का प्रयोग कहाँ होना चाहिए यह स्पष्ट करना कठिन कार्य है, लेकिन पूर्वज्ञान की स्थिति मालूम होने पर रंजक क्रिया 'जाना' कहाँ छोड़ी नहीं जा सकती, यह बताना अधिक आसान है. इस उक्ति के संदर्भ में कहना चाहूँगा कि बहुत-सी अकर्मक क्रियाओं के साथ रंजक क्रिया 'जाना' का एक ही अर्थ है–पूर्वसूचना होने की स्थिति का वर्णन.

4.2. यह रंजक क्रिया सकर्मक क्रियाओं के साथ भी आती है. जैसे *पी जाना,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खा जाना, दे देना, कर जाना आदि. इन स्थानों में 'जाना' अन्य रंजक क्रियाओं (पी लेना, खा लेना, दे देना आदि) के व्यतिरेक में आता है. इसके प्रयोग के संदर्भ देखिए :

'लो, दवाई पियो.' 'नहीं, मैं नहीं पीता. कड़वी है.' 'दवाई तो पीनी ही पड़ेगी. ज़्यादा कड़वी नहीं है. आँख मूँद कर एक ही घूँट में पी जाओ (?पी लो).' 'दवाई पी ली ?' 'हाँ, पी ली (?पी गया).'

मैंने उसे होशियार समझ कर काम सौंपा था. कमबख़्त, सारा काम बिगाड़ गया~बरबाद कर गया. (~बिगाड़ दिया, ~कर दिया)

ओफ़! कैसा भयंकर तूफ़ान था. एक घंटे में सारा शहर उजाड़ गया (?उजाड़ दिया), सारी फ़सल नष्ट कर गया. (?कर दी)

मिनटों में सारा खाना खा गया~पूरी थाली साफ़ कर गया (*खा लिया, *कर दी)

मकान मालिक ने बहुत परेशान किया. तंग आकर प्रसाद जी एक दिन मकान छोड़ गये~ख़ाली कर गये.

ज्यादा यह शब्द 'अधिक' के अर्थ में आता है. उल्लेखनीय है कि 'अधिकता' के लिए इससे ज़्यादती या कोई अन्य शब्द नहीं बनता. ज़्यादती अनुचित व्यवहार के अर्थ में आता है. तुम ऐसी ज़्यादती मत करो. यह तो सरासर ज़्यादती है. दक्षिण में 'ज़्यादा' के अर्थ में जास्ती चलता है. यह प्रयोग अमानक है. एक वाक्य देखिए–तुम जास्ती दाम क्यों बोलते हो ?

टंकण तथा हिंदी का कुंजीपटल 1. हिंदी में टंकण यंत्र पहले ही बन गया था. तब से अब तक चार कुंजीपटल (keyboard) बन चुके हैं या दूसरे शब्दों में तीन बार कुंजीपटल बदला गया है. चूँकि भारत सरकार हिंदी टंकण यंत्रों का सबसे बड़ा क्रेता है, उसका कुंजीपटल के स्वरूप तथा निर्माण में हाथ रहता है (मुझे मालूम नहीं है कि अन्यथा सरकार के पास कुंजीपटल के स्वरूप के निर्णय का कोई वैधानिक अधिकार है कि नहीं). इस अधिकार के कारण कुंजीपटल सरकारी प्रयत्नों से ही बदले हैं. नया कुंजीपटल इसी वर्ष (1978 में) अस्तित्व में आया है, इससे पहला कुंजीपटल 1972 के आसपास प्रचलन में आया था. इन्हीं दोनों को हम क्रमशः नया तथा पुराना कुंजीपटल कहेंगे और यहाँ इन्हीं दोनों कुंजीपटलों के बारे में विचार करेंगे.

2. कुंजीपटल में 46 कुंजियाँ होती हैं और हर कुंजी में ऊपर तथा नीचे दो अक्षर होते हैं. इसी तरह टंकण यंत्र में कुल 92 वर्ण चिह्न अंकित करने की सुविधा होती है. इन्हीं 92 चिह्नों से हिंदी के सारे अक्षर तथा अंक, विरामादि

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिह्न, गणितीय चिह्न तथा अन्य भारतीय भाषाओं के नागरीकरण के लिए आवश्यक चिह्न मुद्रित करने की व्यवस्था करनी होती है. भारत की तीन भाषाएँ–हिंदी, संस्कृत तथा मराठी (और विदेश में नेपाली)–नागरी लिपि में लिखी जाती हैं. अतः ऐसी व्यवस्था करना आवश्यक हो जाता है कि ये चारों भाषाएँ टंकण यंत्र दवारा टंकित की जा सकें. संस्कृत भाषा तथा मानकीकरण से पूर्व की हिंदी की लेखन पद्धति में वर्ण संयोजन की बहुतायत थी. सिर्फ़ 'ह्' के संयुक्त वर्णों की रचना देखिए :

ह्व ह्म ह्य ह्न ह्ल ह्ट ह्ल ह्ण

ऐसे संयुक्त वर्णों को मिला कर कुल वर्णों की संख्या 200 से ऊपर पहुँच जाती थी, जबकि मशीन की अपनी सीमा थी. शायद इसी कारण भारत सरकार के प्रयत्नों से सरलीकृत, मानक नागरी लिपि का रूप निर्धारित हुआ. टंकण यंत्र भी काफ़ी दूर तक इसी संशोधित तथा मानक लिपि पद्धति का अनुसरण करते हैं. अगर संस्कृत भाषा को भी टंकित करते हैं, तो उसे अपनी वर्तनी की पद्धति में यंत्र के आग्रह से कुछ समझौते करने पड़ेंगे. यहाँ इसी नयी लिपि पद्धति को ध्यान में रखकर कुंजीपटल पर विचार कर रहा हूँ.

3. हिंदी में मानक नागरी स्वर, मात्राएँ, व्यंजन, आधे व्यंजन, नीचे की बिंदी, चंद्र बिंदु तथा प्रचलित संयुक्त वर्ण (रु रू श्र) मिला कर कुल 94 वर्ण हैं, जिनके लिए टंकण यंत्र में व्यवस्था करनी होगी (इस गणना में हलंत से बनने वाले आधे व्यंजनों को छोड़ दिया गया है). साथ ही अन्य आवश्यक चिह्न मिला कर निम्न प्रकार से टंकण यंत्र में 130 चिह्नों की आवश्यकता होगी :

स्वर तथा मात्राएँ (25) अ ा ॅ आ इ ि ई ी उ ु ऊ ू ऋ ृ ए े ऐ ै ओ ो औ ौ ं : ँ

व्यंजन तथा आधे व्यंजन (68) क क ख ख ग ग घ घ ङ च च छ ज ज झ ञ ञ ट ठ ड ढ ण ण त त थ थ द ध ध न न प प फ फ ब ब भ भ म म य य र ् ्र ल ल व व श श ष ष स स ह क्ष क्ष ज्ञ

विशेष वर्ण रु रू ह्र ह्ल श्र नीचे की बिंदी

अंक (10) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

विरामादि चिह्न (16) । :– / , ; . ! - — _ ? " " ( )

गणितीय चिह्न (9) = × − ÷ % + √ $ £

अन्य भाषाओं के लिए (2) ऽ ळ

4. कम टंकण के वर्ण चिह्नों से अधिक लिपि चिह्नों को दिखाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने पड़ते हैं :

4.1. एक ही वर्ण से अन्य वर्ण बना लेना, जैसे अ से आ, ओ, औ, अं, अः आदि बना लेना. वर्ण के छोटे खंड करके भी यह किया जाता है. जैसे, रेखा ा की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहायता से ऊ फ रु बना लेना. क भी इसी तरह व से बन सकता है, लेकिन क जैसे बहु-आवृत्त वर्ण को टंकित करने के लिए (इसी वाक्य में क कितनी बार आया है, देखिए) दो कुंजियाँ दबाना कष्टसाध्य कार्य है. अतः वर्ण की रेखाओं को अलग करते समय वर्ण की आवृत्ति पर भी ध्यान देना होता है. प्रायः घ, ध, भ, ष, ख, क्ष आदि कम आवृत्त वर्णों में केवल आधा व्यंजन ही दिया जाता है, जिनके साथ 'अ' की मात्रा (ा) टंकित कर पूरा वर्ण बनाया जाता है. इस मात्रा को पूरी कुंजी में देने के कारण भ दो कुंजियों का स्थान लेता है और देखने में भ अच्छा नहीं लगता. इस संदर्भ में आधी कुंजी की व्यवस्था की गयी थी, जो तकनीकी दृष्टि से सफल नहीं रही.

4.2. कुछ विशेष वर्णों को छोड़ दिया जाता है, जैसे श्र, रु आदि. यह व्यावहारिक हो सकता है, लेकिन तर्क संगत तरीका नहीं है. मैं अपना शोध प्रबंध टंकित करा रहा था, तब विचार किया कि हर जगह चंद्र बिंदु लगा देना चाहिए. 2800 पन्नों में (700 पृष्ठ × 4 प्रतियाँ) मैंने कम से कम 25,000 संशोधन किये होंगे. किसी दूसरे टंकण यंत्र में रू नहीं था, टंकण कुरुप और कुरूप में अंतर दिखाता ही नहीं था. रू लिखना भी कुरूपता लगता है. *श्रृंगार* तो सभी श्रृ से टंकित करते हैं. भाषाविज्ञान की चर्चा करते समय या अन्य भाषाओं के लिप्यंतरण में ञ न दिखा पाना उकताहट का कारण बनता है. अगर टंकण यंत्र है, तो उसे भाषा की सभी विशेषताओं को दिखाना ही चाहिए. वर्तमान टंकण यंत्र भी इस दोष से मुक्त नहीं है.

4.3. कुछ विराम तथा गणित के चिह्नों को छोड़ दिया जाता है. इससे टंकण यंत्र की उपयोगिता बहुत घट जाती है. हम चाहेंगे कि कार्यालय में, व्यापारिक संस्थाओं में, विज्ञान तथा उच्च अध्ययन में हिंदी का स्थान हो, उपयोग हो. अगर सही टंकण यंत्र भी न मिले, तो इस आकांक्षा की पूर्ति कैसे हो सकती है?

5. आगे हम दोनों कुंजीपटलों के विवरण दे रहे हैं.

पुराना कुंजीपटल

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस कुंजी पटल में निम्नलिखित ख़ामियाँ हैं–(अ) ख, घ, ण, थ, ध, भ, ष श, क्ष आधे व्यंजनों में खड़ी पाई मिला कर बनाये जाते हैं. इनमें <श> बहुत आवृत्त है. (आ) त्र, श्रृ, ह्र, हृ, रू बनाने की गुंजाइश नहीं है. संस्कृत के लिए अवग्रह तथा मराठी के लिए ळ नहीं हैं. विराम चिह्नों में रेखांकन नहीं है. (इ) त्र अमानक, अतः अनावश्यक चिह्न है.

नया कुंजीपटल

इसमें निम्नलिखित ख़ामियाँ हैं–(अ) नयी मानक नागरी के संदर्भ में चार अमानक वर्ण त्र, द्व, द्ध, द्य वापस आ गये हैं. पता नहीं कि यह सरकार की लिपि संशोधन की नीति में परिवर्तन के कारण है या और किसी कारण. (आ) कोष्ठकों के लिए एक ही चिह्न देना निर्णायकों की अदूरदर्शिता का परिचायक है. सामान्य वाक्यों में भी पता नहीं चलता कि कोष्ठक कहाँ शुरू होता है और कहाँ ख़त्म. गणित के सवालों में जहाँ निम्न प्रकार से कोष्ठकों की श्रृंखला चलती है, यह पद्धति अनुपयोगी है :

(((( ))))

(इ) पिछले पटल तथा इसमें द, ए, छ, द, त्र, ऋ आदि अक्षर क्यों भिन्न हैं? क्या यहाँ भी कोई सरकारी नीति में परिवर्तन हुआ है ? इनमें कौन-से अधिक 'मानक' हैं ? (ई) नये कुंजीपटल में ँ, श्रृ, प्रश्न चिह्न, %, त्र, र, ़ आदि चिह्न बनाने की गुंजाइश नहीं है. (उ) दोनों पटलों में पर्याप्त मात्रा में गणितीय-व्यापारिक चिह्न न होने के कारण इन की व्यावहारिक उपयोगिता बहुत क्षीण हो जाती है. यह भी विचारणीय है कि पुराने कुंजीपटल में किन आधारों पर संशोधन किये गये और उससे क्या 'सुधार' हुआ है. किन आधारों पर द्व, द्य आदि शामिल किये गये और फिर ह्न, ह्य आदि क्यों नहीं शामिल किये गये, यह भी मेरी समझ के बाहर की बात है.

6. अगर टंकण यंत्र के कुंजीपटल में निम्नलिखित चिह्न हों, तो हिंदी, संस्कृत तथा मराठी के लिए पर्याप्त होगा. यह उपयोक्ता का दृष्टिकोण है, तक-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीकी दृष्टि से इस पर विचार किया जा सकता है :

अ इ उ ऋ ए ् (हलंत) ा ि ी ु ू ृ े ै ं ँ : क क् ख ग ग् घ च च् छ ज ज्
झ ञ ट ठ ड ढ . (नीचे की बिंदी) ण त त् थ द ध न न् प प् फ़ ब ब् भ म म्
य र ‚ ् ल ल् व व् श श् स स् ह क्ष ज्ञ रू श्र रु की मात्रा अंक 1 से 0 / ,
– रेखांकन ? " ( ) × % = √ £

संस्कृत के लिए ऽ (इसी से $ बन सकता है) तथा मराठी के लिए ळ ‿ ॅ (यही अंतिम चिह्न ह्रस्व ऍ ऑ कार में काम आ सकता है, जो पहले की व्यवस्था थी).

ठंड, ठंडक दोनों स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द हैं और ठंड से विशेषण *ठंडा* बनता है. ठंड प्राय: मौसम तथा मौसम की विशेषता के अर्थ में प्रयुक्त होता है. ठंड का मौसम. *इस साल पिछले साल से अधिक ठंड है.* *इस साल यहाँ बहुत ठंड पड़ रही है.* यहाँ ठंडक का इस्तेमाल नहीं होता. 'सरदी' ठंड का पर्याय है.

ठंडक ठंड की वह स्थिति है, जो अच्छी लगती है और विपरीत स्थिति 'गरमी' की तुलना में प्रिय है. बाहर गरमी झेलकर आने वाला कहेगा *वाह, यहाँ तो ठंडक है.* इस अर्थ में *ठंडा* भी चलता है. अन्य समान प्रयोग (लाक्षणिक) हैं–*हरे रंग से आँखों को ठंडक मिलती है* (*ठंड). *बेटे, तूने बहुत अच्छा काम किया. मेरे कलेजे को ठंडक पहुँची* (~*मेरा कलेजा ठंडा हुआ*, **कलेजे को ठंड पहुँची*).

ठंड, ठंढ हिंदी में ये दोनों रूप चलते हैं तथा इनसे व्युत्पन्न *ठंडा, ठंढा, ठंडक,* ठंढक भी प्रचलित हैं. ठंढ के अलावा और किसी शब्द में /ण् ढ/ का गुच्छ नहीं मिलता. इस कारण ठंड आदि को ही मानक मानना उचित होगा.

ठहरना, रुकना, रहना 1. *ठहरना* किसी जगह अस्थायी रूप से रहने के अर्थ में आता है. *जब मैं मद्रास गया था तो एक होटल में/गोपालन के घर ठहरा था.* या यह इंतज़ार में रुके रहने के अर्थ में आता है. *आप लोग ठहरिए, अभी बुला लेता हूँ.* *ज़रा ठहरो, अभी शुरू न करो.*

रुकना किसी कार्य के बीच, उस कार्य को निलंबित करके क्रियाहीन होने का भाव सूचित करता है. *दौड़ो नहीं, रुको.* *लिखते-लिखते मैं/मेरा हाथ रुक गया.* *गाड़ी चल पड़ी, अब रुक नहीं सकती.* इसी अर्थ में यह यात्रा के बीच कार्यक्रम स्थगित करने का भी अर्थ देता है. *मद्रास जाते समय मैं एक दिन नागपुर में रुका और दो दिन हैदराबाद में रुका.* *गाड़ी स्टेशन पर बहुत देर तक रुकी रही.* तुलना कीजिए–*मैं हैदराबाद में रुका और एक होटल में ठहरा.* *आप आज नहीं जा सकेंगे, यहीं रुक जाइए. मेरे ही घर ठहर जाइए.*

रहना में निवास का अर्थ निहित है. *मैं विनय नगर में रहता हूँ.* मैं दस साल

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से *यहाँ/दिल्ली में रह रहा हूँ.* या यह अस्थायी उपस्थिति का अर्थ सूचित करता है. *मीटिंग में तुम मेरे ही साथ रहो. मैं चार-पाँच दिन दिल्ली रहूँगा और वहाँ से कलकत्ता जाऊँगा. तुम शाम को घर पर रहोगे? तुम दिल्ली आओ, तो मेरे ही साथ रहो.* **रहना** के अन्य प्रयोग उक्त प्रविष्टि में दिये गये हैं.

2. यद्यपि तीनों शब्दों के प्रयोग का स्पष्ट वितरण-सा दिखायी देता है, इनके प्रयोग में कई जगह प्रक्षेप दिखायी पड़ता है, *ज़रा रुको/ठहरो* समानार्थी हैं. *मैं वहाँ एक दोस्त के साथ रहा/ठहरा* सूक्ष्म अंतर के साथ एक ही जगह प्रयुक्त हो सकते हैं. *बारिश तेज़ है, आज यहीं रह जाओ/रुक जाओ* लगभग समान अर्थ देते हैं.

3. हम किसी व्यक्ति को होटल में ठहराते हैं, चलती गाड़ी या चलते पंखे को या आदमी को रोकते हैं, या हो रहे काम को बीच में रोक देते हैं. किसी व्यक्ति को धर्मशाला या होटल में 'रुकाने' का प्रयोग 'ठहराने' से कम प्रचलित है. 'रहना' का प्रेरणार्थक रूप नहीं बनता.

4. *रहने देना* या *जाने देना* अपने मूल अर्थ से कटा, बहुप्रयोगी शब्द है.

ड ड़; ढ ढ़—स्वनिमिक स्थिति 1. क्या हिंदी में /ड/ तथा /ड़/ दो अलग स्वनिम हैं या एक ही स्वनिम के दो संस्वन, जिनका शब्दों में ऐसा वितरण बताया जाए, जिससे वे अर्थ भेद की स्थिति में न आएँ? यहाँ इनके परिपूरक वितरण की स्थिति दर्शायी गयी है. [ड] शब्दारंभ तथा [ड, ण] के बाद आता है, [ड़] शब्दांत तथा स्वर मध्य में आता है.

[ड] *डाल, डींग, डालना, डुबकी, डेरा*
अड्डा, गुड्डा, खड्ड
अंडा, पंडित, दंड, मंडूक, चंडी

[ड़] *पेड़, साँड़, लाड़, पकड़, झापड़*
बड़ा, लाड़ू, गाड़ी, लड़ाई, साड़ी

इस वितरण में कई 'अपवाद' दिखायी पड़ते हैं. शब्दांत में [ड] *रोड, कार्ड* जैसे शब्दों में दिखायी पड़ता है, शब्द मध्य में [ड] *निडर, अडिग, डुगडुगी, डीलडौल, रेडियो* जैसे शब्दों में दिखायी पड़ता है. यही नहीं, हिंदी में देवीशंकर द्विवेदी (1968) के अनुसार तीन शब्द युग्म हैं, जहाँ अर्थ भेद दिखायी पड़ता है :

गैंडा	एक जानवर	गैंड़ा	जानवरों के गले में तावीज़
लौंडा	लड़का	लौंड़ा	शिश्न (बोलचाल का शब्द, गाली)
लौंडिया	लड़की	लौंड़िया	नौकरानी

यहाँ इन्हीं बातों के संदर्भ में इनकी स्वनिमिक स्थिति के बारे में विचार करेंगे.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. हर भाषा में दूसरी भाषाओं से शब्द ग्रहण करते समय नये स्वन आते हैं और नयी व्यवस्था भी साथ में आती है. जब तक इनके भाषा में समामेलित होने की स्थिति न आ जाए, तब तक भाषा में दुहरी व्यवस्था की बात करनी होती है. रोड, रेडियो उधार के शब्द हैं और उनके आधार पर व्यवस्था घोषित करना ठीक नहीं है. दूसरा तर्क *निडर*, *सुडौल* जैसे शब्दों के संदर्भ में है. आप जानते हैं कि इन शब्दों में मूल शब्द क्रमशः डर, *डौल* हैं, जिनके साथ उपसर्ग *नि-*, *सु-* हैं. व्यवस्था यह है कि उपसर्ग के बाद शब्द मध्य में दिखायी पड़ने पर भी [ड] के उच्चारण में भेद नहीं होगा. यही बात *डमडम*, *डीलडौल*, *डुगडुगी* जैसे पुनरावृत्ति के शब्दों पर भी लागू होती है. अब हम नये सिरे से परिभाषा दे सकते हैं कि रूप (morph) के आरंभ में [ड] आता है. रही बात *गैंडा* और *गैंड़ा* जैसे शब्दों की. हिंदी में मात्रा वाले शब्दों पर अनुस्वार ही लिखा जाता है, चंद्रबिंदु नहीं. अतः ये शब्द न्यूनतम युग्म दीखते हैं, लेकिन हैं नहीं. इनका स्वनिक रूप निम्न प्रकार से है :

गैंडा ग ऐ ण ड आ गैंड़ा ग ऐँ ड़ आ

इस तरह ये न्यूनतम युग्म नहीं कहे जाएँगे और इनसे अर्थभेद वाली बात भी निराधार हो जाती है.

3. आगे वितरण तालिका में (पृ० 161) इन चारों स्वनों के प्रयोग का वितरण दिया गया है. आप देखेंगे कि कहीं कोई व्यतिरेक नहीं. इस कारण हम [ड] तथा [ड़] को स्वनिम /ड/ के और [ढ] तथा [ढ़] को स्वनिम /ढ/ के सदस्य मान सकते हैं.

डालना 1. मुख्य क्रिया के रूप में *डालना* के अर्थ में विविधता है. किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह हटाने या किसी चीज़ में या किसी जगह कोई चीज़ जोड़ने के मूल अर्थ से इससे विविध अर्थ निष्पन्न होते हैं. अर्थ की इस विविधता को इसके प्रयोगों में देख सकते हैं—*नीचे बिस्तर डालना*, *मेज़-कुर्सियाँ डालना*, *सामान नीचे डालना*, *बरतन में दो गिलास पानी डालना*, *बैंक में पैसे डालना*, *चाय में चीनी डालना*, *बाक्स में चिट्ठी डालना*, *आम का अचार डालना*, *दीवार पर स्याही डालना*, *दूसरों पर रोब डालना*, *किसी पर काम का बोझ डालना*. इन प्रयोगों में अर्थ वैविध्य को देख सकते हैं.

1.1. कोई-कोई 'डालना' का अर्थ अव्यवस्थित रूप से रखना और 'रखना' का अर्थ व्यवस्थित रूप से रखना मानते हैं. ऊपर के उदाहरणों से यह बात पुष्ट नहीं होती. ज़रूर आगे के वाक्यों में इस अंतर को देख सकते हैं—*यहाँ कूड़ा किसने डाला?* (*रखा). *सब चीज़ें करीने से रखो* (*डालो).

2. 'डालना' एक रंजक क्रिया है. *मार डालना*, *तोड़ डालना*, *फाड़ डालना* आदि में जान-बूझ कर कार्य करने का अर्थ प्रकट होता है. *कर डालना*, *धो डालना*, *बना डालना*, *लिख डालना* आदि में इच्छा करके कार्य समाप्त करने की बात है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	रूप में आरंभ में (रूप सीमा+से)	अक्षरांत में (अक्षर सीमा/से)	अक्षरारंभ में (अक्षर के बाद के)	अक्षरारंभ या अंत में (सवर्गीय स्वन के पास या बाद)	व्यंजन गुच्छों में
ड	डर, डालना, डूबना निडर, सु+डौल, अ+डिग डील+डौल, डुग+डुगी डब+डबाना			अड्/डा, गुड्/डा, अं/डा, पं/डित, खं/डन	खड्ड, डंड, खंड वोर्ड, कार्ड जाड्य खड्ग गोल्ड
ड़		पेड़, गुड़, लाड़ लड़/ना, पकड़/ना गड़/बड़, घुड़/दौड़ माँड़, साँड़/नी	ना/ड़ा, छो/ड़ा, बी/ड़ी ब/ड़प्/पन, ल/ड़ा/ई, गैं/ड़ा, लौं/ड़ा, गँ/ड़ासा डाँ/ड़ी		
ढ	ढंग, ढाल, ढोलक नि+ढाल ढीला+ढाला			गड्/ढा, बुड्/ढा, ! में/ढक. ! ठं/ढक	धनाढ्य
ढ़		गढ़, बाढ़, रीढ़ पढ़/ना, चढ़/ना गढ़/वाल	प/ढ़ा, ग/ढ़ा, बू/ढ़ा, प/ढ़ाई में/ढ़क		! ठंढ

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. पड़ना 'डालना' का मिथ्यावाच्य है, लेकिन इस रंजक क्रिया का 'पड़ना' रूप नहीं बनता. *किताब नीचे क्यों पड़ी है? यह यहाँ किसने डाली? मैंने किताब फाड़ डाली (*किताब फट पड़ी). मैंने काम पूरा कर डाला (*काम पूरा हो पड़ा).*

डुबाना, डुबोना दोनों ही प्रचलित प्रयोग हैं. यही बात *चुभाना, चुभोना* पर लागू होती है.

ण 1. यह मूर्धन्य नासिक्य व्यंजन स्वन है. वास्तव में /ण/ का उच्चारण दो तरह से होता है. 'ट' वर्ग के व्यंजनों से पहले ही यह नासिक्य व्यंजन स्वन है. अन्यत्र, विशेषकर अक्षरांत तथा स्वर मध्य में यह अनुनासिकता युक्त [ड़] के समान उच्चरित होता है. इस संदर्भ में /ण/ दक्षिण की भाषाओं से भिन्न है, जहाँ यह सर्वत्र नासिक्य व्यंजन है.

इसके उच्चारण में निम्नलिखित बंधन हैं. यह शब्दारंभ में नहीं आता. हिंदी के शब्दों में इसका द्‌वित्व नहीं होता. संस्कृत के केवल दो शब्दों में जो संस्कृत शैली के हैं और अपेक्षतया अप्रचलित हैं, इसका द्‌वित्व मिलता है–*अक्षुण्ण, विषण्ण*. [ड़ँ] का द्‌वित्व उच्चारण नहीं हो सकता. और यहाँ हिंदी भाषी मूर्धन्य नासिक्य /ण/ का द्‌वित्व नहीं करते. इन दोनों शब्दों का उच्चारण हिंदी भाषी दक्षिण के लोगों से भिन्न प्रकार से करते हैं. इसी तरह /ण/ का दो अन्य व्यंजनों के साथ संयोजन मिलता है–*पुण्य, कण्व*. यहाँ भी यही कठिनाई है. हिंदी भाषी /पुँड़्य/ जैसा उच्चारण करते हैं, जो मूल नासिक्य व्यंजन के उच्चारण से भिन्न है. इसी कारण मैंने **किण्वन** में बताया कि नयी शब्दावली बनाते समय ऐसे जटिल उच्चारण के स्थलों को दूर रखना चाहिए, जिससे समस्याएँ न बढ़ें. *रुग्ण, पूर्ण* जैसे शब्द जिनमें /ण/ गुच्छ का दूसरा सदस्य बन जाता है, अधिक कठिन या भिन्न नहीं हैं.

2. इस वर्ण का एक अन्य रूप है 〈ग़ा〉 (देखें **मानक देवनागरी लिपि**). यह रूप अमानक है.

3. 'ण' मूलतः संस्कृत वर्णमाला का सदस्य है, इसका उच्चारण भी संस्कृत की ही विशेषता है. कई भारतीय भाषाओं ने इसे अपना लिया है और इसको ले कर कई शब्द रच लिये हैं. हिंदी में किसी समय स्वन परिवर्तन के कारण यह लुप्त हो गया था और सब जगह 'न' का प्रयोग होने लगा था. *रानी, कनी* (कणिका), *बीना* (वीणा), *कंगन, किरन, दर्पन* जैसे सैकड़ों शब्द बदल गये थे और ये अब भी हिंदी में विद्‌यमान हैं. कई अहिंदी भाषी, जिनकी भाषा में ये शब्द अब भी 〈ण〉 से लिखे जाते हैं, हिंदी में *राणी* आदि में 〈ण〉 लिखने की 'गलती' करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधुनिक काल में हिंदी फिर संस्कृत के मार्ग को पकड़ रही है और सैकड़ों की संख्या में पुनः संस्कृत शब्द ले रही है या पुराने शब्दों को संस्कारित कर रही है. *पुरान*, *हरन*, *चरन*, *सरन* (*शरण*), *गुन*, *कारन*, *निवारन* जैसे बोलियों के रूप मानक हिंदी में अमानक या कम से कम ग्राम्य प्रयोग गिने जा रहे हैं. बोली बोलने वालों के लिए इससे कैसा धक्का लगा या लगता होगा, यह अपने में रोचक विषय है. और हिंदी प्रदेश के छात्रों के लिए भी *न-ण* भाषा दोषों का एक प्रमुख स्रोत है. इस नये उत्थान के कारण ही ण के गुच्छ सीखे नहीं गये हैं. थोड़े-से शब्दों में *न-ण* के पर्याय अभी तक मिलते हैं. आगे ण ही प्रतियोगिता जीतेगा, यह मेरा अनुमान है. न वाले रूप चाहे नामों में, चाहे अन्य शब्दों में, अभी भी कम प्रचलन में हैं. ऐसे कुछ शब्द हैं :

गुना-गुणा (चार *गुना* आदि, गणित में *गुणा करना*)

बानी-वाणी *किशन-कृष्ण*

बीना-वीणा *फन-फण*

4. इस चर्चा का एक और पहलू है. अब हम मान सकते हैं कि *ण* वाले शब्द संस्कृत मूल के होंगे या तद्भव होंगे. अन्य विदेशी भाषाओं से आये शब्दों में ण का स्थान नहीं है. यह तो निश्चित रूप से कह सकते हैं कि अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी के स्रोतों से आये शब्दों में ण नहीं होगा.

तकारांत संज्ञा शब्द तकारांत शब्द निम्नलिखित स्रोतों से हैं :

1. संस्कृत से आये कुछ तकारांत शब्द हैं (जो मूल रूप में हलंत से या त से समाप्त होते थे). ऐसे शब्द हिंदी में पुल्लिग हैं. *विद्युत*, *रजत*, *अक्षत*, *घात* (*विश्वासघात*).

1.1. इसी तरह 'त्र' आदि से अंत होने वाले शब्द अब हिंदी में तकारांत हैं. ये भी पुल्लिग में आते हैं. *गात* (*गात्र*), पूत (पुत्र), सूत (सूत्र), मूत (मूत्र), *मीत* (*मित्र*), *पात* (*पत्र*).

1.2. संस्कृत के *त्रि*, *ति*, *र्ति* से समाप्त होने वाले कई शब्द हिंदी में तकारांत शब्द बन गये हैं. मूल भाषा के अनुसार ये स्त्रीलिंग शब्द हैं. *रात* (रात्रि), प्रीत (प्रीति), रीत (रीति), कीरत (कीर्ति), मूरत (मूर्ति), *संगत* (संगति), *गत* (गति), *जात* (जाति).

2. उर्दू मूल के ज़्यादातर तकारांत शब्द स्त्रीलिंग हैं. यह कई भाषिक कारणों से होता है, जिनमें स्रोत भाषा की रूप रचना का आधार देखा जा सकता है. अरबी मूल के सैकड़ों शब्दों की रूप रचना में तीन वर्णों का एक मूल रूप (radical) मिलता है और उससे कई प्रकार की संज्ञाएँ रूपसिद्ध होती हैं. ऐसी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तकारांत संज्ञाएँ स्त्रीलिंग शब्द हैं. दूसरी ओर फ़ारसी के धातु, जो क्रियार्थक रूप -न छोड़ने से बनते हैं, स्त्रीलिंग शब्द हैं (देखें **धातु रूप में संज्ञा**). इस कारण उर्दू के सैकड़ों तकारांत शब्द स्त्रीलिंग में आते हैं. जैसे सूरत, सीरत, बुत, बात, इनायत, पर्त~परत, हिमायत, हिमाकत, शराफ़त (<शरीफ़), जुर्रत, फ़जीहत, ख़ुराफ़ात, नौबत, सोहबत, ख़िदमत, ख़ैरात, ताकत, दावत, दवात, नफ़रत, दहशत, मुहब्बत, रिश्वत, मात, मिल्कियत, राहत, तबियत, कीमत, कुव्वत~कूवत, इमारत, कुदरत, वकालत, शिकस्त, शिकायत, आदत, अदालत, अमानत, अदावत, किल्लत, काबिलियत (<काबिल), गफ़लत (<गाफ़िल), किस्त~किश्त, पुश्त, नज़ाकत (<नाज़ुक), नसीहत, कयामत, फ़रागत, फ़रोख़्त, नीयत, बिसात, मरम्मत, नजात आदि शब्द द्रष्टव्य हैं. आप थोड़ी मेहनत करें, तो अपनी फ़ेहरिस्त ख़ुद बना सकते हैं.

2.1. हिंदी में बहुवचन -आत प्रत्यय से बनने वाले उर्दू के जो शब्द मिलते हैं, वे सभी पुल्लिग हैं. सवालात, मकानात, ताल्लुकात, इंतज़ामात, वाकयात, कागज़ात कुछ उदाहरण हैं. ये शब्द प्रायः पुल्लिग बहुवचन के रूप में व्यवहृत होते हैं. इनका तिर्यक रूप -ओं लगा कर नहीं बनता. देखें **विदेशी बहुवचन शब्द.**

2.2. कुछ उर्दू के तकारांत शब्द पुल्लिग भी हैं. ऐसे शब्दों की सूची बहुत छोटी है. बालिश्त, गोश्त, ख़त (बहुवचन ख़तूत), तख़्त, वक्त, शहतूत (बहुवचन ?), दस्तख़त, शरबत कुछ उदाहरण हैं.

3. हिंदी के अपने शब्दों में तकारांत संज्ञा शब्द बहुत कम हैं. इनमें से पुल्लिग या स्त्रीलिंग शब्दों को किसी नियम से अलग करना कठिन कार्य है. पुल्लिग– मत, भात, करैत. स्त्रीलिंग–क्रियाओं से बने शब्द बचत (<बचना), खपत (<खपना), लागत (<लगना), रंगत (<रँगना), चाहत (चाहता). अन्य लात, घात.

तकिया कलाम देखें **प्रारंभक शब्द.**

तलाश, तलाशी 1. तलाश फ़ारसी का शब्द है, स्त्रीलिंग शब्द है. यह 'ढूँढ़ना' के अर्थ में आता है. पुलीस चोर की तलाश में है. जनाब आज कहाँ चले गये थे ? मैं तो आप ही की तलाश कर रहा हूँ.

2. तलाशी भी संज्ञा शब्द है और 'तलाश' लेने के व्यापार का अर्थ सूचित करता है. उसने मेरे कमरे की तलाशी ली. जेबों की तलाशी. *नौकरी की तलाशी, *जेब की तलाश गलत प्रयोग हैं. जामा तलाशी का मतलब है शरीर तथा कपड़ों की भौतिक रूप में तलाशी.

3. **नामधातु** 'तलाशना' अब प्रयोग में आ रहा है. वैसे सामान्य प्रचलित प्रयोग हैं–तलाश करना, तलाश में रहना/होना, तलाशी लेना, तलाशी देना.

-तः यह प्रत्यय संस्कृत शब्दों में 'तौर पर', 'रूप से' के अर्थ में प्रयुक्त होता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी अर्थ में *-तः* का पर्यायवाची प्रयोग है *-तया*. हिंदी में दोनों के कुछ उदाहरण हैं :

पूर्णतः~पूर्णतया	पूर्ण रूप से
अंशतः~अंशतया	आंशिक रूप से
संभवतः~संभवतया	शायद
सामान्यतः~सामान्यतया	आम तौर पर
विशेषतः~विशेषतया	ख़ास तौर पर
वस्तुतः~वस्तुतया	वास्तविक रूप से, असल में

-ता 1. संस्कृत में विशेषण में *-ता* जोड़ने से स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द बनते हैं (*समता, स्वतंत्रता, एकता, सुंदरता*). और *-य* जोड़ने से पुल्लिग संज्ञा शब्द बनते हैं (*साम्य, स्वातंत्र्य, ऐक्य, सौंदर्य*). हिंदी में दोनों प्रकार के संज्ञा शब्द चलते हैं. कुछ लोग गलती से विशेषण में दोनों प्रत्यय लगा देते हैं (या यों कहें कि संज्ञा में पुनः *-ता* लगा देते हैं). जैसे, *साम्यता, स्वातंत्र्यता, ऐक्यता, सौंदर्यता*. ये चारों शब्द गलत हैं.

2. इसी तरह अन्य भाववाचक संज्ञा शब्दों में भी गलती से *-ता* लगाते हैं, जैसे *अज्ञानता* (*अज्ञान* के लिए).

3. *समता* के लिए *समानता*, *महत्ता* के लिए *महानता* नये प्रयोग हैं. लेकिन इनकी व्युत्पत्ति नियमविरुद्ध नहीं है. प्रायः पहले शब्द से दूसरे शब्द का प्रचलन अधिक है.

4. *मान्य, काम्य, योग्य* आदि विशेषणों में पहले से /य/ होने के कारण इनमें सिर्फ़ -ता लगता है.

ताकि 1. *ताकि* भी **इसलिए, चूँकि, क्योंकि** की तरह कार्य-कारण संबंध व्यक्त करने वाला योजक है. लेकिन यहाँ कारण कोई तथ्यपरक व्यापार या वास्तविक घटना नहीं, बल्कि तथ्येतर क्रिया है. *ताकि* से कार्य का प्रयोजन सूचित किया जाता है. तथ्येतर क्रिया होने के कारण यह हमेशा संभावनार्थ में ही आता है. वाक्य में उपवाक्यों का क्रम कार्य-कारण का है. *मैंने उसे पैसे दिये, ताकि वह कलम ख़रीद सके. मैं उनसे मिलना चाहता था, ताकि उन्हें अपनी कठिनाइयाँ बताऊँ. हम लोग रोज़ इसी रास्ते से जाते थे, ताकि चोरों से बचा जा सके.*

1.1. कई संदर्भों में *ताकि* की जगह *इसलिए कि* का इस्तेमाल किया जाता है. *?हम लोग आपसे मिलना चाहते हैं, इसलिए कि आपको अपनी कठिनाइयों से अवगत कराएँ.* लेकिन यहाँ *इसलिए ··· कि* अधिक प्रचलित है, ग्रहणीय है. *मैं इसलिए खाता खोल रहा हूँ कि इस बहाने कुछ पैसे जमा कर सकूँ.*

1.2. *ताकि* की तरह *जिससे कि~कि जिससे* का भी प्रयोग किया जाता है. यह तथ्येतर क्रियाओं में तथा विधि आदि में भी आता है. *तुम जल्दी जाओ*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिससे कि बस मिले (?तुम जल्दी जाओ, ताकि बस मिल जाए). हम कल जल्दी बाज़ार जाएँगे, जिससे कि सारा सामान ला सकें (?हम कल जल्दी बाज़ार जाएँगे, ताकि सारा सामान ला सकें). इसलिए · · · कि के साथ भी ऐच्छिक रूप से जिससे आता है. मैं इसलिए आपके घर आया हूँ कि जिससे आपसे बात कर सकूँ. ऐसा · · · कि, इतना · · · कि वाले वाक्यों में भी ऐच्छिक रूप से जिससे आता है.

2. ताकि प्रयोजन सूचक है. इसलिए कारण-कार्य वाक्यों का कर्ता चेतन प्राणी होना चाहिए. जिन कारण वाक्यों में जड़ व्याकरणिक कर्ता है, उनमें ताकि वाला उपवाक्य नहीं आता *बत्ती रात भर जलती है, ताकि लोग पढ़ सकें. *दरवाज़ा खुला, ताकि हम अंदर आ सकें.

जिससे वास्तविक कारण-कार्य संबंध बताता है. इसलिए यहाँ जड़ कर्ता आ सकता है. हवा ज़ोर से चली, जिससे/इसलिए (*इसलिए कि) हम परेशान हो गये. प्रयोजन के अर्थ में यहाँ जिससे कि आदि नहीं आते. *बत्ती जलती है, जिससे कि/इसलिए कि हम पढ़ सकें. *जल्दी खाना बन गया जिससे कि/इसलिए कि हम सिनेमा जाने से पहले ही खाना खा लें.

तिथियाँ 1. भारतीय परंपरा के अनुसार पूर्णिमा से पूर्णिमा तक के दिनों को तिथियों में बाँटा गया है. पूर्णिमा से अमावस्या तक का समय कृष्ण पक्ष कहलाता है और अमावस्या से पूर्णिमा तक का समय शुक्ल पक्ष. हर पक्ष या पाख या पखवाड़े में पंद्रह तिथियाँ होती हैं, जो निम्न प्रकार हैं (हिंदी के शब्दों के साथ कोष्ठक में मूल संस्कृत रूप दिये गये हैं)—पड़वा (प्रतिपदा), दूज (द्‌वितीया), तीज (तृतीया), चौथ (चतुर्थी), पाँचें (पंचमी), छठ (षष्ठी), सातें (सप्तमी), आठें (अष्टमी), नौमी (नवमी), दसमी (दशमी), एकादसी (एकादशी), द्‌वादस (द्‌वादशी), तेरस (त्रयोदशी), चौदस (चतुर्दशी). कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि अमावस (अमावस्या) है, तथा शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि पूनम (पूर्णिमा). बोलचाल में विकल्प के रूप में पाँचैं, सातैं, आठैं, छट्‌ठी आदि प्रयुक्त होते हैं.

2. संस्कृत की परंपरा के अनुसार तिथियों को सूचित करने वाले शब्द स्त्रीलिंग हैं.

3. कई भारतीय त्योहार जिन तिथियों में पड़ते हैं, उन्हीं के आधार पर त्योहारों का नामकरण होता है. ऐसे नामों में कई संस्कृत मूल के तिथि के शब्दों से बने हैं, कई हिंदी के शब्दों से. कुछ उदाहरण देखिए—भैया दूज, धन तेरस, अनंत चौदस, करवा चौथ; रामनवमी, कृष्णाष्टमी, गणेश चतुर्थी.

तुलना के शब्द तथा तुलना वाली वाक्य संरचनाएँ 1. हिंदी में अंग्रेजी की तरह 'डिग्री' नहीं है. अंग्रेज़ी में दो 'डिग्री' हैं. हिंदी में सामान्य रूप से एक ही शब्द में से दोनों तरह की तुलना के वाक्य बनते हैं राम कृष्ण दोनों में राम अच्छा है. सारी कक्षा में वही अच्छा है. तुम दोनों में कौन अच्छा गा सकता है ? सारी कक्षा में मैं ही बड़ा हूँ. हम दोनों में /चारों में /सब से मैं ही बड़ा हूँ.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. इन्हीं वाक्यों को सीधी तुलना के संदर्भ में से से निम्न प्रकार से रूपांतरित कर सकते हैं. राम कृष्ण से अच्छा है. रतन (कक्षा में) सबसे अच्छा है. सीता गीता से अच्छा गाती है. रीटा सबसे अच्छा गाती है. मैं (इस कक्षा में) सबसे बड़ा हूँ. मैं तुम से/तुम दोनों से/तुम सबसे बड़ा हूँ.

उपर्युक्त दोनों की रचना को निम्न प्रकार से एक आरेख से दिखा सकते हैं :
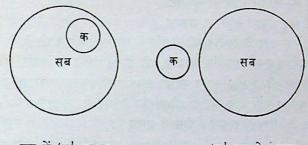
सब में 'क' अच्छा 'क' सब से अच्छा

तुम सब में कौन अच्छा गा सकता है ? (अच्छा गाने वाला 'सब' में से निकल आएगा). तुम सब में कौन अच्छा गा सकता है ? (अच्छा गाने वाला 'सब' से बाहर है). तुलना का यह अन्तर स्पष्ट हो जाए, तो हम इनके रूपांतरण की तुलना को निम्न प्रकार से दिखा सकते हैं :
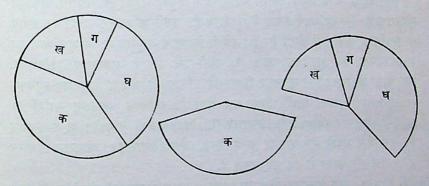
'क' चारों में बड़ा है.
'ग' चारों में छोटा है.

'घ' तीनों में बड़ा है.
'ग' तीनों में छोटा है.

'क' तीनों से बड़ा है.

3. राम सबसे अच्छा है—अगर इस वाक्य का तात्पर्य यह न हो कि राम सारी दुनिया से अच्छा है, यह संदर्भ से कटा और गलत है. तुलना के लिए उस वर्ग का उल्लेख करना होगा, जिसका राम सदस्य है. जैसे, अपने दोस्तों में, सारी कक्षा में. दूसरे संदर्भ में हम वर्ग के नामोल्लेख के साथ सबसे का प्रयोग कर

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकते हैं. *आज इस वर्ष की सबसे अधिक ठंड थी. गाँधी इस देश के सबसे महान व्यक्ति थे (~ हैं). बचपन जीवन का सबसे मधुर काल है.*

3.1. दो भिन्न वर्गों के सदस्यों की तुलना से वाली रचना से होती है, वहाँ में नहीं आता. *मेरे दोनों बच्चे आपके बड़े लड़के/सभी लड़कों से अच्छे हैं* (*लड़कों में)

4. *राम मेरे समान नहीं गा सकता.*
कोई मेरे समान नहीं गा सकता.

ये वाक्य समानता के अभाव की स्थिति में तुलना प्रकट करते हैं.

5. *की अपेक्षा* एक परसर्गीय शब्द है, जो *से* का पर्याय है. इससे तुलना प्रकट होती है. *राम की अपेक्षा कृष्ण ज़्यादा कमज़ोर/मज़बूत/सुलझा हुआ है. वहाँ जाने की अपेक्षा यही बात कर लें तो अच्छा है.* यह *से* की अपेक्षा अधिक साहित्यिक शब्द है और *से* से कम प्रयोग में आता है.

6. संस्कृत में comparative तथा superlative डिग्री के लिए क्रमशः *-तर* और *-तम* प्रत्यय मिलते हैं.

सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
लघु	लघुतर	लघुतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम

लेकिन हिंदी में ये शब्द तुलना की दृष्टि से प्रयुक्त नहीं होते. *?दोनों में राम सुंदरतर है. ?वह अपने स्कूल में सुंदरतम है.* इनमें अधिकतर शब्दों का प्रयोग संस्कृतनिष्ठ शैली में होता है या अंग्रेज़ी के ऋण अनुवाद में. ये मूल शब्द का व्याकरणिक रूप सुरक्षित रखते हैं. *गाँधी इस युग के महानतम व्यक्ति थे. मातृभाषा के माध्यम से उच्चतर शिक्षा की सुविधा की योजना. लघुतम~न्यूनतम* (minimum) नया पारिभाषिक अर्थ देता है, *सुंदरतम, अन्यतम* साहित्यिक शब्द हैं, *बृहत्तर* (greater), *उच्चतर* (higher) अंग्रेज़ी से गृहीत ऋण-अनुवाद हैं. इन जैसे शब्दों के अलावा अन्य शब्द, जैसे *विशालतर*, ज्येष्ठतम सामान्य बोलचाल की भाषा से हटे हुए लगते हैं.

6.1. *उत्+तर* (उत्तर) और *उत्+तम* (उत्तम) श्रेष्ठता की दो श्रेणियाँ बताने वाले शब्द हैं। अब *उत्तर* पहले के अर्थ में हिंदी में नहीं है, *उत्तम* 'बहुत अच्छा' के अर्थ में प्रयुक्त है. अंग्रेज़ी के best के लिए *सर्वोत्तम* शब्द चलता है. *तारतम्य* (तर+तम+य) से संस्कृत में दो स्तरों के भीतर भेद करने का अर्थ स्पष्ट होता है. लेकिन अब हिंदी में यह शब्द 'ऊँच-नीच' के भेद-भाव को प्रकट करने वाला शब्द है.

6.2. संस्कृत में *-तर, -तम* के समान कुछ शब्दों में *-ईयस* तथा *-इष्ठ* रूप भी मिलते हैं. हिंदी में ईयस, इष्ठ के शब्द रूढ़ अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं, तुलना के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थ में नहीं. आगे की शब्दावलियों में हिंदी में प्रचलित शब्द बड़े अक्षरों में दिये गये हैं :

श्रेयस	**श्रेष्ठ**	कनीयस	**कनिष्ठ**
घनीयस	**घनिष्ठ**	गरीयस	प्रेष्ठ (~प्रियतम)
वरीयस	**वरिष्ठ**	प्रेयस (< प्रिय)	**गरिष्ठ**
बलीयस	**बलिष्ठ**	लघीयस (< लघु)	लघिष्ठ (~लघुतम)

6.3. संस्कृत *-तर*, *-तम* की तरह उर्दू के भी *-तर*, *-तरीन* प्रत्यय इस समय 'डिग्री' भेद नहीं दिखाते, बल्कि विशेषण का स्तर भेद दिखाते हैं. ऐसे शब्दों की संख्या हिंदी में सीमित है. *बेहतर* 'अच्छा' का अर्थ देता है, *बहुत बेहतर/बेहतरीन* 'बहुत अच्छा' का अर्थ देते हैं. *यह कपड़ा बहुत ही बेहतरीन है.* पेशतर, ताज़ातरीन, जैसे शब्द कुछ साहित्यिक हैं, उर्दू शैली के हैं.

7. आम बोलचाल में सामान्य रूप से स्तर भेद *अधिक*, *बहुत अधिक*, *अत्यधिक*, *ज़्यादा*, *बहुत ज़्यादा* आदि शब्दों से प्रकट किये जाते हैं. *वह अत्यधिक दुखी है. आज वह बहुत ख़ुश है.*

8. वाक्य स्तर पर स्तर भेद 'इतना · · · कि' के वाक्यों से भी प्रकट होता है. *यह पुस्तक इतनी अच्छी है कि क्या बताऊँ. यह पुस्तक इतनी अच्छी है कि कुछ कह नहीं सकता.* इस अर्थ में तुलना के वाक्य भी देखें—*वह खेल में रमेश से इतना अच्छा है कि रमेश को हरा देता है. वह मकान इतना विशाल है कि · · · नवाब का महल भी उसके सामने कुछ नहीं है/फीका पड़ जाता है.* (~*वह मकान · · · नवाब के महल से भी विशाल है*).

तोलना इस शब्द की दूसरी वर्तनी *तौलना*, *तौल* भी मिलती है. यह संस्कृत मूल का शब्द है, जहाँ यह /तोल/ से ही लिखा जाता है. *भारोत्तोलन* जैसे व्युत्पन्न शब्दों में यह बात देखी जा सकती है.

2. यही स्थिति *न्योता*, *त्योहार*, *झोंपड़ी* आदि शब्दों में भी दिखायी पड़ती है, इन्हें 〈ो〉 से लिखने की परंपरा है. लेकिन 〈ौ〉 से युक्त वर्तनी अधिक प्रचलित है, ग्रहणीय है.

त्याग, त्यागना 1. त्याग एक महान गुण है. इस अर्थ में यह *क़ुरबानी* का पर्याय है. *गांधी जी ने देश के लिए बहुत त्याग किये.* जिस व्यक्ति में त्याग का गुण है, त्यागी कहलाता है.

2. *त्यागना* 'छोड़ना' के अर्थ में क्रिया शब्द है. लेकिन यह अपने मूल रूप में नहीं बहुधा रंजक क्रिया 'देना' के साथ ही आता है. *उन लोगों ने चोरी का गुण त्याग दिया. बुद्ध ने अपना गृह-संसार त्याग दिया.* इसी अर्थ में *त्याग करना* का भी प्रयोग होता है, लेकिन यहाँ महानता वाली बात नहीं है. सभ्य भाषा में (देखें **अव्यक्त कथन**) 'टट्टी करना' को *मल त्याग करना* भी कहा जाता है. ऊपर के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रयोग में 'त्याग' ही कर्म है, जबकि यहाँ 'त्याग करना' से पहले कर्म सूचक संज्ञा शब्द आता है. चूँकि 'करना' रंजक क्रिया नहीं है, इसके विश्लेषण में बाधा उपस्थित होती है. इसे हम दो प्रकार से विश्लेषित कर सकते हैं—*मल* (कर्म)+*त्याग करना* या *मल त्याग* (कर्म)+*करना*. हिंदी में 'करना' से पहले संज्ञा शब्द आते हैं, तो उनसे पहले 'का/की' आते हैं. *राम का इंतज़ार करना, जाने का प्रबंध करना, दोस्त की मदद करना, जाने की तैयारी करना.* इस दृष्टि से हम मूलतः *मल (का) त्याग करना* के रूप को सही मान सकते हैं और इसे मुहावरेदार प्रयोग कह सकते हैं. यहाँ संज्ञा *त्याग* क्रिया *त्यागना* के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है.

2.1. *तज देना* 'त्याग देना' के अर्थ में रंजक क्रिया 'देना' युक्त क्रिया रूप है, बोली का शब्द है. *तज* संज्ञा 'त्याग' से निष्पन्न तद्भव शब्द है, लेकिन क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त होता है.

त्योहार, त्यौहार इनमें पहला रूप अधिक प्रचलित है. देखें **तोलना**.

त्र इसे वर्णमाला में अलग स्थान क्यों दिया जाए, यह मेरी समझ से बाहर की बात है. लगता है कि क्ष त्र ज्ञ का क्रम निर्वाह लय को ध्यान में रख कर किया गया होगा. लेकिन ⟨त्र⟩ की जगह ⟨क्र⟩ भी रखा जा सकता था. अब नयी लिपि पद्धति में अलग से ⟨त्र⟩ की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह भी अन्य वर्णों के समान बनता है—त+र=त्र.

थोड़ा, थोड़ा-सा देखिये **सा**[2].

दंपति 1. यह शब्द पुरानी भारोपीय परिवार की भाषाओं में भी है. इसमें दो शब्द हैं—दम (स्त्री) और पति (पुरुष). इस शब्द को कहीं *दंपती* भी लिखा जाता है. स्रोत के कारण *दंपति* ग्रहणीय है.

2. प्रयोग की दृष्टि से यह एकवचन पुंल्लिग शब्द है. *हमारे पड़ोस में एक मद्रासी दंपति था.* लेकिन पति और पत्नी के कारण कई लोग इसका बहुवचन में भी प्रयोग करते हैं, क्योंकि 'दंपति था' के बाद, 'वे दोनों' बोलना पड़ सकता है. द्रष्टव्य है कि couple अंग्रेज़ी में एकवचन है.

द, ज़ जब हिंदी में /ज़/ लिया गया, तब उच्चारण के नयेपन के कारण इसे /द/ से बोला गया था (या होगा), जिसके कारण आज भी हिंदी में कुछ शब्दों में ये स्वनिम मुक्त वितरण में आते हैं. *कागद-कागज़, गुंबद-गुंबज़, तकादा-तकाज़ा.* उल्लेखनीय है कि यह वितरण केवल शब्दांत स्थिति में ही दिखायी पड़ता है. अन्य कई भारतीय भाषाओं में भी ऐसा मुक्त वितरण या हिंदी /ज़/ की जगह

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्दों में /द/ दिखायी पड़ता है. इससे अनुमान कर सकते हैं कि यह पुरानी तथा वहुव्यापी प्रवृत्ति है.

दरजा, श्रेणी, वर्ग, कक्षा इन चारों शब्दों में अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के प्रयोग में विविधता तथा तज्जन्य भ्रम दिखायी पड़ता है. दक्षिण का छात्र कहता है *मैं सातवें वर्ग में पढ़ता हूँ*, पंजाब का छात्र कहेगा *पाँचवें दरजे में*. मानक हिंदी की दृष्टि से *कक्षा* प्रचलित हो चला है. एक कक्षा में कई वर्ग हो सकते हैं. छात्र कहेगा *मैं सातवीं कक्षा में हूँ, 'ए' वर्ग में.*

समाजविज्ञान के संदर्भ में 'क्लास' (समाज के) के लिए *वर्ग* मानक हो गया है. *श्रमिक वर्ग, दलित वर्ग, समाज के निम्न वर्ग, वर्ग-संघर्ष* आदि अन्य प्रयोग भी स्थिर हो रहे हैं.

श्रेणी में अर्थ की विविधता है. परीक्षा में पास होने वाले छात्र 'श्रेणी' पाते हैं. रेलों के डिब्बों में दो 'श्रेणियाँ' हैं. इसी तरह से स्तर भेद के अनुसार क्रमिक वर्ग भेद करना हो, तो हम *श्रेणी* की बात कह सकते हैं. जैसे आलू बेचने वाले आकार के अनुसार आलुओं को तीन-चार श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं.

दरजा कक्षा तथा श्रेणी के अर्थ में प्रयुक्त होता था, अब भी इनके विकल्प के रूप में प्रयुक्त होता है. लेकिन इसके क्रमिक अप्रयोग (disuse) की स्थिति दिखायी पड़ती है. मुहावरा *अव्वल दरजे का* (याने 'श्रेष्ठ') अब भी चलता है. *दर्जा* वैकल्पिक वर्तनी है.

दान 1. कई प्रयोगों में देने और करने में अंतर कर पाना कठिन होता है. *भाषण देना~भाषण करना* एक उदाहरण है. इसी तरह *दान देना~दान करना* भी समस्या पैदा करता है. दो वाक्य लीजिए :

मैंने अपनी सारी संपत्ति · · · को दान (में) दे दी.

मैंने अपनी सारी संपत्ति · · · को दान कर दी.

पहले वाक्य में (दान) दे देना प्रमुख व्यापार है, दूसरे में *दान करना*. इस तरह ये दोनों क्रिया रूप पर्याय हैं. यही बात *भेंट दे देना~भेंट कर देना, नज़र देना~नज़र करना* पर भी लागू होती है.

1.1. ऊपर की वाक्य रचना तभी आ सकती है, जब कोई कर्म हो. अर्थात यह स्पष्ट है कि *दान* अपने में कर्म नहीं है.

2. 'दान' से वना शब्द *प्रदान करना* 'दान करना' या 'देना' का शैलीगत पर्याय है. *कृपया मुझे चार दिन का अवकाश प्रदान करें.* दूसरा शब्द *अनुदान* (grant) 'दान में देना' का संरचनागत पर्याय है. *सरकार ने हमारी संस्था को रु० 25,000 अनुदान दिये हैं (~का अनुदान दिया है).* लेकिन *का दान* की अपेक्षा *का अनुदान* अधिक प्रचलित है. *दान में मिलना* अधिक प्रचलित है. *?मुझे गाय का दान मिला. !मुझे पाँच रुपये का दान मिला~की दक्षिणा मिली.* मुझे पाँच रुपये

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दान में *मिले/एक गाय दान में मिली.*

हमारी संस्था को रु० *5,000* का *अनुदान मिला. !हमारी संस्था* को रु० *5,000 अनुदान में मिले.* दान *करना/देना* की और चर्चा के लिए देखिए **संयुक्त क्रियाएँ**.

-दायी यह प्रत्यय मूलतः *-दाय* (देना) से व्युत्पन्न है. इसे *-दाई नहीं लिखना चाहिए. *उत्तरदायी, अंशदायी, उत्तरदायित्व* आदि स्वर */-ई, -इत्व/ से नहीं लिखे जा सकते. देखें **-यी.**

दिनों के नाम 1 सप्ताह या हफ़्ते में सात दिन होते हैं. इनके नाम निम्न प्रकार से हैं—रविवार~इतवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार~गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, शनिवार, के *शनिचर, सनीचर, शनीचर* वैकल्पिक रूप हैं. देवताओं के गुरु बृहस्पति के नाम पर *गुरुवार* या *बृहस्पतिवार* है. इसे बोलचाल में *बृहस्पतवार* भी कहते हैं. *बुधवार* का नाम बुध ग्रह पर पड़ा है. इसे **बुद्धवार* कहना गलत होगा. *रविवार* को कई प्रांतों में 'भानुवार' तथा *गुरुवार* को 'वीर-वार' कहते हैं. अभी हिंदी में ये शब्द मान्य नहीं हैं.

2. दिनों का नाम सूचित करने के लिए अक्सर ये शब्द बिना 'वार' के बोले जाते हैं. जैसे, *मैं सोम को यहाँ से चलकर बुध को दिल्ली पहुँच जाऊँगा. मंगल या बुध किसी दिन कर लीजिए. शनि के दिन काम शुरू करना ठीक नहीं.* लेकिन *इतवार* को अकेले 'इत' कभी नहीं बोला जाता.

3. सप्ताह के दिनों के नाम उर्दू में फ़ारसी से आये हैं. ये हैं—*इतवार, पीर, मंगल~शेशंबा* (<शंबा–दिन), *चहार शंबा, जुमेरात, जुमा~जुम्मा, हफ्ता.* जैसे हमने ऊपर देखा, इतवार कभी इत नहीं बोला जाता, न ही दूसरे शब्दों में 'वार' लगता. **पीरवार. मंगल* अधिक प्रचलित शब्द है. उर्दू में भी अरबी से प्राप्त दिनों के नाम *योम* (दिन)+*उल* (का)+*अहद* (इतवार) तथा इसी क्रम से *इस्नैन/सलासा/अरबआ/ख़मीस/जुमअ/सब्त* साहित्यिक हैं, कम प्रचलित हैं.

दिशा 1. चार प्रमुख दिशाएँ हैं—*उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण,* इनमें पूर्व के लिए तद्भव रूप पूरव मिलता है. इन चारों दिशाओं के लिए उर्दू के शब्द हैं—शुमाल, मशरिक, मगरिब, जनूब. सामान्य रूप से हिंदी के संस्कृत मूल के शब्द ही अधिक प्रचलित हैं.

2. विशेषण बनाने के लिए इन सब शब्दों के साथ -ई लगाया जाता है. *उत्तरी, दक्षिणी, मशरिकी, शुमाली* आदि.

2.1. *उत्तरी छोर, दक्षिणी किनारा* आदि प्रयोग तो ठीक हैं, लेकिन मेरी अपनी मान्यता है कि दिशा सूचित करने के लिए विशेषण की आवश्यकता नहीं है. *उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा* आदि पर्याप्त हैं. *उत्तरी दिशा* आदि अनावश्यक प्रयोग हैं.

2.2. *दाक्षिणात्य* तथा *पाश्चात्य* ऊपर के विशेषणों के विकल्प के रूप में प्रयुक्त

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होते हैं.

3. दो दिशाओं के बीच की दिशा दोनों शब्दों से बने संयुक्त शब्दों से सूचित होती है, जिनमें 'उत्तर' तथा 'दक्षिण' प्रथम सदस्य होते हैं—*उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम*. लेकिन रेलवे ने 'पूर्वोत्तर' भी चलाया है. ये संयुक्त शब्द हाइफ़न से लिखे जाते हैं. दिशा सूचित करने के लिए इन्हें भी विशेषण बनाने की आवश्यकता नहीं है. *उत्तर-पूर्व दिशा, दक्षिण-पूर्व एशिया* आदि अच्छे प्रयोग हैं.

दुकान, दूकान ये दोनों रूप प्रचलित हैं. पहला रूप इस समय अधिक प्रचलित है, *दूकान* पहले अधिक प्रचलित था. शायद आगे *दुकान* ही बचा रह जाए.

दुख यह संस्कृत शब्द है और संस्कृत का मूल रूप 'दुःख' है. विसर्ग की हिंदी में शब्द मध्य की स्थिति में प्रयोग-विरलता के कारण 'दुख' अधिक प्रचलित हो चला है. चूँकि कहीं समस्या नहीं पैदा होती, *दुख, दुखद* रूप ही अपनाये जाएँ, तो अच्छा है.

दुनिया इस शब्द का अनुनासिकतायुक्त रूप 'दुनियाँ' गलत है. देखें **उर्दू के शब्दों में अंत्य अनुनासिकता**.

दुविधा पशोपेश (dilemma) के अर्थ में यही शब्द ठीक है, **द्विविधा* नहीं. 'दो तरह के' के अर्थ में *द्विविध* (*बहुविध* की तरह) का प्रयोग हो सकता है, लेकिन यह शब्द आम बोलचाल का नहीं है. 'दो विधाएँ' के अर्थ में भी **द्विविधाएँ* सही नहीं है. यह न हिंदी है, न संस्कृत.

देना 1. यह क्रिया द्विकर्मक है—याने कोई वस्तु किसी प्राप्तिकर्ता को दी जाती है और दोनों क्रमशः कर्म तथा गौण कर्म हैं. दी जाने वाली चीज़ भौतिक वस्तु (रुपया, घड़ी) हो सकती है, या व्यवहार या विचार (धोखा, प्यार, शिक्षा, उपदेश). दूसरी स्थिति में गौण कर्म प्रायः अनुभवकर्ता है. इसके बारे में **दान** तथा **संयुक्त क्रियाएँ** शीर्षक प्रकरणों में भी चर्चा की गयी है.

1.1. कुछ ऐसे प्रयोग हैं, जहाँ प्राप्तिकर्ता नहीं है, लेकिन उसकी जगह कोई स्थान या विचार है. *माथे पर बिंदी देना, किसी बात पर ध्यान देना, किसी बात पर ज़ोर देना* आदि. इसी संदर्भ में *दे मारना* आदि क्रियाओं की चर्चा के लिए **रंजक क्रिया** देखिए.

2. 'देना' एक रंजक क्रिया है, जो पूर्वज्ञान पर आधारित है. 'देना' से ('लेना' की तुलना में) दूसरे के लिए (अपने लिए नहीं) किये गये कार्य का द्योतन होता है. ऐसे वाक्यों में प्रयोजन जिसके लिए है या व्यापार जिस पर हुआ है, उसका उल्लेख हो सकता है (*मैंने पिता को पैसे भेज दिये. डाकू ने यात्री को जान से मार दिया*) या व्यापार का अपने लिए न होना सूचित हो सकता है (*मैंने अपनी घड़ी बेच दी. मैंने कूड़ा बाहर फेंक दिया. उसने रेडियो बंद कर दिया*).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अकर्मक क्रियाओं के साथ रंजक क्रिया देना 'पड़ना' के समान है और पूर्वज्ञान नहीं बल्कि आकस्मिकता का अर्थ देता है. न ही इसमें दूसरों के लिए प्रयोजन वाली बात दिखायी पड़ती है. यहाँ पूर्वज्ञान तथा प्रयोजन दोनों बातों पर पुनर्विचार कर लें. *राम चला गया* की उक्ति के संदर्भ में श्रोता की ओर से मान कर चल रहे हैं कि वह राम के जाने के बारे में कुछ जानता था. अन्यथा हम स्वयं प्रसंग उपस्थित कर देते हैं. *तुम्हें मालूम है न कि राम विदेश जाना चाहता था. इरादे का पक्का है. आख़िर चला ही गया.* यह बात *हँस/रो/चल+देना* पर लागू नहीं होती. प्रयोजन के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि कर्म या गौण कर्म ही प्रयोजन पाता है (*तुम मेरे लिए एक किताब मँगा दो. उन बच्चों को बाहर भगा दो*). यह बात *हँस देना* आदि पर लागू नहीं होती. *वह हँस दिया* में हँसने का ऐसा कोई प्रयोजन नहीं, जो कर्ता को मिले.

3. *जाने देना, करने देना* आदि में कार्य करने की अनुमति देने का उल्लेख है. *गाड़ी आने दो, उसे जाने दो, बारिश होने दो* में उन व्यापारों का इंतज़ार करने, कार्य के लिए अनुमति देने या परवाह न करने का अर्थ प्रकट होता है. (*अच्छा*) *जाने दो* बात समाप्त करने के लिए एक प्रचलित **प्रारंभक शब्द** है.

4. प्राणियों के संदर्भ में *अंडा देना, बच्चा देना* आदि मुहावरेदार प्रयोग हैं. इसी तरह के अन्य प्रचलित मुहावरे हैं–'साथ देना' (*मैं अंत तक तुम्हारा साथ दूँगा/तुम्हें साथ दूँगा*), 'जान देना' (*वह मुझ पर जान देती है*) आदि. *मामले को प्रधानता/तरजीह देना, योजना/कार्य को विस्तार देना, काम के लिए समय देना, पत्र का उत्तर देना* आदि अंग्रेज़ी से प्रभावित नये मुहावरे हैं.

द्रष्टव्य 'दृष्टि' से संबद्ध यह शब्द *दृण्टव्य नहीं लिखा जाना चाहिए. इसी तरह *द्रष्टा* सही रूप है, **दृष्टा* नहीं.

द्वित्व वर्ण संस्कृत के शब्दों में ऊपर के रेफ के साथ द्वित्व वर्ण या द्वित्व के संदर्भ में सवर्गीय गुच्छ वर्ण लिखने की प्रवृत्ति थी, जो कई हिंदी के लेखकों में भी दिखायी पड़ती है. रामचंद्र वर्म्मा अपने नाम का रूप क्या अपनाये हुए हैं देखिए. पुराने ग्रंथों में *आर्य्य, कार्य्य, मार्ग्ग, धर्म्म* आदि रूप भी मिलते हैं. इसके विपरीत आधुनिक हिंदी में स्वीकृत शब्दों में भी द्वित्व को हटाने की परंपरा बन रही है. *अर्ध (अर्द्ध), कर्तव्य (कर्त्तव्य), पूर्ति (पूर्त्ति), कीर्तन (कीर्त्तन), मूर्त (मूर्त्त), मूर्छा (मूर्च्छा), मूर्धन्य (मूर्द्धन्य)* आदि शब्द अब सहज हो गये हैं.

2. समान प्रवृत्ति के लिए *महत्त्व, तत्त्व, उज्ज्वल* आदि शब्द देख सकते हैं, जिन्हें क्रमशः *महत्व, तत्व, उज्वल* लिखने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है. ये क्रमशः *महत्+त्व, तत्+त्व, उत्+ज्वल* से बने हैं. इस कारण यहाँ एकल वर्ण लिखना गलत होगा. देखें **महत्त्व, उत्, सत्.**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धातु रूप में संज्ञा हिंदी के क्रिया धातु संज्ञा शब्द भी हैं; ये शब्द स्त्रीलिंग होते हैं. इसके सैकड़ों उदाहरण हैं–*खीझ, दौड़, पहुँच, पूछ* (<*पूछना, यहाँ मेरी कोई पूछ नहीं है*), *हार, जीत, हार-जीत, कसक, चमक, चमक-दमक, चीख़, झिड़क, पुकार, चिंघाड़, मार, उछाल* (देखें अ → आ), *खटक, फूट, उपज, काट, छूट, परख, माँग, रोक, रोक-टोक, सजधज, लूट, लूटपाट, समझ, पकड़, सीख, सोच, डाँट, डाँट-डपट, सूझ, सूझ-बूझ, चूक, जोड़, पहचान, जान-पहचान, जकड़, संभाल, झलक, झेंप, भूल, भूल-चूक, बाँट, भभक, महक, पैठ, सील* (*दीवारों पर बारिश में सील आ जाना*), *ख़रीद, चिढ़, ताक, थूक, फटकार, ललकार, चाह, निचोड़, छींक, डकार, मरोड़*.

2. इतनी अधिक संख्या में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द (लगभग बिना अपवाद के) मिलने के कारण यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि *-ना* अंत वाले क्रिया रूपों से ये संज्ञा शब्द बने हैं; अन्यथा कुछ पुल्लिग में और कुछ स्त्रीलिंग में हो सकते थे. धातु से क्रिया रूप तथा क्रिया रूप से धातु रूप में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के निर्माण में व्यवस्था तथा पुनर्व्यवस्था का चक्रीय क्रम रहा होगा, जिसे हिंदी तथा बोलियों के लंबे इतिहास में ढूँढ़ा जा सकता है.

यह बात उन संज्ञा शब्दों में और स्पष्टता से देखी जा सकती है, जो क्रियार्थक संज्ञा से नहीं बने हैं और मूल रूप में पुल्लिग हैं. कुछ उदाहरण हैं–*दुख* (दुखना), ?*सुधार* (सुधारना), *निबाह* (<निर्वाह) (निबाहना), *नाच* (<नृत्य) (नाचना), *फल* (फलना), *फूल* (फूलना), *विचार* (विचारना). देखिए **नामधातु**.

3.1. *डर, खेल* शब्द संस्कृत के नहीं हैं. ऊपर की बातों के संदर्भ में इन शब्दों की व्युत्पत्ति (संज्ञा से क्रिया या क्रिया से संज्ञा) के बारे में कुछ कहना कठिन हो जाता है. यही शायद इन शब्दों के उभयलिंगी प्रयोग का कारण है.

3.2. *जोड़* (पुल्लिग) समस्या है. क्या यह किसी संस्कृत संज्ञा शब्द का तद्भव रूप है ? फिर *जोड़-तोड़* भी क्यों पुल्लिग है ? *बोल* (पुल्लिग) भी समस्यात्मक शब्द है. द्रष्टव्य है कि *बोलचाल* स्त्रीलिंग है. लेकिन *बोल* बोलने के व्यापार के अर्थ में नहीं आया है. यहाँ अर्थ भिन्न है. शायद इसीलिए यह पुल्लिग में है.

4. संस्कृत के दो प्रत्यय *-कार* तथा *-क* पुल्लिगवाची हैं–*आकार, सत्कार, सीत्कार, हाहाकार; पालक, जनक, साधक*. लेकिन ये ही प्रत्यय जब धातु में आते हैं, तो ऊपर के 2 के अनुसार स्त्रीलिंग में आते हैं. द्रष्टव्य हैं *ललकार, फटकार, चमक, खटक* जैसे शब्द. दोनों जगह *-क* एक ही प्रत्यय है, समान अर्थ में प्रयुक्त है. इस संबंध में चर्चा के लिए देखें **ध्वन्यात्मक शब्द**. कई वैयाकरण इन प्रत्ययों के प्रयोग की इस विशेपता को न जानने के कारण सतही ढंग से *-क* तथा *-कार* प्रत्ययों को पुल्लिगवाची मानते हैं.

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि संस्कृत के ये प्रत्यय हिंदी में भिन्न प्रकार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से प्रयुक्त होते हैं. इसी से स्पष्ट हो सकता है कि किस तरह धातु को संज्ञा में प्रयोग करने की व्यवस्था भाषिक परंपरा से भी अधिक सशक्त है. इसी संदर्भ में इस चर्चा की पुष्टि में *चीत्कारना* (चीत्कार-पु०) *सीत्कारना, *हाहाकारना* आदि शब्दों का अभाव भी देखिए.

5. अन्य भारतीय भाषाओं में धातु रूप में संज्ञा के लिंग की स्थिति का अध्ययन करें, तो इसके ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश पड़ सकता है. हिंदी में यह व्यवस्था निरपवाद है, जबकि गुजराती तथा मराठी में धातु दोनों लिंगों में संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं. वैसे इन भाषाओं में स्त्रीलिंग धातु शब्द ही अधिक संख्या में मिलते हैं, (नपुंसक लिंग की चर्चा को यहाँ नहीं ला रहा हूँ).

गुजराती पुल्लिग शब्द–मार, काप (कापवुं–काटना), शोष (सोखना), लाग, ललकार

स्त्रीलिंग शब्द–पकड़, समज, मांग, छाँट, दोड (दौड़), छूट, छाप, पहुँच, मार-फाड, मार-झूड, मार-पछाड

मराठी पुल्लिग शब्द–मार, काप, शोध (नामधातु ?)

स्त्रीलिंग शब्द–चमक, समज (समझ), ओरड (चिल्लाहट, पुकार), पकड, हार, डकल (खोलना), देखरेख, शिंक (छींकना)

पंजाबी की स्थिति हिंदी के ही बराबर है. उल्लेखनीय है कि संस्कृत में, जिससे आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है, धातु संज्ञा नहीं बनते, न ही द्रविड भाषाओं में ऐसी व्यवस्था दिखायी पड़ती है.

6. मैं यह प्रस्ताव करना चाहता हूँ कि धातु रूप में संज्ञा शब्दों की व्यवस्था फ़ारसी प्रभाव के कारण है और फ़ारसी के ही कारण ये शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं. हिंदी, पंजाबी भाषाएँ फ़ारसी के सीधे प्रभाव के कारण उस व्यवस्था को उसी रूप में अपना सकीं, और गुजराती, मराठी भाषाएँ अप्रत्यक्ष प्रभाव के कारण निरपवाद व्यवस्था नहीं दिखातीं. फ़ारसी के धातु रूप में संज्ञा शब्दों के कुछ उदाहरण देखें (/न/ क्रियार्थक संज्ञा का रूप है–उसे छोड़ कर धातु शब्द देखा जा सकता है)–*गश्तन, बरदाश्तन*, दादन (देना, मुहावरा दाद देना देखें), *फ़रोख़्तन, गिरफ़्तन,* रफ़्तन (जाना), *पलीदन, आमदन,* रसीदन, इर्दन. यद्यपि ऐसे शब्द हिंदी में धातु के रूप में नहीं आते, बल्कि कई संज्ञा के रूप में गृहीत हुए हैं, ये सभी फ़ारसी तथा हिंदी दोनों में स्त्रीलिंग हैं. व्यवस्था साम्य के कारण यह अनुमान साधार लगता है. इस पर आगे विस्तृत तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक विश्लेषण की आवश्यकता है.

धोखा, धोका हिंदी में पहला शब्द ही मानक है, स्वीकृत है. मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं में दूसरा शब्द मिलता है, जिस कारण अक्सर सार्वजनिक स्थलों, विज्ञापनों में वह रूप दिखायी पड़ता है. मानक हिंदी के संदर्भ में 'धोका' त्याज्य है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्वन्यात्मक शब्द (Onomatopoeic words) ध्वन्यात्मक शब्द वे हैं, जो वस्तु या व्यापार के लिए उससे संबद्ध ध्वनि या ध्वनियों के अनुरूप बने होते हैं. बकरी की आवाज़ 'मे मे' है, क्योंकि इस शब्द का उच्चरित रूप बकरी की आवाज़ के अनुकरण में बना है. मे मे ध्वन्यात्मक शब्द है. बिल्ली म्याँऊ म्याँऊ बोलती है, घोड़ा हीं हीं करता है, रेल धड़ धड़ की आवाज़ करती जाती है. ऐसे ध्वन्यात्मक शब्दों के प्रयोग में प्राय: ध्वनि के स्रोत तथा ध्वनि के स्वरूप का उल्लेख कर दिया जाता है. *उसके मुँह से आवाज़ निकली, 'छी! छी!' उसके गले से घों घों की आवाज़ निकली. बिल्ली की म्याँऊ म्याँऊ सुनकर ··· वह खी खी करके हँसा. धूँ धूँ करके सारा घर जल गया. वह लड़का धड़ाम से नीचे गिरा.* ये शब्द सीमित होते हैं, अविकारी होने के कारण विस्मयादिबोधक के वर्ग में रखे जाते हैं. लेकिन विस्मयादिबोधक सीधे भावों से जुड़ते हैं, जबकि ध्वन्यात्मक शब्द उच्चरित ध्वनि की ओर संकेत करते हैं. ध्वन्यात्मकता हिंदी की शब्द रचना में प्रमुख स्थान वहन करती है. इससे बने हुए शब्द भाषा के अपने अर्थयुक्त शब्द हैं, भाषा के नियमों के अनुसार रूपसिद्ध होते हैं. इन शब्दों की विशेषता है कि बहुत से शब्दों में ध्वनियों के प्रयोग के आधार पर अर्थ का अनुमान नहीं किया जा सकता, क्योंकि रूप रचना के आधार पर बने शब्द मूल ध्वनि से हट जाते हैं. इसी कारण *रिरियाना, मिमियाना, घिघियाना, हिनहिनाना* आदि शब्दों में प्राय: मूल ध्वनि का अनुमान करना कठिन हो जाता है.

1. ध्वन्यात्मक शब्दों की रचना में (आवाज़) 'करना' के अर्थ में -क प्रत्यय का प्रयोग होता है. फूंक(*ना*) को हम फूँ कर(ना) मान सकते हैं. ऐसे शब्दों के निम्न-लिखित प्रकार हैं। (अ) **व+स** (दीर्घ) में -क. ऐसे शब्द हैं–थूक, फूंक, छींक, हाँक. 'हाँ, हाँ' करके गाय-बैलों को चलाने के संदर्भ में *हाँकना* का प्रयोग होता है. इसी तरह हम अन्य शब्दों में भी मूल ध्वनि-स्रोत का अनुमान कर सकते हैं. लेकिन पुष्ट अनुमान के अभाव में फेंक, झोंक, झाँक आदि अन्य शब्दों की रूप रचना के बारे में कुछ कहना कठिन हो जाता है. (आ) **व**+अ की पुनरुक्ति में -क प्रत्यय लगने से कई रूप बनते हैं. इन्हें भी 'करना' के अर्थ में देख सकते हैं. जैसे, 'ध ध करना' *धधकना* है. ऐसे अन्य शब्द हैं–फफक, भभक, ललक. चूंकि अक्षर की पुनरुक्ति की बात कही गयी है, ठठक~*ठिठक*, झझक~*झिझक* आदि समस्या पैदा करते हैं. संभव है कि उच्चारण सुविधा के कारण स्वरों का विषमी-करण हुआ हो. *फुफकार* में (-कार प्रत्यय की चर्चा आगे करेंगे) फू फू करने का अनुमान किया जा सकता है और मूलत: धातु रूप *फुफुकार* तथा बाद में स्वरों में पश्चगामी विषमीकरण का अनुमान किया जा सकता है. *सिसक* का *?ससक* रूप नहीं मिलता. फिर भी इसकी रचना को दोनों प्रकार से दिखा सकते हैं– **स+स+क → सिसक; सी+सी+क → सिसिक → सिसक.** (इ) तीसरे प्रकार के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्दों में **व+स** (ह्रस्व)+**व** में -क प्रत्यय का विधान दिखायी पड़ता है. ऐसे कई शब्द हैं–*चमक, महक, लहक, झलक, हुड़क, छलक, दहक, भिनक, भनक, छमक, भड़क, धड़क, सुड़क, धमक, कड़क, खटक, घुड़क, बहक* आदि. इन शब्दों को हम अन्य संबंधित शब्दों की रचना से पहचानते हैं, जैसे *चमाचम गाड़ी, हुड़ हुड़ करना, लहलहाना, खटखटाना* आदि. लेकिन कुछ ऐसे शब्द भी हैं, जो परिचित स्रोत से नहीं हैं और जिनके संबंधित शब्द भी नहीं मिलते, जैसे *फुदक, बिदक, झिड़क, थिरक, भटक, पटक, हिचक, अटक, हुमक, खिसक, पिचक* आदि. इन क्रिया धातुओं में /क/ की सामान्य विशेषता देखकर इन्हें -क युक्त ध्वन्यात्मक शब्द मानना तर्कसंगत लगता है, लेकिन -क निकाल कर !फुद, बिद, झिड़ आदि रूपों का अर्थ क्या बनेगा, यह विश्लेषण की बात है.

अर्थ की दृष्टि से इन शब्दों के संदर्भ में देख सकते हैं कि ध्वनि-अर्थ का संबंध स्पष्ट नहीं है या है ही नहीं. 'चम, दम, तम' दृष्टि से संबंध रखने वाले रूप हैं, 'मह, गम' घ्राण शक्ति से, 'चिप, लिज़, पिच, चिल' स्पर्श शक्ति से, 'लह, बह, चुह' प्रवाह से संबंध रखने वाले रूप हैं. ध्वनि से संबंधित रूपों में /न/, /म/ (मधुर ध्वनि), /ड़/ (भीषण ध्वनि) की प्रधानता के आधार पर तथा अन्य शब्दों में स्पर्श में /च, ज/, प्रवाह में /ह/ की स्थिति के आधार पर ध्वन्यात्मक शब्दों की रचना का आधार ढूँढ़ सकते हैं. लेकिन हर व्यंजन के साथ अर्थ का क्रम ढूँढ़ने लगें, तो सफल नहीं होंगे.

3. -क के अतिरिक्त ध्वन्यात्मक शब्दों में प्रत्यय -कार भी आता है. जैसे *ललकार, झनकार (~झंकार), फटकार, झिझकार, फुफकार, चमकार* (यह नया प्रयोग है). अर्थ की दृष्टि से *फटक, फटकार, झिझक, झिझकार, चमक, चमकार* आदि में अंतर देखा जा सकता है. संस्कृत में भी करना, करने वाला के अर्थ में -कार, -क प्रत्यय मिलते हैं और इनसे बने शब्द पुल्लिग (या नपुंसक लिंग) हैं. *सीत्कार, दुत्कार, धिक्कार, नर्तक, गायक, पुलक*. लेकिन हिंदी में चमक, फट-कार आदि -ना छोड़ने से बने संज्ञा शब्द हैं (देखें **धातु रूप में संज्ञा**). इस कारण ये हिंदी में स्त्रीलिंग शब्द हैं.

4. यहाँ हम ध्वन्यात्मक शब्दों से अन्य संबंधित शब्दों की रचना के बारे में देखेंगे. **व स व** की पुनरुक्ति से क्रियाविशेषण बनते हैं, जो व्यापार के समय उत्पन्न ध्वनि की ओर संकेत करते हैं (*सुड़सुड़ पानी पीना, पानी में छपछप चलना, खटखट करके, पानी टपटप गिरना, पायल छमछम बजना*). क्रियाविशे-षणों में संज्ञासूचक -ई प्रत्यय लगते हैं (*गुदगुदी, सुरसुरी, सनसनी, गुलगुली, फट-फटी, गिलगिली*). -आ प्रत्यय लगने से थोड़े-से पुल्लिग संज्ञा शब्द भी बनते हैं (*झुनझुना, बुलबुले*). इनमें -आ जोड़ने से एक ओर नामधातु बनते हैं (*धड़धड़ा, गड़गड़ा, गुड़गुड़ा, फुसफुसा, भिनभिना, हिनहिना* (<हीं→हिन), *दनदना,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लहलहा, बड़बड़ा) और दूसरी ओर कुछ विशेषण शब्द मिलते हैं (बुरबुरा (<बुरकना), पिलपिला, चिपचिपा, लिज़लिज़ा). यह ज़रूरी नहीं है कि एक शब्द से सारे रूप बन जाएँ (*चिपक, *लिज़लिज़ाना, *छलाछल). प्रतिबिंबित शब्दों की रूप रचना से इनका साम्य देखा जा सकता है.

इसी तरह पुनरुक्त **व स व** के बीच -आ क्रियाविशेषण की रचना करता है और वह क्रियाविशेषण -ई प्रत्यय ले कर संज्ञा बनता है. (फटाफट चलो. वह दनादन काम करता है. उसने धड़ाधड़ मारा. पानी टपाटप गिर रहा है. नयी गाड़ी चमाचम चमक रही है). इनसे बने कुछ संज्ञा शब्द हैं—फटाफटी, धड़ाधड़ी, तड़ातड़ी.

4.1. **व स व** में प्रत्यय -क लगता है और ये शब्द धातु भी हैं (चमक, चमकना; भड़क, भड़कना). थोड़े-से शब्द धातु रूप में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द हैं (चमक, महक, भनक). -का तथा -आका प्रत्ययों से पुल्लिंग संज्ञा शब्द बनते हैं, जो क्रमशः सामान्य तथा तीव्र ध्वनि का अर्थ देते हैं. -आक प्रत्यय क्रियाविशेषण वाक्यांश की रचना में ही काम आता है. (वह छपाक से पानी में कूदा. तड़ाक से नीचे गिरा. उसने फटाक से जवाब दिया.) यहाँ भी एक रूप से हर जगह सारे शब्द नहीं बनते.

तड़	तड़क	—	तड़ाक	—
		(पंजाबी तड़का ?)		
खट	खटक	खटका	? खटाक	खटाका
भड़	भड़क	—	भड़ाक	—
धम	धमक	? धमका	—	धमाका
		(धमकी)		
छप	छपक	? छपका	छपाक	छपाका
सुड़	सुड़क	—	—	—
धड़	धड़क	धड़का	? धड़ाक	धड़ाका
कड़	कड़क	कड़का, कड़की	—	कड़ाका
टप	टपक	टपका	—	—
सड़	? सड़क	—	सड़ाक	—

4.2. **व स** (क) से अन्य शब्दों की रचना की बात स्पष्ट नहीं है. अर्थ की दृष्टि से भभकना और भकभकाना, धधकना और धकधकाना समान प्रयोग हैं. इस कारण **व स क** की पुनरुक्ति से नामधातु बनाने की प्रवृत्ति भी दिखायी पड़ती है. दूसरी ओर भकभक करना, धकधक करना आदि शब्द भी संभव हैं. झकाझक, झकझक आदि शब्द अर्थ साम्य के कारण 'झक' से निष्पन्न माने जा सकते हैं, 'टक' से टकटकाना, टकटकी, टकाटक आदि देखे जा सकते हैं, जहाँ अब 'ट'

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाज़ के लिए नहीं, बल्कि दृष्टि के लिए प्रतीक बन गया है.

न, नहीं, मत, ना *न, नहीं* नकारात्मक (negative) शब्द हैं और *मत* निषेधवाची (prohibitive). इन तीनों पर कई ग्रंथों में विचार हुआ है और यह दिखाया गया है कि किस तरह से एक के स्थान पर दूसरा कई जगह आता है.

1. नहीं—यह नकारात्मक शब्द है और वाक्य के कथन को नकारता है. *गोपाल नहीं जाएगा* में *गोपाल जाएगा* का प्रत्यय बोध उपस्थित करने के बाद उसका खंडन कर दिया जाता है. हिंदी में दो प्रकार की क्रियाएँ हैं—तथ्यपरक और तथ्येतर. तथ्यपरक क्रियायुक्त वाक्यों में *नहीं* का प्रयोग होता है, जिनमें निम्नलिखित क्रियाएँ आती हैं—*आता है, आ रहा है, आया, आएगा* (यह दोनों के बीच की क्रिया है—कथ्य में तथ्येतर, संरचना की दृष्टि से तथ्यपरक-जैसी), है, चाहिए, सक, पा. इनके साथ ही वाच्य रूपांतरण में भी 'नहीं' आता है. *मैं नहीं जाता. उसने खाना नहीं खाया. वे लोग नहीं आएँगे. वह काम नहीं कर रही है. मुझे भूख नहीं है. मुझे कुछ नहीं चाहिए. मैं चल नहीं सकती.* अगर कोई इनमें 'न' का प्रयोग करे (*!मैं न जाता, !उसने खाना न खाया*), तो वाक्य गलत नहीं होगा, बल्कि वह शैली या व्यक्तिगत विशेषता मानी जाएगी. इन क्रियाओं में 'नहीं' का प्रयोग अधिक प्रचलित है, मानक है.

1.1. इन्हीं रचनाओं के अधूरे वाक्यों में भी 'नहीं' का प्रयोग होगा—*वह कल आया था, परसों नहीं*~*वह परसों नहीं, कल आया था. मुझे आम पसंद हैं, अमरूद नहीं*~*मुझे अमरूद नहीं, आम पसंद हैं.* इसी अर्थ में हम 'नहीं' के उत्तर को भी संक्षिप्त वाक्य मानेंगे. *तुम जाओगे? नहीं* (~*मैं नहीं जाऊँगा*).

1.2. संक्षिप्त उत्तर वाले 'नहीं' को तथा प्रतिवक्तव्य के संज्ञा शब्द 'नहीं' को बोलचाल में 'ना' से स्थानापन्न किया जाता है :

यह किसने तोड़ा? तुमने? नहीं~*ना*

उसने 'नहीं' कह दिया~*उसने 'ना' कह दिया*

2. 'मत' निषेधवाचक है और प्रत्यक्ष विधि के शब्दों के साथ लगता है. *तू मत जा, तुम मत जाओ, आप मत जाइये.* अगर 'मत' का स्थान बदलें, तो अर्थ में कुछ न कुछ प्रसंगगत अंतर आता है. *मत जा तू, तू जा मत.* दोनों में दूसरा वाक्य प्रायः अधिक कठोर आज्ञा है, पहला अनुतान के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ-च्छटाएँ देता है.

3.1. तथ्येतर क्रियाओं के साथ प्रायः 'न' आता है, जबकि कई स्थानों पर 'नहीं' का प्रयोग भी दिखायी पड़ता है. 'न' को तथ्येतर क्रिया युक्त वाक्यों के लिए सुरक्षित कर देना चाहिए. ऐसे कुछ वाक्य हैं—*आप न आते तो मैं न जाता*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसा न हो कि वारिश हो जाए~कहीं बारिश न हो जाए. तो मैं कल न जाऊँ ? भगवान न करे · · · (*नहीं करे). जब तक मैं न कहूँ, तुम बाहर मत जाओ. लोग शोर न मचाएँ (*नहीं मचाएँ) शायद वह आज भी न आए (*नहीं आए). न जाने, कैसे होगा सारा काम ?

3.2. 'न' प्राय: अप्रत्यक्ष विधि के शब्दों में लगता है. न जाइयो, न जाना, न जाइएगा. अगर निषेध को बाद में रखें तो 'नहीं' आता है. अभी जाना नहीं. अभी आप जाइएगा नहीं. यहाँ अन्य संयोजन भी मिलते हैं, लेकिन उक्त प्रयोग अधिक प्रचलित हैं.

3.3. 'न' काल, पक्षरहित क्रिया वाक्यांशों में आता है. इनमें 'नहीं' का प्रयोग अमानक है. न देख कर, न आने पर, न जाना ही ठीक है, न करते हुए (नहीं/ना करते हुए अलग रचना है), न मानने वाला.

3.4. 'न · · · न, न केवल/सिर्फ़ · · · बल्कि, चाहे · · · न' योजक हैं.

न जान, न पहचान, न शक्ल, न सूरत, न काम, न धंधा.

आप क्या पिएँगे ? चाय या काफ़ी ? न चाय, न काफ़ी. मैं कुछ नहीं पीता.

मैं न चाय पीता हूँ, न काफ़ी.

वह न स्कूल जाती थी, न ही घर में रहती थी

न आप जाएँगे, न कोई दूसरा.

यह बात न सिर्फ़ मैं जानता हूँ, बल्कि सभी जानते हैं

न तो आप काम करते हैं, न दूसरों को करने देते हैं.

तुम चाहे आओ या न आओ.

3.4.1. 'न कि' भी एक योजक है, यद्यपि यह एक ही उपवाक्य में आता है.

मैं तुमसे बात कर रहा हूँ, न कि उससे.

'कि नहीं' एक अन्य योजक है, जो एक ही उपवाक्य में लगता है. लेकिन इसमें 'नहीं' लगने का संरचनात्मक कारण ऊपर 3.2 में बताया गया है. 'न' वाक्य के अंत में नहीं आता. वाक्य के अंत में सिर्फ़ 'नहीं' आता है.

तुम जाओगे या/कि नहीं.

देखो, वे लोग बाहर बैठे हैं कि/या नहीं.

यही कारण है कि किसी कारण नकारात्मक शब्द को अंत में लेना पड़े, तो 'न/नहीं' का तदनुरूप प्रयोग दिखायी पड़ता है.

?मुझे चीनी मिली नहीं, न ही मैंने और कोई चीज़ ख़रीदी.

मैं शैतान हूँ नहीं, और न हूँ भगवान (~न मैं शैतान हूँ, न भगवान).

सोमवार को नहीं, बल्कि मंगलवार को आऊँगा.

3.5. कुछ पुनरुक्ति युक्त प्रयोगों में 'न' आता है. कहीं न कहीं, एक न एक दिन, कभी न कभी, कोई न कोई आदमी, किसी न किसी दिन.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3.6. यद्यपि नकारात्मक प्रयोग नहीं है, फिर भी 'न' के प्रयोगों के संदर्भ में एक और वाक्य संरचना का उल्लेख करना चाहूँगा. इसे भाषाविज्ञान में 'टैग' प्रश्न कहते हैं, जिसमें कोई व्यक्ति कोई प्रश्न करने के बाद पुष्टि के लिए दूसरा प्रश्न जोड़ देता है. 'न' भी इसी तरह का जुड़ा हुआ प्रश्न है. *तुम जाओगे न? वेतन कल मिल जाएगा न? कल आप सब समय पर आ जाएँगे न?* ऐसा ही प्रयोग 'क्यों न' सुझाव के रूप में वाक्य के आदि में आता है. *क्यों न हम सब बाहर चलें.*

3.6.1. विधि के शब्दों में प्रबलक के रूप में 'न' का प्रयोग होता है. *जाओ न. बैठो न.*

3.6.2. कुछ व्यक्ति वाक्यांशों के साथ तकिया कलाम के रूप में निरर्थक ढंग से 'न' का प्रयोग करते हैं. यह वैयक्तिक शैली है. *मैं गया था न. तब उसने न· · ·. वे लोग न, मेरी बहन को न· · ·.*

4.1. यहाँ हम नकारात्मक तथा निषेधवाची शब्दों की कुछ सामान्य विशेषताओं के बारे में देखेंगे. 'न' तथा 'नहीं' के प्रयोग में हिंदी में पूरक वितरण की स्थिति दिखायी पड़ती है. अगर इस वितरण का परिपालन किया जाए, तो मुझ जैसे अहिंदी भाषी अध्येताओं तथा छात्रों की कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं. उदाहरण के लिए दो उपवाक्य लीजिए :

गोपाल न आए.

गोपाल नहीं आये.

ऊपर की व्यवस्था के अनुसार पहला उपवाक्य कामना या आदेश की सूचना देगा, दूसरा पूर्ण पक्ष में *गोपाल आये* के निषेध की. पहले वाक्य में गोपाल आदरार्थ नहीं है, दूसरे में है. वाक्य रचना में *न, नहीं* का वितरण न हो, वर्तनी में *आए, आये* का अंतर न किया जाए (जैसे हिंदी में अभी स्थिति है) तो छात्र दोनों वाक्यों के अर्थ में अंतर नहीं कर पाएगा. यह मात्र एक उदाहरण नहीं, वल्कि इस तरह के और भी कई प्रसंग हैं. *इसलिए नहीं कि वह आ रहा है. इसलिए न कि वह आ रहा है.* हिंदी भाषी छात्र इन वाक्यों को देख कर, बिना प्रसंग जाने ही कह सकता है कि पहला वाक्य 'वह आ रहा है, इसलिए तुम नहीं आना चाहते हो' का उत्तर या प्रतिवाद है और दूसरा वाक्य एक प्रश्न है, जिसका तात्पर्य है—वह आ रहा है, इसलिए तुम नहीं आ रहे हो. है न ? अर्थ में अंतर की क्षमता इन वाक्यों में है *न, नहीं* के प्रयोग संदर्भ तथा अनुतान के कारण. अहिंदी भाषी दोनों से वंचित रह जाएँ, तो हिंदी में हिंदी भाषी जैसी दक्षता न जाने कब प्राप्त कर पाएँगे.

4.2. नकारात्मक-निषेधात्मक शब्द सामान्य वाक्यों की सूक्ष्मताओं को समाप्त कर देते हैं. सामान्य वाक्य में हम *कर दिया, कर लिया* का प्रयोग करते हैं,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिनसे फल के प्राप्तिकर्ता का भी बोध होता है. जब *नहीं किया* कहते हैं, तो हमें यह जानने की आवश्यकता ही क्यों पड़ेगी कि फल किसको नहीं मिला. इन शब्दों के रहते रंजक क्रिया, चुक, लग, निरंतरता बोधक कृदंत विशेषण, किया करना—ये सब प्रयोग लुप्त हो जाते हैं. यहाँ तक कि *करता है* का 'है' भी प्रायः छूट जाता है.

लेकिन उन प्रयोगों को निषेध या नकार नहीं मानना चाहिए जिनमें 'न' या 'नहीं' कोई शब्द है. एक उदाहरण देखिए :

जब तक वे लोग आ न जाएँ · · ·

मूल रूप में वाक्य का आशय है—वे लोग जाएँगे. उनके आने तक · · ·

कहीं बारिश न आ जाए.

मूल रूप में वाक्य का आशय है—ऐसा न हो (*हो जाए) कि बारिश आ जाए या बारिश आ जाए—ऐसा होना नहीं चाहिए. इसी तरह का उदाहरण है—छुट्टी मिल ही नहीं जाएगी, बल्कि · · · . मूलतः निषेधवाचक न होने के कारण यहाँ रंजक क्रिया के साथ भी 'न, नहीं' आते हैं.

4.3. 'मत' के वाक्य में स्थान के बारे में ऊपर चर्चा की. 'नहीं' क्रिया में कहीं भी आता है. *किया नहीं है, नहीं किया है, किया है नहीं.* वाक्य में इसका स्थान प्रायः क्रिया से पहले ही है—*मैं छोटा बच्चा नहीं हूँ. छोटा बच्चा तो नहीं हूँ मैं ~हूँ नहीं मैं. ?नहीं हूँ छोटा बच्चा मैं. *नहीं छोटा बच्चा हूँ मैं.* 'न' वाक्य के अंत में नहीं आता, नकारात्मक शब्द के रूप में 'नहीं' की तरह क्रिया में आता है (*आ न जाएँ~न आ जाएँ*) योजक के रूप में वाक्यांशों या उपवाक्यों के आदि में आता है. अन्य कुछ स्थानों में प्रयोग की बात वाक्यांश रचना से ही जुड़ी हुई है. लेकिन इनके प्रयोग में स्थान की विविधता कहीं दिखायी पड़ती है—शैलीगत भेद एक कारण है (मेरा एक मित्र हमेशा वाक्य क्रिया से और नकारात्मक वाक्य 'नहीं' युक्त क्रिया से शुरू करता था—*नहीं होगा यह काम पूरा. नहीं जाएँगे सिनेमा आज हम*). किन्हीं शब्दों पर विशेष बल तथा तदनुरूप पद क्रम इसका दूसरा प्रमुख कारण है.

नकारना यह 'इनकार करना' का पर्याय है.

यह नामधातु है और आधुनिक प्रयोग है. देखें **इनकार.**

नग सामान या माल के संदर्भ में अलग-अलग चीज़ों के लिए *नग* का प्रयोग किया जाता है. *कुली, गिन लो. दस नग हैं. माल कल भेज रहे हैं. कुल 20 नग हैं—दस बोरे, चार पेटियाँ और छह कनस्तर.*

नमस्कार कई हिंदी भाषी *नमस्कार* को 'नमष्कार' बोलते हैं. शायद *आविष्कार, शुष्क* जैसे शब्दों का प्रभाव हो. उस स्थिति में यह **अतिसुधार** कहलाएगा. लेकिन यह सही कारण प्रतीत नहीं होता, क्योंकि हिंदी में *पुरस्कार, तिरस्कार* जैसे शब्द भी मिलते हैं. *नमस्ते* 'नमस्कार' का पर्याय है. *प्रणाम* बड़े लोगों को किया जाता

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है, जबकि ऊपर के दोनों शब्द वर्गभेद रहित हैं.

नयी बोतल में पुरानी शराब अंग्रेज़ी में एक कहावत है new wine in old bottles. इसका तात्पर्य है 'पुरानी बोतल' में नये सिद्धांत भर देना, जो अपने नयेपन के कारण लोगों के लिए ग्रहण करने में कठिन हों. इससे लोगों को सिद्धांतों के पुराने होने का भ्रम होता है और वे नयेपन को ग्रहण कर लेते हैं. हिंदी में यही कहावत धोखा देने के अर्थ में बदले हुए क्रम में प्रयुक्त होती है. नयी बोतल में पुरानी शराब भर कर किसी को धोखा देना तो क्या, उल्टे यह अपने माल की कीमत घटाना होता है. 'स्पिरिट' संबंधी इस कहावत को सही स्पिरिट में न समझ पाने के कारण ही हिंदी में यह गलत उक्ति चल पड़ी है.

नरक बर्फ़~बरफ़ जैसे दोनों रूप मान्य होने के कारण शायद कुछ लोग *नर्क को मूल रूप तथा नरक को वैकल्पिक रूप समझते हैं. *नर्क गलत प्रयोग है.

नवनिर्मित शब्द 1. भाषा में नये शब्द गढ़ना एक तरह की भाषिक कुशलता है. इस कला में सभी दक्ष हो सकते हैं, लेकिन साहित्यकार और पत्रकार ही ज़्यादातर नये शब्द गढ़ते हैं, क्योंकि दोनों के पास माध्यम है, जिससे वे लोगों के पास पहुँचते हैं. आम आदमी नये शब्द गढ़ तो सकते हैं, लेकिन उसका अधिक प्रसार नहीं होता और वह क्षण में ख़त्म हो जाता है.

गढ़े हुए नये शब्द उसी तरह 'फ़ैशन' में आते हैं, जैसे नये कपड़े, नयी पोशाकें और नये सिनेमा के गाने. लेकिन कभी-कभी नये शब्द का प्रयोग वर्ग सदस्यता का निशान होता है. आप नये आलोचक बन ही नहीं सकते, अगर आप नयी आलोचना के शब्दों से परिचित न हों. उस स्थिति में कई लोग ये शब्द तो अपना लेते हैं, लेकिन उनका सार्थक प्रयोग नहीं करते. प्रायः नये साहित्य के खोखलेपन का यह भी एक कारण होता है. फ़ैशन में रहने के बाद बहुतेरे शब्द ख़त्म हो जाते हैं, थोड़े-से बचे रहते हैं. फिर बनता है नया वर्ग, नयी शब्दावली तथा नये सदस्य. फ़ैशन की दौड़ आगे बढ़ती है.

2. पिछले दशकों के कुछ नये साहित्यिक शब्दों तथा नये अर्थ में प्रयुक्त पुराने शब्दों को देखिए–*आस्था, रूढ़ि, आयाम, परिवेश, बोध, प्रतिमान, संत्रास, बिंदास, प्रतिबद्ध, तद्रूप, विद्रूप, घुटन, विघटन, कुंठा, तनाव, संदर्भ, भोगना, मूल्य, संस्कार, संभावना, यथार्थ, चेतना, रूपायित, अस्मिता.*

इनसे बने कुछ वाक्य देखिये[1].

आधुनिक काल में पुराने मूल्य टूट चुके हैं.

कवि नीरज में संभावनाएँ थीं और अब भी हैं.

कहीं-कहीं दो भिन्न-भिन्न प्रकार की संवेदनाओं को एक साथ रखकर नये ज़माने की क्रूरता और पुराने समय के उच्चतर मूल्य को अंकित करते

[1] ये वाक्य 'आलोचना'–स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य विशेषांक से लिये गये हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुए संकेतित किया गया है कि पुराने मूल्य सब जगह अग्राह्य नहीं हैं.

यदि कोई एक छोटा क्षण गहरी अनुभूति से संपृक्त हो उठा तो वह क्षण है पूरे के पूरे समय को एक अर्थ देने में समर्थ.

दृश्यबोध की प्रत्येक अन्विति का अनुशीलन करते हुए प्रयोगशील काव्य-धारा का रचनाकार अपने अंतः-बाह्य सत्य के प्रति समान रूप से आस्थावान है.

काव्य की केंद्रीय धारा सुधारवाद की शिथिल मनोवृत्ति को त्याग कर कल्पना और रहस्य के बौद्धिक अनात्मसात् अध्यात्मवाद पर टिके हुए निराशा एवं अवसाद से पूरित वातावरण को चीरती हुई निराला के अदम्य एवं अप्रतिहत, प्रखर व्यक्तित्व के साथ विद्रोह की कठोर भूमि पर आ गयी है ···हिंदी की प्रवृत्ति के स्वरूप को इस मौलिक विद्रोह और व्यंग्य के अंतरानुवर्ती प्रवाह का सहारा लेकर ही व्याख्यायित किया जा सकता है.

कुछ समझ रहे हैं? न समझें, तो कोई बात नहीं. कई जगह लेखक भी शायद समझ नहीं रहा होगा कि उसकी अभिव्यक्ति का अर्थ क्या है. उसे वर्ग के अंदर बने रहना है, इसके लिए आवश्यक है कि वह ऐसे शब्दों का प्रयोग अवश्य करे. यही और लोग कर रहे हैं.

साहित्येतर पत्र-पत्रिकाओं, विशेषकर अख़बारों में नये शब्द कुछ कम होते हैं, क्योंकि उनका प्रकाशन व्यापक पाठक-वर्ग के लिए होता है. साथ ही पत्रकारों में संगठित वर्ग का अभाव है, जिसके प्रति प्रतिबद्धता हो. पत्र-पत्रिकाओं के नये शब्द प्रायः ऋण-अनुवाद की पद्धति से गढ़े जाते हैं. पत्रकार सीमित, लेकिन नवनिर्मित, संस्कारित तथा पंडिताऊ शब्दों के प्रयोग से संतुष्ट हैं जिस कारण उनकी भाषा कहीं-कहीं दुरूह बन जाती है. कुछ शब्दों के प्रति आग्रह दिखायी पड़ता है जैसे भारी (भारी संकट, भारी आक्रोश, भारी बहुमत, भारी कठिनाई), तीव्र, प्राप्त/पाना, पीड़ित. सामान्य बोलचाल के शब्दों की जगह नये तथा 'भारी' शब्दों का मोह इन उदाहरणों में देख सकते हैं—कथित, ज्ञातव्य, भर्त्सना, अविलंब, हेतु, अवांछित तत्त्व, आह्वान, सत्तारूढ़, सत्ताच्युत.

-ना वैसे धातु के साथ -ना आने पर हर क्रिया संज्ञा की तरह काम में आती है और उसे **क्रियार्थक संज्ञा** कहते हैं. वह संज्ञा क्रिया द्वारा व्यक्त व्यापार का अर्थ प्रकट करती है. लेकिन बहुत थोड़ी संज्ञाएँ ऐसी हैं, जिनमें संज्ञा तथा क्रियार्थक संज्ञा के अर्थों में स्पष्ट अंतर है. ऐसे शब्द हैं—*गाना, खाना, गोदना.* ये संज्ञाएँ, वस्तु या व्यापार के नाम हैं, इस दुहरे अर्थ के कारण ये शब्द दो बार आते हैं—कर्म तथा क्रिया बन कर. यह बात हम और क्रियाओं में नहीं देख सकते. *गाना गाना, खाना खाना, गोदना गोदना. *मारना मारना, *देखना देखना, *सुनना सुनना.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. विशुद्ध संज्ञा तथा क्रियार्थक संज्ञा का अंतर नीचे के उदाहरण से स्पष्ट होगा.

पूछने से *क्या फ़ायदा ?* (अर्थात् पूछने की क्रिया से)

इस *गाने से क्या फ़ायदा ?* (गाने के व्यापार से, जो गाना लिखा हुआ है उससे)

संज्ञा को निम्नलिखित वाक्यों में देख सकते हैं, जहाँ क्रियार्थक संज्ञा नहीं आती–*मुझे खाना नहीं मिला* (*मुझे जाना नहीं मिला).

3. क्रियार्थक संज्ञाएँ पुल्लिग शब्द हैं. लेकिन हिंदी में कुछ क्रियार्थक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती हैं. इसका कारण ऐतिहासिक है. आज हम अपनी इच्छा से क्रियार्थक संज्ञाओं का स्त्रीलिंग में प्रयोग नहीं कर सकते. ऐसे कुछ स्त्रीलिंग शब्द हैं–*कथनी और करनी में अंतर होता है* (यहाँ 'करनी' कथनी (<कथन, न कि कहना) के सादृश्य से बना है; कथनी कैसे बना यह विचारणीय है), वह *मँगनी* (<माँगना) के कपड़े पहनता है, *होनी बली~होनी को कौन टाल सकता है ?* (यहाँ 'नियति' के सादृश्य के कारण शायद स्त्रीलिंग है), तुम हर *बात में मनमानी करते हो, जैसी करनी वैसी भरनी.* कुछ साधनों या उपकरणों के नाम भी -नी अंत के साथ आते हैं (यहाँ कोई -ना अंत वाले शब्द भी हैं ?). जैसे *छननी* (<छानना)~*चलनी, धौंकनी, कतरनी, गोढ़नी.*

नादान, नादाँ दोनों रूप प्रचलित हैं. देखें **उर्दू के शब्दों में अंत्य अनुनासिकता.**

नापना देखें **मापना.**

नामधातु सभी क्रिया रूपों के मूल में क्रियाधातु होते हैं, जिनमें व्याकरणिक कोटियाँ सूचित करने के लिए लिंग, वचन आदि प्रत्यय लगते हैं. ये धातु ज़्यादातर मूल रूप में क्रियाधातु ही होते हैं–संस्कृत मूल के *कर, चल, हँस* आदि, देशज धातु *गिर, निकाल, उतर* आदि, विदेशी मूल के *ख़रीद, चीख़, कबूल, ख़र्च* आदि.

1. क्रियाधातुओं के अलावा कभी-कभी अन्य शब्द वर्गों के शब्द भी धातु रूप में ले लिये जाते हैं. इन्हें नामधातु कहते हैं. आगे नामधातु की सूचियाँ हैं (क्रियार्थक संज्ञा के रूप में) :

(अ) संज्ञा शब्दों से बने नामधातु–(i) नामधातुओं के साथ मूल संज्ञा शब्द कोष्ठक में दिये गये हैं–*शरमाना* (शरम), *लहराना* (लहर), *ललचाना* (लालच), *अलसाना* (आलस), *पितराना* (पीतल), *ठुकराना* (ठोकर), *हथियाना* (हाथ), *बतियाना* (बात), *लतियाना* (लात), *धकियाना* (धक्का), *लठियाना* (लाठी), *मटियाना* (मट्टी), *टकराना* (टक्कर), *चकराना* (चक्कर), *पथराना* (पत्थर), *खुजलाना* (खुजली), *लजाना* (लाज~लज्जा), *झगड़ना* (झगड़ा). (ii) यहाँ नामधातु दिये गये हैं, जिनमें /ना/ जोड़कर क्रियार्थक संज्ञा का रूप प्राप्त कर सकते हैं. इनकी रचना की चर्चा के लिए **ध्वन्यात्मक शब्द** देखिए. मोह, दुख, भोग,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छल, विचार, नाच, हुंकार, धिक्कार, चीत्कार, ?ललकार, फटकार, ?थूक, फूँक.

(आ) विशेषण शब्दों से बने नामधातु—*गरमाना* (गरम), *सुस्ताना* (सुस्त), *अलगाना* (अलग), *अकुलाना* (आकुल), *दुहराना* (दुहरा), *अपनाना* (अपना), *चिकनाना* (चिकना), *लँगड़ाना* (लँगड़ा), *बुढ़ाना* (बूढ़ा), *सठियाना* (साठ).

(इ) क्रियाविशेषणों से बने नामधातु : ये क्रियाविशेषण पुनरुक्त शब्द हैं और इनकी रचना के बारे में **प्रतिध्वनिमूलक शब्द** देख सकते हैं. क्रियाविशेषणों में, जिनकी सूची आगे दी गयी है, /आ/ तथा उससे आगे /ना/ जोड़कर नामधातु और क्रियार्थक संज्ञा के रूप बनाये जाते हैं—*चमचम, जगमग. झिलमिल, थरथर, डगमग, खटखट, धड़धड़, तमतम, खनखन, झनझन, फड़फड़* आदि. इन शब्दों की संख्या बहुत अधिक है.

2. नामधातु की रचना की एक विशेषता यह है कि ये आकारांत होते हैं. यों कह सकते हैं कि हिंदी में *आ, खा, जा, ला, भा* जैसे एकाक्षरिक धातुओं को छोड़ कर केवल दो ही प्रकार के आकारांत धातु मिलते हैं—नामधातु तथा प्रेरणार्थक क्रिया के धातु. *करा, पढ़ा, नचा, लुभा, दिला* आदि प्रेरणार्थक धातु हैं, शेष सभी आकारांत बहु आक्षरिक धातु नामधातु हैं.

प्रेरणार्थक क्रियाधातु बहुधा अन्य क्रियाधातुओं में /आ/ जोड़ने से बनते हैं, जबकि नामधातु के मूल में संज्ञा आदि शब्द होते हैं. अतः प्रेरणार्थक धातु के साथ प्राय: एक संबद्ध क्रियारूप भी मिलता है, नामधातु में नहीं. *कर-करा, दे-दिला, पकड़-पकड़ा, नाच-नचा, *शरम-शरमा, *टकर-टकरा, *ललच-ललचा.*

3. ऊपर संज्ञा के दो वर्ग हैं, जिनसे नामधातु बनते हैं. दूसरे वर्ग को छोड़ दें, जिसमें सीधे /ना/ जुड़ता है, तो बाकी सारे नामधातुओं की रचना को निम्नलिखित क्रमिक सूत्रों से बता सकते हैं :

(अ) शब्द के अंतिम स्वर का लोप

(आ) प्रथम अक्षर के स्वर का ह्रस्वीकरण तथा निम्नीकरण
(आ → अ, ऊ → उ, ओ → उ, ई → इ, ए → इ)

(इ) शब्द में आये द्वित्व व्यंजन में प्रथम व्यंजन का लोप

(ई) प्राप्त एकाक्षरिक शब्द में /इ/ का आगम

(उ) नामधातु सूचक प्रत्यय /आ/ का प्रयोग. रूपस्वनिमिक आधार पर /य/ का आगम

इन नियमों के अनुसार सारे शब्दों की रचना स्पष्ट होती है, केवल दो समस्याएँ रह जाती हैं. इन के अनुसार *लाज~लज्जा* से *लजियाना* होना चाहिए, लेकिन *लजाना* समस्या है. *झगड़ा* से *झगड़ाना* बनना चाहिए, *झगड़ना* नहीं. दूसरे शब्द के बारे में संदेह किया जा सकता है कि *झगड़ा* क्रियाधातु *झगड़* से बनी संज्ञा है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पितराना में र-ल का भेद बोलियों के कारण है.

4. नामधातुओं पर विचार करते समय हमें उन संज्ञा शब्दों के बारे में भी विचार करना होगा, जो क्रियाधातु से बने हैं. देखें **धातु रूप में संज्ञा.** उक्त प्रकरण में हमने देखा कि धातु से प्राप्त संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग होते हैं. इस नियम के कारण हम मान सकते हैं कि पुल्लिंग धातु संज्ञा शब्द सभी नामधातु हो सकते हैं.

संज्ञा से बने नामधातुओं की चर्चा में दूसरा वर्ग उन शब्दों का है, जिनसे नाम-धातु बनाते समय ऊपर 3 के नियम लागू नहीं होते. सीधे इन शब्दों में /ना/ लगता है. इनमें *मोह*, *हुंकार* आदि संस्कृत के तत्सम या तद्भव शब्द हैं. कहने का तात्पर्य यह नहीं कि संस्कृत मूल के शब्दों में ये नियम लागू नहीं होते. अनु-मान किया जा सकता है कि ऊपर 3 के नियम किसी एक समय में लगे होंगे. 'मोह' आदि शब्दों से क्रिया बनाने के समय ये नियम लागू नहीं होंगे. इनसे क्रिया शब्द बाद में बने होंगे.

दूसरे वर्ग में *ललकार*, *थूक* आदि शब्द भी रखे गये हैं. ये चारों शब्द स्त्रीलिंग हैं; इस कारण इन्हें धातुरूप में व्यवहृत संज्ञा शब्द भी कह सकते हैं. लेकिन **ध्वन्यात्मक शब्द** के प्रकरण में हमने चर्चा की है कि *लल*, *फट*, *थू*, *फू* आदि ध्वन्यात्मक तत्त्वों में -कार, -क प्रत्यय जोड़ने से ये शब्द बने होंगे, अतः संज्ञा आदि शब्दों से क्रिया का निर्मित हुआ होना स्वाभाविक लगता है. हो सकता है ये नाम-धातु प्रारंभ में पुल्लिंग में हों, इनसे क्रिया बनी हो, फिर अन्य धातु-संज्ञाओं के कारण ये स्त्रीलिंग बने हों. इसपर ऐतिहासिक शोध की आवश्यकता है.

4.1. पुनरुक्ति या अनुकरणात्मक शब्दों से क्रिया बनने की बात कई अन्य शब्दों में भी देख सकते हैं. यहाँ हम पहले कुछ नामधातुओं को, उनके मूल में विद्यमान अनुकरणात्मक शब्द के साथ देखें–*घिघियाना* (घी घी करना), *रिरि-याना* (री री करना), *धुँधुँआना* (धूँ धूँ करना). शब्द की रचना की दृष्टि से ऊपर 3 के सारे नियम यहाँ लागू होते हैं. केवल (ई) में नियम विस्तार करना होगा–'तथा पश्च स्वर के बाद /उ/ का आगम'. मूल में विद्यमान अनुकरणा-त्मक शब्द को दीर्घ में मानना हिंदी की स्वनिक प्रकृति के अनुसार है.

ध्वन्यात्मक शब्द में हमने देखा कि आग जलने के संदर्भ में *धूँ धूँ करके जलना* प्रयोग है. उसी से बना नामधातु *धुँधुँआ*~*धुँधुआ* है, जो अर्थ की दृष्टि से कुछ ही भिन्न है. *धुँधुँआना* का अर्थ है 'धुआँ तेज़ होना और अंदर से आग तीव्र होना'. आग 'धूँधूँ' करके जलने में भी तेज़ धुआँ उठने की ओर संकेत है.

5. आधुनिक भाषा में नामधातुओं का महत्त्व क्या है? भाषा के साथ प्रयोग करने वाले लेखकों के लिए नामधातु रोचक प्रयोगशाला है. लेखक किसी भी संज्ञा से नामधातु बनाते हिचकते नहीं. एक आलोचक ने *कवितान*ा (कविता

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करना) का प्रयोग किया है. *विचारना, त्यागना, स्वीकारना, संकोचना* आदि प्रयोग द्रष्टव्य हैं. नये नामधातु शब्दों की रचना में ऊपर के 3 के नियम नहीं लागू होते, बल्कि सीधे संज्ञा शब्द में /ना/ लग जाता है. अगर आप प्रयोग करना चाहें, तो 'चिंताएँ' नहीं, प्रयोगशाला विस्तृत है.

नि- 1. यह संस्कृत का उपसर्ग है, जो अंदर, नीचे, भीतर आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है. हिंदी में इससे बने कई शब्द हैं और लगभग सब में आप अर्थ को पहचान सकते हैं. इसकी तुलना में *निः* (देखें **संधि**) भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होता है (रहित आदि निषेधार्थक अर्थों में). *नि-* से बने शब्द हैं–*निमग्न* (अंदर डूबा हुआ), *निवास* (अंदर रहना), *निमेष* (पलक नीचे गिरना), *निबंध, निवारण, निनाद, निदर्शन, निलय, निमंत्रण, नियोजन, निदान, नियुक्त, निषाद* ('नि+√सद्' नीचे बैठा हुआ), *निषेध, नियम* आदि. *निगूढ़* में बहुत अधिक गूढ़ का अर्थ देख सकते हैं. *निः, नि* दोनों उपसर्गों के प्रयोग की विशिष्टता को अच्छी तरह जान लें, जिससे अर्थ तथा वर्तनी दोनों प्रकार के दोष न हों.

2. चूँकि *निः* का विसर्ग स्वयं उपस्थित रहता है या अन्यत्र व्यंजनों के रूप में उपस्थित रहता है, प्रायः दोनों से बने शब्दों को पहचानने की अधिक कठिनाई नहीं होती. निः+संग *निस्संग* बनता है, नि+सद् से *निषाद*. इसी तरह *निः* /र/ से पहले *नी* बनता है (*नीरोग, नीरव, नीरस*), जबकि /र/ से पहले *नि* इसी रूप में रहता है. *निरोध* 'अंदर तक जाकर रोकना', *निरूढ़* 'बहुत अधिक रूढ़', *निरूपण* आदि शब्दों में इस बात को देख सकते हैं.

3. संस्कृत *निः* का तद्‌भव रूप *नि-* कई हिंदी शब्दों में देखा जा सकता है. *निहत्था, निपूत, निडर, निकम्मा, निधड़क* आदि.

नित यह पुराना प्रयोग है और नित्य का बदला रूप है. यह वैसे तो अर्थ में 'रोज़' का पर्याय है, लेकिन यह संदर्भ सामान्य भाषा में प्रयुक्त नहीं होता. कहावतों में तथा काव्य में प्रयुक्त पुराने यौगिकों में, जैसे *नित नये रूप* इसका प्रयोग देखा जा सकता है.

निदेशक, निर्देशक 1. अंग्रेज़ी के 'डाइरेक्टर' शब्द के ये दोनों पर्याय हैं, लेकिन इनमें हिंदी में अर्थ का अंतर है. संस्थान का प्रमुख अधिकारी निदेशक होता है, निर्देशक सिनेमा का निर्देशन करता है.

2. कार्यालय द्‌वारा अपने कर्मचारियों को दी गयी सूचनाएँ आदि *निदेश* हैं, किसी भी व्यक्ति द्‌वारा दूसरों को समझाते हुए कही गयी बातें *निर्देश* हैं.

3. 'निर्देश' संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है बताना या दिखाना. *आपने मुझे दिशा निर्देश दिया. आपके निर्देशानुसार ही मैंने सारा काम किया.* 'निर्दिष्ट' का अर्थ है 'बताया गया'. *सभी लोग निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे.* सिनेमा के निर्देशन के अर्थ में *निर्देशित* नया प्रयोग है और *निदेश* 'निदेशक' से व्युत्पन्न

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नया शब्द.

निपात 1. हिंदी में सात शब्दों का एक वर्ग है, जिसे हम निपात कहते हैं. ये हैं *ही, भी, तो, तक, न, भर, भला*. परंपरात्मक व्याकरण में अधिकतर इनकी उपेक्षा की जाती है क्योंकि ये शब्द सामान्य रूप से वाक्यांश रचना के अंग नहीं होते, इनका अर्थ स्पष्ट कर पाना मुश्किल होता है और ये छोटे-से शब्द महत्त्व-हीन लगते हैं. जिन लोगों की भाषा में समान प्रयोग नहीं हैं, उन्हें निपात सिखाना कष्टसाध्य होता है. कई अहिंदी भाषी बिना आवश्यकता *ही, तो* आदि का प्रयोग करते देखे जा सकते हैं.

2. निपातों के दो उपवर्ग हैं. *ही, भी, तो, तक* उपवाक्य या वाक्य स्तर से ऊपर के प्रयोग हैं. संवाद स्तर पर दो वाक्यों का अंतःसंबंध इनसे प्रकट होता है. हम यह भी कह सकते हैं कि बिना संदर्भ के सरल उपवाक्य में इनका प्रयोग नहीं हो-सकता. इसे निम्नलिखित संवादों में देख सकते हैं. *यहाँ दूध मिल जाएगा क्या ? छोटा-सा स्टेशन है. दूध तो क्या, यहाँ चाय भी नहीं मिल सकती. कौन जा रहा है ? तुम ? हाँ, मैं ही जा रहा हूँ.* आगे हम इन चारों शब्दों के प्रयोग के बारे में देखेंगे.

2.1. वक्तव्य में कही या प्रस्तावित बात का प्रतिवक्तव्य में खंडन करने के लिए या अपनी ओर से विकल्प की पुष्टि करने के लिए संबंधित वाक्यांश में *तो* का प्रयोग होता है.

आप जाएँगे ? मैं तो नहीं जाऊँगा

आप जाइए. मैं जाना तो नहीं चाहता. आप कहते हैं तो चला जाऊँगा

मैं काफ़ी नहीं पिऊँगा. फिर शरबत तो लेंगे न ?

जैसे कि उल्लेख है, यह सभी वाक्यांशों के साथ आ सकता है.

2.2. *ही* प्रबलक है. कही गयी बात की पुष्टि में इसका प्रयोग होता है. यह भी सभी वाक्यांशों के साथ आता है.

आप जाएँगे ? हाँ, मैं ही जाऊँगा.

चाय दूँ ? चाय ही नहीं, कुछ खाने को भी दीजिए.

कहाँ जा रहे हैं ? घर ? हाँ, घर ही जा रहा हूँ.

2.3. *भी* योजक शब्द है. यह कथन का दूसरे संदर्भ में विस्तार करता है.

राम जाएगा तो गोपाल भी जाएगा.

आप चलेंगे ? हाँ, मैं भी चलूँगा.

मैं जा रहा हूँ, आप भी चलिए न.

2.4 *तो* वाक्य का प्रारंभक शब्द भी है. ऐसे संदर्भों में यह पिछले वाक्य के कथ्य के आधार पर दूसरे वाक्य का प्रारंभ करता है. *तो यह बात रही. तो हम चलें.* यह अन्य व्याकरणिक शब्दों के साथ मिलकर मुहावरेदार प्रयोगों की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रचना करता है. जैसे *फिर तो, नहीं तो, तब तो, और तो और*. *ही* से बनने वाले तीन मुहावरेदार प्रयोग (*थोड़े ही, शायद ही, भले ही*) प्रायः निषेधात्मक अर्थ देते हैं.

2.5. वाक्य में एक से अधिक निपात आ सकते हैं. कुछ वाक्यांशों में एक से अधिक निपात भी आते हैं (*मैं ने ही तो* · · · , *हम भी तो* · · ·). यहाँ *ही* तथा *भी* के साथ *तो* द्वितीय सदस्य के रूप में आता है. *ही नहीं* · · · *भी* का प्रयोग संरचनागत है. *राम ही नहीं, गोपाल भी आएगा. तो* वाले वाक्यों में *ही* प्रबलक के रूप में साथ आता है. *मैं तो जाऊँगा ही. घर तो मिलेगा ही नहीं.*

2.6 हमें निपात *तक* तथा परसर्ग *तक* में अंतर करना होगा. आगे के दो वाक्य देखिए :

घर से स्टेशन तक (परसर्ग)

हेडमास्टर तक यह बात जानते हैं (निपात) (~भी)

यद्यपि यहाँ *तक* 'भी' का पर्याय लगता है, यह सामान्य अर्थ में योजक नहीं है. यहाँ *तक* का तात्पर्य है कि हेडमास्टर वह व्यक्ति हैं जिन तक बात पहुँच नहीं सकती थी या पहुँचनी नहीं चाहिये, भले दूसरे सब जानें. इस अर्थ में यहाँ *तक* परसर्ग से ही *यह* अर्थ ग्रहण कर रहा है.

3. शेष तीन निपात सरल उपवाक्य के भीतर भी आ सकते हैं, क्योंकि ये उस उपवाक्य के कथन के अर्थ को *ही* विशिष्ट अर्थ देते हैं. *भला* सामान्य निषेध वाक्य की जगह कथ्य का प्रतिवाद में खंडन करता है.

मैं गाना नहीं जानता=मैं गाना क्या जानूँ भला ?

वे समय पर नहीं आते=वे कभी समय पर आते हैं भला ?

न पुष्टिसूचक शब्द है. कुछ लोगों की भाषा में तकिया कलाम *न* का भी बहुत प्रयोग मिलता है. दोनों में अंतर करना आवश्यक है. जिस कथन के संदर्भ में संशय हो, उसकी पुष्टि के लिए निपात *न* का प्रयोग मिलता है.

कल न वे सब आ रहे हैं.

मैं ने ही तो न यह बात तुम्हें बतायी थी.

आप कल आम न लाये थे.

भर 'मात्र' के अर्थ में निपात है. इसका दूसरा प्रयोग *भी* है. यह समयवाचक क्रियाविशेषणों में संज्ञा के साथ अवधि सूचित करने वाला शब्द भी है (*दिन भर, रात भर, साल भर*). निपात के रूप में *भर* के उदाहरण हैं–*मैं उसे एक बार नज़र भर देख लूँ. यह तो कहने भर की बात है. तुम्हारा एक बार कहना भर काफ़ी है. एक बार का खाना भर मिल जाए* · · · . इसका तीसरा प्रयोग 'समस्त, सारा' के अर्थ में है (*घर भर में, दुनिया भर की बातें*) और चौथा प्रयोग 'भरना' से निष्पन्न है (*पेट भर खाना खाना, मन भर*).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस तरह हम देखते हैं कि कुछ निपात के शब्द अन्य कई अर्थ लिये चलते हैं. निपात के प्रकार्य को जान लें, तो ऐसे शब्दों को पहचानने में कठिनाई नहीं होगी. सही, *सिर्फ़* आदि अन्य कुछ शब्द भी हैं, जिन्हें निपात के वर्ग में रखा जा सकता है.

ने 1. यह कर्ता वाक्यांश का परसर्ग है और पूर्णपक्ष की सकर्मक क्रियाओं वाले वाक्यों में कर्ता के साथ लगता है (भले ही प्रकट रूप से वाक्य में कर्म न हो). *ने* युक्त वाक्यों में क्रिया की कर्म में लिंग-वचन की अन्विति होती है, कर्म न हो या कर्म में को लगा हो, तो क्रिया अविकारी रहती है.

मैंने आम खाया
दो आम खाये
रोटी खायी
दो रोटियाँ खायीं
मैंने लड़के को देखा
लड़कों
लड़की
लड़कियों
हम ने सुना/देखा/पढ़ा/समझा/सोचा कि ..

2. कई अहिंदी भाषी कहते हैं कि *ने* की रचना बहुत मुश्किल होती है और हिंदी भाषा से इसे हटा दिया जाना चाहिए (जैसे यह नाक पर बैठी मक्खी हो और सिर हिलाने पर उड़ जाए). भाषाओं में मुश्किल, आसान सभी तरह की संरचनाएँ होती हैं और उन्हें उसी रूप में सीखना पड़ता है. भाषा लकड़ी नहीं है कि कोई रंदा, छेनी ले कर बैठ जाए और उसे मनपसंद शक्ल दे दे. कई अहिंदी भाषी इसे मुश्किल मानते हैं, क्योंकि ऐसी व्यवस्था उनकी भाषाओं में नहीं है और उन्हें यह अनावश्यक बोझ लगता है. भारत में इस रचना का आभास हमें गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिंधी तथा पश्चिम की कुछ अन्य भाषाओं में मिलता है. और ये भाषाएँ बोलने वाले इसे अनावश्यक नहीं मानते, न ही कोई हिंदी-भाषी अपनी भाषा की इस व्यवस्था को अनावश्यक मानता है. कुछ हिंदी भाषी कहते हैं कि स्वयं उनके लिए भी यह परेशानी की बात है (स्वयं की बिवाई के कारण पीर परायी जानते हैं) और अहिंदी भाषियों को इस बात से सांत्वना लेनी चाहिए. सचाई यह है कि कोई अपनी भाषा में कृत्रिम परिवर्तन नहीं करना चाहता और भाषाविज्ञान का छात्र होने के नाते मैं जानता हूँ कि यह समुद्र को उलीचने के समान है. उल्लेखनीय है कि हिंदी की पूरब की बोलियों में यह व्यवस्था नहीं है और वहाँ के लोग भी अहिंदी भाषियों की तरह 'ने' को हटा देते हैं. **मैं उनको चिट्ठी लिखा हूँ.* **वे लोग अभी खाना नहीं खाये हैं.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. यद्यपि ऊपर नियम बहुत संक्षेप में बता दिया और कई हिंदी भाषी विद्वान भी कहते हैं कि *ने* में क्या परेशानी है, सकर्मक भूतकाल याद रख लो और अपवाद याद रख लो, फिर भी कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आती हैं. कुछ अकर्मक क्रियाओं में *ने* लगता है (*मैंने छींका. उसने खाँसा*), कुछ सकर्मक क्रियाओं में *ने* नहीं लगता (*वह किताब लाया. यह बात मैं नहीं भूला हूँ. वह बोला*) और कई क्रियाएँ ऐसी हैं जिनमें *ने* की स्थिति के बारे में हिंदी भाषियों में भी मतैक्य नहीं है (*नहा, समझ, खेल, चीख़, चेत*). साथ ही अहिंदी भाषी के लिए सकर्मक-अकर्मक का भेद ज़्यादातर परंपरा का है, तर्क का नहीं. *ठानना, लड़ना, मिलना* सकर्मक हैं या अकर्मक? इन शब्दों में यह वर्गीकरण, तदनुसार 'ने' का प्रयोग अभ्यास से ही आ सकता है.

ऊपर के कथन के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि कुछ 'अकर्मक' *चलना, लड़ना, खेलना* जैसी क्रियाओं में *ने* नहीं लगता, लेकिन इन्हें 'सकर्मक' बनाया जा सकता है. *मैंने एक चाल चली. दोनों देशों ने लड़ाई लड़ी. उसने खेल खेला.* यही कारण है कि 'बोल' में कर्म लगाने पर वह वाक्य *ने* युक्त बन जाता है. *उसने झूठ बोला.* लेकिन *तुमने क्या कहा* में 'क्या' कर्म है, *वह क्या बोली* में नहीं. विकल्प से *तुम झूठ क्यों बोले* की रचना भी है.

3.1. रंजक क्रियाओं के साथ 'ने' के प्रयोग की स्थिति स्पष्ट नहीं है. 'समझ' का दोनों प्रकार से प्रयोग होता है—*मैं तो समझा था कि · · ·, मैंने तो समझा था कि · · ·*. मैंने अनुभव किया है कि सामने वाले से *समझा?* (<*!आपने/तुमने समझा?*) कहने पर वह कुछ बैचेन हो जाता है, क्योंकि उसके लिए यह *तू समझा?* का संक्षिप्त रूप है. लेकिन *समझ लेना* के साथ अनिवार्य रूप से *ने* आता है. मान सकते हैं कि यहाँ *लेना* के कारण *ने* आया है. रंजक क्रियाओं में *लेना* और *देना* प्रायः सकर्मक क्रियाओं के साथ ही आते हैं. लेकिन जहाँ ये अकर्मक क्रियाओं के साथ आएँ, वहाँ *ने* नहीं आता (*चल देना, हँस देना, रो देना, हँस लेना, फूट लेना, सो लेना*). *नहा लेना* का उभय प्रयोग है. इसके विपरीत हम आशा करते कि सकर्मक धातुओं में रंजक क्रिया आने पर *ने* लगता है. लेकिन *कर बैठना, कर जाना* आदि में भी *ने* नहीं लगता. मूल अकर्मक क्रिया तथा अकर्मक रंजक क्रिया दोनों ही संदर्भों में 'ने' नहीं आता. रंजक क्रिया के दोनों सदस्य सकर्मक हों, तभी *ने* आता है. लेकिन ऐसी रंजक क्रियाओं में, जिनमें प्रथम सदस्य *आ, जा, चल* है, *ने* का प्रयोग दूसरी क्रिया पर आधारित है—*वह मेरे पास आ पहुँचा. लोगों ने मुझे आ घेरा.*

4. रूप की दृष्टि से अकर्मक से बनी सभी प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ *ने* आता है, क्योंकि मूल कर्ता रूपांतरित वाक्य का कर्म होता है. इन प्रेरणार्थक क्रियाओं में रंजक क्रिया *ले* या *दे* आती है. *वह दौड़ा→मैंने उसे दौड़ाया. बच्चा सो*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया→मैंने बच्चे को सुला दिया. मेरा मकान बन गया→मैंने मकान बना लिया. लेकिन यहाँ भी जिन वाक्यों में रंजक क्रिया जाना आती है, वहाँ ने नहीं आता. हवा सारे पेड़ गिरा गयी/सारी बत्तियाँ बुझा गयी. पानी हमें भिगो गया. पिता सारी जायदाद मेरे नाम करा गये.

5. तुम कहाँ तक पढ़े हो ? मैं बी०ए० तक पढ़ा हूँ—इन वाक्यों में पढ़ा स्थिति सूचक कृदंत विशेषण है और मैंने एक कहानी पढ़ी है में मूल क्रिया.

न्ह 1. यह /न/ का महाप्राण स्वन है, न कि न+ह का गुच्छ. इस कारण शब्दों में जब यह आए, तो अक्षर सीमा इससे पहले या बाद में होगी, न कि /न/ और /ह/ के बीच में. अन्य भाषा भाषी उन्होंने का उच्चारण करते समय उन+हों+ने का अक्षर विभाजन करते हैं, जो कि गलत है. यहाँ अक्षर विभाजन होगा उ+न्हों+ने. तुलना में देखिए सुनहरा (सुन+ह+रा), जहाँ दोनों व्यंजन अलग-अलग अक्षरों में पड़ते हैं.

2. ⟨न्ह⟩ का प्रयोग हिंदी में बहुत कम शब्दों में मिलता है. कान्ह~कान्हा (संस्कृत 'कृष्ण'), उन्हें, उन्हीं, उन्होंने आदि.

3. चिह्न जैसे शब्दों का उच्चारण अब ध्वनि विपर्यय तथा अन्य परिवर्तनों के कारण /न्ह/ के समान होता है. जैसे चिह्न /चिन्न्ह/. ⟨चिन्ह⟩ का रूप भी कई जगह देखने को मिलता है. पहचानने के अर्थ में चीन्हना, अनचीन्हा (<चिह्न ?) शब्द चलते हैं, जो ⟨न्ह⟩ से बनते हैं.

4. ऐसे शब्दों में जहाँ /न/ और /ह/ अलग उच्चरित होते हैं, वहाँ ये पूरे ही लिखे जाते हैं और दोनों के बीच में अक्षर सीमा होती है. जैसे /मन+हर/, /मन+हूस/, /तन+हाई/ आदि. इसी कारण *तन्हा त्याज्य है, तनहा ग्रहणीय.

पंचमाक्षर संस्कृत में अनुस्वार सिर्फ़ अंतस्थ और ऊष्म स्वनों से पहले या शब्दांत में लिखा जाता था. स्पर्श व्यंजनों से पहले उसी वर्ग के नासिक्य (याने 'पंचमाक्षर') व्यंजन को लिखने की परंपरा थी. इस परंपरा के अनुसार हिंदी में भी ज़्यादातर 'पंचमाक्षर' ही लिखे जाते थे. ऐसे शब्दों के लिए तथा और चर्चा के लिए **अनुस्वार** देखिए.

1. केंद्रीय हिंदी निदेशालय (1967) द्वारा प्रस्तावित मानक देवनागरी लिपि में पंचमाक्षर की जगह हर जगह पहले अक्षर पर अनुस्वार लिखने का सुझाव है. ऐसी पद्धति भारतीय भाषाओं में कन्नड़ और तेलुगु में भी है. इस पद्धति में हम जैसे अध्यापकों और मुझ जैसे अहिंदी भाषी हिंदी के छात्रों के लिए सुविधा है, क्योंकि सीखना-सिखाना बहुत आसान हो जाता है. छात्र 'आधे' वर्णों के बोझ से कुछ मुक्ति पा जाते हैं. इस नयी पद्धति का भले प्रत्यक्ष विरोध न हो, लेकिन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निश्चित उपेक्षा ज़रूर दिखायी पड़ती है. अभी पुस्तकें पुरानी पद्धति से छापी जा रही हैं और हिंदी भाषी पंचमाक्षर ही लिखना पसंद करते हैं. किशोरीदास वाजपेयी जैसे विद्वान इसका स्पष्ट विरोध भी करते हैं.

2. इस संबंध में हिंदी भाषी लेखकों में जो भिन्नताएँ दिखायी पड़ती हैं, उनकी यहाँ चर्चा करना चाहूँगा. मेरे गुरु तथा बाद के अधिकारी व्रजेश्वर वर्मा ⟨पंखा⟩ लिखते थे, लेकिन ⟨गंदा⟩ लिखना उन्हें 'गन्दा' लगता था. हिंदी भाषियों के पंचमाक्षर के प्रयोग की दृष्टि से कई वर्ग हैं. एक वर्ग, जो संख्या की दृष्टि से सीमित है, हर जगह पंचमाक्षर लिखने का आदी है. लेकिन ऐसे लोग भी *जंगल, पंछी, लुंगी, गंजा, रंज, टैंक* जैसे शब्दों को पंचमाक्षर से नहीं लिख सकते (या लिखते भी हैं ?), क्योंकि ये अ-संस्कृत शब्द हैं और इनमें पंचमाक्षर का प्रयोग (पञ्छी, लुङ्गी) बहुत हास्यास्पद लगता. दूसरा वर्ग 'क' वर्ग और 'च' वर्ग के वर्णों को छोड़ अन्य तीनों वर्गों के लिए पंचमाक्षर का प्रयोग करता है. इस वर्ग के लोग 'ट' वर्ग में सुविधा की दृष्टि अपना लेते हैं (कहीं अनुस्वार और कहीं ⟨ण⟩ लिखते हैं). यह वर्ग संख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा है और अधिकतर हिंदी भाषी इसी वर्ग में आते हैं. इस वर्ग के लोग देशी-विदेशी शब्दों में भी ⟨ण⟩ लिखते हैं, जो बहुत अटपटा लगता है, जैसे *गुण्डा, झण्डा, पैण्ट, लण्डन*. इसका एक उपवर्ग है, जो अपढ़ है या जिसमें कुछ भाषावैज्ञानिक आते हैं. यह उपवर्ग ऐसे शब्दों को ⟨न⟩ से लिखता है, *गुन्डा, झन्डा, पैन्ट, लन्डन* आदि. (मैं चाहूँगा कि कोई भाषा-वैज्ञानिक गवेषणा के आधार पर बताएँ कि न+ड का योग हिंदी में कैसे उच्चरित होता है). इस उपवर्ग के लोग संस्कृत मूल के शब्दों को यथावत लिखने के आदी हैं (*पण्डित, दण्ड* आदि) और संदेह की स्थिति में अन्य शब्दों में कोई भी रीति अपनाते हैं. तीसरा वर्ग उन लोगों का है, जो थोड़े-से संस्कृत मूल के शब्दों—यथा *पण्डित, दण्ड*—को छोड़कर पहले तीन वर्ग के स्वनों में अनुस्वार लिखते हैं और 'प' वर्ग और 'त' वर्ग के पहले पंचमाक्षर लिखते हैं. इस वर्ग की संख्या भी कम नहीं है. यहाँ शब्द के स्रोत के कारण कोई पाबंदी नहीं है.

3. पंचमाक्षर के प्रयोग में इस विविधता का कारण एक ओर तो लिखने वालों के संस्कार, निजी धारणाएँ, व्यक्तिगत रुचि आदि हैं, और दूसरी ओर कुछ हद तक संरचनागत है. हिंदी में /ङ/ और /ञ/ का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, ये केवल सवर्गीय स्पर्श से पहले आते हैं. ये व्यंजन 'वाङ्मय' के अलावा, जो बहुत सीमित प्रयोग में आता है, अन्य शब्दों में नहीं आते. अतः संयुक्त वर्णों से भी इनका हटना स्वाभाविक लगता है. /ण/ का हिंदी में सीमित प्रयोग है. यह संस्कृत शब्दों के अलावा शायद ही किसी हिंदी के शब्द में आता हो. अंग्रेज़ी और उर्दू के स्रोतों से आये शब्दों में भी इसका अभाव है. संस्कृत से आये कुछ सौ शब्दों में यह सुर-क्षित है. इसी कारण इस संबंध में विशेष कठिनाई है. /म/ और /न/ स्वतंत्र

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यंजन हैं, व्यापक परिवेश में आते हैं. अतः सभी भाषाओं के शब्दों में ये पंचमाक्षर के रूप में लिखे भी जाते हैं (*पम्प*, *कम्बख़्त*, *बन्द*, *एन्थोनी*, *लम्बा*, *सिन्थाल* आदि).

4. नयी पद्धति आने से पहले ही हिंदी में एक समस्या पैदा हो गयी थी, जिससे कुछ शब्द दो-दो तरह से लिखे जाते थे (पङ्ख~पङ्ख), अब तीन रूप हो गये हैं. यह समस्या 'क' तथा 'च' वर्ग के साथ ही है, जहाँ वर्ण /ङ/ /ञ/से नीचे लिखे जाते थे. *संबंध* के चार रूप हैं–*संबंध*, *संबन्ध*, *सम्बंध*, *सम्बन्ध*. नयी पद्धति के कारण यह बहुरूपियापन बढ़ता जा रहा है और उपर्युक्त तीनों वर्गों के व्यक्ति इससे प्रभावित हैं. यथाशीघ्र इस जटिलता को दूर करना आवश्यक है; अन्यथा छात्र, मुद्रक सभी इससे दुखी होंगे.

5. इस प्रकरण को पंचमाक्षर कहने का मेरा एक विशेष प्रयोजन है. कुछ आलोचक कहते हैं कि अनुस्वार के प्रयोग के कारण *गंना, *अंल जैसे गलत शब्द भी लिखे जाने लगेंगे. पंचमाक्षर अपने वर्ग के पहले चार वर्णों से पहले ही अनुस्वार के रूप में लिखा जाएगा, अन्यत्र नहीं. नासिक्य व्यंजन अन्य व्यंजनों से पहले आएँ या अपने को दुहराएँ, तो वे अनुस्वार से नहीं लिखे जाएँगे. इस कारण *अन्य*, *पुण्य*, *जन्म*, *अम्ल*, *सम्यक*, *सम्राट*, *गन्ना*, *सम्मान* जैसे शब्द प्रभावित नहीं होंगे.

इस पुस्तक में मैंने इसी पद्धति को अपनाने का यत्न किया है.

पंडिताऊ शब्द (Pedantic words) 1. मैंने एक हिंदी फ़िल्म देखी थी, जिसमें धर्मेंद्र 'हिंदी' जानने वाला ड्राइवर बनता है. वह प्रायः कहता था (सही उदाहरण भूल गया हूँ, मन से वैसे ही उदाहरण दे रहा हूँ)–*किंतु मुझे इसका परिशोधन करना है, मेरा चित्त व्याकुल हो रहा है, अपने पुत्र के ज्ञान की वृद्धि का उपाय कीजिए*. उसकी अभिव्यक्ति से दर्शकों का ख़ासा मनोरंजन हो रहा था. मुझे मालूम नहीं पड़ रहा था कि फ़िल्म निर्माता हिंदी का मज़ाक उड़ा रहा है या पंडिताऊ प्रयोगों का. वास्तव में 'हिंदी' जानने का यह मतलब तो नहीं कि कोई हमेशा *बुख़ार* की जगह *ज्वर* बोले (*!मुझे ज्वर हो गया है*), घर की जगह *गृह* बोले (*मैं गृह जा रहा हूँ*), *गरमी* की जगह *ऊष्मा* बोले. अगर कोई बोलता हो, तो ये पंडिताऊ प्रयोग कहलाएँगे, स्वाभाविक भाषा नहीं.

2. हिंदी के विद्वान रमा प्रसन्न नायक भाषा में सामान्य बोलचाल के शब्दों के इस्तेमाल के समर्थक हैं. आप की एक उक्ति मुझे बहुत अच्छी लगी. अगर हम *दाँत* का इस्तेमाल सिर्फ़ बोलचाल की भाषा में करें और जीवन के अन्य (औपचारिक तथा महत्त्वपूर्ण) संदर्भों में दंत का (*दंत चिकित्सक*, *दंत रोग*, *दंत पीड़ा*), तो *दाँत* का अवमूल्यन होगा और कुछ समय बाद लोग *दाँत* बोलना अभद्रता समझेंगे. इस बात से एक सत्य उद्घाटित होता है. शब्दों में भी कुछ

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्च कुल के, कुछ निम्न कुल के हैं. सामान्य बोलचाल के शब्दों की जगह उच्च साहित्यिक या पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना पंडिताऊ प्रयोग कहलाएगा. यह प्रयोग व्यक्ति अपने को दूसरों से उच्च दिखाने के यत्न में करता है. यहाँ ऐसे कुछ पंडिताऊ प्रयोग दिये गये हैं (बोलचाल का रूप कोष्ठकों में)– एवं (और), *किंतु*, *अपितु* (लेकिन, पर, मगर), *वस्त्र धारण* (कपड़े पहनना).

3. पंडिताऊ शब्दों के प्रयोग के विश्लेषण में निम्नलिखित कारकों को ध्यान में रखना होगा, अन्यथा हम भी आम आदमियों की तरह इस गलत निर्णय पर पहुँचेंगे कि आजकल हिंदी 'जटिल' हो गयी है. हमें कुछ विशेष विषयों के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दों की ज़रूरत पड़ती है. हर नये विचार को हम बोलचाल की भाषा से स्पष्ट नहीं कर सकेंगे. *मुद्रा स्फीति*, *उपभोक्ता*, *आपूर्ति* (सप्लाई), *विनिमय* आदि अर्थविज्ञान के संदर्भ में आवश्यक शब्द हैं, केवल पंडिताऊ प्रयोग नहीं. दूसरी ओर हमें क्षेत्रीय कार्य से संबंधित तथा व्यक्तिगत शैलियों की भी बात को ध्यान में रखना होगा. किसी क्षेत्र या अंचल में कोई पंडिताऊ शब्द ही मानक प्रयोग हो सकता है, कोई व्यक्ति किन्हीं मानसिक कारणों से किसी शब्द को पसंद कर सकता है या अधिक उचित समझ सकता है या व्यंग्य आदि के संदर्भ में किसी प्रसंग में किसी ख़ास शब्द का इस्तेमाल कर सकता है. इन सब के बाद सामान्य बोलचाल में अप्रचलित शब्द का इस्तेमाल करना पंडिताऊपन है.

4. इसका यह भी तात्पर्य नहीं कि व्यक्ति हमेशा एक ही भाषा का प्रयोग करता हो या करे. घर पर आये विशिष्ट अतिथि से कहते हैं *विराजिए*. *तशरीफ़ रखिए*. 'बैठिए' के मुकाबले इस शब्द में अधिक आदर का भाव सूचित होता है. अर्थ में, जो कि सामाजिक तथा संदर्भगत है, अंतर करने के कारण ऐसे प्रयोग पंडिताऊ शब्द नहीं हैं. ये जीवन के अनुरूप भाषा की शैली है, जिसे भाषाविज्ञान में प्रयुक्ति (register) कहा जाता है.

पड़ना 1. यह प्रमुख रूप से रंजक क्रिया है, जो आकस्मिकता सूचित करती है. *गिर पड़ना*, *आ पड़ना*, *टपक पड़ना*, *फिसल पड़ना* में आकस्मिक, अप्रत्याशित व्यापार है; *उतर पड़ना*, *चल पड़ना*, *निकल पड़ना* में अपेक्षित व्यापार का उल्लेख है; *टूट पड़ना*, *बरस पड़ना*, *पिल पड़ना* में तीव्र प्रतिक्रियात्मक व्यापार का संकेत है. अंतिम तीन शब्द अपने मूल शब्द से हटे मुहावरेदार प्रयोग हैं. दिल्ली की हिंदी में *लग पड़ा* (लग गया) का प्रयोग होता है, जो अमानक है.

2. यह 'डालना' का मिथ्यावाच्य शब्द है. चाय में चीनी पड़ती है, बच्चों को चाँटा पड़ता है, कपड़े में दाग पड़ता है (? दाग डालना), लोगों पर काम का बोझ पड़ता है.

3. 'पड़ना' मुख्य क्रिया के रूप में आगे दिये गये मुहावरेदार प्रयोगों के अलावा अन्य स्थानों में नहीं आता. गुजराती तथा मराठी में पड़ गिरने के अर्थ में मुख्य

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है. आ पडी गयो (वह गिर गया–गु०), मी पडलो (मैं गिर गया–मराठी). लेकिन हिंदी में *पड़ना* कई संज्ञा का विशेषण शब्दों के साथ संयुक्त क्रिया के रूप में आता हैं–*बीमार पड़ना*, (संज्ञा+पर) *असर पड़ना* (>असर डालना), *फीका पड़ना*, (पर) *दौरा पड़ना*.

इसी तरह *गर्मी पड़ना*, *सर्दी पड़ना*, *पानी पड़ना* आदि प्रयोग भी हैं. उल्लेखनीय है कि यह क्रिया रंजक क्रिया *जा* के साथ भी आती है–*उसका चेहरा फक पड़ गया*. *मेरे पास पैसे कम पड़ गये*.

4. *पड़* पूर्ण पक्ष के कृदंत के रूप में प्रयुक्त होता है. *वह विस्तर पर पड़ा हुआ है/पड़े-पड़े सो रहा है*. *यहाँ नीचे किसकी किताब पड़ी (हुई) है ?* *हुई* के लोप के बावजूद *पड़ी है* क्रिया नहीं है और **पड़ता है*, **पड़ रहा है* आदि प्रयोग इस संदर्भ में नहीं मिलते.

5. *पड़ना* के कई मुहावरेदार प्रयोग हैं. *आना* की तरह *पड़ना* से लागत या दाम सूचित होता है. *यह मेज़ कितने में पड़ी ?* *एक सूट सिलवाना है. कितने में पड़ेगा ?* और समय सूचित होता है (*सोमवार को कौनसी तारीख़ पड़ेगी ? दीवाली किस दिन पड़ेगी ?*)

5.1. *पीछे पड़ना*, *किसी से किसी का कुछ काम पड़ना*, *जो करना हो, करो. मुझे क्या पड़ा है ?* आदि *पड़ना* के प्रमुख मुहावरे हैं.

-पन, -पना दोनों प्रत्यय समान लगते हैं, लेकिन इनमें एक मौलिक अंतर है. *-पन* अवस्था का बोध कराता है (*बचपन*, *लड़कपन*, *पागलपन*), *-पना* उस जैसी अवस्था का अर्थ देता है. *बचपना* का अर्थ है 'नासमझी'; *पागलपना* से पागल होने की स्थिति का अर्थ प्रकट नहीं होता, बल्कि यह पागलों जैसे व्यवहार के अर्थ में आता है. *उल्लूपन* कोई विशेष अवस्था नहीं है, जो हम उल्लुओं के संदर्भ में व्यक्त करें. इस कारण *उल्लूपन*, *उल्लूपना* दोनों में अर्थ का विशेष अंतर नहीं रह गया है. देखें **बचपना**.

परवाह 1. यह प्रायः नकारात्मक अर्थ में आता है. यह इस अर्थ में 'चिंता' का पर्याय है. *वह मेरी बिल्कुल परवाह नहीं करता*. *मुझे इस बात की परवाह नहीं*. *अगर तुम्हें मेरी परवाह हो, तो तुरंत आ जाओ*.

2. *परवाह नहीं* में कुछ हद तक उपेक्षा तथा अनादर का भाव है. *मुझे तुम्हारी परवाह नहीं* कहें, तो श्रोता का अपमान अभिव्यक्त होता है. 'परवाह' शब्द दक्षिण की भाषाओं में भी है. अगर कोई तमिल या तेलुगु भाषी *परवाह नहीं* कहे, तो आप तिरस्कृत अनुभव न करें. वहाँ *परवाह नहीं* शिष्ट प्रयोग है, 'कोई बात नहीं' के अर्थ में प्रयुक्त होता है.

3. हिंदी में *परवाह* अधिक प्रचलित शब्द है. *परवा* अमानक है.

परसर्ग संस्कृत में आठ या छह कारक थे और उनके विभक्ति प्रत्यय थे. हिंदी में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भी पूर्ववर्ती वैयाकरणों ने इसी पद्धति को अपनाया और ने, को, से, का, में, पर आदि को विभक्तियाँ माना. परसर्ग भाषाविज्ञान के postpositions का अनुवाद है और विभक्ति, प्रत्यय से भिन्न अर्थ बताता है. वाजपेयी परसर्ग का खंडन करते हुए पूछते हैं कि यह क्या बला है. वे कारक तथा विभक्ति के स्थान पर परसर्ग शब्द नहीं चाहते.

1. **वाक्यांश** में आप देखेंगे कि अपनी आंतरिक रचना को छोड़कर भाषा के सभी वाक्यांश क्रिया के साथ जुड़ते हैं. ये वाक्यांश दो प्रकार के शब्दों से बने होते हैं—अव्यय, जो अविकारी होते हैं और संज्ञा, सर्वनाम तथा संज्ञावत प्रयुक्त होने वाले शब्द जो विकारी होते हैं. संज्ञादि शब्द वाक्यांश बनते समय नियमानुसार परसर्ग लेते हैं. अगर भाषा में संज्ञा के सिर्फ़ आठ ही सिद्ध रूप होते, तो आठ कारकों का सिद्धांत तर्कसंगत हो सकता है. फिर कारकों तथा कारक-सूचक विभक्तियों या प्रत्ययों की चर्चा कर लीजिए. लेकिन हिंदी की प्रकृति संस्कृत से भिन्न है. घर से में 'से' विभक्ति है, तो *बाज़ार तक* में 'तक' विभक्ति क्यों नहीं ? मगर व्याकरणिक परंपरा में इसकी गुंजाइश नहीं है. *राम के लिए* में 'के लिए' भी विभक्ति है और कुछ वैयाकरणों ने इसे संप्रदान में रखा है. लेकिन *की तरफ़, के सिवा, के अधीन* आदि का न विश्लेषण हो सकता है, न कारकों के अंतर्गत इनका स्थान है. वैयाकरण इन्हें 'अव्यय' में डाल देते हैं.

2. निम्नलिखित कारणों से हमें 'विभक्ति' की जगह 'परसर्ग' की आवश्यकता है. (अ) ने, को, से, में, पर के अलावा भी वाक्यांश सूचक अनेक रूप मिलते हैं, जो प्रयोग में समान हैं (*घर में है*~*घर के अंदर है, मेज़ पर है*~*मेज़ के ऊपर है*). ऐतिहासिक कारणों में विभक्ति का अर्थ सीमित है. परसर्ग इन सारे समान प्रकार्य वाले शब्दों को एक वर्ग में मानता है. (आ) विभक्ति कहने पर हम परंपरा से इनके प्रयोग को सीमित कर देते हैं. 'से' करण की विभक्ति है या अपादान की. *मैं राम से मिला, मैं उससे लड़ा, प्यार से बात करो, तेज़ी से चलो, सवेरे से बैठा हूँ, मुझसे नहीं होगा, कसम से कह रहा हूँ* आदि वाक्यों की विविधता का विश्लेषण 'विभक्ति' से नहीं होगा. अनुपयोगी परंपरा से हटने में 'परसर्ग' सहायता करेगा. वाक्यांश विश्लेषण से हम भिन्न-भिन्न परसर्गों के इन विविध प्रयोगों को स्पष्ट कर सकेंगे. (इ) पुरानी व्यवस्था के अनुसार हमें विभक्ति के रूप से विश्लेषण प्रारंभ करना पड़ता है. छात्र सीखते हैं कि सवेरे अव्यय है, *रात को* कर्म/संप्रदान (?) है और *रात में* अधिकरण. विश्लेषण का आधार विभक्ति है. नये ढंग से तीनों समयवाचक वाक्यांश हैं, तीनों तिर्यक संज्ञा शब्द हैं, कहीं परसर्ग नहीं है, कहीं कोई परसर्ग है. यहाँ वर्णन में एकरूपता है, वैज्ञानिकता है. (ई) परसर्गों का प्रयोग क्षेत्र संज्ञा या सर्वनाम के आठ कारकों से अधिक विस्तृत है. क्रिया से प्राप्त *जाने पर, बग़ैर देखे* आदि प्रयोग हिंदी में बहुत प्रचलित हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारक बगैर देखे का विश्लेषण नहीं कर सकता. परसर्गीय रचनाओं के संदर्भ में हम इन सबका विश्लेषण कर सकते हैं और परसर्गों के सामान्य लक्षणों की खोज कर सकते हैं.

कारक या विभक्ति का सिद्धांत शब्दों के रूप परिवर्तन तक सीमित है. वह प्रमुखतया वाक्यांश के प्रकार्य पर आधारित नहीं है. इन कारकों के परसर्ग को भी हम वाक्यांश विश्लेषण से जोड़ते हैं. हिंदी के संदर्भ में विभक्ति की चर्चा दोनों से हटी हुई है, अतः अनुपयोगी है.

परि- देखें **प्रति-**.

पसीना प्रायः **आँसू** की तरह *पसीना* भी बहुवचन में ही प्रयुक्त होता है. *मेरे तो बहुत पसीने आ रहे हैं, उसके पसीने छूट गये. पसीने पोंछ कर जाओ.*

आँसू की तरह जब इस शब्द का प्रयोग पसीने के कण की जगह पसीना बहाने के व्यापार के लिए हो, तो वहाँ इसका एकवचन में भी प्रयोग होता है. *खून-पसीना एक करना, पसीना बहा कर, पसीने की कीमत* आदि प्रयोग द्रष्टव्य हैं.

पहनना यही रूप अधिक प्रचलित है और ग्राह्य है. *पहिनना* का प्रयोग छोड़ दिया जाए, तो अच्छा है. चर्चा के लिए देखिए **ह**.

पहचानत पहचान के लिए यह दक्खिनी प्रयोग है, मानक हिंदी का शब्द नहीं है. यहाँ भी अमानक प्रयोग *पहिचानत* मिलता है.

पाना 1. *पाना* को कई वैयाकरण रंजक क्रिया मानते हैं. लेकिन यह 'नहीं' के साथ आता है (*मैं काम पूरा नहीं कर पाया*), इसमें 'रहा' लगता है (*मैं बोल नहीं पा रहा हूँ*) और 'सक, चुक' की तरह इसका विधि में (**तुम यह काम कर पाओ*) या संभावनार्थक में (**मैं नहीं चाहता कि वह चल पाए*) प्रयोग नहीं होता. यह 'सक' की तरह वृत्तिवाचक क्रिया है. देखें **सकना**.

पाना असमर्थता बोधक है और *सक* की तरह यहाँ अनिच्छा आदि अन्य अर्थ नहीं हैं. यह कहना उचित होगा कि इच्छा, कोशिश आदि के बावजूद काम न हो तो वहाँ *पा* का इस्तेमाल कर सकते हैं. यह भी उल्लेखनीय है कि *सक* गुण-धर्म के रूप में 'कुशलता, अकुशलता, सामर्थ्य' आदि का अर्थ देता है, लेकिन *पा* तात्कालिक, अनुभूत, वास्तविक व्यापारों के संदर्भ में अक्षमता का बोध कराता है. *लाख कोशिश करने पर भी वह उठ नहीं पाया (~सका). मैं उसकी शादी में जाना तो चाहता हूँ, लेकिन जा नहीं पाऊँगा. मैं सवेरे जल्दी उठ नहीं पाता. अरेरे, मेरा हाथ पकड़ो, मोच आ गयी है शायद. उठ नहीं पा रहा हूँ.*

2. *सक* और *पा* में जो अंतर है, उसे अंतिम दो वाक्यों में देख सकते हैं. चौथे वाक्य में *सक* नहीं आता. तीसरे को फिर से देखिए :

मैं सवेरे जल्दी नहीं उठ सकता. मैं सवेरे जल्दी उठ नहीं पाता.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पा के स्तर तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को इच्छापूर्वक प्रयत्न करना पड़ता है. शायद यही कारण है कि व्यापार के मध्य *पा रहा* (*सक रहा) वाली रचना मिलती है. *थू, यह भी कोई चाय है? ऐसी चाय मैं नहीं पी सकता* (*पाता). यहाँ इच्छा वाली बात तो कतई नहीं है. कई वांछित व्यापारों के साथ सक, पा दोनों का प्रयोग होता है. *मैं सोच नहीं पा रहा हूँ* (~?सकता) *कि अब क्या करूँ मुझे जुकाम है. मैं बोल नहीं पाऊँगा~सकूँगा. हम वहाँ समय पर पहुँच नहीं पाये~सके. पाता-पा रहा* के अंतर को छोड़ कर अक्षमता वाले कई प्रसंगों में सक तथा पा समानार्थी हैं. वास्तव में *पा* हिंदी भाषा की एक आधुनिक प्रवृत्ति है और उसने सक के कुछ प्रयोगों में अपना स्थान बना लिया है.

3. *पाना* के प्रयोग में कुछ दशकों पहले क्रियार्थक संज्ञा आती थी. *मैं काम करने नहीं पाया. तुम यहाँ से जाने नहीं पाओगे. देखो, कोई जाने न पाए.* अभी तक क्रियार्थक संज्ञा युक्त वैकल्पिक रूप बराबरी से चल रहा है. लेकिन *कर पाना* का *करने पाना* पर नियंत्रण होने लगा है, जिसे पहले की प्रयोग बहुलता में देख सकते हैं.

4. *पाना* के साथ 'ने' का प्रयोग आधुनिक हिंदी की एक विशेषता है. लेकिन यहाँ 'ने' का प्रयोग बहुत सीमित क्षेत्रों में, थोड़े-से लोगों द्वारा होता है. *हम ने देश का समुचित विकास नहीं कर पाया. !मैंने किताब नहीं पढ़ पायी.* यहाँ पा 'सक' की तरह वृत्तिवाचक है, मूल क्रिया नहीं. इस कारण *पा* वाले वाक्यों में 'ने' का प्रयोग नहीं होना चाहिए. मूल क्रिया पा का प्रयोग 'ने' के साथ होता है. *हमने क्या खोया, क्या पाया, यह समय ही बताएगा.*

पारिभाषिक शब्द 1. ऐसे व्यक्ति, जो भाषा की प्रकृति या आवश्यकताओं के बारे में नहीं जानते, प्रायः यह कहते हुए सुने जाते हैं कि रेडियो तथा अख़बारों की भाषा क्लिष्ट हो गयी है. आप परमाणु भौतिकी के बारे में या उपग्रह द्वारा संप्रेषण के बारे में बिना मेहनत किये चर्चा करना चाहते हैं, वह भी ऐसी भाषा में जो आप घर में इस्तेमाल करते हैं! रेडियो तथा अख़बारों में ज्ञान-विज्ञान के विविध विषय रहते हैं, जिनकी चर्चा के लिए पारिभाषिक शब्दों की ज़रूरत पड़ती है. राजनीति, विधि, अर्थशास्त्र, विज्ञान के विविध विषय, समाजशास्त्र, कला सभी विषयों की चर्चा के लिए हमें जिन विशिष्ट शब्दों की ज़रूरत होती है, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं. शब्द की अनिवार्यता से इनकार नहीं, बल्कि शब्दों से अपरिचय ही हमें उक्त भाषा को जटिल कहने को प्रेरित करता है. वैसे उन विषयों में रुचि रखने वाले व्यक्ति अंग्रेज़ी के हज़ारों पारिभाषिक शब्द जानते हैं. ordnance, fusion, inflation, homicide, fascism, electronics, optical, cubism, gene, polyandry जैसे शब्दों को केवल बोलचाल की अंग्रेजी के परिचय के आधार पर कोई जान नहीं सकता. इन शब्दों से व्यक्त प्रत्यय

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(concept) को जानना आवश्यक है. हिंदी में इनके लिए नये शब्द बनें, तो उन्हें जानने के लिए थोड़ी मेहनत भी करनी चाहिए. विषय उस प्रत्यय या विचार के अर्थ को निश्चित करता है, भाषा उस अर्थ के लिए शब्द देती है. जो विचार नहीं जानता वह हिंदी के शब्दों के माध्यम से ही प्रत्यय-बोध भी प्राप्त कर सकता है; जो विचार को जानता है वह मात्र नये शब्द का परिचय प्राप्त करता है. दोनों ही तरह के लोगों के लिए कुछ सीखना आवश्यक हो जाता है.

2. पारिभाषिक शब्दों के कुछ गुण होते हैं. वे विचार, जो इन शब्दों से प्रकट होते हैं, सार्वदेशिक होते हैं. अर्थात anatomy या उसके लिए प्रयुक्त हिंदी शब्द दोनों से वक्ता-श्रोता के मन में एक ही विचार आना चाहिए. तभी भाषा की सीमा से परे संप्रेषण हो सकता है. अन्यथा स्थानीय संस्कृतियों की तरह ज्ञान-विज्ञान भी खंडित हो जाएँगे. एक भाषा के भीतर भी पारिभाषिक शब्दों को सर्वत्र एक निश्चित अर्थ देना चाहिए. तभी वैज्ञानिक मिल कर काम कर पाएँगे, विधिवेत्ता सही निर्णय कर पाएँगे. पारिभाषिक शब्दावली में पर्यायों की गुंजाइश नहीं है. श्लेष बोलचाल की भाषा में अलंकरण है, पारिभाषिक अर्थ में दोष. इस कारण यह आवश्यक हो जाता है कि पारिभाषिक शब्द यथासंभव आम बोलचाल के शब्दों से भिन्न हों या उनका पारिभाषिक अर्थ निश्चित हो जाए. पारिभाषिक शब्दों का तीसरा गुण है विषय की गहराई तथा विचारों की संबद्धता के कारण एक मूल शब्द से संबद्ध अनेक शब्दों का प्रयोग. ये शब्द एक दूसरे से व्युत्पन्न होने चाहिए, जिससे हम अन्य शब्दों के प्रयोग को समझ सकें. शब्दों (या विचारों) की संबद्धता को दो आयामों में देख सकते हैं. एक ओर *ऑक्सीजन*, *ऑक्साइड*, *डाइऑक्साइड*, *ऑक्सीजनेशन* एक मूल विचार से उत्पन्न शब्द हैं; दूसरी ओर रसायन विज्ञान में प्रत्यय '-एट', '-आइड' का अपना विशिष्ट अर्थ है—*नाइट्रेट*, *कार्बोनेट*, *सल्फ़ेट*, *हाइड्रेट*; *ऑक्साइड*, *सल्फ़ाइड* आदि शब्दों में इस अर्थ समता को देख सकते हैं. इस संबद्धता के कारण विचारों को व्यवस्थित रूप से अपनाना आसान होता है. अगर हमारे पास पहले से कोई शब्द हो, तो वह अन्य शब्दों की रचना में काम आने वाला होना चाहिए. देशज शब्द तथा अरबी-फ़ारसी शब्द यहीं कमजोर पड़ते हैं और संस्कृत शब्द उपयोगी होते हैं, क्योंकि ऐसे संबद्ध शब्दों की रचना संस्कृत के प्रत्ययों के कारण (जो हमारे लिए अपरिचित नहीं हैं) आसान होती है.

3. भारत सरकार ने हिंदी के पारिभाषिक शब्दों की रचना के कुछ फ़ार्मूले बनाये हैं. (अ) पहले से प्रचलित शब्दों को यथासंभव उसी रूप में ले लिया जाए. (आ) जहाँ आवश्यक हो, अंग्रेज़ी (अंतरराष्ट्रीय) शब्दों को ज्यों का त्यों ले लिया जाए और उनसे हिंदी या अपनी भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप अन्य शब्द बनाये जाएँ (जैसे *ऑक्सीकृत*, *लिग्नीभवन*, *कार्बनीकरण*, *न्यूक्लीय*). (इ) जहाँ तक संभव

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो, अन्य भारतीय भाषाओं से पारिभाषिक शब्द लिए जाएँ. (ई) जहाँ इन स्रोतों से न मिलें, संस्कृत की सहायता से नये शब्द गढ़े जाएँ.

4. पारिभाषिक शब्दों से संबंधित कुछ समस्याएँ :

राजभाषा आयोग (1956) ने अपने प्रतिवेदन में इस बात पर ध्यान दिया कि भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग में एकरूपता हो और इस दृष्टि से सारी भाषाओं के पारिभाषिक शब्द निर्माण के कार्य को संयोजित करने की व्यवस्था हो. आयोग की इस बात से सब सहमत होंगे, ख़ासकर जब भारत की सारी भाषाओं को अपने लिए प्रारंभ से पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करना पड़ रहा है. इससे एक भाषा के माध्यम से काम करने वाला व्यक्ति दूसरी भाषा के माध्यम से आसानी से कार्य शुरू कर सकता है. लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम 'अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली' की बात कर रहे हैं. पारिभाषिक शब्द भी भाषा के अंग होते हैं, जिनमें उस भाषा की अपनी शब्दावली होती है, उसकी रचना में भाषा के उच्चारण, शब्द रचना, वाक्य विन्यास की बातों का ध्यान रखना पड़ता है. लेकिन इन सबसे भिन्न एक बृहत समस्या है. भारतीय भाषाएँ संस्कृत से समय-समय पर शब्द लेती रही हैं. कई कारणों से इनमें अर्थ का अंतर आता गया है. तमिल में लगभग 2000 संस्कृत शब्द है, लेकिन इनमें 1000 शब्दों का अर्थ हिंदी से भिन्न हैं (जगन्नाथन, 1969). तमिल में *कल्याण* 'विवाह' है, तब तमिल भाषी *कल्याण अधिकारी* का क्या अर्थ समझ पाएगा. यह स्थिति न्यूनाधिक रूप से सभी भाषाओं में है. आवश्यकता इस बात की है कि अन्य भाषाओं में पारिभाषिक शब्द बनें, तो हिंदी के शब्दों से उनकी तुलना कर भिन्नता के अंश को प्रकाश में लाया जाए. दुख तो इस बात का है कि हिंदी प्रदेश भी अपने-अपने पारिभाषिक संग्रह निकाल रहे हैं और सभी प्रांतों में ताल-मेल नहीं है.

दूसरी समस्या इन शब्दों के प्रयोग में आने की है. कई लोगों को डर है कि सरकारें लाखों रुपये पारिभाषिक शब्द निर्माण पर व्यय करती हैं, लेकिन लोग इन्हें अपनाने वाले नहीं हैं. कुछ हद तक यह बात सही है. सुव्यवस्थित शब्द निर्माण के बाद भी कई शब्द प्रचलन में नहीं आ सकेंगे, कई नये शब्द प्रयुक्त होने लगेंगे. यह भाषा की प्रकृति है. अतः सरकारों को चाहिए कि वे लाखों की संख्या में शब्द बनाकर कीमती ग्रंथ (हज़ारों की संख्या में) प्रकाशित न करें, बल्कि आंशिक शब्द निर्माण—अध्ययन-अध्यापन, ग्रंथ लेखन, कार्यालय प्रयोग—शब्दों का प्रामाणीकरण इन तीन सोपानों के क्रम में कार्य करें. शुरू-शुरू में ये शब्द संग्रह टेलीफ़ोन पुस्तिका के समान ही होंगे—हर दो-तीन साल में इन्हें बदलने की आवश्यकता हो सकती है.

5. पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता हर विषय में होती है. लेकिन इन शब्दों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के प्रयोग के बावजूद भाषा सरल हो सकती है (अगर ये शब्द मालूम हों) और इनके साथ भाषा अति दुरूह और क्लिष्ट भी बनायी जा सकती है. ऐसी दुरूह भाषा को अंग्रेज़ी में jargon कहते हैं और अंग्रेज़ी के भाषावैज्ञानिक इस दुरूहता के ख़िलाफ़ लड़ते रहे हैं. पंडिताऊपन, कार्य की (अ)परंपरा, नवीनता का मोह, भाषिक चेतना का अभाव ऐसे कई कारण हैं, जिनसे भाषा दुरूह बन जाती है. दोष सिर्फ़ पारिभाषिक शब्दों का नहीं है.

पुनरुक्त, पुनरोक्त दोनों में पहला प्रयोग ग्रहणीय है. दे० **उक्त**.

पुनरुक्ति भाषा में पूर्ण पुनरुक्ति का अपना स्थान होता है. अगर भाषा में ऐसी व्यवस्था न हो, तो कोई बिना आवश्यकता भाषा के किसी तत्त्व को दुबारा नहीं बोलता.

1. पुनरुक्ति का एक कारण है वक्ता का यह विचार कि उसकी बात ठीक से संप्रेषित हो जाए. ऐसे प्रसंगों में वह बहुधा स्वयं प्रकट कर देता है कि वह अपनी बात दुहरा रहा है. इसे हम पुनरावृत्ति कहेंगे. *वह कल आ रहा है. सुनी न आपने मेरी बात ? वह कल आ रहा है. वह बहुत बदमाश है. ठीक कहा रहा हूँ कि नहीं ? वह सचमुच बदमाश है.* इस प्रकरण में हम ऐसी पुनरावृत्ति का विश्लेषण नहीं करेंगे. यह सभी भाषाओं की सामान्य विशेषता है. हम यहाँ ऐसे ही संदर्भों में पुनरावृत्ति की वात देखेंगे, जहाँ भाषा की संरचना में उसका महत्त्व हो और उसकी प्रयोगगत विशेषताओं का विश्लेषण किया जा सके.

2. ऊपर बताये अनुसार भाषा के सभी अंग पुनरुक्त हो सकते हैं, जहाँ सिर्फ़ दुहराना उद्देश्य है. अर्थयुक्त ढंग से उपवाक्य (*मैं अच्छा हूँ, मैं अच्छा हूँ), वाक्यांश (*मैंने मैंने खाना खाया, *मैंने खाना खाना खाया, *मैंने खाना खाया खाया) तथा भाषा में प्रकार्यातमक शब्द पुनरुक्त नहीं होते. केवल शब्द पुनरुक्त होते हैं–वाक्यांश संरचना के अंतर्गत और शब्द रचना के स्तर पर ध्वनियों और रूपों की पुनरुक्ति देखी जा सकती है. यहाँ हम शब्दों की पुनरुक्ति के बारे में ही देखेंगे और शब्द की संरचना के अंदर की पुनरुक्ति को हम **ध्वन्यात्मक शब्द** में देखेंगे.

3. संख्या में गिनी जाने वाली वस्तुवाचक संज्ञाओं की पुनरुक्ति से वस्तु की हर इकाई का अर्थ प्रकट होता है और यह संज्ञा बहुवचन में होती है–*वे लोग जगह-जगह गये* (हर जगह गये, जहाँ जाने का विचार किया था). *जनम-जनम का साथी* (हर जनम का साथी). *यह तो घर-घर की बात है* (हर घर की बात है). *मैंने घर का चप्पा-चप्पा छान मारा* (हर चप्पा देखा). *बात-बात में वह मुझे टोकता है* (वह मुझे हर बात में . . .). *कपड़े-कपड़े में फ़र्क होता है* (हर दो कपड़ों में फ़र्क होता है). *दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम* (हर दाने पर · · ·)

3. ऊपर के उदाहरणों तथा अर्थ के संदर्भ में सवाल उठ सकता है कि क्या

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनरुक्ति तथा 'हर' के वाक्य समानार्थी हैं. सबसे पहला उत्तर है 'नहीं'. आगे के वाक्य पुनरुक्ति से नहीं लिखे जाएँगे—तुम हर कमरे में दो-दो कुर्सियाँ डाल दो~ तुम (सब) कमरों में दो-दो कुर्सियाँ डाल दो. *तुम कमरे-कमरे में दो कुर्सियाँ डाल दो~*तुम कमरे-कमरे में दो-दो कुर्सियाँ डाल दो. ?मेरा हर बच्चा छोटा है~मेरे बच्चे छोटे-छोटे हैं~*मेरे बच्चे-बच्चे छोटे हैं~*मेरे बच्चे-बच्चे छोटे-छोटे हैं. *मेरी कमीज़-कमीज़ अच्छी है~मेरी सारी कमीज़ें अच्छी हैं~?मेरी सारी कमीज़ें अच्छी-अच्छी हैं.

इन उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि 'हर' का अर्थ प्रकट करने का कार्य प्रथमतः कर्म या विधेय करता है. अगर कर्म या विधेय से यह न हो या उनका अभाव हो तो अन्य स्थानों में पुनरुक्ति दिखायी पड़ती है. वहाँ भी यथासंभव सब, सारे, हर आदि विशेषणों का प्रयोग अधिक होता है. इस तरह कह सकते हैं कि 'हर' का अर्थ विशेषण प्रकट करते हैं; वे न हों तो संज्ञा यह दायित्व निभाती है.

4. गिनती की संज्ञाओं से पहले या विधेय में विशेषण हर वस्तु की विशेषता प्रकट करते हैं. इस कारण विशेषण हमेशा बहुवचन रूप में ही आते हैं. बड़े-बड़े मकान, कई छोटी-छोटी चीज़ें, मेरे बच्चे छोटे-छोटे हैं. *बड़ा-बड़ा मकान, *छोटी-छोटी कमीज़. यह कहना मेरे लिए कठिन है कि क्यों नया-नया मकान (बहुत नया), नये-नये मकान संभव हैं, *बड़ा-बड़ा मकान नहीं.

4.1. बिना गिनती की संज्ञाओं (जैसे द्रव पदार्थ) के संदर्भ में विशेषण की पुनरुक्ति विशेषण के अर्थ की अधिकता का संकेत करती है. लाल-लाल ख़ून, मीठा-मीठा पानी, गरम-गरम चाय. इसी तरह भावों या अमूर्त विचारों के संदर्भ में मंद-मंद मुस्कान, मीठी-मीठी बातें द्रष्टव्य हैं.

4.2 'बहुत' के अर्थ में हैं लाल-लाल ख़ून, नीला-नीला आसमान, !सफ़ेद-सफ़ेद टोपी; लेकिन 'बहुत' के अर्थ में कहीं एकवचन शब्दों के साथ रंग के अलावा अन्य शब्दों की पुनरुक्ति नहीं होती. *बड़ा-बड़ा मकान, *ऊँची-ऊँची इमारत, ?प्यारा-प्यारा चेहरा.

4.3. संबंधवाचक विशेषण (*मेरा-मेरा, *उसका-उसका, *हमारा-हमारा) पुनरुक्त नहीं होता. लेकिन निजवाचक विशेषण 'अपना' बहुवचन में पुनरुक्त होता है, अगर उस वाक्य का कर्ता बहुवचन में हो और कर्म आदि में बहुवचन हो. तुम लोग अपने-अपने घर जाओ. *मैं अपनी-अपनी किताबें पढ़ रहा हूँ. दोनों अपनी-अपनी किताबें पढ़ रहे हैं. वे दोनों बच्चे अपनी-अपनी माँ (?माँओं) के पास गये ('अपनी माँ' से तुलना कीजिए).

4.4. क्रियाविशेषणों में पुनरुक्ति 'बहुत' का अर्थ देती है. वह धीरे-धीरे जा रहा था. मैं जल्दी-जल्दी काम कर रहा हूँ. लेकिन सारे क्रियाविशेषण पुनरुक्त नहीं होते, न ही संज्ञा से बने क्रियाविशेषण पुनरुक्त होते हैं. *ख़ामोश-ख़ामोश,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

*चुपचाप-चुपचाप, *शांति-शांति से, *जल्दी-जल्दी से (जल्दी-जल्दी). विस्मयादि बोधक प्राय: पुनरावृत्त होते हैं, क्योंकि ये ध्वन्यात्मक शब्द होते हैं. क्रियाओं की पुनरुक्ति का विस्तार से विश्लेषण करने की आवश्यकता है, क्योंकि ये क्रियारूप वाक्य संरचना में महत्त्व रखते हैं. इन पुनरुक्त रूपों को (कर-कर, करते-करते, पड़े-पड़े) **कृदंत** की प्रविष्टियों में देखें.

5. पुनरुक्त शब्दों की रचना के संदर्भ में बच्चों की भाषा का अध्ययन अत्यंत रोचक विषय हो सकता है, क्योंकि अध्ययन का यह क्षेत्र विशाल है. संसार की सभी भाषाओं में बच्चों की भाषा के व्यंजनों और स्वरों का क्रम बहुत समान-सा रहता है, अर्थ बच्चों के जीवन से संबंध रखता है. उदाहरण के लिए *काका* जर्मन में बच्चों की भाषा में मलत्याग के लिए आता है, तमिल में एक चिड़िया के लिए, हिंदी में एक रिश्ते के लिए, पंजाबी में बच्चे के लिए. अन्य भाषाओं में भी यह शब्द ऐसे ही भिन्न-भिन्न अर्थों में मिल सकता है.

बच्चों की भाषा में एक व्यंजन तथा एक स्वर से बने अक्षर की पुनरुक्ति से अनेकों शब्द मिलते हैं. अर्थ की दृष्टि से ये शब्द रिश्ते, प्रसाधन, शरीर के अंग, प्राणियों के नाम, खिलौने, खेल आदि तथा कुछ भावों के लिए आते हैं. रिश्ते के शब्दों के संदर्भ में एक विद्वान ने बताया है कि संसार की भाषाओं में निकटतम रिश्तों के शब्द केवल 6–7 व्यंजनों से बने मिलते हैं. *मामा* किसी भाषा में माँ के लिए है, तो कहीं माँ के भाई के लिए. ये रिश्ते बच्चों के जीवन के प्रारंभिक ज्ञान के सूचक हैं. हिंदी में *चाचा, मामा, नाना, दादा, बाबा, लाला, काका* आदि में पुनरुक्ति देख सकते हैं. /ई/ प्रत्यय से बने *चाची* आदि निष्पन्न शब्द हैं. इसी तरह बच्चों के कुछ अन्य पुनरुक्त शब्द हैं—बाबा लाना (बाहर घूमने जाना), मममम (पानी), दूदू (दूध), छोछो (गोद), सूसू (मूत्रत्याग), छीछी (मलत्याग), चीं चीं (चिड़िया), मेंमें (बकरी), पोंपों (मोटरगाड़ी), लूलू (लड़कियों का अंग विशेष).

जब बच्चे बड़ों की भाषा के शब्द सुनते हैं और उन्हें अपनी भाषा के अनुसार बदल कर बोलते हैं, उनमें ध्वन्यात्मकता का पुट देखा जा सकता है. चिज़्ज़ी (चीज़, खाने की चीज़), बाबा (बाहर). इसी संदर्भ में हरदेव बाहरी (1965) ने भी बच्चों के कुछ अन्य शब्द दिये हैं, जिनमें पूर्ण पुनरुक्ति नहीं है, लेकिन व्यंजन की पुनरुक्ति है—*बोबा* (स्तन), *चूची* (स्तन, दूध), *कीका* (घोड़ा), *मेमा* (मेमना), *कोका* (भीड़), *बब्बू* (बच्चा). भावों की अभिव्यक्ति के लिए भी बच्चे पुनरुक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं. *छीछी* 'ख़राब' के अर्थ में आता है. *यह खाना अच्छा नहीं है, 'छीछी' है*. *थूथू* बच्चे की अप्रियता या अप्रसन्नता प्रकट करता है.

ऊपर की बातों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि विस्मयादि बोधक शब्दों की रचना में बालक की भाषा का कुछ पुट है. भाषा के कई पुनरुक्त या अनुकरणात्मक शब्दों के मूल में कहीं बच्चों की भाषा का अवशेष दिखायी पड़ता है. यह प्रवृत्ति

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बड़ों में बोलचाल के शब्दों के निर्माण में भी दिखायी पड़ती है.

पुनरुक्ति दोष (Tautology) 1. एक ही बात को दो पर्यायों से या समान वाक्यांशों आदि से कहना पुनरुक्ति दोष है. *लौटना* या *वापस आना* सही प्रयोग है, लेकिन 'वापस लौटना' में पुनरुक्ति दोष है. आगे थोड़े-से उदाहरण हैं :

इन कारणों के कारण/की वजह से	दान प्रदान करना
एक साल बीतने के बाद	के अंदर में
थोड़े-से कुछ रुपये	काफ़ी पर्याप्त है
शुरू से प्रारंभ करना	गोल-गोल चक्कर लगाना
काम पर नियुक्त करना	सारी व्यवस्था को व्यवस्थित करना
परस्पर सहयोग	दोनों परस्पर मिले
अखंडित एकता	ख़ास विशेषता
फिर बाद में	

2. हिंदी में कुछ स्वीकृत पुनरुक्तियाँ हैं, जो दोष नहीं हैं. *हँसी हँसना, मार मारना, लड़ाई लड़ना, बात बताना, कार्य करना* में वर्गीय कर्म है, जो स्वीकृत व्यवस्था है. अगर कोई प्रभाव की दृष्टि से किसी बात को दुहराता हो, तो वह पुनरावृत्ति है, अभिव्यक्ति की शैली है, दोष नहीं. *तुम मेरे सामने से निकल जाओ, अभी, इसी वक्त.* 'हँसते-हँसते, लेटे-लेटे, बड़े-बड़े' आदि रचनाओं में **पुनरुक्ति** सार्थक है, संरचना की विशेषता है.

3. वाक्य स्तर पर भी पुनरुक्ति दोष के उदाहरण ढूँढ़े जा सकते हैं. कुछ उदाहरण देखिए—*वह लड़का, जो उधर खड़ा है, वह मेरा भाई है. चूँकि आप नहीं आये, इसलिए मैं चला गया.* देखें **चूँकि**.

पूछ रहे थे मेरे सहयोगी विजयराघव रेड्डी ने एक बार एक वाक्य दिया *आप क्यों पूछ रहे थे?* और कहा कि यह वाक्य *आप ने क्यों पूछा?* से अधिक आदर सूचित करता है. बात मुझे भी जँची, क्योंकि प्रायः हम किसी से इस संदर्भ में *क्यों कहा/पूछा/बताया* का प्रयोग कम करते हैं, कह रहे थे आदि का अधिक. लेकिन **विधि, रंजक क्रिया** दोनों के संदर्भ में मैं अधिक आदर वाली संरचनाओं का खंडन कर चुका हूँ. उल्लेखनीय है कि उक्त दोनों प्रकरणों में भी अधिक आदर या शिष्टता युक्त प्रयोग की बात प्रथम पुरुष और अन्य पुरुष के संदर्भ में ही दिखायी पड़ती है. लेकिन इस का कतई तात्पर्य यह नहीं है कि *आओ* कहने में अनादर दिखायी पड़े, *आइएगा* कहने में अधिक आदर प्रकट हो.

तुलना के लिए दो वाक्य और ले सकते हैं. अगर बातचीत में कोई व्यक्ति दूसरे की बात किसी कारण ठीक से न सुन पाए, तो वह कहता है—*हाँ, अभी आप कुछ कह रहे थे न.* यहाँ 'कहा' का प्रयोग नहीं होगा, क्योंकि श्रोता मान कर चलता है कि दूसरे व्यक्ति का व्यापार (कहना) अभी समाप्त नहीं हुआ है. अगर प्रसंग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से वह व्यापार समाप्त हो गया हो और व्यक्ति उस समाप्त व्यापार का उल्लेख करना चाहे, तो कह सकता है *आप ने अभी (थोड़ी देर पहले) कुछ कहा था न.* यहाँ व्यापार की पूर्णता के आधार पर दो भिन्न क्रियाएँ आती हैं और दोनों में अर्थ का अंतर किया जाता है.

लेकिन *आप यह बात क्यों पूछ रहे थे* में वास्तव में व्यापार (पूछना) समाप्त हो चुका है और श्रोता उस व्यापार के पीछे का कारण या प्रयोजन जानना चाहता है. इसी वाक्य को *आप ने क्यों पूछा* भी कहा जा सकता था. **सकना** के संदर्भ में हमने देखा कि उसके दो भिन्न अर्थ संदर्भ हैं. *मैं नहीं जा सकता* में व्यक्ति की अनिच्छा या विरोध भी प्रकट हो सकता है, असमर्थता भी. अपने अशिष्ट होने की संभावना को दूर करने के उद्देश्य से असमर्थता वाले संदर्भों में प्राय: *मैं नहीं जा सकूँगा, माफ़ कीजिए मेरा जाना मुश्किल होगा, जाना तो चाहता हूँ* · · · आदि प्रतिवक्तव्य देता है. यही बात यहाँ 'क्यों' पर लागू होती है. 'क्यों' वाले प्रश्न में दूसरे व्यक्ति का प्रयोजन जानने का यत्न भी हो सकता है, दूसरे के व्यापार के औचित्य या अधिकार पर प्रश्न चिह्न भी लगाया जा सकता है. इसी कारण प्रतिवक्तव्य में दोनों संदर्भों में क्रमश: *क्यों पूछ रहे थे* और *क्यों पूछा* का प्रयोग किया जाता है. यह एक प्रसंग है, जहाँ संदर्भगत अर्थ संरचनागत अर्थ से अधिक प्रबल हो जाता है. चूँकि यह 'क्यों' से ही जुड़ा है, आगे के वाक्यों में पूर्ण पक्ष का कृदंत ही आता है, 'रहा था' रूप नहीं. *आप ने उसे कितने रुपये दिये (*दे रहे थे), तुमने कौन-सा कपड़ा निकाला (*निकाल रहे थे), तुम सब किस वक्त आये (*आ रहे थे). तुमने अभी क्या कहा* (~कह रहे थे) की चर्चा ऊपर कर चुके हैं.

पूर्वाग्रह, पूर्वग्रह ये दोनों शब्द अंग्रेज़ी के prejudice के लिए आते हैं. ये नये बने शब्द हैं. इनमें दोनों की व्युत्पत्ति लक्षित अर्थ की तरफ़ संकेत करती है. पूर्व+आग्रह किसी बात को पहले से ही आग्रहपूर्वक मानना. पूर्व+ग्रह पहले से (किसी बात को) पकड़े हुए होना. अर्थ सामीप्य के कारण पहला शब्द अधिक उपादेय हो सकता है.

पेटी इस शब्द के दो अर्थ हैं—संदूक तथा बेल्ट. संदूक के अर्थ में पेटी का प्रयोग शायद दक्षिण से आया है और हिंदी में अधिक प्रचलित भी नहीं है. देखें पेॅट्टि (तमिल) तथा पेॅट्टेॅ (तेलुगु). पहले अर्थ में पेटी, संदूक दोनों से *बक्सा* अधिक प्रचलित लगता है.

पैसा, पैसे ये दोनों शब्द एकवचन तथा बहुवचन रूप नहीं, बल्कि ये भिन्न अर्थों में (दो शब्दों के रूप में) आते हैं.

1. *पैसा* एकवचन शब्द है, **जिससे हम रुपये के सौ पैसों की बात करते हैं. एकवचन शब्द प्राय: 'एक' के साथ आता है. मैं तुम्हें एक पैसा भी नहीं दूँगा.**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रुपये में सौ पैसे होते हैं. एक पैसे का एक आलू. यह **इकाई शब्द** भी है. इस प्रयोग में इसका विकारी रूप पैसों नहीं बनता. *दस पैसे में एक संतरा मिलता है. मैंने यह कपड़ा दो रुपये पचास पैसे में लिया. पच्चीस पैसे का स्टांप ले आओ.*

2. पैसा धन या संपत्ति या जेब में रखी नकद राशि के अर्थ में प्रयुक्त होता है. *वह पैसे वाला है* का अर्थ है उसके पास धन है. 'वाला' के कारण पैसा विकारी के रूप में आया है. और उदाहरण देखिए–*तुम स्कूटर क्यों नहीं ले लेते हो? मेरे पास पैसा नहीं है. उसने अपने कारोबार में बहुत पैसा लगाया है. पैसा हो, तो आदमी हर चीज़ ख़रीद सकता है. आप पहले पैसा जमा कर दीजिए. अगले हफ़्ते आप को माल मिल जाएगा.* इस अर्थ में कुछ मुहावरेदार प्रयोग देखिए–*पैसा कमाना, पैसा जोड़ना, पैसा डूबना, पैसा बरवाद करना.*

3. रुपये-पैसे के हिसाब के संदर्भ में *पैसा* का ऐतिहासिक महत्त्व है. पहले (1957 से पहले) रुपये का विभाजन इस प्रकार था :

1 रुपया–16 आने～64 पैसे～192 पाइयाँ

1 आना–4 पैसे～8 अधेले～12 पाइयाँ

उस समय आठ आने का सिक्का *अठन्नी*, चार आने का सिक्का *चवन्नी*, दो आने का सिक्का *दुअन्नी*, एक आने का सिक्का *इकन्नी* तथा आधे आने का सिक्का *अधन्नी* कहलाते थे. फिर एक पैसे तथा एक पाई के सिक्के भी थे. जब मेट्रिक पद्धति से रुपये में 100 पैसे का प्रचलन हुआ तो शुरू-शुरू में *नया पैसा*, नये पैसे शब्द प्रचलित हुए. अब *पैसा* मात्र रहा, नया कुछ नहीं रहा. लेकिन आने-पाई का हिसाब ख़त्म हो जाने के बाद भी, ये शब्द भाषा से हटे नहीं. अब भी 25 पैसे का सिक्का *चवन्नी* कहलाता है और 50 पैसे का सिक्का *अठन्नी*. लोग अब भी पाई-पाई का हिसाब चुका देने की बात कहते हैं, अब भी कई बाज़ारों में दो आने, छह आने, दस आने के हिसाब से चीज़ें बिकती हैं. लेकिन अब बीस पैसे, चालीस पैसे, साठ पैसे आदि का प्रयोग अधिक प्रचलित हो गया है. समाज से *आना*, पाई का प्रचलन ख़त्म हो सकता है, लेकिन भाषा में *सोलहों आने सच*, *पाई-पाई को दाँतों से पकड़ना* आदि मुहावरे बने ही रहेंगे.

पौंड, पाउंड अंग्रेज़ी शब्दों के लेखन में ⟨आऊ/आउ⟩ आता है, ⟨औ⟩ नहीं. लेकिन हिंदी में मुद्रा के अर्थ में पौंड चलता है और वज़न के अर्थ में पाउंड. यद्यपि अंग्रेज़ी में दोनों जगह उच्चारण एक है, हिंदी में वर्तनी भिन्न है. भाषा में अर्थ का पक्ष उच्चारण आदि से महत्त्वपूर्ण है, यह इससे स्पष्ट होता है.

पौधा, पौदा, पौद, पौध *पौधा* पेड़ के प्रारंभिक अवस्था के रूप को या वनस्पति विज्ञान में अधिक न बढ़ने वाले छोटे आकार के पौधों को सूचित करता है. *आम का पौधा, तुलसी का पौधा.* पौद एक ओर उस छोटे पौधे का अर्थ देता है, जो एक जगह से दूसरी जगह रोपा जाता है; दूसरी ओर उपज का अर्थ देता

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है, जिस अर्थ में लाक्षणिक रूप से *नयी पौद* का अर्थ है 'नयी पीढ़ी'. *पौदा* और *पौध* इसी अर्थ में क्रमशः *पौधा* और *पौद* के वैकल्पिक रूप हैं. पौधा/पौदा पुल्लिग शब्द हैं, पौद/पौध स्त्रीलिंग. दोनों वर्गों का पहला शब्द अधिक प्रचलित है.

प्रणय, परिणय √ने (नय्) रूप से व्युत्पन्न इन दोनों शब्दों के अर्थ में अंतर है. *प्रणय* 'प्रेम' का अर्थ देता है, *परिणय* का अर्थ है 'विवाह'. आप भी कुछ हिंदी भाषियों की तरह इस कथन को (*प्रणय के बाद परिणय*) रट लें, तो इनके अंतर को समझने में सुविधा होगी.

प्रति- हिंदी में पाँच इकारांत प्रत्यय (उपसर्ग) हैं—*प्रति, अभि, अधि, अति, परि*. इनसे बनने वाले शब्दों की वर्तनी में अहिंदी भाषी प्रायः गलतियाँ करते हैं, जैसे **अधीकरण, *परिक्षा, *अभयास* आदि. इन दोषों के निवारण के संदर्भ में इनके प्रयोग की विशेषताएँ देखिए।

इनके तीन-तीन रूप मिलते हैं—इकारांत, ईकारांत तथा (बिना स्वर का) हलंत रूप. इन रूपों का क्रमशः वितरण निम्न प्रकार से है :

(अ) व्यंजनों से पहले इकार

इस वर्ग के शब्दों की संख्या बहुत है.

अभि *अभिमान अभिलाषा अभिसार अभिकरण अभिधान*
अति *अतिसार अतिरेक अतिरंजना अतिक्रमण*
अधि *अधिकार अधिशासन अधिकरण अधिगम अधिभार* (surcharge)
प्रति *प्रतिमान प्रतिकार प्रतिभागी* (participant) *प्रतिपादन प्रतिस्पर्धा*
परि *परिश्रम परिहार परिहास परिधान परिमल परिमाण*(<मान) *परिणाम*(<नाम) *परिस्थिति परिवार*

(आ) /इ ई/ से पहले ईकार (दीर्घ संधि)

इस वर्ग के शब्दों की संख्या सीमित है. अधिकतर शब्द √ईक्ष् 'देख' से बनते हैं.

अभि *अभीष्ट*(इष्ट)
अधि *अधीश*(ईश) *अधीक्षण*
प्रति *प्रतीक्षा प्रतीक्षक*
परि *परीक्षा परीक्षण परीक्षक*

(ई) स्वर से पहले इ→य्

इस वर्ग के शब्दों की संख्या भी बहुत है.

अभि *अभ्युदय*(उदय) *अभ्यर्थना*(अर्थना) *अभ्यर्थी* (candidate) *अभ्यास*
अधि *अध्यक्ष*(अक्ष) *अध्यादेश*(आदेश) *अध्याय*(आय) *अध्ययन*(अयन) *अध्यवसाय*(अवसाय)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अति अत्युक्ति(उक्ति) अत्याचार(आचार) अत्युत्तम(उत्तम)
प्रति प्रत्युत्तर(उत्तर) प्रत्येक(एक) प्रत्यय(अय) प्रत्यक्ष(अक्ष)
परि पर्याय(आय) पर्याप्त(आप्त) पर्यंत(अंत) पर्यवसान(अवसान)
पर्यालोचना(आलोचना)

2. एक अन्य प्रत्यय *वि* कम प्रचलित है. देखें *विशेष, विधान, विनायक, वीक्षा, परिवीक्षण, व्यवहार, व्यवसाय, व्युत्पत्ति.*

प्रतिध्वनिमूलक शब्द कामता प्रसाद गुरु अपने व्याकरण में दो प्रकार के पुनरुक्त शब्दों की चर्चा करते हैं–पूर्ण पुनरुक्त शब्द और अपूर्ण पुनरुक्त शब्द. उनके पूर्ण पुनरुक्त शब्दों की चर्चा **पुनरुक्ति** में की गयी है. अपूर्ण पुनरुक्त शब्दों के संदर्भ में उनसे भिन्न विश्लेषण की आवश्यकता पड़ती है.

प्रतिध्वनिमूलक शब्द उन संयुक्त शब्दों को कहेंगे, जिनमें पहला शब्द सार्थक होता है और दूसरे शब्द की रचना सार्थक शब्द की स्वनिक रचना की प्रतिध्वनि-जैसी होती है. प्रतिध्वनिमूलक शब्द कई प्रकार के हैं.

1. क्रियाओं की प्रतिध्वनिमूलक रचना को निम्नलिखित नियम से स्पष्ट कर सकते हैं :

व^1 आ **व**^{2} + **व**^{1} ऊ **व**^{2}

काट-कूट, झाँक-झूँक, मार-मूर, लाद-लूद, बाँध-बूँध, बाँट-बूँट

व^1 **स** (**व**)^2 + **व**^{1} आ (**व**)^2 (**स** /आ/ के अलावा कोई और दीर्घ स्वर है)
खेल-खाल, खींच-खाँच, खोल-खाल, पूछ-पाछ, पी-पा, छू-छा, पीट-पाट, फूँक-फाँक, तोड़-ताड़, बेच-बाच, ढूँढ़-ढाँढ़, खोज-खाज, धूम-धाम कुछ प्रचलित उदाहरण हैं. ऐ-आ, औ-आ के उदाहरण नहीं मिलते.

**तैर-तार, *बैठ-बाठ, *लौट-लाट, *दौड़-दाड़*

ये दोनों पूरक रचनाएँ है, स्वनिम से नियंत्रित हैं. सिद्धांततः नियम में आने वाले सभी शब्द प्रतिध्वनित होने चाहिए, लेकिन नहीं होते. प्रयोग बहुलता ही शायद कारण है. *?जाग-जूग, ?डाल-डूल, ?ठोक-ठाक, *लेट-लाट, *डूब-डाब, !खो-खा.* उल्लेखनीय है कि **व स व** की प्रतिध्वनित रचना दूसरी रचना से अधिक प्रयुक्त है, अधिक शब्दों में आती है.

1.1. इस प्रतिध्वनित रचना का प्रयोगगत महत्त्व क्या है? पुनरुक्त प्रयोग क्रिया की अधिकता या अनेकता का अर्थ देता है. *मैंने मार-मार कर उसका भुरता बना दिया. सब से पूछ-पूछ कर रास्ता मालूम किया.* 'खेल-खाल' या 'काट-कूट कर' में स्पष्ट रूप से अधिकता या अनेकता एक ही क्रिया की नहीं, बल्कि इनमें भिन्न तथा संबद्ध अन्य क्रिया व्यापार भी शामिल हो सकता है. *उसने पी-पा कर अपनी दौलत गँवा दी.* यहाँ /पा/ जुआ, वेश्यागमन आदि क्रियाओं की ओर भी संकेत करता है, जबकि पी-पी कर से पीने के अतिरिक्त अन्य किसी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यापार का अर्थ अभिव्यक्त नहीं होता. *खींच-खाँच* कर किसी तरह खींच कर ले जाने का अर्थ देता है. इस तरह संबंधित कार्य करने तथा किसी तरह कार्य पूरा करने का अर्थ क्रियाओं की प्रतिध्वनि से प्रकट होता है.

1.2. प्रयोग की दृष्टि से यह क्रिया निम्नलिखित रूपों में आती है :

-कर वह खेल-खाल कर घर लौटा.

-आ उसने मुझसे कुछ पूछा-पाछा नहीं.

उसने सब जगह देखा-दाखा और · · ·

-ता वह पूछते-पाछते घर पहुँचा.

-ना कुछ खींचना-खाँचना नहीं, चुपचाप बैठो.

धातु ध्यान रखो, कहीं छू-छा गया तो · · · .

2. क्रियाओं के अलावा हमें संज्ञा तथा विशेषण शब्दों में भी प्रतिध्वनित रचना मिलती है. लेकिन यहाँ यह रचना **व** आ **व** की प्रतिध्वनि के रूप में नहीं मिलती. संज्ञा तथा विशेषण में केवल **व स व** की प्रतिध्वनिमूलक रचना मिलती है. **काला-कूला*, **लाल-लूल*, **काम-कूम*, **ताला-तूला*.

2.1. थोड़े-से विशेषण शब्दों में प्रतिध्वनित शब्दों की रचना मिलती है– *भोला-भाला*, *टूटा-टाटा*, *ठीक-ठाक*, *ढीला-ढाला*. अर्थ की दृष्टि से प्रतिध्वनित विशेषण शब्द रूढ़ अर्थ में आते हैं और उनका विशिष्ट अर्थ नहीं है. तात्पर्य यह है कि *भोला* और *भोला-भाला* लगभग समानार्थी हैं.

2.2. इसी तरह बहुत सीमित संख्या में कुछ संज्ञा शब्दों में भी प्रतिध्वनित शब्द रचना मिलती है. *भीड़भाड़*, *छेड़छाड़*, *छूतछात*, *टीमटाम*, *धूमधाम* इसके कुछ उदाहरण हैं. इनमें 'छूत', 'भीड़' मूलतः स्त्रीलिंग शब्द हैं. 'छेड़' धातु रूप में होने के कारण स्त्रीलिंग है (देखें **धातु रूप में संज्ञा शब्द**). प्रायः ये संज्ञा शब्द बिना हाइफ़न के एक साथ लिखे जाते हैं. अर्थ की दृष्टि से व्युत्पन्न (प्रथम तीन) शब्दों में विशेष अर्थगत अंतर नहीं है. 'टीम, धूम' ध्वन्यात्मक शब्द के खंड होने के कारण कुल अर्थ प्रतिध्वनित रचना से ही स्पष्ट होता है.

बोलबाला पुल्लिग शब्द है और संभवतः *!बोल-बाल* से व्युत्पन्न है. आकारांत होने के कारण यह पुल्लिग है.

2.3. क्रियाविशेषण या अव्यय शब्दों में प्रतिध्वनि रचना के उदाहरण नहीं मिलते. अगर हम *सुनसान* और *चुपचाप* को भी प्रतिध्वनिमूलक रचना मान लें, तो हमें **व स व** के रूप में ह्रस्व स्वर को भी स्थान देना होगा; लेकिन क्रिया, संज्ञा, विशेषण कहीं भी प्रतिध्वनिमूलक रचना में ह्रस्व स्वरों के शब्दों का प्रतिध्वनि शब्द नहीं मिलता.

3. प्रतिध्वनित क्रिया रूपों से संज्ञा शब्द व्युत्पन्न होते हैं. इन शब्दों की रचना में एक में /आ/ है, दूसरे में /ई, ऊ/ है. *खींचा-खाँची*, *काटा-कूटी*,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कूटी, बूँदा-बाँदी (? <बूंदना, या संज्ञा <बूँद). ऐसे शब्दों की संख्या और भी सीमित है (शायद इतने ही ?). देखें ऊपर 1

4. यहाँ हम एक भिन्न प्रकार के प्रतिध्वनिमूलक शब्दों के बारे में देखेंगे. ये शब्द मूल शब्द के पहले व्यंजन की जगह /व/ के प्रयोग से बनते हैं और मूल शब्द तथा प्रतिध्वनित शब्द मिल कर संयुक्त शब्द बनते हैं. मूल शब्द–*खाना*, प्रतिध्वनिमूलक शब्द–*खाना-वाना*.

4.1. अर्थ की दृष्टि से संयुक्त शब्द का दूसरा खंड अपना अलग अस्तित्व नहीं रखता. *चाय-वाय* का अर्थ है 'चाय' या इस तरह की अन्य कोई 'चीज़'. इस संदर्भ में मित्रों का परिहास याद आता है. एक पूछता है *चाय-वाय पिओगे ?*, दूसरा कहता है *चाय* छोड़ो, *वाय* लाओ. उसका आशय है चाय नहीं, खाने की चीज़ें हों, तो ले आओ.

इस संयुक्त शब्द की आवश्यकता कहे गये शब्द के संदर्भ में अनिश्चय तथा अनिर्णय के कारण है. पैर में कुछ लग गया है, मालूम नहीं है, तभी व्यक्ति कहेगा *कील-वील लग गयी है*. निश्चित मालूम होगा तो कहेगा *कील लग गयी है*. 'चाय-वाय' के लिए पूछने वाला चाय या अन्य कोई पेय देने को तैयार है. अगर विकल्प सीमित हो, तो सिर्फ़ कहेगा *क्या पियोगे ? चाय या काफ़ी ?* जिन वाक्यों में निश्चयात्मक सूचना देते हैं, वहाँ यह प्रयोग नहीं मिलता. *मेरा लड़का पढ़ा है* (*पढ़ा-वढ़ा है). लेकिन ऐसी उक्ति का प्रतिरोध करते हुए कहा जाए (*पढ़ा-वढ़ा नहीं है*) या उक्ति से पहले ही संदेह से प्रश्न किया जाए (*कुछ पढ़ा-वढ़ा है ? उत्तर–हाँ, दस तक पढ़ा है*), तो इसका प्रयोग देख सकते हैं.

ऐसा नहीं कि प्रतिध्वनित शब्द हमेशा एक ही तरह का अनिश्चत अर्थ देता हो. *तुम्हें कोई काम नहीं है ?* कहने वाला *तुम्हें कोई काम-वाम नहीं है ?* भी कह सकता है. जब कहते हैं *वह अंदर है, किताब-विताब पढ़ रहा है*, इसका तात्पर्य यह नहीं कि 'विताब' किताब से अन्य किसी पाठ्य सामग्री की ओर ही संकेत करे. वह अन्य काम में भी व्यस्त हो सकता है. यहाँ तात्पर्य 'काम' तथा 'किताब' के बारे में अनिश्चय तथा उस संबंध में अनुमान है. निर्णय की स्थिति में ये प्रयोग नहीं होते–**वह एक ज़रूरी काम-वाम कर रहा है*. **वे एक किताब-विताब पढ़ रहे हैं*.

4.2. ये वाक्य प्रस्तावक या प्रथम वक्ता के संदर्भ में हैं. ये वक्ता की तरफ़ से बोले गये वाक्य हैं. कभी प्रतिवक्ता भी विशिष्ट अर्थ में कहे गये अर्थ को अनिश्चित अर्थ में ले सकता है.

(अ-) *यह साड़ी बहुत अच्छी है.*

(आ-) *अच्छी-वच्छी कुछ नहीं.*

(अ-) *चलो, कहीं कुछ पियें*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(आ-) *पीना-वीना छोड़ो, पहले काम पूरा कर लें.*
प्रतिवक्तव्य में सभी शब्द इस तरह प्रतिध्वनित हो सकते हैं.

4.3. शब्द प्रयोग की दृष्टि से, सिद्धांततः सभी शब्द प्रतिध्वनित हो सकते हैं. *पानी-वानी, खाना-वाना, अच्छा-वच्छा, जल्दी-वल्दी.* प्रयोग-विरलता के कारण कुछ शब्द प्रतिध्वनित न होते हों, इसकी संभावना है.

4.4. शब्द रचना की दृष्टि से निम्नलिखित नियम मिलते हैं :

(अ) **(व) स** · · · → व **स** · · ·

घर-वर, आ-वा, पानी-वानी, अच्छा-वच्छा

(आ) (i) **व व स** · · · → व **व स**

प्यार-व्यार, प्रेम-व्रेम, प्लान-व्लान, ड्रामा-व्रामा

(यहाँ दूसरा व्यंजन स्पर्श नहीं होना चाहिए क्योंकि व+स्पर्श का गुच्छ नहीं बनता.)

(ii) **व व स** · · · → व **स** · · · (यहाँ द्वितीय **व** स्पर्श है)

स्थान-वान, स्कीम-वीम, स्तर-वर, स्पैनर-वैनर, स्नान-वान

जहाँ /व/ ही व्यंजन हो :

(इ) व **स** · · · → **स** · · ·

वार-आर, वन-अन, वैर-ऐर

(ई) **व** व **स** · · → (व)**स** · · ·

स्वाद-(व)आद, ख़्वाब-(व)आब, ट्वीड-(व)ईड, द्वेष-(व)एष

जहाँ स्वर पश्च स्वर हो :

(उ) **व स** · · · → **स** · · ·

पुस्तक-उस्तक, बूँद-ऊँद, पूँजी-ऊँजी, दूध-ऊध, खोला-ओला

(ऊ) **व व स** · · · → **स** · · ·

स्कूल-ऊल, स्टोर-ओर (?वोर)

ऊपर दिये गये नियम सामान्य मानक, उच्चरित भाषा के आधार पर दिये गये हैं. यह उल्लेखनीय है कि यह मानक हिंदी की बोलियों से भिन्न मानक रूप है, जिसका पुट हैदराबाद जैसे दूर के अंचलों में भी देखा जा सकता है. हिंदी की बोलियों में संस्कारित शब्दों के अभाव में *स्थान, स्कीम, स्कूल* आदि शब्द आदि स्वर के साथ उच्चरित होते हैं (*इस्थान/अस्थान* आदि). इस कारण प्रतिध्वनि-मूलक शब्द भी प्रारंभिक स्वर के अनुरूप होगा. पश्चिम की बोलियों में प्रतिध्वनित शब्द में अ/व/उ/ओ का अधिक प्रयोग देख सकते हैं (स्नान–*वस्नान*, स्कीम–*उस्कीम*, स्पैनर–*ओस्पैनर*, स्कूल–*उस्कूल*, स्टोर–*उस्टोर*) तथा पूरब की बोली बोलने वाले इनमें प्रायः इ/वि का प्रयोग करते हैं (स्कीम–*विस्कीम*, स्नान–*इस्नान*, स्कूल–*विस्कूल/इस्कूल*, स्टोर–*इस्टोर*).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4.5. पंजाबी आदि भाषाओं में हिंदी से भिन्न प्रतिध्वनित रचना की व्यवस्था दिखायी पड़ती है. पंजाबी में *चाय-चूय, पाणी-शाणी* आदि शब्द मिलते हैं. हिंदी में भी ऊपर के नियमों के अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाएँ भी हैं, जो क्षेत्रीय हैं. ऐसे कुछ शब्द हैं—*रोटी-सोटी, चाय-शाय*. इन शब्दों में प्रतिध्वनित शब्द के आदि में संघर्षी व्यंजन आते हैं. ऊपर के (ई) के शब्दों में जिनमें आदि /व/ आता है, /स/ की प्रतिध्वनित रचना अधिक संभाव्य है. *वार-सार, वैर-सैर*.

प्रतिबिंबित शब्द हमने **ध्वन्यात्मक शब्द** में ध्वनियों की पुनरावृत्ति से बनने वाले शब्दों की रचना के बारे में देखा, **प्रतिध्वनिमूलक शब्द** में ऐसे संयुक्त शब्दों की रचना के बारे में देखा, जिनमें पहला शब्द सार्थक होता है और दूसरा शब्द स्वनिक रचना में पहले की प्रतिध्वनि जैसा है. ध्वन्यात्मक शब्दों की रचना ध्वनि अनुरूपता पर आधारित होने के कारण उक्त प्रकरण में पूर्ण पुनरुक्त शब्दों का ही विश्लेषण हो पाया. लेकिन ऐसे कई शब्द हैं, जिनमें एक ओर ध्वन्यात्मकता भी दिखायी पड़ती है, दूसरी ओर कहीं-कहीं सार्थक शब्द खंड भी पहचाने जा सकते हैं. इन्हीं शब्दों को हम इस प्रकरण में देख रहे हैं. यहाँ इन शब्दों की विशेषताओं के बारे में जान लें.

1. इनमें कई शब्द रचना तथा अर्थ की दृष्टि से ध्वन्यात्मक शब्दों के जैसे हैं और ध्वनि-अनुरूप अर्थ ही प्रकट करते हैं. इनकी मूल रचना (**व**^{1} **स व**^{2})+(**व**^{3} **स व**^{2}) मान सकते हैं, जिससे अन्य शब्द व्युत्पन्न होते हैं. *झिलमिलाना, छटपटाना, सकपकाना, हिचकिचाना, तड़फड़ाना* (<तड़पना+फड़कना?), **खटखट, घुसफुस** ऐसे कुछ उदाहरण **हैं**.

2. ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि दोनों खंड केवल पहले व्यंजन को छोड़-कर शेष सभी दृष्टियों से समान हैं, जैसे दर्पण के अंदर दिखायी पड़ने वाला प्रतिबिंब दायीं-बायीं दिशा के अंतर के अलावा शेष सभी दृष्टियों से मूल वस्तु के समान होता है. इसी कारण मैं इन शब्दों की रचना में दर्पण-प्रतिबिंब की कल्पना कर रहा हूँ और सरलता की दृष्टि से प्रतिबिंबित शब्द कह रहा हूँ.

3. ध्वन्यात्मक शब्दों में, जहाँ पुनरुक्ति है, शब्द की रचना सुनिश्चित है, (**व स**) तथा (**व स व**). लेकिन प्रतिबिंबित शब्दों की रचना में शब्द के स्वनिमिक रूप, लंबाई आदि महत्त्वपूर्ण नहीं हैं. हर स्वनिमिक स्वरूप का खंड पहले व्यंजन को बदल कर प्रतिबिंबित होता है.

4. जो शब्द प्रतिबिंबित लगते हैं, लेकिन दर्पण-प्रतिबिंब नहीं बनते, उनकी रचना तथा व्युत्पत्ति को देखें, तो पाएँगे कि वे बहुधा दो सार्थक शब्दों से बने संयुक्त शब्द हैं. जैसे *लूट-पाट, मेल-जोल, हृष्ट-पुष्ट, हल्ला-गुल्ला, बोल-चाल*. कहने का का तात्पर्य है कि प्रतिबिंबित शब्द की पहचान के लिए शब्द का प्रतिबिंबित होना अनिवार्य है. कुछ ध्वनि-अनुरूप प्रतिबिंबित शब्द भी वास्तव में संयुक्त शब्द होते

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं, जैसे *बन-ठन, रुंड-मुंड, लालन-पालन* आदि.

5. प्रतिध्वनिमूलक शब्दों की तरह प्रतिबिंबित शब्दों में भी कई जगह सार्थक शब्द देखे जा सकते हैं. लेकिन प्रतिध्वनिमूलक शब्दों में पहला शब्द ही सार्थक होता है, जबकि इन शब्दों में कहीं पहला सार्थक होता है (*गपशप, उलट-पुलट, आन-बान, सजधज, लोट-पोट*), कहीं दूसरा (*अता-पता, आमने-सामने*). अधिकतर शब्द दो अर्थरहित शब्द खंडों से बने दीखते हैं.

6. वर्तनी की दृष्टि से दो, दो वर्णों से बड़े शब्द अलग-अलग या हाइफ़न के साथ लिखे जाते हैं (*अगड़म बगड़म, लल्लो चप्पो, अड़ोस-पड़ोस*), शेष ध्वनि-अनुरूप शब्द जोड़ कर लिखे जाते हैं. थोड़े-से शब्दों को हाइफ़न से लिखने का भी प्रयोग है.

आगे प्रतिबिंबित शब्दों की तालिका दी जा रही है :

स्वर \ व्यंजन	क वर्ग	प वर्ग	स/श[1]
अ	अचकचा, अल्लम गल्लम	अदल बदल, अटपटा, अड़ोस-पड़ोस, अगल बगल, अस्त-पस्त, अता-पता, अंडबंड, अगड़म बगड़म	अनाप सनाप, अंटसंट, अटरम सटरम, अबेर सबेर
आ		आरपार, आसपास, आँय-बाँय, आनन फानन, आती-पाती, आनबान	आमने-सामने
इ	इर्द-गिर्द		
उ		उथल-पुथल, उलट-पुलट	
ए		एँच पेंच	
ओ		ओतप्रोत	
औ		औने-पौने	

च वर्ग तथा त वर्ग के साथ अधिक अंतर के साथ बहुत थोड़े-से शब्द मिलते हैं— *आवा जाही (<आ-जा), अफ़रा तफ़री, आपा धापी*

[1]बोलीगत भेद के कारण एक ही शब्द में कहीं /स/ मिलता है, कहीं /श/. इसी कारण इन्हें एक ही साथ रखा गया है. सभी /स/ युक्त रूपों को /श/ युक्त विकल्प मे भी देखें.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	स/श	ह
क वर्ग		गुपचुप			किटपिट, किसमिस, कसमसाना कचर पचर, कुलबुला, खलबली खटपट, खुसर फुसर, खटर पटर गड़बड़, घुसफुस, घिचपिच	गपशप	
च वर्ग					चहल पहल, चटपटा, चुलबुला चरमरा, चररमरर, ? सचमुच छटपटा, छुटपुट, जगमग झटपट, झुटपुटा, झिलमिल झूठमूठ		छरहरा
ट वर्ग					टुनटुन, टुन्नू मुन्नू, ठाट बाट डगमग, ढुलमुल		
त वर्ग				? तहस नहस	तड़फड़ा, तितर बितर तिलमिला, धकपका		

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	स/श	ह
प वर्ग							
र		रिमझिम रुनझुन					
ल	लड़खड़ा	लल्लो चप्पो लपझप लुकझुक			लदर पदर, लस्टम पस्टम, लटपट लोटपोट, लथपथ, ? लोग-बाग		
स				सजधज	सकपका, सटपटा~सिटपिटा सिट्टी पिट्टी, सटर पटर साँय बाँय, सेंत मेंत		
ह	हट्टा कट्टा हिचकिचा(ना)			हवर दवर~ हवड़ दवड़	हड़बड़, हकबका(ना) हक्का बक्का, हिचर मिचर		

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

7. ऊपर बताये शब्दों के अलावा कुछ और शब्द मिलते हैं, जो प्रतिबिंबित नहीं हैं. लेकिन इन्हें और कहीं रखना भी मुश्किल है. विद्वानों ने *ऊटपटाँग* के लिए 'ऊँट पर टाँग' आदि रोचक व्युत्पत्ति (?) दी है. मैं यहाँ ऐसा साहस नहीं करूँगा, बल्कि *ऊँट पटाँग, ऊल जलूल, ऊबड़ खाबड़* के संदर्भ में इतना ही कहूँगा कि तीनों में प्रतिबिंबन में विसंगति है और तीनों शब्द /ऊ/ से शुरू होते हैं. आशा है विज्ञ विद्वान 'ऊँट को पटा कर ले जाना' आदि व्युत्पत्ति न दे कर समस्या को सुलझाने का कष्ट करेंगे.

प्रतिशत यह एक पारिभाषिक शब्द है और इसे *प्रति शत* लिखना अच्छा नहीं, क्योंकि यहाँ *प्रति* अलग विशेषण शब्द नहीं है.

प्रथमाक्षरिक शब्द (Acronym) 1. यह शब्द की रचना की नहीं, बल्कि एक से अधिक शब्दों के संक्षिप्तीकरण की विधि है, जहाँ हर शब्द के प्रथम अक्षर को ले कर एक नया शब्द बना लिया जाता है. यह प्रक्रिया प्रायः लंबे व्यक्तिवाचक शब्दों पर ही लागू होती है, लेकिन **व्यंग्य, अव्यक्त कथन, गुप्त भाषा** आदि में भी लोग अपने अभीष्ट वाक्य को अपने मित्रों पर प्रकट करने और कुछ लोगों से छिपाने के उद्देश्य से संक्षिप्त कर सकेंगे. एक कल्पित उदाहरण लीजिए *होहोजा* (होशियार हो जाओ. पुलिस वाला आ रहा है).

1.1. संस्थाओं के नाम, परियोजनाओं के नाम, वैज्ञानिक आविष्कार या उपकरण के नाम आदि का प्रथमाक्षरिक शब्द बन सकता है. यहाँ दो तरह की संक्षिप्तियों में हमें अंतर करने की आवश्यकता है. *रा०उ०प०* (राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद) संक्षिप्ति है, लेकिन शब्द नहीं है. ये तीनों वर्ण अलग-अलग, अवरोध के साथ बोले जाते हैं. लेकिन *राउप* (उच्चारण /रा+उप/) प्रथमाक्षरिक शब्द है. 'प्रश' (प्रथमाक्षरिक शब्द) बनाने की प्रवृत्ति अंग्रेज़ी में बहुत अधिक है. लगता है कि उसमें कई नामकरण प्रश बनाने की सुविधा को ध्यान में रख कर ही किये जाते हैं. हिंदी में *भालोद* (भारतीय लोक दल), *भाक्रांद* (भारतीय क्रांति दल), *संसोपा* (संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी), *नभाटा* (नवभारत टाइम्स) आदि शब्द अपने समय में बहुत प्रचलित रहे हैं. प्रश बनाने की शुरुआत अक्सर पत्रकार या लेखक करते हैं. हमने हिंदी में अंग्रेज़ी के कई प्रश शब्द के रूप में लिये हैं. अब हिंदी में *यूनेस्को, यूनिसेफ़, नैटो, सीटो* आदि शब्द ही हैं.

1.2. हिंदी में यह प्रवृत्ति पत्रकारिता तथा शीघ्रता से शब्द बोलने की आवश्यकता के कारण ज़ोर पकड़ रही है. कभी-कभी हमें व्याख्यानों या लेखन में काशी नागरी प्रचारिणी सभा (कानप्रस), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (दभाहिप्रस), हिंदी साहित्य सम्मेलन (हिसास) आदि लंबे नाम कितनी बार बोलना पड़ जाता है. लेकिन इनके भी प्रथमाक्षरिक शब्द नहीं बने हैं. प्रश न बनने का एक कारण यह है कि अब भी प्रमुख संस्थाएँ अपना नामकरण अंग्रेज़ी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में करती हैं और अंग्रेज़ी अक्षरों में प्रश बना लेती हैं, जैसे भेल (BHEL), बेल (BEL), इम्पा (IMPA), इकार (ICAR), इक्रिसैट (ICRISAT) आदि. एक संस्था ने अपना नाम हिंदी में रखा और हिंदी के अनुसार प्रश बनाया, जो हैदराबाद जैसे अहिंदी भाषी प्रदेश में भी जनप्रिय हो गया है. यह है *मिधानि* (मिश्र धातु निगम).

2. प्रश बनाने की उक्त विधि से एक रोचक भाषा-खेल बनता है, जिसे प्रथमाक्षरी कहा जा सकता है. इस खेल में चार-पाँच शब्द लिखे जाते हैं, जिन के प्रथम अक्षरों को मिला कर एक सार्थक शब्द बनाया जाता है. पत्र-पत्रिकाओं में यह खेल अक्सर आता है.

तस्वीरों के नीचे शब्द लिखो. चारों शब्दों को इस क्रम से लिखो कि शब्द के पहले अक्षरों से भारत के एक बड़े शहर का नाम आ जाए.

प्रथा यह शब्द रिवाज या परंपरा के अर्थ में है. दहेज *की प्रथा देश के लिए अभिशाप* है. इसे प्रायः लोग गलती से **पृथा* लिखते हैं.

प्रयोग 1. कामताप्रसाद गुरु (1957 संस्करण) ने वाक्यों में अन्विति दिखाने के लिए तीन प्रयोगों की चर्चा की है—कर्तरि प्रयोग, कर्मणि प्रयोग और भावे प्रयोग. वाच्य का अर्थ वे वही लेते हैं, जो अंग्रेज़ी voice है और जिस अर्थ में इस ग्रंथ में 'वाच्य' का प्रयोग किया गया है. इस शब्द के इतिहास में गये बिना यह उल्लेख करना पर्याप्त होगा कि संस्कृत में आधुनिक वाच्य के अर्थ में 'प्रयोग' चलता है, 'वाच्य' नहीं. वहाँ प्रयोग का तात्पर्य स्पष्ट है—कर्तरि प्रयोग में क्रिया कर्ता के अनुसार बदलती है, कर्मणि प्रयोग में कर्म के अनुसार बदलती है और भावे प्रयोग में क्रिया का रूप अविकारी रहता है. कर्मणि तथा भावे प्रयोगों में कर्ता तृतीया विभक्ति में आता है. कर्मणि प्रयोग में कृदंत रचना भी मिलती है (*रामेण ग्रंथः पठितः/पुस्तकं पठितम्/कथा पठिता*) और परस्मैपद में तिङन्त रचना भी, जो वास्तव में वाच्य है (*रामेण फलं भक्ष्यते/फलानि भक्ष्यंते*). भावे प्रयोग केवल वाच्य है, अविकारी है. *तेन स्थीयते* 'वह रहता है' (शाब्दिक अर्थ 'उससे रहा जाता है'). हिंदी में कर्ता-कर्म-क्रिया की **अन्विति** जटिल है. इसके दो कारण हैं. कर्ता में तीन प्रकार की तिर्यक संज्ञाएँ तथा कर्म में 'को' का प्रयोग. शायद इस जटिलता को सुलझाने के लिए गुरु ने वाच्य, प्रयोग दोनों को अपनाया. उनके अनुसार वाच्य क्रियाधातु+जा की रचना है. फिर यह स्पष्ट नहीं हुआ कि उन्होंने कर्म तथा भाव वाच्य क्यों गिनाये जबकि रचना एक ही है और अन्विति के लिए 'प्रयोग' शब्द है ही. उनके अनुसार प्रयोग क्रिया के साथ अन्विति के लिए है. फिर कर्तरि क्यों, जबकि कर्तृवाच्य यह कार्य कर रहा है. वाच्य तथा प्रयोग के संयोग से छह वाक्य प्रकार बनते हैं :

कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग *मैं जगता हूँ आदि*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्तृवाच्य, कर्मणि प्रयोग	*ने* के वाक्य (कर्म में को नहीं)
कर्मवाच्य, कर्मणि प्रयोग	कर्मयुक्त वाच्य (कर्म में को नहीं)
कर्तृवाच्य, भावे प्रयोग	कर्म रहित *ने* के वाक्य (*नहाया, छींका*)
कर्मवाच्य, भावे प्रयोग	*ने* के वाक्य, कर्म में *को*
भाव वाच्य, भावे प्रयोग	वाच्य, जिसमें कर्म नहीं, या कर्म में को है

इस दुहरी व्यवस्था के बाद भी गुरु समस्या को सुलझा नहीं पाये, क्योंकि कर्ता+को वाले वाक्यों की तो चर्चा भी नहीं है. फिर 'वाच्य' का सिद्धांत भी स्पष्ट नहीं हो पाया—न यह पारंपरिक है, न आधुनिक और न वैज्ञानिक. इस विश्लेषण का अकेला आधार क्रिया की अन्विति ही है. गुरु के बाद के उल्लेखनीय वैयाकरण वाजपेयी (1957) परंपरा से मोह के कारण प्रयोग और वाच्य में अंतर नहीं करते. लेकिन रोष तथा आग्रह से पूर्ण और कुशल तर्कों के बाद भी वे अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पाते. आप दोनों शब्दों का इस प्रकार बदल-बदल कर प्रयोग करते हैं कि कभी लगता है, दोनों में कोई अंतर करना चाहते हों. लेकिन हिंदी के समस्त वाक्यों का उनसे तीन वर्गों में विभाजन हुआ नहीं और उनके निम्नलिखित उदाहरणों में अवैज्ञानिकता झलकती है. जैसे *पिया करते हैं* में *पिया* भाववाच्य और *करते हैं* कर्तृवाच्य. *जाना चाहिए* भाववाच्य. *जाइए* भाववाच्य, *जाओ* कर्तृवाच्य. वाजपेयी तथा उनके हितैषियों को ख़राब लगेगा. अतः चर्चा समाप्त कर रहा हूँ. लेकिन वाजपेयी जी ने वाच्य का जितना भ्रमात्मक विश्लेषण किया है, उसकी उनसे उम्मीद नहीं की जा सकती थी.

कुल मिला कर कहना चाहूँगा कि हिंदी के विश्लेषण में हमें वाच्य से भिन्न 'प्रयोग' नामक प्रत्यय की आवश्यकता नहीं है. वाच्य (तथा मिथ्या वाच्य) को अंग्रेज़ी के 'वायस' के अर्थ में ही लेना उचित है, क्योंकि यह वाक्य रूपांतरण का विधान है और इससे रूपांतरण की एक समस्या सुलझती है. अब तक व्याकरण ग्रंथों में 'प्रयोग' नाम से बहुत भ्रम फैलाया जा चुका है. यह जितनी जल्दी बंद हो, अहिंदी भाषियों के लिए अच्छा है.

2. *प्रयोग* का दूसरा अर्थ है experiment. इसी अर्थ में *प्रयोगशाला, प्रयोगाधीन, अपने ऊपर प्रयोग करना* आदि प्रयोग चलते हैं.

3. *प्रयोग* का तीसरा अर्थ है 'इस्तेमाल'. इस अर्थ में *प्रयोग विधि, प्रयोग में आना, प्रयोग में लाना* आदि कुछ प्रयोग हैं. यह शब्द अभी 'इस्तेमाल' के प्रयोग के सारे संदर्भों में नहीं आता. *आप कौन-सा टूथ पेस्ट इस्तेमाल करते हैं* (!प्रयोग करते हैं). *मशीनों का सही इस्तेमाल* (!प्रयोग). जिस तरह से हम जीवन में चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं, भाषा में भी हम स्वन, शब्द, मुहावरा आदि का इस्तेमाल या प्रयोग करते हैं. *शब्द प्रयोग, संज्ञा का प्रयोग* आदि इसी अर्थ में आते हैं. अंग्रेज़ी में हम इन्हें use कहते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. *प्रयोग* का चौथा अर्थ भाषा के उन तत्त्वों अर्थात प्रयोगों के प्रचलन से है. *हिंदी में इसका प्रयोग नहीं है* का अर्थ है शब्द का यह प्रयोग हिंदी में प्रचलित नहीं है. संस्कृत के वैयाकरणों ने भाषा के प्रयोग के महत्त्व को पहचाना और प्रयोग के आधार पर ही प्रयोगों की शुद्धता आदि का विश्लेषण किया. किसी शब्द के किसी अर्थ में प्रयोग को गलत प्रयोग कहने का तात्पर्य है कि वह शब्द प्रचलन में नहीं है. इस अर्थ में प्रयोग usage कहलाता है. अंग्रेज़ी के प्रयोग के ग्रंथ (books on usage) कई लिखे गये हैं, जो वर्तनी, शब्द, वाक्य आदि की दृष्टि से सही प्रयोग का विश्लेषण करते हैं. किसी-किसी पुस्तक में use and usage की भी बात की जाती है. इन दोनों शब्दों के लिए हिंदी में एक ही शब्द (या प्रयोग) है. इसी कारण, प्रयोग शब्द की इस प्रयोगगत विशेषता को दिखाने के लिए ही इस पुस्तक का नामकरण **प्रयोग और प्रयोग** कर रहा हूँ.

प्रविष्टि तकनीकी भाषा में यह *प्रविष्ट* से भिन्न अर्थ प्रकट करता है. लेखा आदि पुस्तिकाओं में जो विषय नंबरवार दर्ज किये जाते हैं, उन्हें *प्रविष्टि* कहते हैं. इस अर्थ में यह गणनीय संज्ञा है और *प्रविष्टियाँ* इसका बहुवचन है. *इस भुगतान की दो जगह प्रविष्टि होगी. सारी प्रविष्टियाँ गलत हैं. प्रविष्टि* का पर्याय है इंदराज (पु०). यह 'दर्ज' से बना शब्द है.

प्रवेश 1. इसके दो प्रमुख अर्थ हैं. किसी स्थान के अंदर जाना, जैसे *उन्होंने कमरे में प्रवेश किया, प्रवेश द्वार*; किसी संस्था में सदस्य के रूप में शामिल होना, जैसे *बच्चे को पहली कक्षा में प्रवेश मिला, प्रवेश शुल्क*. इस अर्थ में *दाखिला* इसका पर्याय है.

2. *प्रवेश करना* का अकर्मक रूप *प्रविष्ट होना* है. *उसने कमरे में प्रवेश किया* और *वह कमरे में प्रविष्ट हुआ* पर्याय हैं. 'प्रविष्ट होना' अधिक साहित्यिक प्रयोग है.

3. **प्रविष्टि** दोनों अर्थों से भिन्न है.

प्रारंभक शब्द (Introductory or preliminary words) 1. कुछ वाक्यों के शुरू में कुछ लोग ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जिनका वाक्य के कथन से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता, बल्कि इन शब्दों का प्रयोजन वाक्य शुरू करने में सहायता करना होता है. ऐसे कुछ शब्द हैं *तो, हाँ तो, फिर, अच्छा, ऐसा है कि, बात यह है, अच्छा देखो, सुना*. इन शब्दों का चयन व्यक्तिगत रुचि और आदत के अनुरूप होता है. कोई 'फिर' का प्रयोग अधिक करता है, कोई 'अच्छा' का. प्रारंभक शब्द का वास्तविक प्रयोजन विचार क्रम (जो अधिक तीव्र गति से चलता है) और अभिव्यक्ति के बीच की दूरी को कम करना होता है. इसी कारण व्यक्ति अपने भाषण में बराबर कई वाक्यों से पहले ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं.

2. प्रारंभक तकिया कलाम से भिन्न प्रयोग है. तकिया कलाम (चाहे वे **गाली**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के शब्द हों या प्रार्थना के या व्यक्ति की रुचि का कोई शब्द) वाक्य के भीतर वाक्य की पूर्ति के लिए आते हैं. अर्थ की दृष्टि से ये निरर्थक होते हैं. इसी कारण फ़ाउलर इन्हें अर्थहीन शब्द कहते हैं. वैसे कुछ प्रारंभक शब्द भी (जैसे *अच्छा*) तकिया कलाम के रूप में आते हैं. ऐसे कुछ प्रचलित तकिया कलाम हैं–*साला/साली, ससुरा/ससुरी, न, कंबख़्त, हाँ, क्या कहने, कसम से, मेरी क़सम, मायने, मतलब, यार.*

3. बच्चों में इन दोनों प्रकार की विशेषताओं के अतिरिक्त आश्रय-शब्द के रूप में दुहराने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है. यह प्रवृत्ति कई बड़े लोगों में भी दिखायी पड़ती है, जहाँ व्यक्ति सही शब्द की खोज या सही वाक्य रचना के निर्णय में तल्लीन रहता है. जैसे *वह मेरे पास आया. आया न? तो मैंने पूछा कि*···. ऐसी उक्तियों में *हाँ, मैं क्या कह रहा था, हाँ, मैं कह रहा था न, सच्ची* आदि आश्रय-शब्द भी प्रभाव के लिए जोड़ लिये जाते हैं.

प्रेरणार्थक क्रिया दक्षिण की हिंदी की पाठ्यपुस्तकों के शुरू के पाठों में *राम घर जाता है, सीता खाना खाती है* जैसे वाक्य मिलते हैं. अनंत काल से बच्चे इन्हीं पुस्तकों से पढ़ते आ रहे हैं, शायद कुछ ठीक से सीख भी लेते हैं. लेकिन मैं इन वाक्यों को गलत कहूँगा, क्योंकि प्रयोग के स्तर पर ये निरर्थक हैं, भले वाक्य संरचना से कोई धुँधला अर्थ निकल आए. *राम खाना खाता है* इस कारण निरर्थक है कि यह कोई निश्चित अर्थ नहीं देता, कोई नयी सूचना नहीं देता. संसार में हर व्यक्ति खाना खाता है, दिन में दो बार खाता है. संदर्भ के अनुसार जब तक इस वाक्य में कोई नयी सूचना न हो (*राम सवेरे खाना खाता है. राम होटल में खाना खाता है*), तब तक यह 'वाक्य' नहीं है. इसी संदर्भ में कहना चाहूँगा कि *राम से रावण मारा गया* (देखें **वाच्य**), *माँ दाई से बच्चे को दूध पिलवाती है* आदि संरचना की दृष्टि से 'शुद्ध', लेकिन प्रयोग की दृष्टि से गलत वाक्य हैं. ये वैयाकरणों द्वारा गढ़े हुए कृत्रिम उदाहरण हैं.

1. हिंदी में प्रेरणार्थक क्रियाओं का विश्लेषण रोचक भी है, जटिल भी. वैयाकरणों की ओर से प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूप रचना पर काफ़ी प्रकाश डाला गया है. लेकिन यहाँ भी विद्वानों के अपने मन से गढ़े, अपरीक्षित, अप्रचलित तथा कृत्रिम प्रयोगों की भरमार दिखायी पड़ती है. यमुना काचरू (1965) *घुमवाना, चुकवाना, छिपवाना, ठहरवाना, डुबवाना, फैलवाना, मिटवाना, हँसवाना, रुलवाना, चुमवाना, निगलवाना, सनवाना, सिखवाना* जैसे प्रयोग (!) गिनाती हैं. लक्ष्मीबाई (1973) उक्त कुछ शब्दों के साथ *अड़वाना, लुटवाना, हरवाना, भगवाना, भिगवाना* जैसे अन्य शब्द जोड़ती हैं. वास्तव में उक्त लेखिकाओं ने अपनी सामग्री गुरु तथा आर्येंद्र शर्मा से ली है और ये लेखक उल्लेख नहीं करते कि उन्होंने ये शब्द कहाँ से लिये. गुरु *समझवा; चमकवा, कहवा,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिठवा तथा शर्मा *खौलवा, सिखवा, फैलवा* आदि शब्द देते हैं. ताज्जुब होता है कि वैयाकरण कितने आराम से घर बैठे भाषा बना लेते हैं—चाहे वे परंपरात्मक वैयाकरण हों, चाहे वैज्ञानिक ढंग से काम करने वाले भाषावैज्ञानिक. और ये इन शब्दों के आधार पर व्याकरण के 'नियम' बना लेते हैं. भाषा को नियमों में बाँधने और नियम के लिए उदाहरण गढ़ने की यह प्रवृत्ति भाषा चिंतन के क्षेत्र के लिए बाधक सिद्ध हुई है.

वाजपेयी जैसे मौलिक चिंतक भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहे. पूर्ववर्ती वैयाकरणों के विश्लेषण का हवाला देते हुए वे *पवाना* (<पा), *खुआना* (<खो) आदि रूपों की निरर्थकता की चर्चा करते हैं और उल्लेख करते हैं कि कई क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते. लेकिन आपने भी *राम नौकर से लकड़ी फड़वाता है* जैसे वाक्य दिये हैं. मेरा यह कहने का उद्देश्य नहीं है कि हिंदी में *फड़वाना, ठहरवाना* जैसे रूप संभव नहीं हैं या गलत हैं. वास्तव में प्रेरणार्थक क्रियाओं के प्रयोग में मौलिकता तथा उत्पादकता की गुंजाइश है और हिंदी भाषी आवश्यकतानुसार नये प्रयोग गढ़ते हैं, नयी अभिव्यक्तियाँ लाते हैं. प्रेरणार्थक क्रियाओं के संदर्भ में हमें इस उत्पादकता को नियंत्रित करने तथा निर्दिष्ट करने वाले कारकों को समझने तथा प्रसंगानुसार प्रयोग की संभावनाओं पर विचार करने की आवश्यकता है.

हिंदी में प्रयोग के स्तर पर प्रेरणार्थक क्रियाओं पर अधिक काम नहीं हुआ है. *माँ नौकर से लड़के को आम खिलवाती है* जैसे वाक्य देखने में तर्कसंगत, स्वाभाविक प्रयोग लगते हैं, लेकिन सरसरी निगाह से दो-एक पुस्तकें देख जाने पर भी मुझे इस तरह का एक भी वाक्य नहीं मिला, न ही बोलचाल में ऐसा वाक्य सुनायी पड़ता है. इसका कारण यह है कि द्वितीय प्रेरणार्थक में प्रायः वास्तविक कर्ता का उल्लेख नहीं किया जाता. *अरे भाई, चाय-वाय पिलवाओ* में व्यक्ति यह स्पष्ट कर देना चाहता है कि श्रोता पिलाने का कारण बने; लेकिन उसे स्वयं उठ कर चाय बनानी पड़े, यह कष्ट वक्ता नहीं देना चाहता. लेकिन *?अपने नौकर से चाय पिलवाओ* का वाक्य स्वाभाविक नहीं है, क्योंकि कौन चाय बनाए (और पिलाए) यह वक्ता के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं है. इसी तरह *चाय पिलाओ* का यह आशय भी नहीं है कि श्रोता को चाय ख़ुद ही बना कर पिलानी है. वक्ता का तात्पर्य यही है कि चाय पिलाने का उपक्रम (नौकर को आदेश देना या ख़र्च वहन करना) श्रोता को करना है. इस तरह क्रियाओं का अर्थ प्रसंग से स्पष्ट होता है, क्रिया रूपों को खाँचों में बैठाकर उनके साथ अर्थ को बाँध देना व्यावहारिक नहीं है.

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाओं में हमेशा वास्तविक कर्ता का उल्लेख आवश्यक नहीं है. आगे के वाक्य देखिये—*मैं दस बजे यहाँ पहुँचा. सामान ठीक जगह पर लग-*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाया, *घर साफ़ कराया*, *चाय बनवायी/मँगायी और दोस्तों को चाय पीने बुलवाया*. इन वाक्यों में 'मैं' के इशारे पर सारे कार्य हुए, लेकिन कार्यों के वास्तविक कर्ता का कोई उल्लेख नहीं है. *माँ ने बच्चों को दूध पिलवाया* अपने में पर्याप्त है, चाहे दूध दाई ने पिलाया हो. अगर दाई का भी उल्लेख ज़रूरी हो, तो वाक्य का केंद्र (focus) बदल जाता है. *माँ के कहने पर दाई ने* . . . मैं तो यह कहूँगा कि द्वितीय प्रेरणार्थक में जब तक ज़रूरी न हो, वास्तविक कर्ता का उल्लेख नहीं होता और वास्तविक कर्ता का उल्लेख हो, तो वाक्य का क्रम भी बदल जाता है. कुछ वाक्य ऐसे भी हैं, जहाँ वास्तविक कर्ता का उल्लेख भी है और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप का प्रयोग नहीं हुआ है. *मैंने नौकर से कहकर बच्चों को बाहर भगाया/निकाला. उन्होंने मेरे द्वारा एक टेप रिकार्डर मँगाया था. मैंने दलाल की मार्फ़त अपनी सारी जायदाद बेच दी.*

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर मैं क्रियाओं को केवल तीन कृत्रिम तथा निश्चित कोटियों में (*मैंने खाया; उसने मुझे खिलाया; दादी ने उससे मुझे खिलवाया*) न बाँधकर उनके प्रयोग के आधार पर कर्ता के स्थान और महत्त्व की ओर संकेत करना चाहूँगा.

कर्ता–*मैंने खाया, मैं सोया.*

कर्ता जहाँ कर्म के व्यापार का कारण हो–

मैंने चाय पिलायी.

मैंने गोपाल को सिनेमा दिखाया.

मैंने बच्चों को स्वयं/बी० ए० तक पढ़ाया.

मैं तुम्हें चाय पिलाऊँगा.

कर्ता वास्तविक कर्ता नहीं, प्रेरक कर्ता है–

मैंने सामान लगवाया.

मैं तुम्हें चाय पिलाऊँगा.

वास्तविक कर्ता के साथ–

मैंने नौकर से चीनी मँगायी (!*मँगवायी*)

मैंने दलाल की मार्फ़त अपनी कार बेच दी. (**मैंने दलाल से अपनी कार बिकवा दी*)

प्रेरणार्थक तथा द्वितीय कर्ता अनिवार्य–

कई बच्चे अपने माँ-बाप से पाठ लिखवा लेते हैं, ख़ुद नहीं लिखते.

तुम किसी (डाक्टर) से यह सुई लगवा लो (**लगा लो*)

ख़ुद नहीं लिख सकते हो, तो किसी से लिखा/लिखवा लेना.

यह कपड़ा तुम नहीं काट सकते, किसी दर्जी से कटवा लो.

ध्यान दीजिए कि प्रथम कर्ता के निषेध में ही द्वितीय कर्ता का यहाँ उल्लेख

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है.

अनावश्यक वास्तविक कर्ता के साथ–

!माँ रोज़ दाई से बच्चे को दूध पिलवाती है.

**मैं रमेश से मोहन को किताब ख़रीदवाता हूँ.*

?पिता जी टीचर से बच्चे को हिंदी पढ़वाते हैं (~एक टीचर ··· पढ़ाती हैं, ~पिता जी घर पर टीचर रखकर बच्चे को पढ़ाते (पढ़वाते) हैं).

ऊपर के वाक्यों से स्पष्ट होगा कि कर्ता, वास्तविक कर्ता तथा द्वितीय प्रेरणार्थक युक्त वाक्य हिंदी में सबसे कम प्रचलित तथा प्रयोग की दृष्टि से अस्वाभाविक वाक्य हैं. लेकिन व्याकरण ग्रंथ *मैं पढ़ता हूँ–टीचर मुझे पढ़ाती हैं–पिता जी टीचर से मुझे पढ़वाते हैं* का क्रम सभी क्रियाओं पर लागू कर हिंदी भाषा का ही नहीं, लाखों अहिंदी भाषा भाषियों का अहित करते हैं. *मैंने नौकर से पुस्तक उठवायी* जैसे वाक्यों की निरर्थकता को हिंदी भाषी ही जानते हैं और वे ऐसे प्रयोगों को दूर करते हैं.

2. कई लेखकों ने प्रेरणार्थक रूप न बनने वाले धातुओं का उल्लेख किया है. *जाना, पुकारना, आना, जानना, पाना, मिलना, रुचना, चाहना, जँचना, सोचना, गँवाना, खोना* जैसे क्रिया रूपों के प्रेरणार्थक नहीं बनते. यह विश्लेषण सरसरी निगाह से क्रिया रूपों को देखने पर देखी गयी बात है, क्रियाओं की प्रेरणार्थकता के गहरे विश्लेषण पर आधारित सत्य नहीं.

श्रीवास्तव ने (तथा अन्य कुछ विद्वानों ने भी) प्रेरणार्थक तथा मूल क्रिया के अर्थगत संबंध को ढूँढ़ने का यत्न किया है. श्रीवास्तव का वर्गीकरण देखें.

मूल रूप		**व्युत्पन्न रूप**		
अकर्मक	**सकर्मक**	**अकर्मक**	**प्रेरणार्थक**	
			प्रत्यक्ष	**परोक्ष**
दौड़ना			दौड़ाना	दौड़वाना
	पीना		पिलाना	पिलवाना
	बनाना	बनना		बनवाना
	देखना	दिखना	दिखाना दिखलाना	दिखवाना दिखलवाना
	करना	होना	कराना करवाना	
उड़ना[1]			उड़ाना	उड़वाना
	उड़ाना	उड़ना[2]	उड़वाना	

1 'उड़ना' सजीव प्राणियों (चिड़िया आदि) के व्यापार के संदर्भ में है.

2 यहाँ 'उड़ना' निर्जीव वस्तुओं (पतंग) के संदर्भ में है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस विश्लेषण में अकर्मक तथा सकर्मक रूपों में भेद तथा सजीव और निर्जीव वस्तुओं के क्रिया व्यापार में अंतर को पहचानने का प्रयास किया गया है.

इसी तरह अन्य कई विद्वानों ने भी अपने-अपने ढंग से प्रेरणार्थक क्रिया के प्रयोग को विश्लेषित करने का यत्न किया है और प्रेरणार्थक रूपों की सिद्धि के संदर्भ में वाक्य रचना तथा अर्थ के प्रकार्य के आधार पर क्रियाओं का वर्गीकरण करने का यत्न किया है. लक्ष्मीबाई (1971) हिंदी की क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया रचना के संदर्भ में आठ वर्गों में विभाजित करती हैं. वर्ग के उल्लेख के सामने क्रिया जिस वाक्य में आती है, उस वाक्य के अनिवार्य घटकों का उल्लेख है.

(1) कर्ता+कर्म (मनुष्येतर)
  (अ) दोनों प्रेरणार्थक संभव हैं. *ओढ़, देख, पकड़, खा, पी, पहन*
  (आ) प्रेरणार्थक संभव नहीं. *सोच, सह, कमा, बटोर, थूक*

(2) कर्ता+स्रोत+कर्म (मनुष्येतर) प्रेरणार्थक रूप संभव हैं. *सुन, पढ़ (मैंने पिता जी से हिंदी पढ़ी), समझ, सीख*

(3) कर्ता+प्राप्तिकर्ता+कर्म (मनुष्येतर)
  (अ) यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती. *लौट, सौंप*
  (आ) पहली प्रेरणार्थक नहीं बनती. *दे, भेज, लिख, कह, बता*

(4) कर्ता+स्रोत+कर्म (मनुष्येतर)–यह वर्ग (2) के समान है. लेकिन यहाँ स्रोत और प्रेरणार्थक क्रिया का वास्तविक कर्ता दोनों भिन्न वाक्यांश हैं. *(मैंने नौकर से माँ से दस रुपये मँगवाये). ले, पूछ, माँग*

(5) कर्ता+कर्म (मानुष)–यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती. *डाँट, मार, सता, पुकार, फुसला*

(6) कर्ता (अकर्मक वाक्य)
  (अ) यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती. *आ, जा, रह*
  (आ) दोनों प्रेरणार्थक संभव हैं. *बैठ, हँस, सो, दौड़, लेट, कूद, जाग*

(7) अनुभवकर्ता+कर्म (मनुष्येतर)–यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती.
  (अ) *मिल, रुच, जँच*
  (आ) *पा, पहचान, जान, चाह*

(8) अकर्मक के विविध वर्ग–यहाँ प्रेरणार्थक के दोनों रूप मिलते हैं.
  (अ) कर्म (मनुष्येतर)–*मिट, सुलग, धुल, भर, ढँक, घिस, छप*
  (आ) अनुभवकर्ता या कर्म (मनुष्येतर)–*जल, घिर, छूट, डूब, भीग*
  (इ) कर्म (मनुष्येतर) या कर्ता–*घूम, चढ़, उठ.*

3. यहाँ मैं उठ के संदर्भ में प्रेरणार्थक क्रिया रचना को वाक्यों में देखना चाहूँगा. मनुष्य अपनी स्वःप्रेरणा से काम करता है और अशक्त होने की स्थिति में दूसरे

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस व्यापार में सहायता देते हैं. जड़ पदार्थों में स्व:प्रेरणा वाली बात नहीं है. तीनों स्थितियों के वाक्य देखिये–

स्व:प्रेरित	अशक्तता की स्थिति	जड़ पदार्थ
मैं उठा～मैं नहीं उठा	*मैं नहीं उठा	धुआँ हवा में उठा (करण के साथ)
	*उससे मैं उठा (मिथ्यावाच्य)	बक्सा धीरे-धीरे उठा (मिथ्यावाच्य)
पिता जी ने मुझे उठाया (～जगाया)	· · · ने उसे उठाया	· · · ने बक्से को उठाया
*मैं उनसे नहीं उठा	*रोगी · · · से नहीं उठा	यह बक्सा नहीं उठ रहा है
मैं नहीं उठ सका/पाया	*रोगी · · · से नहीं उठ सका/पाया	बक्सा नहीं उठ सका (*उठ पाया)
मैंने उसे उठवाया	? हमने रोगी को उठवाया	हमने बक्सा उठवाया

उक्त वाक्यों से स्पष्ट हो सकता है कि जिसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं, उसकी सब क्रियाओं के लिए एक सामान्य परिभाषा नहीं हो सकती, न ही अर्थ तथा प्रयोग की सारी विशेषताओं को हम निश्चित कर सकते है. 'प्रेरणार्थक' क्रिया के सभी रूप भिन्न व्याकरणिक कारकों (factors) से प्रभावित होते हैं और सभी क्रियाएँ अपने-अपने ढंग से व्यवहार करती हैं.

यह भी नहीं कि एक क्रिया के कौन-से और कितने प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं. सभी क्रिया रूप यहाँ भी भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यवहार करते हैं. कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिनकी रूपावली बहुत जटिल तथा विस्तृत होती हैं. यहाँ दो ऐसे उदाहरण देखें–

जुट, जुड़, जोड़, जुटा, जुड़वा

वे दोनों कागज़ एक-दूसरे से जुड़ गये.
*मैं अपने काम में जुट (*जुड़) गया.*
*उसने मुझे काम में *जुटा दिया.*
*कुछ पैसा जुड़ (*जुट) जाए · ·*
मैंने कुछ पैसे जुटा/जोड़ लिये हैं.

छूट, छोड़, छुड़ा, छुड़वा, छुटा

*दाग छूट गया. मैंने दाग छुटाया (*छुड़ाया).*
उसका साथ छूट गया. मैंने उसका साथ छोड़ दिया.
*चलिए आपको छोड़ दूँ (छुड़वा, छुड़ा). (*वे मुझसे छूट गये).*
*दाल में नमक छोड़िए (*नमक छूट गया).*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

*मैंने चिट्ठी छोड़ दी (*चिट्ठी छूट गयी).*
उसने नौकरी छोड़ दी. उसकी नौकरी छूट गयी.
मैंने उसकी नौकरी छुड़वा (?छुड़ा) दी.

कहने का तात्पर्य यह है कि व्याकरण ग्रंथों में जो चर्चा की गयी है, प्रयोग में उससे कहीं अधिक विविधता और जटिलता है. यहाँ हर क्रिया की अपनी अर्थ-गत तथा रूपसिद्धि की विशेषताएँ हैं. बहुत-सी क्रियाओं के प्रयोग-वैविध्य के संदर्भ में ही प्रेरणार्थक क्रिया पर निश्चित रूप से कुछ कहा जा सकता है.

फ़ 1. यह वर्ण लिखने का तरीका वही है जो ⟨फ⟩ लिखने का है. इसमें ⟨फ⟩ के नीचे बिंदी दी जाती है.

2. /फ़/ अघोष दंत्योष्ठ्य संघर्षी व्यंजन है. यह ध्वनि प्रमुख रूप से उर्दू-फ़ारसी के शब्दों और कुछ अंग्रेज़ी शब्दों के माध्यम से हिंदी में आयी. जैसे *फ़सल, नफ़रत, सफ़र, साफ़, फ़्रेम, फ़ोकस, सोफ़ा, गोल्फ़* आदि. इस व्यंजन को कई हिंदी भाषी /फ/ से स्थानापन्न करते हैं, यद्यपि इस प्रकार की स्थानापत्ति वक्ता को अमानक बनाती है और कहीं हास्यास्पद स्थिति में डालती है. फ़रक, तरफ़ आदि. यह स्थानापत्ति कई जगह संभव भी नहीं है, जैसे *मुफ्त, *लिफ्ट. चूंकि हिंदी में गुच्छों में अल्पप्राण स्पर्श से पहले महाप्राण स्पर्श व्यंजन नहीं आ सकता, इन शब्दों को दो ही प्रकार से उच्चरित किया जा सकता है–/मुफ़्त/~/मुफ़त/ या /मुफत/. उच्चारण की दृष्टि से *मुफ्त संभव नहीं है.

3. इसी प्रकार स्वर-मध्य तथा शब्दांत में आने वाले /फ/ को /फ़/ बोलने की प्रवृत्ति भी बहुधा पायी जाती है. जैसे *कफ़, *फ़ेफ़ड़े, *सफ़ल, *फ़ल, *फ़िर, *फ़ूल, *फ़ाटक आदि. इन शब्दों के उच्चारण में /फ/ ही आना चाहिए.

बचत 1. यह 'बचना' से बनने वाला स्त्रीलिंग शब्द है. इसका अर्थ है 'वह जो बचाया जाए'. *बैंक में बचत कीजिए. बैंक में आज ही बचत खाता खोलिए.* यह *बचाव* से भिन्न है (दे० **बचाव**).

बचपन, बचपना दोनों शब्दों के प्रयोग में सावधान रहें. *बचपन* बाल अवस्था का अर्थ देता है, *बचपना* नासमझी, अबोधता, अपरिपक्वता का. *बचपना* के अर्थ में *बचकाना* विशेषण शब्द है (देखें **-पना, -पन**).

बचाव 1. 'बचना' से बना पुल्लिग शब्द है, जिस का अर्थ है 'सुरक्षा'. *मैंने ख़ून नहीं किया, बल्कि गोली अपने बचाव में चलायी थी.*

बटे 1. *बाँटना* से अकर्मक रूप *बँटना* बनता है. अगर दस रुपयों को पाँच लोगों में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बराबर बाँटें, तो हर व्यक्ति को दो रुपये मिलेंगे. दस रुपये पाँच व्यक्तियों में बँटें, तो हर व्यक्ति दो रुपये पाएगा. इस तरह दस बँटे पाँच से, तो उत्तर है दो. **अनुनासिकता** में हमने चर्चा की कि अकारांत के साथ सामान्य रूप से अनुनासिकता क्षीण हो जाती है और वर्तनी में इसे लिखा भी नहीं जाता. इस कारण हमें बटे रूप मिलता है.

गणित में बाँटने के लिए शब्द है 'भाग देना'. दस को पाँच से भाग दें, तो उत्तर है दो. इसे गणित में 10/5 लिखते हैं और सामान्य भाषा में *दस बटे पाँच* कहते हैं. चिह्न / बटे का चिह्न है. गणित का सवाल 'भाग देना' से बोला जाता है. उस सवाल का गणितीय सूत्र 'बटे' से लिखा जाता है. इसी को कुछ व्यक्ति 'बटा' भी बोलते हैं. मैं नहीं कह सकता कि *दो बटा पाँच*, *दो बटे पाँच* में कौन-सा अधिक प्रचलित या सही है.

2. *बटा~बटे* गणितीय सूत्र में ही नहीं, घरों के संख्या से नामकरण में भी काम आता है. जहाँ इसका प्रकार्य भाग देना नहीं, बल्कि क्रम के भीतर का क्रम दिखाना है. 4/1, 4/2, 4/3 आदि को हम क्रमशः *चार बटे एक*, *चार बटे दो*, *चार बटे तीन* कह सकते हैं. इसी तरह भाषा के अन्य प्रयोगों में भी / चिह्न को हम 'बटे' से सूचित कर सकते हैं. स/श को *स बटे श* कह सकते हैं, जिससे उच्चारण के लिखित रूप का अनुमान हो सके.

बताना 1. किसी से कुछ कहने के संदर्भ में 'बताना' के प्रयोग के लिए **कहना, बोलना, बताना** देखिए.

2. हैदराबाद, बंबई जैसे प्रदेशों में *बोलना* इस शब्द का स्थान ले चुका है. ऐसे स्थानों में कुछ व्यक्तियों की भाषा में *बताना* मानक हिंदी के अर्थ में (बात बताना) प्रयुक्त ही नहीं होता. वहाँ *बताना* हिंदी के 'दिखाना' के अर्थ में प्रयुक्त होता है. सेठ, *वह साड़ी बताना* (*वह साड़ी दिखाओ*), *अपना कार्ड बताओ* (*दिखाओ*). *मेरे साथ चलो, उसका घर बताता हूँ* (*दिखाता हूँ*). यह अमानक प्रयोग केवल दूर के अहिंदी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि हिंदी प्रदेश में भी चलता है. मध्य प्रदेश की बोलियों में भी 'दिखाना' के अर्थ में *बताना* का प्रयोग होता है.

बनना 1. यह *बनाना* का अकर्मक रूप है, मिथ्यावाच्य शब्द है. *मैंने चाय बनायी* → *चाय बनायी गयी* → *चाय बनी*. अन्य उदाहरण हैं–*खाना बन गया*. *मेरा मकान बन रहा है*. *मेरा लड़का कुछ ही सालों में डाक्टर बन जाएगा*.

2. सुंदर बनने के अर्थ में *बनना* का प्रयोग होता है. *बनाव-सिंगार*, *बन ठन कर*, *बन सँवर कर* इस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं.

3. किसी को उल्लू बनाया जाता है, तो वह उल्लू बन जाता है. यह मुहावरेदार प्रयोग है. *बुद्धू बनना*, *बेवकूफ़ बनना* इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. *तुम क्यों भले बनते हो* का अर्थ यह नहीं कि किसी की प्रेरणा से कोई भला 'बनता' है. यहाँ उस व्यक्ति द्वारा अपने को भला दिखाने की बात है, जो वास्तव में भला है नहीं. *होशियार बनना, विद्वान बनना, दयालु बनना* इसी अर्थ में प्रयुक्त हैं.

4.1. *वह अच्छा बन गया है* में बुरे से अच्छे में या एक स्थिति से दूसरी स्थिति में परिवर्तन वाली बात है. इस अर्थ में *विद्वान बनना, होशियार बनना* आदि आते हैं. यहाँ ये मिथ्यावाच्य हैं.

5. *उन दोनों में नहीं बनती* का अर्थ है दोनों में मतभेद या दुश्मनी. इस वाक्य में कर्म या पूरक की आवश्यकता नहीं है ('अनबन' इसी अर्थ में संज्ञा शब्द है).

6. *मुझ से काम करते नहीं बनता* असामर्थ्य सूचक वाक्य है. यहाँ कृदंत रूप *करते, बोलते, कहते, खाते* आदि आते हैं और क्रिया के *बना, बनता, बन रहा, बनेगा* आदि रूप आते हैं.

7. *बात यों बनी, बनी-बनायी बात* आदि मुहावरेदार प्रयोगों में वांछित परिणाम तक पहुँचने की स्थिति प्रकट होती है. यही *काम बन जाना* के मुहावरे में भी व्यंजित है.

बलाघात शब्द या वाक्य का उच्चारण करते समय भाषाओं में शब्द के किसी अंश पर या वाक्य के किसी एक शब्द पर दूसरे की अपेक्षा अधिक बल दिया जाता है, जिसे दोनों संदर्भों में क्रमशः शब्द बलाघात और वाक्य बलाघात कहते हैं.

1. शब्द बलाघात अंग्रेज़ी, रूसी आदि भाषाओं में अर्थभेदक है और शब्द के रूप तथा वर्ग के आधार पर शब्द के भिन्न-भिन्न अक्षरों पर पड़ता है.

con'duct (क्रिया), 'conduct (संज्ञा)

'photograph, pho'tography, photo'graphic

हिंदी में शब्द स्तर पर बलाघात अर्थभेदक तत्व नहीं है. *कमल, निकलना, परिस्थिति* जैसे शब्दों में चाहे जिस अक्षर पर बलाघात हो, शब्द के अर्थ में अंतर नहीं आता.

1.1. बलाघात अर्थभेदक न होने पर भी यह जानने की उत्सुकता हो सकती है कि हिंदी के शब्दों के उच्चारण में शब्द के किस अक्षर पर औरों की अपेक्षा अधिक बल पड़ता है. इस संदर्भ में कई विद्वानों ने विचार किया है, नियम दिये हैं. लेकिन ये नियम व्यक्तिगत धारणाओं पर आधारित हैं, न कि वैज्ञानिक परीक्षण या व्यापक सर्वेक्षण पर आधारित.

आप 'कमाई' शब्द को लीजिए और ख़ुद उच्चारण करके देखिए. आप जिस अक्षर पर बल अनुभव करेंगे, उसी पर आपको बल लगेगा. आगे के तीनों रूप आपको स्वाभाविक लगेंगे.

क'माई क'माई कमा'ई

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नियम देने से पहले विद्वानों को स्पष्ट करना होगा कि वे बलाघात का आधार क्या मानते हैं.

1.2. लेकिन हिंदी में एक युग्म में बलाघात का स्थान उच्चारण सीखने के लिए उपयोगी है. हिंदी में *जाती* दीर्घ स्वरांत शब्द है. दोनों स्वर दीर्घ होने के कारण शब्द के किसी भी अंश पर बलाघात पड़ सकता है. तुलना में *जाति* शब्द है. अहिंदी भाषा भाषियों को हिंदी पढ़ाते समय शब्द में ह्रस्व, दीर्घ स्वरों का उच्चारण कराने में मुझे शुरू में कठिनाई हुई थी. बाद में मुझे अनुभव हुआ कि /जाति/ का /जाती/ की तुलना में स्पष्ट उच्चारण करने के लिए /जा/ पर बल देना उपयोगी होता है. अब मुझे लगता है कि ह्रस्व का उच्चारण बल के बिना संभव नहीं है. अतः यह युग्म होगा–*जा́ति जाती́*

2. वाक्य स्तर पर बलाघात लगभग सभी भाषाओं की सामान्य विशेषता है. अपनी बात स्पष्ट करने, भावों का अतिरेक व्यक्त करने और व्यंजित अर्थ देने के लिए तथा अन्य कई भाषेतर कारकों से वक्ता वाक्य के शब्द विशेष पर दूसरों की अपेक्षा अधिक बल दे सकता है. लेकिन इसका विश्लेषण या अर्थ का विवरण इतना स्पष्ट नहीं है. एक पुस्तक में मैंने (ऐसे ही) कुछ वाक्य देखे थे, जहाँ लेखक अर्थ के आधार पर भिन्न बलाघात के कल्पित उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे–

(i) रा́म गाड़ी से जा रहा है (राम जा रहा है, और कोई नहीं)

(ii) राम गा́ड़ी से जा रहा है (और किसी वाहन से नहीं)

(iii) राम गाड़ी से जा́ रहा है (जा रहा है, और कोई कार्य नहीं कर रहा है)

भले बलाघात स्पष्ट करना ही ऐसे कृत्रिम और कल्पित वाक्यों को देने का उद्देश्य हो, फिर भी भाषा में बलाघात की स्थिति इतनी सरल नहीं है. किसी बात पर बल देने के लिए भाषा में कई युक्तियाँ होती हैं. बलाघात इनमें एक युक्ति है. निपात (*ही, भी, तो*) दूसरी युक्ति है. तीसरी युक्ति शब्द क्रम है (*अपने घर जा रहा है राम* में 'अपने घ́र' विशिष्ट शब्द है). *मैं तो जाना ही नहीं चाहता था* में दो निपात हैं और बल 'जाना' पर है. किसी-किसी वाक्य में सभी युक्तियाँ आ सकती हैं. अगर वाक्य बलाघात पर कोई निश्चित रूप से कुछ कहना चाहे, तो यह व्यापक सर्वेक्षण-अनुसंधान के अभाव में संभव नहीं होगा.

बल्कि 'बल्कि' के दो अर्थ हैं–'यह नहीं, वह', 'यही नहीं, वह भी'. *नहीं* और *बल्कि* एक साथ आते हैं. *यह बात राम ने नहीं, बल्कि गोपाल ने बतायी थी. उन्होंने दावत घर में नहीं, बल्कि एक होटल में की.*

आजकल बच्चे पढ़ते नहीं, बल्कि खेलने में ज़्यादा रुचि लेते हैं. इस संदर्भ में 'बल्कि' ऐच्छिक है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. ही नहीं, बल्कि भी–उसने बच्चों को ही नहीं बल्कि बड़ों को भी बुलाया था. सीता ने ही नहीं, बल्कि गीता ने भी मुझे यह बात बतायी थी (अर्थात दोनों ने बतायी थी). घर में ही नहीं, बल्कि बाहर भी सर्दी है.

3. 'प्रत्युत' बल्कि का पर्याय है और इसका आम भाषा में प्रयोग नहीं होता. गुरु 'वरन्' को भी बल्कि का पर्याय मानते हैं. यह भी लुप्तप्राय है और प्रयोग की कमी के कारण यहाँ इसकी चर्चा नहीं की जा रही है.

बशर्ते (कि) इसका अर्थ है 'इस शर्त पर (कि)'. *मैं आपके साथ चल सकता हूँ बशर्ते कि आप मुझे सौ रुपये दें. मैं काम करने के लिए तैयार था, बशर्ते कि वे मुझे रु०500 देते.*

2. बशर्ते के साथ हमेशा संभावनार्थ क्रिया आती है. कार्य-कारण संबंध दिखाने के लिए यह पूर्ण पक्ष की क्रियाओं के साथ नहीं आता. **मैंने काम पूरा किया, बशर्ते कि वे आएँ.* लेकिन पूर्ण पक्ष की क्रिया के साथ शर्त सूचित करनी हो, तो भिन्न प्रकार की वाक्य रचना आती है. उल्लेखनीय है कि इसमें संभावनार्थ क्रिया नहीं है. *मैंने इसी शर्त पर पंखा ख़रीदा कि ख़राब होने पर वापस कर दूँगा.*

3. इसमें 'कि' वैकल्पिक है, ऐच्छिक है. *· · · बशर्ते सब लोग चलें.*

बस 1. यह 'हाँ, नहीं' की तरह संक्षिप्त वाक्य है और संभाषण में किसी कथन के प्रतिवक्तव्य के रूप में प्रयुक्त होता है. यहाँ इसका अर्थ 'इतना ही' होता है.

तुम थोड़ी चाय और लोगे ? बस, और नहीं चाहिए

इस अर्थ में यह 'काफ़ी' का पर्याय है. लेकिन 'काफ़ी' संक्षिप्त वाक्य की तरह नहीं आता–**काफ़ी, और नहीं चाहिए.* लेकिन कभी-कभी बस 'काफ़ी' के अर्थ में आ सकता है, जो अधिक प्रचलित नहीं है.

इतनी चीनी काफ़ी होगी ? इतनी चीनी काफ़ी नहीं होगी.

!इतनी चीनी बस होगी ? !इतनी चीनी बस नहीं होगी.

2. *बस करना* रोकने या समाप्त करने के अर्थ में आता है. *बहुत हो गया, बस करो. क्या बकबक कर रहे हो ? बस भी करोगे कि नहीं ? मैंने 200 कार्ड लिख लिये हैं, बस करूँ ?* लेकिन इसका प्रयोग जुड़े हुए वाक्यों के रूप में ही अधिक होता है, सामान्य निश्चयार्थक वाक्यों में कम. **मैंने काम बस किया. *वे लोग खाना बस कर रहे हैं.*

2.1. जुड़े हुए वाक्य के रूप में इसका बहुत प्रयोग होता है. *काम हो गया, बस. पाँच मिनट ठहरो, बस. मैं भी साथ चलूँगा. जब देखो, आ जाते हैं, बस. और कोई काम नहीं है.*

3. बस 'वश' का तद्भव रूप भी है. *मेरा वश नहीं चलता~मेरा बस नहीं चलता. अगर मेरा वश चले~अगर मेरा बस चले.* दोनों शब्दों में दोनों व्यंजनों में अंतर है. **वस, *बश* दोनों गलत हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. अंग्रेज़ी 'बस' (bus) भी इसी अर्थ में हिंदी में चलता है. यह 'बस' स्त्रीलिंग शब्द है.

बहन यही रूप अधिक प्रचलित है. इसकी जगह 'बहिन' का प्रयोग त्याज्य है. चर्चा के लिए देखिए **ह**.

बहुत 1. विशेषण के रूप में यह 'अधिक, पर्याप्त' का अर्थ देता है. *पैसा काफ़ी है? हाँ, बहुत है. उसके पास बहुत पैसा है.*

2. यह विशेषण या क्रियाविशेषण के विशेषण के रूप में भी इसी अर्थ में आता है. *यह घड़ी बहुत अच्छी है. यह घोड़ा बहुत तेज़ दौड़ता है.*

3. ऐसे संज्ञा शब्दों के विशेषण के रूप में, जो गिने जाने वाले पदार्थ सूचित करते हों, 'कई' के अर्थ में 'बहुत-सा' आता है. *आज डाक में बहुत-सी चिट्ठियाँ थीं. मेरे दफ़्तर में बहुत-से आदमी काम करते हैं.* देखें **सा**[2].

बाद 1. यह एक अव्यय शब्द है और 'के' के योग से परसर्गीय शब्द बनता है. अर्थ की दृष्टि से यह परवर्ती कार्य या व्यापार की सूचना देता है.

2. के बाद के निम्नलिखित प्रयोग हैं—

राम गोपाल के बाद आया (व्यापार में व्यक्ति का क्रम)
तुम दीवाली के बाद आओ (समय बिंदु के बाद का काल-क्रम)
मैं नहाने के बाद खाना खाने बैठा (घटना-क्रम)

3. *बाद में* 'पहले' का विलोम है. यहाँ क्रमसूचक शब्द नहीं आता.

*तुम पहले खाओ. मैं बाद में खाऊँगा (*तुम्हारे बाद में)*
*तुम जाओ. फिर बाद में आओ. (*दीवाली के बाद में)*
*मैंने पहले नहाया. बाद में खाना खाया. (*नहाने के बाद में)*
तुम अभी खाना नहीं खाओगे? बाद में खाऊँगा.

आपने अनुमान किया होगा कि *के बाद में* अटपटा प्रयोग है.

4. समय की इकाई सूचित करने वाले शब्दों के साथ सिर्फ़ *बाद* ही आता है. इसके कुछ उदाहरण देखिए—*दो दिन बाद, दो घंटे बाद, एक हफ़्ते बाद, कोई साल-भर बाद, सालों बाद, महीनों बाद, दो-तीन महीने बाद, 15-20 मिनट बाद.* ऐसे संदर्भों में *!दो दिनों के बाद, !पाँच मिनटों के बाद* आदि प्रयोग अहिंदी भाषा भाषियों की विशेषता है, सहज नहीं. इस संदर्भ में संख्यावाचक विशेषण के बाद न बहुवचन तिर्यक रूप आता है, न बाद में 'में'. देखिए **इकाई के शब्द**.

बाबू इस शब्द का प्रयोग अब सिर्फ़ दफ़्तर के कर्मचारी (क्लर्क) के लिए होता है. बड़े लोगों के संबोधन के संदर्भ में हमेशा *बाबू जी* का प्रयोग होता है. क्लर्क के निदर्शनात्मक या संकेतक (referential) अर्थ में कहीं *बाबू जी* का प्रयोग नहीं होता. अन्य प्रयोग देखें—*बड़े बाबू, डाक बाबू, बाबू तबका, बाबू मनोवृत्ति.*

2. *बाबू जी* अपने पिता, पिता तुल्य वृद्ध व्यक्ति या अन्य वयोवृद्ध रिश्तेदार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के लिए निदर्शनात्मक तथा संबोधन का शब्द है. *बाबू जी घर पर नहीं हैं. बाबू जी, आप भी चलिए न.* यह अन्य आदरणीय व्यक्तियों के लिए संबोधन का शब्द है. *बाबू साहब* 'बाबू जी' की तरह संबोधन शब्द है, जो आदरणीय व्यक्तियों के लिए आता है. *बाबू* अपने निकट के, किंतु औपचारिक मित्रों के लिए नाम के साथ संबोधन में आता है. *रमेश बाबू, क्या हाल हैं ? गोपाल बाबू, यहाँ आइए.* इस संदर्भ में *बाबू* कभी कुलनामों के साथ (शर्मा, श्रीवास्तव, सिंह) नहीं आता. *शर्मा साहब, ज़रा रुकिए (*शर्मा बाबू ...).* इसका आधार शायद सिर्फ़ प्रचलन है.

3. *बाबू* कई व्यक्तियों के नाम का अंग है. *बाबूलाल, राम बाबू, हरि बाबू, बाबूराम* आदि.

बीमार 1. यह विशेषण शब्द है और किसी भी तरह की अस्वस्थता के लिए आता है. *वह आदमी कई दिन से बीमार है. वह बीमार आदमी है, अधिक चल नहीं सकता. वह आजकल बहुत बीमार है.* इस विशेषण शब्द के साथ बीमारी का उल्लेख नहीं होता. **वह टी० बी० से बीमार है* (तुलना करें *वह टी० बी० का मरीज़ है*). 'बीमारी' रोग का पर्याय है. इसके साथ बीमारी के प्रकार का कुछ उल्लेख होता है. *?उसको बीमारी है. उसको टी० बी० की बीमारी है. उसको कोई बीमारी है. मेरी बीमारी की हालत में उसने मेरी बड़ी सेवा की.*

2. *बीमार* शब्द 'मरीज़' के अर्थ में संज्ञा के तौर पर आता है. *बीमारों का इलाज, बीमारों की देखभाल, ?मलेरिया के बीमार.*

3. *बीमार* शब्द का उच्चारण प्रायः /बिमार/ के तौर पर होता है. लेकिन 'बिमार' नहीं लिखा जाता.

बुड्‌ढा, बूढ़ा दोनों ही प्रचलित शब्द हैं. शायद पहले शब्द में तिरस्कार की भावना अधिक झलकती है, दूसरा शब्द वृद्‌ध होने की स्थिति अधिक दर्शाता है.

2. स्त्रीलिंग शब्दों में बुड्‌ढी, बूढ़ी, *बुढ़िया* तीन रूप प्रचलित हैं. *बुढ़िया* सिर्फ़ संज्ञा शब्द है, शेष संज्ञा, विशेषण दोनों हैं. *बुढ़िया* शब्द में अनादर और तिरस्कार अधिक है. शायद ही कोई अपनी माँ के बारे में कहे *मेरी माँ तो बहुत बुढ़िया है.* आदर के प्रसंगों में बूढ़ी शब्द अधिक उपयुक्त है. *मेरी माँ बहुत बूढ़ी हैं.*

बुद्‌धि, बुद्‌ध 1. जब पहले ⟨द+ध⟩ का द्ध था, तब इकार की मात्रा ⟨ि⟩ पहले लगती थी (द्धि). केंद्रीय हिंदी निदेशालय की पुस्तिका 'परिवर्धित देवनागरी' छपी (केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 1967), जिसमें द्‌ध, ट्‌ठ, ह्‌न जैसे संयुक्त व्यंजन वर्णों की सिफ़ारिश की गयी थी. उसमें यह भी सिफ़ारिश थी कि *वृद्‌धि समृद्‌धि* रूप लिखे जाएँ. उसके अनुसार *बुद्‌धि, चिट्‌ठियाँ, चिह्‌नित* की वर्तनी होनी चाहिए. लेकिन लगता है कि निदेशालय ने भी अपनी नीति बदल ली है और हिंदी के लेखक *बुद्‌धि, चिट्‌ठियाँ, चिह्‌नत* ही पसंद करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह समस्या फ़िलहाल हिंदी के इकार की मात्रा तक ही सीमित है. अन्य मात्राओं में यह समस्या नहीं है. रद्‌दी, कद्‌दू, रद्‌दो-बदल, चिट्‌ठी आदि शब्दों में कहीं विकल्प नहीं है, कोई समस्या नहीं है.

2. हिंदी के लेखक यह मानते हैं कि <द्ध> एक पूर्ण अक्षर है और इसे बीच में से तोड़ा नहीं जा सकता. यह बात कुछ वर्णों के साथ सही है. **शक्ति*, **स्थिति* जैसे शब्दों में <क स> को हम अलग नहीं कर सकते. लेकिन <द्> की स्थिति में अंतर है. द् उस रूप में परतंत्र या बद्‌ध नहीं, जिस रूप में <स क> है. द् का अलग अस्तित्व है. वह संस्कृत में शब्दांत में लिखा जाता था (*शरद्*, *परिषद्*), जबकि शब्दांत में क् (*वाक्*) या स् (*तेजस्*) ही चलते थे, न कि **वाक* या **तेजस*. इस कारण मैं समझता हूँ कि द् स्वतंत्र रूप से लिखा जा सकता है. परंपरा से बद्‌ध व्यक्तियों को <द्‌ध> भी खटक सकता है, लेकिन नये रूप को अपनाने वालों को नयी पद्‌धति ख़राब तो नहीं लगनी चाहिए.

3. अगर हम मान लें कि <द्‌ध> दो स्वतंत्र वर्ण हैं, जो क्रम से लिखे जा रहे हैं, तो हम यह भी कह सकते हैं कि <द्‌धि> गलत है. हलंत भी एक मात्रा है जो स्वर रहितता दिखाता है. नियमानुसार एक वर्ण में दो मात्राएँ लगनी नहीं चाहिए. हिंदी नया-नया सीखने वाला तथा हिंदी की पुरानी पद्‌धति से अपरिचित व्यक्ति पढ़ते समय इसी क्रम से आगे बढ़ेगा—बु दि् ध. उसके लिए शुरू में बहुत समय तक यह वर्तनी परेशान करने वाली होगी. यह बात सही है कि सतत अभ्यास और निरंतर संपर्क के कारण बाद में भाषा की हर असंगति व्यवहार में सहज हो जाती है.

4. अगर भाषाविज्ञान की दृष्टि से देखें, तो भी बुद्+धि का विभाजन ठीक लगता है, क्योंकि ये दोनों अलग-अलग अक्षर (syllables) हैं. यहाँ अक्षर विभाजन को दिखा पाना हमारे लिए सुविधा है, 'शक्ति' में न दिखा पाना हमारी मजबूरी है.

5. बुद्*धि* अधिक वैज्ञानिक वर्तनी है, *बुद्‌धि* परंपरा से जुड़ी, काम चलाऊ व्यवस्था है. अगर देवनागरी लिपि को हम अन्य भाषाओं के लिए अपनाना चाहें, तो इसका स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि सभी भाषाओं का लिप्यंतरण सही ढंग से हो सके. तमिल में तीन-तीन व्यंजनों के योग मिलते हैं, जिनमें कई शब्दों में /इ/ की मात्रा लगती है. ऴि्च्च (या दूसरी पद्‌धति से ष्च्चि), ऴि्त्त, ट्प्पि, य्म्मै, र्च्चि, र्त्ति. ट्टि का प्रयोग कई शब्दों में होता है. देवनागरी से तमिल पढ़ने वाले व्यक्ति से ही जाना जा सकता है कि उसे तमिल उच्चारण सीखने में क्या कठिनाई होती है. इसमें शक नहीं कि <द्‌धि> की वैज्ञानिकता उन भाषाओं को देवनागरी में लिखने में सहायक होगी. मलयालम के <ङ्ङ> का उच्चारण आप कर पा रहे हैं ?

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुधवार ग्रह बुध पर यह नाम पड़ा है, भगवान बुद्ध से इसका संबंध नहीं है. अतः बुद्धवार गलत वर्तनी है.

बोलना 1. मुँह से कुछ कहने के संदर्भ में *बोलना* के प्रयोग के लिए **कहना, बोलना, बताना** देखिए.

2. *बोलना* के अमानक प्रयोग की विस्तृत चर्चा के लिए **हिंदी–अन्य अंचलों से** देखिए.

भट, भट्ट जब भारत के पहले उपग्रह का नाम 'आर्यभट' रखा गया तब भट को ले कर बहुत विवाद उठ खड़ा हुआ था. भट्ट ब्राह्मणों की एक उपजाति का नाम है, भट राजा के योद्धाओं का अर्थ देता है. विवाद के बाद यह घोषित किया गया कि आर्यभट नामक गणितज्ञ का नाम यही था. जो भी हो, भट्ट और भट में अंतर करना श्लाघ्य है. आज लोग अपना नाम भट से नहीं लिखते.

भरती 1. यह 'भरना' से बना शब्द है. *यह लड़का सेना में भरती हो गया. सेना में लोगों की भरती हो रही है. दस आदमियों की भरती कर लें, तो एक हफ़्ते में काम पूरा हो जाएगा.*

2. यह संज्ञा शब्द है और विधेय (पूरक) के स्थान पर भी आता है, जैसे पहले वाक्य में देख रहे हैं. *वह भरती हो गया. उसकी भरती हो गयी.*

3. 'भर' से व्युत्पन्न होने के कारण *भरती* ही ठीक वर्तनी है, *भर्ती* नहीं. लेकिन *भर्ती* आज अधिक प्रचलित प्रयोग है.

भरपेट इसका उलटा रूप भी इसी अर्थ में चलता है. *मैंने पेटभर खाना खाया~ मैंने भरपेट खाना खाया.*

भला, भले, भले (ही) 1. 'भला' विशेषण शब्द है और 'अच्छा' का अर्थ देता है. *वह बहुत भला आदमी है. मैं भली भाँति जानता हूँ कि ...* . इससे संज्ञा शब्द 'भलाई' व्युत्पन्न होता है.

2. यह 'नहीं' का अर्थ देने वाला **निपात** है, जो प्रश्नवाचक वाक्यों में आता है. *मैं भला इसके बारे में क्या जानूँ?* (अर्थात मैं नहीं जानता). *वे क्या करेंगे भला?* (अर्थात वे कुछ नहीं करेंगे). इसका प्रयोग कर्ता के साथ दिखायी पड़ता है और यह कथन के अंत में आता है. अन्य स्थानों में इसका प्रयोग संदेहास्पद है.

3. भले (ही) 'चाहे' के अर्थ में प्रयुक्त योजक शब्द है. *मैं नहीं जाऊँगा, भले मेरी नौकरी (ही) चली जाए~भले ही मेरी नौकरी चली जाए. मैं तो जाऊँगा ही, भले आप नाराज़ हो जाएँ.* संवाद में 'भले' अधूरे वाक्य के साथ जुड़ता है.

वह नाराज़ हो जाएगा. भले हो, मुझे चिंता नहीं.

वे लोग आ जाएँगे ? भले आएँ, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाग 1. कुछ साल पहले की बात है. एक गुजराती भाषी हिंदी के विद्वान से एक दावत में किसी ने कहा, 'आप कोई मिठाई लेंगे ?' उन्होंने कहा 'मैंने अपने भाग का खा लिया.' सब लोग हँस पड़े. उक्त कथन में उन्होंने मातृभाषा के कारण गलत प्रयोग किया था या द्विभाषी श्लेष का सोद्देश्य प्रयोग किया था, यह हम लोग नहीं समझ पाये. लेकिन यहाँ 'हिस्सा' के अर्थ में *भाग का* का प्रयोग नहीं हो सकता. आप किसी राशि को कुछ लोगों में बाँटें, तो हर व्यक्ति के हिस्से में एक अंश आता है, वह उसका 'हिस्सा' है, 'भाग' नहीं. इसी तरह किसी चीज़ के हिस्से बनते हैं, भाग नहीं. इसी अर्थ में *हिस्से करना* प्रयुक्त है.

2. *भाग* 'भाग्य' का तद्भव रूप है. ऊपर के द्विभाषी श्लेष का आधार यही है. यह शब्द प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होता है. *मेरे तो भाग फूट गये. मेरे धन्न भाग* (<धन्य-भाग्य). लेकिन आज हिंदी में संस्कारित रूप 'भाग्य' ही अधिक प्रचलित है.

3. गणित में बाँटने के लिए *भाग देना* का प्रयोग होता है (देखें **बटे**). *भाग* किसी बड़े संगठन या व्यवस्था या इकाई के छोटे खंडों के लिए आता है. *भारत के उत्तरी भाग में~ ?उत्तरी हिस्से में,* *पुस्तक के प्रथम भाग (*हिस्से) में, मंत्रालय प्रशासनिक दृष्टि से चार भागों (*हिस्सों) में बँटा है. भाग* का बृहत खंड *प्रभाग* है, छोटा खंड *अनुभाग* (सेक्शन) है.

भाषा की परिभाषा 1. भाषा एक प्रतीक व्यवस्था है. प्रतीक मनुष्य द्वारा नियत संकेत हैं, जो पूर्व निश्चित अर्थ देते हैं. यातायात नियंत्रण के लिए रंगीन बत्तियों का प्रयोग एक प्रतीक व्यवस्था है. लाल बत्ती रुकने का संकेत है, हरी बत्ती चलने का तथा पीली बत्ती अगले संकेत के लिए तैयार रहने का. ये प्रतीक भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते हैं. बत्तियाँ, सेना के मार्ग दर्शक संकेत, धार्मिक चिह्न आदि दृश्य प्रतीक हैं; अफ़्रीकी कबीलों का वाद्य संकेत, प्राणियों की आवाज़ों द्वारा अर्थ संप्रेषण आदि श्रव्य प्रतीक हैं. गंधों को पूर्व निर्धारित अर्थ देकर कोई घ्राण प्रतीकों का प्रयोग कर सकता है और अँधेरे में या छिप कर छूने से अर्थ प्रकट कर स्पृश्य प्रतीकों का प्रयोग कर सकता है.

1.1 इन सब प्रतीकों का भौतिक माध्यम कुछ भी हो, इनके द्वारा पूर्व निर्धारित अर्थ प्रकट करने की व्यवस्था प्रतीक व्यवस्था है. भाषा भी एक प्रकार की श्रव्य प्रतीक व्यवस्था है. यह व्यवस्था दो व्यक्तियों या सीमित वर्ग के व्यक्तियों द्वारा स्थापित व्यवस्था हो सकती है, जहाँ इसे गुप्त भाषा या गुप्त संकेत का नाम दिया जाएगा, या व्यापक जन समुदाय द्वारा मान्य व्यवस्था हो सकती है. प्राणियों का 'बोलना' तथा मनुष्य की भाषा व्यापक स्तर पर व्यवहृत व्यवस्था है.

1.2 यहाँ प्रतीकार्थ तथा प्रतीक के संबंध के बारे में जानना आवश्यक होगा. यह संबंध स्वाभाविक नहीं, आरोपित है, यादृच्छिक है. अर्थात प्रतीक को वह

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थ व्यवस्था द्वारा प्राप्त है, वह सहज अर्थ नहीं है. एक ही भौतिक उपकरण दो भिन्न व्यवस्थाओं में दो भिन्न अर्थ रख सकता है. इस यादृच्छिकता के कारण प्रतीक तथा प्रतीकार्थ दोनों को समान रूप से सीखने की आवश्यकता होती है, यहीं शिक्षण काम आता है. सहज अर्थ वाले भौतिक संकेत (मेघ घड़-घड़ाना–बारिश, कोयल की कूक–वसंत का आगमन) प्रतीक नहीं हैं, न इनका 'अर्थ' कभी बदलता है.

1.3. अर्थ के संप्रेषण की दृष्टि से सबसे जटिल तथा व्यवस्थित प्रतीक विधान प्राणि-जगत में मधुमक्खियों और डालफ़िन में दिखायी पड़ता है. मधुमक्खी छत्ते के बाहर गोल-गोल घूम कर (नाच कर) अपने साथियों को फूलों की दिशा, मात्रा आदि की सूचना दे सकती है. डालफ़िन श्रव्य प्रतीकों का प्रयोग करता है. अनुमान है कि यह चालीस से अधिक भिन्न ध्वनियाँ निकाल कर अन्य डालफ़िनों के सम्मुख भाव, आवश्यकता आदि के इतनी ही संख्या में अर्थ व्यक्त करता है. इतने जटिल तथा व्यवस्थित संप्रेषण के बावजूद हम मधुमक्खियों या डालफ़िन की संप्रेषण व्यवस्था को भाषा नहीं कहते. इसके दो कारण हैं. पहले, मधुमक्खियाँ फूल, शहद छोड़ कर अन्य किसी तरह की सूचना नहीं दे सकतीं. इसी तरह डालफ़िन अपनी पूर्वनिर्धारित प्रतीक व्यवस्था के बाहर कोई अन्य सूचना नहीं दे सकता. इनके प्रतीक अर्थ के साथ एक के लिए एक के रूप में नियत हैं. मानव भी अपने वागिंद्रिय से लगभग 60–70 भिन्न ध्वनियों का उच्चारण कर सकता है. अगर ध्वनि के साथ अर्थ जुड़े होते, तो हम भी इतने ही पूर्व निर्धारित अर्थ दे पाते. लेकिन भाषा इससे बहुत भिन्न व्यवस्था है. हम ध्वनियों को अर्थ के लिए कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल में लाते हैं और वाक स्वनों के भिन्न-भिन्न संयोजनों से शब्दों का निर्माण करते हैं. भाषा के 30 से 60 तक स्वनों से हम लाखों शब्दों का निर्माण कर सकते हैं.

2. भाषा में केवल शब्द ही होते, तो भी हम शायद इतनी सहजता से भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते, क्योंकि *खाना* उल्लिखित शब्द से व्यक्त व्यापार का मात्र संदर्भ इंगित करता है. करने वाला कौन, कार्य का समय तथा स्थिति क्या है, कार्य से अन्य कौन से व्यक्ति संबद्ध हैं और अन्य कौन-सी परिस्थितियाँ हैं, इनकी सूचना एक ओर इस शब्द के रूपिमिक परिवर्तनों से (*खाता है, खा* रहे हैं, *खाया* है आदि) और दूसरी ओर वाक्य में इसके अन्य शब्दों के साथ संबंध द्वारा मिलती है. यही जटिल व्यवस्था भाषा को सामान्य प्रतीक व्यवस्था से ऊँचा उठाती है. हम कह सकते हैं कि भाषा प्रतीकों से बनी व्यवस्था (system) है, उसका अपना गठन या अपनी संरचना है. भाषा की व्यवस्था को निम्न प्रकार से एक आरेख से स्पष्ट कर सकते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
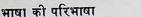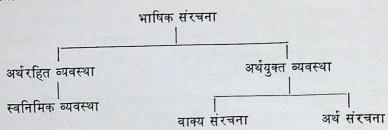
स्वन विज्ञान में वाक स्वनों के गुण, उच्चारण प्रक्रिया आदि की ही चर्चा करते हैं और इसे भाषा से बाहर का अंग मानते हैं. स्वनिम विज्ञान भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था का अध्ययन करता है. भाषा के स्वनों की अर्थ भेदक व्यवस्था, स्वनों का वितरण आदि बातें इसमें आती हैं. यह विश्लेषण सीधे भाषा के साथ जुड़ता है, जबकि स्वन विज्ञान भाषा-निरपेक्ष है. दो भाषाओं की स्वनिमिक व्यवस्था भिन्न हो सकती है, होती है, इसे आप **स्वनिम** प्रकरण में देख सकते हैं. हर भाषा अपनी स्वनिक सामग्री का अपने ढंग से इस्तेमाल करती है और स्वनों का महत्त्व भाषा में भिन्न-भिन्न प्रकार से है.

2.1. स्वनों को अर्थरहित व्यवस्था में लेने के कारणों पर प्रतीक व्यवस्था में चर्चा की थी. अगर स्वनों को ही अर्थ दिया जाता तो भाषा की संप्रेषणीयता बहुत सीमित हो जाती. भाषा स्वनों से बने शब्दों को अर्थ प्रदान करती है. लेकिन कई विद्वानों ने स्वनों के साथ अर्थ जोड़ने का यत्न किया है. अंग्रेज़ी में flow, fluid, fly, flee आदि शब्दों में अर्थ का सामान्य गुण (प्रवाह या गति) देखा जा सकता है और इन शब्दों में /fl/ इस अर्थ के साथ जोड़ा जा सकता है. इस ग्रंथ में अन्यत्र मैंने चर्चा की है कि बह, मह, लह, चह आदि रूपों से प्रवाह का अर्थ द्योतित होता है और सभी शब्दों में प्रवाही संघर्षी स्वन /ह/ समान कारक है. इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हर जगह /fl/ या /ह/ आने पर यही अर्थ व्यक्त होगा. किसी अर्थ क्षेत्र के साथ किन्हीं स्वनों का संबंध कई भाषिक परंपराओं के कारण है. हम छंदशास्त्र में मूर्धन्य स्वनों का संबंध वीर रस से जोड़ते हैं और नासिक्य तथा घोष व्यंजनों और स्वरों का संबंध कोमल भावों से जोड़ते हैं. यह भाषिक परंपरा भाषा-सापेक्ष है. कुल मिला कर कह सकते हैं कि ध्वनि-अर्थ का संयोजन भाषा की व्यवस्था का आंतरिक गुण नहीं, बल्कि संयोग या अन्य परंपराओं के कारण है.

2.2. भाषा की अर्थवान व्यवस्था ही सामान्य भाषाविज्ञान तथा व्याकरण का विषय रहा है. पाणिनि से लेकर चाम्स्की तक कई विद्वान भाषा के विश्लेषण की प्रभावात्मक, सर्वांगीण तथा सार्वभौम विधि या सिद्धांत की तलाश में रहे हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संरचनात्मक भाषाविज्ञान अर्थवान व्यवस्था के निम्नलिखित सोपान निश्चित करता है :
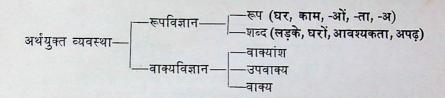
(देखें **रूपिम, शब्द, वाक्यांश, उपवाक्य, वाक्य.**)

संरचनात्मक भाषाविज्ञान रूप से वाक्य तक बढ़ता है, जबकि चाम्स्की तथा परवर्ती भाषावैज्ञानिक वाक्य से विश्लेषण शुरू करते हैं. इस अंतर का महत्त्व केवल इतना ही नहीं है कि विश्लेषण किस दिशा में चल रहा है, बल्कि यह अंतर भाषा का स्वरूप और प्रकृति क्या है, भाषा का विश्लेषण किस रूप से सबसे प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है आदि मूलभूत प्रश्नों तथा उनके समाधान ढूँढ़ने के प्रयत्न के कारण है.

2.3. संरचनात्मक भाषाविज्ञान अपने को केवल स्वनिमिक तथा वाक्य विन्यास के विश्लेषण तक ही सीमित रखता है और भाषा के अर्थ पक्ष का विवेचन (या भाषा के प्रयोग के पीछे, अभिव्यक्ति के मूल में स्थित मन या उसके चिंतन के पक्ष को) भाषिक संरचना के विश्लेषण के लिए अनावश्यक मानता है. यह व्यवहारवादी सिद्धांत है, जो व्यवहार के मूल में नहीं जाता, बल्कि व्यवहार के विश्लेषण तक ही अपने को सीमित रखता है. उसके अनुसार भाषा आदतों का समुच्चय है, आदत से सीखी जाती है. इसके विपरीत चाम्स्की का सिद्धांत भाषिक रचना के व्यवहार तथा भाषा अर्जन के मूल में मन को मानता है, मन की शक्ति के रूप में भाषा विश्लेषण में अर्थ पक्ष को आधार मानता है. यह सिद्धांत मनोवादी या चिंतनपरक है. पहले भाषाविज्ञान में अर्थविज्ञान के नाम पर शब्दों में अर्थ परिवर्तन, अर्थ संकोच, अर्थ विस्तार, पर्याय, विलोम आदि प्रक्रियाओं का विश्लेषण होता था. लेकिन आधुनिक भाषाविज्ञान में अर्थ तथा संरचना दोनों परस्पर जुड़े हुए क्षेत्र हैं और एक को छोड़ दूसरे का अध्ययन असंभव-सा है.

3. भाषा की परिभाषा में आम तौर पर बताया जाता है कि भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है. अगर विचार का संप्रेषण ही भाषा मानी जा सके, तो हर प्रतीक व्यवस्था भाषा कहलाती. लेकिन भाषा में संप्रेषण के उद्देश्यों में विविधता है, जिसे निम्नलिखित आरेख द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं—

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
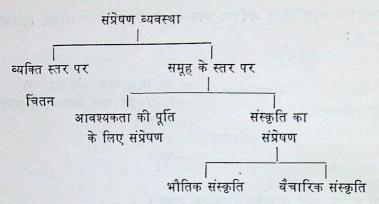
3.1. हम सब भाषा के ही माध्यम से विचार करते हैं, आत्म चिंतन करते हैं. यह हमारे लिए समझ पाना कठिन है कि प्राणी किस माध्यम से विचार करते होंगे, क्योंकि हम उनसे वैचारिक स्तर पर संप्रेषण नहीं कर सकते. दूसरी ओर प्राणियों का व्यवहार कई भिन्न कारकों से नियंत्रित होता है, जिनमें पैतृक स्वभाव, आदत, सहज ज्ञान प्रमुख हैं. वनस्पतिशास्त्री यह मानते हैं कि पेड़-पौधे सामने वाले के विचार जानते हैं और तदनुरूप प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं. यह तो शायद कहा नहीं जा सकता कि वनस्पति भी गुण-अवगुण में अंतर करते हैं. समस्त जैविक वर्ग आत्मरक्षा तथा आत्मानुरक्षण की भावना से अनुप्राणित होकर व्यवहार करते हैं. 'विचार' को इस जैविक 'चिंतन' से अलग करके देखना कठिन हो सकता है. लेकिन यह तो हम मान ही सकते हैं कि प्राणिवर्ग का चिंतन सूक्ष्म विचारों की कोटि तक नहीं पहुँचता होगा. इसका प्रमाण हमें बच्चों की भाषा सीखने की प्रक्रिया से मिलता है. बच्चों में भाषा विकास के साथ-साथ वैचारिक स्तर के प्रत्यय बोध का विकास तथा वैचारिक मूल्यों का विकास होता है. इस विकास का अपना निश्चित क्रम है, जो एक ओर आयु से संबद्ध है और दूसरी ओर संचयी है. यह विकास क्रम आजीवन चलता है. इस विकास के संचयी होने का तात्पर्य यह है कि (भाषा के माध्यम से) किन्हीं विचारों के सीखने के बाद ही संबद्ध अन्य विचार सीखे जा सकते हैं. उदाहरण के लिए काल या समय संबंधी विवरण मालूम होने पर ही व्यक्ति काल के बारे में विचार या चर्चा कर सकता है. इस तरह आधारभूत, अनुभूत प्रत्यय ज्ञान के अलावा अन्य सभी विचारों के लिए भाषा अनिवार्य है. अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण देना चाहूँगा. कई पिछड़ी जातियों में संख्या का सामान्य बोध ही दिखायी पड़ता है; व्यक्ति अपनी आवश्यकता के संदर्भ में सीमित दायरे में संख्याओं से काम चला लेता है. यह भी सीखा हुआ ज्ञान है. लेकिन वह बड़ी संख्याओं का निश्चित, व्यावहारिक ज्ञान नहीं रखता, जबकि आधुनिक युग के शिक्षित बच्चों में यह प्रत्यय-बोध

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिक विकसित है. हम कह सकते हैं कि इस प्रत्यय-बोध का विकास भाषा द्वारा ही संभव है. भाषा के माध्यम से, शिक्षा विचार शक्ति तथा तर्क शक्ति को बढ़ाने में सहायता करती है.

चिंतन एक ही मनुष्य के अंदर होता है, लेकिन यह सामान्य विचार-विनिमय से भिन्न नहीं है. यहाँ व्यक्ति स्वयं वक्ता और श्रोता दोनों भूमिकाएँ निभाता है. चिंतन की भाषा का संवाद से भिन्न दूसरा रूप भी नहीं है.

3.2. मनुष्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है. बच्चा भाषा के माध्यम से औरों को अपनी आवश्यकताओं की जानकारी देता है. हम भाषा का प्रयोग कर ख़रीदारी करते हैं, अपने काम करा लेते हैं, अपना जीवनयापन आसानी से करते हैं. इस संप्रेषण को हम प्राणिमात्र की विशेषता कह सकते हैं. प्राणी परस्पर अपने सीमित ध्वनि समुच्चय तथा स्पष्ट हाव-भाव (gestures) द्वारा अपने कुछ विचारों का संप्रेषण करते हैं. प्राणी मात्र प्रतीक व्यवस्था से संप्रेषण करते हैं, इस कारण वे सीमित संदर्भों में ही अभिव्यक्ति कर सकते हैं. मनुष्य की भाषा इस क्षेत्र (आवश्यकताओं के संप्रेषण) में भी अधिक सशक्त है. साथ ही आदमी ने भौतिक संस्कृति का समग्र विकास कर लिया है. अतः वह आवश्यकता की भाषा को भी जटिल संदर्भों में प्रयोग में लाने लगा है.

3.3. ऊपर चिंतन के संदर्भ में हमने देखा कि भाषा के बिना विचार संभव नहीं है. मनुष्य के विचार तथा अनुभव जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलते हैं, उसकी संस्कृति है. समाज का व्यक्तित्व ही उसकी संस्कृति है. प्राणियों में सामाजिक संगठन तो दिखायी पड़ता है, लेकिन संस्कृति नहीं. भाषा का अभाव ही इसका प्रमुख कारण है.

यह कहा जाता है कि भाषा और संस्कृति का अटूट संबंध है. इस उक्ति से यह लगता है कि दोनों अलग हैं और किसी रूप में जुड़े हुए हैं. हमारी समझ के लिए तथा विषय के विश्लेषण की सुविधा से दोनों को अलग करके देखा जा सकता है, लेकिन जीवन के कई क्षेत्रों में ये अनुस्यूत हैं. भाषा व्यक्तित्व के विकास का आधार है. भाषा भौतिक संस्कृति के विकास का आधार है. वस्तुओं के निर्माण में हाथ जितने उपयोगी हैं, उससे ज़्यादा है मनुष्य का संचित ज्ञान, जो भाषा के माध्यम से ही समाज को विरासत में मिलता है. वैचारिक संस्कृति की कल्पना भाषा के अभाव में संभव ही नहीं है. धर्म, जीवन मूल्य, साहित्य, कला (मुख्यतः भाषिक कलाएँ), शास्त्र–संस्कृति का कोई अंग ऐसा नहीं जो भाषा के अभाव में पनप सके. भाषा संस्कृति की वाहिका है और भाषा के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ियों में आगे बढ़ती है. भाषा संस्कृति की पोषिका है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही हम विचारों की गहराइयों में जा पाते हैं.

भाषा में फुटकर खाता अक्सर अहिंदी भाषा भाषी छात्र एक सवाल करते हैं कि

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्ता *राम और सीता* के साथ कौन-सी क्रिया होनी चाहिए–*करते हैं* या *करती हैं*? सुनने वाला प्राय: अपने ढंग से और अपनी सूझ से कोई तात्कालिक उत्तर दे देता है. बजट में हर मद में कोई राशि नियत होती है लेकिन अक्सर कई ऐसे ख़र्च होते हैं, जो किसी मद में नहीं आते. उन्हें फुटकर ख़र्च कहा जाता है. इसी तरह से भाषा में कुछ निश्चित व्याकरणिक कोटियाँ होती हैं. उनसे बचे प्रयोग फुटकर खाते में आते हैं.

हिंदी में दो लिंग हैं–पुल्लिग और स्त्रीलिंग. स्त्रीलिंग निश्चित व्याकरणिक कोटि है और पुल्लिग वह है जो स्त्रीलिंग नहीं है. अगर कर्ता में सिर्फ़ स्त्रीलिंग शब्द हो, तो क्रिया स्त्रीलिंग में आएगी, अन्यथा पुल्लिग में.

सीता और गीता बाज़ार जा रही हैं.

राम और सीता~सीता और राम बाज़ार जा रहे हैं.

1. जिन संदर्भों में निश्चित रूप से स्त्रीलिंग का बोध होता है, वहाँ स्त्रीलिंग क्रिया का प्रयोग अनिवार्य है. अगर उल्लिखित व्यक्ति या वस्तु के लिंग का निश्चित ज्ञान न हो, तो वहाँ पुल्लिग का प्रयोग होता है. उदाहरण के लिए निम्नलिखित प्रयोग देखिए–*कोई गा रही है* (जब मालूम हो कि गाने वाली स्त्री ही है). *अंदर कोई बैठा है* (जब व्यक्ति के लिंग का ज्ञान न हो). *अंदर कुछ पड़ा है* (*पड़ी है) (जब अंदर की चीज़ के बारे में कोई जानकारी न हो). *अंदर कोई चीज़ पड़ी है* ('चीज़' स्त्रीलिंग शब्द है). *अंदर कौन बैठा है?* (जब बैठे हुए व्यक्ति के बारे में जानकारी न हो). *अंदर कौन बैठी है?* (जब मालूम हो कि अंदर कोई स्त्री है और यह मालूम करना हो कि वह स्त्री कौन है). *माँ, कोई आया है* (जब आने वाले के बारे में घंटी से जानकारी मिले, लेकिन व्यक्ति के बारे में जानकारी न हो); *माँ देखो, कौन आया है* (जब व्यक्ति को देखने पर भी श्रोता को कोई जानकारी न देनी हो); *माँ देखो, कौन आयी हैं* (आने वाली स्त्री है और आदरणीय है, यह सूचना देने के लिए). इन सब प्रयोगों में स्त्रीलिंग ही निश्चित कोटि है, पुल्लिग संशयात्मक प्रयोग है और फुटकर खाता है.

1.1. कई प्रयोग ऐसे हैं, जिनमें पुल्लिग या स्त्रीलिंग का अंतर वास्तविक नहीं है. चूँकि हिंदी में क्रिया हमेशा किसी एक लिंग में प्रयुक्त होती है, इन संदर्भों में फुटकर खाते (पुल्लिग) का प्रयोग होता है. कारण यही है कि यहाँ स्त्रीलिंग के प्रयोग का आधार नहीं है. ऐसे कुछ प्रयोग देखिए–*मुझसे बैठा नहीं जाता* (*मुझ से बैठी नहीं जाती). *मुझसे खाया नहीं जाता* (*मुझसे आम नहीं खाया जाता, मुझसे चाय नहीं पी जाती* में क्रमश: 'आम', 'चाय' के कारण पुल्लिग तथा स्त्री-लिंग प्रयोग है). *कहा जाता है कि* · · ·, *मैंने देखा कि* · · ·, *मुझे जाना है, मालूम होता है कि* · · ·, *लगता है कि* · · ·. इन स्थानों में पुल्लिग का प्रयोग स्त्रीलिंग के अभाव में ही होता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1.2. *कल राम और उसकी सबसे छोटी बहन गीता आ रहे हैं*. इस वाक्य में निकटता के कारण 'गीता आ रहे हैं' खटकता है. ऐसे संदर्भों में *आदि, सब, दोनों, सभी* आदि समायोजक शब्द जोड़ देने पर हमेशा निश्चित स्त्रीलिंग के अभाव में क्रिया का पुल्लिग बहुवचन में प्रयोग कर सकते हैं. *राम, गीता दोनों आ रहे हैं. राम, गणेश, गीता, शीला सभी आ रहे हैं. यहाँ मिर्च, मसाले, अचार सब तैयार मिलते हैं* (~*सब चीज़ें तैयार मिलती हैं*). *यहाँ तरकारियाँ, फल आदि सस्ते हैं, दूध, दही आदि महँगे हैं.*

1.3. उच्चवर्गीय मनुष्येतर चेतन प्राणियों (देखें **लिंग**) में मूल शब्द फुटकर खाते में आता है, अतः शब्द आम तौर पर पुल्लिग हो जाता है (*शेर, चीता, भालू, गधा, घोड़ा, कुत्ता* आदि). स्त्रीलिंग शब्द (*शेरनी, मादा भालू* आदि) का प्रयोग तभी होता है जब संदर्भ के अनुसार यौन (sex) का उल्लेख करना आवश्यक हो. *गधी का दूध शरीर के लिए अच्छा होता है* (**गधे का*). आप किसी औरत को गाली देते *गधी* या *कुतिया* कह सकते हैं, *गधा* या *कुत्ता* नहीं. अन्यथा सरकस में 'शेर का खेल' शेरनी भी दिखा सकती है. *उसने एक भालू को देखा* में जानवर मादा भी हो सकता है. वास्तव में शेर, भालू आदि शब्द वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले प्राणियों का संकेत देते हैं, उनकी लैंगिकता (sex) का नहीं. लेकिन समाज में कुछ प्राणी ऐसे हैं जिनका वर्ग ही उनकी लैंगिकता पर निर्धारित होता है. जैसे *गाय, बैल, भैंस, भैंसा, भेड़, बकरी, बकरा* आदि. व्यक्ति गाय या बैल ख़रीद लाता है. दोनों का द्योतक शब्द एक नहीं हो सकता. त्योहार में बकरा कटता है या बकरी, इसका स्पष्ट उल्लेख शब्द के चयन से हो जाता है. लेकिन बताया जाता है कि गाय पालने में बैल का भी समाहार हो सकता है और बकरियाँ चराने में बकरे भी शामिल हो सकते हैं. लेकिन ऐसे संदर्भों में भी फुटकर खाता पुल्लिग ही होगा. *भैंस के पाड़ा हुआ* में जानकारी के अभाव में पुल्लिग का प्रयोग ही प्रचलित है. स्मरणीय है कि बकरे या भेड़ के बच्चे मेमना के लिए स्त्रीलिंग शब्द ही नहीं है. लेकिन सामान्य रूप से मवेशियों की चर्चा करते हुए हम यौन या लैंगिकता को ध्यान में रखते हैं और सुविधानुसार वर्ग प्रतिनिधित्व मानते हैं. इसका आधार हमारे लिए सिर्फ़ अर्थपरक ज्ञान नहीं, बल्कि समाज में इन प्राणियों का महत्त्व है. निम्नवर्गीय चेतन मनुष्येतर प्राणियों में शब्द के लिंग का प्राणी की लैंगिकता से कोई संबंध नहीं है. विस्तृत चर्चा के लिए **लिंग** देखें.

2. भाषा में फुटकर खाता केवल लिंग या वचन से संबंधित नहीं, बल्कि भाषा के सभी अंगों में दिखायी पड़ता है. कृदंतों के संदर्भ में आप देखेंगे कि पूर्ण पक्ष निश्चयात्मक कोटि है और अपूर्ण पक्ष फुटकर खाता (अर्थात जो पूर्ण नहीं, वह अपूर्ण है). अगर हम यह व्यवस्था न अपनाएँ, तो *करता है* आदि अपूर्ण पक्ष के प्रयोगों की विविधता का समाधान नहीं दे सकेंगे. भाषा की सभी व्याकरणिक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोटियों में हम फुटकर खाते की बात कर सकते हैं, स्वनिमिक संरचना में हम किन्हीं संस्वनों को निश्चित स्थानों में देखते हैं, तो एक संस्वन को 'शेष सभी स्थानों में' देख सकते हैं. शब्दार्थ में किन्हीं पर्यायों में किसी एक पर्याय को उस परिवेश के अन्य सभी अर्थों के लिए सुरक्षित रखते हैं. इस तरह फुटकर खाता भाषा की रचना में व्यापक तथा आवश्यक प्रक्रिया है. इसे न जानने के कारण ही वैयाकरण प्रायः नियम निर्धारण में गलती करते हैं और 'अपवाद' के जाल में फँसते हैं.

सर्वनामों के संदर्भ में आदरार्थ एकवचन में दो रूप हैं–*तुम*, *आप*, जिनके बहुवचन रूप होंगे–*तुम लोग*, *आप लोग*. सर्वनामों में *तुम* निश्चित कोटि है, *आप* फुटकर खाता. अर्थात संबोधित व्यक्तियों में सभी व्यक्ति वक्ता के लिए 'तुम' वर्ग के हों, तभी वह *तुम लोग* का प्रयोग कर सकेगा. अगर संबोधित व्यक्तियों में एक भी 'आप' वर्ग का हो, तो संबोधन *आप लोग/सब/दोनों* आदि होगा.

यह नहीं कि केवल हिंदी में ही यह बात हो. प्रायः सभी भाषाओं में फुटकर खाते की बात देखी जा सकती है. गुजराती, मराठी तथा द्रविड भाषाओं में एक रोचक व्यवस्था दिखायी पड़ती है (यद्यपि पहली दो भाषाओं तथा द्रविड भाषाओं में लिंग व्यवस्था भिन्न प्रकार की है). चूँकि इन भाषाओं में तीन लिंग हैं, नपुंसक लिंग यहाँ फुटकर खाता है और शेष निश्चयात्मक कोटियाँ. इस तरह फुटकर खाते की आंतरिक व्यवस्था सभी भाषाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार की होगी, भाषा की प्रकृति तथा व्यवस्था के अनुसार होगी.

मकान मालिक, मकानदार इसमें प्रयोग के हिसाब से पहला शब्द अधिक प्रचलित है, उपयुक्त है. हिंदी में -दार भौतिक वस्तुओं के धारक या मालिक के रूप में नहीं आता, बल्कि सूक्ष्म भाव या विचार के संदर्भ में ही आता है (*हिस्सेदार*, *ज़िम्मेदार*, *इज़्ज़तदार*, *मज़ेदार*). 'मकान मालिक' के लिए उर्दू शैली में *मालिक ए मकान* भी चलता है.

मत देखें **न, नहीं, मत, ना.**

मदद 1. मराठी भाषी अपनी भाषा की वर्तनी के कारण इसे 'मदत' लिखते हैं. यह भी उल्लेखनीय है कि हिंदी में दो /द/ से अंत होने वाले शब्द विरल हैं. शायद यही इस दोष का कारण है.

2. मदद स्त्रीलिंग शब्द है. इसका बहुवचन प्रयोग *मददें नहीं मिलता. यह भाव *बहुत मदद* से प्रकट होता है. लेकिन इसका अरबी बहुवचन रूप *इम्दाद*~*इमदाद* अधिकतर उर्दू की साहित्यिक शैली में चलता है ।

मन 1. यह शब्द संस्कृत *मनस्*~*मनः* से हिंदी में आया है (देखें **-स्**). इसका

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथमा विभक्ति रूप *मनः* है और हिंदी में विसर्ग के लोप से यह *मन* बना है. संस्कृत से गृहीत व्युत्पन्न शब्दों में *मनः* का रूप देखा जा सकता है (देखें **विसर्ग संधि**). *मनस्ताप, मनस्वी, मनोबल, मनोभाव, मनोयोग, मनोवेग, मनोरम* आदि द्रष्टव्य हैं.

2. *मनोकामना* सादृश्य से बना गलत शब्द है, लेकिन बहुत प्रचलित है. *मनःस्थिति* (*मनोस्थिति) का विकल्प नहीं है. यह शब्द /मनस्स्थिति/ (न पर बल) उच्चरित होता है.

मना मैं अपने नौकर को यह कह कर श्री गुप्त के पास भेजता हूँ 'उनसे पूछ कर आओ कि क्या उनके पास गैस का सिलिंडर आ गया है.' वह आ कर कहता है 'गुप्ता जी **मना** कर रहे हैं.' श्री गुप्ता ने 'नहीं' कहा है, उन्होंने उत्तर देने से इनकार नहीं किया है. *मना* निषेधार्थक है. *हमने बच्चे को मना किया. मुझे बोलने दो, मना मत करो. गणेश ने दिनेश से काम करने को कहा, लेकिन पिता जी ने मना कर दिया.* पुनःकथन (reported speech) में 'नहीं' कहने के लिए *मना करना* का प्रयोग भ्रामक है. इस संदर्भ में पुनःकथन होगा—उन्होंने '*ना*' *कहा*.

2. *मना* निषेधसूचक विशेषण है. *अंदर आना मना है. सिगरेट पीना मना है.* जिस व्यक्ति से कार्य अपेक्षित है, वह काम से इनकार करता है; जो कार्य में रत है, उसे दूसरे मना करते हैं.

3. *मना* से बनी संज्ञा *मनाही* है. *यहाँ बोलने की मनाही है. यहाँ किसी बात की मनाही नहीं.* देखें **ह**.

मनाना, मनवाना 1. इनके कई अर्थ हैं—एक है *त्योहार मनाना, दीवाली मनाना, ख़ुशियाँ मनाना* से व्यक्त अर्थ. त्योहार मनाया जाता है, दीवाली मनायी जाती है. कुछ लोग त्योहार मनने और दीवाली मनने का प्रयोग भी करते हैं. ये सीमित स्थानीय प्रयोग हैं, मानक नहीं. *?त्योहार मनवाना* आदि संभावित रूप हैं.

2. आप नाराज़ होते हैं किसी पर, तो वे मान जाते हैं. उन्हें आप मनाते हैं, तो वे मान छोड़ देते हैं. ऐसे लोग बात-बात पर मान जाते हैं और आप से मनवाते हैं. आप जब तक न मनाएँ वे रूठे ही रहते हैं. इस संदर्भ में आये 'मनाना' के विविध रूपों तथा उनके अर्थ को देखिए. यह पहले अर्थ से बहुत भिन्न है (देखें **मान**).

3. कोई व्यक्ति आप की बात नहीं मानता. आप उसे समझा-बुझा कर अपनी बात मनवाते हैं. लेकिन इस तरह मानने के लिए राज़ी करने का अर्थ *मनाना* से प्रकट नहीं होता. अपनी बात मनवायी ही जा सकती है, मनायी नहीं जाती. इस तरह वे आप की बात मान लेते हैं या मान जाते हैं. यहाँ का *मान जाना* ऊपर 2 के 'मान जाना' से भिन्न है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मय···के यह परसर्गीय शब्द 'के साथ' का पर्याय है. *मय ब्याज के मैंने मूल लौटा दिया है*~*मैंने मूल मय ब्याज के लौटा दिया है*. फ़ारसी मूल के इस पर-सर्गीय शब्द में संज्ञादि शब्द बीच में ही आते हैं और कहीं *के मय का रूप नहीं मिलता. उल्लेख है कि *अलावा···के*, *सिवा···के*, *बिना···के*, *वगैर···के*, *बनिस्बत···की* आदि खंडित परसर्गीय शब्द के *अलावा* आदि रूपों में भी आते हैं.

मराना 'मारना' से दो प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं–*मराना* और *मरवाना*. किसी को किसी व्यक्ति या प्राणी को मारने के लिए प्रेरित करना *मरवाना* है. *सेठ ने गुंडों से कमलनाथ को मरवा दिया*=*गुंडों ने मौका पा कर कमलनाथ को मार दिया*. ध्यान रखें और इस अर्थ में *मराना* का प्रयोग न करें. *मराना* सिर्फ़ गाली में (*गाँड़ मराना*) प्रयुक्त होता है. **सेठ ने कमलनाथ को मरा दिया*. 'मारना' दोनों संदर्भों में प्रयुक्त होता है.

महत्व यह मूलतः संस्कृत का शब्द है, जो महत्+त्व के योग से बना है. इस कारण इसमें <त्त> का गुच्छ आता है. लेकिन इस समय लेखन में अधिकतर व्यक्ति *महत्व* ही लिखते हैं. केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने *महत्व* को ही मान्यता दी है. शायद इसका यही कारण है कि उच्चारण में इस शब्द के दोनों रूप लगभग समान हैं. लेकिन उच्चारण में एक सूक्ष्म अंतर है–द्वित्व की स्थिति में /ह/ पर बल पड़ता है. अगर वर्तनी को सुरक्षित रखना चाहें, तो उच्चारण की इस विशेषता से सह-योग ले सकते हैं.

महाप्राण व्यंजन 1. स्पर्श व्यंजनों के हर वर्ग का दूसरा और चौथा स्वन (/ख, घ/ आदि) महाप्राण होता है. हिंदी में स्पर्श महाप्राण स्वनों के अलावा /न्ह म्ह ल्ह व्ह/ भी महाप्राण व्यंजन हैं.

2. महाप्राण स्वन के उच्चारण में मूल स्वन के उच्चारण के साथ ही गले से एक अतिरिक्त भभका निकलता है. यह भभका स्वन का अनुवर्ती नहीं, सह उच्चारण है. अहिंदी भाषी जो इस विशेषता को सीख नहीं पाते, /ख/ को /कह/, /भ/ को /बह/, /झ/ को /जह/ आदि बोलते हैं. /ख/ आदि एक स्वन हैं, स्वन क्रम नहीं.

3. स्पर्श महाप्राण स्वन संस्कृत से आये हैं और शब्द के प्रायः सभी स्थानों में आते हैं. शेष महाप्राण स्वन भाषा में स्वन परिवर्तन के साथ विकसित हुए हैं. *उन्हें*, *तुम्हें* में ये आंतरिक स्वन विकास के कारण हैं. इन्हें *उन*+*हें* या *तुम*+*हें* बोलना गलत है. संस्कृत से आये ह्न (*चिह्न*), ह्म (*ब्राह्मण*, *ब्रह्म*), ह्व, ह्ल (*विह्वल*, *प्रह्लाद*) क्रमशः /न्ह म्ह व्ह ल्ह/ उच्चरित होते हैं. /ल्ह/ का उच्चारण *कुल्हाड़ी*, *कुल्हड़* में देख सकते हैं. /र्‌ह/ का महाप्राण उच्चारण उर्दू शैली ही की विशेषता है, जहाँ /तर्‌हा/ (तरह) बोला जाता है. स्वन परिवर्तन के कारण

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिन्ह, ब्राम्हण आदि शब्द लिखे भी जाते हैं, जो अभी स्वीकृत नहीं हैं. इन व्यंजनों का वितरण सीमित है. /न्ह, म्ह/ स्वर मध्य तथा शब्दांत में आते हैं, /ल्ह व्ह/ स्वर मध्य में आते हैं.

4. हिंदी के गुच्छों में कहीं दो महाप्राण स्वन साथ नहीं आते, अल्पप्राण + महाप्राण का गुच्छ संभव है. यही बात वर्तनी में भी है. **पथ्थर*, **चिठ्ठी* आदि रूप गलत हैं और यह गलती अहिंदी भाषी ही नहीं, हिंदी भाषी भी करते हैं.

महीनों के नाम 1. हिंदी प्रदेशों की परंपरा के अनुसार वर्ष की गणना विक्रम संवत के अनुसार की जाती है. विक्रम संवत में महीनों के नाम निम्न प्रकार हैं (मूल संस्कृत नाम कोष्ठक में दिये गये हैं और हिंदी के तद्‌भव रूप कोष्ठक से पहले)–

1. चैत (चैत्र)
2. बैसाख (वैशाख)
3. जेठ (ज्येष्ठ)
4. असाढ़~आसाढ़ (आषाढ़)
5. सावन (श्रावण)
6. भादों (भाद्रपद)
7. क्वार (आश्विन)
8. कातिक (कार्तिक)
9. अगहन (अग्रहायण या मार्गशीर्ष)
10. पूस (पौष)
11. माघ (माघ)
12. फागुन (फाल्गुन)

अंतरराष्ट्रीय गणना के अनुसार चैत मार्च-अप्रैल में पड़ता है और इसी क्रम से अन्य महीनों के समय के बारे में जान सकते हैं. फागुन का महीना फ़रवरी-मार्च में पड़ता है.

2. आजकल हिंदी प्रदेशों में ही नहीं, बल्कि सारे भारत में अंतरराष्ट्रीय महीनों के नाम (जिन्हें अंग्रेज़ी महीने कहते हैं) तथा वर्ष गणना की पद्‌धति अधिक प्रचलित है. 'अंग्रेज़ी' महीनों के नाम आगे दिये जा रहे हैं–*जनवरी फ़रवरी मार्च अप्रैल मई जून जुलाई अगस्त सितंबर अक्तूबर नवंबर* तथा *दिसंबर*.

3. भारतीय परंपरा के अनुसार वर्षों की गणना अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग प्रकार से होती थी. अखिलभारतीय स्तर पर एकरूपता लाने तथा अंग्रेज़ी पद्‌धति की जगह एक विशुद्‌ध भारतीय पद्‌धति अपनाने के उद्‌देश्य से भारत सरकार ने कुछ वर्ष पहले शक संवत चलाया था. यह सरकारी सुधार अभी तक नहीं चल पाया है, शायद आगे चल पड़े.

मान इसका एक अर्थ है 'आदर, इज़्ज़त'. *उन लोगों ने मुझे बहुत मान दिया. मान-सम्मान के बिना ज़िंदा रहना मौत के समान है. उसने अपने दोस्त रतन पर मानहानि का दावा किया.* 'मान रखना' उचित जगह मान या आदर में कमी न आने देने का अर्थ व्यक्त करता है.

2. *मान करना* एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है 'रूठना'. इसी अर्थ में रूठने की समाप्ति के लिए '*मान जाना*' भी प्रयुक्त होता है. काव्यों में मानिनी नायिकाओं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के मान के बारे में बहुधा विवरण मिलते हैं. बोलचाल में *मान जाना* दो अर्थों में प्रयुक्त होता है–मान करना (रूठना) और मान छोड़ देना. *मान करना* साहित्यिक शब्द है, बोलचाल का नहीं.

3. *मान* किसी व्यापार या आचरण के स्तर या मूल्य को आँकने की इकाई है. यह शब्द स्वतंत्र रूप से कम प्रयोग में आता है. मानदंड (yard-stick–मुहावरेदार अर्थ में) आदि संयुक्त शब्दों में इसे देख सकते हैं. *नैतिकता के मानदंड*, *व्यवहार के मानदंड* द्रष्टव्य हैं.

मानक देवनागरी लिपि 1. देवनागरी हिंदी की लिपि है. संक्षेप में कुछ लोग इसे नागरी भी कहते हैं. देवनागरी लिपि कई सौ शताब्दियों से संस्कृत तथा हिंदी के लेखन के लिए प्रयुक्त होती रही. इस कारण इसमें प्रादेशिक या क्षेत्रीय अंतर आ गये. हिंदी की लिपि को मानक स्वरूप देने के लिए कई सुधार प्रस्तुत किये गये, जिनके बारे में आप हिंदी भाषा के इतिहास पर लिखे गये ग्रंथों से विवरण प्राप्त कर सकते हैं. भारत सरकार के प्रयत्नों से देवनागरी लिपि को 1959 में मानक रूप दिया जा चुका था, जिसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय के एक प्रकाशन (1967) में स्पष्ट किया गया है. इस ग्रंथ में मानक देवनागरी के ही नहीं, बल्कि और भारतीय भाषाओं को हिंदी में लिप्यंतरित करने के लिए भी चिह्न सुझाये गये हैं.

2. उक्त ग्रंथ के अनुसार मानकीकृत देवनागरी लिपि के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव हैं–

(अ) आगे दिये गये वर्णों में पहला मानक वर्ण होगा, आगे कोष्ठक में दिया गया वर्ण अमानक–

अ (अ)	ख (ख)	छ (छ)	झ (झ)
ण (ण)	ध (ध)	भ (भ)	ल (ल)
श (श)	क्ष (क्ष)		

(आ) संयुक्त वर्ण बनाने की निम्नलिखित विधि निश्चित की गयी है–(1) जिन वर्णों के अंत में खड़ी पाई हो, उनका संयुक्त (आधा) रूप पाई हटाने से बनता है. ऐसे वर्ण हैं–ख ग घ च ज ण त थ ध न प ब भ म य ल व श ष स क्ष ख़ ज़ (हिंदी की मानक वर्तनी में ञ की ज़रूरत नहीं है और ङ ड़ से हिंदी में कोई शब्द नहीं है). इन वर्णों से बने कुछ उदाहरण देखिए–*मुख्य ग्यारह विघ्न कच्चा लज्जा पुण्य त्याग तथ्य ध्यान न्याय प्यार ब्याह सभ्य म्यान शय्या कल्याण व्यास श्वास शिष्य स्नान लक्ष्य सख़्त इज़्ज़त*. (2) क तथा फ़ की आगे की रेखा छोटी करने पर इनके संयुक्त रूप बनते हैं. *पक्का मुफ़्त*. (3) यह सिफ़ारिश है कि र के सभी गुच्छों को पूर्ववत रखा जाए. अन्य व्यंजनों से पहले का /र/ व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है (*तर्क, पर्व, गर्व, मर्म, पूर्वी*), र+र का गुच्छ <र्र> लिखा जाता है,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यंजनों से बाद का /र/ व्यंजन के नीचे लिखा जाता है (क्रम, भ्रम, द्रव, प्राण, ध्रुव) और कुछ व्यंजनों के नीचे इसका रूप भिन्न होता है (ट्रेन, ड्रेस). कुछ पत्रिकाओं में व्, ह्, भ् आदि रूप भी छपते थे; ये वर्ण अमानक हैं. चूँकि र के सभी वर्णों को पूर्ववत रखने की सिफ़ारिश की गयी थी (जिसमें मात्रा ृ भी शामिल है) आगे वे वर्ण पुराने रूप में हैं–रु रू श्र शृ ह्ल ह्व. इसका कारण इन वर्णों की बनावट की सुगढ़ता को सुरक्षित रखना है, हालाँकि त्र दृ आदि नये, मानक रूप हैं. (4) शेष सभी वर्णों का संयुक्त रूप नीचे हलंत लगाने से बनता है. *उच्छ्वास नाट्य पाठ्यक्रम धनाढ्य विद्या विह्वल*. इस परिवर्तन के कारण पुराने कई संयुक्त वर्ण (द्ध द्य द्व ह्म द्द ट्ठ च्च ह्य द्द द्म क्त न्न क्क त्त ह्न ह्ल ल्ल आदि) अमानक हो गये हैं.

(इ) वर्तनी की दृष्टि से वर्गीय व्यंजनों से पहले आधे वर्ण की जगह पहले वर्ण के ऊपर अनुस्वार लिखने की संस्तुति है (*अंक, चंचल, पंडित, अंतर, संभव* आदि). इस सुझाव के कारण आगे लिखे शब्दों की वर्तनी अमानक होगी (देखें **पंचमाक्षर**)–*पङ्कज~पङ्‌कज, चञ्चल, पण्डित, सम्बन्ध* आदि.

इस पुस्तक में इसी नयी पद्धति का पालन किया गया है.

3. यहाँ हम मानक लिपि के वर्णों को लिखने की विधि के बारे में विचार करेंगे. यद्यपि केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने वर्णों के ऊपरी रूप तथा वर्तनी की कुछ बातों के संबंध में सुझाव दिये हैं, फिर भी वर्णों की आकृति, अनुपात तथा वर्णों की रेखा-इकाइयों के सापेक्ष महत्त्व के बारे में कुछ नहीं कहा है. मैंने वर्णों के निरीक्षण के आधार पर उन बातों का विवरण देने का यत्न किया है.

(क) अंग्रेज़ी के लिपि रोमन के वर्ण लिखने के लिए चार लाइनें चाहिए, क्योंकि वर्णों का मध्य भाग प्रायः गोलाकार होता है. जैसे,
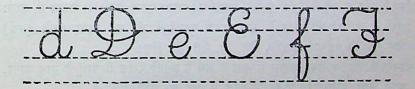
हिंदी के वर्णों की बनावट तथा अनुपात स्पष्ट करने के लिए पाँच लाइनों वाली पुस्तिका चाहिए होगी, क्योंकि हर वर्ण के मध्य भाग का महत्त्व है. उदाहरण के लिए–

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
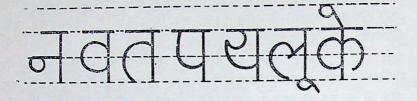
इन सभी वर्णों में मध्य रेखा पर रचना होती है या रेखाएँ मध्य भाग में आकर जुड़ती हैं या मध्य से बराबर की दूरी पर रचना होती है. यह नागरी में वर्णों की पहली विशेषता है.

(ख) नागरी वर्णों को लिखने का सामान्य क्रम ऊपर से नीचे (↓) तथा बायीं से दायीं तरफ़ को है (→). यह क्रम आगे दी गयी तालिका से स्पष्ट हो सकता है. ⟨क⟩ लिखने का क्रम है—० व क क. कई व्यक्ति त ल ज वर्णों का लेखन खड़ी पाई से शुरू करते हैं. लेकिन अधिकतर वर्ण (च प म न अ स घ आदि) कभी खड़ी पाई से शुरू नहीं किये जाते. पहले खड़ी पाई से लिखने से कहीं भ्रम भी हो सकता है. जैसे ⟨व⟩ को खड़ी पाई से शुरू करें, तो बना वर्ण ⟨व⟩ समझा जाएगा.

(ग) वर्णों में मात्रा की स्थिति : वर्णों में मात्रा की स्थिति के बारे में देखने से पहले वर्णों को आकार के अनुरूप वर्गीकृत कर लेना उपयोगी होगा. हिंदी के वर्णों के ऊपर शिरोरेखा होती है और वर्ण शिरोरेखा को एक या दो या तीन स्थानों में स्पर्श करते हैं. ऊपर की मात्राएँ (जो बाद में लगती हैं) आख़िरी स्पर्श बिंदु पर पड़ती हैं. अनुस्वार, अनुनासिकता तथा रेफ के चिह्न मात्रा लगने के बाद उनके आगे लगते हैं (*खीं, माँ, भर्ती*).

तीन मात्राएँ (ु ू ृ) वर्णों के नीचे लिखी जाती हैं. ये मात्राएँ नीचे के आख़िरी स्पर्श बिंदु में लगती हैं (कु पू सृ). इकार की मात्रा मुद्रण में हो या लेखन में, प्रायः एक ही आकार की होती है. इस कारण गुच्छों में भी यह मात्रा पहले (अर्ध) वर्ण तक ही पहुँचती है (*ति, स्ति, र्ति, र्त्ति, र्ति, र्स्ति*).

मानना 1. बात मानना, कहना मानना के अर्थ में इसकी रंजक क्रियाएँ हैं *मान जाना*, *मान लेना*. इसी तरह न मानने वाले से बात मनवायी जाती है.

2. 'रूठना' के अर्थ में *मान जाना* प्रयुक्त होता है. मान जाने वाले को लोग मनाते हैं, वे लोगों से मनवाते हैं. रूठना छोड़ने के लिए भी *मान जाना* ही प्रयोग में आता है.

3. लोग भगवान से मनौती मानते हैं. इच्छा पूरी होने पर वे मनौती पूरी करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. लोग धर्मों को मानते हैं. लेकिन धार्मिक त्योहार आदि मनाये जाते हैं. इस 'मनाना' का *मानना* से संबंध नहीं है.

मापना, नापना परिमाण वाले द्रव पदार्थों को मापा जाता है. माप लिटर, गैलन आदि में होता है. कभी-कभी द्रव पदार्थ (घी, तेल आदि) किलो में तोल कर भी दिये जाते हैं. दूरी, लंबाई आदि नापी जाती है. नापने का मानदंड इंच, मीटर, मील, किलोमीटर आदि है. गरमी को 'तापमापी यंत्र' से माप सकते हैं. मुहावरेदार प्रयोग में *नपी-तुली बातचीत* (जिसमें हर शब्द सोच कर बोला जाता है और कोई अनावश्यक बात नहीं कही जाती) रोचक उदाहरण है.

मारना 1. इसका अर्थ है हाथ से या हथियार से किसी पर आघात करना. *राम ने मुझे मारा. मैं चोर नहीं हूँ, मुझे मत मारो. तुम बच्चों से लड़ाई करते हो और उन्हें मारते हो. मैं तुम्हें बहुत मारूँगा.*

2. *मारना* से बनने वाली एक रंजक क्रिया है *मार डालना*. इस का अर्थ है 'हत्या करना'. इस प्रयोग को कभी-कभी *जान से मार डालना* भी कहते हैं. *डाकुओं ने चार लोगों को जान से मार डाला. तुम ने ही उसको मार डाला. मैं तुम्हें मार डालूँगा.* 'मार देना' भी ज़्यादातर इसी अर्थ में आता है.

3. जब मारना शारीरिक आघात पहुँचाने के उद्देश्य से हो और मारने के लिए किसी साधन का उपयोग होता हो, तो प्रयोग बनते हैं *डंडा मारना, पत्थर मारना* आदि. 'मारना' के प्रकारों में प्रयोग होते हैं *लात मारना, चाँटा मारना, घूँसा मारना*. इन प्रयोगों में 'ने' प्रकार के वाक्य बनते हैं और 'मारना' के संयोग में जो शब्द आते हैं, उनके अनुसार क्रिया बदलती है. *मैंने लात मारी, मैंने घूँसे मारे, मैंने डंडा मारा, लड़कों ने पत्थर मारे.*

5. 'मारना' के कुछ विशेष प्रयोग हैं, *धक्का मारना* (~*धक्का देना*), *ज़ोर मारना* (काम तीव्रता से करना), *आँख मारना* (आँख से इशारा करना आदि).

6. चूँकि हिन्दी में 'नहीं' के साथ रंजक क्रिया नहीं आती उपर्युक्त तीनों प्रकार के वाक्यों में क्रिया एक ही रहेगी. *मुझे राम ने नहीं मारा. उसको डाकुओं ने नहीं मारा.* ऐसे वाक्यों में आप अर्थ को संदर्भ से ही समझ सकते हैं.

माल देखिए **सामान, माल**.

मिथ्यावाच्य देखें **वाच्य—अकर्तृत्वबोधक.**

मिलना 1. प्राप्तिकर्ता जब बिना दाता के उल्लेख के केवल प्राप्ति (या अप्राप्ति) की घटना का उल्लेख करे, तो *मिलना* से वाक्य बनेगा, (प्राप्ति)कर्ता का प्रयोग 'को' के साथ होगा. *मुझे बाज़ार में कहीं मक्खन नहीं मिला. हमें कल वेतन मिलेगा? अभी तुम्हें फ़ुर्सत नहीं मिली?* ऊपर के अर्थ में कुछ कर्तृक वाक्यों में *पाना* का प्रयोग हो सकता है. *काम से फ़ुर्सत पा कर, ?वेतन पाने की तारीख़ 15 है.* ध्यान दीजिए कि प्रथम वाक्य में *मिल* का प्रयोग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं हो सकता, क्योंकि *पा कर* वाले वाक्य में दोनों उपवाक्यों का कर्ता एक होगा, अतः यहाँ *मिल कर* नहीं आ सकता. यह कहा जा सकता है कि जहाँ *मिल* का उल्लेख सही न हो, वहाँ *पा* उसका स्थान लेती है. कुछ अन्य संदर्भों में भी दोनों आ सकते हैं. लेकिन **क्या आप ने वेतन पा लिया ? *मैं मक्खन कहाँ पाऊँगा?* आदि प्रयोग की दृष्टि से गलत वाक्य हैं. इसका कारण यह है कि इन दोनों वाक्यों की प्राप्ति कोई बड़ी उपलब्धि नहीं, बल्कि साधारण घटना है. *पाना* द्वारा वास्तव में उपलब्धि सूचित होती है, जिसे कर्ता श्रम और साधना द्वारा अर्जित करे—*उसने परीक्षा में सफलता पायी* (~*उसे· · ·मिली*). *जैसा बोओगे वैसा पाओगे*.

2. *मिलना* परस्पर व्यापार की क्रिया है. एक कर्ता होता है और सहकर्ता का उल्लेख *से* से होता है. *राम गोपाल से मिला* (~*राम और गोपाल एक दूसरे से मिले*). *! मैं आप से मिलना चाहता हूँ, लेकिन आप मुझ से मिलना नहीं चाहते.* कई विद्वान *राम को मिलना* और *राम से मिलना* में अंतर बताते हैं. *राम को बाज़ार में मोहन मिला* (तात्पर्य यह कि राम ने मोहन को देखा, लेकिन दोनों नहीं मिले). *राम से मोहन मिला* (मुलाकात की पहल मोहन ने की, दोनों एक दूसरे से मिले).

2.1. *मिलना* के इस अर्थ में कई मुहावरेदार प्रयोग हैं. *मिल-जुल कर रहना, मिल कर काम करना, मन मिलना, मिली भगत, मिलनसार* आदि.

2.2. इसी संदर्भ में दो चीज़ों का योग या संयोजन *मिलना* द्वारा अभिव्यक्त होता है. *दूध में पानी मिला हुआ है. पीला रंग और नीला रंग मिल कर हरा हो जाते हैं.*

3. केवल 2 के शब्दों के संदर्भ में प्रेरणार्थक क्रिया 'मिलाना' का प्रयोग होता है, 1 के संदर्भ में नहीं.

मुकदमा यही सही शब्द है, *मुकद्दमा* गलत है.

मुझे आप को कुछ रुपये देने हैं इस वाक्य में एक प्रकार का श्लेष है, क्योंकि यहाँ कर्ता, प्राप्तिकर्ता दोनों में परसर्ग *को* लगता है. आप दोनों वाक्यांशों को दोनों अर्थों में ले सकते हैं. हिंदी भाषी यह वाक्य बोल कर श्लेष का आनंद लेते हैं, क्योंकि वक्ता, श्रोता दोनों अपने को प्राप्तिकर्ता मानते हैं.

आम बोलचाल में इस वाक्य की संदिग्धता को दूर करने के लिए इसे दूसरे प्रकार से बोला जाता है :

मेरे आप पर दस रुपये बाकी हैं ('मैं' प्राप्तिकर्ता)

आप के मुझ पर दस रुपये बाकी हैं ('आप' प्राप्तिकर्ता)

मुस्कराना 1. इस शब्द का सामान्य उच्चारण 'मुस्कुराना' है. लेखन में कहीं-कहीं *मुस्कुराना* भी मिलता है, जबकि *मुस्कराना* मानक रूप है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में, के अंदर 1. में परसर्ग शब्द है और इसके कई प्रयोगगत अर्थ हैं; के अंदर परसर्गीय शब्द है, जो मूल शब्द अंदर के अर्थ के कारण सीमित अर्थ व्यक्त करता है. यह किसी स्थान विशेष, जो घिरा हुआ हो और उसे 'बाहर' की स्थिति से अलग पहचाना जा सके, के संदर्भ में प्रयुक्त होता है. *घर के अंदर* (भीतरी भाग के संदर्भ में), *बक्से के अंदर*. स्थानवाचक के रूप में में, के अंदर में सूक्ष्म अंतर है और इस कारण पर्याय बन गये हैं. *उसने स्कूल में/के अंदर प्रवेश किया*. लेकिन जहाँ में भौतिक रूप में स्थानवाचक नहीं, वहाँ के अंदर का प्रयोग भ्रमात्मक है. *उसने स्कूल में दाख़िला लिया (?के अंदर)*.

2. इस अंतर के बावजूद आधुनिक बोलचाल की भाषा में दोनों लगभग सभी प्रसंगों में पर्याय बनते जा रहे हैं. निम्नलिखित प्रयोग देखें, जिनमें बहुधा के अंदर का विकल्प मिलता है. *चारों में राम बड़ा है. इस पुस्तक में कई अच्छी कहानियाँ हैं. उसमें कई अच्छी बातें हैं. इस कंपनी में कई लोग काम करते हैं. दुनिया में कई गरीब मुल्क हैं. घर में जो बातें होती हैं*' '.

3. शुद्धतावादी, परंपरात्मक वैयाकरण के अंदर के इस प्रयोग वैशिष्ट्य को मानने से हिचकेंगे, लेकिन यह प्रयोग प्रचलन में तेज़ी से आता जा रहा है. मैं अपनी ओर से मानता हूँ कि कुछ स्थान ऐसे हैं, जहाँ प्रयोग में अंतर को बनाये रखना आवश्यक होगा. *एक साल में* अवधि की सूचना देता है, *एक साल के अंदर* अवधि की उच्चतम सीमा सूचित करता है. ऐसे स्थलों में अंतर का समाप्त होना भाषा की अभिव्यक्ति की सशक्तता में बाधा उपस्थित करता है. कम से कम यहाँ शुद्धतावादी बनना उपादेय होगा. इसी तरह *चार रुपये में, चार रुपये के अंदर; एक गज़ में, एक गज़ के अंदर; एक टन में, एक टन के अंदर* आदि इकाई सूचक वाक्यों में इन दोनों के प्रयोगगत अंतर को बनाये रखना ज़रूरी होगा.

4. समान व्यवस्था के संदर्भ में **से, के साथ** देखें.

म्ह 1. यह /म/ का महाप्राण रूप है, न कि म+ह का गुच्छ. इस कारण शब्दों में जब यह आए, तो अक्षर सीमा इसके पहले या बाद में पड़ती है, न कि म और ह के बीच में. अन्य भाषा भाषी /तुम्हारा/ का उच्चारण करते समय तुम+हारा का अक्षर विभाजन करते हैं, जो कि गलत है. यहाँ अक्षर विभाजन होगा तु+म्हा +रा. तुलना में देखिए /लमहा/ लम+हा, जहाँ दोनों व्यंजन अलग-अलग अक्षरों में पड़ते हैं.

2. ⟨म्ह⟩ का प्रयोग हिंदी में बहुत कम शब्दों में मिलता. *कुम्हार* (<संस्कृत कुंभकार), *कुम्हड़ा* (<संस्कृत कूष्मांड), *सम्हलना* (<संस्कृत सं+भर), *कुम्हलाना, तुम्हारा, तुम्हें, तुम्हीं* आदि.

3. *ब्रह्म, ब्राह्मी* आदि शब्दों का उच्चारण अब ध्वनि विपर्यय तथा अन्य परिवर्तनों के कारण /म्ह/ के साथ होता है, जैसे /ब्रम्म्ह/, /ब्राम्म्ही/. ⟨ब्रम्ह⟩ का

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूप भी कई जगह देखने को मिलता है.

4. जिन शब्दों में म और ह अलग-अलग अक्षरों में पड़ते हैं, याने दोनों के बीच में अक्षर सीमा पड़ती है वहाँ दोनों अक्षर पूरे लिखे जाते हैं. जैसे लमहा. तुलना के लिए तनहा का उच्चारण देख सकते हैं (देखें न्ह).

य, ज, व, ब इस प्रकरण में हिंदी के उन शब्दों के बारे में देख रहे हैं, जिनमें /य/ तथा /ज/, /व/ तथा /ब/ वैकल्पिक रूप से मिलते हैं. इस प्रवृत्ति का एक प्रमुख कारण है संस्कृत से आये शब्दों में किसी समय हुआ व्यंजन परिवर्तन, जिसमें अर्ध स्वर वर्ग के स्पर्श व्यंजन से स्थानापन्न हुए थे.

1. इस विकल्प की तीन दशाएँ हैं. पहले वर्ग के शब्दों में इस स्वन परिवर्तन का संकेत है; अन्य दोनों वर्गों में अन्य स्रोतों से आये शब्द भी हैं.

(अ) तत्सम शब्दों में /य, व/, तद्भव में /ज, ब/ का प्रयोग मिलता है :

वर्ष	बरस	√वर्ध	√बढ़
√वर्ष	√बरस	वक्र	बाँका
वास	बास	व्यापार	बेपार
वश	बस	वसंत	बसंत
वीणा	बीना	वाद्य	बाजा
वीत	बीत	विद्युत	बिजली
विवाह	ब्याह	युक्ति	जुगत, जुगती
वाम	बायाँ	यौवन	जोबन
विक्रय	बिक्री	योग्य	जोग
वार्ता	बात	यव	जौ (देखें **अक्षरांत अय, अव, अह**)
वानर	बंदर		
वंध्या	बाँझ	यंत्र	जंतर
√वाच	√बाँच	यत्न	जतन
विंदु	बूँद	यात्रा	जात्रा

(आ) कई जगह दोनों शब्द समान रूप से प्रचलित होते हैं. अंतर केवल संदर्भित व्यंजनों में दिखायी पड़ता है :

सवेरे = सबेरे	याम = जाम
वैर = बैर	यदु = जदु
व्रज = ब्रज	यादव = जादव
विलास = बिलास	यमुना = जमुना
चावी = चाबी (देखें **चाबी**)	योग = जोग (जोगी, जोगन)
वैकुंठ = बैकुंठ	युग = जुग
वसंत = बसंत	यम = जम

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(इ) ऐसे शब्द, जहाँ दोनों वर्णों से अर्थ भेद होता है (प्रायः ये असंबद्ध शब्द हैं और स्वनिमिक व्यतिरेक के कारण इनमें अर्थ भेद होता है)—

वाद	बाद	यहाँ	जहाँ
वेग	बेग	बया	बजा
कवर	कबर	यार	जार
दवा	दबा	यान	जान
नाव	नाब		

2. य-ज के परिवर्तन में सबसे अधिक प्रभाव पड़ा ज-वर्ग के योजक शब्दों पर. संस्कृत के *यत्र*, *यः*, *यदा*, *यथा*, *यावत्*, *येन*, *यथापि* आदि शब्द हिंदी में ही नहीं, अन्य भारतीय आर्य भाषाओं में भी /ज/ से बन गये. *जो*, *जब*, *जहाँ*, *जैसे*, *जितना*, *जिधर* आदि रूप द्रष्टव्य हैं. य-ज का परिवर्तन केवल शब्दारंभ में हुआ है. शब्द में /द्य/ का /ज/ (*जुआ*, *जून*, *बाजा*, *बिजली*), /ध्य/ का /झ/ (*मुझ*, *बुझना*, *सूझ*), /त्य/ का /च, च्च/ (*सच*, *नाच*) आदि भिन्न प्रकार के परिवर्तन हैं. व-ब के परिवर्तन में कुछ हद तक उर्दू का भी प्रभाव है. *वप्र*~*बर्फ़*, *वर्षा*~*बारिश* आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं.

3. आधुनिक काल में हिंदी में शब्दों के संस्कारित रूप फिर से प्रचलन में आ रहे हैं. इस कारण तत्सम रूप अधिक मानक होते जा रहे हैं और उनसे भिन्न रूप क्षेत्रीय, ग्राम्य तथा अशिष्ट की श्रेणी में पहुँच रहे हैं. अगर आज कोई *बासना*, *बेदना*, *बिपत्ति*, *बिचार*, *ब्याकरण*, *नबीन* बोले, तो और श्रोता व्यंग्य में मुस्कराएँगे. इसी कारण आज *बंसत*, *बेपार*, *जुगत*, *जात्रा*, *जतन*, *बाँचना*, *जोगी* आदि शब्द ग्रामीण या अमानक प्रयोग हैं. दूसरी तरफ़ /ब, ज/ के जो शब्द प्रचलित हो चुके हैं और जिनका विकल्प नहीं है, वहाँ /व, य/ युक्त शब्द पारिभाषिक होंगे या शिष्ट संस्कृत शैली के प्रयोग माने जाएँगे. *विद्युत*, *वाद्य*, *विवाह*, *वार्ता*, *याम*, *यमुना* आदि इसी श्रेणी के शब्द हैं. *वर्ष*, *वसंत*, *वीणा*, *यंत्र*, *यत्न*, *यात्रा* आदि शब्द अधिक प्रचलित होते जा रहे हैं. इस स्थिति में आगे (अ) तथा (आ) के थोड़े ही /ब, ज/ वाले शब्द मानक रूप में बचे रह सकेंगे.

4. हिंदी के इन वैकल्पिक शब्दों में दो स्वनिम बिना अर्थ भेद किये एक ही शब्द में आते हैं जिसे मुक्त वितरण कहते हैं (देखें **स्वनिम**). य-ज, व-ब का विकल्प कई शब्दों में मुक्त वितरण की स्थिति है.

यद्यपि देखें **हालाँकि, यद्यपि**.

यह, वह ये /ह/ से अंत होने वाले एकाक्षरिक शब्द हैं. लेकिन इनके उच्चारण में अंतर है. *यह* के स्वर का उच्चारण /मैं/ जैसा होता है. इस कारण इसे एकवचन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में 'ये' भी लिखा जाता है. वह में प्रथम व्यंजन पश्च अग्र स्वर है. अतः इसका उच्चरित रूप /वो/ जैसा है और उच्चारण की इस विशेषता के कारण इसे 'वो' लिखा जाता है. उर्दू में 'वो' एकवचन तथा बहुवचन दोनों के लिए आता है. हिंदी में वह 'वो' को स्थानापन्न करता है और दोनों वचनों में प्रयुक्त होता है. *वह आया*, *वह आये*. उच्चारण परिवर्तन के कारण ये दोनों वचनों में प्रयुक्त होता है. भाषा के मानकीकरण में दोनों वचनों में अंतर करने की ज़रूरत होती है. यह, ये, वह, वे चारों रूप मान्य होने चाहिए और इनके प्रयोग में वचन का अंतर स्पष्ट करना भी अभीष्ट होगा. देखिए **अक्षरांत** ⟨**अय अव अह**⟩

या, कि 1. *या* संरचना के स्तर पर 'और' की तरह योजक है और विकल्प का अर्थ देता है. लेकिन वास्तव में *या* वाक्यांश के भीतर की रचना में नहीं आता, बल्कि 'और' आता है. *राम और कृष्ण जा रहे हैं. मैं केले और संतरे खा रहा हूँ.* लेकिन ये वाक्य सही नहीं हैं—**राम या श्याम वहाँ जा रहा है. *वह चपाती या चावल खा रहा है.* इन वाक्यों का सही रूप है *राम या श्याम कोई एक जाएगा. वह चपाती या चावल कोई एक चीज़ लेगा*~*वह चपाती या चावल इनमें से कोई एक चीज़ लेगा. या* का प्रयोग उपवाक्य स्तर पर ही होता है. ये ऐसे उपवाक्य होंगे, जिनमें क्रिया लुप्त होगी. फिर भी वह गौण उपवाक्य होता है और *या* ऐसे उपवाक्यों को जोड़ता है. *तुम क्या लोगे? चाय या काफ़ी?* (=*चाय लोगे या काफ़ी लोगे?*) **तुम चाय या काफ़ी लोगे?* (*चाय-काफ़ी कुछ लोगे=चाय या काफ़ी कुछ लोगे?*) ऐसे उपवाक्यों में समान तत्त्व छोड़ दिये जाते हैं. *तुम जाओगे या बैठोगे? आप अमरूद खाएँगे या आम?* (**आप अमरूद या आम खाएँगे?*). *तुम जाओगे या नहीं?* (*या नहीं जाओगे?*)

1.1. अन्य विकल्पों के पूर्वानुमान में वक्ता केवल *या* वाला उपवाक्य बोल सकता है. *या आप वह लीजिए* ('आप यह लीजिए', 'नहीं चाहिए' के बाद का वक्तव्य), *या तो आप ही बोलिए* ('आप मुझे बोलने नहीं दे रहे हैं' के संदर्भ में टोकना).

2. दोनों उपवाक्यों में *या* का प्रयोग–अगर पहला विकल्प संभव न हो, तो दूसरा विकल्प सूचित किया जाता है. लेकिन पहला विकल्प ही व्यक्ति के मन में पहले है. सिर्फ़ *या* में दोनों में से एक चुनने की बात है. यहाँ विकल्प का क्रम है. *मैं या तो नौकरी छोड़ दूँगा या छह महीने की छुट्टी ले लूँगा. या तो हम सिनेमा चलें या यहीं बैठ कर ताश खेलें.*

2.1. चाहे ··· *या न* द्वारा दो विकल्प नहीं सूचित होते, बल्कि एक ही विकल्प तथा उसकी नकारात्मक स्थिति का बोध होता है. यह तथ्येतर क्रियाओं में ही आता है. *चाहे तुम जाओ या न जाओ. चाहे बारिश हो या न हो* ··· यहाँ चाहे छोड़ा जा सकता है. *तुम आओ या न आओ* ···

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. 'कि' का प्रयोग ऊपर 1 के प्रश्नों में होता है. *आप चाय पिएँगे कि क़ाफ़ी ? तुम जाओगे कि नहीं ?*

3.1. *या* के स्थान पर 'अथवा' का प्रयोग वैकल्पिक है. 'अथवा' *या* के सारे संदर्भों में आ सकता है, लेकिन यह शिष्ट साहित्यिक शैली है, आम प्रयोग नहीं. *या* के लिए 'किंवा' का प्रयोग बोलचाल में नहीं होता. 'किंवा' *या* के अर्थ में साहित्य में या संस्कृतनिष्ठ शैली में प्रयुक्त हो सकता है. इसी तरह अब हिंदी में 'वा' भी बोलचाल का प्रयोग नहीं है.

याद 1. यह स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है. इसके प्रयोगों को नीचे तालिका के रूप में दिया गया है :

	कर्म – जड़ वस्तुएँ	**मानुष संज्ञाएँ**
(अ)	*मैंने पाठ याद किया.*	
	मुझे पाठ याद हो गया.	—
	मैं पाठ याद नहीं कर पा रहा हूँ.	
	मुझसे पाठ याद नहीं हो रहा है.	
(आ)	*! मैंने घर की याद की.*	*!मैंने बच्चों की याद की.*
	मुझे घर की याद आयी.	*मुझे गोपाल की याद आयी.*
(इ)	*पता भूल गया हूँ, पता याद कर रहा हूँ.*	*मैंने तुझे याद किया.*
	मुझे पता याद आ गया.	*मुझे तुम याद आये.*
	मुझे तारीख़ याद नहीं है.	**मुझे गोपाल याद नहीं है.*
		(?गोपाल की याद)

2. *पाठ याद करना* एक विशिष्ट प्रयोग है, 'रटना, कंठस्थ करना' इसके पर्याय हैं. आदमी तिथियाँ, संख्याएँ, हिसाब-किताब, लोगों के नाम सब याद कर सकता हैं, आदमियों को इस दृष्टि से याद नहीं कर सकता.

2.1. (आ) तथा (इ) के वाक्यों का *याद* 'स्मरण' का पर्याय है, जो बीते अनुभव के आधार पर मन में अंकित हो जाता है और समय-समय पर बाहर आता है. यहाँ दो प्रकार के कर्ता हैं, 'मैं' और 'मुझे'. जब व्यक्ति यत्नपूर्वक याद (स्मृति) से उस का स्मरण करे, तो 'मैं' का प्रयोग होगा. 'मुझे' में वह अनुभवकर्ता है. इन प्रयोगों के संदर्भ में जड़ तथा मानुष संज्ञाओं में कुछ अंतर है.

मैंने पता याद किया (अ) तथा (इ) दोनों वर्गों में आ सकता है. इसी कारण (इ) में *मुझे याद आ गया* ग्रहणीय है.

पता याद करना (**पते की याद करना*) तथा *घर की याद करना* में स्पष्ट अंतर है, जबकि *बच्चों की याद करना* तथा *?बच्चों को याद करना* में अर्थगत अंतर नहीं है. *पता याद करना* में भूलने का अर्थ अंतर्निहित है, जबकि *घर/बच्चों की याद करना/आना* में भूलना निहित नहीं है. यही कारण है कि *?मुझे*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोपाल की *याद नहीं है* अटपटा वाक्य है.

3. **संयुक्त क्रियाएँ** के संदर्भ में हमने देखा कि 'करना' और 'देना' एक दूसरे के पूरक हैं. *उसने मुझे परेशान किया~उसने मुझे परेशानी दी.* लेकिन 'याद' अन्य संयुक्त क्रियाओं से भिन्न प्रयोग है. किसी को किसी बात की याद नहीं दी जाती. इसके साथ दो वास्तविक प्रेरणार्थक रूप हैं.

मैंने बच्चों को पाठ याद कराया.

उसने मुझे घर/बच्चों की याद दिलायी.

संभाव्य *?याद देना* का प्रयोग *याद आना* से ही संभव होता है, जहाँ याद का कारण करण बन कर या पूर्वकालिक कृदंत के रूप में आता है. जड़ वस्तुएँ प्रायः 'दिलाना' का कर्ता बन कर नहीं आतीं.

**घड़ी ने मुझे मीटिंग की याद दी (?दिलायी).*

घड़ी देख कर मुझे मीटिंग की याद आयी.

**चिट्ठी ने मुझे बच्चों की याद दी. (?दिलायी)*

चिट्ठी से मुझे बच्चों की याद आयी.

4. उर्दू शैली में *याद करना* के लिए *याद फ़रमाना* का प्रयोग होता है.

-यी अन्य ईकारांत शब्दों के प्रभाव के कारण कई लोग *स्थाई* लिखते हैं. लेकिन मैंने इसका संज्ञा रूप *स्थाइत्व* कहीं नहीं देखा. हिंदी *कमा*+ई की तरह यह /ई/ प्रत्यय से नहीं बना है, बल्कि मूल शब्द में ही /य/ है. *स्थायी, स्थायित्व* ही शुद्ध रूप हैं. इसी तरह *उत्तरदायी, उत्तरदायित्व, अंशदायी, आनंददायी* सही रूप हैं. ये 'दाय' से व्युत्पन्न हैं. इन्हें स्वर से लिखना गलत होगा.

रंग 1. हिंदी में रंगों के निम्नलिखित सात आधारभूत शब्द मिलते हैं. इन्हें आधारभूत कहने का भाषावैज्ञानिक आधार है इनका दूसरे शब्दों से व्युत्पन्न न हो कर मूल रूप में प्रयुक्त होना. शब्दों के आगे की दो पंक्तियों में क्रमशः संस्कृत और उर्दू के समान शब्द दिये गये हैं :

लाल	रक्तिम	सुर्ख़
पीला	पीत	ज़र्द
हरा	हरित	सब्ज़
नीला	नील	नीला
भूरा	पिंगल	भूरा
काला	श्याम	स्याह
सफ़ेद	श्वेत	सफ़ेद

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1.1. इन रंगों की छटाओं के लिए रंग की तीव्रता को 'हल्का' या 'गहरा' विशेषण जोड़ कर प्रकट करते हैं. *गहरा लाल*, *हल्का पीला*. पहले पाँच रंगों के लिए सामान्य रूप से *गाढ़ा रंग*, *गहरा रंग*, *हल्का रंग* भी चलते हैं. द्रष्टव्य है कि ये शब्द *काला* या *सफ़ेद* के साथ प्रयुक्त नहीं होते. **गहरा काला*, **हल्का सफ़ेद*. अधिक सफ़ेद के लिए झक सफ़ेद प्रयुक्त होता है, काले के लिए *कोलतार जैसा काला* जैसा विस्तार संभव है.

1.2. रंगों की छटाओं को मिलते-जुलते रंग वाली चीज़ का हवाला देकर स्पष्ट कर सकते हैं. *दूध जैसा सफ़ेद*, *कोलतार जैसा काला*, *हल्दी जैसा पीला*, *ख़ून-सा लाल*, *थोथे जैसा नीला*, *काई-सा हरा*.

2. इन मूल रंगों के अलावा शेष रंगों के नाम, जिनकी संख्या असीमित नहीं, भौतिक वस्तुओं के आधार पर बने हैं. शब्दों के आगे मूल शब्द कोष्ठकों में दिये गये हैं.

फूलों पर आधारित शब्द—*चंपई* (चंपा), *गेंदई* (गेंदा), *गुलाबी* (गुलाब)

फल, सब्ज़ी—*जामनी* (जामुन), *फ़ालसई या फ़लसई* (फ़ालसा), *बैंगनी* (बैंगन), *किसमिसी* (किसमिस), *प्याज़ी* (प्याज़), *नारंगी* (नारंगी), *अंगूरी* (अंगूर), *बादामी* (बादाम).

अनाज—*गेहुँआ* (गेहूँ), *धानी* (धान), *मूँगिया* (मूँग).

कीमती पत्थर या धातु—*फ़ीरोज़ी* (फ़ीरोज़), *सुनहरा* (सोना), *रुपहला* (रुपया), *तामई* (ताँबा)

प्रकृति—*आसमानी* (आसमान), *बसंती* (बसंत ऋतु), *समंदरी* (समुंदर)

अन्य—*सिंदूरी* (सिंदूर), *ख़ाकी* (ख़ाक—मिट्टी), *गेरुआ* (गेरू मिट्टी), *मटमैला* (मिट्टी)

3. रंगों की तीव्रता प्रकट करने के लिए या सभी वर्ण्य वस्तुओं का रंग बताने के लिए पुनरुक्ति का प्रयोग होता है. *लाल-लाल आँखें*, *हरे-हरे पत्ते*, *काले-काले बाल*, *भूरी-भूरी आँखें*, *लाल-लाल ख़ून*. उल्लेखनीय है कि कोई भी व्युत्पन्न शब्द पुनरुक्त नहीं होता. **बैंगनी-बैंगनी*, .**फ़ीरोज़ी-फ़ीरोज़ी*, **ख़ाकी-ख़ाकी*, **सलेटी-सलेटी*, *?गुलाबी-गुलाबी*. प्रयोग न्यूनता ही शायद इसका कारण है.

3.1. सभी आकारांत रंग के शब्द लिंग-वचन के लिए संज्ञा से अन्वित होते हैं (देखें **अन्विति**). जैसे *हरा*, *हरी*, *हरे*; *सुनहरा*, *सुनहरी*, *सुनहरे*.

3.2 *ऊदा* इस हिसाब से समस्यामूलक शब्द है. यह व्युत्पन्न नहीं है, पुनरुक्त नहीं होता, आकारांत होने पर भी अन्वित नहीं होता.

4. व्यक्तियों के रंग के संदर्भ में *सफ़ेद* नहीं होता, *गोरा* होता है; *भूरा* नहीं होता, *साँवला* (< श्यामल) होता है.

5. रंगों के शब्दों का मुहावरेदार प्रयोग—यह मनोविज्ञान का मान्य सिद्धांत

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है कि रंगों का मनुष्य के भावों पर प्रत्यक्ष प्रभाव है. भाषा मनुष्य का भावजगत है. अतः भाषा में रंगों के आधार पर बने मुहावरेदार प्रयोग अनंत हैं, यह स्वाभाविक-सी बात है. मानव जीवन में रंगों का अपना विशिष्ट स्थान है. हम विशेष अवसरों पर विशेष रंगों का इस्तेमाल करते हैं. हमारी संस्कृति में लाल, पीले तथा गेरुए रंगों का शुभ तथा मंगल के लिए प्रयोग होता है. इस तरह भावों के प्रतीक तथा संस्कृति के प्रतीक के रूप में रंग का शब्द अर्थ प्रकट करता है. प्रायः आधारभूत रंग के शब्द ही मुहावरेदार प्रयोगों में आते हैं. संस्कृति की दृष्टि से *लाल* शुभ का प्रतीक है, भावों की दृष्टि से तीव्र भावों (क्रोध, अतीव लज्जा आदि) का प्रतीक है.

अर्थ द्योतन की दृष्टि से रंग के शब्द दो तरह से काम आते हैं—इस तरह रंग के शब्द दुहरे प्रतीक हैं. 'काला' किसी रंग का प्रतीक है और वह रंग संस्कृति के किसी विचार (यहाँ ख़राब, अशुभ) का प्रतीक है. ध्यान दीजिए कि गाली के शब्दों में भी दुहरी प्रतीकात्मकता है.

काली कमीज़ रंग की ओर संकेत

काली करतूत रंग संकेत नहीं, बल्कि 'ख़राब' का अर्थ है

इस दुहरी प्रतीकात्मकता के कारण बने सैकड़ों मुहावरेदार प्रयोग हैं, जिनके कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं. आप स्वयं संस्कृतिगत अर्थ का अनुमान कीजिए—काला—*काला धन, काला बाज़ार, काली करतूत,* मुँह *काला करना, काले कारनामे, काला युग, मन काला होना*. तुलना में अंग्रेज़ी के कुछ शब्द देखें—black market, black sheep, black day, blackmail, dark age. ऐसा नहीं है कि हम किसी शब्द का एक संस्कृतिगत अर्थ निश्चित कर लें और सभी मुहावरों में वह अर्थ ढूँढ़ें. न संस्कृति इतनी सरल होती है कि उसे परिभाषाओं में समझा जाए, न भाषा इतनी आसान होती है कि व्याकरण और शब्दकोश उसे स्पष्ट कर दें. अमेरिकी संस्कृति में black नीग्रो लोगों के लिए शब्द है. अंग्रेज़ी में black power आदि को हम इसी संदर्भ में समझ सकते हैं. इसी तरह अंग्रेज़ी red के विभिन्न सांस्कृतिक अर्थ देखिए—

red-letter day विशेष; इसलिए महत्त्वपूर्ण

red light यात्रा में रुकने का संकेत; इसलिए ख़तरे का संकेत

The Red Army लाल साम्यवादी दल का निशान; यहाँ साम्यवाद का संकेत इन अर्थों को हम संस्कृति की बारीकियों तथा जटिलताओं में ही समझ सकते हैं. *लाल फ़ीता, लाल टोपी, लाल बत्ती* भिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में भिन्न अर्थों में प्रयुक्त प्रयोग हैं, तीनों जगह 'लाल' का एक अर्थ नहीं है.

5.1. ऐसा भी नहीं कि हम हमेशा भावों की अभिव्यक्ति तथा अन्य सांस्कृतिक संदर्भों में अंतर कर सकते हैं. काला रंग मन को आकर्षित नहीं करता, कालेपन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से मन बुझ-सा जाता है. शायद यही कारण है कि इस रंग को संस्कृति अशोभनीय मानती है. व्यक्ति मरता है, तो उसका रंग नीला पड़ जाता है. इसलिए नीला रंग शोक का पर्याय माना जाता है. पृथ्वी का हरा-भरा होना जीवंतता, विकास तथा समृद्धि का सूचक है. इसलिए *तबीयत हरी होना* जैसा मुहावरा मिलता है. केवल सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में ही हम भावों तथा सांस्कृतिक विचारों में स्पष्ट अंतर कर पाते हैं. 'लाल' का साम्यवाद के लिए पर्याय होना ऐसी ही सामयिक उक्ति है. भावों से इसका अधिक संबंध नहीं है. यहाँ 'लाल' की जगह और कोई शब्द भी हो सकता था. आगे ऐसे कुछ मुहावरेदार प्रयोग हैं, जो रंग का भावों के साथ संबंध बताते हैं. रंगों के ये भावगत अर्थ कुछ हद तक सार्वभौम होते हैं.

लाल–*आँखें लाल होना, लाल-पीला होना* (क्रोध), *सुर्ख़रू होना, चेहरे पर लाली आ जाना* (समृद्धि), *चेहरे पर लाली दौड़ जाना, गाल लाल होना* (लज्जा), *मेरे लाल* (बच्चे के लिए संबोधन–प्रेम)

पीला–*चेहरा फक पड़ना/पीला पड़ना* (डर)

नीला–*चेहरा नीला पड़ना* (दुख)

हरा–*तबीयत हरी होना* (प्रसन्नता)

काला–*आँखों के सामने कालिमा छाना* (अवसाद), *मन काला होना* (कपट)

सफ़ेद–*मन साफ़ होना* (मन की स्वच्छता, पवित्रता)

5.2. उल्लेखनीय है कि मुहावरेवार प्रयोगों में रंग के शब्दों की पुनरुक्ति नहीं होती जब तक कि मुहावरे में ही यह बात न हो. **लाल-लाल आँखें निकालना, लाल-लाल गाल, *तबीयत हरी-हरी होना, *काला-काला बाज़ार, *लाल-लाल टोपी.*

रंजक क्रिया दो धातुओं के योग से बनने वाली कुछ क्रिया रचनाएँ हैं, जिनमें एक ही धातु कोशीय अर्थ देता है और दूसरा धातु, जिसे रंजक क्रिया कहेंगे, उस अर्थ में (मूल व्यापार की स्थिति में) कोई अर्थ की विशेषता जोड़ देता है. इस रचना में रंजक क्रिया का कोशीय अर्थ महत्त्वपूर्ण नहीं है, अर्थ की यह विशेषता ही उसकी रंजकता (colouring) है.

निकाल देना में 'देना' रंजक क्रिया है और उसका अपना अर्थ इस क्रिया रूप में नहीं है. 'निकाल' का कोशगत अर्थ ही यहाँ प्रमुख है. 'देना' का रंजकत्व है ऐसा व्यापार जिसका फल कर्ता से इतर को मिले. इस बात को स्पष्टता से **देना** में देखेंगे.

हिंदी में रंजक क्रिया पर जितना लिखा गया है, उतना शायद ही और किसी प्रकरण पर लिखा गया हो. मैंने भी अपनी ओर से रंजक क्रिया तथा प्रेरणार्थक क्रिया पर सबसे अधिक समय व्यतीत किया. ईमानदारी की बात है कि मैं कहीं पहुँच

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं पाया हूँ. कोई विद्वान हिंदी में 8–9 रंजक क्रियाएँ बताते हैं, तो कोई 22; कोई सारे द्विस्थानीय क्रिया रूपों को, जिनमें वाच्य भी सम्मिलित है, रंजक क्रिया घोषित कर देते हैं.

हिंदी के द्विस्थानीय क्रिया रूपों के बारे में हमने **क्रिया रूप, क्रिया वाक्यांश** शीर्षक प्रकरणों में चर्चा की है. रंजक क्रिया क्रिया के विस्तार की प्रक्रिया है और वृत्ति (*लग*, *सक*, *चुक*, *पा*) तथा 'कर' लोप से प्राप्त समस्त क्रिया वाक्यांश से भिन्न है. यह मुख्य क्रिया के संदर्भ में कुछ विशेष अर्थ देती है. अहिंदी भाषी प्रायः बिना आवश्यकता के रंजक क्रिया का प्रयोग करते हैं (**कल हमारे स्कूल में एक समारोह हो गया*). या जहाँ आवश्यकता है, वहाँ उसे छोड़ देते हैं (*?क्या आपने खाना खाया ?*). कुछ विशेष संदर्भ हैं, जहाँ रंजकत्व की आवश्यकता होती है. इसे न जानने के कारण ही ऐसे गलत प्रयोग होते हैं.

2. यहाँ रंजक क्रिया के रूपों का वर्गीकरण दिया जा रहा है :
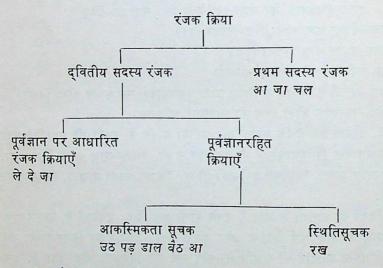
2.1. पूर्वज्ञान पर आधारित रंजक क्रियाओं की मुख्य विशेषता है निश्चयात्मकता (specificity). अर्थात रंजक क्रिया का प्रयोग वक्ता श्रोता के सामने तभी करेगा, जब उसे मालूम हो कि सामने वाला भी कथ्य व्यापार से पहले से ही परिचित है. अगर परिचय का पता न हो या परिचय के बारे में संशय की स्थिति हो, तो वक्ता रंजक क्रिया का प्रयोग नहीं करेगा. मैं किसी से तभी पूछूँगा *क्या आप ने घड़ी ख़रीद ली ?* जब मुझे घड़ी ख़रीदने के इरादे और यत्नों की जानकारी हो. अन्यथा दोस्त के हाथ में नयी घड़ी देखकर मैं इतना ही पूछूँगा *क्या आप ने नयी घड़ी ख़रीदी ?* कोई व्यक्ति घर वालों को सूचित करते हुए कहे *मेहमान आ गये*, तो उसका तात्पर्य यह है कि आने वाले मेहमानों की सूचना और शायद इंतज़ार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

औरों (श्रोताओं) को भी है. या मेहमानों के आ टपकने की आशंका थी और इस बात की चर्चा हो चुकी थी. अप्रत्याशित रूप से आने वाले मेहमानों को देखकर वह शायद यही कहता, *हमारे घर मेहमान आ रहे हैं.*

यद्यपि ऐसे प्रसंगों की अनगिनत सूची दी जा सकती है, जहाँ रंजक क्रिया का प्रयोग उपर्युक्त संदर्भों में दिखायी पड़ता है, कई स्थल ऐसे हैं, जहाँ रंजक क्रिया के प्रयोग का स्पष्ट आधार नहीं दीखता. आप अपने कमरे में आये व्यक्ति से *बैठो* कह सकते हैं और *बैठ जाओ* भी. *बैठ जाना* में इस संदर्भ में क्या पूर्वज्ञान है, यह विवाद का प्रश्न है (ऐसे ही प्रसंगों के आधार पर कुछ विद्वान मानते हैं कि *बैठ जाना* में *बैठना* की अपेक्षा अधिक आत्मीयता या आदर का भाव है. यह बात सच है, तो भी सिर्फ़ विधि पर लागू होती है और अन्य संदर्भों में नहीं).

पूर्वज्ञान पर आधारित रंजक क्रियाएँ तीन हैं—*ले, दे, जा*. इनमें *ले, दे* सकर्मक क्रियाएँ हैं और *जा* अकर्मक. बहुधा सकर्मक मूल क्रिया के साथ *ले, दे* आती हैं, अकर्मक के साथ *जा*. यों कह सकते हैं कि *ले* और *दे* में जो भी अंतर हो, दोनों की अकर्मक रचना में *जा* आती है. इस तरह *हो गया* में *कर लिया* और *कर दिया* का अंतर लुप्त हो जाता है.

'ले' (देखें **लेना**) उन व्यापारों के लिए आती है, जहाँ क्रिया का फल कर्ता को मिले. 'दे' में फल दूसरे को मिलता है या वह फलरहित क्रिया (*फेंक देना, तोड़ देना*) है. 'जा' के संदर्भ में (देखें **जाना**) उल्लेख करना आवश्यक होगा कि कई जगह पूर्वज्ञान वाली बात का कोई संकेत ही नहीं मिलता (*बैठ जाओ, रुक जाओ*) और 'जा' का अपना अर्थ भी नहीं मालूम पड़ता. कम से कम *कर लो* और *कर दो* में दोनों का अंतर तो स्पष्ट होता है. 'जा' में वह बात भी नहीं है. लेकिन मान सकते हैं कि विधि में प्रसंग का उपस्थित होना ही पूर्वज्ञान है. चाय सामने है, तभी तो कहते हैं '*पी लो*'. चीज़ हाथ में है तभी तो कहते हैं '*फेंक दो*'. सड़क पर चलते अजनबी से हम नहीं कह सकते **सुन लो, यहाँ आ आओ*. हम यही कहेंगे, '*अरे भाई, सुनो, ज़रा यहाँ आओ*'. दुश्मन का हवाई जहाज़ ऊपर हो, तो हम चिल्लाएँगे '*लेट जाओ, हवाई जहाज़ है*'. इस संदर्भ में दुश्मन के हवाई जहाज़ के आने पर लेटने का सब को पूर्वज्ञान है. अन्यथा शायद कहते '*लेटो*'. *पंखा बंद करो/कर दो*. पंखा चल रहा है, किसी एक को पंखा नहीं चाहिए. कोई अपने बेटे से कहता है—*उधर पंखा घूम रहा है, बंद कर दो*. '*घूम रहा है*' से पूर्वज्ञान बना. *मैं पंखा बंद कर दूँ?* पंखा चल रहा है, एक सज्जन ठंड से काँप रहे हैं. यहाँ बंद करने की आवश्यकता अनुभव करना पूर्वज्ञान है. इस चर्चा में मेरी तो मति घूम रही है. यह रोचक प्रसंग ज़रूर है, लेकिन है बहुत आत्मपरक. जितनी क्रियाएँ हैं, उनके जितने प्रयोग हैं, सबके लिए अलग-अलग तर्क. विधि में रंजक क्रिया को पहचानने के लिए भाषा की पकड़ तथा भाषा की पहचान होनी चाहिए, विश्ले-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षण काम नहीं आएगा.

कुछ व्याकरणिक संरचनाएँ ऐसी हैं, जो रंजक क्रिया के लिए पूर्वज्ञान का संदर्भ उपस्थित करती हैं. या यों कहें, उन संरचनाओं के साथ रंजक क्रिया का आना अनिवार्य-सा लगता है. पीटर हुक (1974, 1980) यह मानते हैं कि 'जब' वाली रचनाओं में रंजक क्रिया का प्रयोग देख सकते हैं. वास्तव में 'जब' आदि पूर्व-ज्ञान उपस्थित करते हैं.

जब तक मैं लौटा, वे जा चुके थे~चले गये थे → वे लोग तब तक जा चुके थे~चले गये थे, जब तक मैं लौटा था.

2.1.1. ऊपर उल्लेख किया गया है कि सकर्मक क्रियाओं के साथ ले, दे और अकर्मक के साथ *जा* आती है. यह बात निरपवाद नहीं है. कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिनमें तीनों ही रंजक क्रियाएँ आती हैं (*कर लेना, कर देना, कर जाना*). यह रंजक क्रिया के प्रयोग की जटिलता का दूसरा क्षेत्र है. तीनों रंजक क्रियाओं के साथ दोनों प्रकार की क्रियाएँ आती हैं. व्याकरण ग्रंथ इस उल्लेख से ही संतुष्ट हो जाते हैं कि दे के साथ कुछ अकर्मक क्रियाएँ भी आती हैं आदि. ऊपर बताया गया है कि *जाना* पूर्वज्ञान पर आधारित रंजक क्रिया है और यह बात आगे के वाक्यों में देख सकते हैं. *क्या वे लोग चले गये/सो गये/उठ गये ? मेरी किताब फट गयी/खो गयी/मिल गयी. अरे, यह बात तो मैं भूल ही गया. कपड़े नीचे गिरे और मैले हो गये.* लेकिन इन थोड़े-से शब्दों के अतिरिक्त एक लंबी सूची है, जहाँ पूर्वज्ञान वाली बात स्पष्ट नहीं है (या है नहीं). ऐसे शब्द हैं *चौंक जाना, झुक जाना, उलझ जाना, फिसल जाना, फैल जाना, बह जाना, बुझ जाना, टकरा जाना*. ये ऐसी क्रियाएँ हैं, जहाँ पूर्वज्ञान वाली बात नहीं है, बल्कि व्यापार की आकस्मिकता आदि मानसिक कारण जुड़ते हैं. जिन थोड़े-से सकर्मक धातुओं के साथ *जा* आती है (*कह, कर, काट, पढ़, चढ़ा, पा, पहचान, खा, पी, देख, फँसा, दे, पटक*), वहाँ भी यही बात है. पूर्वज्ञान वाले अर्थ के लिए ले या दे है ही. *जा* से वहाँ आकस्मिकता आदि अर्थ प्रकट होते हैं. उल्लेखनीय है कि कोई ऐसी सकर्मक क्रिया नहीं है, जिसमें *जा* लगे, ले या दे नहीं. 'जा' में रंजक क्रिया के ये दोनों प्रकार्य इतने मिले-जुले हैं कि किसी-किसी वाक्य में प्रकार भेद बताना भी मुश्किल हो जाता है.

ले और दे के साथ भी कुछ अकर्मक धातु आते हैं. ले के साथ निम्न प्रकार के रूप हैं—*नहा ले, हँस ले, रो ले, ?बैठ ले, सुस्ता ले, सो ले, हो ले*. अपने लिए व्यापार करने के संदर्भ में ये प्रयोग हैं और यहाँ पूर्वज्ञान वाली बात है. ये क्रियाएँ विधि में अधिक प्रयुक्त होती हैं. दे के साथ और कम रूप हैं—*चल दे, रो दे, हँस दे*. ऊपर *जा* के संदर्भ में जो आकस्मिकता की बात कही थी, वही यहाँ लागू होती है. *वह ज़ोर से हँस दिया* में पूर्वज्ञान की कोई बात नहीं है. यों कह

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकते हैं कि अकर्मक क्रियाओं के साथ दे सकर्मक से भिन्न व्यवहार करता है.

2.2. आकस्मिकता आदि सूचित करने वाली रंजक क्रियाएँ पाँच हैं–उठ, पड़, डाल, बैठ, आ.

डालना–इसमें कुछ विद्वान आकस्मिकता के साथ हिंसा की प्रवृत्ति भी देखते हैं, क्योंकि *मार डाला, तोड़ डाला, जला डाला* आदि से विनाशकारी प्रवृत्ति प्रकट होती है लेकिन *लिख डालो, कह डालो* का क्या कीजिएगा ? कई विद्वान कार्य की पूर्णता की बात कहते हैं. पता नहीं पूर्णता की क्या व्याख्या है. क्या हिंदी की कोई क्रिया है, जो पूर्ण पक्ष में कार्य की पूर्णता न दिखाए ? मेरे पास इस समस्या का कोई हल नहीं है. सिर्फ़ दो-एक टिप्पणियाँ मात्र दे सकूँगा. *डाल* केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ ही आता है. कई जगह दे और *डाल* एक दूसरे की जगह आते हैं और कुछ-कुछ समानार्थी भी हैं. (*अरे, मार दिया*~*अरे, मार डाला*), *जला काट मार पीट रौंद तोड़ फाड़ लूट झकझोर* चीर उजाड़ खोद कुचल के साथ विध्वंसक प्रवृत्ति तथा सोद्देश्य व्यापार का अर्थ दिखायी पड़ता है; *पी लिख* पढ़ *कह नहा धो* के साथ हिचक या भय की भावना को दूर रखते हुए, सप्रयत्न काम पूरा करने का अर्थ व्यक्त होता है (*दवा कड़वी नहीं है, एक साँस में पी डालो. भगवान का नाम लेकर पूरा कर डालो*). ये ही 'डाल' के दो प्रमुख अर्थ हैं और अन्य प्रासंगिक अर्थ भी निकलते हैं, जिनके विश्लेषण में जाएँगे, तो भिन्न अर्थ छटाएँ दिखेंगी ही.

पड़ना–इसे प्रायः *डाल* का अकर्मक रूप माना जाता है. मुख्य क्रिया के रूप में यह बात सही है (*मैंने कागज़ नीचे डाला–कागज़ नीचे पड़ा है*), लेकिन रंजक क्रिया के रूप में नहीं. ऊपर की शायद ही कोई क्रिया मिथ्या वाच्य या प्रथम 'प्रेरणार्थक' में 'पड़' के साथ आती हो. मेरे देखने में एक ही रूप मिला है टूट *पड़ना*. यह भी एक मुहावरा है. यह कहा जाए कि 'पड़' तथा 'उठ' अकर्मक रूपों के साथ आते हैं, तो अधिक सही होगा.

'पड़ना' जिन शब्दों के साथ आती है, उनके विश्लेषण से इस रंजक क्रिया के प्रयोग क्षेत्र का अनुमान मिलता है. यहाँ उन क्रियाओं का वर्गीकृत विवरण दे रहा हूँ.

गति या गतियुक्त व्यापार–*उमड़ कूद गिर आ चल निकल लुढ़क उतर उछल ?चढ़ टपक फिसल छूट खुल *जा *पहुँच* (ये दोनों गंतव्य युक्त गत्यर्थक क्रियाएँ हैं) **भाग*

भाव तथा प्रतिक्रिया सूचक व्यापार–*रो हँस सिसक* फूट(रोने के अर्थ में) *छींक चीख़ चौंक चिल्ला ?गरज लड़* उबल(गुस्से के अर्थ में) *झगड़ लड़*

उठना–यह रंजक क्रिया निम्नलिखित अर्थ क्षेत्रों में आती है –

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाव–ऊब उकता काँप घबरा सहम खीझ झुंझला खिसिया
झेंप शरमा लजा तिलमिला तमतमा तड़प फड़क भड़क
खिल(आनंद के अर्थ में) बिगड़(गुस्सा)

गतियुक्त व्यापार–नाच झूम धधक लहलहा भभक दहक मचल
उबल

ध्वनिसूचक व्यापार–बज गूँज खनखना झमझमा झनझना चरमरा

आकस्मिक व्यापार–चौंक चिल्ला बोल बिदक जल ?भौंक गरज
रो हँस खिल(फूलों का)

पड़ना और उठना में कुछ क्रियाएँ दुहरायी हुई हैं. जैसे चीख़ झुंझला चौंक चिल्ला उछल बिगड़ हँस रो. अगर दोनों का समान कारक (factor) आकस्मिकता हो, तो कुछ हद तक यह दुहराव तर्कसंगत लगता है. उठना के अन्य गति, भाव, ध्वनि सूचक शब्दों में पड़ना नहीं आता. इसी तरह पड़ना के गतियुक्त व्यापारों में (विशेषकर अवगति या अधोगति सूचक व्यापारों में) उठना नहीं आता.

बैठना–यह रंजक क्रिया उन व्यापारों के साथ आती है, जिनके बारे में कर्ता को पछतावा होता है या अन्य व्यक्ति उन्हें गलत व्यापार मानते हैं. वह एक भारी गलती कर बैठा. मैं उसे गलती से रुपये/दिल दे बैठा. वह बार-बार मना करने पर भी कंपनी शेयरों में पैसा फँसा बैठता है. मेरी बात नहीं मानोगे, तो गलती कर बैठोगे. कुछ अन्य क्रियाएँ हैं–कह पूछ ले.

आना–यह रंजक क्रिया उन सहज व्यापारों के साथ आती है, जो प्रतिक्रिया-स्वरूप होते हैं. उल्लेखनीय है कि इन व्यापारों में बहाव तथा प्रायः धीमी गति होती है. मेरी आँखें भर आयीं/छलछला आयीं. चेहरे पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आयीं. मेरा दिल पसीज/भर/उमड़ आया. बादल घुमड़/घिर आये. डालियाँ नीचे झुक आयीं/झूम आयीं. चेहरे पर चिंता के निशान उभर आये. उल्लेखनीय है कि यहाँ मानुष कर्ता नहीं आता. वह शरारत पर उतर आया मुहावरेदार प्रयोग है. शायद यह उतर (कर) आया का रूप हो. ध्यान देने की बात है कि इस रंजक क्रिया के विश्लेषण से हमें निकल (कर) आया, खिंच (कर) आया, ले (कर) आया, भाग (कर) आया, देख (कर) आया जैसे समस्त वाक्यांशों को दूर रखना चाहिए.

2.2.1 रंजक क्रिया रख स्थिति सूचक है. मैंने एक घर देख रखा है. हमने उनसे कह रखा है. इन वाक्यों में उक्त कार्य की समाप्ति के बाद की स्थिति स्पष्ट होती है. इस रंजक क्रिया की जगह दिल्ली के आसपास कृदंत विशेषण किया हुआ है आदि का प्रयोग होता है (*मैंने एक घर देखा हुआ है). इसका अन्य कालों में भी प्रयोग मिलता है (तुम उनसे कह रखो. मैं तुम्हारे लिए एक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अच्छी गाड़ी देख रखूँगा. ?मैं तो सबसे कह रखता हूँ कि · · ·). अगर दिल्ली वाले प्रयोग को मान लेते हैं तो अन्य काल, पक्ष आदि के वाक्य नहीं बन सकेंगे.
रख के साथ आने वाली कुछ अन्य क्रियाएँ हैं—*ओढ़ पहन उलझा उतार पी रख सुन बैठा बता ?ला (ला कर ?) लिख छोड़ पढ़ बना खींच रट तोड़* आदि. यह स्थिति सूचक है और इसका प्रयोग केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ ही होता है. (*लड़की सो रखी है, *वे लोग जा रखे हैं, *कुर्सियाँ पड़ रखी हैं). इसका शायद यही कारण है कि अकर्मक क्रियाओं के साथ कृदंत विशेषण वाले वाक्य बनते हैं. *लड़की सोयी हुई है. वे लोग गये हुए हैं. कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं*), जबकि *मैंने देखा* आदि क्रियाओं की स्थिति की सूचना कृदंत विशेषण से नहीं मिलती.

2.3. तीसरे प्रकार की रंजक क्रिया वह है, जिसमें रंजक क्रिया दूसरे स्थान नहीं पहले स्थान पर आती है. रंजक क्रिया पर विचार करने वाले कई वैयाकरण *आ धमकना, चल बसना, चल निकलना* जैसे प्रयोगों के आधार पर *धमकना, बसना, निकलना* आदि को भी रंजक क्रिया की संज्ञा देते हैं. वाले (1925), काशीनाथ सिंह (1975) जैसे विद्वान ऊपरी क्रिया रूप के आधार पर ऐसे पचासों प्रयोग गिनाते हैं और दूसरे स्थान की क्रिया को संयुक्त/सहायक/रंजक क्रिया की संज्ञा देते हैं. यह सतही विश्लेषण है. हिंदी में ऐसे कुछ क्रिया वाक्यांश हैं, जिनमें दूसरे स्थान पर मुख्य क्रिया होती है और पहले स्थान में रंजक क्रिया *आ जा चल*. उल्लेखनीय है कि तीनों गत्यर्थक क्रियाएँ हैं. इस वर्ग में रंजक क्रिया का प्रकार्य मुख्य क्रिया की दिशा बताना है. *आ गिरा* में गिरने की दिशा वक्ता की ओर है, *जा गिरा* में इससे विपरीत और *चल निकला/बसा* में अज्ञात दिशा में दूर जाने का भाव निहित है. यह रंजक क्रिया ही है, समस्त क्रिया वाक्यांश नहीं. *आ गिरा* का अर्थ 'आया और गिरा' कतई नहीं है. यहाँ ऐसे क्रिया रूपों की सूची दे रहा हूँ :

आ–गिर गुज़र घेर घुस निकल पटक बस मिल मर झपट टपक टूट डट डूब फँस पड़ धमक दबोच निकल धँस पहुँच लग चिपक ?पकड़ ?पैठ बीत (अनुभव के अर्थ में)

जा–?खप गिर घेर ?घुस बस मिल मर टपक टूट डट फँस पड़ धमक पहुँच लग दबोच अटक

चल–निकल बस ?पड़ जा

इन क्रिया रूपों में क्रिया का समास नहीं है. यहाँ 'आया और धमका' वाली स्थिति नहीं है, बल्कि धमकने वाला निकट है. इसी तरह *मैंने एक धक्का मारा, तो वह दूर जा गिरा* में 'जा कर गिरा' वाली बात नहीं है. *आ कर बोला, चल कर पहुँचा, जा कर बैठा* जैसे समस्त वाक्यांशों में 'कर' का लोप नहीं होता,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्योंकि संभावित रंजक रूप 'आ बोला' आदि का भ्रम हो सकता है.

3. रंजक क्रियाओं के विश्लेषण में हमें कई व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. 'आ' मूल क्रिया है और दो तरह की रंजक क्रिया है. 'पड़' मूल क्रिया है (*किताब नीचे पड़ी हुई है*) और रंजक क्रिया भी. *आ पड़ा* में हम 'पड़' को मूल क्रिया के रूप में ले रहे हैं (*मुसीबत मेरे गले पड़ गयी. हाय भगवान, कैसी मुसीबत आ पड़ी*), लेकिन *चल पड़ा* में वह रंजक क्रिया है. मैंने इस पर प्रश्न चिह्न इसलिए लगाया है कि मैं देखना चाहता हूँ कि *!पानी समुद्र में चल पड़ा* जैसे प्रयोग भी हैं कि नहीं. लेकिन भ्रम दूर करने की भाषा की प्रवृत्ति के कारण समान रूप में दो भिन्न प्रयोग प्रायः भाषा में नहीं मिलते. यही कारण है कि *!उठ बैठा, !ला रख दिया, !पढ़ आया* जैसे संभव रूप प्रयुक्त नहीं होते. क्रियाओं के प्रयोग के संदर्भ में भाषा की इस निषेधात्मक प्रवृत्ति का आभास हो जाए, तो अध्येता गलत प्रयोगों से दूर रह सकता है. यहीं भाषा की आत्मा झलकती है.

चल बसना में मूल क्रिया 'बस' है, 'चल' अनिर्दिष्ट दिशा का अर्थ देता है. मूल अर्थ में यह कहीं बसने का अर्थ देता है; मुहावरेदार अर्थ 'मरना' भी इससे अधिक भिन्न नहीं है. *दुकान चल निकली* में भी 'काम निकलना' के अर्थ से प्राप्त मुहावरेदार अर्थ दिखायी पड़ता है. आप देख सकते हैं कि प्रथम स्थान में रंजक क्रिया वाले अधिकतर प्रयोगों में मुहावरेदार अर्थ प्रकट होता है. इस कारण रंजक क्रिया के प्रयोगों के विश्लेषण में बाधा पड़ती है. काशीनाथ सिंह (1975) ने ऐसे अनेकों क्रिया रूप बताये हैं, जो ऊपर के विश्लेषण में कहीं ठीक बैठते नहीं हैं, जैसे *घुस पैठना, कर गुज़रना, हो लेना*. दूसरी ओर *कह सुना, उमड़ चल, बन बैठ, छूट चल, भाग चल, टूट गिर, लड़ मर, मर खप, खोज निकाल, मर मिट, जल मर, मार भगा, ले डूब, काट खा, तोड़ फेंक* जैसे रूप मिलते हैं, जिन्हें 'कर' या 'और' के लोप से स्पष्ट कर सकते हैं. वैसे कुछ क्रिया रूपों में (*वह राजा बन बैठा तू तो मुझे भी ले डूबा* आदि में) यह विस्तार संभव नहीं है. ये प्रयोग अब मुहावरे के समान हैं और ऊपर से रंजक क्रिया लग सकते हैं, जिनमें क्रमशः रंजक क्रिया 'बैठ, डूब' हैं (अगर हों तो). सामग्री संचयन की इस कठिनाई के कारण रंजक क्रियाओं का ठीक विश्लेषण नहीं हो पाता.

3.1. रंजक क्रिया के प्रयोग (use) में सामान्य शब्दों की तरह हिंदी भाषी नये प्रयोग (usage) गढ़ते हैं, स्वयं प्रयोग (experiment) करते हैं. यह जीवंत भाषाओं का लक्षण है. हमारे पास कोई तर्क नहीं है कि *रो लेना* क्यों सहज प्रयोग है, *चिल्ला लेना* क्यों नहीं. हैदराबाद की हिंदी में *ला लेना* चलता है जो मानक हिंदी का प्रयोग नहीं है. विचार करें, तो यह भी बहुत स्वाभाविक लगता है—*अपने लिए लाना*. व्यवहार में लेखक ही नहीं आम भाषा-भाषी भी नये

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रयोग गढ़ता है. लेकिन ऐसे प्रयोगों को आधार बना कर विश्लेषण करना दुरूह कार्य है. ऐसे कुछ नये प्रयोग चलेंगे, कुछ नहीं चल पाएँगे. रानी केतकी की कहानी में *चल निकला, जा निकले, ढूँढ़ फिरता हूँ, पटक मारूँ, पड़ रहो* आदि प्रयोग मिलते हैं, जो आज मानक प्रयोग नहीं रह गये हैं. इस तरह की परिवर्तन-शील स्थिति की सीमा में ही हम अपना विश्लेषण प्रस्तुत कर सकते हैं. *लिख मारना, हो रहना* आदि कुछ प्रयोग हैं, जिन्हें समस्या मानेंगे. *हो आना* ऐसे नये मुहावरेदार प्रयोग का अच्छा उदाहरण है, जो चल पड़ा है और सहज है. हिंदी सीखते समय मैं शुरू में *जा कर आओ* का प्रयोग करता था. बाद में मैंने अनुभव किया कि यह सहज प्रयोग नहीं है और इसकी जगह *हो (कर) आओ* का प्रयोग होता है. *आ जाओ* की असुंदरता से बचने का एक सुंदर उदाहरण. मूल अर्थ से बिछुड़ने का कारण यहाँ 'आ' रंजक क्रिया लग सकती है.

3.2. रंजक क्रियाओं के विश्लेषण की एक और समस्या कुछ क्रिया रूपों में विपर्यय के कारण है. ऐसे विपर्यय हैं–

मार दे–दे मार *छोड़ रख–रख छोड़* *पटक दे–दे पटक*

यह प्रवृत्ति बहुत थोड़े शब्दों में दिखायी पड़ती है.

'दे' के साथ कई रूप हैं–*दे मारना, ?दे खींचना, दे पटकना, दे फेंकना,* लेकिन *मार देना* और *दे मारना* समानार्थी नहीं हैं. इस अंतर को समझने के लिए नीचे के दो वाक्यों को देख सकते हैं–

एक मक्खी परेशान कर रही थी. हाथ पर बैठी तो धीरे से उसे मार दिया. (पूर्वज्ञान पर आधारित रंजक क्रिया)

अरेरेरे, पैर हटाओ. मार दिया साले ने! मेरा पैर तोड़ दिया (पैर कुचलने पर उक्ति–आकस्मिकता का बोध).

कंस ने लड़की को उठाया और उसे पत्थर पैर दे मारा~दे पटका (*उसे *पत्थर पर मार दिया~पटक दिया*).

वास्तव में *दे मारा* आदि पूर्वज्ञान पर आधारित नहीं हैं. कुछ हद तक इसे 'दे (कर) मारा' मानें तो भी गलत नहीं है. *देना* मारने से भिन्न अर्थ सूचित करता है–ऐसे स्थानवाचक का, जो इन क्रियाओं के लिए आवश्यक है और जो क्रिया वाक्यांश से पहले *पत्थर पर, दीवार पर, सिर पर* आदि से सूचित होता है. न ही यह रचना *मार दिया* से संभव है. *रख छोड़–छोड़ रख* के अलावा अन्य किसी रूप में स्वाभाविक विपर्यय नहीं है.

पीटर हुक (1974) *संभाल बचा कर चला+ले जाना* में संयुक्त रंजक क्रिया *ले जा* का प्रस्ताव करते हैं. मैं उनकी सूझ का कायल हूँ, लेकिन इस पर अपना कुछ मत देने की स्थिति में नहीं हूँ. इतना ही बता सकूँगा कि ये प्रयोग (*सँभाल/बचा/कर/ चला +ले*)+*जा* के रूप में विश्लेषित हों, तो अच्छा; क्योंकि मूलतः

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संभाल लेना आदि का ही इसमें विस्तार है. यहाँ 'लेना' रंजक क्रिया नहीं, बल्कि सामर्थ्यबोधक 'ले' है, जो 'सक/पा' का पर्याय है. *चिंता मत करो, मैं गाड़ी संभाल लूँगा.* इस दृष्टि से यहाँ संयुक्त रंजक क्रिया 'ले जा' के प्रस्ताव की ज़रूरत नहीं है. इसी तरह उनका प्रस्ताव है कि 'खड़ा हो' (*भाग खड़े हुए*) भी एक संयुक्त रंजक क्रिया है. ?*भाग कर खड़े हुए* के विस्तार के अभाव में अपने इस संयुक्त रूप को रंजक क्रिया माना है. उठ खड़े हुए में निश्चित रूप से 'कर' का लोप है. *भाग खड़े हुए* में भी यह स्थिति रही होगी.

3.3. हो+*गुज़र उठ चल ले आ* समस्या की स्थिति है. यहाँ प्रथम स्थानीय रंजक *हो* का अर्थ स्पष्ट नहीं है. इसे द्विस्थानीय रंजक क्रिया मानने पर 'गुज़र' तथा 'चल' दो नये क्रिया रूप हमारी सूची में जुड़ जाएँगे. उदाहरण देखिए– *मैं बैठा हूँ, तुम हो आओ. मेरा मन द्रवित हो उठा. आप तब तक तैयार हो लें.* इन वाक्यों में द्विस्थानीय रंजक क्रिया 'ले उठ' का अर्थ स्पष्ट है. *हो आना* की चर्चा ऊपर 3.1. में कर चुके हैं. इस कारण 'हो' को प्रथम स्थानीय रंजक नहीं मान सकते. क्या *हो गुज़र/चल* में 'कर' लोप की गुंजाइश है या ऐतिहासिक साक्ष्य है ?

3.4 अंत में *सो बैठ लेट बच*+*रह* के रंजकत्व की समस्या पर कुछ कहना चाहूँगा. ये क्रिया रूप स्थितिसूचक हैं और क्रमशः *लेटा*+*रहा* आदि के विकल्प हैं. यहाँ 'रह' निश्चित रूप से निरंतरता की सूचना देता है.

4. रंजक क्रियाओं की कुछ सामान्य विशेषताएँ–

रंजक क्रिया निषेधवाचक 'नहीं' आदि शब्दों के साथ नहीं आती (*तुम कर लो*, **तुम मत कर लो, तुम मत करो. वह बैठ गया,* **वह नहीं बैठ गया, वह नहीं बैठा*). ध्यान रखने की बात है कि निम्नलिखित वाक्य निषेधात्मक नहीं हैं, भले इनमें न, नहीं आते हैं. *तुम सो न जाना*[1]. *कहीं वे लोग आ न जाएँ. ये दोनों कपड़े मैं ही क्यों न ले लूँ? यहाँ कोई नहीं जिन्होंने चंदा न दे दिया हो. अगर मैं दो दिन में यह काम पूरा न कर लूँ तो···. जब तक सारे लोग अंदर न आ जाएँ ···.* इन वाक्य रचनाओं में रंजक क्रिया का प्रयोग वैकल्पिक नहीं, बल्कि अनिवार्य है.

रंजक क्रिया के साथ वृत्तिवाचक क्रियाएँ (*लग सक चुक पा*) तथा *रहा* नहीं आते, न यह निरंतरता बोधक कृदंत के रूप में आती है (**कर लेते*+*रह/जा/चल*).

पूर्वज्ञान पर आधारित क्रियाओं के विधि रूप मिलते हैं, जबकि अन्य कुछ रंजक क्रियाओं के साथ विधि रूप सहज नहीं हैं. 'उठ', 'आ' दोनों के साथ विधि रूप

[1]इसका कारण है इनमें निहित मूल वाक्य. इस वाक्य का विस्तार या विकल्प होगा–तुम सो जाओ. यह न हो'. रूपांतरण में यह 'न' वाक्य में आ गया है. लेकिन यह उस तरह का निषेध वाक्य नहीं, जिसमें निषेधवाचक वाक्य का अंश बनकर आता है–*वह नहीं सो गया.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं आते (*तुम चिल्ला उठो, ?बादल, तुम घिर आओ).

रंजक क्रिया रूप पूर्वकालिक कृदत 'कर' के साथ भी नहीं आता (*कर ले कर, निकाल दे कर, मार डाल कर). लेकिन 'कर' लोप से बने कुछ क्रिया रूपों में 'कर' लग सकता है (ले आ कर, खोज निकाल कर). उल्लेखनीय है कि समस्त धातु में भी 'कर' लगता है (ले-दे कर, खा-पी कर).

र 1. इसके साथ दो मात्राएँ अन्य वर्णों की अपेक्षा भिन्न प्रकार से लिखी जाती हैं–उ और ऊ की मात्राएँ अन्य अक्षरों के साथ नीचे लिखी जाती हैं, लेकिन ⟨र⟩ के साथ दोनों बीच में लिखी जाती हैं–रु रू.

2. ⟨र⟩ और वर्णों के साथ गुच्छ में आता है, तो तीन रूपों में लिखा आता है. (अ) शब्दों के उच्चारण क्रम में अगर /र/ अन्य किसी व्यंजन के पहले आए, तो वह उस व्यंजन को सूचित करने वाले वर्ण के ऊपर लिखा जाता है. *तर्क वर्ग मुर्गी बुर्का पूर्ण बर्र* आदि. (आ) जब /र/ व्यंजन क्रम में व्यंजन के बाद आता है, तो वह दो रूपों में लिखा जाता है. जिन वर्णों में बीच में या अंत में एक खड़ी पाई होती है, उनमें /र/ का रूप ⟨◌्र⟩ है, जो खड़ी पाई से लिखा जाता है. *चक्र फ़ख़्र उग्र घ्राण वज्र पत्र श्री ध्रुव प्राण कुफ़्र सन्न शुभ्र सम्राट व्रज स्रोत.* अपवादस्वरूप ⟨श्र⟩ है, जिसका दूसरा रूप ⟨*श्र⟩ कहीं-कहीं मुद्रण-टंकण में दिखायी पड़ता है. (इ) जिन वर्णों में कोई खड़ी पाई नहीं है. उनके नीचे ⟨◌्र⟩ लिखा जाता है. *ट्राम ड्रामा.* ह, द के साथ के रूप हैं ह्र, द्र. लेकिन मुद्रण-टंकण में इनके लिए ह्‌ और द्‌ के रूप मिलते हैं.

3. हिंदी शब्दों में **अ-लोप** के कारण शब्दों के बीच में अक्षरांत व्यंजन कभी पूरा लिखा जाता है और कभी वह दूसरे अक्षर के पहले वर्ण के साथ मिल कर गुच्छ बन जाता है. र के संदर्भ में निम्नलिखित विकल्प मिलते हैं–?मुर्झाना ~मुरझाना, पर्दा~परदा, वर्ना~वरना, ?पर्वाना~परवाना, बर्बाद~बरबाद; मद्रास~मदरास, मिस्री~मिसरी.

हिंदी में र वाले कुछ गुच्छ अ-आगम के कारण टूट चुके हैं और उनमें ⟨र⟩ पूरा लिखा जाता है. जैसे, करम (कर्म), धरम (धर्म), शरम (शर्म), भरम (भ्रम), फ़रक (फ़र्क), दरद (दर्द), उमर (उम्र), सबर (सब्र), फ़िकर (फ़िक्र). यद्‌यपि हिंदी लेखन और उच्चारण दोनों में दोनों रूप चलते हैं, फिर भी इस समय करम आदि रूपों को अमानक या ग्रामीण प्रयोग माना जाता है और फिर से धर्म आदि संस्कारित रूप प्रचलित हो चले हैं. कहीं-कहीं शुद्‌ध रूप जिनमें र का गुच्छ नहीं है **अतिसुधार** के कारण बदल जाते हैं. नरक जैसे शुद्‌ध रूप की जगह *नर्क जैसा गलत रूप चलता है.

4. विसर्ग संधि में विसर्ग की जगह र का रूप (र्) लिखा जाता है. जैसे, *दुर्गम निर्यात पुनर्वास अंतर्विरोध* आदि. विसर्ग संधि में कहीं भी व्यंजनों से पहले

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

⟨र⟩ नहीं आता. लेकिन वर्तमान हिंदी में 'अंतर' अंग्रेज़ी 'इंटर' का पर्याय माना गया है और इसका यही रूप सभी जगह चलता है. जैसे *अंतरप्रांतीय, अंतर-जातीय, अंतरराष्ट्रीय, अंतरविभागीय* आदि.

5. य के पहले ⟨रि⟩ ही आता है, कहीं ⟨ऋ⟩ नहीं. देखें **ऋ**. जैसे *क्रिया, प्रिय.*

र, ड़; र, ल हिंदी में /र, ड़/ का विकल्प कई शब्दों में मिलता है. जैसे, *घबराना ~घबड़ाना, पिंजरा~पिंजड़ा, नगारा~नगाड़ा, अनारी~अनाड़ी, सारी~साड़ी,* पूरी~पूड़ी. /र, ल/ के विकल्प थोड़े-से शब्दों में मिलते हैं. जैसे *दीवार~दीवाल, देहरी~देहली, ?रोरी~रोली, पारी~/पाली* आदि.

वैसे /र ड़ ल/ हिंदी के स्वनिम हैं और कई शब्दों में एक-दूसरे के स्थान पर आ कर अर्थ भेद उत्पन्न करते हैं. ऊपर के शब्दों में इनमें मुक्त वितरण की स्थिति दिखायी पड़ती है.

रखा, लिखा जब इन शब्दों को बलाघात के साथ बोलते हैं, तो /खा/ का उच्चा-रण लंबा खिंचता है. शायद इसी कारण कुछ लोग इन्हें *रक्खा, लिक्खा* बोलते और लिखते हैं. **रक्खा, *लिक्खा* रूप अमानक हैं.

रजत यह 'चाँदी' का पर्याय है, लेकिन यह हर जगह 'चाँदी' की जगह नहीं आ सकता. यह कुछ ऐसे संयुक्त शब्दों में ही आता है, जहाँ अंग्रेज़ी में silver का प्रयोग होता है. रजत पट (सिनेमा का पर्दा), *रजत जयंती, रजत पदक.* धातु के अर्थ में और जगह 'चाँदी' का ही प्रयोग होता है. जैसे *चाँदी की तश्तरी, चाँदी के सिक्के, चाँदी का दाम.* ऋण-अनुवाद के कारण शब्दों में नये प्रकार से अर्थ के वितरण का यह रोचक उदाहरण है.

रहा 1. हिंदी में *करता है/था* के व्यतिरेक में *कर रहा है/था* के प्रयोग की सुनिश्चित व्यवस्था दिखायी पड़ती है. *करता है* का प्रयोग अपूर्ण पक्ष में होता है और यहाँ व्यापार विद्यमान है. इसमें प्रायः हम दीर्घ समय के व्यापार (*मैं इस विद्यालय में काम करता हूँ*), आवर्ती व्यापार (*मैं रोज़ पाँच बजे उठता हूँ*), गुणधर्म (*गर्मी से सभी वस्तुएँ फैलती हैं*) आदि अर्थ सूचित करते हैं. व्यापार की निरंतरता के कारण इसे सातत्य वर्तमान या नित्य वर्तमान की संज्ञा दी जाती है. इसके विप-रीत *रहा* का प्रयोग किसी एक समय-बिंदु पर उस व्यापार के घटित होते रहने की सूचना देता है. *मैं इस समय अख़बार पढ़ रहा हूँ. वे अभी सो रहे हैं. तुम आजकल क्या कर रहे हो? आप कल शाम पाँच बजे क्या कर रही थीं? वे लोग कल सवेरे खेल खेल रहे थे.* यह समय **किया** के प्रयोग की तरह एक निश्चित बिंदु भी हो सकता है (*पाँच बजे*) या समय की लंबी अवधि भी हो सकता है (*मैं दो साल से यहाँ काम कर रहा हूँ. मैंने दो साल यहाँ काम किया. *मैंने दो साल से यहाँ काम किया*).

2. ऐतिहासिक दृष्टि से हिंदी में *रहा* का प्रयोग अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आया है. संस्कृत में, हिंदी की बोलियों में, दक्षिण तथा पूर्व की भाषाओं में, गुजराती, मराठी आदि आर्य भाषाओं में *रहा* का प्रयोग बिल्कुल नहीं है या सुनिश्चित नहीं है. दक्षिण की भाषाओं में भी अब धीरे-धीरे *रहा* का निश्चित प्रयोग बढ़ रहा है. शायद यही कारण है कि तमिल या मलयालम भाषा भाषियों में निम्न प्रकार का दोष प्रायः दिखायी पड़ता है–*पिताजी क्या करते हैं? किचन में हैं, खाना खाते हैं.* हिंदी में यहाँ *रहा* का प्रयोग अनिवार्य है, अन्यथा हिंदी भाषी इस प्रसंग को पिताजी के दैनिक क्रिया-कलाप के रूप में देख सकता है.

3. यहाँ हम *करता* और *कर रहा* में अंतर देख लें. *वह क्रिकेट खेलता है. वह क्रिकेट खेल रहा है.* पहले वाक्य में कौशल की सूचना है, इस समय के व्यापार की नहीं. कथन की सत्यता वर्तमान में विद्यमान है. दूसरे वाक्य में वर्तमान में व्यापार की सूचना है. *वह क्रिकेट खेलता है, लेकिन अभी हाकी खेल रहा है.* पहले वाक्य में स्वभाव या गुण या कौशल की सूचना है, दूसरे में वास्तविक वर्तमान व्यापार की. *यह पंखा चलता है. यह पंखा चल रहा है.* पहले वाक्य में पंखे के ठीक से काम करने की स्थिति की सूचना है, दूसरे में वर्तमान समय में व्यापार की. अतः यह वाक्य ठीक नहीं है–**यह पंखा नहीं चलता और अब चल रहा है.* लेकिन यह वाक्य सही है–*यह पंखा चलता है लेकिन अभी नहीं चल रहा है.* आगे के दो वाक्य देखिए–*माँ खाना बनाती हैं. माँ खाना बना रही हैं.* पहले वाक्य में खाना बनाने वाले व्यक्ति की सूचना है ('कौन' के उत्तर में), दूसरे में माँ के इस समय के कार्य की ('क्या कर रही हैं' के उत्तर में). *तुम कहाँ जाते हो? तुम कहाँ जा रहे हो?* पहला वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होने पर भी प्रयोग की दृष्टि से गलत है, क्योंकि इससे मालूम नहीं पड़ता कि क्या सूचना माँगी जा रही है. सही प्रश्न होगा–*तुम रोज़ सवेरे कहाँ जाते हो?*

उपर्युक्त तथा इसी तरह के अन्य उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि *करता है* के विभिन्न प्रयोग संदर्भों के व्यतिरेक में *रहा* एक निश्चित समय बिंदु या अवधि में व्यापार की सूचना देता है. दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अपूर्ण पक्ष में समय बिंदु का उल्लेख होने पर *रहा* का प्रयोग अनिवार्य है. इसके आगे के वाक्यों में भी देख सकते हैं–*वह दो साल से यहाँ काम कर रही है (*करती है). मैं कई साल से इसी मकान में रह रहा हूँ (*रहता हूँ). रमेश दो महीनों से इस स्कूल में पढ़ रहा है (*पढ़ता है).* आगे के वाक्य में बारंबारता भी है, समय-बिंदु भी–*मैं कई दिन से उसे बराबर इसी जगह देख रहा हूँ (?देखता हूँ). हम कई साल से इसी दुकान से सामान ख़रीद रहे हैं (?ख़रीदते हैं).* ऐसे वाक्यों में क्रिया-रूप के चयन में शायद समय-बिंदु ही निर्णायक तत्त्व है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. रहा का एक और विशिष्ट प्रयोग है. यह वर्तमान काल में ही नहीं, आगे आने वाले समय के संदर्भ में भी प्रयुक्त होता है. यह भी अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण है और हिंदी में अंग्रेज़ी से मिलती व्यवस्था है. *मैं आज शाम को बंबई जा रहा हूँ. वे लोग अगले महीने अमेरिका जा रहे हैं. भारत अगले वर्ष अपना राकेट चंद्रमा पर भेज रहा है.* इन वाक्यों में आप देखते हैं कि व्यापार की शायद शुरुआत भी नहीं हुई है, कहीं शायद निर्णय की स्थिति है. इस प्रयोग को कुछ वैयाकरण निकट भविष्य का नाम देते हैं. यह नाम बहुत सार्थक है, क्योंकि आने वाले काल में पाँच-छह व्यापारों की क्रमिक सूची दी जाए, तो सिर्फ़ पहले व्यापार को हम रहा से प्रकट कर सकते हैं. *मैं शाम को बंगलूर जा रहा हूँ. वहाँ से बंबई जाऊँगा और फिर बंगलूर जाऊँगा. बंगलूर से हैदराबाद आऊँगा.* **आप तो सिंगापुर जा रहे हैं. क्या वहाँ से टोक्यो भी जा रहे हैं ?*

इस संदर्भ में प्रायः गत्यर्थक क्रियाएँ ही आती हैं, लेकिन अन्य क्रियाओं का निषेध नहीं है. *आप स्कूटर कब ले रहे हैं ? सुना है तुम शादी कर रहे हो. ?मैं आज शाम को तुम्हें हज़ार रुपये दे रहा हूँ. क्या तुम इस साल इम्तहान दे रही हो? *मैं आज शाम को क्रिकेट खेल रहा हूँ.* इन वाक्यों में एक तरफ़ कार्य का पक्का निर्णय प्रकट होता है, दूसरी तरफ़ अपने वर्ग के क्रिया-व्यापारों के क्रम में पहला होने का स्पष्ट उल्लेख. ऊपर के गलत या संदिग्ध वाक्य इसी आधार पर सुधारे जा सकते हैं—*मैं शाम को एड्वान्स दे रहा, हूँ, बाकी पैसे कल दे दूँगा. मैं आज एक मैच में खेल रहा हूँ.*

4.1. इसी का पर्याय है *करने जा रहा*. यह अधिक व्यापक है और लगभग सभी प्रमुख क्रियाओं के साथ आता है—*मैं एक कारख़ाना खोलने जा रहा हूँ. वहाँ घड़ियाँ बनाऊँगा. वह अभी सोने जा रहा है. भारत अगले वर्ष चाँद पर आदमी भेज रहा है.* यह प्रयोजन गत्यर्थक की रचना (*लेने (के लिए) जा रहा हूँ*) से भिन्न है.

4.2. इस संदर्भ में भूतकालिक रूप *रहा था* नहीं आता (**वह पिछले हफ़्ते अमेरिका जा रहा था*), लेकिन '*करने जा रहा था*' का प्रयोग आम है—*मैं अभी कुछ कहने जा रहा था, लेकिन नहीं कह पाया.*

5. कुछ वैयाकरण *रहा* को हिंदी की पक्ष व्यवस्था के अंतर्गत मानते हैं और पक्ष की तिहरी व्यवस्था स्थापित करते हैं—पूर्ण (किया), अपूर्ण (करता है) और सातत्य (कर रहा है). पहले के व्याकरणों में *रहा* को अलग से स्थान नहीं मिलता था क्योंकि संस्कृत के आधार पर बने परंपरात्मक व्याकरण में इसका स्थान नहीं है. लेकिन आधुनिक वैयाकरण *रहा* की व्यवस्था को क्रिया रचना में पूर्ण और अपूर्ण क्रियाओं की तुलना में देखते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस संदर्भ में हम एक क्रिया व्यापार की विभिन्न स्थितियों को देखें :
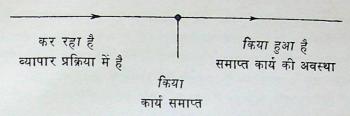
अंग्रेज़ी के भाषावैज्ञानिकों के अनुसार हम इन्हें क्रमशः प्रक्रिया (process), क्रिया (action) तथा अवस्था (state) सूचक क्रियाएँ मान सकते हैं. इन तीनों स्थितियों को मिला कर एक क्रिया व्यापार की सूचना मिलती है और 'रहा' एक व्यापार के उल्लेख का अंश है. ऐसे ही क्रिया-व्यापारों की शृंखला को हम कथन की वर्तमान में सत्यता के उल्लेख के लिए *करता है* के प्रयोग से दिखाते हैं.

ऊपर की स्थितियाँ वास्तव में सभी क्रियाओं में नहीं होतीं, क्योंकि हर क्रिया के अर्थ और प्रयोग के आधार पर इन स्थितियों का निर्धारण होता है. *पानी बरस रहा है–पानी बरसा–पानी बरसा है* में तीनों स्थितियाँ हैं; *पी रहा हूँ–पिया* में दो ही स्थितियाँ हैं; *बैठा–बैठा है* में दो स्थितियाँ हैं; *पड़ा हुआ है* में एक ही स्थिति है, *जाना* (<जानना) में एक ही स्थिति है.

रहा को पक्ष व्यवस्था में न लेने के कुछ आधार हैं. (अ) *रहा* अन्य दो पक्षों की तरह सार्वभौम सिद्धांत नहीं है. यह सभी भाषाओं में नहीं है (या ठीक से कहें, तो कुछ ही भाषाओं में है). हिंदी में भी *रहा* सभी क्रियाओं में नहीं आता. जबकि *जाता–गया* का व्यतिरेक सभी क्रियाओं में देखा जा सकता है. (आ) हिंदी में *करता-कर रहा* में हमेशा निश्चित अंतर नहीं बताया जा सकता. (इ) *रहा* को पक्ष व्यवस्था में मानने वाले विद्वान निम्नलिखित वितरण के कारण ऐसा करते हैं.

करता	
किया	है, *था*, *होगा* आदि
कर रहा	

वास्तव में क्रिया रूपों का यहाँ वितरण त्रुटिपूर्ण है. होना चाहिए–

	रंजक क्रिया	
कर	वृत्तिसूचक क्रिया	है आदि
	रहा	

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये मध्य स्थानीय क्रिया-रूप एक दूसरे के पूरक हैं और इनमें कुछ पक्ष का अंतर दिखाते हैं, कुछ नहीं.

राम-राम यह एक पुनरुक्त शब्द है, जो भगवान राम के नाम पर आधारित है. भारतीय जन-जीवन में राम नाम का महत्व इस नाम की प्रयोग-बहुलता में देखा जा सकता है. इस पुनरुक्त शब्द का प्रयोग कितने प्रकार के संदर्भों में हो सकता है, यह आगे के प्रसंगों में देख सकते हैं. 13 संदर्भ मेहरोत्रा (1975) में दिये गये हैं जिनका यहाँ विवरण दे रहा हूँ; कहीं उदाहरण बदला है, कहीं व्याख्या बढ़ायी है.

(1) एक दूसरे का अभिवादन–*काशी बहन, राम-राम. राम-राम पंडित जी.* (2) प्रार्थना के संदर्भ में–*खाली बैठे रहते हो, कुछ राम-राम किया करो.* इस प्रसंग में *भगवान का नाम लो, कुछ पूजा-पाठ करो* आदि भी आते हैं. इनके मुकाबले *?राम-राम किया करो* विरल प्रयोग है. (3) दुख प्रकट करने के लिए–*उसके पति का देहांत हो गया. राम-राम, यह तो बहुत दुख की बात है.* यहाँ *राम-राम* अवरोही स्वर में बोला जाता है. इसके बदले अवरोही स्वर में *अरे, राम-राम* भी बोला जा सकता है. (4) प्रशंसा युक्त विस्मय प्रकट करने के लिए–*राम-राम, इतनी छोटी उम्र में इतना बड़ा काम.* यहाँ *राम-राम* आरोही स्वर में बोला जाता है. इसके बदले में *अरे राम* भी आरोही स्वर में बोला जा सकता है. (5) जो मिला है उसी में संतुष्ट रहने के लिए–*राम-राम कहो. कहाँ मिलेगी इतनी अच्छी नौकरी फिर तुम्हें ?* (6) हल्की प्रताड़ना के अर्थ में–*राम-राम, जवान लड़की पर ऐसे हाथ उठाते हैं ?* (7) घृणा व्यक्त करने के लिए–*शर्म करो. राम-राम ! ब्राह्मण हो कर ऐसी बातें करते हो ?* (8) शांत करने के लिए–*पागल मत हो, चुपचाप राम-राम करो. तुम्हारा क्या दोष है ?* (9) काम की कठिनाई की ओर संकेत करने के लिए–*राम-राम करके इतना पैसा जुटा पाया और लड़की ही चल बसी.* (10) अपशब्द न कहने के लिए कहना–*पिताजी, मैं अब आप से आख़िरी बार मिलने आया हूँ. राम-राम, ऐसी बुरी बात मुँह से क्यों निकालते हो ?* (11) दूसरों की बात को गलत बता कर अपने को ठीक बताने के लिए–*इस बार आपने बहुत घटिया माल दिया है. राम-राम, कैसी बातें करते हो, बाबू जी.* (12) समवेदना प्रकट करने के लिए–*राम-राम ! बेहोश हो गया बेचारा.* (13) विदा लेने के लिए (गुस्से के साथ ?)–*आप लोगों से कुछ हो सके, तो कीजिए, वरना राम-राम.*

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होगा कि राम-राम केवल मात्र अभिवादन नहीं है, बल्कि भिन्न-भिन्न संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थों में आने वाले सामान्य शब्द की तरह एक प्रयोग है. इससे प्रसंगानुसार दुख, शोक, आश्चर्य, क्रोध, समवेदना, आदि भावनाएँ प्रकट होती हैं. भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ऐसे कम ही शब्द हिंदी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में हैं. लेकिन इसके प्रयोग की विशेषताएँ सिर्फ़ ऊपर के 13 उदाहरणों तक ही सीमित नहीं हैं, न ही ये 13 संदर्भ सुनिश्चित हैं. भिन्न विश्लेषण से यह संख्या कम या ज़्यादा हो सकती है. कुछ अन्य प्रयोग देखिए :

(14) दूसरे व्यक्ति की बात का खंडन या प्रतिवाद करने के लिए—*अरे राम-राम बोलो* (अर्थात तुम कहते हो, वैसी बात नहीं है). इसी अर्थ में *अरे, राम का नाम लो* भी चलता है. (15) अभिवादन के व्यापार का अर्थ स्पष्ट करने के लिए—*हम अंदर पहुँचे, सबसे राम-राम हुई. फिर बातचीत शुरू हुई.* इस अर्थ में *सबसे दुआ-सलाम हुआ* भी कह सकते हैं.

रिक्तता, रिक्ति *रिक्त* (ख़ाली) से *रिक्तता* (सूनापन) बना है. यह भाववाचक संज्ञा है और इसका बहुवचन रूप नहीं है. कार्यालय की हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली में *रिक्ति* 'वेकेंसी' के अर्थ में आता है. पद है, पद पर कोई व्यक्ति नहीं है, तो कार्यालय में एक रिक्ति है. इसका बहुवचन रूप *रिक्तियाँ* है.

रिक्शा यह जापानी भाषा का शब्द है, संस्कृत का नहीं. अतः इसे 'क्ष' से नहीं लिखा जा सकता. रक्षा, शिक्षा, भिक्षा, दीक्षा आदि संस्कृत शब्दों के सादृश्य से *रिक्शा* का कई व्यक्ति स्त्रीलिंग में प्रयोग करते हैं. इस आकारांत शब्द का पुल्लिग में प्रयोग करना ही अच्छा होगा.

रिश्ते-नाते 1. हिंदी भाषा में व्यक्ति के रिश्ते के शब्दों को सामने दिये गये आरेख से स्पष्ट कर सकते हैं. ये रिश्ते जिस व्यक्ति के संदर्भ में हैं वह *स्वयं* है. अगर *स्वयं* पुरुष न हो कर स्त्री हो, तो आरेख में और सब शब्द तो समान ही होंगे, केवल वैवाहिक संबंध के आधार पर रिश्ते में अंतर आएगा, जिसे निम्न प्रकार से एक आरेख से दिखा सकते हैं :
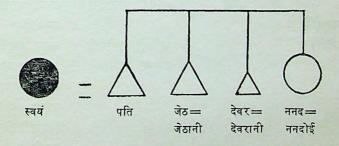
2. आरेख को समझने में आरेख के साथ दिये गये संकेत सहायक होंगे. इस आरेख में कुल सात पीढ़ियों का क्रम दिखाया गया है—*स्वयं* से ऊपर तीन पीढ़ियाँ हैं और नीचे तीन.

इस आरेख में जो शब्द दिये गये हैं वे निदर्शनात्मक या संकेतक (referential) हैं; संबोधन के शब्दों की चर्चा इसी प्रकरण में आगे की गयी है. रिश्ते के जो

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द दिये गये हैं, वे प्रतिनिधि शब्द हैं और बोलियों के तथा प्रादेशिक शब्दों को देना तथा विश्लेषण करना इस ग्रंथ की सीमा के बाहर की बात है, फिर भी जिज्ञासु व्यक्तियों के लिए रिश्ते के शब्दों की अतिरिक्त सूची दी जा रही है

हिंदी के शब्द	स्थानीय/प्रादेशिक शब्द (हिंदी से भिन्न जो हों)	अतिरिक्त संस्कृत शब्द (जो हिंदी में भी चलते हों)	उर्दू के शब्द
पति	मर्द, आदमी		ख़सम, ख़ाविंद शौहर
पत्नी	जोरू, औरत		बीबी
बेटा, लड़का	पूत	पुत्र, आत्मज	बेटा, फ़रज़न
बहू	पतोहू	पुत्रवधू	बहू
बेटी, लड़की	धी, धीया	पुत्री	बेटी, दुख़्तर
दामाद	जमाई	जामाता	दामाद
पिता, बाप			वालिद, अब्बा
माता, माँ			वाल्दा, अम्मी
भाई		भ्राता, सहोदर	भाई, बिरादर
भाभी	भावज, भौजाई		भाई, भावज
बहन	जीजी, दीदी	भगिनी, सहोदरी	बहन, आपा
जीजा, बहनोई			बहनोई
बहन (छोटी)		भगिनी, सहोदरी	बहन, हमशीरा
ससुर		श्वसुर	सुसर, ख़ुसर
सास			सास, ख़ुशदामन
साला			साला, निस्बती बिरादर
साली			साली, निस्बती बहन
साढ़ू			साढ़ू
सलहज			सलेस
जेठ			जेठ
जेठानी			जेठानी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिंदी के शब्द	स्थानीय/प्रादेशिक शब्द (हिंदी से भिन्न जो हों)	अतिरिक्त संस्कृत शब्द (जो हिंदी में भी चलते हों)	उर्दू के शब्द
देवर			देवर
देवरानी			देवरानी
ननद, ननंद			ननंद
ननदोई, नंदोई			नंदोई
ताऊ	ताया		ताया
ताई			ताई
चाचा	काका		चचा
चाची	काकी		चची
फूफा			फुप्फू
फूफी, बुआ			फूफी
मामा			मामू
मामी			मुमानी
मौसा	मासा		ख़ालू, ख़लई
मौसी	मासी		ख़ाला (ख़लेरा = मौसेरा)
भतीजा			
भतीजी			
भाँजा	बहनौता		
भाँजी			
दादा	बाबा	पितामह	दादा
दादी		पितामही	दादी
नाना		मातामह	नाना
नानी	बाबा	मातामही	नानी
पोता		पौत्र	पोता
पोती		पौत्री	पोती
नाती		दौहित्र	नवासा
नातिन, नतिनी		दौहित्री	नवासी
परदादा		प्रपितामह	
परदादी			

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिंदी के शब्द	स्थानीय/प्रादेशिक शब्द (हिंदी से भिन्न जो हों)	अतिरिक्त संस्कृत शब्द (जो हिंदी में भी चलते हों)	उर्दू के शब्द
परनाना			
परनानी			
परपोता		प्रपौत्र	
परपोती			
समधी			समधी
समधन			समधन

2. रिश्ते के शब्दों का विश्लेषण–(अ) अपनी तथा निकट की दो पीढ़ियों में रिश्ते की सबसे जटिल तथा विस्तृत व्यवस्था दिखायी पड़ती है. यहाँ हर संभव रिश्ते के लिए शब्द हैं. लेकिन पीढ़ियों के अंतर के साथ शब्द कम होते जाते हैं और रिश्ते में भेदकता कम हो जाती है. (आ) हिंदी में माँ या पिता के भाई-बहनों की संतानों के लिए *चचेरा*, *ममेरा* आदि के साथ *भाई* तथा *बहन* का ही प्रयोग होता है. जिन संस्कृतियों में मामा या फूफा की संतानों के साथ शादी का रिश्ता संभव है वहाँ ऐसे शब्द संभव नहीं होंगे[1]. रिश्ते के शब्द से ही हम जान सकते हैं कि हिंदी भाषियों में cousins में शादी का रिश्ता नहीं होगा. (इ) पिता के भाई-बहनों के साथ सिर्फ़ दो ही पीढ़ी तक निकट संबंध रहता है और उनकी संतानों के जीवनसाथियों (spouses) या संतानों के लिए शब्द नहीं मिलते. यहाँ ? चिह्न दिया गया है. इसी तरह अपने भाई-बहनों की संतानों के जीवनसाथियों या संतानों के लिए अलग शब्द नहीं मिलते. इसी तरह अन्य संदर्भों में भी जहाँ शब्द नहीं हैं, व्यक्ति व्याख्या द्वारा रिश्ता स्पष्ट करता है जैसे *भाँजे का लड़का*, *ससुर के साले* आदि या पीढ़ी के अनुसार शब्द का प्रयोग करता है जैसे सभी चचेरे, ममेरे, फुफेरे (बड़े) भाइयों की पत्नियाँ *भाभी* कहलाएँगी, बहनों के पति *जीजा*. इसी तरह भाँजों, भतीजों की पत्नियाँ *बहू* कहलाएँगी. इनके संबोधन के शब्दों के बारे में आगे देखेंगे. इस कारण जब कोई *भाभी* या *भाई* कहता हो तो सगे भाई से भी इसका तात्पर्य हो सकता है, चचेरे आदि से भी. संदेह की स्थिति में वक्ता को बात स्पष्ट कर लेनी चाहिए. इसी कारण जब मैं किसी से अपने भाई का परिचय कराता हूँ, तो पूछता है 'सगे भाई हैं ?' या अंग्रेज़ी में

[1]तमिलनाडु में ऐसी शादियाँ संभव हैं. इस कारण फूफा का लड़का, पति के लिए संबोधन दोनों के लिए 'अत्तान' एक ही शब्द है, मामा का लड़का, दामाद के लिए भी एक ही शब्द है 'मरुमकन'. इसी तरह मामा की लड़की, पत्नी दोनों के लिए शब्द है 'मरुमकल्.'

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रिश्ते के शब्द

CC-0. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
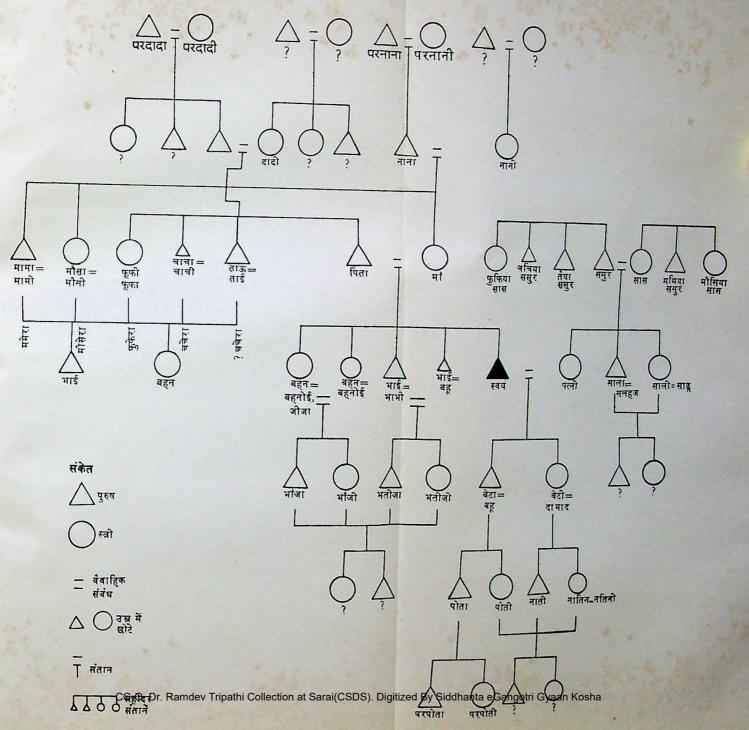
'Real brother ?'

3. रिश्ते के शब्दों में पाँच भेदक लक्षण हैं–पीढ़ी का अंतर, लिंग, उम्र, वैवाहिक संबंध तथा पीढ़ी का सीधा क्रम (linearity). हिंदी भाषी संस्कृति पितृ-प्रधान होने के कारण यहाँ पिता-पुत्र के रिश्तों में ही अधिक भेद दिखायी पड़ते हैं. इस आधारभूत कारक के आधार पर ही अन्य कारक कार्य करते हैं. इसलिए पिता के भाइयों में उम्र (पिता से बड़ा या छोटा होना) महत्त्व रखती है, माँ के भाइयों में नहीं. पत्नी के लिए पति के भाइयों की उम्र भेदक लक्षण है, पति के लिए पत्नी के भाइयों की उम्र भेदक नहीं.

पीढ़ी का अंतर शब्दों की संख्या पर असर डालता है, इसे हम ऊपर देख चुके हैं. इस अंतर के साथ उम्र का अंतर भी महत्त्व खो देता है. रोचक बात यह है कि नीचे की पीढ़ियों में उम्र का अंतर भी भेदक नहीं है.

पीढ़ी के सीधे क्रम के कारण नीचे की तीसरी पीढ़ी में ही अपने भाई-बहनों के पोतों आदि के लिए भेदक शब्द नहीं मिल पाते.

वैवाहिक संबंधों के संदर्भ में व्यक्ति के लिए पति या पत्नी के रिश्ते गौण रहते हैं. अतः जीवनसाथी के रिश्तेदारों की नामावली अपने रिश्तेदारों की नामावली से कम होती है. साथ ही अपने घर में पैदा हुए लोगों के लिए शब्द मिलते हैं, उनके जीवनसाथियों के लिए शब्द कम होते जाते हैं. अपनी पीढ़ी में भी (चचेरी, ममेरी) 'भाभी' से हम काम चलाते हैं, लेकिन उनमें आपस में अंतर करने वाला भेदक शब्द नहीं हैं. भतीजा, भाँजा आदि के जीवनसाथियों के लिए शब्द नहीं है. अपनी ही संतान की संतानों के जीवनसाथियों के लिए शब्द नहीं है. इस तरह वैवाहिक संबंध रिश्तों की निकटता निश्चित करने वाला प्रमुख कारक है.

4. संबोधन–रिश्तों के ये शब्द संकेतक हैं, निदर्शनात्मक हैं. संबोधन में इनसे भिन्न शब्दावली का कहीं-कहीं प्रयोग होता है. अपनी पीढ़ी में व्यक्ति अपने बड़ों को सामान्यतः *भाई जी, भाई साहब, दादा, भैया, भैया जी; बहन जी, दीदी, जीजी* कहता है. यह बात ममेरे, चचेरे भाई-बहन, साले और साली पर भी लागू होती है. बहनोई के लिए संबोधन का शब्द है *जीजा जी. भाभी जी* संबोधन का भी शब्द है. अपने से छोटों को आदमी नाम लेकर बुला सकता है. स्त्री देवर को प्रायः *लाला* कहती है और जेठ को शायद ही कभी बुलाती हो. देवर, छोटे भाई तथा छोटे साले की पत्नी के लिए प्रायः *बहू* संबोधन का शब्द है.

ऊपर की पहली पीढ़ी के शब्द *जी* के साथ संबोधन में आते हैं. हिंदी में *बाप* संबोधन का नहीं, बल्कि तिरस्कार के साथ संकेतक शब्द है. प्रायः व्यक्ति सास और ससुर को क्रमशः *माता जी, पिता जी* कहते हैं.

नीचे की पीढ़ियों में कोई संकेतक शब्द संबोधन में नहीं आता. व्यक्ति सब

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को नाम लेकर बुलाते हैं या अपने घर के लोगों को *बेटा*, *बेटी* तथा विवाह से संबद्ध व्यक्तियों को *बेटा* तथा *बहू* कहते हैं.

सबसे ऊपर की दो पीढ़ियों में *दादा*, *दादी*, *नाना*, *नानी* 'जी' के साथ संबोधन के शब्द हैं. स्थानीय रूप से कहीं *बाबा*, कहीं *अम्मा जी* आदि शब्द भी चलते हैं.

पति और पत्नी का संकेतन तथा संबोधन अपने में विशाल तथा अतिरोचक विषय है और इस पुस्तक में नहीं आ सकता. इसके कई स्थानीय, पारिवारिक तथा वैयक्तिक भेद हैं. इतना कहना पर्याप्त होगा कि दोनों व्यक्ति संकेतन में रिश्ते के संकेतक शब्दों का प्रयोग नहीं करते, बल्कि *घरवाला*, *वो*, *मुन्ने के पिता जी/की माँ* आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं. संबोधन में सीधे शब्दों का प्रयोग न करते हुए *अजी (सुनो, सुनते हो)*, *मुन्ने की माँ* आदि का प्रयोग करते हैं. समय बदल रहा है. अब पढ़े-लिखे लोगों में पति, पत्नी एक-दूसरे को नाम से बुलाने लगे हैं.

5. अहिंदी भाषी रिश्ते के शब्दों के निदर्शनात्मक तथा संबोधन के प्रयोगों में जो आम गलतियाँ करते हैं, उनके बारे में जान लें. एक बार एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा *ये आप की स्त्री हैं ?*, तो सुनने में बड़ा अटपटा लगा. पत्नी और पति शब्द बहुत सुरक्षित प्रयोग हैं; इनकी जगह मर्द, जोरू, औरत आदि शब्द निरापद नहीं हैं, क्योंकि इनके प्रयोग क्षेत्र, बोली, शैली, संदर्भ आदि के कारण सूक्ष्म अर्थ के अंतर लिये हुए होते हैं. 'बाप' की चर्चा ऊपर कर चुके हैं. हिंदी में *बाप-दादे* पूर्वजों के लिए, *माँ-बाप* parents के लिए स्वीकृत शब्द हैं. लेकिन *बाप* मान्य संकेतक नहीं है. *तेरा बाप* गाली है, *तुम्हारे पिताजी/अब्बा जान* आदि मान्य संकेतक हैं. इस कारण व्यंग्य, तिरस्कार आदि प्रसंगों में *बाप* का प्रयोग इन मुहावरेदार प्रयोगों में देख सकते हैं—*बाप की सड़क है क्या ? अपने बाप का माल समझा है क्या ? अपने बाप की औलाद हो, तो* · · · मित्रों से उनके रिश्तेदारों के बारे में बात करते समय बड़ों का उल्लेख संदर्भ के अनुसार 'जी, साहब, जान' (*पिता जी*, *ससुर साहब*, *मामू जान*) के साथ करें, अन्यथा श्रोता को बुरा लग सकता है. यही बात उनको संबोधित करते समय भी ध्यान में रखनी होगी. मित्रों के घर जाते समय उनके रिश्तेदारों को (बड़ों को) उसी रूप में संबोधित करना निरापद है, जिस रूप में वे स्वयं करते हैं.

6. रिश्ते के शब्दों में *ससुर*, *साला* तथा *साली* गाली के रूप में प्रयुक्त होते हैं. यद्यपि पहला शब्द पति, पत्नी दोनों का रिश्ता प्रकट करता है, बाकी दो शब्द पति के रिश्ते के हैं. अतः मान सकते हैं कि व्यक्ति पत्नी के रिश्तेदारों के साथ के संबंध को तिरस्कार से गाली के रूप में व्यक्त करता है. गाली के शब्द हैं—*ससुरा*, इसका स्त्रीलिंग रूप *ससुरी*, *साला* तथा *साली*. स्त्रियाँ कभी-कभी *ससुरा* तथा *ससुरी* का प्रयोग करती हैं, लेकिन प्रायः *साला* तथा *साली* का प्रयोग नहीं करतीं. इन्हीं गालियों से हम जान सकते हैं कि पति अपनी पत्नी के रिश्तेदारों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को किस तरह तिरस्कार के भाव से देखता है. लेकिन इसका तात्पर्य नहीं कि व्यक्ति अपने सास-ससुर का आदर नहीं करता. भाषाविज्ञान अपनी जगह है, व्यक्ति का वास्तविक व्यवहार अपनी जगह. ये शब्द इसीलिए चलते हैं कि साला अपने साले के लिए भी तो इसी शब्द का प्रयोग करता है.

7. रिश्ते के शब्दों का मुहावरेदार प्रयोग–एक कहावत है *ग़रीब की जोरू सबकी भाभी*. जोरू (पत्नी) एक की है उस पर सभी सशक्त व्यक्ति अपना हक जताते हैं. भाभी के साथ देवर के मधुर संबंधों के कारण यह कहावत बनी है; साथ ही इसमें समाज में ग़रीब व्यक्ति के शोषण की ओर संकेत है. सामाजिक संगठन में रिश्तेदारी का जो स्थान या महत्त्व है, उसका परिचय इन मुहावरेदार प्रयोगों में मिलता है.

भाई-भतीजावाद अपने लोगों को आगे बढ़ाने की प्रवृत्ति बताता है. *चोर-चोर मौसेरे भाई*–जिस तरह रिश्ते के भाइयों में घनिष्ठता होती है, उसी तरह एक वर्ग के लोगों में परस्पर मित्रता की ओर संकेत है. इस मुहावरे में मौसेरे भाइयों के ही रिश्ते की कोई विशेषता प्रकट नहीं होती. यह कहावत *!चोर-चोर फुफेरे भाई* भी हो सकती थी. 'मौसेरे' शायद स्वनिक विशेषताओं के कारण लिया गया है. तात्पर्य यह है कि कहावतें, मुहावरे आदि में भी हम रिश्तों के सामाजिक महत्त्व को जान सकते हैं. यह भी उल्लेखनीय है कि ये उक्तियाँ अधिकतर व्यंग्य में प्रयोग में आती हैं.

रूप, रूपिम रूप भाषा का सबसे छोटा सार्थक खंड है. रूप से शब्द का निर्माण होता है. रूप की कल्पना से हम अपरिचित नहीं हैं. उपसर्ग, प्रत्यय के नाम से व्याकरण ग्रंथों में रूपों की ही चर्चा है. प्रत्यय *-ता* अर्थ की दृष्टि से सबसे छोटा खंड है, जिसका अर्थ है 'भाव'. इसके भी खंड करें, तो /त, आ/ मिलेंगे, जिनमें अर्थ नहीं है. भाषा के सभी सार्थक न्यूनतम खंडों को रूप (morph) कहते हैं.

भाषा के सभी रूप दो वर्गों में बाँटे जा सकते हैं–स्वतंत्र रूप, जो शब्द भी हैं. जैसे *घोड़ा, पेड़, घर, किताब, अलमारी, वह, तुम, काम* आदि. सभी क्रिया (एकल) धातु भी स्वतंत्र रूप हैं–*जा, आ, देख, पढ़, उतर* आदि. लेकिन जब (दो) घोड़े कहते हैं, तब यह रूप नहीं, बल्कि दो रूपों से युक्त शब्द है–घोड़ा+ बहुवचन का रूप /ए/. यहाँ बहुवचन का रूप बद्ध है, क्योंकि यह *घोड़ा* की तरह स्वतंत्र रूप से नहीं आता, बल्कि संज्ञा शब्दों के साथ ही आता है. लगभग हिंदी के सभी प्रत्यय तथा उपसर्ग बद्ध रूप हैं.

2. **स्वनिम** की तरह यहाँ रूपिम के सिद्धांत को समझ लेना उपयोगी होगा. अगर किसी से पूछें कि अंग्रेज़ी में बहुवचन का रूप क्या है (या बहुवचन कैसे बनता है), तो वह s कहेगा, क्योंकि अधिकतर शब्दों में यही रूप लगता है. लेकिन कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनमें कोई बाह्य रूप नहीं दिखायी पड़ता (शीप), कुछ में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिन्न रूप है (मेन, चिल्ड्रेन). हिंदी में बहुवचन के कई रूप हैं—आकारांत पुल्लिग शब्दों में /ए/, ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में /आँ/, ऊकारांत आदि स्त्रीलिंग शब्दों में /एँ/, अन्य शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं. वास्तव में ये सभी भिन्न बाह्य रूप प्रकार्य की दृष्टि से एक ही हैं—बहुवचन सूचित करते हैं. इस तरह प्रकार्य की दृष्टि से समान सभी रूप एक रूपिम कहलाएँगे और वे सब रूप उस रूपिम के *सहरूप* (या *समरूप* कहे जा सकते हैं. *संरूप* उच्चारण के कारण त्याज्य है). नीचे हिंदी बहुवचन का रूपिम तथा वितरण दिया गया है. उदाहरणों के लिए **संज्ञा-रूप परिवर्तन** देखिए—

रूपिम	**सहरूप**	**वितरण**
{ए}	/आ → ए/	पुल्लिग-वर्ग 1 के शब्दों में
	/शून्य/	पुल्लिग-वर्ग 2 के शब्दों में
	/आँ/	/इ, ई, या/ अंत वाले स्त्रीलिंग शब्दों में
	/एँ/	शेष स्त्रीलिंग शब्दों में

रूपिम का नामकरण किसी भी (अधिक प्रचलित या प्रमुख) सदस्य के नाम पर हो सकता है. प्रमुखता के कारण बहुवचन के रूपिम को हम रूपिम /ए/ कहना चाहेंगे.

3. रूपों को उनके अर्थ के आधार पर अलग कर लिया जाता है और रूपिम निश्चित करने के बाद सहरूपों का वितरण निश्चित किया जाता है. यह सुनने में जितना आसान या सरल लगता है, उससे कहीं अधिक कठिन है और इस विश्लेषण में हर भाषा में अलग-अलग तरह की कठिनाइयाँ आती हैं. हिंदी में *पुस्तक, किताब* दो अलग रूप हैं, लेकिन अर्थ से एक. अन्य संबद्ध शब्दों की रचना के आधार पर इन्हें अलग रूपिम मान सकते हैं. ऐसी अनंत समस्याएँ सामने आती हैं. यहाँ दो-एक समस्याओं को ज़रा विस्तार में देखें.

हिंदी में तीन क्रिया रूप हैं—*करता, किया, करेगा*. तीनों का रूपों में विभाजन निम्न प्रकार से है—

धातु	**पक्ष**	**वचन-लिंग प्रत्यय**
कर	त	आ
कि	य	आ

इनमें पक्ष के लिए /त/ और /य/ रूप माने जाते हैं. हिंदी की ब्रजभाषा तथा गुजराती में वास्तव में /य/ रूप है और ब्रज में *आव्यौ, देख्यौ, कर्यौ, बोल्यौ* आदि क्रिया शब्द बनते हैं. लेकिन हिंदी में /य/ रूप नहीं है. यह /य/ केवल श्रुति है, जो आकारांत तथा इकारांत धातुओं में लगता है, और धातुओं में नहीं. अगर हम मान लें कि /य/ पूर्ण पक्ष का रूप है, तो सीखने वाले के लिए कठिनाई पैदा हो सकती है. इसे शून्य मानना भी मुश्किल है, क्योंकि रूपिम का शून्य

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सदस्य हो सकता है, लेकिन भाषा में कई जगह शून्य रूपिम विवादास्पद हल है. /आ/ लिंग तथा वचन दोनों का एक रूपिम है और इन्हें फिर अलग करके देखा नहीं जा सकता.

करेगा में कर+ए+ग+आ चार रूप मिलते हैं. ये क्रमशः धातु, तथ्येतर क्रिया, अनुमान तथा लिंग-वचन के रूपिम हैं. यहाँ तथ्येतर क्रिया और अनुमान की दुहरी व्यवस्था अनावश्यक है. चूँकि यहाँ दो रूप दिखायी पड़ते हैं, हमें दोनों के लिए रूपिमिक अर्थ की कल्पना करनी पड़ रही है.

एक अन्य समस्या *लड़का* के विश्लेषण की है, जिसे **संज्ञा-रूप परिवर्तन** में देख चुके हैं. *लड़का-लड़के-लड़की-लड़कियाँ* इन चार शब्दों में 'लड़क्' रूप मानने की बात कोई-कोई कहता है, क्योंकि क्रमशः आ, ए, ई, इआँ प्रत्ययों का विश्लेषण सुविधाजनक लगता है. तब यह सवाल उठता है कि 'लड़क' रूप का अपना अर्थ क्या है ? इस समस्या के संदर्भ में अगर हम 'लड़का' को एक ही स्वतंत्र रूप मानें, तो 'लड़के (को)' कैसे बना ? पहले विश्लेषण में और भी कठिनाइयाँ आती हैं—

मूल रूप	वचन का रूप		कारक का रूप
एकवचन	घर	शून्य	शून्य
बहुवचन	घर	शून्य	ओं

यहाँ तीन अलग प्रकार्यों में हमें शून्य मानना पड़ता है. दूसरी व्यवस्था में हम यह मानने को बाध्य होंगे कि पुल्लिंग एकवचन शब्द हमेशा मूल रूप होगा. फिर *किताब*, *घड़ी* आदि स्त्रीलिंग शब्दों के विश्लेषण में कठिनाई होगी.

ऊपर की चर्चा का उद्देश्य यह नहीं कि रूप विश्लेषण की अनुपयुक्तता दर्शाऊँ, बल्कि यही बताना चाहता हूँ कि भाषाविज्ञान के सिद्धांतों से भाषा सीखने या सिखाने वाले को जहाँ तक हो सके सहायता लेनी चाहिए. लेकिन ऐसी गुत्थियाँ जो भाषाविज्ञान से भी नहीं सुलझी हैं, उनको ध्यान में रखते हुए अनुप्रयोगात्मक ढंग से व्यावहारिक रूप में समाधान करें. *करता* या *किया* का रूप विश्लेषण प्रमुख नहीं, बल्कि इन क्रियाओं का प्रयोग हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है.

लगना यह हिंदी की ऐसी क्रिया है, जो सबसे अधिक व्यापक प्रयोग में आती है. यहाँ इसके कुछ प्रमुख प्रयोग दे रहा हूँ.

1. व्यक्ति के शारीरिक या मानसिक संवेदनाओं, अनुभवों को हम 'लग' से प्रकट करते हैं. यहाँ कर्ता में, जो कि अनुभवकर्ता भी है, 'को' परसर्ग आता है. *मुझे ठंड/भूख/प्यास/गर्मी/चिंता/लग रही है.* *हमें डर/आश्चर्य लगा.* अनुभवों के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदर्भ में कुछ प्रयोग हैं, जहाँ 'लग' की जगह 'होना' आता है. *चिंता लगना ~चिंता होना, आश्चर्य होना~आश्चर्य लगना*. परेशानी, अफ़सोस आदि सिर्फ़ 'हो' के साथ आते हैं. और कुछ प्रयोग हैं, जो 'आना' के साथ आते हैं. *उसे गुस्सा लगा~उसे गुस्सा आया, मुझे शर्म लगी~मुझे शर्म आयी. *वह/उसे* गुस्सा हुआ क्षेत्रीय, अमानक प्रयोग है.

2. 'अनुभव होना' के अर्थ में कर्म+कर्म पूरक के वाक्य मिलते हैं. *मुझे वह बुद्धू लगता है. मदनलाल जी, क्या बात है, आप परेशान लग रहे हैं. क्या मैं (तुम्हें) अच्छी लग रही हूँ. यह किताब मुझे बहुत अच्छी लगी. देखो. वह मकान कैसा लगता है ?* इस अर्थ में कई मुहावरेदार प्रयोग हैं—*बुरा लगना (यह सब देख कर बुरा लगता है), बढ़िया लगना, अच्छा लगना.*

2.1. इन्हीं वाक्यों को 'मुझे लगता है कि· · ·' से बदल सकते हैं. *मुझे वह पागल लगता है→मुझे लगता है कि वह पागल है. मुझे यह किताब अच्छी नहीं लगती→मुझे लगता है कि यह किताब अच्छी नहीं है.* देखने में समान लगने पर भी दोनों में अर्थ का अंतर है. *मुझे यह चाय मीठी लगती है—मुझे लगता है कि चाय मीठी है* दूसरे वाक्य में व्यक्ति ने चाय नहीं पी, लेकिन अनुमान से कह रहा है. पहले वाक्य में यह अर्थ तो है ही, चाय पीने के समय के अनुभव की अभिव्यक्ति भी है. *मुझे चाय मीठी लगी* में सिर्फ़ अनुभव है, अनुमान नहीं.

*मुझे चाय मीठी लगी→*मुझे लगा · · ·.*

!मुझे लगता है कि चाय मीठी थी.

मुझे लगता है से कुछ अन्य वाक्य भी मिलते हैं, जिनके लिए *मुझे · · · लगता है* वाला रूपांतरण नहीं मिलता. *मुझे लगता है कि वह नहीं आ सकेगा.* इन सब वाक्यों में *मुझे लगता है* का अर्थ कुछ हद तक 'मेरा अनुमान है' होगा.

3. *लगना* 'लगाना' का अकर्मक रूप है. नयी शब्दावली में इसे मिथ्यावाच्य भी कहते हैं, क्योंकि यह 'लगाया जाना' का पर्याय है. *नगर निगम सौ पेड़ लगा रहा है→सौ पेड़ लगाये जा रहे हैं→सौ पेड़ लग रहे हैं.* इस अर्थ में *लगाना* के लगभग सभी प्रयोग *लगना* के साथ आते हैं. *ये मेज़ें कहाँ लगेंगी ? चलो, खाना लग गया है. सब लोग काम पर लग गये* (<मालिक ने सब को काम पर लगाया). *मेरा सारा धन व्यापार में लगा हुआ है.* 'लगना' से बनने वाले सैकड़ों मुहावरेदार प्रयोग हैं—*मन/दिल लगना, दाँव लगना, हाथ लगना, ज़ोर लगना, मुँह लगा (प्यारा).*

3.1. कुछ ऐसे व्यापार हैं, जो लगाये नहीं जाते, सिर्फ़ लगते हैं. इस कारण 'लगना' यहाँ मुख्य क्रिया के समान है, मिथ्यावाच्य नहीं. यहाँ 'लगना' का प्रयोग नहीं होता. *पेड़ों में फूल लग गये. पढ़ते-पढ़ते मेरी आँख लग गयी. यह तुम्हें*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाय पीने की अच्छी लत लग गयी (<लत लगाना ?). मौका लगा, तो तुम्हें देखने आऊँगा.

3.2. जहाँ कोई वस्तु किसी दूसरे में जा लगे—यहाँ भी 'लगाना' का प्रयोग नहीं है. पैर में कील लग गयी. मुझे उसकी बात लग गयी (अर्थात बात तीर की तरह मन में चुभ गयी). उसे गोली लग गयी.

4. किसी क्रिया व्यापार में, धंधे में समय आदि के व्यय की बात 'लग' से होती है. यहाँ से दिल्ली जाने में आठ घंटे लगते हैं. ऐसी मेज़ बनाने में पाँच सौ रुपये लगते हैं. अच्छी तस्वीर बनाने में बहुत मेहनत लगती है. यहाँ 'लगना' से रूपांतरण होता है, लेकिन सब जगह वह सहज नहीं है. कुछ वाक्यों में 'लगाना' का प्रयोग बहुत सहज है. हमने इस काम में अपनी सारी शक्ति लगा दी ? (→शक्ति लग गयी) !हम यहाँ से दिल्ली जाने में आठ घंटे लगाते हैं. *हमने मेहनत लगा कर यह काम पूरा किया. !हमने एक मेज़ बनवाने में पाँच सौ रुपये लगाये ?

5. यह एक वृत्तिसूचक क्रिया है और अन्य क्रियाओं के साथ आ कर कार्य के आरंभ की सूचना देती है. क्रिया का रूप तिर्यक क्रियार्थक संज्ञा का होता है. वह रोने लगा. बच्चे खेलने लगे. लड़की गाने लगी. इसका समानार्थी प्रयोग है उसने रोना शुरू किया आदि.

5.1. क्रिया 'लग' की रूपसिद्धि के आधार पर इसके सभी काल-पक्ष के भेद मिलते हैं. इसके साथ रंजक क्रियाएँ और निरंतरता सूचक कृदंत नहीं आते. न ही यह विधि में (*तुम रोने लगो) या रहा के साथ (*वह रोने लग रहा है) या नहीं के साथ आती है (*वह रोने नहीं लगा). ये तीनों प्रयोग 'शुरू कर' के साथ आते हैं—तुम गाना शुरू करो. ?वह लिखना शुरू कर रहा है. उसने अभी काम करना शुरू नहीं किया.

लगाना यह **लगना** का सकर्मक रूप है. लगना के जो पाँच प्रमुख प्रयोग बताये हैं, उनमें 3 (3.1, 3.2 नहीं) तथा 4 'लगाना' में रूपांतरित हो सकते हैं.

लगाना से बनने वाले कुछ प्रमुख मुहावरेदार प्रयोग देखिये—मन/दिल लगाना, आस लगाना, ज़ोर लगाना, हाथ लगाना (मदद करना, सहयोग करना). जान लगाना (*जान लगना), मुँह लगाना, दाँव/बाज़ी लगाना, घात लगाना.

लघुतासूचक प्रत्यय हमने लिंग नामक प्रकरण में देखा कि जड़ वस्तुओं के संदर्भ में लिंग का प्रत्यय आकार की लघुता भी सूचित करता है. लोटा-लुटिया, ताल-तलैया, रस्सा-रस्सी, नगर-नगरी. इसका प्रकार्य प्रमुखतः लिंग भेद करना है. लघुता-सूचक प्रत्ययों का दूसरा भेद वह है, जिसमें लिंग परिवर्तन किये बिना भी आकार की लघुता सूचित की जाती है. खाट-खटिया, डिब्बी-डिबिया, नदी-नदिया, गठरी-गठरिया आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं. पूरब की बोलियों में कई शब्दों में लघुता,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न्यूनता आदि दिखाने के लिए पुल्लिग शब्दों में /उआ/ और स्त्रीलिंग शब्दों में /इया/ प्रत्यय लगते हैं. *बाबू-बबुआ, बेटा-बिटवा, लड़का-लड़कवा, बेटी-बिटिया* आदि द्रष्टव्य हैं. इनमें कुछ शब्द मानक हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं.

पुल्लिग शब्दों में लघुतासूचक प्रत्यय के उदाहरण कम मिलते हैं. संस्कृत -क (बालक), फ़ारसी -क (दस्तक–स्त्री०–छोटा हाथ, मरदक, अस्पक–छोटा घोड़ा, ऐनक–पु०–छोटी आँख) से निष्पन्न कुछ शब्द हिंदी में रूढ़ अर्थ में, निष्पन्न रूप में प्रयुक्त होते हैं. इसी तरह तुर्की का लघुतासूचक प्रत्यय -ची हिंदी में व्युत्पादक नहीं है. यह लिंग परिवर्तन भी करता है. डोल-डोलची, संदूक-संदूकची, देग-देगची.

हिंदी भाषा के लघुतासूचक प्रत्ययों में /ड़ा, ड़ी/ प्रमुख हैं. इसका विस्तृत प्रयोग राजस्थान की बोलियों तथा गुजराती में मिलता है. हिंदी में कई शब्द रूढ़ प्रयोग हैं. कोठरी (<कोठड़ी), *टँगड़ी, दुखड़ा, लोथड़ा,* पटरी (<पटड़ी<पाट+ड़ी), चमड़ा/चमड़ी, *पंखड़ी* आदि शब्दों में इस प्रत्यय को देख सकते हैं. यहाँ मूल शब्द नहीं, बल्कि प्रत्यय लिंग का वहन करता है.

ललचना, ललचाना हिंदी के दोनों कोश (वृ० हि० को० ; सं० हि० श०) इन्हें क्रमशः अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया रूप मानते हैं. *ललचा* (<लालच) नामधातु है और निर्दिष्ट नियमों के अनुसार बना है. प्रयोग में यह अकर्मक ही है। *मेरा जी ललचा रहा है.* इसका सकर्मक में प्रयोग नहीं मिलता. **मैंने बच्चे को ललचाया.* 'ललचना' विरल प्रयोग है, प्राक-निर्माण (back formation) से बना लगता है. कोशकार शायद सादृश्य के कारण भ्रमित हो गये. उल्लेखनीय है कि *लहर, लहरा* को दोनों कोश अकर्मक मानते हैं.

लाभान्वित इसका शाब्दिक अर्थ है 'लाभ से युक्त'. इस कारण जिससे लाभ मिलता है, वह लाभान्वित करता है; जिसे लाभ पहुँचता है, वह लाभान्वित होता है. *आप से निवेदन है कि व्याख्यान दे कर हमें लाभान्वित करें (*लाभान्वित कराएँ). आशा है कि आप के सहयोग से हम लाभान्वित होंगे.*

लायक 1. नालायक (बेकार) जिस शब्द से बना है, वह 'उपयोगी' या 'अच्छा' के अर्थ में हिंदी में प्रयुक्त नहीं होता. (*?आपका बच्चा बहुत लायक है. ?हमारे दफ़्तर में बहुत लायक लोग काम कर रहे हैं.*)

2. *लायक* परसर्गीय शब्द के रूप में ही प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ है 'योग्य, पर्याप्त, उचित'. *लायक* से पहले सर्वनाम संबंधकारक में आते हैं और प्रायः संज्ञा शब्द तिर्यक रूप में आते हैं. *आप क्यों शर्मिंदा कर रहे हैं? मैं किस लायक हूँ? मेरे पास चाय बनाने लायक चीनी तो है. यह कहने लायक बात नहीं है. यह किताब छोटे बच्चों लायक है. मेरे लायक कोई काम हो तो बताइए.* 2 के सारे वाक्यों में 'योग्य' *लायक* की जगह आ सकता है. साथ ही 1 के वाक्य भी 'योग्य' से बन जाएँगे.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिंग 1. हिंदी भाषा में सारे संज्ञा शब्द लिंग के दो वर्गों—पुल्लिग और स्त्रीलिंग में विभाजित होते हैं. सभी शब्द किसी एक लिंग में प्रयुक्त होते हैं. हिंदी में लिंग व्यवस्था न पूर्ण रूप से व्याकरणिक है (अर्थात शब्द के रूप के आधार पर लिंग पहचाना जा सके), न ही पूर्ण रूप से तार्किक (अर्थात शब्द के अर्थ से लिंग पहचाना जा सके). हिंदी में लिंग व्यक्त कोटि नहीं है, अर्थात शब्द के रूप से हम लिंग को पहचान नहीं सकते. लिंग के आधार पर संज्ञा के साथ क्रिया तथा विशेषण की अन्विति होती है, जिससे हम शब्द के लिंग को पहचान सकते हैं.

लिंग विधान तथा इसके महत्त्व को समझने के लिए संज्ञा के निम्नलिखित वर्ग विभाजन को समझ लेना आवश्यक होगा.
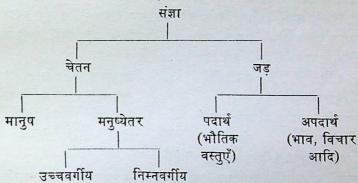
2. मनुष्य से संबंधित संज्ञा शब्दों में लिंग (gender) लैंगिकता या यौन (sex) के आधार पर निश्चित होता है. इसमें कहीं कोई अपवाद नहीं है. *आदमी, छोकरा, लड़का, राजा, मोची, दादा* पुल्लिग हैं; *औरत, लड़की, रानी, नाइन, नानी* स्त्रीलिंग शब्द हैं. शब्द मनुष्य जाति के किसी व्यक्ति की ओर इंगित करता हो, तो व्यक्ति की लैंगिकता को देख कर उसका तदनुसार पुल्लिग या स्त्रीलिंग में प्रयोग करना चाहिए. *हिजड़ा* शब्द हिंदी में पुल्लिग में ही प्रयुक्त होता है.

2.1. रिश्ता या व्यवसाय सूचित करने वाले शब्दों में प्रत्यय जोड़ कर या पूरा शब्द बदल कर लिंग परिवर्तन (और साथ में लैंगिक स्तर में अंतर) सूचित किया जा सकता है. नीचे के कुछ उदाहरण देखें. स्त्रीलिंग शब्दों के संदर्भ में समझ लें कि स्त्रीलिंग शब्द पुल्लिग शब्द से व्युत्पन्न है.

शब्द बदल कर—आदमी-औरत, राजा-रानी, भाई-बहन, पिता-माता

प्रत्यय परिवर्तन से—

आ → ई लड़का-लड़की, दादा-दादी

आ → इया बूढ़ा-बुढ़िया, बेटा-बिटिया

अ → इआ अध्यापक-अध्यापिका, सहायक-सहायिका, नायक-नायिका

अ → आ अध्यक्ष-अध्यक्षा, सदस्य-सदस्या, साहब-साहिबा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ई → इन   समधी-समधिन, बंगाली-बंगालिन

अ → इन   जमादार-जमादारिन, मज़दूर-मज़दूरिन

नी जोड़कर मास्टर-मास्टरनी, डाक्टर-डाक्टरनी

अ → आनी सेठ-सेठानी, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी

ये प्रत्यय रूढ़ि के अनुसार सीमित तथा चुने हुए शब्दों के साथ ही आते हैं और हम अपनी इच्छा से किसी भी संज्ञा में कोई भी प्रत्यय नहीं जोड़ सकते. गुंडा से *गुंडी*, *गंजा* से *गंजी* (संज्ञा में), *शर्मा* से *शर्माइन* आदि ज़्यादातर वक्ता की वाचालता या भाषिक कौशल के नमूने हो सकते हैं, सामान्य या मान्य रूप नहीं.

2.2. मानुष संज्ञाओं में पद सूचित करने वाले शब्दों में या व्यापार का कर्तृत्व बताने वाले शब्दों में लिंग निर्णय की कुछ अव्यवस्था है. संस्कृत व्याकरण के अनुसार ऐसे शब्दों में लिंग परिवर्तन अवश्यंभावी था और प्राय: सभी शब्दों में पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के रूप मिलते हैं.

कवि	कवयित्री	अध्यापक	अध्यापिका
दाता	दात्री	सहायक	सहायिका
अधिष्ठाता	अधिष्ठात्री	विद्वान	विदुषी
मंत्री	मंत्राणी	प्रेमी	प्रेमिका

साथ ही ऊपर 2.1 के अन्य शब्द भी देखें.

आधुनिक युग में स्त्री तथा पुरुष बराबरी से हर जगह कार्य करते हैं और समान पद धारण करते हैं. इस कारण पदनामों में हर जगह स्त्रीलिंग शब्द की रचना बहुत अटपटी तथा दुर्वह व्यवस्था होती. भारत सरकार ने जो पदनाम शब्दावली (1964) प्रकाशित की है, उसमें दोनों लिंगों के लिए समान शब्द ही सुझाये गये हैं. पद धारण करने वाले व्यक्ति की लैंगिकता विशेषणों से जानी जा सकती है. जैसे *हमारे प्रधान मंत्री*, *हमारी प्रधान मंत्री*. इसी संदर्भ में मुझे अपने मित्रों के साथ की बातचीत याद आती है, जब कोई परिहास के लिए पूछता है *राष्ट्रपति* का स्त्रीलिंग शब्द क्या होगा. चिंता की बात नहीं, हमारी राष्ट्रपति के लिए भी यही पदनाम शब्द रहेगा, लिंग परिवर्तन के साथ नहीं. इस नयी व्यवस्था के अनुसार *लेखा-अधिकारी*, *न्यायमूर्ति*, *नियंत्रक*, *लिपिक*, *संयोजक*, *राजदूत*, *निरीक्षक*, *अध्यक्ष*, *सहायक*, *सचिव*, *निदेशक* आदि शब्द स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से व्यवहृत होंगे और *अधिकारिणी*, *नियंत्रिका*, *राजदूतिनी*, *अध्यक्षा* आदि शब्द बनाने की आवश्यता नहीं. जब किसी पद पर नियुक्त स्त्री की लैंगिकता को अभिव्यक्त करना हो, तो शब्द से पहले 'महिला' जोड़ सकते हैं. जैसे *महिला पुलिस*, *महिला* (~लेडी) डाक्टर, *महिला* (बस) *संवाहक* आदि. इस नयी व्यवस्था में भी कई अड़चनें हैं. विमान में काम करने वाली महिलाएँ अभी *विमान परिचारिका* ही कहलाती हैं, *परिचारक* नहीं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदि इस पद्धति का तुरंत अनुसरण होने लगे, फिर भी कवयित्री, अध्यापिका जैसे शब्द सौंदर्य-बोध के कारण बदले नहीं जाएँगे और बोलचाल के *मालिन*, *मज़दूरिन* जैसे शब्द बदले नहीं जा सकेंगे. इस तरह कुछ शब्दों को उभय लिंग में तथा अन्य कुछ शब्दों को अन्यत्र लिंग परिवर्तन के साथ प्रयोग में लाने की दुहरी व्यवस्था बहुत दिन तक चलेगी. जो अंग्रेज़ी भाषा से परिचित हैं, वे जानते हैं कि वहाँ भी ऐसी ही कठिनाई है. अंग्रेज़ी में 'वेट्रेस' है, लेकिन 'डाक्ट्रेस' या 'टीचरेस' नहीं (जबकि अंग्रेज़ी भाषा में लिंग संबंधी व्यवस्था जटिल नहीं है).

पदाधिकारियों के संबंध में एक रोचक बात याद आ रही है. कार्यालय में कार्य करने वाला व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को पत्र लिखता है, तो परिचित व्यक्तियों को वैयक्तिक ढंग से लिखते हुए *आप का* (yours sincerely) लिखता है और अपरिचित व्यक्तियों के औपचारिक पत्रों में भवदीय (yours faithfully). यह सवाल उठा कि महिलाएँ क्या लिखें. कोई औरत आप को *आप की* तभी लिखेगी, जब वह आप की रिश्तेदार हो या आप का उसके साथ घनिष्ठ संबंध हो. सरकार ने निर्णय किया है कि महिलाएँ भी *आप का* के नीचे ही हस्ताक्षर करेंगी. कैसा पेचीदा मसला है, देखिए.

2.3. कई शब्द ऐसे हैं, जो वर्ग प्रतिनिधित्व भी करते हैं और वर्ग के हर प्रतिनिधि का भी संकेत देते हैं. *आदमी* ऐसे व्यक्ति का द्योतक है, जो मनुष्य जाति का है, पुरुष है, वयस्क है (बालक नहीं). लेकिन इससे हम पूरी मनुष्य जाति का भी अर्थ प्रकट करते हैं. *आदमी ने लाखों वर्ष पहले आग की ईजाद की*. इस कारण जब हम किसी से पूछते हैं 'आप के दफ़्तर में कितने लोग/आदमी काम करते हैं', और वह कहता है '50 लोग/आदमी/व्यक्ति काम करते हैं', तो इसमें आदमी, औरतें दोनों शामिल हैं. अगर औरतों के बारे में भी जानना हो, तो प्रश्न बनेगा 'आप के यहाँ कितने आदमी और कितनी औरतें काम करते (~करती) हैं ?' इसी तरह के अन्य कुछ प्रश्न-उत्तर देखिए :

आप के कितने बच्चे हैं ?	दो लड़के, एक लड़की है.
	मेरे चार बच्चे हैं (लड़कियाँ कितनी ?)
आप के कितनी लड़कियाँ हैं ?	दो (लड़कों के बारे में न पूछा गया है, न बताया गया है)
बाहर कितने आदमी हैं ?	चार-पाँच.
	?कोई आदमी नहीं, चार औरतें हैं.
	कई आदमी और औरतें हैं.
	करीब 50 आदमी हैं (औरतें भी शामिल ?)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2.4. **भाषा में फुटकर खाता** के संदर्भ में आप देखेंगे कि स्त्रीलिंग निश्चित व्याकरणिक कोटि है, पुल्लिग में आदमी, औरतें सब शामिल होते हैं. इसी कारण जब व्यक्ति का विशिष्ट लिंग न बताया जाए, तो वाक्य पुल्लिग में ही बनते हैं. जब तक आने वाले व्यक्ति के बारे में मालूम न हो, हम कोई *आया* है ही कहेंगे (*!आयी* है); प्रश्न भी करेंगे *कौन आया है ?* (*!कौन आयी है ?*) फुटकर खाते का विधि (law) की भाषा में ख़ास महत्त्व है. कानून की धारा में he का व्यक्ति के लिए उल्लेख होता है (पुरुष या स्त्री) और लिखा जाता है कि he में she भी शामिल है. हिंदी के सर्वनाम *वह* में लिंग भेद प्रकट नहीं होता. अतः हिंदी की विधि की पुस्तकों में उल्लेख मिलता है कि *करता है* में *करती है* भी शामिल है.

3. मनुष्येतर चेतन प्राणियों में उच्च वर्गीय प्राणी हैं—गाय, बैल, घोड़ा, शेर, भालू आदि चौपाये जानवर; मोर, मुर्गा आदि पक्षी. निम्न वर्गीय प्राणियों में कीट-पतिंगे, कई छोटी चिड़ियाँ, छोटे जीव-जंतु आदि आते हैं. यह विभाजन निश्चित वर्गों का नहीं, सुविधा के लिए है. उच्च-निम्न वर्गों के विभाजन का आधार दूसरी तरफ़ हमारे जीवन में इनके स्थान का है. जो जानवर हमारे लिए निकट तथा परिचित हैं, वे उच्च वर्गीय हैं, शेष निम्न वर्गीय.

3.1. उच्च वर्ग के जानवरों के लिए लैंगिकता के आधार पर हम प्रायः दोनों लिंगों में शब्द देखते हैं, जिनकी रचना का आधार ऊपर का 2.1 है.

शेर	शेरनी	बाघ	बाघिन
बैल/साँड़	गाय	घोड़ा	घोड़ी
ऊँट	ऊँटनी	बकरा	बकरी
मोर	मोरनी	गधा	गधी
हाथी	हथिनी	बंदर	बंदरी/बंदरिया
कुत्ता	कुतिया/? कुत्ती	भैंसा	भैंस
हिरन	हिरनी		

जिन शब्दों के स्त्रीलिंग रूप नहीं हैं, उनमें लैंगिकता दिखाने के लिए शब्द से पहले 'नर' या 'मादा' जोड़ा जाता है. *नर भालू—मादा भालू, नर गोरिल्ला—मादा गोरिल्ला, नर चीता—मादा चीता* आदि.

3.2. इन में स्त्रीलिंग शब्द विशिष्ट वर्ग का द्योतक है और पुल्लिग शब्द या 'नर', 'मादा' रहित शब्द वर्ग प्रतिनिधित्व भी करता है. निश्चित रूप से लैंगिकता बताने या लैंगिक प्रकार्य के व्यापारों के संदर्भ में ही हम स्त्रीलिंग शब्द का प्रयोग करते हैं. जैसे *शेरनी (*शेर) एक बार में दो बच्चे देती है. गधी का (*गधे का) दूध स्वास्थ्य के लिए अच्छा है. बंदरिया बच्चे को छाती से*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिपकाये रहती है. नीचे के वाक्यों में प्राणी का उल्लेख वर्ग प्रतिनिधित्व के लिए है और इसमें मादा भी शामिल है.

हाथी झुंड में रहते हैं. अकेला हाथी ख़तरनाक होता है.
कोई-कोई शेर आदमख़ोर बन जाता है.
कुत्ता वफ़ादार जानवर है.

3.3. निम्न वर्ग के प्राणियों तथा जीव-जंतुओं में हम अपनी समझ की सीमा के कारण तथा प्रायः आवश्यकता न होने के कारण लिंग से लैंगिकता का अर्थ प्रकट नहीं करते. अतः यहाँ शब्द वर्ग प्रतिनिधित्व मात्र करते हैं और शब्द के लिंग का सदस्य के लैंगिक रूप से कोई मतलब नहीं है. कुछ पुल्लिंग शब्द हैं—मच्छर, खटमल, साँप, मेंढक, चूहा, ख़रगोश, पतिंगा, टिड्डा, तोता, कौआ, नेवला, भुनगा; कुछ स्त्रीलिंग शब्द हैं—मक्खी, मछली, मैना, गिलहरी.

यद्यपि हम निम्नवर्ग के प्राणियों, जंतुओं के संदर्भ में लैंगिकता के बारे में नहीं जानते या सोचते, फिर भी इसके वर्णन की आवश्यकता हो जाती है. बच्चों की कहानियों में *चुहिया, कौवी* जैसे शब्द मिल जाते हैं (आख़िर चूहे और चूहे में या कौए और कौए में शादी हो सकती है भला!). लेकिन मैंने कहीं (मज़ाक के अलावा) मक्खा, तितला, मछला जैसे शब्द नहीं सुने.

विज्ञान की चर्चा में इन जंतुओं की लैंगिक स्थिति का उल्लेख करने की आवश्यकता पड़ती है तो वहाँ इनसे पहले 'नर' 'मादा' जोड़े जाते हैं. *नर मक्खी, मादा मक्खी* आदि (नर मक्खी उड़ता है या उड़ती है?). *मलेरिया के मच्छरों की एक विशेषता है. नर नहीं काटता, मादा काटती है. कीड़ों में नर छोटा होता है, मादा बड़ी होती है.*

वास्तव में निम्नवर्गीय प्राणियों के संदर्भ में दिखायी पड़ने वाले तथाकथित विपरीत लिंग के शब्द कतई लैंगिकता की ओर संकेत नहीं करते, बल्कि अन्य अर्थ भेद प्रकट करते हैं. *चुहिया* (परी कथाओं को छोड़कर) चूहे की 'स्त्री' नहीं है, बल्कि भिन्न वर्ग का प्राणी है (मूषिक). *चींटा चींटी* का 'मर्द' नहीं बल्कि चींटा-चींटी वर्ग (इस बृहत वर्ग का प्रतिनिधि शब्द क्या है?) में बड़े आकार वाला एक उपवर्ग है. यही बात *मकड़ा* के लिए कही जा सकती है.

3.4. जड़ संज्ञा शब्दों में एक ओर पदार्थ के सूचित करने वाले शब्द मिलते हैं, जिन्हें छू, देख, पकड़ सकते हैं. भौतिक वस्तुओं में रूप, रंग, आकार का भेद ज़रूर होता है. चूँकि ये जीवित वस्तुएँ नहीं हैं, इनमें लैंगिकता का भेद तो हो ही नहीं सकता. इस कारण यहाँ लिंग से लैंगिकता दिखाने का प्रश्न नहीं उठता. जड़ शब्दों में लिंग विभाजन पूर्णतः यादृच्छिक तथा स्वायत्त व्यवस्था है, जो न व्याकरणिक है, न उसका आधार प्रकृत लैंगिकता है. जैसे गुरु ने उल्लेख किया है वैयाकरणों ने हिंदी के शब्दों के लिंग निर्णय करने के कई 'नियम' बनाये हैं—

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लगता है आज भी व्याकरण लिखने वालों का सर्वोत्तम मनोरंजन यही है. वे ऐसे नियम बनाते हैं, जो कहीं लैंगिकता का आधार लें, कहीं स्वन का, कहीं रूप का और कहीं अर्थ क्षेत्र का (पेड़ों के नाम पुल्लिग हैं आदि). 'नियमों' की संख्या सौ के आसपास होती है और हर नियम के साथ कई-कई 'अपवाद' होते हैं.

जड़ वस्तुओं के संदर्भ में भी वैयाकरण लिंग को लैंगिकता के गुणधर्मों से जोड़ने की कोशिश करते हैं. गुरु भी कहते हैं 'जिस संज्ञा से (यथार्थ वा कल्पित) पुरुषत्व का बोध होता है उसे पुल्लिग कहते हैं जैसे *लड़का, बैल, पेड़, नगर* इत्यादि. ··· जिस संज्ञा से (यथार्थ वा कल्पित) स्त्रीत्व का बोध होता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे *लकड़ी, गाय, लता, पुरी* इत्यादि (1957, § 255–6). कठोरता, परुषता, शक्ति, श्रेष्ठता(?) के गुण पुल्लिग शब्दों में ढूँढ़े तथा उनसे जोड़े जाते हैं. इसी तरह स्त्रीलिंग शब्दों में कोमलता, सुकुमारता, बलहीनता (वाह री अबला!), सुंदरता आदि गुण बताये जाते हैं. लेकिन पुरुषत्व या स्त्रीत्व का अर्थ बोध मेरे लिए कठिन है. स्त्री के विशेष लैंगिक चिह्न भी पुल्लिग में प्रयुक्त होते हैं, जैसे कुच, स्तन; और दाढ़ी, मूँछ का स्त्रीलिंग में होना उपहास का कारण बनता है. एक बार (स्व०) सुनीति कुमार चटर्जी ने हिंदी का एक स्वरचित वाक्य दिया था, 'बड़ी-बड़ी मूँछों वाली पुलिस कड़ी धूप में उस बड़ी अट्टालिका के नीचे खड़ी है.' फिर पूछने लगे कि इन शब्दों में सुकुमारता कहाँ है. कहने का तात्पर्य यह है कि पदार्थों में लिंग के अनुसार गुणधर्म ढूँढ़ना आत्म-प्रवंचना है. मकान में पुरुषत्व या इमारत में स्त्रीत्व ढूँढ़ना तर्कहीन है. हमें मान लेना चाहिए कि कुछ शब्द पुल्लिग होते हैं और कुछ स्त्रीलिंग. यह हिंदी भाषा की प्रकृति है, एक भाषिक व्यवस्था है. यह एक ऐसी जटिल व्यवस्था है, जिसे नियमों में बाँध पाना भी असंभव-सा है.

3.4.1. बाबूराम सक्सेना ने (1960) एक सुंदर लेख में लिंग परिवर्तन से प्राप्त शब्दों में अर्थ-भेद दिखाया था. उस लेख से प्रभाव ग्रहण करते हुए मैं यहाँ हिंदी में लिंग के अर्थ पक्ष पर कुछ विचार सामने रखना चाहूँगा.

(अ) असंबद्ध शब्द–ये देखने में लिंग परिवर्तन के शब्द लगते हैं, लेकिन ये असंबद्ध हैं. कई शब्दों में रूप साम्य मात्र एक संयोग है. इस कारण ये शब्द चेतन प्राणियों के संदर्भ में भी देखे जा सकते हैं. उदाहरण देखिए–

जाला	जाली	अंडा	अंडी
बीड़ा	बीड़ी	कुंडा	कुंडी
बदला	बदली	कुल्फ़ा	कुल्फ़ी
अँगूठा	अँगूठी	पन्ना	पन्नी
घड़ा	घड़ी	घाटा/घाट	घाटी

प्राणियों के संदर्भ में असंबद्ध शब्द हैं *भेड़* (स्त्रीलिंग)–*भेड़िया* (पुल्लिग), *साँड़*-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साँड़नी (याने ऊँटनी)

(आ) संबद्ध शब्द–ये शब्द अर्थ की दृष्टि से जुड़े हैं और रूप की दृष्टि से आश्वस्त ढंग से अनुमान किया जा सकता है कि इनमें पुल्लिग शब्द मूल हैं और स्त्रीलिंग बाद में व्युत्पन्न हुए हैं. ये शब्द मात्र पदार्थों के द्योतक हैं. इनके भी दो भेद हैं. लघुतासूचक शब्द–स्त्रीलिंग प्रत्यय लगाने पर वस्तु के लघु आकार का अर्थ प्रकट होता है. जैसे कंघी–छोटा कंघा. यह आकार भेद वास्तव में तुलना तथा व्यक्ति के प्रत्यय-बोध की बात है, सुनिश्चित कोटियाँ नहीं. मेरे लिए जो कंघा है वह दूसरे के लिए कंघी हो सकता है. अतः निश्चित स्थितियाँ छोड़कर (रस्सा हाथ जितना मोटा होता है, रस्सी उँगली जितनी), अन्य सीमा रेखा के मामलों में लिंग निर्धारण या अर्थ-बोध कठिन हो सकता है. मैं हिंदी में *बहुत छोटा डिब्बा* तथा *बहुत बड़ी डिब्बी/डिबिया* में प्रयोगगत अंतर जानना चाहूँगा. यहाँ लघुतासूचक शब्दों के कुछ अन्य युग्म दिये जा रहे हैं.

कंघा	कंघी	टोप	टोपी
रस्सा	रस्सी	नद	नदी
सुआ	सुई	थाल	थाली
डोरा	डोरी	फोड़ा	फुड़िया
खूँटा	खूँटी	डिब्बा	डिबिया
छुरा	छुरी	लोटा	लुटिया
कटोरा	कटोरी	पुल	पुलिया
लट्ठ	लाठी	ताल	तलैया
मच्छ	मछली (! माछी)		

वैकल्पिक प्रत्यय–*खाट-खटिया* दो शब्द मिलते हैं और (दोनों) स्त्रीलिंग हैं. इसी तरह *बेटी-बिटिया* दो रूप हैं. *खटिया* 'खाट' का स्त्रीलिंग रूप नहीं, बल्कि ये दोनों एक ही शब्द के दो रूप हैं. /इया/ अंत वाले शब्द स्त्रीलिंग शब्दों में तथा /वा/ अंत वाले शब्द पुल्लिग शब्दों में (बेटवा) बोलियों में प्रयुक्त होते हैं. और चर्चा के लिए **लघुतासूचक प्रत्यय** देखें.

इसी तरह *मिर्चा-मिर्च/मिर्ची* लघुतासूचक शब्द युग्म नहीं हैं. प्रयोग देखिए–*हाय ! आँखों में मिर्चा लग गया. इतनी बड़ी मिर्च ? हाँ, यह शिमला मिर्च है. पचास ग्राम हरी मिर्च* (**हरा मिर्चा*, अर्थात बड़ी हरी मिर्चें) *लाना. मिर्ची* मिर्च का पर्याय है और *मिर्च* अधिक प्रचलित शब्द है. *मिर्चा* मिर्च का गुणधर्म सूचित करता है.

(इ) अर्थ समता वाले शब्द–इस वर्ग में वे शब्द आते हैं, जो संबद्ध हैं और जो लिंग भेद के साथ अर्थ भेद भी दिखाते हैं. इस प्रयोगगत विशिष्टता को आप निम्न प्रकार की तुलना से देख सकते है–*झंडी*=*छोटा झंडा* वाला सूत्र यहाँ काम

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं आएगा. आकार की भिन्नता (हमेशा आवश्यक नहीं है, क्योंकि जूती छोटे जूते से बड़ी हो सकती है) के साथ-साथ यहाँ संदर्भ की भिन्नता भी है. इसे हम आगे के शब्दों में देखेंगे–

कुर्ता, चोला, जूता–पुरुष वर्ग पहनता है.	कुर्ती, चोली, जूती–औरतें पहनती हैं.
टुकड़ा–किसी वस्तु का खंड	टुकड़ी–सेना की टुकड़ी
डिब्बा–रेल का डिब्बा (*रेल की छोटी डिब्बी)	डिब्बी–चीज़ें रखने का पात्र
चमड़ा–जानवरों का	चमड़ी–मनुष्य की
कंठा–एक गहना, गले का	कंठी–गले में धार्मिक उद्देश्यों से पहनी जाती है
झंडा–ध्वज	झंडी–अलंकरण के लिए प्रयुक्त झंडे के आकार के कागज़ या कपड़े के टुकड़े
किनारा–नदी का	किनारी–साड़ी की
नाला–पानी का	नाली–गंदे पानी की
पापड़–बड़ा गोल तथा चपटा पदार्थ	पापड़ी–छोटे टुकड़ों में बनी
ताला–दरवाज़े का	ताली–चाबी का पर्याय
कुंडा–साँकल लगाने का स्थान	कुंडी–साँकल
भट्टा–उद्योगों में प्रयुक्त, विशाल	भट्टी–घरों में, कुटीर उद्योगों में प्रयुक्त
चौका–खाने बनाने की जगह	चौकी–बैठने का आसन, छोटा तख़्त
चिट्ठा–लिखित विवरण	चिट्ठी–ख़त, पत्र
शीशा–दर्पण	शीशी–काँच का बना बरतन, बोतल
जाल–मछली पकड़ने का जाला–मकड़ी का जाला	जाली–'नेट', mesh
घंटा–एक घंटे का समय, बड़ी घंटी	घंटी–बजने वाली घंटी

3.5. लिंग संबंधी चर्चा के अंत में हम अमूर्त संज्ञा शब्दों पर आते हैं. यहाँ चूँकि आकार वाली बात नहीं है (*छोटा स्वास्थ्य, *बड़ा स्वास्थ्य), शब्दों में लिंग परिवर्तन तथा युग्मों का यहाँ स्थान नहीं है. गुरु ने जिन अपवाद रहित शब्दों की सूची दी है वे ज़्यादातर इसी वर्ग के हैं. अमूर्त संज्ञा शब्दों की रचना में हमें रूपस्वनिमिक आधार मिलते हैं, जिनसे शब्दों का लिंग पहचाना जा सके, जैसे *-पन -त्व -य -पा -व -अन* पुल्लिंग सूचक प्रत्यय हैं, *-ता -ना -ई -वट/-हट* स्त्रीलिंग प्रत्यय हैं. ये प्रत्यय संस्कृत, उर्दू मूल के हैं या देशज.

रूपस्वनिमिक चर्चा के अलावा केवल शब्द के स्वनिक रूप के आधार पर भी विद्वानों ने नियम बनाये हैं. जैसे उर्दू के हकारांत शब्द स्त्रीलिंग, हिंदी के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खकारांत शब्द स्त्रीलिंग आदि. नियमों में संख्या वृद्धि तथा अपवादों की अधिकता के कारण यह प्रयत्न अधिक सफल नहीं हो पाता.

4. लिंग संबंधी प्रकरण को समाप्त करने से पहले प्रकरण के परिशिष्ट के रूप में और तीन बातों की चर्चा करना चाहूँगा.

4.1. हिंदी में शब्दों में लिंग की व्यवस्था संस्कृत से प्राप्त हुई है. संस्कृत में तीन लिंग थे–पुल्लिग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग (आधुनिक आर्य भाषाओं में गुजराती, मराठी तथा सिंधी में भी तीन लिंगों की व्यवस्था है). इनमें नपुंसक लिंग फुटकर खाता था, शेष दो निश्चित. हिंदी में सिर्फ़ दो ही लिंग हैं. संस्कृत के पुल्लिग तथा नपुंसक लिंग के शब्द हिंदी में पुल्लिग बन गये तथा स्त्रीलिंग यथावत ग्रहण किये गये. लेकिन इस प्रक्रिया में कुछ शब्द संस्कृत से भिन्न ढंग से प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें आगे देख सकते हैं (सूची गुरु के आधार पर है)–

शब्द	संस्कृत में लिंग	हिंदी में लिंग
अग्नि	पु०	स्त्री०
आत्मा	पु०	स्त्री०
आयु	न०	स्त्री०
जय	न०	स्त्री०
तारा	स्त्री०	पु०
देवता	स्त्री०	पु०
देह	पु०	स्त्री०
पुस्तक	न०	स्त्री०
वस्तु	न०	स्त्री०
राशि	पु०	स्त्री०
व्यक्ति	स्त्री०	पु०
शपथ	पु०	स्त्री०

हिंदी में उर्दू से आये शब्दों में भी यह कठिनाई नहीं है. ज़्यादातर शब्द मूल अरबी या फ़ारसी के लिंग के अनुसार ही प्रयुक्त होते हैं. दूसरी ओर कुछ संस्कृत या देशज शब्द हिंदी तथा उर्दू में अलग-अलग लिंगों में प्रयुक्त होते हैं. जैसे, चर्चा (हिंदी स्त्रीलिंग, उर्दू पुल्लिग).

4.2. हिंदी में कई ऐसे शब्द हैं, जो समस्वन हैं और दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं. लिंग भेद से इनमें अर्थ भेद प्रकट होता है. कुछ शब्द देखिए :

शब्द	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
काँच	शीशा	गुदा स्थान का एक अंग, काछ
कल	आने वाला दिन	चैन, मशीन का पुरज़ा
हार	गले में पहनने की माला	जीत का विलोम, पराजय

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाप	धनुष	पदचाप, पैरों की ध्वनि
वेल	विल्व फल	लता
बाट	तोल का मान	राह, रास्ता
टीका	मस्तक का टीका, तिलक	पुस्तक की टीका, व्याख्या

4.3. हिंदी में हम कई पर्याय देख सकते हैं, जिनमें एक पुल्लिग में है, तो दूसरा स्त्रीलिंग में. पर्यायों या निकट अर्थ वाले शब्दों की अधिकता के कारण यह सूची भी लंबी हो सकती है. ये शब्द चेतन प्राणियों के संदर्भ में नहीं मिलते, क्योंकि चेतन प्राणी का लिंग कुछ हद तक लैंगिकता से भी संबंध रखता है और प्रतिनिधि शब्द प्रायः पुल्लिग में होता है. जड़ शब्दों में भी अमूर्त संज्ञा शब्दों में ही यह बात ज़्यादा दिखायी पड़ती है. कुछ उदाहरण देखिए :

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
प्रयत्न	कोशिश	—	सेवा, ख़िदमत
इंतज़ाम	व्यवस्था	मदरसा, स्कूल	पाठशाला
इंतज़ार	प्रतीक्षा	न्यायालय	अदालत
इम्तहान	परीक्षा	श्वास	साँस
—	दृष्टि, नज़र	—	भित्ति, दीवार
प्रकाश	रोशनी	—	प्रशंसा, तारीफ़, स्तुति
शीशा, आईना	—	लम्हा, पल, क्षण	घड़ी
—	आशा, उम्मीद	—	शिक्षा, तालीम
अभ्यास	आदत	ख़ून	हत्या
दोष, अपराध, गुनाह	—	—	शर्म, लज्जा
नुकसान	हानि	—	जीभ, ज़ुबान
मकान, भवन	इमारत	साया	छाया

ये सूचियाँ सिर्फ़ इस उद्देश्य से दे रहा हूँ कि अध्येता देखें कि लिंग संबंधी समस्या के कितने पहलू हैं. लेकिन ऐसी सूचियों के उपयोग से इनकार भी नहीं किया जा सकता. अध्येताओं और अध्यापकों को चाहिए कि वे इन सूचियों का विस्तार करें और यथायोग्य उपयोग करें.

लेकिन विपरीत प्रतिक्रिया या दशा सूचित करने वाले कई शब्द हिंदी में हैं– *लेकिन, पर, मगर, किंतु, परंतु.* ये पाँचों ही प्रचलित हैं; *लेकिन* और, *पर* अधिक प्रयोग में आते हैं. *मैंने जाने को कहा, लेकिन वह नहीं गया. यह कपड़ा सुंदर तो है, लेकिन टिकाऊ नहीं है. मैं जाना तो चाहती थी, लेकिन नहीं जा सकी. वह विद्वान तो नहीं है, लेकिन एक कुशल अध्यापक है.* इन पाँचों शब्दों में अर्थ या संदर्भ की दृष्टि से कोई अंतर नहीं है, लेकिन इनका चुनाव शैलीगत कारणों से होता है. कोई *किंतु* कहने का आदी है, कोई *मगर* कहने का.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेखा 1. यह अंग्रेज़ी एकाउंट के अर्थ में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द है, जिसकी व्युत्पत्ति संस्कृत से है. *लेखा विभाग, लेखा लिपिक, लेखा अधिकारी* इससे बनने वाले कुछ शब्द हैं.

2. आकारांत होने के कारण शायद इसे पुल्लिग एकवचन मान कर इससे बहुवचन लेखे (एकाउंट्स) की भी निष्पत्ति की जाती है. लेकिन संस्कृत शब्द होने के नाते इसे पुल्लिग शब्द नहीं माना जा सकता. लेकिन *!लेखाएँ* शब्द भी इससे कम अटपटा नहीं होगा. मेरी समझ में अंग्रेज़ी के अनुसार एकाउंट और एकाउंट्स में अंतर करने की आवश्यकता नहीं है (लेखा विभाग, लेखा अधिकारी में यह अंतर प्रकट भी नहीं होता). जब हमें कई जगह से प्राप्त लेखाओं (या लेखों) का ज़िक्र करने की आवश्यकता होगी, तब *समस्त लेखा विवरण* आदि से इसे स्पष्ट कर सकते हैं.

लेना 1. यह द्विकर्मक क्रिया *देना* का उल्था है, अगर दूसरा कर्म वास्तव में प्राप्तिकर्ता है. *मैंने राम को पैसे दिये. राम ने मुझसे पैसे लिये.*

लेकिन *देना* का हर प्रयोग लेना से रूपांतरित नहीं होगा (देखें **संयुक्त क्रियाएँ**).

*राम ने मोहन को तकलीफ़ दी. *मोहन ने राम से तकलीफ़ ली.*

1.1. अनुभवकर्ता के रूप में 'पाना' इसका पर्याय है. *मैंने ज़िंदगी में क्या पाया ? दुख, दर्द, लोगों का ज़ुल्म · · · और कुछ नहीं .* 'मिलना' दोनों संदर्भों में इन शब्दों का पर्याय है, जबकि 'मिलना' में देने वाला कहीं रहता नहीं, कहीं अप्रकट है. *मुझे 7 तारीख़ को वेतन मिलता है. सड़क पर मुझे पाँच रुपये का एक नोट मिला.*

1.2. *लेना* कई जगह उस भौतिक व्यापार का अर्थ देता है, जहाँ देना निहित नहीं है. *यह बक्सा वहाँ ले चलो. बोरा भारी है, पीठ पर ले लो.*

2. लेना पूर्वज्ञान पर आधारित रंजक क्रिया है, जहाँ व्यापार का फल कर्ता को मिलता है. *तुम खाना खा लो.* (मैं लिखता हूँ) *तुम लिख लो. थोड़ी देर सो लो. मैं भी सब के साथ हो लिया. इस पर मैं कुछ नहीं कर सकता, आप मैनेजर से मिल लीजिए.* चूंकि कर्ता को व्यापार का फल मिलता है, कुछ क्रियाओं के साथ ले का प्रयोग नहीं हो सकता, जिनमें प्रयोजन दूसरे के लिए होता है. अर्थात मूल क्रिया, रंजक क्रिया दोनों में प्रयोजन साम्य भी होना चाहिए. उदाहरण के लिए *फेंक लेना, *दे लेना, **भगा लेना* (**उसने घर में घुसी बकरी को भगा लिया*), **मरवा लेना, !अपना पैर काट लेना* आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं. *काट लीजिए* एक अर्थ में 'काट कर लीजिए' का समानार्थी है, क्योंकि 'लीजिए' से काटने का प्रयोजन उल्लिखित व्यक्ति के लिए है. लेकिन यह बात सभी जगह लागू नहीं होती. आगे के उदाहरण में 'देना' के अभाव में ही *लेना* का प्रयोग हुआ है, प्रयोजन अधिक स्पष्ट नहीं है (यों समझिए कार्य

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निष्प्रयोजन हुआ)—*मंजु ने सब्ज़ी काटते समय अपनी उँगली काट ली.* यहाँ काट दी का अर्थ होता, अनावश्यक समझ कर फेंकने के उद्देश्य से उँगली को काटना. इस कारण परिभाषा में थोड़ा-सा विस्तार अपेक्षित होगा—स्वयं के लिए किये गये तथा स्वयं पर किये गये कार्य दोनों को *ले* से अभिव्यक्त कर सकते हैं. उद्देश्य 'आत्म' है, सिर्फ़ प्रयोजन नहीं.

3. ऊपर से रंजक क्रिया से लगने वाले *लेना* के क्रिया रूप *कर लेना, लिख लेना, पढ़ लेना* आदि समर्थताबोधक हैं. *क्या आप हिंदी पढ़-लिख लेते हैं ? जी, पढ़ तो लेता हूँ, लिख* नहीं *सकता.* समर्थताबोधक *लेना* केवल अपूर्ण पक्ष की क्रिया में आता है, पूर्ण पक्ष में नहीं (*क्या आप हिंदी पढ़ लेते थे ? *जी, सिर्फ़ एक बार पढ़ लिया*). इसके प्रयोग की भी कुछ सीमाएँ हैं. इसके साथ 'रहा' नहीं आता, यह 'नहीं' के साथ नहीं आता. लेकिन इसके साथ रंजक क्रिया 'जा' आती है :

अ : *गाड़ी पुरानी है.* बैटरी *कमज़ोर है. तुमसे नहीं चलेगी.*

आ : *तुम चिंता मत करो, चला ले जाऊँगा.*

4. लेना एक प्रारंभक शब्द है, जो वार्तालाप या प्रसंग शुरू करने के काम में आता है. इस प्रकार्य के अलावा इसका कोई अर्थ नहीं है. *लो, बारिश आ गयी. लीजिए,* वे *लोग आ गये.*

5. इसका प्रयोग अगवानी के लिए होता है. *एक दोस्त आ रहा है, उसे लेने स्टेशन जा रहा हूँ.*

6. पहले भी *लेना* से बने कई मुहावरे थे, लेकिन अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण और कई मुहावरे हिंदी में प्रचलित हो गये हैं. सबसे पहले खाने-पीने की वस्तुओं के संदर्भ में *लेना* का प्रयोग देखिए. *आप दवाई ले रहे हैं ? मैं चाय नहीं पीता. तो थोड़ी-सी काफ़ी लीजिए. बदला लेना, अध्यक्ष आसन ग्रहण करना* (ले=ग्रहण कर), *भाग लेना, ज़िम्मेदारी हाथ में लेना, दोष अपने सर पर लेना, काम लेना, रुचि लेना* आदि अंग्रेज़ी से प्रभावित कुछ प्रचलित मुहावरे हैं.

लौकी, घीया ये दोनों शब्द एक ही सब्ज़ी के दो नाम हैं और दोनों में अर्थ का अंतर नहीं है. *घीया* का एक दूसरा रूप *घिया* भी है. उच्चारण की दृष्टि से पहला प्रयोग अधिक सही है (देखें **कद्दू**).

ल्ह 1. यह /ल/ का महाप्राण रूप है, न कि ल+ह का गुच्छ. इस कारण शब्दों में जब यह आए, तो अक्षर सीमा इससे पहले या बाद में ही पड़ती है, न कि /ल/ और /ह/ के बीच में. अन्य भाषा भाषी /कुल्हाड़ी/ का उच्चारण करते समय कुल+हा+ड़ी का अक्षर विभाजन करते हैं, जो कि गलत है. यहाँ अक्षर विभाजन होगा कु+ल्हा+ड़ी. तुलना में देखिए फ़िलहाल (फ़िल+हाल), जहाँ दोनों व्यंजन अलग-अलग अक्षरों में पड़ते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. /ल्ह/ का प्रयोग हिंदी में बहुत कम शब्दों में मिलता है—*कुल्हाड़ी*, *अल्हड़* (उच्चारण /अल्ल्हड़/), *कुल्हड़* (उच्चारण /कुल्ल्हड़/), *मल्हार*, *दूल्हा*.

3. *आह्लाद*. *प्रह्लाद* जैसे शब्दों का उच्चारण अब स्वन विपर्यय तथा अन्य परिवर्तनों के कारण /ल्ह/ के साथ होता है, जैसे /प्रल्ल्हाद/, /आल्ल्हाद/.

4. ऐसे शब्दों में जहाँ ल और ह अलग उच्चारित होते हैं, वहाँ ये पूरे ही लिखे जाते हैं और अक्षर सीमा दोनों के बीच में पड़ती है. जैसे *सल-हज*, *तिल+हन*, *बल+हीन*.

व 1. /व/ उर्दू के शब्दों में 'और' के अर्थ में आता है, तो इसका रूप /ओ/ होता है. वर्तनी के स्तर पर यह प्रत्यय जैसा है और पहले शब्द में जुड़ जाता है. *नामो निशान नहीं रहा, जानो माल का ख़तरा है, रद्दो बदल, शेरो शायरी, अजीबो ग़रीब, दिलो दिमाग़ से, ताजो तख़्त, ऐशो आराम, सुबहो शाम, शर्मो हया, होशो हवास, आबोहवा*. जिन शब्दों में यह लगता है, वे ज़्यादातर रूढ़ हैं और हिंदी में यह उत्पादक प्रत्यय नहीं है. हम अपनी तरफ़ से *!किताबो कलम, !मेज़ो कुरसी, !सलाहो मशविरा* जैसे प्रयोग बना नहीं सकते.

1.1. इस संरचना की कुछ भाषिक विशेषताएँ हैं. यह प्रायः समान आदि व्यंजन वाले शब्दों को जोड़ता है. /ओ/ केवल हलंत उच्चारण (अकारांत वर्तनी) वाले शब्दों में ही लगता है (*ग़रीबी ओ, *हवा ओ · · ·). रचना की दृष्टि से इससे संयोजन द्वारा वाक्यांश का विस्तार होता है. इस कारण दोनों शब्द अलग लिखे जाते हैं और दोनों के बीच हाइफ़न नहीं आता. बहुत थोड़े-से शब्द एक साथ लिखे जाते हैं.

2. जब मैंने हिंदी सीखना शुरू किया था, तब दक्षिण की हिंदी की पुस्तकों में *राम व सीता, मेज़ व कुर्सी, खाना व पीना* जैसे रूप देखता था. लगता है यह /व/ आज की हिंदी में अपना स्थान खो चुका है और केवल अवशिष्ट रूप की तरह प्रयुक्त हो रहा है. योजक *और*, *तथा* इसका स्थान ले चुके हैं.

वक्त बे वक्त 'कभी-कभी' के अर्थ में प्रयुक्त यह शब्द एक शब्द दोष (howler) है. मूल शब्द था *वक्तन फ़वक्तन*, जिसके /फ़/ से अपरिचय के कारण यह दोष होता है.

वचन हिंदी में दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन. **संज्ञा-रूप परिवर्तन** नामक प्रकरण में हमने वचन के रूपों की चर्चा की है. यहाँ इस प्रकरण में वचन के प्रयोग की अन्य विशेषताओं के बारे में देखेंगे.

1. हिंदी में लिंग तार्किक नहीं है, लेकिन वचन कुछ सीमा तक तार्किक है. तमिल भाषी होने के नाते यह बात मेरे लिए महत्त्व की है. तमिल में दो रोटी, चार कपड़ा, दस रुपया आदि प्रयोग सहज हैं. संख्या से बहुवचन का बोध हो जाता है, इस कारण संज्ञा में वचन का रूप परिवर्तन नहीं होता. तमिल के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुसार आदमी आँख से देखता है, कान से सुनता है, हाथ से काम करता है, पैर से चलता है. हिंदी में हम नाक से साँस लेते हैं, आँखों से देखते हैं, कानों से सुनते हैं, हाथों से काम करते हैं, पैरों से चलते हैं. शुरू में जब कभी मैंने कहा *मैंने बाल धोया* या *मुझे चालीस अंक मिला* या *चाँदी का बरतन महँगा हो गया है,* तो मुझे व्यंग्य मुस्कान या फ़ब्तियों का सामना करना पड़ा (इन्हीं मुस्कानों से मुझे यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा भी मिली. मैं समय-समय पर अपने सीखने के अनुभवों को कागज़ पर अंकित करता गया और सालों बाद इन्हें अंतिम रूप दे रहा हूँ).

1.1. **संज्ञा** प्रकरण में हमने देखा कि कुछ संज्ञाएँ गिनती में आती हैं. *एक आदमी–कई आदमी, एक ताला–कई ताले, एक कमीज़–कई कमीज़ें, एक साड़ी–कई साड़ियाँ* में हम वचन के आधार पर अंतर करते हैं. ऐसी संज्ञाओं में हमें वर्ग सदस्य तथा वर्ग प्रतिनिधि के प्रयोग में अंतर करना होता है.

बाहर एक/कोई आदमी खड़ा है.

आदमी बेवफ़ा होता है. (*एक आदमी · · ·)

वर्ग सदस्य के संदर्भ में एकवचन में संज्ञा का प्रयोग होता है, तब हमें उसे एक/यह/वह/कोई से निर्दिष्ट करना होता है. अन्यथा उससे वर्ग प्रतिनिधित्व ही प्रकट होगा. वर्ग सदस्य ही बहुवचन में आता है, वर्ग प्रतिनिधि के वचन से अर्थ में अंतर नहीं पड़ता.

वहाँ एक आदमी खड़ा है–वहाँ कई आदमी खड़े हैं.

(पंजाब का) आदमी मेहनती होता है~(पंजाब के) आदमी मेहनती होते हैं.

2. 'बाल' ऐसा शब्द है, जो सैद्धांतिक रूप से गिनती योग्य है, भले ऊपर से देखने पर वह समूह लगे. *केक में एक बाल आ गया. साठ की उम्र तक अधिकतर बाल गिर जाते हैं.* लेकिन चावल, धान क्यों बहुवचन में आते हैं, गेहूँ, दाल, चीनी आदि क्यों नहीं, यह मैं बता नहीं सकता.

2.1. प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त शब्द–इस शीर्षक के अंतर्गत तीन वर्ग हैं. सिर्फ़ बहुवचन में प्रयुक्त शब्द, लेकिन जिनका एकवचन में प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से गलत नहीं, बल्कि अप्रचलित है. *प्राण, होश (मेरे होश उड़ गये), भाग्य, करम (मेरे करम फूट गये), दर्शन* पारलौकिक अर्थ वाले शब्द हैं.

श्रोता तथा उच्च स्तर के व्यक्ति के लिए *हाल, मिज़ाज,* ठाठ, रुतबे, रोब, जलवे, हल्ले आदि बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं (*आप के हाल कैसे हैं? भई, आप के तो बड़े ठाठ हैं? आप के मिजाज़ अच्छे हैं? यार, क्यों रुतबे दिखा रहे हो? उनके तो हल्ले हैं आजकल*). लेकिन वक्ता प्रायः अपने लिए एकवचन का ही प्रयोग करता है (*मेरा तो हाल बुरा है. यार मेरा रोब नहीं चलता. जलवे तो तुम दिखा रहे हो. मेरा क्या जलवा ?*). इस प्रयोग विशिष्टता का

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण उर्दू की शैली में ढूँढ़ा जा सकता है, जहाँ व्यक्ति अपने घर को *ग़रीबख़ाना* कहता है और श्रोता के घर को *दौलतख़ाना*.

अन्य कई शब्दों में एकवचन तथा बहुवचन में अर्थ का विशिष्ट अंतर है. हम अभीष्ट अर्थ के अनुसार, संदर्भ के अनुकूल वचन का चयन करते हैं. *मुझे जाड़ा लग रहा है/गरमी लग रही है.* बहुवचन प्रयोग देखिए—*मैं इस साल गर्मियों/जाड़ों में शिमला जाना चाहता हूँ. पसीना, आँसू* उक्त नाम के द्रवों को कहा ज़ाता है, लेकिन शरीर से भाव की अभिव्यक्ति के रूप में अधिक मात्रा में (!) बहते समय ये बहुवचन में आ जाते हैं. (देखें **आँसू, पसीना**). *बेचारा, पसीने से तर. आँसू खारा होता है. मेरे तो पसीने छूटने लगे. मेरे आँसू रोके नहीं रुक रहे थे.* यही बात साँस पर लागू होती है. *हम नाक से साँस (*साँसें) लेते हैं. मेरी साँसें फूलने लगीं~ऊपर-नीचे होने लगीं. रेडियो के समाचार, ख़बरें* क्यों बहुवचन में होने चाहिए, इसका उत्तर नहीं है. *यह* मात्र प्रचलन है. शरीर के भागों के संदर्भ में *बाल* बहुवचन में होना तर्कसंगत लगता है. लेकिन *दाढ़ी* एकवचन है, *मूँछें* (*मूँछों पर ताव देना*) बहुवचन में क्यों है ? नाक के दोनों ओर होने के कारण ? ऐसे संदर्भों में तर्क काम नहीं करता, भाषा की रूढ़ियाँ और परंपरा ही प्रमुख कारक हैं.

2.1. कुछ शब्दों में एकवचन तथा बहुवचन रूप के कारण अर्थ में स्पष्ट अंतर आ जाता है. *कपड़ा* (बुने, न सिले कपड़े के लिए)—*कपड़े* ('कपड़ा' से सिले पैंट, शर्ट आदि). *पहनने का कपड़ा* कभी-कभी एकवचन में भी आता है, जो कपड़े का एकवचन रूप है. *छाती* पेट और गर्दन के बीच का भाग है, लेकिन *छातियाँ* स्तनों का अर्थ देता है. *पैसा, पैसे* में भी इस तरह का अंतर है. *पैसा* एकवचन में दो अर्थ देता है—रुपये का सौवाँ भाग तथा धन. बहुवचन केवल पहले अर्थ में आता है (देखें **पैसा**).

2.2. बहुत-से मुहावरों में बहुवचन रूप का होना अनिवार्य-सा है. *यह लड़की नाज़ों पली है. आम के आम, गुठलियों के दाम, भूखों मरना, बाँसों उछलना, बगलें झाँकना, खीसें निपोरना, दाँतों तले उँगली दबाना, बातों-बातों में, हौसले बुलंद होना, लातों के देवता बातों से नहीं मानते.*

2.2.1. अगर बहुवचन सूचक शब्द का इस्तेमाल न किया जाए, तो इकाई शब्द बहुवचन विकारी रूप में आते हैं. *सालों बीत गये=कई साल बीत गये, बरसों पहले की बात है=कई बरस पहले की बात है, टनों अनाज ख़राब हो गया=कई टन अनाज ख़राब हो गया, ढेरों कूड़ा पड़ा है=कई ढेर कूड़ा पड़ा है.* आर्येंद्र शर्मा (1958) *गाड़ियों लकड़ी* का प्रयोग देते हैं; लेकिन मुझे यह मानक प्रयोग नहीं लगता. 'गाड़ी' इकाई शब्द नहीं है.

3. हिंदी में संयुक्त शब्द लिंग तथा वचन की दृष्टि से समस्या पैदा करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसके कारण हैं संज्ञा का गिनती में आना या न आना, शब्दों के बीच 'और, या' तथा पर्याय का संबंध, संयोग के शब्दों का संयुक्त वचन में होना आदि. *माँ-बाप* बहुवचन है, क्योंकि इसमें एक से अधिक व्यक्तियों का उल्लेख है. *भाई-बहन* बहुवचन है और *भाई-बहनों* में 'बहन' का भी बहुवचन तिर्यक में प्रयोग है. *ईमान-धरम* एकवचन है, क्योंकि इसमें दो एकवचन पर्याय हैं और गिने नहीं जाते. *किताब-कापी* स्त्रीलिंग शब्द है. इसमें या का संबंध है; *किताब-कापियाँ* बहुवचन शब्द है.

संयुक्त शब्दों के बारे में एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है. इनमें केवल दूसरा वचन प्रत्यय लेता है. *किताब-कापियाँ, गाय-भैंसें, रीति-रिवाजों, गाय-बैलों, भाई-बहनों के साथ*. अगर दोनों शब्दों में आकारांत विकारी पुल्लिग शब्द हों, तो दोनों वचन बदलते हैं, लेकिन केवल दूसरा कारक के लिए तिर्यक रूप लेता है. *कपड़े-लत्ते, गद्दे-तकिये, *तकिया-गद्दे, बच्चे-बूढ़े, *बच्चे-बूढ़ा, बच्चे-बूढ़ों*. यही बात पहले आकारांत शब्द पर भी लागू होती है. **बूढ़ा-बुढ़ियाँ, बूढ़े-बुढ़ियाँ, *बूढ़े-बुढ़िया, बूढ़े-बुढ़ियों*. कहने का तात्पर्य यह है कि पहले शब्द के रूप से पता नहीं चलेगा कि उस शब्द से व्यक्त संज्ञा शब्द किस वचन में है, चाहे दूसरा एकवचन में हो या बहुवचन में. इस संदर्भ में अन्य क्षेत्रीय या वैकल्पिक प्रयोगों को इकट्ठा करने की ज़रूरत है, जिससे अंतिम रूप से कुछ कहा जा सके.

विशेषणों में दोनों शब्द एक ही लिंग/वचन में होंगे, लेकिन केवल दूसरा शब्द कारक के लिए तिर्यक रूप में आएगा–*अच्छा-अच्छा, अच्छी-अच्छी, अच्छे-अच्छे, छोटे-बड़ों, *छोटा-बड़े/बड़ों, ?छोटों-बड़ों*.

संयुक्त शब्दों के लिंग के संदर्भ में चर्चा के लिए **भाषा में फुटकर खाता** देखिए.
उधार के शब्दों में वचन की चर्चा के लिए **विदेशी बहुवचन** देखिए.

4. वाक्य स्तर पर वचन का वितरण भी समस्यात्मक है. अंग्रेज़ी का एक चर्चित उदाहरण है The old men and women. इस वाक्य का विश्लेषण दो तरह से हो सकता है. old (men+women) या old men+women. यह समस्या कई भाषाओं में होगी–*पिताजी ने अपने आलसी और उद्धत लड़के को डाँटा* यहाँ लड़का एक ही, वही दोनों गुणों से विभूषित है. लेकिन *पिता जी ने अपने आलसी और उद्धत लड़कों को मारा* में यह पता नहीं चल सकता कि कितने लड़के आलसी और कितने उद्धत हैं या कि उन सब में दोनों गुण विद्यमान हैं. यहीं पर भाषा की प्रकृति और संयोजन करने की तार्किक विधि काम में आती है.

ऊपर के वाक्य की समस्या शब्द क्रम बदल कर सुलझायी जा सकती है–*लड़कियाँ तथा छोटे लड़के*.

अन्यथा विशेषण को दोनों संज्ञाओं के साथ लेना तर्कसंगत है–*छोटे लड़के तथा छोटी लड़कियाँ*.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्ण 1. वर्ण का संस्कृत में अर्थ है 'रंग', लेकिन वर्तमान हिंदी में इस अर्थ में यह शब्द प्रचलित नहीं है और *रंग* ने इसे विस्थापित किया है. मूल अर्थ में प्रयोग है *विवर्ण* (जिसका रंग उड़ा हुआ हो). संस्कृत शब्दों के संदर्भ में अब भी यह शब्द प्रचलित है. *रक्त वर्ण, गौर वर्ण, पीत वर्ण* आदि. इस कारण आज भी संस्कृत-निष्ठ शैली में 'रंग' के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग देखा जा सकता है. या *वर्ण-क्रम* (spectrum) आदि पारिभाषिक शब्दों में मूल अर्थ देख सकते हैं.

2. वर्तमान हिंदी में वर्ण के दो अन्य प्रमुख अर्थ हैं. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—समाज में लोगों के चार वर्ण हैं, जिन्हें चतुरवर्ण कहते हैं. हिंदी के ⟨अ आ इ ई⟩ आदि वर्ण हैं, जिनका समूह *वर्णमाला* कहलाता है.

वर्ण (हिंदी के) प्रस्तुत ग्रंथ में निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों से दिये गये हिंदी के वर्णों का उल्लेख करेंगे. पारिभाषिक शब्द के सामने वर्ण दिये गये हैं.

स्वर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

ह्रस्व स्वर अ इ उ ऋ

दीर्घ स्वर आ ई ऊ ए ऐ ओ औ

अन्य भाषाओं के स्वर ऑ ऍ ओ॑

व्यंजन ⟨क ख⟩ से लेकर ⟨क्ष त्र ज्ञ⟩ तक के सभी वर्ण.

क वर्ग क ख ग घ ङ

च वर्ग च छ ज झ ञ

ट वर्ग ट ठ ड ढ ण

त वर्ग त थ द ध न

प वर्ग प फ ब भ म

नासिक्य व्यंजन या **पंचम वर्ण** ङ ञ ण न म

अघोष व्यंजन **अल्पप्राण** क च ट त प

महाप्राण ख छ ठ थ फ

घोष व्यंजन **अल्पप्राण** ग ज ड द ब

महाप्राण घ झ ढ ध भ

अंतस्थ य र ल व

ऊष्म श ष स ह

द्विवर्ण क्ष त्र ज्ञ

मात्राएँ ा ि ी ु ू े ै ो ौ

विसर्ग : (या) अः **अनुस्वार** ं (या) अं **अनुनासिक** ँ (या) अँ

विदेशी व्यंजन क़ ख़ ग़ ज़ फ़

नये व्यंजन ड़ ढ़

इस ग्रंथ में वर्णों का उल्लेख चिह्न ⟨ ⟩ के भीतर दिखाया गया है. अन्यथा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उल्लेख न हो तो मान लिया जाए कि इन पारिभाषिक शब्दों से वर्णों की चर्चा की जा रही है. जहाँ वर्ण तथा स्वन के लिए एक ही शब्द हो, वहाँ निर्दिष्ट करने का यत्न किया गया है, जैसे स्वर वर्ण या स्वर स्वन.

वाक्य 1. संरचना के स्तर पर वाक्य भाषा का सबसे बड़ा सार्थक खंड है. वाक्य एक या अधिक उपवाक्यों से निर्मित होता है. वाक्य के तीन प्रकार हैं–सरल वाक्य–जिसमें केवल एक स्वतंत्र उपवाक्य हो. संयुक्त वाक्य–जिसमें एक से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य हों, जो योजक आदि से जुड़े हों. मिश्र वाक्य–जिसमें कम से कम एक स्वतंत्र उपवाक्य तथा एक से अधिक बद्ध या अस्वतंत्र उपवाक्य हों. परिभाषा के अनुसार सरल वाक्य तथा स्वतंत्र उपवाक्य एक ही हैं, लेकिन इनमें एक बड़ा अंतर है. उपवाक्य स्तर पर हम केवल संरचना की बात करते हैं. वाक्य के प्रयोग की नहीं. *राम लड़का है* इस उपवाक्य की चर्चा कर्ता+पूरक +सहायक क्रिया के संदर्भ में करेंगे. लेकिन यह प्रश्न है या आश्चर्य युक्त वाक्य या सूचना, यह केवल वाक्य स्तर के विश्लेषण की बात है. वाक्य वास्तविक उच्चरित रूप होता है और उसका अपना **अनुतान** होता है.

यद्यपि उपवाक्य परिभाषा के अनुसार कम से कम एक क्रिया तथा अन्य वाक्यांशों से बना होता है, कई अधूरे वाक्यों को प्रयोग के स्तर पर वाक्य ही गिनना होगा. किसी वाक्य के उत्तर में जोड़े गये अधूरे वाक्य (*आप का लड़का कहाँ पढ़ता है ? गाँधी स्कूल में ? हाँ/नहीं तो*), किसी वाक्य के बाद वक्ता से जोड़े गये कथन (*मैं कल शाम को आ जाऊँगा. · · · शायद*) आदि भी 'वाक्य' हैं. निम्नलिखित प्रयोग भी वाक्य हैं, जिनमें उपवाक्य स्तर की रचना दिखायी नहीं पड़ती–

संबोधन–*ओ लड़के ! श्रीमान ! राम !*
गाली (जो प्रायः संबोधन ही होते हैं) *गधा ! साला ! बदतमीज़ !*
विस्मयादिबोधक–*अरेरे ! ओफ़्फ़ोह ! वाह ! वाह ! बहुत अच्छा.*
अभिवादन–*नमस्कार ! आदाबअर्ज़ !*

2. संयुक्त वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य योजक से जोड़े जाते हैं. ये योजक हैं *और, या. लेकिन, इसलिए, नहीं, तो, तो* चूँकि, हालाँकि को भी योजक गिना जा सकता है. कुछ विद्वान इन्हें स्वतंत्र शब्द भी गिनने के पक्ष में हैं, जो वाक्य के ऊपर के परिच्छेद स्तर पर वाक्यों का एक दूसरे से संबंध बताएँ.

3. मिश्र वाक्य में एक अस्वतंत्र उपवाक्य ज़रूर होता है. निम्न प्रकार के मिश्र वाक्य देखे जा सकते हैं.

3.1. संज्ञा वाक्यांश से बने मिश्र वाक्य–*मैंने पूछा कि आप कहाँ रहते हैं.* यहाँ *कि आप कहाँ रहते हैं* कर्म के स्थान पर आता है. *यह अच्छी बात है कि*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आप आ गये हैं. यहाँ *कि आप आ गये हैं* वाक्य का कर्ता या उद्देश्य है और उसकी जगह '*यह*' स्थान पूर्ति के लिए आया है.

3.2. विशेषण वाक्यांश से बने मिश्र वाक्य--*आप जैसी कमीज़ चाहते हैं, वैसी हमारे पास नहीं है.* यहाँ *जैसी* · · · वैसी कमीज के विशेषण के तौर पर आया है. *जो लड़का कल यहाँ आया था वह चोर है. तुम जितने रुपये चाहते हो उतने रुपये ले जाओ.*

3.3. क्रियाविशेषण वाक्यांश से बने मिश्र वाक्य--*तुम जहाँ रहते हो, वहीं पास में एक मंदिर है. जहाँ* · · · वहीं स्थानवाचक क्रियाविशेषण है. *तुम जब कहोगे, तभी पैसे दे दूँगा. जब* · · · *तभी* समयवाचक क्रियाविशेषण है. *वह जैसे बोलता है वैसे मटक-मटक कर मैं नहीं बोल सकता. जैसे* · · · *वैसे मटक-मटक कर* रीतिवाचक क्रियाविशेषण है.

3.2 और 3.3 के वाक्य सम्मिश्र वाक्य (relatives) कहलाते हैं, क्योंकि वही वाक्यांश दोनों उपवाक्यों को जोड़ता है. एक वाक्य तथा उसका विस्तार देखिए--

तुम जहाँ रहते हो, वहीं पास में एक मंदिर है.

तुम (स्थानवाचक) रहते हो, (स्थानवाचक विस्तारक) एक मंदिर है.

इस तरह *तुम रहते हो*, एक मंदिर है दोनों को समान स्थानवाचक क्रियाविशेषण से जोड़ा जाता है. *जिधर* · · · *उधर, जब तक* · · · *तब तक*, आदि कुछ अन्य क्रियाविशेषण योजक हैं.

4. *अगर* · · · *तो, न* · · · न, चाहे · · · चाहे आदि से बने वाक्यों के विश्लेषण में कठिनाई होती है. न · · · न, चाहे · · · चाहे **योजक युग्म हैं और दोनों** उपवाक्यों में लगते हैं. हम जानते हैं कि संस्कृत में 'और' का रूप /च/ दोनों उपवाक्यों (या वाक्यांशों या शब्दों में) लगता है. अतः प्रकार्य की दृष्टि से ये योजक ही हैं और दोनों उपवाक्यों में लगते हैं. ऊपर के 3.1 और 3.2 के उपवाक्यों में वाक्यांश स्तर पर गहरा तथा सुनिश्चित संबंध दिखायी पड़ता है. संयुक्त वाक्यों में यह संबंध कम होता जाता है और बहुधा दो भिन्न कथन भी साथ रख दिये जाते हैं--*इतने में पानी बरसने लगा और दूर कहीं नगाड़े की ध्वनि उठी.* संबंध विच्छेद के कारण ही *लेकिन, तो, इसलिए* आदि को योजक कहने से कई लोग हिचकते हैं. दो कथनों में कारण-कार्य संबंध, पूर्वापर संबंध, आधार-आधृत का संबंध आदि संयुक्त वाक्यों से प्रकट होते हैं. ऊपर के वाक्यों में अन्य योजकों की अपेक्षा अधिक बद्धता है और इनमें संयुक्त तथा मिश्र दोनों वाक्यों के गुण हैं.

4.1. इसी संदर्भ में आगे *अगर* · · · *तो* के उदाहरण दे रहा हूँ--

अगर आप जाना चाहें, तो जा सकते हैं.

अगर वह दस बजे तक नहीं आएगा, तो मैं चला जाऊँगा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन वाक्यों में 3.1 तथा 3.2 के वाक्यों की तरह दो उपवाक्यों में वाक्यांश स्तर पर संबंध नहीं, बल्कि संयुक्त वाक्यों की तरह दो भिन्न स्वतंत्र उपवाक्यों में आधार-आधृत का ऊपरी संबंध दिखायी पड़ता है.

वाक्यविज्ञान रचना के स्तर पर भाषा के वाक्यादि संरचना का अध्ययन वाक्य-विज्ञान के अंतर्गत करते हैं. वाक्यविज्ञान की कुल व्यवस्था को निम्न प्रकार से देख सकते हैं—
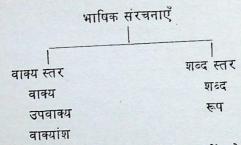
शब्द स्तर की रचनाओं में हम शब्द वर्गों के शब्दों को देखते हैं. वाक्य में दो शब्दों के बीच का संबंध प्रकट करते हैं, वहीं से वाक्य स्तर की रचनाएँ शुरू होती हैं.

यहाँ दिये गये पाँच घटकों में संरचना-संरचक का संबंध है. अर्थात एक वाक्य में एक या अधिक उपवाक्य होते हैं, एक उपवाक्य में एक या अधिक वाक्यांश, एक वाक्यांश में एक या अधिक शब्द तथा एक शब्द में एक या अधिक रूप. वाक्य अपने से ऊपर किसी रचना का घटक या सदस्य नहीं है (वैसे परिच्छेद की विशेषताओं का, उसमें वाक्य के स्थान का विश्लेषण तो किया ही जाता है लेकिन संरचना के स्तर पर वाक्य की सीमा मान लेते हैं); और रूप अपने से और छोटे किन्हीं अर्थयुक्त खंडों से निर्मित नहीं हैं. रूप स्वनों से बने होते हैं, जो अर्थभेदक तो हैं, अर्थयुक्त नहीं.

हर स्तर पर हम उस स्तर की संरचना के प्रकार देख सकते हैं और उसके संरचकों (नीचे के स्तर की संरचना) को देख सकते हैं; लेकिन यह देखने में जितना सरल लगता है उतना है नहीं. यह भाषा की जटिलता के कारण है. अक्सर हम ऐसा वाक्य देखते हैं जिसमें सिर्फ़ एक शब्द है (गाली *गधे!*). और कई जगह नीचे के स्तर पर ऊपर के घटक को संरचक के रूप में देखते हैं. जैसे वाक्यांश स्तर पर उपवाक्य देखिए—*गोपाल, गणेश, मैं तथा गाँव से आये हुए वे सारे बच्चे*. और हर स्तर पर वर्गीकरण करके जो नामकरण करते हैं, वह भी प्रायः समस्या बन जाती है. *जाना मना है. मैं जाना चाहता हूँ. तुम्हें जाना हो, तो चले जाओ. तुम नहीं जाना.* यहाँ तीनों 'जाना' एक-दूसरे से भिन्न हैं. इन वाक्यांशों का नामकरण आसान काम नहीं है. प्रयोग के आधार पर हम इसे

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जितनी आसानी से समझ सकते हैं वैसे आसानी से विश्लेषित नहीं कर पाते. इसी कारण संरचनात्मक विश्लेषण का भाषाविज्ञान अब बहुत महत्वपूर्ण नहीं रहा. लेकिन प्रयोग समझाने के लिए 'वाक्य, उपवाक्य' आदि प्रत्ययों (concepts) की आवश्यकता पड़ती है. भले ये भाषा के पूर्ण विश्लेषण में सफल न हों, भाषा को समझने में कुछ दृष्टि देते हैं. इसी कारण इन पर कुछ चर्चा कर रहा हूँ.

वाक्यांश 1. वाक्यांश वाक्य स्तर का सबसे छोटा खंड है जो एक या अधिक शब्दों से बनता है और जिससे उपवाक्य की रचना होती है. शब्द स्वतंत्र सार्थक खंड होता है, लेकिन शब्द से यह पता नहीं चलता कि वाक्य में उसका क्या स्थान है और दूसरे शब्दों से वह क्या संबंध रखता है. उदाहरण के लिए *लड़का* एक शब्द है, एक निश्चित अर्थ देता है; लेकिन वह वाक्य में कर्ता हो सकता है (*लड़का उठा*) या कर्म हो सकता है (*मैंने एक लड़का देखा*) या पूरक (*वह लड़का है*). तीनों संज्ञा शब्द से बने हैं. यों कह सकते हैं कि हम शब्द की बात रचना के स्तर पर ही कर सकते हैं; उपवाक्य में कोई शब्द नहीं होता, सिर्फ़ वाक्यांश होते हैं (या वाक्यांश के भीतर के शब्द).

2. भाषा भिन्न-भिन्न वाक्यांशों को कई प्रकार से दिखाती है. इनमें प्रमुख तरीका है 'कारक'. कई भाषाओं में कर्ता, कर्म आदि कारकों में शब्दों में भिन्न-भिन्न प्रत्यय लगते हैं. संस्कृत ऐसी ही भाषा है. हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में हर जगह शब्द के रूप को देख कर वाक्यांश का अनुमान नहीं कर सकते. ऐसी भाषाओं में वाक्यांश को शब्द के वाक्य में स्थान के आधार पर पहचान सकते हैं. Ram killed Ravana. यहाँ क्रिया के बाद कर्म आता है. हिंदी में अन्विति से भी वाक्यांश को पहचान सकते हैं. *किताब राम देख रहा है.* इस संरचना में कर्ता के साथ क्रिया की अन्विति है. *राम ने लड़की को देखा* ('ने' वाक्य–कर्ता में 'ने', कर्म में 'को'–अविकारी क्रिया). हिंदी में कुछ वाक्यांशों में परसर्ग से भी वाक्यांश को पहचान सकते हैं. सर्वनाम वाले कर्म में को लगता है, ने केवल कर्ता में लगता है, में, पर केवल क्रियाविशेषणों में लगते हैं. अर्थ के आधार पर भी वाक्यांश पहचान सकते हैं. दो वाक्य देखिये–

राम एक अच्छा लड़का है. (कर्ता-पूरक-क्रिया)

एक अच्छा लड़का है राम. (पूरक-क्रिया-कर्ता)

सामान्य नियम है कि व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा जातिवाचक संज्ञा एक क्रम में हों, तो दूसरा ही पूरक बनेगा. (**एक अच्छा लड़का राम है*). इसी तरह बृहत जातिवाचक तथा वर्ग सदस्य हों, तो पहला ही पूरक बनेगा. (*शेर एक जानवर है*, *!एक जानवर है शेर*, **एक जानवर शेर है*). प्रयोग के इन नियमों से हम वाक्यांशों को पहचान सकते हैं और उनका विश्लेषण कर सकते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. हम हिंदी के समस्त वाक्यांशों को निम्न प्रकार से एक आरेख से दिखा सकते हैं :
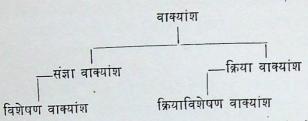
3.1. ये चारों प्रकार के वाक्यांश जब केवल एक शब्द से बने होते हैं, तब इनमें निम्नलिखित शब्द होते हैं–

संज्ञा वाक्यांश में–संज्ञा, सर्वनाम, क्रियार्थक संज्ञा या विशेषण

विशेषण वाक्यांश में–विशेषण

क्रिया वाक्यांश में–क्रिया

क्रियाविशेषण वाक्यांश में–क्रियाविशेषण शब्द (या कभी-कभी संज्ञा)

इनके विस्तार की चर्चा आगे 4 में की जा रही है.

3.2. वाक्य में प्रकार्य के आधार पर संज्ञा वाक्यांश आदि के कई भेद हैं. आगे इन भेदों तथा इनकी विशेषताओं के बारे में देखें :

संज्ञा वाक्यांश तीन प्रकार के हैं–कर्ता, कर्म, पूरक. कर्ता में प्रायः परसर्ग नहीं लगता, कुछ उपवाक्य रचना में ने, से या को परसर्ग लगते हैं. कर्म में प्रायः मनुष्येतर संज्ञाओं में को नहीं लगता. लेकिन दोनों स्थितियों में वैकल्पिक प्रयोग हैं, पूरक वाक्यांश में कोई परसर्ग नहीं लगता. जब विशेषण संज्ञा की तरह आता है. तब उसमें परसर्ग भी लगते हैं और वह संज्ञा की तरह तिर्यक, संबोधन के प्रत्यय भी लेता है. क्रियाविशेषण वाक्यांश अविकारी अव्यय शब्दों से बने होते हैं (फिर, तुरंत, *अभी* आदि); लेकिन अधिकांश क्रियाविशेषण वाक्यांश संज्ञा में परसर्ग लगने से बनते हैं. व्याकरण इन्हें अलग करने का यत्न करते हैं. अविकारी शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं, विशेषण तथा संज्ञा से बने शब्द करण आदि कारक माने जाते हैं. दोनों प्रकार्य की दृष्टि से एक हैं–*लड़का अंदर है*~*लड़का कमरे में है*. इस कारण दोनों को एक ही वर्ग में मानना उचित लगता है. क्रियाविशेषण वाक्यांश की एक विशेषता है संज्ञा में परसर्ग. अगर परसर्ग न भी हो, तो संज्ञा शब्द तिर्यक रूप में होगा. जैसे *कल सवेरे*, *सामने*, *तुम्हारे यहाँ*, *धीरे* (<धीरा–संज्ञा ?), *आहिस्ते*, *बिना बोले*, *घर जाते ही* आदि. क्रियाविशेषण के तीन प्रमुख भेद हैं तथा अन्य भेदों की लंबी संख्या है. प्रमुख भेद हैं–समयवाचक, स्थानवाचक तथा रीतिवाचक.

क्रिया वाक्यांशों के कई प्रकार हैं. इस ग्रंथ में सभी प्रमुख क्रिया रूपों का अलग-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अलग स्थानों में विश्लेषण प्रस्तुत है.

4. अगर कहूँ कि भाषा की रचना में वाक्यांश स्तर ही वह स्थान है, जहाँ सब से सक्रिय कार्य होता है, तो अत्युक्ति नहीं होगी. भाषा में जितने अधिक विस्तार तथा विविधता की यहाँ गुंजाइश है, वह और किसी स्तर पर नहीं है. व्यक्ति एक वाक्य में तीन-चार से अधिक उपवाक्यों का इस्तेमाल प्रायः नहीं करता. लेकिन सैकड़ों तरह से वाक्यांश विस्तार करता है. वाक्यांश विस्तार तीन प्रकार के हैं. आगे तीनों की चर्चा की गयी है.

4.1. हर वाक्यांश में उसी वर्ग के घटक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए योजक *और*, *तथा*, विकल्पक *या*, विभेदक *लेकिन*, आदि द्वारा विस्तार. इस विस्तार को हम शब्द + · · · + *और*/*या* + शब्द के सूत्र से स्पष्ट कर सकते हैं. प्रायः प्रसंगानुकूल ये शब्द एक क्षेत्र का अर्थ देने वाले होते हैं. *!राम और कपड़ा* किसी कहानी का (सही) शीर्षक हो सकता है, लेकिन सहज प्रयोग नहीं. *राम और श्याम*, *खाना और पीना*, *मोटा और तगड़ा*, *भारी लेकिन कमज़ोर*, *धीरे और शांति से*, *चाय या काफ़ी*, *राम या गोपाल*, *पढ़ूँ या लिखूँ* ऐसे विस्तार के कुछ उदाहरण हैं. ये शब्द भी एक ही वर्ग या उपवर्ग के होंगे, भिन्न वर्गों के नहीं. **शेर और जानवर*, **सेब और फल*, **राम और लड़का*.

लेकिन एक ही या एक ही प्रकार्य वाले शब्दों का विस्तार संभव नहीं है. **राम और राम* (जहाँ दोनों एक ही व्यक्ति हों), **खाना और खाना*, **मोटा और मोटा*, **पीला और नीला कपड़ा* संभव नहीं हैं. *धीरे और धीरे* (~*धीरे-धीरे*) आदि को हमें 'और' के विशिष्ट प्रयोग में गिनना होगा, जहाँ यह 'बहुत धीरे' का अर्थ देता है; *पीले और नीले कपड़े* की सार्थकता वचन के साथ अन्विति के कारण है.

4.2. हर वाक्यांश में वर्गीय विस्तार होता है, जहाँ वर्ग के बड़े उपवर्ग का सदस्य, फिर छोटे का सदस्य और फिर सबसे छोटे उपवर्ग का सदस्य क्रम से हों. इसका सबसे अच्छा उदाहरण क्रियाविशेषणों में मिलता है. समयवाचक में युग, शताब्दी, वर्ष, मास, दिन, घंटा, मिनट, सेकेंड आदि उपवर्गों के सूचक हैं. इसी लिए समयवाचक क्रियाविशेषण के संदर्भ में *1980 में नवंबर महीने में* (या के) *दूसरे सप्ताह में 15 तारीख़ को सायं पाँच बज कर 20 मिनट 15 सेकेंड* पर इस *ग्रंथ का विमोचन होगा* बहुत स्वाभाविक रचना है. इस समयवाचक क्रियाविशेषण में आठ सदस्य हैं, जो बड़े से छोटे के क्रम में प्रयुक्त हैं.

संज्ञा वाक्यांशों में भी शब्द का वर्ग प्रतिनिधित्व क्रम से देखा जा सकता है. *आम* फलों में एक प्रकार है, *कंगारू* एक प्राणी का नाम है, *लोहा* एक धातु है. हम संज्ञा वाक्यांशों में वर्ग तथा वर्ग सदस्य दोनों का एक साथ उल्लेख कर सकते हैं. इसकी कुछ प्रमुख संरचनाएँ हैं—

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(अ) *आम का फल, शीशम की लकड़ी, कमल का फूल.* इसे कुछ लोग का देख कर संबंधकारक रचना कहते हैं. यहाँ वर्ग विशेष तथा बृहत वर्ग का संयोजन है.

(आ) *'कविता' शीर्षक कहानी, कंगारू नामक प्राणी, गणेश नाम का लड़का.* इन वाक्यांशों में व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा वर्ग विशेष का संबंध दिखाया गया है. यह संबंध हर स्थिति में अलग होता है, जिसे योजक शब्दों की भिन्नता में देख सकते हैं.

(इ) *आगरा शहर, सफ़ारी सूट, लंगड़ा आम, लौह धातु, हिंदी भाषा, भारत देश, गोमती नदी, प्रकाश थिएटर* इनमें वर्ग सदस्य तथा वर्ग के नाम को साथ-साथ रख दिया जाता है. हिंदी में यह बहुत प्रचलित तथा व्यापक प्रयोग है. इसे कोई संयुक्त शब्द मानता है, कोई विशेषण+संज्ञा. ऊपर के दो अन्य प्रयोगों में बताये वाक्यांश इस तरीके से लिखे नहीं जा सकते. **आम फल, *शीशम लकड़ी, *कंगारू प्राणी, *गणेश लड़का.*

चूंकि ये रचनाएँ शब्द के स्तर की नहीं, वाक्यांश विस्तार के स्तर की हैं, इनमें शब्दों के बीच में कहीं हाइफ़न नहीं आना चाहिए. हिंदी में हिंदी-भाषा, सफ़ारी-सूट आदि शब्दों में भी हाइफ़न देख कर ताज्जुब होता है. वाक्यांश संबंध विशेषण +संज्ञा के बीच में भी हाइफ़न नहीं आता.

(ई) *भारत के प्रधान मंत्री श्री देसाई*

श्री देसाई, जो भारत के प्रधान मंत्री हैं, ...

इन्हें क्रमश appositive तथा correlative कहा जाता है. वाक्य संरचना की दृष्टि से इन्हें कोई भी नाम दिया जाए, प्रकार्य की दृष्टि से ये ऊपर के प्रयोगों के समान हैं. *श्री देसाई* व्यक्तिवाचक संज्ञा भले हो, भारत में कई *श्री देसाई* होंगे. अतः व्यक्ति विशेष से नाम विशेष को ऐसे जोड़ते हैं. यहाँ देसाई वर्ग है, *प्रधान मंत्री* सीमित वर्ग सदस्य. इसकी (इ) के वाक्यांशों से तुलना कर सकते हैं.

विशेष	**वर्ग**
आगरा	शहर
लंगड़ा	आम
प्रधान मंत्री	देसाई

इस तरह के अन्य उदाहरण हैं—*मेरा लड़का गोपाल, विश्वविख्यात स्मारक ताजमहल, शहीद भगतसिंह, हमारा देश भारत, बादशाह अकबर, महात्मा गांधी, प्रधान मंत्री देसाई, भगवान बुद्ध, मेरा दोस्त रतन* आदि. हमारे सौभाग्य से ऐसे विस्तार के घटकों की संख्या प्रायः दो से आगे नहीं जाती.

समयवाचक क्रियाविशेषण की तरह का विस्तार संख्यावचक शब्दों में मिलता है. *चार लाख, पचास हज़ार, आठ सौ, छप्पन*—यह चार खंडों से बनी संख्या है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संख्याओं में भी सामान्य रूप से 6–7 खंडों तक जाने की गुंजाइश है. एक से निन्यानवे तक लघुतम खंड है, फिर इन्हीं के योग से सौ, हज़ार, लाख, करोड़ के खंड बनते हैं. अरब, खरब आदि संख्याएँ विरल हैं.

अन्य विशेषण वाक्यांशों में भिन्न प्रकार का क्रमिक विस्तार दिखायी पड़ता है. एक तरफ़ हमें विशेषण के गुण, आकार आदि में न्यूनाधिक्य दिखाने की ज़रूरत पड़ती है. वहाँ सुंदर, *अति सुंदर*, पीला, *कम पीला*, मोटा, *सबसे मोटा*, *अच्छा*, *बहुत अच्छा* से स्तर भेद दिखाते हैं. ऐसे स्तर भेद के संदर्भ में विस्तृत रचनाएँ भी मिलती हैं. *बड़ा ही नहीं, वल्कि बहुत बड़ा, कुछ-कुछ पीला जैसा, वर्फ़ जैसा सफ़ेद* आदि. दूसरी तरफ़ विशेषण के जितने प्रकार हैं, उनसे एक-एक शब्द लेकर संज्ञा से पहले जोड़ें, तो बहुत लंबे विशेषण वाक्यांश की रचना हो सकती है. *गाँव से आये हुए राम के वे दोनों छोटे-से प्यारे-प्यारे (बच्चे)* आदि. क्रिया वाक्यांश में ऐसा विस्तार नहीं होता.

4.3. वाक्यांश स्तर पर सबसे रोचक तथा सबसे जटिल विस्तार वाक्यांश का चक्रीय विस्तार है, जो विशेषण तथा क्रियाविशेषणों में पुनः क्रिया रूप का इस्तेमाल करते हुए होता है. *गाँव से आये हुए लड़के ··· . 100 मीटर की दौड़ में तेज़ी से दौड़ते हुए वह गिर गया.* यहाँ विशेषण *आये हुए*, क्रियाविशेषण *दौड़ते हुए* क्रिया से व्युत्पन्न रचनाएँ हैं, अर्थात इन क्रियाओं के पीछे पूरा वाक्य छिपा हुआ है, जिसमें फिर से उपवाक्य तथा वाक्यांश विस्तार की गुंजाइश है. जैसे *शहर से लौटने के बाद गोपाल के द्वारा भेजे गये पत्र में लिखी हुई बातों को पढ़ते हुए बोलने वाले ··· .* अन्य वाक्यांशों के विस्तार की कोई सीमा हो सकती है. लेकिन क्रिया धातुओं से जो चक्रीय वाक्यांश विस्तार होता है, उस की सीमा नहीं है. इनमें विश्लेषण की सुविधा यही है कि क्रियायुक्त वाक्यांश को एक वाक्य समझ कर उसे शेष वाक्यांश से अलग करें, तो फिर उसके अंदर की रचना को अन्य सामान्य वाक्यों के समान विश्लेषित कर सकते हैं.

विशेषण वाक्यांश में एक रोचक चक्रीय विस्तार दिखायी पड़ता है, जो संबंध-वाचक शब्दों के विस्तार में परिलक्षित होता है. चूँकि हर व्यक्ति दूसरे से किसी रूप में संबंधित होता है, यह रचना सिद्धांततः असीम है. जैसे *मेरे भाई राम के साले के लड़के की बहन के अध्यापक के दोस्त की पत्नी के पिता की ··· .*

वाच्य व्याकरण ग्रंथ तीन प्रकार के वाच्य मानते हैं–कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य. जैसे कि **प्रयोग** नामक प्रकरण में मैंने चर्चा की है, उपर्युक्त विश्लेषण में वैयाकरण एक साथ दो भिन्न प्रत्ययों को मिला देते हैं–एक तरफ़ वे अंग्रेज़ी voice को लेते हैं और दूसरी ओर कर्ता-कर्म-क्रिया की अन्विति को. फिर इनके संदर्भ में 'वाच्य, प्रयोग, अन्वय' आदि शीर्षकों में विवरण मिलते हैं. इससे बहुत भ्रम फैला है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अगर हम केवल अंग्रेज़ी voice के अर्थ में वाच्य को लें, फिर भी वर्तमान विश्लेषण अपूर्ण तथा अवैज्ञानिक है. उस स्थिति में भाववाच्य की आवश्यकता नहीं होगी. शेष दो वाच्यों के संदर्भ में भी द्रष्टव्य है कि वाच्य व्याकरणिक कोटि नहीं है और वाक्य संरचना की सामान्य विशेषता नहीं है. हिंदी के समस्त वाक्यों में पूरक वाक्यों में वाच्य परिवर्तन नहीं होता और प्रायः सभी कर्ता+को की रचनाओं में भी वाच्य परिवर्तन नहीं होता. इस कारण हम सभी वाक्यों को कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य के वर्गों में बाँट नहीं सकते. वह *अच्छा लड़का है* को कर्तृवाच्य कहना तर्कहीन होगा. इस तरह मैं वाच्य को वाक्यों के रूपांतरण की विशेषता मानता हूँ, न कि व्याकरणिक कोटि. यह रूपांतरण पूर्ण पक्ष का कृदंत+जा की रचना से संभव होता है.

यह रूपांतरण भी सभी वाक्यों का सामान्य गुण नहीं है, बल्कि इसके प्रयोग के विशिष्ट संदर्भ हैं, जिनके आधार पर हम अकर्तृत्वबोधक वाच्य तथा असमर्थता बोधक वाच्य इन दो प्रकारों की कल्पना कर सकते हैं. आगे इन्हीं दो प्रकारों का विश्लेषण किया गया है.

वाच्य–अकर्तृत्वबोधक 1. यह वाच्य का वह भेद है, जिसमें कर्ता का उल्लेख नहीं होता और कर्म (व्याकरणिक कर्ता वन कर) क्रिया से अन्वित हो कर आता है. कर्ता का उल्लेख न होने का कारण यह है कि या तो कर्ता गौण है और क्रिया व्यापार का उल्लेख मात्र पर्याप्त है (*यहाँ हफ़्ते में एक फ़िल्म दिखायी जाती है*) या कर्ता अज्ञात या अस्पष्ट है. (*सड़क पर एक आदमी मारा गया. भारत में कई जगह चीनी वनायी जाती है.*)

1.1. परंपरागत व्याकरणों में वाच्य परिवर्तन के अभ्यास दिये गये हैं, जिनके आधार पर बच्चे *राम ने रावण को मारा* को बदल कर *राम से रावण मारा गया* लिखने का अभ्यास करते हैं. लेकिन वे जो वाक्य बनाते हैं, वह वास्तव में संदर्भ की दृष्टि से गलत हैं. हिंदी में ऐसे वाक्यों में कर्ता का उल्लेख ही नहीं होता. **मुझसे खाना खाया गया*, **बच्चों से पाठ लिखा गया* हिंदी के वाक्य नहीं हैं.

1.2. कहा जाता है कि कार्यालय के पत्र अवैयक्तिक होते हैं, क्योंकि उन व्यापारों के पीछे व्यक्ति नहीं रहता, बल्कि पूरी संस्था रहती है. इसी कारण कार्यालयों, व्यापारिक संस्थाओं और अन्य संस्थाओं से आने वाले पत्रों में अकर्तृत्वबोधक वाच्य का प्रयोग अधिक होता है. *आपको सूचित किया जाता है* . . . . *इस महीने का वेतन 7 तारीख़ को ही दिया जाएगा. इस कार्यालय से आप को भेजे गये पिछले पत्र की अनुवृत्ति में* . . . (यहाँ *इस कार्यालय से* कर्ता नहीं, बल्कि स्थानवाचक है). *उम्मीद की जाती है कि सभी व्यक्ति समय पर आएँगे. यह तय किया गया है कि* . . . . लेकिन ऐसे कई संदर्भ आते हैं, जहाँ सामान्य अर्थ में कर्ता का नहीं, बल्कि अभिकरण (agency) का उल्लेख करना आवश्यक हो

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाता है. ऐसे संदर्भ में कर्ता के साथ 'द्वारा' लगता है. *इस कार्यालय द्वारा शुरू की गयी कई परियोजनाओं में · · ·, राष्ट्रपति द्वारा जारी किये गये अध्यादेश · · ·, विधान सभा में विधायकों ने सरकार द्वारा तूफ़ान पीड़ितों के लिए किये गये प्रयत्नों की प्रशंसा की.* लेकिन ध्यान रखने की बात है कि ऐसे प्रयोग सामान्य भाषा में प्रायः नहीं मिलते, जबकि ऐसे प्रयोग असंभव नहीं हैं. *?मेरे द्वारा आपत्ति किये जाने पर (~मेरे आपत्ति करने पर) उन्होंने बताया · · ·. ?मकान मालिक के लड़कों द्वारा पिटाई किये जाने पर (~मकान मालिक के लड़कों से पिटकर/पिटने पर) किरायेदार ने पुलिस में शिकायत दर्ज की.*

1.3. जब वाच्ययुक्त वाक्य को 'कि' उपवाक्य से रूपांतरित किया जाता है, वहाँ दोनों उपवाक्यों में वाच्य आता है. यह बात वाच्य के भेदों के साथ मिथ्या-वाच्य पर भी लागू होती है.

मीटिंग 15 तारीख़ को रखने का निर्णय किया गया है.
यह निर्णय किया गया है कि मीटिंग 15 तारीख़ को हो.
यह निर्णय किया गया है कि मीटिंग 15 तारीख़ को रखी जाए.
**यह निर्णय किया गया है कि मीटिंग 15 तारीख़ को रखें.*

लेकिन ऐसे वाक्यों में द्वितीय कर्म हो, तो वह कर्म दूसरे उपवाक्य का कर्ता बनेगा और उपवाक्य बिना वाच्य के आएगा. *मुझसे मद्रास जाने को कहा गया है>मुझसे कहा गया है कि मैं मद्रास जाऊँ. समस्त कर्मचारियों को · · · करने का आदेश दिया गया है>समस्त कर्मचारियों को आदेश दिया गया है कि वे · · · करें.*

2. जिस तरह कोई भी क्रिया तथ्येतर कार्य-व्यापारों को सूचित करने के लिए संभावनार्थ में आती है और आज्ञा, आदेश, विवक्षा, सुझाव, शर्त आदि का अर्थ देती है, उसी तरह अकर्तृत्वबोधक वाच्य भी तथ्येतर कार्य व्यापारों को सूचित करने के लिए प्रयोग में आता है. आकांक्षा या विवक्षा की सूचना वाला वाक्य सकर्मक, अकर्मक दोनों प्रकार के वाक्यों में वाच्य रूपांतरण से बनता है. दूसरे प्रकार को ही भाववाच्य कहा जाता है, जिसके यहाँ उदाहरण हैं. ऊपर 1 के वाक्य कर्म के संदर्भ में ही रूपांतरित होते हैं. अतः वहाँ 'भाववाच्य' नहीं होगा. *चलो, चला जाए. चलो, थोड़ी देर यहाँ बैठा जाए. क्यों न आज कोई हिंदी फ़िल्म देखी जाए. सच पूछा जाए, तो आपकी मेहनत बेकार जा रही है. अगर मकान बदल लिया जाए, तो अच्छा होगा. अगर चिट्ठियाँ भेज दी गयी होतीं, तो आज यह परेशानी न होती.* नोट कीजिए कि इन सब प्रयोगों में भी कर्ता का अप्रकट रहना ज़रूरी है.

3. कर्ता के न होने की बात जहाँ-जहाँ आती है, सब जगह वाच्य का प्रयोग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है. आगे के उदाहरण देखिए. कर्ता के साथ के प्रयोग कोष्ठकों में दिये गये हैं.

परसर्गों के साथ–

पूछे जाने पर (मेरे पूछने पर)

मारे जाने के कारण (उसके मारने के कारण)

कहे जाने के बाद (तुम्हारे कहने के बाद)

कृदंत विशेषण–

दिया गया काम पूरा हो गया है (तुमने जो काम · · ·)

पूछे गये सवाल का ही जवाब दो (मैंने तुमसे जो · · ·)

इतनी मेहनत से *बनाया गया खाना* बेकार हो गया (मैंने मेहनत से जो · · ·)

4. *ऐसे नहीं बोला जाता, इस तरह नहीं काटा जाता* आदि वाक्य अकर्तृक वाच्य हैं. ये असमर्थता सूचक वाक्य नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष निषेध के वाक्य हैं. इन वाक्यों के प्रयोग की अन्य विशेषताओं की चर्चा के लिए **करता, करता है, करता था** 1.4 देखिए.

वाच्य–अकर्तृत्वसूचक 1. यद्यपि वाच्य से मेरा तात्पर्य सिर्फ़ उन वाक्यों से है जिनमें पूर्ण पक्ष कृदंत+जा से क्रिया वाक्यांश बनते हैं, फिर भी इस प्रकरण में उन वाक्यों की संरचना की चर्चा, जिनमें कर्ता का उल्लेख नहीं होता, वाच्य के अधीन कर रहा हूँ, क्योंकि कई विद्वान अर्थ के आधार पर इन्हीं वाक्यों को 'सही' वाच्य मानते हैं. दूसरे यह शीर्षक वाच्य के निकट रखा जाए, यह भी मैं चाहता हूँ.

अकर्तृत्वसूचक वाक्य संरचनाएँ तीन हैं–

1. 'सही' वाच्य, जिसमें भूतकालिक कृदंत+जा से क्रिया की रचना होती है (देखें **वाक्य–अकर्तृत्वबोधक**). यह *निर्णय किया गया है कि* · · ·, चलो, कहीं बैठकर चाय *पी जाए*.

2. जिन कर्मवाचक वाक्यों में कर्ता का उल्लेख न करना हो, उनमें अकर्मक क्रिया का प्रयोग करते हैं. इसे कुछ वैयाकरणों ने (संदर्भ के आधार पर) मिथ्या-वाच्य (pseudo-passive) कहा है. *दरवाज़ा खुला. पेड़ कट गया. खाना नहीं बना.* यही सही है कि ऊपरी तौर पर दोनों वाच्यों में कुछ साम्य है. *पेड़ काटा गया=पेड़ कटा. दरवाज़ा खोला गया=दरवाज़ा खुला.* लेकिन दोनों के प्रयोग संदर्भ में एक विशिष्ट अंतर है. वाच्य का प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ कर्ता का उल्लेख न होने पर भी क्रिया के पीछे सायास व्यापार करने वाले एक (प्रायः मानुष) कर्ता की उपस्थिति का बोध होता है. जब हम *दरवाज़ा खुला* या *पेड़ टूटा* कहते हैं, ये घटनाएँ प्रकृततया या अपने आप घटित व्यापार भी कही जा सकती हैं. लेकिन *खोला गया* या *तोड़ा गया* के संदर्भ में मानना होगा कि कार्य करने वाला कोई व्यक्ति है. इसी तरह *प्लेट टूटी* में टूटने का व्यापार गलती से

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुआ माना जा सकता है, लेकिन तोड़ी गयी में सोद्देश्य तथा यत्नपूर्वक व्यापार करने का अर्थ स्पष्ट होता है.

2.1. 'टूट' के साथ कर्ता (या कारणकर्ता) का प्रयोग हो सकता है, अगर सायास व्यापार की बात न हो. इसकी तुलना में वाच्य में कहीं कर्ता सामने नहीं आता. मुझसे गलती हो गयी. उससे प्लेट टूट गयी. हमसे गलती से एक बर्तन टूट गया (*तोड़ा गया). चलो, खाना बन गया (*चलो, माँ से खाना बन गया). मैंने बटन दबाया और पंखा चला (*मैंने बटन दबाया और मुझसे पंखा चला, *मैंने बटन दबाया और पंखा चलाया गया). ऐसे अकर्मक प्रयोगों में गलती से व्यापार होने पर ही कर्ता का प्रयोग करना होता है. यह इस वर्ग की क्रियाओं की एक विशेषता है, जो वाच्य में नहीं दिखायी पड़ती.

2.1.1. असमर्थताबोधक के अर्थ में वाच्य और अकर्मक क्रिया दोनों समान संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं. अरे भई, यह ताला मुझसे नहीं खुल रहा है (~खोला जा रहा है). वह दरवाज़ा मुझसे नहीं खुला (~खोला गया).

यह साम्य केवल असमर्थता बोधक वाक्यों तक ही सीमित है और निषेधार्थक वाक्यों में या गलती से हुए व्यापार को सूचित करने वाले वाक्यों में रचना या प्रयोग का साम्य नहीं है. तूफ़ान में एक भी पेड़ नहीं टूटा (~*नहीं तोड़ा गया). मुझसे (गलती से) वह चिट्ठी पोस्ट नहीं हुई (*नहीं की गयी).

हिंदी की लगभग सभी क्रियाओं का वाच्य परिवर्तन हो सकता है, जबकि इस वर्ग की अकर्मक क्रियाएँ केवल थोड़ी-सी सकर्मक क्रियाओं के रूप-परिवर्तन से बनती हैं. खाना, पीना, पढ़ना, लिखना. ख़रीदना, देखना, भेजना जैसी बहुत-सी क्रियाओं के अकर्मक रूप नहीं मिलते. इस तरह वाच्य व्यापक है, मिथ्यावाच्य सीमित.

3. वाच्य के समान एक और अकर्तृत्वसूचक वाक्य संरचना है. यह प्रयोग की दृष्टि से वाच्य का निकटतम पर्याय है. सुनने में आया है=सुना गया है, देखने में आया है=देखा गया है, कहने में नहीं आता=कहा नहीं जा सकता.

इस वाक्य संरचना का प्रयोग पहले बहुत होता था, लेकिन अब धीरे-धीरे कम होता जा रहा है । अब यह प्रयोग थोड़ी-सी क्रियाओं तक ही सीमित हो गया है. उल्लेखनीय है कि आज गुजराती भाषा में वाच्य परिवर्तन का यही अधिक प्रचलित प्रयोग है. करवा मां आवे (किया जाता है, अनुवाद–करने में आता है), जोवा मां आव्यो (< जो–देख), आपवा मां आवे (< आप–दे) आदि गुजराती में अकर्तृत्वसूचक वाच्य के सहज उदाहरण हैं. यही बात मराठी में भी है. हिंदी में यद्यपि यह सामान्य रूप से अकर्तृत्वसूचक है, इसमें कर्ता का उल्लेख किया भी जा सकता है. यह बात कहीं मेरे सुनने में नहीं आयी. हमारे देखने में आया है . . . .

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाच्य–असमर्थता सूचक 1. यह वाच्य का वह प्रकार है, जिसमें पूर्ण पक्ष कृदंत+जा की रचना मिलती है, कर्ता का उल्लेख होता है और वाच्य रूपांतरण द्वारा कार्य की अक्षमता की सूचना दी जाती है. ऐसे वाक्यों में कर्ता में 'से' आता है और 'नहीं' का प्रयोग अनिवार्य है. *मुझसे चला नहीं जा रहा है, मुझसे खाना नहीं खाया जाएगा.* इस संदर्भ में अन्य **असमर्थता सूचक वाक्यों** के विश्लेषण के लिए उक्त प्रविष्टि देखें.

2. अकर्तृत्वबोधक वाच्य में विधि या सुझाव (*चलो, चला जाए*), कामना या आशंका (*ऐसा न हो कि · · ·, काम शुरू किया जाए*) आदि रचनाएँ मिलती हैं, जो असमर्थता सूचक वाच्य में नहीं मिलतीं. ऐसे संदर्भों में असामर्थ्य की सूचना प्रायः 'सक, पा' से दी जाती है. *मैं चाहता हूँ कि वह न आए (*उससे न आया जाए). वह न आ सके तो अच्छा है (?उससे न आया जाए, तो अच्छा है). ऐसा न हो कि मैं न खा सकूँ/पाऊँ (* · · ·मुझसे खाया न जाए).* असमर्थता सूचक वाच्य के वाक्यों में कहीं संभावनार्थ क्रिया नहीं आती.

वापस, वापिस प्रकरण **ह** के संदर्भ में हमने देखा कि कई शब्दों में, जिनमें द्वितीय अक्षर के प्रारंभ में */ह/* है, प्रथम अक्षर में अ-इ का विकल्प मिलता है (और बाद में अ-लोप के कारण आक्षरिक स्थिति में भी परिवर्तन आता है). जैसे *बहन-बहिन, पहला-पहिला.* लेकिन उक्त दोनों शब्द इस नियम के अंतर्गत नहीं आते, फिर भी उनमें अ-इ का विकल्प दिखायी पड़ता है. यह उर्दू में लेखन में अ-इ के अंतर को न दिखा पाने के कारण हो सकता है, फिर भी हमें इस तरह के विकल्प और नहीं मिलते. *वापस* अब बहुप्रचलित है. *वापसी* के लिए *?वापिसी* शायद ही मिलता हो.

वाला यह हिंदी भाषा का विशिष्ट शब्द है जो व्यापक स्तर पर प्रयोग में आता है. यों समझिए कि हिंदी का शायद ही कोई शब्द हो, जिसके साथ यह न जुड़ता हो.

1. क्रिया रूपों के अलावा अन्य शब्दों के साथ *वाला* निर्देश तथा पहचान के लिए आता है. मान लीजिए एक जगह पाँच पुस्तकें हैं और आप कह रहे हैं *वह पुस्तक देना,* तो प्रतिवक्तव्य होगा *कौन-सी पुस्तक ?* आप कहेंगे *वही लाल वाली, जो सबसे ऊपर है* या कहेंगे *वही लाल किताब, सबसे ऊपर वाली.* यहाँ हम अन्य की जगह किसी पहचान के आधार पर एक का निर्देश कर रहे हैं. *टोपी वाला आदमी, मूँछों वाला आदमी, फ़ाक वाली लड़की* ऐसे कुछ प्रयोग हैं. *टोपी वाला, मूँछों वाला, फ़ाक वाली* संज्ञा की तरह अलग से प्रयुक्त होते हैं. *पिता जी, बाहर कोई/एक टोपी वाला (आदमी) है. पिता जी, (वह) टोपी वाला (आदमी) आया है.*

1.1. पहचान के संदर्भ में *वाला* सभी शब्दों के साथ जुड़ सकता है (क्रिया की चर्चा आगे है), ऐसे प्रयोगों में *वाला* के दो प्रमुख व्याकरणिक प्रकार्य हैं—

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(क) *टोपी वाला, मूँछों वाला*. यहाँ अंग या पोशाक आदि के संदर्भ में व्यक्ति की पहचान है. (ख) *स्कूल वाला मामला, कल वाली घटना, छत वाली बात, यहाँ वाली बात*. इन प्रयोगों में दोनों शब्दों में संबंध सूचित होता है, लेकिन संबंध में 'का' से अंतर है. *कल की बात* से तात्पर्य है, जो कल घटित हुई थी. यहाँ *वाला* की तुलना में कई बातों में से एक बात की पहचान वाली बात नहीं है. *छत की बात* से तात्पर्य है वह बात, जो छत से संबंधित है, छत के बारे में है. यहाँ भी शायद एक से अधिक कोई बात नहीं है. *छत वाली बात* में निश्चित रूप से एक से अधिक बातें हैं और हम एक की ओर संकेत कर रहे हैं. लेकिन बात छत से किस रूप से संबंधित है (छत पर घटित हुई, छत के बारे में है), यह रचना से व्यक्त नहीं होता.

ऊपर के प्रकार्यों के आधार पर अन्य कुछ उदाहरण भी देखे जा सकते हैं, लेकिन निम्न प्रयोगों में दोनों प्रकार्यों में अंतर को *का* सूचित नहीं करता. *कपड़े वाला थैला, प्लास्टिक वाली थैली, चमड़े वाला जूता, ज़री वाली साड़ी*. इन वाक्यांशों में साधन तथा वस्तु के अंगांगी संबंध तो है (जो *का* से भी प्रकट होता है), साथ में यह अर्थ भी है कि कई थैलों, थैलियों, जूतों आदि में से हम किसी एक की बात कर रहे हैं (अर्थात सब थैलों में से एक ही कपड़े का है), जो *का* से व्यक्त नहीं हो सकता.

हमें कुछ स्थानों पर *वाला* तथा *का* के प्रयोग-साम्य पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि कई जगह दोनों एक-दूसरे की जगह आते हैं. *भाई मुझे छोड़ दो. यह तो झगड़े वाला काम है~झगड़े का काम है. मैं तुम्हें कोई नुकसान वाली~नुकसान की बात नहीं बताऊँगा*. इस रचना में झगड़ा या नुकसान परिणाम है. यहाँ *वाला* निर्देश सूचक नहीं है, लेकिन संभावित परिणाम की तरफ़ संकेत का अर्थ देता है. *का* निश्चित संबंध दिखाता है.

2. क्रिया रूपों के साथ *वाला* के प्रयोग का विश्लेषण अधिक जटिल है. कारण यह है कि इस का अपना कोई विशेष प्रयोग संदर्भ नहीं है, बल्कि यह कई संदर्भों में कई अन्य वाक्य संरचनाओं की जगह आता है. क्रियार्थक संज्ञा तथा *वाला* के योग से बना यह शब्द विशेषण की तरह काम आता है–*करने वाला लड़का, करने वाले को, लोग जाने वाले हैं, गाड़ी छूटने ही वाली है*.

2.1. निर्देश वाला अर्थ कुछ हद तक क्रिया में भी है. *जाने वाले को बुलाओ* अन्य 'वालों' से उस व्यक्ति को अलग करता है. *मैं जाने वाला हूँ* में अन्य स्थितियों (*पढ़ने वाला, लिखने वाला* की तुलना में) वक्ता की स्थिति की सूचना देता है. लेकिन केवल निर्देश के संदर्भ में यहाँ *वाला* को देखना (विपरीत स्थितियाँ सामने न होने के कारण) जटिल है. *पानी बरसने ही वाला है, कार्यक्रम थोड़ी देर में शुरू होने वाला है* आदि में आप निर्देश वाले अर्थ के अनर्थ को देख सकते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2.2. *वाला* के अर्थ को रूपांतरित वाक्यों में देख सकते हैं—*मदरास जाने वाले* ··· (जो लोग कल मदरास जा रहे हैं, ···), *पुल पार करने वालों की* ··· (जो पुल पार करेंगे ···), *हमेशा हँस कर बोलने वाला* ··· (जो हमेशा हँस कर बोलता है ···).

अर्थ की विविधता को पूरक वाक्यों में देख सकते हैं—*गाड़ी आने वाली है* (कार्य की निकटता), *पानी पड़ने वाला है* (अनुमान). ये अर्थ भविष्य में होने वाले व्यापारों के संबंध में हैं. इस कारण *वाला* तथा (निकट) भविष्य तथा अनुमान सूचित करने वाले समानार्थी हैं—*तुम जाने वाले हो कि नहीं*~*तुम जा रहे हो कि नहीं? कितने लोग आने वाले हैं*~*कितने लोग आ रहे हैं? लगता है खाना नहीं मिलने वाला है*~*लगता है खाना नहीं मिलेगा वह सोने वाला है*~*वह सोएगा*.

विदेशी बहुवचन शब्द जब अन्य भाषाओं से शब्द आते हैं, तो कुछ हद तक अपनी भाषाओं की विशेषताओं को ले कर आते हैं. लेकिन जिन भाषाओं में वे व्यवहृत होते हैं, उनके व्याकरणिक नियमों के अनुसार प्रयोग में आते हैं. लेकिन यह परिवर्तन इतना आसान नहीं जितना दीखता है और भाषा में कई समस्याएँ सामने आती हैं.

1. हिंदी में प्रमुख रूप से तीन स्रोतों से शब्द आये हैं—संस्कृत, अरबी-फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी. इनमें संस्कृत हिंदी के विकास के क्षणों से जुड़े हुए होने के कारण वचन की दृष्टि से कोई समस्या उपस्थित नहीं करती. हिंदी में संस्कृत से प्रातिपदिक लिये गये हैं और इनके बहुवचन हिंदी के नियमों के अनुसार बनते हैं.

2. अरबी-फ़ारसी के शब्दों में वचन प्रत्यय *-आन* लगता है, जो उर्दू में व्यवहृत अंग्रेज़ी शब्दों पर भी लागू होता है. *साहबान, मालिकान, मेंबरान, डाक्टरान*. अरबी के संज्ञा शब्दों में तथा इसके प्रभाव से कुछ फ़ारसी शब्दों में भी *-आत* लगता है—*कागज़ात, मकानात, ख़यालात*. रूपस्वनिमिक आधार पर आकारांत शब्दों में सिद्ध रूप /त/ ही आता है—*जज़्बात, नग़मात*. इसके साथ ही अरबी में शब्द रचना की एक विशेषता है. शब्द मूल रूप से स्वर परिवर्तन से रूपसिद्ध होते हैं, जैसे *इल्म—तालीम—मालूम—आलिम*. इस तरह बने कई बहुवचन शब्द हैं.

हुक्म	अहकाम	हक़	हक़ूक़
हाल	अहवाल	हद	हदूद
तरफ़	अतराफ़	ख़त	ख़तूत
ख़बर	अख़बार	क़ायदा	क़वायद
सबब	असबाब	जौहर	जवाहर
वक़्त	औक़ात (! अवकात)	तारीख़	तवारीख़
मदद	इमदाद		

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुल्लिग बहुवचन के *आन*, *आत* प्रत्यय हिंदी की सामान्य प्रकृति के विपरीत पड़ते हैं. हिंदी में *डाक्टर*, *मेंबर*, *साहब* पुल्लिग बहुवचन शब्द हैं, *डाक्टरों* आदि तिर्यक रूप हैं. इस कारण ये प्रत्यय संघर्ष की स्थिति पैदा करते हैं. अरबी की स्वर परिवर्तन से रूपसिद्धि की विधि हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है. इस कारण इन बहुवचन शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में दो स्थितियाँ देखने में आती हैं. (अ) कई विदेशी बहुवचन शब्द हिंदी में सामान्य रूप से प्रयोग में नहीं आते (*अहवाल*, *अतराफ़*, *हक़ूक़*) और अगर इनका प्रयोग किया जाए, तो वह भाषा उर्दू की शैली कही जाएगी. (आ) कई जगह एकवचन तथा बहुवचन शब्दों के अर्थ में अंतर आ चुका है और मूल बहुवचन शब्द हिंदी में अर्थभेद के साथ एकवचन है. आगे ऐसे शब्दों में अर्थ के अंतर को स्पष्ट किया गया है. दोनों शब्दों के संभव हिंदी बहुवचन रूप कोष्ठक में दिये गये हैं--

जौहर	एकवचन में प्रयुक्त नहीं; 'जौहरी' में विद्यमान	जवाहिर	(जवाहिरात) कीमती पत्थर
ख़बर	(ख़बरें) समाचार (स्त्री०)	अख़बार	(अख़बार) समाचारपत्र (पु०)
तारीख़	(तारीखें)	तवारीख़	इतिहास
वक्त	समय (पु०); बहुवचन रूप नहीं	औकात	योग्यता (स्त्री०)
कागज	(कागज़)	कागज़ात	प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त; कानूनी लिखा-पढ़ी के कागज़
अजब	आश्चर्य की बात; प्रायः विशेषण के रूप में प्रयुक्त	अजायब	संग्रहालय के अर्थ में संयुक्त शब्द; 'अजायबघर' में प्रयुक्त

जुर्म (अपराध) से प्राप्त बहुवचन शब्द *जरायम* स्वतंत्र रूप से नहीं आता, बल्कि रूढ़ संयुक्त शब्द *जरायमपेशा* (अपराध करना ही जिनका धंधा हो) में इसको देख सकते हैं.

2.1. उर्दू स्रोत के कई आकारांत पुल्लिग शब्द हैं, जो वचन के लिए या तिर्यक रूप में रूपसिद्ध नहीं होते. इस प्रयोग विशेषता का शायद यही कारण है कि ये विदेशी शब्द हैं. किसी समय हिंदी के अनुसार इनके रूप परिवर्तन की बात अटपटी लगी होगी. प्रयोग विरलता के कारण ये परिवर्तित नहीं हुए. ऐसे अनेक शब्द हैं--*आक़ा*, *दरोगा*, *दरिया*, *नफ़ा*, *मजमा*, *समाँ*.

3. अंग्रेज़ी से आये शब्दों में वचन की समस्या भिन्न प्रकार की है. वहाँ सवाल है बहुवचन शब्द कैसे बनें. अंग्रेज़ी से आज भी शब्द लिये जा रहे हैं. इनमें कुछ शब्दों के हिंदी में बहुवचन शब्द हिंदी की प्रकृति के अनुसार बन जाते हैं; कुछ के बहुवचन बनाने में संकोच होता है, क्योंकि ये अटपटे लगते हैं. कई अकारांत

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द, दोनों लिंगों में हिंदी के अनुसार रूपसिद्ध होते हैं. डाक्टर, दो डाक्टर, डाक्टरों ने; बस, बसें, बसों को. लेकिन लेडी-लेडियाँ सुनने में अजीब लगता है. ऐसे स्थानों में कुछ लोग लेडीज़ आदि से काम चलाते हैं. टाई, डायरी, डिगरी, पार्टी ऐसे कुछ शब्द हैं. लेकिन *पालिसियाँ, अलमारियाँ, कापियाँ* अधिक सहज हैं. इसी तरह आकारांत पुल्लिग शब्दों में हिंदी की प्रकृति के अनुसार रूपसिद्धि कई जगह अटपटी होती है—*सोडा, डिप्लोमा, फ़ार्मूला, सिनेमा, ड्रामा*. यहाँ दो *सोडा ले आओ*~*दो सोडे ले आओ* दोनों वाक्य सुनने में आते हैं. कुल मिला कर कह सकते हैं कि रूपसिद्धि अटपटी होती है और अंग्रेज़ी बहुवचन का प्रयोग हिंदी के प्रयोग के अनुरूप नहीं है. अतः बहुधा वक्ता बिना रूप परिवर्तन किये बहुवचन या तिर्यक का बोध कराते हैं. जैसे *दो सोडा, दोनों रेडियो को मरम्मत के लिए भेजो. मैंने दो डिप्लोमा लिये हैं. दोनों पार्टी के लोग, सिनेमा में, ड्रामा के आरंभ में* आदि.

3.1. कुछ अंग्रेज़ी शब्द मूल अंग्रेज़ी बहुवचन में ही लिये गये हैं—*बक्स, माचिस,* दराज़, (<*ड्राअर्ज़?*), फ़ीस, स्पोर्ट्स. उल्लेखनीय है कि ये शब्द सामान्य रूप से हिंदी में एकवचन हैं.

विदेशी व्यंजन निम्नलिखित पाँच व्यंजन स्वन हिंदी में विदेशी भाषाओं से गृहीत हुए हैं. इनके लिए लेखन में चिह्न भी निर्धारित हैं. ये चिह्न हैं ⟨क़ ख़ ग़ ज़ फ़⟩. इन चिह्नों को पहले से प्रचलित चिह्नों के नीचे बिंदी लगा कर बनाया गया है. इनके प्रयोग क्षेत्र आदि के बारे में विचार करने से पहले इन स्वनों के बारे में चर्चा कर लें.

1. इनमें /क़/ स्पर्श व्यंजन है, जो स्वरयंत्र से बोला जाता है. इसके अलावा शेष चारों व्यंजन संघर्षी हैं. /ख़/ व्यंजन /क/ के स्थान से बोला जाता है. /क/ के लिए हम वायु मार्ग को अवरुद्ध करते हैं (जिह्वा तालु स्थान का स्पर्श करती है). उसी स्थान से बिना तालु को स्पर्श किये अगर हवा को बराबर जाने दिया जाए, तो इसका उच्चारण होगा. /ग़/ इसका घोष रूप है. /ज़/ व्यंजन /स/ का घोष रूप है. /स/ का उच्चारण करते समय आप उसमें घोषत्व ला कर /ज़/ में बदल सकते हैं. नीचे के होंठ तथा ऊपर के दाँत पास में आएँ (और एक-दूसरे को छू कर हवा का रास्ता बंद न करें) और बराबर हवा को जाने दें, तो /फ़/ का उच्चारण होता है. यह दंत्योष्ठ्य संघर्षी व्यंजन है. हिंदी में इसका घोष उच्चारण नहीं है.

2. हिंदी में इस समय दो वर्ग हैं—'बिंदी हटाओ' वर्ग, जिसके प्रबल प्रवक्ता किशोरीदास वाजपेयी हैं और 'बिंदी लगाओ' गुट, जिसमें अधिकतर उर्दू समर्थक या उर्दू से पढ़े लोग आते हैं. हटाओ वादियों का तर्क यह है कि ये स्वन विदेशी हैं और इनका हिंदी में कोई स्थान नहीं है. अगर हिंदी इन्हें ग्रहण करेगी तो

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपना बना कर. यह तर्क कुछ हद तक सही है. कोई भाषा बिना सीमा के नये स्वन ग्रहण नहीं कर सकती, न ही नये स्वनों के लिए बराबर नये चिह्न बनाती रह सकती है. लेकिन भाषाओं को विकास के द्वार बंद करके बैठना नहीं चाहिए. भाषाओं में आंतरिक परिवर्तन होते हैं, बाह्य प्रभाव से परिवर्तन आते हैं. अगर ये परिवर्तन बहुव्यापी, आवश्यक तथा भाषा की आत्मा में बैठ जाने वाले हों, तो इन्हें अपनाने के लिए भाषा अपने को बदलती भी है. हिंदी में /ड़/ /ढ़/ के नये चिह्न तो आ गये, लेकिन /ज़/ /फ़/ का विरोध शायद इसीलिए तो नहीं किया ज़ाता है कि ये विदेशी हैं. क्या कारण है कि हम संस्कृत के उन वर्णों से तो (ऋ, ष, क्ष तथा विसर्ग) चिपके हुए हैं, जो विशिष्ट स्वन नहीं हैं और /ज़/ /फ़/ की वास्तविकता से इनकार करते हैं ? तमिल जैसी संस्कारबद्ध भाषा में भी (प्रमुख भारतीय भाषाओं में उसी ने अकेले देवनागरी के वर्णक्रम को नहीं अपनाया) यह आवश्यकता प्रकट होती है. वहाँ /प/ को काला छापकर /ब/ का आशय व्यक्त किया जाता है और /फ़/ के लिए नया चिह्न बनाया गया है.

हटाओ वर्ग का दूसरा तर्क है कि अन्य भारतीय भाषाओं ने इन स्वनों को नहीं अपनाया. इस तर्क में सार नहीं है, क्योंकि तमिल के संदर्भ में उदाहरण देख चुके हैं और हिंदी के बारे में विस्तृत चर्चा आगे करेंगे. ये स्वन उर्दू में अरबी-फ़ारसी मूल से आये शब्दों में ही ज़्यादातर व्यवहृत होते हैं. उर्दू और हिंदी का संबंध सिर्फ़ संपर्कजन्य नहीं है. ये दोनों वास्तविक अर्थ में सहोदर भाषाएँ हैं. इस कारण इन स्वनों का अन्य भाषाओं में न पाया जाना ताज्जुब की बात नहीं वरन ये हिंदी में न होते तो ज़्यादा ताज्जुब की बात होती. वैसे वास्तविकता यह है कि भारतीय भाषाओं ने न्यूनाधिक रूप से नये चिह्न बनाये हैं और चिह्न न बनाने पर वर्तनी में समायोजन किये हैं.

3. अब इन स्वनों के बारे में विस्तार में चर्चा करें. /क़/ यह स्वन अरबी भाषा का है. विद्वानों का कथन है कि फ़ारसी में ही इसका उच्चारण विरल हो गया था और उर्दू में इसका उच्चारण लगभग समाप्तप्राय है. हिंदी भाषियों में उर्दू के माध्यम से पढ़े-लिखे लोगों के कुछ प्रतिशत (शायद 10–15% से ज़्यादा नहीं) लोगों के व्यवहार में इसका उच्चारण सुनायी पड़ता है. जो थोड़े-से व्यक्ति सजगता से इसका उच्चारण करने का यत्न करते हैं, वे इसे /ख़/ से स्थानापन्न कर देते हैं. /वक़्त/ → /वख़्त/, /वक़ील/ → /वख़ील/. कहने का तात्पर्य यह कि यह स्वन आम बोलचाल की भाषा का नहीं है, अधिकतर व्यक्ति इसके उच्चारण से परिचित नहीं हैं और विरले ही कोई अहिंदी भाषी इसका सही उच्चारण जानता होगा. उनके लिए वर्ण के नीचे लिखा नुक्ता कोई मायने नहीं रखता. इस स्थिति में अगर कहूँ कि /क़/ की शोभा हिंदी से

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हटे तो अच्छा ही है, तो मेरे ख़याल से और विद्वान भी मेरा साथ देंगे. उर्दू में इसका प्रयोग हो, इसमें किसी को आपत्ति नहीं होगी, क्योंकि धार्मिक, साहित्यिक तथा भाषावैज्ञानिक दृष्टियों से वहाँ इसकी उपादेयता है. /ग़/ इस स्वन के बारे में भी लगभग ये ही बातें कह सकते हैं, जो /क़/ के बारे में कह चुके हैं. अंतर सिर्फ़ इतना है कि इस स्वन का /क़/ की अपेक्षा कुछ अधिक व्यवहार है. लेकिन पूर्णतः शिक्षितों की बोली तथा साहित्यिक भाषा तक सीमित रहने के कारण और सामान्य बोलचाल में व्यवहृत न होने के कारण इस स्वन को भी मानक हिंदी से दूर करना आपत्तिजनक नहीं होगा. इसी कारण इस ग्रंथ में कहीं ⟨क़ ग़⟩ का प्रयोग नहीं दिखाया गया है.

/ख़/ यह स्वन भी हिंदी में सिर्फ़ उर्दू के अरबी-फ़ारसी मूल के शब्दों में ही देखने में आता है. *ख़ुद, ख़ाली, ख़रीद, ख़ुदा, ख़िताब, आख़िर, नाख़ून, रुख़, सख़्त.* हिंदी भाषी इसकी जगह /ख/ का प्रयोग करते हैं, शायद इसलिए कि ⟨ख⟩ में नुक्ता लगाकर बनाया जाता है. आगे दिये उदाहरण से यह दिखाने का यत्न करूँगा कि इस स्वन को महाप्राण व्यंजन स्थानापन्न नहीं कर सकता. /तख़्त/ इसे या तो /तखत/ बनाएँ या /तक्त/, यह /तख्त/ नहीं बन सकता, क्योंकि महाप्राण व्यंजन अल्पप्राण से पहले संयुक्त नहीं हो सकता. इस तरह *तख़्त, बख़्शी* (ध्यान दीजिए, यह गुजराती में बक्षी बन गया हैं), *शख़्स फ़ख़्र* आदि शब्दों में हमें उच्चारण तथा लेखन के संबंध में विचार करना होगा. इन शब्दों को छोड़ दिया जाए, यह बात सिर्फ़ कहने या सुनने में ही आसान लगती है. इस प्रकरण के अंत में दिये अन्य तर्कों से यह स्पष्ट हो सकता है कि इस स्वन का हिंदी भाषा में /क़/, /ग़/ से अधिक गहरा स्थान है. अतः इसे निकालने की बात उतनी आसानी से नहीं कही जा सकती.

/ज़/ यह उर्दू के शब्दों तथा अंग्रेज़ी आदि यूरोपीय भाषाओं के शब्दों में व्यवहृत स्वन है. यह स्वन हिंदी में /ख़/ से अधिक शब्दों में और अधिक लोगों द्वारा प्रयुक्त होता है. कई अंचलों में तथा कई लोगों द्वारा इसका उच्चारण /ज/ होता है. रूप-साम्य (लिपि चिह्न के) के अलावा इस परिवर्तन का कोई आधार नहीं दीखता[1]. /फ़/ यह स्वन अंग्रेज़ी तथा यूरोपीय भाषाओं के अतिरिक्त उर्दू के शब्दों के माध्यम से हिंदी में आया है. ⟨फ⟩ से रूप-साम्य ही शायद कारण है. कई अंचलों में लोग इसकी जगह /फ/ का उच्चारण करते हैं. जैसे कि /ख़/ के संदर्भ में चर्चा की थी, इसे हर जगह /फ/ से स्थानापन्न नहीं कर सकते. ऐसे शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं—*मुज़फ़्फ़र, ग़फ़्फ़ार, दफ़्तर, मुफ़्त, रफ़्तार, इफ़्तिख़ार.*

[1]तमिल और मलयालम भाषी /ज़/ की जगह प्रायः /स/ का प्रयोग करते हैं, क्योंकि /स/ इस स्वन का अघोष रूप है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन स्थानों में शब्द के मूल आक्षरिक रूप को बिगाड़े बिना उच्चारण करें, तो /फ़/ की जगह /प/ आ सकता है, /फ/ नहीं; या शब्द के रूप को बदलना होगा. अन्यथा /*मुफ्त/ जैसे शब्दों का उच्चारण असंभव है.[1] शब्द के अंत में /फ/ का उच्चारण सुविधाजनक नहीं होता होगा. शायद इसी कारण संस्कृत में भी शब्दांत /फ/ के उदाहरण अधिक नहीं मिलते (जबकि संस्कृत स्वरांत भाषा है और हिंदी का शब्द सामान्यतः व्यंजनांत ही होता है). इस आधार पर हमारे पास शब्दांत /फ़/ के जो अनेक शब्द हैं जैसे, *साफ़ सेफ़ बर्फ़ तरफ़ माफ़ शरीफ़ ख़रीफ़ सर्राफ़*, इनके उच्चारण में इस स्थानापत्ति से कोई सुविधा भी नहीं होगी.

4. यहाँ मैं भारतीय भाषाओं में, ख़ासकर हिंदी में, इन तथाकथित विदेशी व्यंजनों की स्थिति की चर्चा करना चाहूँगा, जिससे मालूम हो सके कि ये वास्तव में विदेशी नहीं हैं, बल्कि आंतरिक स्वन परिवर्तन के कारण कई भारतीय भाषाओं में इनका स्थान है. तमिल तथा मलयालम में स्वर मध्य में /क/ का उच्चारण /ख़/ है; कहीं यहाँ /ग़/ भी मिलता है. असमी में स्वन परिवर्तन के कारण /श/ का उच्चारण /ख़/ होता है. गुजराती तथा मराठी में /झ/ स्वन परिवर्तन के कारण ज़ उच्चरित होता है. तेलुगु, मराठी तथा असमी भाषाओं में /ज झ/ आंतरिक स्वन व्यवस्था के अनुरूप कई स्थानों में संघर्षी उच्चारण प्राप्त करते हैं. हिंदी की तरह पंजाबी, सिंधी तथा कश्मीरी भाषाओं में /ख़ फ़ ज़/ का उच्चारण कई शब्दों में मिलता है. अंग्रेज़ी भाषा के प्रभाव के कारण कई भाषाओं में /फ़/ अपना स्थान बना चुका है. इस तरह ये चारों संघर्षी स्वन कई भाषाओं की अपनी व्यवस्था में हैं.

/ख फ प क/ स्पर्श व्यंजन हैं, परुष स्वन हैं. शब्दों में स्थान के आधार पर इनका उच्चारण शिथिल (यानी संघर्षी) होने की प्रवृत्ति स्वनविज्ञान का मान्य सिद्धांत है. इस कारण कई भाषाओं में स्पर्श की जगह संघर्षी व्यंजन का परिवर्तित उच्चारण प्रायः देखने को मिलता है. हिंदी के कई शब्दों में /फ/ की जगह /फ़/ और /ख/ की जगह /ख़/ का उच्चारण बोलचाल की भाषा की विशेषता है. *फ़ाटक, फ़ूल* ('पुष्प' के लिए), *फ़ोड़ना, फ़ूटना, सफ़ल, फ़ेफ़ड़ा, मख़ाना, सख़ा, पख़वाड़ा* आदि शब्दों के (गलत) उच्चारण से हम परिचित ही हैं. इस प्रवृत्ति के कारण हिंदी की स्वन व्यवस्था में आगामी युग में परिवर्तन होगा, यह अनुमान कर सकते हैं. चाहें हम अब इन 'विदेशी' स्वनों को निकालने का यत्न करें, इस आंतरिक परिवर्तन से हम आगे शायद या निश्चित रूप से प्रभावित होंगे.

भाषाओं में एक प्रवृत्ति पायी जाती है जिसे **अतिसुधार** कहते हैं. यह प्रवृत्ति वहीं

[1]ऐसे शब्दों का व्यापक स्तर पर कोई सर्वेक्षण करें, तो इस कथन की सत्यता की बात स्पष्ट हो सकेगी.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिखायी पड़ती है, जहाँ भाषा की व्यवस्था में संबंधित तत्त्व हों. हिंदी में /ज/ को /ज़/ बोलना या /फ/ को /फ़/ बोलना इस प्रवृत्ति का स्पष्ट लक्षण है. यह प्रवृत्ति ऊपर के आंतरिक परिवर्तन से भिन्न प्रक्रिया है. वहाँ स्वन परिवर्तन मुख सुख के कारण होता है, अतिसुधार में उक्त स्वनों के स्थान को न जानने के कारण भ्रम से परिवर्तन किया जाता है. हिंदी में /ज/ के अतिसुधार के कई उदाहरण मिलते हैं. *बावज़ूद, मजबूर, जज़्बात, दर्ज, दर्ज़ी, जुर्माना, मजाल, मिज़ाज.* यह प्रवृत्ति हिंदी के शब्दों में भी कहीं-कहीं देखी जा सकती है जैसे *आज, कामकाज, लजाना* आदि. शब्दों में विदेशीपन का अहसास इसका कारण हो सकता है.

/फ/ → /फ़/ के उदाहरण सामान्य स्वन परिवर्तन के भी हो सकते हैं, अतिसुधार के भी. स्वन परिवर्तन सामान्य रूप से अधिक लोगों द्वारा अपनाया जाता है; अतिसुधार कुछ ही लोगों में दोष के रूप में दिखायी पड़ता है. स्वन परिवर्तन प्रायः स्वन व्यवस्था में परिवर्तन करने वाला होता है और प्रायः शब्द के किन्हीं स्थानों में ही दिखायी पड़ता है, अतिसुधार ऐसी सीमा नहीं मानता. इस प्रवृत्ति के बारे में हिंदी में और शोध करने की ज़रूरत है.

अतिसुधार की प्रक्रिया भाषा में तभी प्रारंभ होती है, जब भाषा की रचना में वह तत्त्व पहले से हो. अर्थात /ज़/ की उपस्थिति के अभाव में यह अतिसुधार ही संभव नहीं था. इस कारण हम मान सकते हैं कि हिंदी में /ज़/ विद्यमान है.

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिंदी में कुछ नये स्वन आये हैं. उन्हें लिपि चिह्न द्वारा दिखाने या न दिखाने की बात हमें आज तथा कल की स्थिति को ध्यान में रख कर सोचनी होगी. मैं सोचता हूँ कि जो स्वन भाषा का अंग बन जाते हैं, जिन्हें लिखना सुगमता की दृष्टि से भाषा के लिए अनिवार्य है और जिनका भाषा की संरचना में निश्चित स्थान है, उन स्वनों को अपनाना ही चाहिए. इस दृष्टि से /ज़/ तथा /फ़/ योग्य उम्मीदवार हैं, /ख़/ भी जल्दी हार मानने वाला नहीं है. /ग़/ दौड़ में बहुत पीछे है और शायद अंत तक न पहुँचे. /क़/ तो अभी से किनारे बैठ गया है.

विधि 1. श्रोता को कोई काम करने की आज्ञा, आदेश या सुझाव देते हैं, तो क्रिया विधि अर्थ में आती है. विधि के शब्द का चयन मध्यम पुरुष सर्वनाम के अनुसार होता है. *तू जा, तुम जाओ, आप जाइए.* इन तीन के अलावा और भी कुछ रूप हैं—*जाइयो, जाना, जाइएगा* और इन सर्वनामों के साथ इनके और भी संयोजन (combinations) मिलते हैं, जिन्हें आगे की तालिका में देख सकते हैं—

तू	तुम	आप
आ	आओ	आइए
आना	आना	आना, आओ
आइयो	?आइयो	आइएगा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. विधि शब्दों की रूप रचना–धातु में सर्वनाम के आगे उल्लिखित रूप लगते हैं.

तुम	ना	(*जाना, करना, देखना, देना*)
	ओ	(*करो, आओ, देखो, जाओ, पढ़ो*)
		('ले, दे' के अंतिम स्वर का लोप होता है–*लो दो*)
आप	इए, इएगा	(*आइए, कहिए, सुनिए, आइएगा, लिखिएगा*) /इए, इएगा/ से पहले कुछ क्रिया धातुओं में रूप परिवर्तन होते हैं. कर→की, ले→ली, दे→दी. ईकारांत प्रातिपदिक और विधि रूप के बीच /ज/ का आगमन होता है. *कीजिए, पीजिए, दीजिए, लीजिए, ?सीजिए.*
तू	$\emptyset$	(*कर, देख, पढ़, लिख, आ, जा कर, ले, दे*)
	इओ	(*आइयो, देखियो, उठियो, लाइयो, सुनियो*) /इयो/ से पहले /की ली दी पी/ आने पर सिर्फ़ /जो/ रह जाता है. *कीजो, दीजो, लीजो, ?सीजो.*

3. विधि के कुल छह शब्द हैं और लगभग दस संयोजन. इनमें कौन-से सही प्रयोग हैं, प्रयोगों में अंतर क्या है, इसके बारे में देखेंगे. इन शब्दों के बारे में वैयाकरणों में मतभेद दिखायी पड़ता है. केलाग *आना, आइएगा* को तुरंत अनुपालन वाले आज्ञा के शब्द नहीं मानते. आर्येंद्र शर्मा *आना* को भविष्य आज्ञा और *आइएगा* को आदरयुक्त आज्ञा मानते हैं. धनेश जैन (1975) एक ही सर्वनाम के साथ आने वाले ऐसे विधि के शब्दों में कोई आदर आदि सामाजिक अर्थ का अंतर नहीं मानते. इनके अनुसार केलाग की परंपरा में *तुम जाओ, तुम आना* में व्यापार के समय का अंतर है. अपनी बात स्पष्ट करने के लिए आपने पूर्वापर क्रम वाले दो वाक्य लिये हैं और सिद्ध किया है कि पूर्वापर व्यापारों में *आना-आओ* का क्रम नहीं मिलता है. *काम कर लो, तब मेरे पास आना.* *पहले *नहाना, फिर खा लो.* लेकिन ऐसे वाक्य भी हैं जिनमें दोनों में *-ना* रूप आते हैं–*पहले नहा लेना, फिर खाना खाना.* जैन ने स्पष्ट किया है कि वे ऐसे वाक्यों की चर्चा नहीं कर रहे हैं.

3.1. अपनी चर्चा से पहले मैं यह मान कर चलता हूँ कि हर सर्वनाम के साथ दो-दो विधि के शब्द हैं.

तू	आ	आइयो
तुम	आओ	आना
आप	आइए	आइएगा

इनमें शर्मा के अनुसार आदर का भाव भी है, जैन के अनुसार क्रियाओं के पूर्वापर क्रम वाली बात भी है. और न ही इन बातों में कोई अंतर्विरोध है. हिंदी की इस

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समस्या का हल तथा समर्थन मुझे गुजराती में मिला. वहाँ भी विधि के दो रूप हैं–तुं कर/करजे, तमे करो/करजो. इन दोनों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष विधि कह सकते हैं. अगर किसी व्यक्ति से निश्चित रूप से कोई काम कराना हो, तो प्रत्यक्ष विधि का इस्तेमाल करेंगे. जैसे *तुम यहाँ आओ, यह कागज उठाओ और ऊपर रखो.* व्यवहार के स्तर पर श्रोता सुन कर तुरंत अनुपालन करेगा और कहे अनुसार सारा काम करेगा. या वह प्रत्यक्ष रूप से काम करने से इनकार कर देगा या न करने के बारे में कोई प्रतिवक्तव्य देगा. जहाँ प्रत्यक्ष तथा तुरंत अनुपालन अपेक्षित नहीं है और श्रोता को वह व्यापार सुझाव के तौर पर बताया जाता है, तो अप्रत्यक्ष विधि का प्रयोग होता है. *आ, आओ, आइए* प्रत्यक्ष विधि है. *आइयो/आना/आइएगा* अप्रत्यक्ष विधि है. अप्रत्यक्षता *फिर कभी, समय मिले तो* आदि वाक्यांशों से स्पष्ट हो सकती है. *फिर कभी आना, ?फिर कभी आओ.*

3.1. जैन के प्रस्ताव के अनुसार इनमें समय वाली बात नहीं है. वाक्यों में संदर्भ के अनुसार व्यापार क्रम में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भी आ सकते हैं. *फिर आइएगा कभी. हाँ, आएँ, तो मेरी किताब ज़रूर लेते आइए.* न ही शर्मा (1958) के अनुसार *आइएगा* भविष्य काल में विधि है, अप्रत्यक्ष विधि होने के कारण यह भविष्य-सा लगता है. लेकिन हम कह सकते हैं–*देखो, अगले महीने पंद्रह तारीख़ को मेरे यहाँ आओ. अच्छा भाई, जाओ. कल-परसों ~जल्दी आना.*

3.2. जैन केलाग के मत का खंडन करते हुए बताते हैं कि दोनों प्रकार की विधि के शब्दों में भेदक कारक आदर जैसी कोई बात अब नहीं है. वास्तव में बात कहीं से कहीं घूम गयी. अगर घर में कोई आता है, तो हम *आइए. पधारिए* कहते हैं. न यहाँ अनादर है, न *आइएगा* के प्रयोग की छूट है. लेकिन प्रत्यक्ष आदेश से सुझाव अपने आप में अधिक अनुनय वाला होगा ही. प्रयोग की दृष्टि से कई ऐसे संदर्भ आते हैं, जहाँ दोनों ही विधि शब्दों का प्रयोग मिलता है. होटल में जा कर बैठते ही बैरा आता है और आगंतुक कहता है *दो दोसे ले आना. हाँ, पानी भी लाना.* 'लाओ' की जगह 'लाना' का प्रयोग भाषिक कारण से नहीं, अन्य मानसिक कारणों से ही है. शायद वक्ता कम आदेश की दृष्टि से अप्रत्यक्ष का प्रयोग करता है. रास्ता जानने के लिए किसी अपरिचित से कोई कह सकता है *भाई साहब, ज़रा सुनना.* उलटे *अरे भाई, सुनो* हम उस व्यक्ति से कहेंगे जो स्तर से नीचा हो और इस वाक्य का बुरा न माने. इसी तरह छोटे बच्चों से कह सकते हैं–*ए लड़के, ज़रा सुनियो.* ए लड़के, सुन तुलना में निश्चित रूप से अनादर सूचक है या आप का उस व्यक्ति पर अधिकार दर्शाता है. *कीजिए* अपने आप में आदर सूचक है, अतः ऐसे प्रसंगों में उसकी जगह *कीजिएगा* का प्रयोग

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं दिखायी पड़ता. ?*ज़रा सुनिएगा*. 'कीजिएगा' स्पष्ट रूप से अप्रत्यक्ष ही है.[1]

4. प्रत्यक्ष विधि के साथ निषेधात्मक शब्द *मत* आता है और अप्रत्यक्ष विधि में न (देखें **न नहीं मत ना**). लेकिन अप्रत्यक्ष में भी निषेध का स्तर कठोर हो, तो इसे *कभी छूना मत*. *फिर कभी इधर आइयो मत* जैसे प्रयोग भी मिलते हैं.

5. विधि से संयोजनों में समस्या है *तू आना, आप आना, आप आओ*. **सर्वनाम** में हमने *आप आओ* के प्रयोग के दो कारण बताये. *आप आओ* अमानक प्रयोग है और जहाँ यह चलता है, वहाँ *आप आना* भी चल सकता है. *आप आना* भी अमानक प्रयोग है. *आना* वास्तव में क्रियार्थक संज्ञा है और सुझाव के तौर पर हम सिर्फ़ संज्ञा का उल्लेख करते हैं. मैं सोचता हूँ कि 'तू' के साथ इसका प्रयोग संभव होगा (*तू जल्दी आना*), क्योंकि आइयो का प्रयोग एक सीमित क्षेत्र (दिल्ली, आगरा के आस-पास) में ही मिलता है.

विभक्ति परंपरात्मक व्याकरण में विभक्ति का अर्थ सुनिश्चित है—आठ या छह कारकों को व्यक्त रूप में दिखाने वाले रूप. संस्कृत में विभक्ति प्रत्यय थे, जो शब्द का अंग बनकर आते थे. ये प्रत्यय स्वतंत्र रूप नहीं थे. हिंदी में प्रयुक्त ने, में, से, को, पर आदि को वैयाकरण विभक्तियाँ कहते हैं, विभक्ति प्रत्यय नहीं. संस्कृत में विभक्ति तथा विभक्ति प्रत्यय में कुछ हद तक अंतर किया जाता है. वहाँ तीसरी तथा चौथी विभक्तियों में कुछ रूप समान मिलते हैं. अतः प्रत्यय की चर्चा किये बिना तृतीया विभक्ति और चतुर्थी विभक्ति का उल्लेख किया जाता है. इस अर्थ में कारक तथा विभक्ति में भी पृथकता रखी गयी है. कारक

[1]मंजु गुप्ता ने व्यक्तिगत चर्चा में उल्लेख किया कि लखनऊ की भाषा में इस अवसर पर भी सामान्य रूप से -गा युक्त विधि के शब्दों का प्रयोग होता है. जैसे चाय पीते समय 'लीजिएगा', बुलाने के लिए 'सुनिएगा', माँगते समय 'दीजिएगा' आदि का प्रयोग सहज है. यद्यपि मैंने 'आप' के साथ प्रत्यक्ष स्थिति में -गा को अनावश्यक कहा है, अधिक अनुनय की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता. और लखनऊ भाषा की नफ़ासत के लिए मशहूर है ही.

आपने यह भी सूचना दी कि -गा वाला एक और रूप मिलता है, जो कुछ क्रियाओं में बहुत प्रयुक्त है. लेकिन यह अप्रत्यक्ष विधि नहीं है, बल्कि एक प्रकार का वृत्तिसूचक है. यह प्रश्न के रूप में आता है, लेकिन प्रश्न भी नहीं है. इसके उदाहरण हैं—'ऐसे लोगों के साथ आप क्या कीजिएगा' (=आप कुछ नहीं कर सकते), 'कब तक देते रहिएगा' (=देते नहीं रह सकते), 'कहाँ तक गिनाइएगा' (=गिना नहीं सकते). हिंदी में यद्यपि 'क्या कहने' आदि आश्चर्य प्रकट करने वाली उक्तियाँ मिलती हैं, मैं यह जान नहीं पाया हूँ कि ऊपर वाली उक्ति 'तुम···करना' के साथ भी मिलती है या नहीं. '?ऐसे लोगों के साथ तुम क्या करना' (=कुछ नहीं कर सकते). अगर नहीं मिलती हो, तो क्या कारण है और -गा के इस विशेष प्रयोग का आधार क्या है ? मेरे पास अभी उत्तर नहीं है; शायद मंजु जी ही उत्तर दे सकें.

मंजु गुप्ता ने -गा वाले रूप का एक और प्रयोग बताया. 'क्या आप और लेंगे' के अर्थ में 'और लीजिएगा ?' आदि प्रश्न बनते हैं. 'कहाँ जाइएगा, कितने दिन वहाँ रुकिएगा, कैसे आइएगा' आदि प्रश्न 'जाएँगे' आदि से प्रयोग की दृष्टि से कैसे भिन्न हैं, यह और विवेचन का विषय है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छह ही हैं, लेकिन संबंध तथा संबोधन विभक्तियाँ हैं (क्रमशः षष्ठी और संबोधन). हिंदी में इस अर्थ में भी लोग प्रथमा विभक्ति, द्‌वितीया विभक्ति आदि का प्रयोग करते हैं.

गुरु इन दोनों ही अर्थों में विभक्ति का प्रयोग करते हैं. वे कहते हैं कारक सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम से आगे जो प्रत्यय लगाये जाते हैं. वे विभक्तियाँ हैं. शायद इसी मान्यता के कारण वे *हे, अजी, अहो, अरे* को संबोधन कारक की विभक्तियाँ मानते हैं. दूसरी तरफ़ कहते हैं कि एक विभक्ति चार-चार कारकों में आती है (रूप भले एक हो, चार कारकों में चार [एक जैसी] विभक्तियों की बात होनी चाहिए).

वाजपेयी हिंदी में छह कारक मानते हैं और इन कारकों के लिए प्रयुक्त ने, को, से आदि को विभक्ति मानते हैं. आप संबंध कारक रूप 'का, के, की' को विभक्ति नहीं मानते. आपके हिसाब से ये संबंधसूचक प्रत्यय हैं, लेकिन *राम के लड़का हुआ* में के विभक्ति है (किस कारक की ?). स्पष्ट है कि वाजपेयी बहुत दूर तक संस्कृत के व्याकरण से प्रभावित हैं.

संस्कृत में कारक तथा विभक्ति में एक और अंतर किया जाता है. संज्ञा शब्द कारक लेते हैं, लेकिन विशेषणों का कोई कारक नहीं है. ये सिर्फ़ संज्ञा शब्दों से अन्विति दिखाते हैं. विशेषण शब्दों में अन्विति के कारण संज्ञाओं के समान विभक्तियाँ लगती हैं. *मधुरं फलं, मधुराणि फलानि, मधुरे फले.* लेकिन हिंदी में कोई भी विशेषणों की विभक्तियों की चर्चा नहीं करता. विशेषण तो सिर्फ़ लिंग-वचन के प्रत्यय लेते हैं. इस भिन्न विश्लेषण का कारण यही है कि संज्ञा शब्दों में कारकों के अनुसार विभक्ति का अंगांगी संबंध नहीं है. ये विभक्तियाँ, जिन्हें हम इस ग्रंथ में परसर्ग कहेंगे, स्वतंत्र रूप से व्यवहृत होती हैं. इन संबंधित प्रकरणों को भी देखिए–**परसर्ग, कारक.**

हम कह सकते हैं कि हिंदी में विभक्ति नामक विषय की आवश्यकता नहीं है. कारक तथा प्रयोग की दुहरी व्यवस्था के कारण बात सुलझती नहीं, बल्कि और उलझती है. परंपरा के आधार पर हम कारक की व्याख्यात्मक परिभाषा देते हैं कि कारक से कर्ता, कर्म आदि का पता चलता है. कर्ता, कर्म आदि स्वयं ही निश्चित प्रत्यय (concepts) नहीं हैं. कारकों में संज्ञा के रूप परिवर्तन पर विचार नहीं कर पाते. दूसरी तरफ़ विभक्ति का प्रत्यय (concept) कारक से हट-सा गया है. अब हम करण कारक की विभक्ति की जगह 'से' विभक्ति की बात करते हैं, फिर कारक और विभक्ति में संबंध जोड़ने का यत्न करते हैं. एक उदाहरण गुरु के संबंध में ऊपर देखा. वाजपेयी के अनुसार 'से' विभक्ति का कर्ता, कर्म, करण, अपादान कारकों मे तथा 'कारक' से भिन्न अन्य संदर्भों में प्रयोग होता है. फिर आप के अनुसार 'कर्म' कारक से के उदाहरण लीजिए–*मोहन राम से*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लड़ता है. माँ लड़के से सौदा मँगवाती है. दोनों भिन्न प्रकार के वाक्य और कुल मिलाकर सीखने वाले की मौत. वैयाकरण सीखने वालों को कितना गुमराह करते हैं देखिए. पहले कारक और विभक्ति में संबंध, फिर इसी का निषेध ('कर्ता' से, 'कर्म' से, 'करण' से आदि), फिर हर वर्ग के मनमाने उदाहरण. शायद उद्देश्य यही है कि परंपरा का हर प्रकार से निर्वाह करते हुए हिंदी उदाहरण गिना दिये जाएँ. अच्छा यह हो कि उपयोगी न दिखे तो विभक्ति के सिद्धांत को छोड़ दिया जाए. मेरे हिसाब से यह उपयोगी नहीं है, भ्रमात्मक है.

विलोमार्थी उपसर्ग 1. नकारात्मक या विलोम के अर्थ में प्रयुक्त कुछ उपसर्गों के प्रयोग की विशेषता की यहाँ चर्चा की जा रही है. संस्कृत मूल के *नि, अ* तथा उर्दू मूल के *ला, बे, ना* उपसर्ग हैं, जो शब्दों में विलोमार्थ पैदा करते हैं. इनके प्रयोग की कुछ सामान्य विशेषताएँ हैं, जिन्हें हर उपसर्ग के संदर्भ में देखेंगे.

निः संधि नियमों के अनुसार /*निः निस् निश् निर् नी*/ आदि सहरूपों से प्रकट होने वाला यह उपसर्ग केवल संज्ञाओं में जुड़ता है और व्युत्पन्न शब्द विशेषण होता है. *निरपराध, निरुपाय, निरुद्देश्य, निर्दोष, निर्भय, निर्जन, निष्पाप, निष्कलंक, निष्काम, निस्सीम, निश्शब्द* कुछ उदाहरण हैं. इन विशेषणों को फिर संज्ञा बनाने के लिए /ता/, /य/ काम आते हैं, जो कुछ ही शब्दों में लगते हैं. *निर्जनता, निर्भयता.* चूँकि ये शब्द अपने में ही विशेषण हैं, *निरपराधी* या *निर्दोषी* अनावश्यक हैं. *निर्वात* (हवा रहित स्थिति) विशेषण है और इसका वैक्यूम के लिए प्रयोग गलत है. सही प्रयोग है *निर्वात्य.* नये प्रयोगों तथा तद्भव शब्द रचना पर भी यह बात लागू होती है. *निडर, निडरता* द्रष्टव्य हैं. निः 'बाहर' से व्युत्पन्न शब्दों पर यह बात लागू नहीं होगी (*निर्गमन, निर्वाह, निर्धारण*). निः लगने पर संज्ञा के अंतिम (अ इतर) स्वर का लोप हो जाता है. *निष्प्रभ* (<प्रभा), *निर्भ्रांत* (<भ्रांति), *निस्सीम* (<सीमा) थोड़े-से उदाहरण हैं.

अ यह संज्ञा, विशेषण दोनों के साथ आता है (*असुंदर, अधीर, असाधु*). कुछ शब्दों में यह संज्ञा को विशेषण में नहीं बदलता (*अनिच्छा, अनादर, अधैर्य*), लेकिन कुछ में बदलता है (*अनेक, अनुपम, अकारण, अबोध, अमूल्य, अकाल, असार, अबोध*). हिंदी में क्रिया धातुओं के साथ अ~अन आते हैं और विशेषण बनाते हैं–*अपढ़~अनपढ़, अजान~अनजान.* लेकिन हिंदी में एक विशेषता है. अनजान आदि शब्द व्यक्ति की ओर इंगित करते हैं, कर्म की ओर इंगित करने वाले शब्दों में अन- ही लगता है–*अनदेखा काम, अनबूझा सवाल, अनसुनी/अनकही बात* आदि. हिंदी में *अनबन* (<धातु संज्ञा 'बन') स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है. संज्ञा शब्दों में /अन/ विशेषणों की रचना करता है–*अनमोल, अनमना* ('आ' की चर्चा आगे /बे/ में देखें).

बे यह संज्ञा शब्दों के साथ विशेषण की रचना करता है. यह बात उर्दू के शब्दों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के संदर्भ में निरपवाद है. बेहद, बेजार, बेताब, बेगुनाह, बेजान, बेहोश, बेपनाह, बेईमान, बेअदब, बेवकूफ़ी, बेकसूर. पुनः संज्ञा बनाने के लिए इन शब्दों में /ई/ लगता है. बेईमानी, बेहोशी, बेताबी, बेवकूफ़ी, बेअदबी. जब /बे/ हिंदी के शब्दों के साथ आता है, वहाँ रचना तथा अर्थ की दृष्टि से विविधता दिखायी पड़ती है. बेसुर अपने में पर्याप्त होना चाहिए, लेकिन इसमें /आ/ जोड़ कर विशेषण बेसुरा बनाया जाता है. बेसुरा राग (*बेसुर राग). संकर शब्द होने के कारण यह स्थिति है. हमने ऊपर देखा कि अन+धातु के शब्दों में /आ/ जुड़ता है. संज्ञाओं में *अनमना* में /आ/ आता है. दोनों स्थानों में आकारांत विशेषण की प्रयोग सुगमता ही शायद इसका कारण है. इस संदर्भ में बेपढ़ा भी देख सकते हैं. बेमन संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है—*वह बेमन से काम कर रहा है* (?*वह बेमन काम कर रहा है*).

ला यह भी संज्ञाओं के साथ विशेषण की रचना करता है. *लाजवाब, लाइलाज* (मर्ज़), *लापता, लावारिस* आदि.

ना यह विशेषणों के साथ ही आता है. *नालायक, नापसंद, नागवार* (<*गवारा*), *नाबालिग*.

यह स्पष्ट है कि ये उपसर्ग मूल भाषाओं में (तथा इनसे गृहीत शब्दों में) अधिक नियमित रूप से प्रयुक्त होते हैं. जब हिंदी भाषा ने इन्हें शब्द रचना के लिए अपनाया, तो प्रयोग-विषमता आ गयी.

2. अगर उपसर्ग न लगें, तो संज्ञा से /ई/ प्रत्यय से *दोषी, अपराधी, जानी, जवाबी* आदि विशेषण बनते हैं. तुलना कीजिए—

संज्ञा	**विशेषण**
दोष	दोषी
?	निर्दोष
जवाब	जवाबी
! लाजवाबी	लाजवाब

विविध, विभिन्न 1. दोनों शब्दों का शाब्दिक अर्थ (व्युत्पत्ति के अनुसार) क्रमशः है—'कई प्रकार (विध) के' और 'अलग-अलग या भिन्न प्रकार के'. इनका अलग-अलग (यानी 'विभिन्न') संदर्भों में प्रयोग करना ही उचित है. *विविध स्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार · · ·; भारत में पोशाक की विविधता दिखायी पड़ती है; पूर्व और पश्चिम की जीवन-पद्धतियों की यह विभिन्नता · · ·*.

2. *विभिन्न* का पर्याय *भिन्न-भिन्न* है (देखें **पुनरुक्ति**). *विभिन्नता* का प्रयोग कई बातों या वस्तुओं के बीच भिन्नता का द्योतक है; जहाँ सिर्फ़ दो ही बातों में अंतर दिखाना हो, तो वहाँ *भिन्न* शब्द पर्याप्त है. *इन दो भिन्न संस्कृतियों के बीच मेल · · ·*. *कई विभिन्न संस्कृतियों के बीच · · ·*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. यद्यपि *विविध* और *विभिन्न* में ही 'प्रकार' का अर्थ निहित है, फिर भी प्रायः प्रकार जोड़ा जाता है. *विविध प्रकार से, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ.* लेकिन *नानाविधि* में प्रकार नहीं जोड़ा जाता.

विश्व, राष्ट्र, देश 1. विश्व का अर्थ है संसार के सभी राष्ट्रों का या सभी राष्ट्रों से संबंधित, न कि कुछ ही देशों से संबंधित. इस अर्थ में *विश्व* स्वतंत्र रूप में तथा कई शब्द संयोगों में प्रयुक्त होता है. *वे विश्व भर में प्रसिद्ध हो गये थे. सारा विश्व उन्हें अपना मानता है. विश्वनेता, विश्वमानव, विश्व सम्मेलन, विश्व भाषा, विश्व यात्रा* आदि शब्द इसी संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं. *विश्वविद्यालय* से तात्पर्य है ऐसा विद्यालय, जिसके अध्ययन का क्षेत्र क्षेत्रीय या स्थानीय न हो, बल्कि जिसमें सभी संभव विषयों का समावेश हो. *विश्वकोश* ऐसा ग्रंथ है, जिसमें समस्त उपलब्ध ज्ञान का आकलन हो. 'विश्व' का एक या कई एक राष्ट्रों से संबंध नहीं है.

2. *राष्ट्रीय* एक राष्ट्र से संबंधित है. *अंतरराष्ट्रीय* दो या अनेक राष्ट्रों के बीच के या आपस के संबंधों का द्योतक है. विश्व न्यायालय सारे विश्व के लिए बना है और यह अंतरराष्ट्रीय मामलों में कानूनी सलाह देता है. हिंदी एक विश्व भाषा है, क्योंकि यह एक राष्ट्र की सीमा से परे अधिक देशों में बोली जाती है; यह अभी अंतरराष्ट्रीय भाषा नहीं है क्योंकि एक से अधिक राष्ट्रों के बीच हिंदी का प्रयोग नहीं होता. आगे के दो वाक्य देखिए—*भारत कई अंतरराष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका है. इस वर्ष भारत को हाकी में विश्वकप प्राप्त हुआ है.*

3. देश अधिकतर भौतिक संकल्पना है, राष्ट्र आधुनिक राजनीतिशास्त्र की संकल्पना है. *भारत देश 1947 से पहले पराधीन था. भारत देश हमारा है.* आधुनिक राजनीतिक संदर्भ में भारत एक राष्ट्र है. अब हम *राष्ट्रगान, राष्ट्रभाषा,* राष्ट्रध्वज आदि की बात करते हैं. इस देश में कुल 23 प्रदेश हैं. स्वतंत्रता से पहले यह देश अनेकों टुकड़ों में बँटा हुआ था और हम एक राष्ट्र में नहीं बँधे थे. वे टुकड़े कहीं 'देश' कहलाते थे, कहीं 'राष्ट्र'. शायद यही कारण है कि अब ये शब्द प्रदेश के अर्थ में कई भारतीय भाषाओं में प्रचलित हैं. तेलुगु भाषी 'आंध्र राष्ट्रम' का उल्लेख करता है, केरल वाला 'केरल देशम' का. कई भाषाओं में प्रदेश को 'देश' ही कहा जाता है.

विसर्ग हिंदी में विसर्ग केवल संस्कृत से आये शब्दों में आता है, देशज या विदेशी शब्दों में नहीं, संस्कृत में संज्ञा शब्दों के मूल रूप विसर्ग युक्त होते थे, जिन्हें वैकल्पिक रूप से <स्> से भी लिखा जाता था. *मनः~मनस्.* हिंदी भाषा में ये शब्द बिना इस स्वन-गुण के गृहीत हुए हैं. आगे हिंदी शब्द तथा मूल संस्कृत रूप (कोष्ठकों में) दिये गये हैं. *मन* (मनः), *नभ* (नभः), *तप* (तपः), *तम* (तमः), *सिर*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(शिरः), *यश* (यशः). यद्यपि हम इन्हें बिना विसर्ग के लिखते हैं, **संधि** में विसर्ग की उपस्थिति का पता चल जाता है. अन्य शब्द, जिनमें विसर्ग हैं और जो विसर्ग के साथ हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, क्रियाविशेषण या प्रकार्यात्मक शब्द हैं. *अतः, पुनः, प्रायः* तथा *-तः* के योग से बने शब्द *वस्तुतः, पूर्णतः* आदि.

प्रातः संस्कृतनिष्ठ शैली का शब्द है और प्रायः *प्रातःकाल* के रूप में प्रयुक्त होता है. संस्कृत का 'दुःख' अब हिंदी में दुख बन गया है. इनके अलावा हिंदी में शब्द मध्य में कहीं विसर्ग नहीं है. शब्दांत विसर्ग का उच्चारण /ह/ के समान है, लेकिन शब्दांत /ह/ विसर्ग से लिखा नहीं जा सकता. अपनी भाषा की आदत से हिंदी भाषी <पुनः> को /प उ न अ ह/ बोलता है, दक्षिण का छात्र /प उ न अ ह अ/. देखें **शब्दांत <अय अव अह>**.

वृत्तिसूचक क्रियाएँ (modals) हिंदी में *लग, सक, चुक, पा* चार वृत्तिसूचक क्रियाएँ हैं. अंग्रेज़ी में भी वृत्तिसूचक क्रियाएँ हैं, लेकिन दोनों भाषाओं में ये क्रियाएँ एक-सी नहीं हैं. फिर भी इन चारों क्रियाओं को कुछ समानताओं के कारण हम एक वर्ग में रखना चाहेंगे और रचना-साम्य के कारण इन्हें वृत्तिसूचक कहेंगे.

1. क्रिया वाक्यांश विस्तार जिन शब्दों से होता है उनमें वृत्तिसूचक क्रियाओं का महत्त्व है. ये क्रिया व्यापार की कुछ अवस्थाएँ बताती हैं. *लग* से व्यापार के आरंभ, *चुक* से समाप्ति, *सक, पा* से व्यापार करने की क्षमता का पता चलता है.

2. क्रिया वाक्यांश विस्तार के कई प्रकार हैं—निरंतरतासूचक, कृदंत, रंजक क्रिया, रहा तथा वृत्तिसूचक क्रिया. इनमें कोई वर्ग दूसरे से नहीं जुड़ता; यहाँ तक कि दो वृत्तिसूचक क्रियाएँ भी एक साथ नहीं आतीं. *लग, चुक* के साथ *नहीं* नहीं आता. समान अर्थ की वाक्य रचना भिन्न होती है.

वह काम कर चुका है=उसने काम नहीं किया है.

**वह काम नहीं कर चुका है.*

वह काम करने लगा है=उसने काम शुरू नहीं किया है.

**वह काम नहीं करने लगा है.*

4. इनमें काल और पक्ष के रूप में विविधता है. तात्पर्य यह है कि ये रूप सब जगह सभी कालों तथा पक्षों में नहीं आते. इसे विस्तार से संबंधित प्रकरणों में देखें.

5. *पा* के अलावा अन्य वृत्तिसूचक क्रियाओं के साथ *रहा* नहीं आता. इसी तरह केवल *पा* के साथ *ने* आता है. मेरा मत है कि *मैंने कर पाया* आदि आधुनिक प्रयोग अवांछित हैं.

वेश, वेष ये दोनों रूप प्रचलित हैं. लेकिन 'वेशभूषा' में वेष नहीं आता. हिंदी में वेश

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का प्रचलन अधिक है. भेस क्षेत्रीय प्रयोग है.

व्यंग्य 1. व्यंग्य (Sarcasm) वह उक्ति है, जहाँ व्यक्ति अव्यक्त रूप से अपना आशय प्रकट करता है. कही हुई बात का प्रसंग से भिन्न अर्थ व्यंजित करने के कारण इसे व्यंग्य कहा जाता है. जब किसी आम आदमी को *महात्मा*, अज्ञानी व्यक्ति को *बृहस्पति* कहते हैं, वहाँ व्यंजना से हम छिपा हुआ विपरीत, लेकिन सोचा हुआ अर्थ प्रकट करते हैं. उक्ति का अभिधार्थ भिन्न है और निहितार्थ भिन्न. इन दोनों अर्थों में बहुत अंतर हो, तो श्रोता निहित अर्थ को समझ लेता है और वक्ता के व्यंग्य में बोलने का तात्पर्य समझ जाता है. तुकबन्दी करने वाले कवि से कोई कहे *आप तो तुलसीदास हैं*, तो वह व्यंग्य समझ जाता है. (जब तक कि वह इतना बौड़म न हो कि बात न समझ सके; या उसमें इतनी आत्म-प्रवंचना हो कि वह इसे सच्चा मान ले, तो दूसरी बात है.) यह तीखा व्यंग्य है. अगर दोनों अर्थों में अधिक अंतर न हो, तो वह व्यंग्य न समझ कर इसे अपनी प्रशंसा समझ लेता है. किसी असफल लेखक से कहें *आप तो बहुत अच्छा लिखते हैं, आप में प्रतिभा है*, तो वह प्रायः इसे अपनी प्रशंसा समझता है. यह सूक्ष्म व्यंग्य है. तीखे व्यंग्य में व्यक्ति श्रोता पर अपना निहितार्थ प्रकट करता है, क्योंकि उसका उद्देश्य दिल दुखाना होता है. सूक्ष्म व्यंग्य में व्यक्ति अपने मंतव्य की अभिव्यक्ति करता है, लेकिन दिल दुखाना उसका उद्देश्य नहीं है. वह अपना मंतव्य प्रायः श्रोता के अलावा अन्य व्यक्तियों पर प्रकट करता है, जो उसका क्षोभ, अप्रसन्नता आदि समझ सकें. इस दुहरे उद्देश्य के कारण व्यंग्य भाषा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है.

2. **गाली** तीखे व्यंग्य की तरह चुभती उक्ति है. लेकिन गाली का अर्थ प्रच्छन्न नहीं होता. व्यंग्य भाषा की अन्य अभिव्यक्तियों की तरह सामान्य उक्ति है, गाली के शब्द दुहरी प्रतीकात्मकता लिये होते हैं. गाली के शब्दों की सूची बनायी जा सकती है. व्यंग्यार्थ सामान्य उक्तियों में प्रसंग से व्यक्त होता है. भाषा में व्यंग्य के शब्द अलग नहीं होते. यहाँ तक कह सकते हैं कि कुछ मिथिक चरित्रों के अलावा व्यंग्य का कोई शब्द ही नहीं होता. ये चरित्र भी सांस्कृतिक संदर्भ के कारण ही व्यंग्यार्थ व्यक्त करते हैं. जब किसी से कहते हैं *तुम बड़े होशियार हो*, उक्ति में ऐसा कुछ नहीं है, जो इसे व्यंग्य बनाए. अन्य श्रोता इसे सामान्य उक्ति समझ सकते हैं. उस व्यक्ति में ज्ञान की कमी का पूर्वज्ञान ही छिपे अर्थ का आधार है. यही पूर्वज्ञान व्यंग्यार्थ की अभिव्यक्ति में सहायता करता है. व्यंग्यार्थ की अभिव्यक्ति में अत्युक्ति भी काम आती है. मालिक अपने सुस्त नौकर से पूछता है—*कल तक आ जाओगे न ?* यहाँ व्यंग्यार्थ अत्युक्ति के कारण है, क्योंकि दोनों जानते हैं कि बाज़ार जाने-आने में सिर्फ़ 15 मिनट लगते हैं. यही अत्युक्ति निम्न उदाहरण में भी दिखायी पड़ती है—

अबोध नौकर : *मालिक यह बक्सा कहाँ रखूँ ?*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मालिक : मेरे सर पर रख दो.

सिर पर बक्सा नहीं रख सकते, यह अत्युक्ति है. व्यंग्यार्थ को समझने में नौकर के अज्ञान का ज्ञान काम आता है. अधिक अत्युक्ति में यह तीखा व्यंग्य हो जाता है और पूर्वज्ञान के अभाव में भी निहितार्थ प्रकट करता है. प्रसंग से विपरीत कथन भी व्यंग्यार्थ प्रकट करता है. अगर बच्चा मना करने पर भी ठंडा पानी पिए और उसे बुख़ार हो जाए, तो पिता व्यंग्य में कहता है *आइसक्रीम खा लो, ठीक हो जाएगा.* पहले से मना करने के संदर्भ में यह विपरीत आचरण की उक्ति व्यंग्यार्थ प्रकट करती है.

2.1. गाली और व्यंग्य में एक और प्रमुख अंतर है. गाली में बड़े को छोटा बताया जाता है, व्यंग्य में छोटे को बड़ा. जो शब्द पहले ही तिरस्कृत, निकृष्ट, निम्न अभिधार्थ प्रकट करते हैं, वे गाली ही बन सकते हैं, उनसे व्यंग्यार्थ नहीं प्रकट हो सकता.

3. कुछ व्यंग्यार्थक शब्द रूढ़ बन जाते हैं. मित्रों में *गुरु, ख़लीफ़ा, हज़रत, महाराज* आदि संबोधन व्यंग्य सूचित करते हैं. वास्तविक गुरु संबोधन में गुरु जी हैं; दोस्तों में परस्पर गुरु रूढ़ व्यंग्य शब्द है. यहाँ प्रसंग से छिपा अर्थ प्रकट नहीं होता. वह निरर्थक-सा संबोधन है, कहीं तकिया कलाम है.

स्कूल के अध्यापक को *प्रोफ़ेसर* कहना, पुलिस के सिपाही को *दरोगा जी* कहना, अपरिचितों को *अज़ीज़ दोस्त* कहना हमेशा व्यंग्य नहीं होता. यहाँ अत्युक्ति है, जो सुनने वाले को प्रसन्न करने के उद्देश्य से प्रयोग में आती है. ये शब्द भी रूढ़ होते हैं.

व्यंजन गुच्छ 1. व्यंजन गुच्छ उन दो या अधिक व्यंजनों को कहेंगे, जो एक अक्षर में स्वर से पहले या बाद में आते हों और जिनके बीच अक्षर की सीमा न हो. स्वर के साथ इनके स्थान के आधार पर ये आदि या अंत गुच्छ कहलाएँगे. ये शब्द या अक्षर के आदि या/और अंत में आते हैं. कुछ विद्वानों ने व्यंजन गुच्छ का तात्पर्य वर्ण संयोग से लिया था (तिवारी, 1966). इसलिए /न्ह, म्ह/ आदि महाप्राण व्यंजन भी गुच्छ कहलाये. ज़्यादातर विद्वानों ने समीपवर्ती व्यंजनों को गुच्छ माना और मध्य व्यंजन गुच्छों की लंबी तालिका दी (भाटिया 1965, संपूर्णानंद वर्मा 1965). इन दोनों मान्यताओं के संदर्भ में हिंदी के हर दो व्यंजन गुच्छ कहे जा सकते हैं. /झ्ध/ *मझधार*, /ङ्म/ *वाङ्मय*, /म्भ्क/ *कुंभकार* आदि. याने हम घूम फिर कर वहीं पहुँचते हैं. इससे हमें व्यंजनों के गुण या वितरण के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल सकती. इस कारण यहाँ हम मध्य गुच्छ की चर्चा नहीं करेंगे, बल्कि परिभाषा के अनुसार वास्तविक गुच्छों की ही चर्चा करेंगे.

2. आगे हिंदी में शब्दांत व्यंजन गुच्छों की तालिका दी गयी है. इस तालिका में /न्ह म्ह र्ह ल्ह/ दिये नहीं गये हैं, क्योंकि ये एकल स्वन हैं और गुच्छों में नहीं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आते. इसी तरह /ड़ ढ़/ भी नहीं दिये गये हैं, क्योंकि स्वनिमिक वितरण के कारण ये गुच्छ में नहीं आते. ⟨ष⟩ का वर्तनी में महत्त्व है. अतः इसको गुच्छों की रचना में शामिल किया गया है. सभी नासिक्य व्यंजनों को लिपि के अनुसार वितरण की व्यवस्था स्पष्ट करने के लिए रखा गया है. यद्यपि **विदेशी व्यंजनों** की स्थिति संदेहास्पद है, फिर भी मान्य उच्चारण के अनुसार इन्हें स्थान दिया गया है. ⟨क्ष⟩ को /क्ष/ मान कर तालिका में स्थान दिया गया है. चर्चा के लिए **क्ष** देखें. जिन खानों में चिह्न (°) है, वे गुच्छ विदेशी हैं. जिन खानों में चिह्न (?) दिया गया है, उनके बारे में स्थिति पर प्रश्न चिह्न लगाया जा सकता है. विदेशी गुच्छों में संस्कृत, अरबी-फ़ारसी मूल के शब्दों के अलावा अन्य शब्द आते हैं. गुच्छों में यथासंभव केवल प्रचलित शब्द ही दिये गये हैं, लेकिन कुछ लोग इन शब्दों के हिंदी में स्थान के बारे में संदेह व्यक्त कर सकते हैं. जैसे *कण्व*, *श्लाघ्य*, *विषण्ण*, *नस्ल* आदि. कुछ लोग और गूढ़ शब्दों के आधार पर और कई गुच्छ जोड़ सकते हैं, जैसे /ब्ज/ *कान्यकुब्ज*, /क़्फ़/ *वक़्फ़*, /म्फ़/ *गुंफ़न* आदि. ऐसे कम प्रचलित शब्दों के बारे में संदिग्धता की स्थिति टाली नहीं जा सकती. उर्दू शब्दों को मैंने सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर लिया है और यह जानता हूँ कि प्रायः कई गुच्छों का अभाव बोलचाल में दिखायी पड़ता है. *बरफ़*, *नसल*, *रक़म*, *जख़म* आदि शब्दों में गुच्छ नहीं हैं. उच्चारण के मानकीकरण के बाद ही यह स्थिति स्पष्ट हो सकती है और इनमें गुच्छों के बारे में अंतिम रूप से कुछ कहा जा सकता है.

2.1. शब्दांत गुच्छों का विश्लेषण : प्रथम सदस्य के रूप में /र/ का वितरण सबसे अधिक है; उसके बाद /ल/ का स्थान है, यद्यपि इसके कई विदेशी गुच्छ हैं. हिंदी, संस्कृत शब्दों में संघर्षी स्वनों के गुच्छ नहीं मिलते. इसी तरह नासिक्य के साथ संघर्षी स्वन गुच्छ में नहीं आते. /कंस अंश/ आदि शब्दों में स्वन परिवर्तन के कारण गुच्छ आ गये हैं. इसी तरह एकाध अपवाद (जिनके कारण हैं) को छोड़ कर स्पर्श और संघर्षी के गुच्छ नहीं मिलते. /फ छ झ य ग़/ प्रथम सदस्य के रूप में नहीं आते. /ख ठ थ ढ/ केवल /य/ के साथ आते हैं.

द्वितीय सदस्य के रूप में /फ ढ झ ङ ञ/ नहीं आते. /छ/ सवर्गीय /च/ के बाद तथा /ष ग़ ह/ केवल /र/ के बाद आते हैं. प्रायः सभी स्पर्श व्यंजन /र/ तथा नासिक्य के पहले आते हैं. आवृत्ति के क्रम से द्वितीय व्यंजन के रूप में /य र ल व/ व्यापक रूप से वितरित हैं. /य/ लगभग सभी व्यंजनों के बाद आता है जबकि यह रोचक बात है कि वह प्रथम सदस्य के रूप में नहीं आता. अपवादों को छोड़कर स्पर्श+संघर्षी या संघर्षी+संघर्षी का योग सीमित है.

2.2. हिंदी में शब्दादि व्यंजन गुच्छों की संख्या अक्षरांत गुच्छों की अपेक्षा बहुत सीमित है. शब्दादि गुच्छों में प्रथम सदस्य कई हैं, लेकिन द्वितीय सदस्य के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूप में केवल /य व र ल/ आते हैं. इस कारण उन्हीं व्यंजन गुच्छों को तालिका-बद्ध किया गया है, जिनमें दूसरा स्वन /य व र ल/ हैं. दो संघर्षी स्वन /स श/ सभी व्यंजनों के साथ प्रथम सदस्य के रूप में आते हैं. उदाहरण के शब्द तालिका के नीचे दिये गये हैं (विदेशी व्यंजन गुच्छ कोष्ठकों में हैं)–

य	र	ल	व
क्या	क्रम	क्लेश	क्वार
(ट्यून)	(ट्रंक)	—	(ट्वीड)
त्याग	त्राण	—	त्वचा
प्यार	प्राण	प्लावन	—
च्युत	—	—	—
ग्यारह	ग्रहण	ग्लानि	ग्वाला
ड्योढ़ी	(ड्रामा)	—	—
द्योतक	द्रव	—	द्वार
ब्याह	ब्राह्मण	(ब्लू)	—
ज्यों	—	—	—
ख्याति	—	—	—
(थ्यारी)	(थ्रो)	—	—
—	घ्राण	—	—
ध्यान	ध्रुव	—	ध्वनि
—	भ्रम	—	—
न्याय	?नृप	—	—
म्यान	म्रिय/मृत्यु	—	म्लेच्छ
व्यापार	व्रत	—	—
(फ़्यूज़)	(फ़्रेम)	(फ़्लू)	—
श्याम	श्रम	श्लोक	श्वास
स्याही	स्राव	(स्लेट)	स्वाद
ज़्यादा	—	—	—
?ख़्याल	—	—	?ख़्वाब
—	ह्रास	—	(?ह्वेल)

/श/ का एक और गुच्छ है /श्मशान/

/स/ के अन्य गुच्छ हैं–

स्कंध	(स्टोर)	स्तुति	स्पंदन
स्खलन	—	स्थान	स्फटिक
		स्नान	स्मरण

-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

हिंदी के शब्दांत व्यंजन गुच्छ

1 \ 2	क	ट	त	प	च	ग	ड	द	ब	ज	ख	ठ	थ	फ	छ	घ	ढ	ध	भ	झ	ङ	ण	न	म	ञ	य	व	र	ल	फ़	स	ज़	श	ष	ख़	ग़	ह	क़
क		°एक्ट	रक्त																					हुक्म		वाक्य	पक्व	वक्र	शुक्ल		°वाक्स			कक्ष?				
ट		पट्ट										लट्ठ														नाट्य					°नोट्स							
त			वित्त																				रत्न	आत्म		सत्य	सत्व	सत्र	क़त्ल	लुत्फ़	उत्स							
प			गुप्त	गप्प																			स्वप्न			प्राप्य		विप्र			°टिप्स							
च					उच्च										गुच्छ											प्राच्य												
ग																		दग्ध				रुग्ण	लग्न	युग्म		आरोग्य		उग्र										
ड						खड्ग	खड्ड																			जाड्य												
द								रद्द										शुद्ध						पद्म		पद्य		भद्र										
ब			ज़ब्त?					शब्द										लब्ध										सब्र				क़ब्ज़						
ज										निर्लज्ज																राज्य		उज्र										
ख																										मुख्य												
ठ																										पाठ्य												
थ																										पथ्य												
फ																																						
छ																																						
घ																							विघ्न			श्लाघ्य		व्याघ्र										
ढ																										धनाढ्य												
ध																										साध्य	माध्व											
भ																										सभ्य		शुभ्र										
झ																																						
ङ	अंक					अंग					पंख					संघ																						
ण		चंट					प्रचंड					कंठ										विषण्ण				पुण्य	कण्व											
न			संत					बंद					पंथ					अंध					अन्न	जन्म		अन्य					कंस?		अंश?					
म				°पंप					विलंब										दंभ				निम्न			साम्य		उम्र	अम्ल		°जेम्स							
ञ					पंच					रंज																												
य																																						
व																										काव्य		तीव्र										
र	तर्क	°शर्ट	शर्त	सर्प	ख़र्च	वर्ग	°बोर्ड	दर्द		दर्ज	मूर्ख		अर्थ			दीर्घ		अर्ध	गर्भ			वर्ण	°टर्न	शर्म		आर्य	सर्व	बर्र	°कार्ल	बर्फ़	°पर्स	अर्ज़	विमर्श	वर्ष	सुर्ख़	मुर्ग़	अर्ह	अर्क़
ल	शुल्क	°बेल्ट		अल्प			°गोल्ड	जल्द	°वल्ब				°हेल्थ						प्रगल्भ					इल्म		मूल्य	°वाल्व		मल्ल	ज़ुल्फ़					तल्ख़			
फ़			मुफ़्त																									कुफ़्र				लफ़्ज़						
स	वयस्क	°पोस्ट	पस्त										स्वस्थ										हुस्न	जिस्म		हास्य	ह्रस्व	सहस्र	नस्ल									
ज़									जज़्ब															नज़्म														
श	अश्क		गश्त		पश्च																		प्रश्न	चश्म		दृश्य	अश्व	हश्र										इश्क़
ष	शुष्क	कष्ट		पुष्प																		उष्ण		भीष्म		भाष्य												
ख़			सख़्त																					ज़ख़्म				फ़ख़्र			शख़्स		बख़्श					
ग़																																						
ह																							चिह्न?	ब्रह्म?		सह्य?												
क़			वक़्त																					रक़्म					अक़्ल		नुक़्स		नक़्श					

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदि गुच्छ कुल 66 हैं, जिनमें 12 विदेशी भाषाओं के हैं. सबसे अधिक गुच्छों में /य/ द्‌वितीय सदस्य है, उसके बाद क्रम से /र व ल/ हैं. /ख़/ की स्थिति संदिग्ध है, क्योंकि उर्दू के विद्‌वान मानते हैं कि इनका उच्चारण क्रमश: /ख़याल/ और /ख़ाब/ है. वर्णों में 〈ष क्ष〉 आदि गुच्छों में नहीं आते. आदि गुच्छों में दूसरे सदस्य के रूप में /य र व ल/ के बाद /म/ का स्थान है. फिर /स/ के साथ अल्पप्राण स्पर्श स्वन हैं. व्यंजन+र/ल के गुच्छ अधिकतर संस्कृत के हैं, शेष विदेशी. व्यंजन+य/व के गुच्छों में कुछ देशज भी हैं. प्रथम सदस्य /ट थ फ़/ के आदि गुच्छ केवल विदेशी हैं।

3. शब्द के मध्य में यद्‌यपि वर्ण संयोग दिखायी पड़ता है, गुच्छ प्राय: टूट जाते हैं (याने आगे-पीछे के स्वरों के साथ हो जाते हैं). जैसे–

परिस्थिति– प रिस् थि ति

धार्मिक– धार् मिक्

इस कारण हम मान सकते हैं कि अक्षरादि गुच्छ शब्दादि गुच्छों से, अक्षरांत गुच्छ शब्दांत गुच्छों से कम ही होंगे. सिद्‌धांत रूप में यह भी मान सकते हैं कि जो गुच्छ शब्द स्तर पर नहीं हैं, वे अक्षर स्तर पर भी नहीं होंगे. विद्‌वान पाठकों से निवेदन है कि अन्यथा कोई उदाहरण मिले, तो मुझे भेज कर कृतार्थ करें.

व्यंजन गुच्छ (तीन वर्णों के) 1. शब्दादि व्यंजन गुच्छों में पहला व्यंजन /स/ होता है, तीसरा /र/, बीच में अघोष अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन या /म/ आते हैं. उदाहरण के लिए–

(स्क्रू) स्त्री स्पृहा स्मृति

इनके अलावा एक और गुच्छ है /त र य/ त्र्यंबक, जो विरल है और प्राय: 'त्रियंबक' के रूप में उच्चरित होता है।

2. शब्दांत व्यंजन गुच्छों को नीचे की तालिका में देखिए–

प्रथम व्यंजन	अंतिम→ / ↓ मध्य	य	र	व	नासिक्य	अन्य
ङ	ख	असंख्य				
	घ	?उल्लंघ्य				
ण	ठ	कंठ्य				
	ड	पांड्य				

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम व्यंजन	अंतिम→ / ↓ मध्य	य	र	व	नासिक्य	अन्य
न	त	अंत्य	मंत्र			
	द	निंद्य	इंद्र	द्वंद्व		
	ध	सांध्य				
	स		हिंस्र			
र	घ	अर्घ्य				
	त	मर्त्य	(सार्त्र)			मूर्त्त वर्त्स (alveola)
	थ	सामर्थ्य				
	द		आर्द्र			
	ध			ऊर्ध्व		
	ढ	दार्ढ्य (~दार्ढ्य)				
	ण	वर्ण्य				
	श			पार्श्व		
स	त	अगस्त्य	अस्त्र			
	थ	स्वास्थ्य				
ष	ट		राष्ट्र			
क	ष	लक्ष्य			तीक्ष्ण सूक्ष्म	
त	त			महत्त्व		
	म	तादात्म्य				
द	र	दारिद्र्य				

2.1. तीन व्यंजनों के गुच्छ में अंतिम व्यंजन /य व र/ होते हैं. /र/ से पहले त वर्ग के स्वन तथा /स/ आते हैं, /व/ से पहले त वर्ग तथा /श/ आते हैं. गुच्छ में अगर पहला व्यंजन नासिक्य हो, तो बाद में सवर्गीय व्यंजन आते हैं; संघर्षी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो, तो बाद में त वर्ग के स्वन. /ष्ट/ के बारे में फ़िलहाल इतना कहना पर्याप्त है कि यह मूलतः स+त की संधि से उत्पन्न गुच्छ है और इन नियमों के भीतर आ जाता है. **क्ष** के बारे में अलग से विचार किया गया है. *ह्रिस्न* स्वन परिवर्तन से प्राप्त गुच्छ है, /त्म्य, त्त्व, द्र्य/ संधि नियमों से प्राप्त गुच्छ हैं. पहला व्यंजन /र/ के साथ आने वाले व्यंजनों में विविधता है.

3. तीन व्यंजनों के गुच्छों के बारे में निम्नलिखित बातें द्रष्टव्य हैं–

ये व्यंजन गुच्छ केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में मिलते हैं और तीन के गुच्छ वाले शब्द हिंदी में संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक भाषा में ही प्रयुक्त होते हैं.

उर्दू के शब्दों में ऐसे तीन व्यंजनों के गुच्छ नहीं मिलते.

अंग्रेज़ी तथा विदेशी शब्दों के गुच्छ हिंदी में अधिक प्रचलित नहीं हैं.

हिंदी के अपने शब्दों में अक्षरादि या अक्षरांत स्थान में तीन व्यंजनों के गुच्छ नहीं आते.

हिंदी में शब्दादि में चार व्यंजनों का कोई गुच्छ नहीं है. शब्दांत में बहुत थोड़े-से शब्दों में चार व्यंजनों के गुच्छ मिलते हैं. *स्वातंत्र्य*, पारिभाषिक शब्द वर्त्स्य (alveolar). मेरी समझ में हिंदी में पाँच व्यंजनों का गुच्छ कहीं नहीं है.

व्यंजन वृद्धि 1. कुछ शब्दों से जब स्वर जोड़ कर अन्य शब्द व्युत्पन्न करते हैं, तो अन्तिम व्यंजन की वृद्धि होती है. *चुप-चुप्पी, ज़िद-ज़िद्दी, गप-गप्पी, सच-सच्चा*. वैसे कई लेखक मूल शब्दों में भी दुहरे व्यंजन की स्थिति देखते हैं और *गप्प, ज़िद्द* आदि शब्द लिखते हैं. दूसरी तरफ़ कुछ लोग *रद्द-रद्दी* के युग्म में अतिसुधार के कारण *रद* भी लिखते हैं.

2. ध्वन्यात्मक शब्दों की रचना में ध्वन्यात्मक खंडों का महत्त्व है, जो स्वतंत्र रूप से भी व्यवहृत होते हैं. *वह धम से नीचे बैठ गया. उसने फिच्च से थूका. घंटी ठन से बजी. मक्खियाँ भिन-भिन करती...* इन रूपों से कई जगह क्रिया या क्रियाविशेषण शब्द भी व्युत्पन्न होते हैं–*धमधमाना, ठनठन, भिन-भिनाना*. चूँकि इन शब्दों पर अर्थ की दृष्टि से बल दिया जाता है, लेखक इन्हें द्वित्व व्यंजन से लिखते हैं–*धम्म, फिच्च, ठन्न, भिन्न, चर्र, खट्ट* आदि. संबंधित शब्दों की रचना तथा वर्तनी को समझने के लिए आवश्यक है कि सामान्य भाषा में इन शब्दों में द्वित्व का प्रयोग न हो. ऊपर नियम 1 के अनुसार शब्द न बनें, तो कहीं द्वित्व की आवश्यकता नहीं है. समान प्रवृत्ति की चर्चा के लिए **रखा, लिखा** देखें. द्वित्व में से एक व्यंजन के लोप के लिए देखें **द्वित्व वर्ण.**

व्यक्तिवाचक संज्ञा–तिर्यक रूप 1. हिंदी के आकारांत पुल्लिंग परसर्ग से पहले तिर्यक रूप में आते हैं–*लड़के* (को), *लड़के* (ने), *कमरे* (में). कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द (शहरों के नाम के) कहीं-कहीं तिर्यक रूप में प्रयुक्त होते हैं–*आगरे में,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलकत्ते से, *आगरे जा रहा हूँ* आदि. हिंदी भाषी *वह पटने जा रही है* में निहित श्लेष का आनंद लेते हैं (वह *पटना* (शहर) *जा रही है*; वह *पटने के लिए* (पटना=प्रेम में फँसना) *जा रही है*).

2. हिंदी में संस्कृत से प्राप्त कुछ आकारांत (शहरों के) नाम भी हैं. ये संस्कृत की प्रकृति के अनुसार स्त्रीलिंग शब्द हैं. जैसे *गया, मथुरा, द्वारका, अवंतिका.* इन शब्दों में कभी रूप परिवर्तन नहीं होता. अतः हमें मानना पड़ता है कि शहरों के नामों में भी कुछ पुल्लिग शब्द हैं, कुछ स्त्रीलिंग.[1]

3. तिर्यक रूप की स्थिति बहुत थोड़े-से शब्दों पर लागू होती है. हिंदी भाषी भी गोंडा, वर्धा, गोलकोंडा, विजयवाड़ा, गुलबर्गा, बड़ौदा, अगरतला, नयागरा, अमेरिका आदि शब्दों के तिर्यक रूप का इस्तेमाल करते हिचकेंगे, जबकि स्थानीय मुहल्लों के नाम वज़ीरपुरा, रावतपाड़ा, कोटला आदि में सहज रूप से तिर्यक का प्रयोग करते हैं.

मेरा अपना व्यक्तिगत मत है कि व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं होना चाहिए. अहिंदी भाषी वैसे ही संज्ञा आदि के तिर्यक रूपों से परेशान रहते हैं और ऊपर की जटिलताओं के रहते शहर के नामों के तिर्यक रूप सीखने की बात उनके लिए और कठिन होगी. *आगरा में, कलकत्ता में, मैं आगरा जा रहा हूँ* आदि प्रयोग शायद कुछ लोगों को खटकें, आगे चल कर सहज हो जाएँगे.

व्याकरणिक कोटियाँ 1. हिंदी के समस्त शब्दों को हम विकारी और अविकारी दो वर्गों में बाँटते हैं. अविकारी शब्दों का कहीं रूप नहीं बदलता और विकारी शब्द वाक्य में प्रयोग के आधार पर बदलते हैं. ये परिवर्तन व्याकरणिक कोटियों के अनुसार होते हैं. जब कोई *आऊँगा* कहता है, तो इससे हमें कई व्याकरणिक विशेषताएँ मालूम होती हैं. बोलने वाला व्यक्ति अपने बारे में कोई सूचना दे रहा है (पुरुष), क्रिया का कर्ता एक है (वचन), वह पुरुष है (लिंग), क्रिया व्यापार अभी हुआ नहीं है (काल), तथा क्रिया का होना निश्चित-सा है (अर्थ). कोष्ठक में दी गयी व्याकरणिक विशेषताएँ या व्याकरणिक अर्थ ही व्याकरणिक कोटियाँ हैं.

सभी भाषाएँ किसी न किसी रूप में ये व्याकरणिक अर्थ देने में सक्षम होती हैं. लेकिन व्याकरणिक कोटि वही है, जो इन अर्थों को शब्द में रूप परिवर्तन के

[1] प्रसंगवश उल्लेख करना चाहूँगा कि जो विद्वान मानते हैं कि नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं और इसमें कुछ अपवाद हैं, समस्या को भिन्न प्रकार से देखते हैं. नदियों के नाम भी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं–कुछ स्त्रीलिंग तथा कुछ पुल्लिग. ब्रह्मपुत्र बहता है, गंगा बहती है. दक्षिण में पेरियार, पेण्णार, पालार; उत्तर में झेलम, व्यास, सतलुज, घग्घर आदि हैं. सब स्त्रीलिंग क्यों हों ?

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माध्यम से दे. हिंदी में ऊपर बतायी कोटियों के साथ पक्ष तथा कारक दो और व्याकरणिक कोटियाँ हैं और कुल मिला कर सात व्याकरणिक कोटियाँ हैं. एक प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक नाइडा (1945) ने संसार की भाषाओं में कुल बीस व्याकरणिक कोटियाँ गिनायी हैं, जो वाच्य तथा प्रेरणार्थक को भी व्याकरणिक कोटि मानते हैं. इन व्याकरणिक कोटियों से कई व्याकरणिक अर्थ प्रकट होते हैं. जैसे कुछ भाषाओं में शब्द के रूप को देख कर पता चल सकता है कि जिसके बारे में बोला जा रहा है वह पास है या दूर है, वह चेतन प्राणी है या जड़ वस्तु, वह वस्तु गोल है या चपटे आकार की. हिंदी में ये सब व्याकरणिक अर्थ के रूप में शब्द की रूप रचना से अभिव्यक्त नहीं होते, बल्कि इन्हें हम शब्दगत अर्थ द्वारा प्रकट करते हैं.

हिंदी में हर व्याकरणिक कोटि का अपना महत्त्व है, प्रयोजन है और अपनी प्रयोगगत विशेषताएँ हैं. लिंग संज्ञाओं में निहित कोटि है. यह संज्ञा में अव्यक्त है, अर्थात शब्द के रूप से लिंग का पता नहीं चलता. इसका पता हमें क्रियाओं और विशेषणों की अन्विति से ही चलता है. लिंग विशेषणों और क्रियाओं में में बिंबित कोटि है. वचन कुछ पुल्लिग शब्दों को छोड़ कर अन्य संज्ञा शब्दों में व्यक्त निहित कोटि है अर्थात बहुधा शब्द के रूप से वचन का पता चलता है. साथ ही वचन क्रिया रूपों में बिंबित भी होता है.

लिंग, वचन और कारक संज्ञा शब्दों की व्याकरणिक कोटियाँ हैं; सर्वनामों में इन तीनों के अलावा पुरुष भी व्याकरणिक कोटि है. क्रियाओं में ये चारों कोटियाँ बिंबित होती हैं. और क्रिया रचना की निहित कोटियाँ काल, पक्ष और अर्थ हैं (वाच्य तथा प्रेरणार्थक को व्याकरणिक कोटि न मानने के कई व्याव-हारि कतथा भाषावैज्ञानिक आधार हैं). विशेषण की अपनी कोई निहित कोटि नहीं है. विशेषण संज्ञा की कोटियों को बिंबित करता है. बिंबित व्याकरणिक कोटियों के बारे में **अन्विति** में देखें यहाँ संक्षेप में व्याकरणिक कोटियों के बारे में देखेंगे.

लिंग–यह संज्ञा तथा सर्वनाम की निहित कोटि है और विशेषण तथा क्रिया में बिंबित होती है. हिंदी में दो लिंग हैं–पुल्लिग और स्त्रीलिंग और हिंदी के सभी संज्ञा शब्द इनमें से किसी एक लिंग में आते हैं. सर्वनाम का लिंग उस द्वारा व्यक्त संज्ञा या व्यक्ति के अनुसार होता है. संज्ञा में लिंग अव्यक्त होता है, व्यक्त नहीं; अर्थात संज्ञा की अन्विति में विशेषण तथा क्रिया में परिवर्तनों से ही लिंग के बारे में जान सकते हैं. वचन–यह संज्ञा तथा सर्वनाम में व्यक्त व्याकरणिक कोटि है और विशेषण तथा क्रिया में बिंबित होती है. हिंदी में दो वचन हैं–एकवचन और बहुवचन. यह कोटि लिंग से एक मायने में बहुत भिन्न है. कुछ अपवादों को छोड़ कर लिंग विभाजक कोटि है. अर्थात शब्द पुल्लिग या स्त्री-

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिंग में आ सकता है, दोनों में नहीं. वचन विस्तारक कोटि है अर्थात प्रायः सभी शब्द अभिव्यक्ति के स्तर पर कभी एकवचन में और कभी बहुवचन में आते हैं या यों समझें एकवचन से बहुवचन की व्युत्पत्ति लगभग सभी संज्ञा शब्दों का लक्षण है. चूँकि सर्वनाम शब्द सीमित होते हैं, व्युत्पन्न बहुवचन रूप व्याकरणों में साथ ही दे दिये जाते हैं. संज्ञा के रूप परिवर्तन नियमों से स्पष्ट किये जाते हैं. पुरुष–यह सर्वनाम की व्यक्त कोटि है और क्रिया में बिंबित होती है. भाषा में बोलने वाला अपने को मैं कहता है और सुनने वाले को तुम. ये दोनों रहे क्रमशः उत्तम (या अंग्रेज़ी व्याकरण के अनुसार प्रथम) पुरुष और मध्यम पुरुष. जिसके बारे में बोला जाए, वह वह होता है. यह अन्य पुरुष है. इसलिए संज्ञा शब्दों में पुरुष की कोटि नहीं मानते, बल्कि सर्वनामों में ही मानते हैं. यह कोटि विशेषणों में बिंबित नहीं होती, क्योंकि सर्वनाम के विशेषण नहीं होते; यह क्रियाओं में बिंबित होती है (*आऊँगा, आओगे, आएगा*). यह लिंग की तरह विभाजक कोटि है. कारक–यह संज्ञा तथा सर्वनामों में व्यक्त व्याकरणिक कोटि है और विशेषण में बिंबित होती है (देखें **कारक, परसर्ग**). हिंदी में तीन कारक हैं–प्रत्यक्ष, तिर्यक तथा संबोधन. कारक तथा अन्य तीन व्याकरणिक कोटियों में एक भिन्नता है. कारक की अन्विति वाक्यांश के भीतर ही होती है और यह कोटि क्रिया आदि अन्य वाक्यांशों में बिंबित नहीं होती. अन्य तीन कोटियों की अन्विति वाक्य स्तर पर अन्य वाक्यांशों से भी होती है (देखें **अन्विति**).

काल, पक्ष तथा अर्थ–ये तीनों क्रिया वाक्यांश की व्यक्त कोटियाँ हैं. सभी क्रियाएँ प्रयोग में किसी न किसी काल तथा अर्थ तथा पक्ष में होती हैं. इस तरह ये वचन की तरह विस्तारक कोटियाँ है. ये कोटियाँ प्रायः अन्य वाक्यांशों में बिंबित नहीं होतीं. लेकिन कुछ अपवाद देखे जा सकते हैं. पूर्ण पक्ष की क्रिया हो, तो कर्ता में ने लगता है. इन कोटियों के बारे में यथास्थान विस्तृत चर्चा की गयी है.

व्ह आदि वर्ण गुच्छ मराठी भाषा की प्रकृति ऐसी है कि कई अंग्रेज़ी से गृहीत हिंदी के शब्दों में जहाँ /वी/ आता है, वहाँ मराठी में /व्ही/ लिखा जाता है. अंग्रेज़ी V का मराठी लिप्यंतरण ही /व्ही/ है और आप ने इस बात को सिनेमा की पत्रिकाओं में व्ही. शांताराम के नाम में देखा होगा. एक जमाने में अंग्रेजी शब्दों के शब्दादि wh को हिंदी में ह्व लिखा जाता था, जैसे ह्वेल, ह्वील. यह ऊपर के गुच्छ का विपरीत क्रम है. टंकण यंत्र में चिह्न ह्व न मिलने के कारण कई टंकक इसे /व्ह/ टंकित कर देते हैं.

इसी तरह द्ध, द्व, आदि को अलग कर टंकित करने की आवश्यकता हुई, तो कई टंकक विपरीत क्रम में ध्द, व्द आदि टंकित कर देते हैं. शुध्द, व्दारा आदि टंकण और मुद्रण में दिखायी पड़ने वाले प्रचलित दोष हैं. ये दोष व्यंजन गुच्छों को

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुहरे रूप में लिखने की व्यवस्था के कारण उत्पन्न हुए हैं और दुहरेपन की समाप्ति पर ही ठीक हो सकते हैं. अन्यथा *समात्प* जैसे दोष अहिंदी भाषियों में ही नहीं, हिंदी भाषियों में भी दिखायी पड़ेंगे.

शताब्दी संस्कृत के अनुसार इस शब्द का रूप 'शताब्दि' था, लेकिन हिंदी में ईकारांत रूप प्रचलित हो चला है.

शब्द[1] यह पुल्लिग शब्द है. इसका हिंदी में इस समय अर्थ है word. '*लड़का*' *हिंदी का एक शब्द है.* इस शब्द का एक और अर्थ है 'ध्वनि, आवाज़', जो दक्षिण की भाषाओं में मिलता है और कोई-कोई हिंदी भाषी भी दूसरे अर्थ में इस शब्द का प्रयोग करते हैं. लेकिन आवाज़ के अर्थ में हिंदी में यह शब्द कम ही प्रयुक्त होता है. साहित्यिक हिंदी में *निश्शब्द* शब्द 'चुप' के अर्थ में प्रयुक्त होता है. *वह निश्शब्द हो गया. वहाँ निश्शब्दता थी.*

शब्द[2] भाषाविज्ञान के अनुसार शब्द की परिभाषा है–शब्द भाषा की लघुतम सार्थक स्वतंत्र इकाई है. शब्द दो प्रकार के हैं. सरल शब्द में एक स्वतंत्र तथा एक या अधिक बद्ध रूप होते हैं; या एक से अधिक बद्ध रूप होते हैं. संयुक्त शब्द में एक से अधिक स्वतंत्र रूप होते हैं. ये स्वतंत्र रूप अलग-अलग अर्थ नहीं देते, बल्कि एक समन्वित अर्थ देते हैं, जिस कारण इसे एक शब्द कहा जाता है. मिश्र शब्द उपर्युक्त शब्द प्रकारों से निष्पन्न होते हैं. शब्दों के वर्गीकरण को निम्न आरेख में देखें–
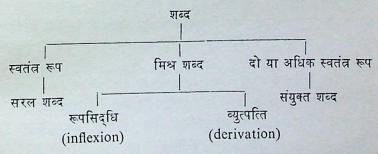
विकारी शब्दों में व्याकरणिक कोटि के लिए जो प्रत्यय आदि लगते हैं, उन्हें रूपसिद्धि के प्रत्यय कहते हैं. संज्ञादि शब्दों में लिंग, पुरुष, वचन, कारक तथा क्रिया में इनके अलावा काल, पक्ष और अर्थ के रूप लगते हैं. रूपसिद्धि प्रत्यय लगने पर भी शब्द प्रायः अपने ही वर्ग में रहता है.

व्युत्पादक प्रत्यय रूपसिद्धि की तरह सभी शब्दों में नहीं लगते, बल्कि इनका प्रयोग क्षेत्र सीमित है. जैसे *-पा* प्रत्यय हिंदी में *बुढ़ापा, बहनापा, रंडापा* आदि बहुत थोड़े शब्दों में लगता है. व्युत्पादक प्रत्यय से प्रायः शब्द वर्ग भी बदल जाता है. संज्ञा से क्रिया या विशेषण, क्रिया से संज्ञा या विशेषण आदि व्युत्पादक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्ययों से ही संभव हैं. लेकिन संज्ञा से संज्ञा (*बहन से बहनापा*) की व्युत्पत्तियाँ भी सहज हैं.

जब तक आवश्यकता न हो, दोनों प्रकार के प्रत्ययों को सिर्फ़ प्रत्यय ही कहा जा सकता है और स्थान के आधार पर इन्हें पूर्व प्रत्यय, पर प्रत्यय के वर्गों में रखा जा सकता है.

शब्द भ्रांति 1. शब्द भ्रांति का पहला रूप है सही अर्थ समझे बिना सही शब्द की जगह गलत शब्द का प्रयोग करना (catachresis). एक बार किसी विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय ने अपने भाषण में किसी जीवित व्यक्ति को 'श्रद्धांजलियाँ' अर्पित कीं. वास्तव में वे श्रद्धा दिखाने की बात कहना चाहते थे. यह गलती तभी होती है जब व्यक्ति मिलते-जुलते शब्दों में अर्थ का अंतर न पहचाने या जल्दी में गलत प्रयोग कर जाए. इस कारण पंडिताऊ शब्दों के प्रयोग में ऐसी गलतियाँ होने की संभावना अधिक रहती है. संस्था की जगह संस्थान, दुखी के लिए शोकाकुल, जाग्रत की जगह जागरूक आदि दोष इसी वर्ग के हैं।

2. शब्द भ्रांति का दूसरा रूप है मिलते-जुलते शब्दों में एक की जगह दूसरे का प्रयोग करना (malapropism). *शोक-शौक, बूरा-भूरा, अपेक्षा-उपेक्षा, सादा-साधा, परिणय-प्रणय, विदुर-विधुर, महरूम-मरहूम, आदि-आदी* ऐसे कुछ शब्द हैं जहाँ व्यक्ति गलती कर जाता है. स्कूली व्याकरण के ग्रंथों में ऐसे पचासों युग्मों की सूचियाँ मिलती हैं, परीक्षाओं में ऐसे प्रयोग (दोनों) दे कर छात्र से गलती सुधारने या सही शब्द चुन कर लिखने को कहा जाता है. अहिंदी भाषियों से यह गलती हो जाती है, हिंदी भाषी जान-बूझ कर प्रभाव लाने के उद्देश्य से यह प्रयोग अपना सकते हैं.

3. अंग्रेज़ी के प्रयोग कोशों में छात्र-छात्राओं की गलतियों के लिए एक अलग नाम दिया गया है (howlers). ऐसी गलतियाँ परीक्षा में दिखायी पड़ती हैं, जहाँ छात्र शब्द को समझे बिना कुछ अटकल लगाते हैं और अक्सर बहुत रोचक उक्तियाँ दे जाते हैं. कुछ कल्पित उदाहरण देखिए—अभिनेता उसे कहते हैं, जो अभी नेता है लेकिन बाद में नहीं रहेगा. लाभकर—जो अपना लाभ कर लेता है. दाशरथी—वह दास जो रथ चलाए. बच्चों की पत्र-पत्रिकाओं में हँसी के स्तंभ में ऐसी गलतियाँ प्रस्तुत की जाती हैं. छात्रों की वास्तविक गलतियों का संग्रह और प्रकाशन उपादेय होगा, क्योंकि हम अपनी गलतियों से जितना सीखते हैं, उतना प्रवचनों से नहीं. जब बड़े लोग भी भाषा के संबंध में ऐसी भ्रांत धारणाएँ बना लेते हैं और शब्द की उलटी-सीधी व्याख्या देते हैं (किसी ने कहा था मूर्ख का तात्पर्य है दिमाग खाने वाला. संस्कृत में ऐसी व्युत्पत्ति है क्या ?) तो उसे लोक व्युत्पत्ति (folk etymology) कहते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द वर्ग आधुनिक अंग्रेज़ी के व्याकरणों के अनुसार शब्दों के आठ वर्ग बनाये गये हैं. गुरु ने भी इसी परंपरा का पालन करते हुए हिंदी के शब्दों के ये आठ वर्ग बनाये हैं—

विकारी – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया

अविकारी – क्रियाविशेषण, संबंधवाचक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक

विकारी तथा अविकारी का भेद भाषा की रचना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं है. यह संयोग की बात है कि क्रियाविशेषण नहीं बदलते या संज्ञा बदलती है. अगर यह कारक (factor) न हो, तो भी हमारा विश्लेषण वही होना चाहिए. हम यहाँ इन शब्दों की प्रयोगगत विशेषताओं के बारे में देखेंगे.

वाक्यांश स्तर पर हमने हिंदी के निम्न प्रकार के वाक्यांश निश्चित किये—
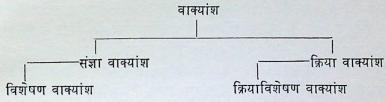
इन वाक्यांशों में प्रमुखतः जो शब्द आते हैं वे क्रमशः विशेषण, सर्वनाम, संज्ञा, क्रियाविशेषण तथा क्रिया हैं. इन्हें भाषाविज्ञान कोशीय शब्द कहता है, जिसका तात्पर्य है ऐसे शब्द जिनका अपने अर्थ के साथ शब्दकोश में स्थान हो. शेष तीन को निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं—

विस्मयादिबोधक शब्द वास्तव में वाक्य हैं. भावसूचक, क्रियारहित अभिव्यक्तियाँ हैं. ये उपवाक्य-संरचना के भीतर कोई कार्य नहीं करते, बल्कि उपवाक्य के बाहर विद्यमान रहते हैं. इन्हें शब्द वर्ग में गिनना इनके विश्लेषण का व्यावहारिक तरीका नहीं है.

शेष दो वर्गों में संबंधवाचक शब्दों के संदर्भ में व्याकरण परसर्गीय शब्दावली को सम्मिलित करता है. वास्तव में इससे क्रियाविशेषण वाक्यांशों की रचना होती है. समुच्चयबोधक शब्द वाक्यांश तथा वाक्य के विस्तार तथा संयोजन में प्रयुक्त होते हैं. भाषाविज्ञान इन दोनों वर्गों के शब्दों को प्रकार्यात्मक शब्द (functional words) की संज्ञा देता है.

शय्या यह शब्द संस्कृत √शे (शय्) से व्युत्पन्न है और शायद यह हिंदी का अकेला शब्द है, जिसमें <य> का द्वित्व दिखायी पड़ता है. उच्चारण की दृष्टि से <गैया, शय्या> दोनों समान हैं. लेकिन स्रोत के कारण **शैया* गलत वर्तनी है जिस तरह **गय्या* लिखना अमानक प्रयोग है. मूल वर्तनी के कारण *शयन*, *शायिका*, *-शायी* आदि व्युत्पन्न रूपों को पहचानने में भी सुविधा होती है. देखें **ऐ, औ.**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शर्त वाले वाक्य (Conditionals) 1. **यदि, अगर** दोनों शर्त सूचित करते हैं. इनमें पहला संस्कृत का है, दूसरा उर्दू स्रोत का. हिंदी में *अगर* अधिक प्रचलित है. शर्त वाले वाक्यों में प्रायः शर्त सूचित करने वाला शब्द छोड़ दिया जाता है. *अगर काम न हो तो तुम चले जाना~काम न हो तो तुम चले जाना.*

2. शर्त वाले वाक्यों के दो प्रकार हैं. पहला प्रकार उन वाक्यों का है, जो आने वाली घटनाओं के संदर्भ में हैं. इन वाक्यों में तीन प्रकार की क्रियाएँ मिलती हैं–

अगर वह आए, तो मेरा काम हो जाएगा.

अगर वह आएगा, तो मैं उसके साथ जाऊँगा.

अगर वह नहीं आया, तो काम विगड़ जाएगा.

इनमें वह *आए/आएगा* तो तथ्येतर क्रियाएँ हैं ही और आने वाली घटनाओं के संदर्भ में सही प्रयोग हैं. तीसरे वाक्य में प्रयुक्त 'आया' घटित वास्तविक व्यापार का द्योतक नहीं है, बल्कि भविष्य में उक्त व्यापार की पूर्णता के पूर्वानुमान (presupposition) के संदर्भ में अर्थ-द्योतन करता है. (न) आने की पूर्णता काम विगड़ने का कारण है. यह *वह बिल्कुल नहीं आएगा* के प्रतिवक्तव्य में कार्य की पूर्णता के पूर्वानुमान में बोला जाता है. प्रतिवक्तव्य की दृष्टि से लगभग हिंदी की सभी क्रियाएँ *अगर* वाली रचना में आ सकती हैं. *अगर वह आता है, अगर वह आ गया, अगर वह नहीं आ सकता, अगर वह आ चुका है, अगर काम किया जा चुका है.* इस दृष्टि से *अगर· · ·आया* के दो प्रयोग संदर्भ मिलते हैं–

वह आया है → *अगर वह आया है तो ठीक है.*

वह गाली देगा → *अगर उसने गाली दी तो उसका सिर फोड़ दूँगा.*

इस तरह हम अगर वाले वाक्यों के दो प्रकार मान सकते हैं–एक जिसमें प्रतिवक्तव्य के रूप में कही गयी बात पर प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है और दूसरे जिसमें कारण-कार्य संबंध बताया जाता है. ऊपर के तीनों वाक्य कारण-कार्य संबंध प्रकट करते हैं.

प्रायः दोनों उपवाक्यों में संभावनार्थ रूप मिलते हैं (*वे लोग आएँ तब न बात करूँ*) या दोनों में भविष्य रूप (*तुम चलोगे तो साथ चलूँगा*). लेकिन कुछ वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में दोनों क्रिया रूपों का आना समस्या पैदा करता है. *अगर आप आएँ/आएँगे तो काम बन जाएगा.* लेकिन इन क्रियाओं को इनके अपने प्रयोग-संदर्भों में आसानी से समझा जा सकता है. 'आए' का प्रयोग (देखें **संभावनार्थ/संदेहार्थ क्रियाएँ**) कामना, सुझाव, आशंका आदि संदर्भों में होता है और 'आएगा' का प्रयोग व्यापार के भविष्य में घटित होने के अधिक पुष्ट अनुमान के संदर्भ में.

3. शर्त वाले वाक्यों का दूसरा प्रकार बीते काल/समय के संदर्भ में आता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ बिना सहायक क्रिया के कृदंत रूपों का प्रयोग होता है. *अगर बारिश होती तो हम भीग जाते* (अर्थात बारिश नहीं हुई, हम नहीं भीगे) अर्थात घटित या अघटित व्यापार के संदर्भ में उससे विपरीत व्यापार की स्थिति में हम कारण-कार्य का संबंध देखते हैं. व्यापार वास्तविक है, भूतकाल में है, कल्पित व्यापार अवास्तविक है, इस कारण तथ्येतर है. इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वास्तविक व्यापार निश्चयार्थ हो, तो कल्पित व्यापार नकारात्मक होगा, वास्तविक (अघटित) व्यापार नकारात्मक हो, तो कल्पित स्थिति में निश्चयार्थ क्रिया होगी. आगे के वाक्य देखिए–

तुम आते तो मैं चला जाता (तुम नहीं आये, मैं नहीं गया)
तुम न आते तो मैं चला जाता (तुम आये, मैं नहीं गया)
तुम आते तो मैं न जाता (तुम नहीं आये, मैं चला गया)
तुम न आते तो मैं न जाता (तुम आये, मैं चला गया).

3.1. यहाँ विकल्प में पूर्ण पक्ष कृदंत+होता की रचना 'ने' के साथ मिलती है. *अगर तुम कहते/तुमने कहा होता, अगर वह खा लेती/उसने खा लिया होता, मैं कपड़े ख़रीद लेता/मैंने कपड़े ख़रीद लिये होते, आप कहतीं/आपने कहा होता, तुम चिट्ठी भेज देते/तुमने चिट्ठी भेज दी होती.* इस विकल्प का आधार स्पष्ट नहीं है. वैसे दूसरे उपवाक्य में 'ने' का प्रयोग कम ही होता है. उदाहरण देखिए–

तुमने पहले से बताया होता, तो मैं पैसे न भेजती.
उसने संकेत किया होता, तो हम कतई वहाँ न रुकते.
बच्चों ने देख लिया होता, तो बिल्कुल न छोड़ते.

भूतकाल के संदर्भ में एक दूसरी रचना भी मिलती है, जो काल्पनिक स्थितियों पर आधारित है (घटित वास्तविक व्यापार पर नहीं) और जिसका होना अब संभव भी है. इसके उदाहरण हैं–*अगर मैं लड़की होता, अगर मैं भारत का प्रधानमंत्री होता, अगर तुम अभिनेता होते, अगर यह कमरा कुछ बड़ा होता.* वर्तमान में विपरीत स्थिति में हम कल्पित स्थिति की चर्चा कर रहे हैं. जो नहीं है, उसके होने की कल्पना. एक लड़की कहेगी–*मैं लड़की हूँ. अँधेरे से डरती हूँ* विपरीत स्थिति की सूचना देना चाहने वाला लड़का कहेगा–*मैं लड़की होता तो अँधेरे से नहीं डरता.* विचित्र कल्पनाएँ इसी रचना के माध्यम से प्रकट होती हैं–*चिड़ियों के चार पैर होते, आदमी के पूँछ होती, गधे के सींग होते, सूरज बर्फ़ीला होता* आदि.

3.2. अहिंदी भाषी (देखें **हिंदी–विभिन्न अंचलों से**) प्रायः यहाँ सहायक क्रिया *था* का प्रयोग करते हैं (**अगर वह आता था तो मैं भी आता था.*) यह गलत है.

शायद (ही) 1. *शायद* संभावना का अर्थ देता है. *शायद आज बारिश होगी.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शायद सभी लोग नहीं जा सकेंगे. वे शायद न आएँ.

2. शायद ही संभावना का तिरस्कार करता है. मैं शायद ही आऊँ, अर्थात मेरे आने की संभावना नहीं है. चीनी शायद ही मिले, अर्थात चीनी मिलने की संभावना नहीं है.

शुरू, शुरुआत 1. शुरुआत 'शुरू' शब्द का संज्ञा रूप है. ध्यान दीजिए कि इसमें ⟨रु⟩ ह्रस्व है. यह संज्ञा स्त्रीलिंग शब्द है. झगड़े की शुरुआत कैसे हुई ?

2. शुरू शब्द भी संज्ञा की तरह प्रयुक्त होता है. शुरू/आरंभ में वहाँ सिर्फ़ एक ही आदमी था. स्कूल के शुरू/आरंभ के दिनों में . . . शुरू में मुझे लगता था कि. . . . चलो, फिर से शुरू करें. यह अन्य विशेषणों की तरह संज्ञा का विशेषण नहीं बनता.

*प्रारंभिक समय–शुरू का समय (*शुरू समय, *शुरुआत का समय)*

*आरंभिक स्थिति, आरंभ की स्थिति–शुरू की हालत (*शुरू हालत)*

3. उपर्युक्त चर्चा से स्पष्ट है कि शुरू संज्ञा की तरह आता है, लेकिन यह शुरुआत से भिन्न अर्थ देता है. इन दोनों में मौलिक अंतर है, जिसे निम्न आरेख से दिखा सकते हैं–

शुरुआत शुरू मध्य/बीच अंत

●————————————————————

व्यापार

यह बताना मुश्किल है कि शुरू का अंत कहाँ होता है, लेकिन शुरुआत शुरू के आरंभ का बिंदु है.

शुरू होना यह कार्य या व्यापार का आरंभ सूचित करता है. बारिश शुरू हुई. काम शुरू हुआ. व्यक्ति के संदर्भ में इसका प्रयोग नहीं होता. *आदमी शुरू हुआ. *मैं बोलना शुरू हुआ (शुरू करना का प्रयोग संभव है).

कार्य का प्रारंभ सूचित करने के लिए लगना का प्रयोग होता है. हम लोग खाने लगे. गाड़ी चलने लगी. आजकल 'लगना' की जगह शुरू होना का प्रयोग बहुधा देखने को मिलता है. ऐसे वाक्यों में क्रियार्थक संज्ञा तथा होना कर्ता के साथ अन्वित रहते हैं. ठीक दस बजे से ख़बर मिलनी शुरू हो गयी. लोग बाहर की तरफ़ चलने शुरू हुए. गर्मी में फल बिगड़ने शुरू हो जाते हैं. लोग आने शुरू हुए. देखें **हिंदी–विभिन्न अंचलों से,** उपशीर्षक 'दिल्ली की हिंदी'.

2. सकर्मक तथा अकर्मक के वाक्य युग्मों में शुरू करना/होना का प्रयोग तर्कसंगत तथा सहज लगता है. जैसे, उसने बोलना शुरू किया–उसका बोलना शुरू हुआ. आप देख सकते हैं कि दूसरे वाक्य की अभिव्यक्ति लग से नहीं हो सकती. अन्यत्र लगना को ही प्राथमिकता देनी चाहिए, जहाँ विकल्प की गुंजाइश हो.

श्, श 1. मानक नागरी लिपि का वर्ण श है, जिसका आधा वर्ण ⟨श्⟩ है. काश्त,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्याम, प्रश्न. पुरानी नागरी लिपि का चिह्न <श> है और आधा वर्ण <श्>. *काश्त, श्याम*. <र> के आधे वर्ण की जटिलता के कारण शायद, श+ऋ तथा श+र के लिए पुराने वर्ण शृ तथा श्र ही सुझाये गये हैं.

2. श्र का वर्ण टंकण पटल में सम्मिलित है, लेकिन शृ नहीं. इस कारण टंकण में, मोनो मुद्रण में (अर्थात अख़बारों में, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान जैसी पत्रिकाओं के मुद्रण में) शृ की जगह प्रायः श्रृ दिखायी पड़ता है. इसका प्रयोग अटपटा है, क्योंकि श+र+ऋ का संयोग तर्कहीन है. उच्च स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में यह गलत प्रयोग बहुत खटकता है. मुद्रण की सुविधा न होने पर <शृ> छापना शायद अधिक अच्छा होता. व्यापक जनसंचार के साधनों के द्वारा एक दोष प्रसरित हो रहा है, जबकि मेरी समझ में नहीं आता कि शृ में क्या ख़राबी है. वह तो देखने में भी अच्छा लगता है.

श्लेष 1. श्लेष में एक शब्द के दो अर्थ निकलते हैं. श्लेष काव्य का ही अलंकार नहीं, बल्कि सामान्य भाषा में अभिव्यक्ति की युक्ति भी है. उक्ति की विशेषता इस बात में है कि एक अर्थ सामान्य होता है, दूसरे अर्थ में व्यंग्य आदि ध्वनित होते हैं। ऐसे ही प्रभाव के लिए श्लेष का इस्तेमाल किया जाता है.

श्लेष का अर्थ देने का कभी वक्ता का उद्देश्य होता है और कभी श्रोता अपनी ओर से श्लेषार्थ निकाल लेता है. कोई कहे *मैं चलना तो चाहता हूँ मगर ···*, तो दूसरा कह सकता है *मगर-मछली की कोई ज़रूरत नहीं. तुम को तो चलना ही है.*

2. वाक्य स्तर पर संदिग्धता के वाक्य भी श्लेष के स्थल हैं. किसी मित्र ने एक बार पूछा था *क्या तुमने लंगोटी पहने हाथी को देखा है*. यहाँ श्लेष इस बात में है कि लंगोटी कौन पहन रहा है ?

ष 1. यह मूर्धन्य, अघोष संघर्षी व्यंजन है. यह व्यंजन संस्कृत भाषा की विशेषता है और हिंदी के अपने शब्दों में, अरबी, फ़ारसी आदि शब्दों में नहीं आता. अगर आप शब्द के स्रोत को जानते हों, तो निश्चय कर सकते हैं कि उसमें <ष> है कि नहीं. इसी तरह <ष> वाले शब्दों के बारे में आप निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे संस्कृत के होंगे. इसी कारण *करिष्मा, स्टेषन, रिक्षा, रिक्षा, षो* आदि शब्द गलत हैं.

2. हिंदी में आज <श> तथा <ष> के उच्चारण में अंतर नहीं है. दोनों को हम /श/ से दिखा सकते हैं, लेकिन वर्तनी के स्तर पर हमें दोनों समान परिवेश में व्यतिरेक में मिलते हैं. *आशा–भाषा, दर्शन–घर्षण, शुष्क–इश्क*. इसी कारण अहिंदी भाषी ही नहीं, हिंदी भाषी भी दोनों व्यंजनों में वर्तनी के स्तर पर गलती करते हैं. लेकिन वर्तनी की कुछ विशेषताओं के आधार पर ऐसे दोषों को दूर कर सकते हैं. (क) जैसे ऊपर बताया गया है <ष> संस्कृत मूल के शब्दों के अलावा अन्यत्र नहीं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आता. (ख) शब्दारंभ में 'ष' का प्रयोग बहुत सीमित है. संख्या 6 के रूप /षट्/ से बने शब्द (षड्यंत्र, षड्ऋतु, षण्मुख, षडानन, षट्कोण), संख्या 16 के कुछ शब्द (षोडशी, षोडश), संख्या 60 के कुछ शब्द (षष्टि) आदि में शब्दारंभ में 'ष' आता है. (ग) शब्द के अन्य स्थानों में स्वर मध्य में दोनों वर्णों के प्रयोग का स्थान निर्धारण कठिन है क्योंकि दोनों वर्ण लगभग सभी स्वरों के साथ आते हैं. मुझे हिंदी में ⟨षै⟩ तथा ⟨षौ⟩ नहीं मिले हैं. व्यंजन गुच्छों में ही हम ⟨श⟩ तथा ⟨ष⟩ के अंतर को कुछ दूर तक स्पष्ट कर सकते हैं.

संस्कृत में विसर्ग संधि के कारण प तथा क वर्ग के अघोष व्यंजनों से पहले ⟨ष⟩ मिलता है. *निष्कपट, निष्फल, निष्पाप*. संस्कृत धातु के अंत का श् तथा त मिलकर ⟨ष्ट⟩ बनते हैं. नश्+त–नष्ट, प्र+विश्+त–प्रविष्ट. क ट प वर्ग से पहले ⟨ष⟩ मिलता है और आधुनिक हिंदी में भी /श्ट/, /श्प/ का गुच्छ नहीं मिलता (विदेशी शब्दों में केवल /श्ट/ मिलेगा). /श्क/ का प्रयोग थोड़े से उर्दू के शब्दों में मिलता है (इश्क, रश्क). संस्कृत शब्दों में कहीं /श्त/ का रूप नहीं मिलता, लेकिन यह व्यंजन गुच्छ दर्जनों उर्दू के शब्दों में मिलता है. *गश्त, काश्त, गोश्त, एकमुश्त, याददाश्त, किश्त~किस्त, बहिश्त.*

आधुनिक हिंदी में /श्न ष्ण/ के गुच्छ मिलते हैं, लेकिन कहीं /श्ण/ या /ष्न/ के गुच्छ नहीं मिलते. /श्म ष्म श्य ष्य श्व श्र/ के गुच्छ मिलते हैं, /ष्र/ नहीं. /श्च श्छ/ मिलते हैं, /ष्च ष्छ/ नहीं. इस तरह प्रयोग की विशेषताओं के संदर्भ में वर्तनी की विशेषताओं को पहचान सकते हैं.

संकर शब्द दो भिन्न भाषाओं के शब्दों से बने संयुक्त या व्युत्पन्न शब्द संकर शब्द कहलाते हैं. जो शब्द भाषा की स्वीकृत व्यवस्था में आ जाते हैं, जैसे *सीधा-सादा, रेलगाड़ी, जेलख़ाना, टिकटघर, टिकट-खिड़की,* वे भाषा के अपने शब्द हो जाते हैं. लेकिन जब ऐसे शब्द बनाये जाते हैं, उनका विरोध होता है और वे खटकते भी हैं. अख़बारों में ऐसे कई नये शब्द बनाये जाते हैं जैसे *प्रेस अधिवेशन, पुलिस विभाग, ज़िलाधीश, कोटा-व्यवस्था, लाइसेंसशुदा/लाइसेंस-प्राप्त.*

हिंदी और उर्दू भाषावैज्ञानिक दृष्टि से संरचना के संदर्भ में एक ही भाषा हैं. ये सिर्फ़ लिपि तथा शब्द-प्रयोग के संदर्भ में अपना अलग अस्तित्व रखती हैं. इस कारण हिंदी, उर्दू के संकर शब्द भी प्रायः तिरस्कार और विरोध का कारण बनते हैं. यही बात सह-प्रयोग (collocation) पर भी लागू होती है, जहाँ किसी प्रसंग में उर्दू तथा संस्कृतनिष्ठ शब्दों का अनियंत्रित प्रयोग खटकता है. *स्वतंत्रता संग्राम* या *जंगे आज़ादी* अपनी जगह ठीक हैं, *आज़ादी संग्राम* या *स्वतंत्रता की जंग* खटकने वाले प्रयोग हैं. *अमन पसंद~शांतिप्रिय, वर्तमान स्थिति~मौजूदा हालत* आदि कई प्रयोगगत पर्यायों में इस बात को देख सकते हैं. शब्द-चयन ही भाषा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को उर्दू शैली या संस्कृतनिष्ठ शैली में ले जाता है. सौभाग्य से दोनों भाषाओं का एक सामान्य अंश (common core) है, जहाँ प्रयोग की काफ़ी छूट है. इस क्षेत्र के सैकड़ों शब्द (बाल-बच्चे, घर-बार, रंग-ढंग, ख़ानापूरी, धन-दौलत मनपसंद, पेशाबघर) संकर होते हुए भी हिंदी में आम फ़हम हैं.

संख्यावाचक शब्द हिंदी के मूल संख्यावाचक शब्द निम्न प्रकार हैं–

1 एक	2 दो	3 तीन	4 चार	5 पाँच
6 छह	7 सात	8 आठ	9 नौ	10 दस
11 ग्यारह	12 बारह	13 तेरह	14 चौदह	15 पंद्रह
16 सोलह	17 सत्रह	18 अट्ठारह	19 उन्नीस	20 बीस
21 इक्कीस	22 बाईस	23 तेईस	24 चौबीस	25 पच्चीस
26 छब्बीस	27 सत्ताईस	28 अट्ठाईस	29 उनतीस	30 तीस
31 इकतीस	32 बत्तीस	33 तैंतीस	34 चौंतीस	35 पैंतीस
36 छत्तीस	37 सैंतीस	38 अड़तीस	39 उनतालीस	40 चालीस
41 इकतालीस	42 बयालीस	43 तैंतालीस	44 चवालीस	45 पैंतालीस
46 छियालीस	47 सैंतालीस	48 अड़तालीस	49 उनचास	50 पचास
51 इकावन	52 बावन	53 तिरपन	54 चौवन	55 पचपन
56 छप्पन	57 सत्तावन	58 अट्ठावन	59 उनसठ	60 साठ
61 इकसठ	62 बासठ	63 तिरसठ	64 चौंसठ	65 पैंसठ
66 छियासठ	67 सड़सठ	68 अड़सठ	69 उनहत्तर	70 सत्तर
71 इकहत्तर	72 बहत्तर	73 तिहत्तर	74 चौहत्तर	75 पचहत्तर
76 छिहत्तर	77 सतहत्तर	78 अठहत्तर	79 उनासी	80 अस्सी
81 इकासी	82 बयासी	83 तिरासी	84 चौरासी	85 पचासी
86 छियासी	87 सत्तासी	88 अट्ठासी	89 नवासी	90 नब्बे
91 इकानवे	92 बानवे	93 तिरानवे	94 चौरानवे	95 पचानवे
96 छियानवे	97 सत्तानवे	98 अट्ठानवे	99 निन्यानवे	100 सौ

1.1. एक संख्या शब्द लीजिए–123. यहाँ 3 इकाई स्थान में है, 2 दहाई स्थान में, 1 सैकड़ा स्थान में. हिंदी में 21 से ऊपर की संख्याओं की रचना में इकाई +दहाई के क्रम में रूप आते हैं. ये रूप बद्ध होते हैं, जिस कारण पूरी संख्या एक समस्त शब्द की तरह प्रयुक्त होती है. इस उलटे क्रम के कारण अंग्रेज़ी या द्रविड भाषा भाषियों के लिए हिंदी की संख्या सीखने में कठिन होती है.

आगे हम इकाई तथा दहाई के शब्दों का संकेत करने वाले रूपों का विवेचन करेंगे. चूँकि हिंदी में 29, 39 आदि संख्याएँ अगले दहाई शब्द से व्युत्पन्न होती हैं, उन्हें हम दहाई के साथ ही रखेंगे. आगे इकाई शब्दों के साथ दहाई शब्दों के रूप दिये गये हैं–

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

10 : ग्या, बा, ते, पंद, सत+रह; चौ+दह; अठ+आरह; सो+लह. 20 : सत, अठ+आईस; चौ, छ+बीस; अन्यत्र-ईस. 30 : -तीस. 40 : ब, चौ, छि+आलीस; अन्यत्र -तालीस. 50 : इक, ब, सत, अठ+आवन; तिर, पच, छ+पन; चौ+वन. 60 : छ/छि+आसठ; अन्यत्र -सठ. 70 : -हत्तर. 80 : -आसी. 90 : -आनवे. इन नियमों में न आने वाले कुछ शब्द हैं—49 उनचास, 89 नवासी, 99 निन्यानवे.

इकाई के रूप निम्न प्रकार हैं—

1 : इक. 2 : बा+रह, ईस, वन, सठ; अन्यत्र ब- 3 : ते+रह, ईस; तैं+त-; तिर+पन, सठ, आ- 4 : चौ+दह, बीस, वन, हत्तर; चौं+तीस, सठ; चौर+आ-; चौ → चव+आलीस. 5 : पंद+रह; पैं+त-; पच- अन्यत्र. 6 : छि+आ-; छ- अन्यत्र. 7 : सैं+त-; सड़+सठ; सत- अन्यत्र. 8 : अठ+आरह, आईस, आवन, आसी, आनवे; अठ+हत्तर; अड़+त-, स- 9 : उन-

इन शब्दों की रूपस्वनिमिक रचना के नियम निम्न प्रकार से हैं—इ+आ → इया (*छियालीस* आदि). अ+आ → आ (इकावन आदि). लेकिन विकल्प में *इक्यावन*, *इक्यासी* आदि रूप भी मिलते हैं.

इक-, पच- के बाद /ई/ आए, तो /क/ का द्‌वित्व होता है. ब-, छ- के बाद स्पर्श व्यंजन आए, तो उसका द्‌वित्व होता है. पच-, सत-, अठ- के बाद /आ/ आए, तो अंतिम व्यंजन का द्‌वित्व होने की संभावना है. यह /ठ/ का द्‌वित्व /ट्‌ठ/ होगा. इसी कारण *पचासी*~*पच्चासी*, *अठारह*~*अट्‌ठारह* आदि का विकल्प मिलता है. सत्‌+त- में यह विकल्प देखने को नहीं मिलता. छ/छि- के कारण *छासठ*~*छियासठ* का विकल्प है. उच्चारण में *उनहत्तर* आदि में व्यंजन स्वनों के बाद /ह/ का लोप देखा जा सकता है (*उनत्तर* आदि), लेकिन यह परिवर्तन लेखन में नहीं है. इसी तरह *पिचहत्तर*, *पिचासी*, *पिचानवे* वैकल्पिक प्रयोग हैं. *तिरेसठ*, *तिरेपन*, *उनंचास*, *तितालीस*, *इकत्तीस* आदि बोलचाल के रूप हैं, अमानक हैं.

1.2. सौ से ऊपर के शब्द निम्न प्रकार हैं—1000 हज़ार, 1,00,000 लाख, 100,00,000 करोड़. सौ करोड़ अरब है, और सौ अरब खरब. दस लाख के लिए अंग्रेज़ी का शब्द 'मिलियन' हिंदी में भी चलने लगा है. उल्लेखनीय है कि हज़ार से ऊपर हिंदी की संख्याएँ 100 के गुणन में आती हैं, अंग्रेज़ी में 1000 के गुणन में आती हैं.

1.2.1 सौ से ऊपर की संख्याओं में संख्या का उल्लेख सौ, हज़ार, लाख, करोड़ आदि इकाइयों में एक से निन्यानवे तक संख्या क्रम में किया जाता है.

101 एक सौ एक	110 एक सौ दस
1000 एक हज़ार	1001 एक हज़ार एक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

8901 आठ हज़ार नौ सौ एक   1,11,111 एक लाख ग्यारह हज़ार एक सौ ग्यारह

अक्सर हज़ार के ऊपर की संख्याएँ जो हज़ार के पूर्ण गुणन में नहीं हैं, सौ की गिनतियों में या हज़ार के भिन्न में भी बतायी जाती हैं, जैसे

1500 पंद्रह सौ~डेढ़ हज़ार (एक हज़ार पाँच सौ प्राय: नहीं)

1700 सत्रह सौ

2500 पच्चीस सौ~ढाई हज़ार

3200 बत्तीस सौ

यह अपने में रोचक विषय है कि कुछ बड़ी संख्याओं को हिंदी भाषी कैसे बोलते हैं–9300 नौ हज़ार तीन सौ है या तिरानवे सौ. इसी तरह 2154 दो हज़ार एक सौ चौवन है या इक्कीस सौ चौवन. मेरे ख्याल से इसमें व्यक्तिगत आदत तथा चयन ज़्यादा प्रमुख कारक होगा.

1.3. हज़ार के लिए सहस्र, लाख के लिए लक्ष, करोड़ के लिए कोटि संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक शब्द हैं, बोलचाल में इनका प्रयोग नहीं है.

1.4. संख्याओं का लेखन : संख्याओं के लेखन के संदर्भ में रिडो तथा विटिंग (1964) ने जो निर्देश दिये हैं, हिंदी के संदर्भ में भी वे महत्त्वपूर्ण हैं (यहाँ उदाहरण हिंदी के दिये जा रहे हैं). (अ) निम्नलिखित वाक्यों में शब्द लिखें, संख्या नहीं–*गोपाल दस साल का है, उसकी बहन चार साल की. मीटिंग में करीब तीस-चालीस लोग थे. सौ बार तो चक्कर लगा चुका हूँ. पाँच सौ रुपये से ऊपर के आर्डरों पर . . . चार-पाँच सौ किराया देना मेरे लिए कठिन है.* (आ) सौ से ऊपर की संख्या हो और सौ या हज़ार के गुणन में न हो, तो संख्या लिखें. *पिछले साल इस स्कूल में 879 छात्र थे.* (इ) वर्ष को संख्या में लिखें–*1879 में, 1979 में* आदि. तारीख़ लिखने की कई पद्धतियाँ हो सकती है. *30 मई 1980 को . . . . अगले साल अक्तूबर की 23 तारीख़ को, 8–6–1980 को.* (ई) वाक्यों में भिन्नों को शब्दों से ही लिखें–*मैंने एक चौथाई काम कर लिया है (*मैंने $^1/_4$ काम . . . .) एक किताब की कीमत डेढ़ रुपया है* (न कि *एक किताब की कीमत $1^1/_2$ रुपया है*). लेकिन गणित की किताबों में तथा जटिल कीमत के आँकड़ों में संख्या लिखना ही उचित है. ऐसे स्थानों में रुपये का उल्लेख संख्या से पहले करें. *रु० 12.79 की दर से 12 किताबें, रु० 1.60 की दर से 3 कापियाँ तथा रु० 0.80 के हिसाब से 8 पेंसिलें ख़रीदें, तो हमें कुल कितने रुपये देने होंगे ?*

1.4.1. अपनी तरफ़ से निम्नलिखित बातें जोड़ना चाहूँगा. पुनरावृत्त संख्याओं को शब्द से ही लिखें, तो भ्रम नहीं होगा. *पाँच-पाँच पैसे, सौ-सौ की गड्डियाँ.* आगे के प्रयोगों में अगर शब्द पहले लें तो संख्या लिखी जा सकती है–*कक्षा 5*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या *पाँचवीं कक्षा*. रु० *10.00 या दस रुपये*. समय को हमेशा संख्या से ही बताना उचित होगा–*4.30 बजे, सवेरे 7.00 बजे, अपराह्न 3.30* आदि.

2. क्रमवाचक संख्या शब्द : इन संख्याओं के क्रमवाचक शब्द हैं–*पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ*. '*छठा*' के लिए *छठवाँ* सादृश्य के आधार पर बनाना गलत प्रयोग है; *नवाँ* कभी-कभी *नौवाँ* लिखा जाता है, *नवाँ* ही प्रचलित रूप है. दस के बाद के सभी शब्दों में *वाँ* जोड़कर क्रमवाचक शब्द बनते हैं.

2.1. क्रमवाचक शब्दों के लिए अधिकतर 10-12 तक ही संस्कृत पर्याय मिलते हैं. *प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश* आदि. इनमें पाँच तक के ही क्रमवाचक शब्द अधिक प्रयुक्त हैं. इनका प्रयोग तिथियों के उल्लेख में, संस्कृत शैली के ग्रंथों में अध्यायों के लिए तथा विभक्ति आदि की गणना के लिए ही किया जाता है.

2.2. क्रमवाचक संख्या शब्द विशेषण है और अन्य विशेषणों की तरह संख्या के साथ लिंग तथा वचन के लिए अन्वित होता है. *दसवाँ, दसवीं, दसवें (दिन से), दसवीं*. संस्कृत के क्रमवाचक संख्या शब्दों में अन्विति तथा लिंग निर्धारण कठिन है. हिंदी की रचना में सामान्य विशेषणों के तौर पर इनमें रूप-भेद नहीं होता. *मेरी लड़की परीक्षा में प्रथम (*प्रथमा) आयी. मेरी प्रथम यात्रा. चतुर्थ पंचवर्षीय योजना* आदि. लेकिन जहाँ संस्कृत से पूरा प्रयोग लिया जाए, वहाँ संस्कृत की अपनी अन्विति भी हिंदी में आ जाती है, जैसे *विशारद (प्रथमा), तृतीया विभक्ति, षष्ठी* (तिथि), *नवमी* (तिथि).

2.3. जहाँ सौ के ऊपर एक, दो, तीन तथा चार आएँ, वहाँ क्रमवाचक शब्दों की रचना पर मतभेद है. लेकिन तरजीह देने लायक प्रयोग *एक सौ+एकवाँ, दोवाँ, तीनवाँ, चारवाँ*, आदि हैं, न कि *एक सौ पहला* आदि.

2.5. प्रायः लेखन में समय या श्रम बचाने की दृष्टि से क्रमवाचक शब्द पूरे न लिखे जा कर संख्या से बनाये जाते हैं जैसे 1ला, 2रा, 3रा, 4था, 5वाँ आदि. *1ला, 2रा, 3रा* के प्रयोग विशेषकर मराठी भाषियों के लेखन में मिलते हैं. हिंदी भाषी *5वाँ* आदि 'वाँ' के रूप लिखते हैं. *1ला* को व्यक्ति *एक ला* भी पढ़ सकता है. साथ ही नंबर के साथ अक्षर का योजन तर्कसंगत नहीं लगता. क्रमवाचक शब्दों को अक्षरों में लिखना ही अधिक अच्छा है. जैसे *पहला, चौथा, दसवीं, नवाँ, बीसवीं, पंद्रहवें* आदि.

2.5.1. यद्यपि हम यहाँ संख्याओं की चर्चा कर रहे हैं, भाषा में संख्या के एक ख़ास प्रयोग की तरफ़ ध्यान जा रहा है. कई लोग *जाते-जाते* की जगह *जाते*², *बार-बार* की जगह *बार*² आदि लिखने के आदी हैं. लेखन में संक्षिप्तीकरण सुविधा के लिए है, लेकिन यह प्रयोग असुंदरता के कारण गले नहीं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उतरता. ऐसे स्थानों में दोनों शब्दों को पूरा लिखना वांछित है.

3. भिन्न के शब्द निम्न प्रकार हैं–

$^1/_2$ आधा. $^1/_4$ पाव (या) एक चौथाई. $^3/_4$ पौना (या) तीन चौथाई. $^1/_3$ एक तिहाई. $^2/_3$ दो तिहाई. $^1/_5$ एक पाँचवाँ हिस्सा. $^1/_7$ एक सातवाँ हिस्सा (या) सात में एक हिस्सा. $1^1/_4$ सवा. $1^1/_2$ डेढ़. $1^3/_4$ पौने दो. $2^1/_4$ सवा दो (आगे इसी क्रम से सवा+तीन, चार आदि). $2^1/_2$ ढाई. $2^3/_4$ पौने तीन (आगे इसी क्रम से पौने+चार, पाँच आदि). $3^1/_2$ साढ़े तीन (आगे इसी क्रम से साढ़े+चार आदि).

3.1. (अ) ये संख्याएँ विशेषण की तरह काम आती हैं, लेकिन केवल *आधा* लिंग-वचन के लिए अन्वित होता है, *पौना, सवा* नहीं. *आधी रकम, पौना किलो, सवा रुपया* आदि. (आ) सौ के ऊपर की बड़ी संख्याओं के साथ भी भिन्न की संख्याएँ आती हैं. *सवा सौ, डेढ़ हजार, पौने दो लाख, ढाई करोड़.* लेकिन केवल *सवा हज़ार* अजीब लगता है, जिसकी जगह *साढ़े बारह सौ* अधिक प्रचलित प्रयोग है. *डेढ़ हज़ार, पंद्रह सौ* दोनों पर्याय हैं. इसी तरह अन्य कई संख्याओं में भी दुहरे प्रयोग मिलते हैं. (इ) *पाव* और *पौना* केवल माप बताने के लिए आते हैं, जैसे *एक पाव दूध* (याने पाव सेर या पाव लिटर या किलो), *पौना किलो चावल, डेढ़ पाव सरसों का तेल* आदि. एक चौथाई, तीन चौथाई अंश या हिस्सा बताने के लिए आते हैं. यहाँ *पाव, पौना* नहीं आते. *मेरा एक चौथाई वेतन किराये में ही चला जाता था. मैंने तीन चौथाई काम कर लिया है.* अंश बताने वाले बड़े भिन्न शब्द *गुना* जोड़ने से बनते हैं. *सवा गुना, डेढ़ गुना, ढाई गुना* आदि. माप बताने के लिए ये ही शब्द काम आते हैं–*सवा किलो चावल, ढाई सेर दूध, डेढ़ लिटर दूध.* (ई) 'पौना' का एक और रूप *पौन* भी व्याकरणों में उल्लिखित है. शायद अब पहला शब्द ही अधिक प्रचलित है. (उ) वचन की दृष्टि से *सवा, डेढ़* दोनों एकवचन हैं. *पौने दो*, दो तथा ऊपर के सभी शब्द बहुवचन हैं. *मैंने सवा रुपया मंदिर में चढ़ाया. डेढ़ दिन बीता, दो दिन बीते. लेकिन कहीं साधु का नाम नहीं. मैंने इसके लिए पौने दो रुपये दिये हैं.*

3.2. बटा : $^1/_4$, $^3/_{16}$, $^7/_{25}$ इन संख्याओं को बताने के लिए बटा का प्रयोग करते हैं. ये संख्याएँ क्रमशः *एक बटा चार, तीन बटा सोलह, सात बटा पच्चीस* कही जाती हैं. यद्यपि *बटा* गणित में भाग देने के लिए चिह्न है, फिर भी इसका प्रयोग इस आकार की अन्य संख्याएँ बताने के लिए भी किया जाता है. विशेषकर शहरों में मकानों का क्रम बताने के लिए $^{14}/_1$, $^{14}/_2$, $^{14}/_3$, आदि संख्याएँ लिखी जाती हैं, जिन्हें क्रमशः *चौदह बटा एक, चौदह बटा दो, चौदह बटा तीन* कहा जाता है. लेकिन इन संख्याओं में भिन्न का कोई आधार नहीं है (देखिए **बटा**).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. गुना : (अ) संख्याओं की आवृत्ति या गुणन (multiplication) बताने के लिए उनके साथ *गुना* का प्रयोग किया जाता है, जैसे *चार का चार गुना सोलह* है. इसे गणितीय भाषा में *चार गुना चार सोलह* कहा जाता है. *सूरज चाँद से कई गुना बड़ा है. रंग बनाने के लिए रंग के बराबर नमक लीजिए और रंग से दो गुना मीडियम. इस घोल को इसके तीन गुना* (?*गुने*) *पानी में मिला लीजिए.* (आ) गुना संख्याओं में लगकर शब्द रचना करता है, लेकिन ये व्युत्पन्न शब्द ज़्यादातर चार की संख्याओं तक ही सीमित हैं. *दुगुना~दुगना~दोगुना~दूना, तिगुना, चौगुना.* अन्य संख्याओं के साथ *पाँच गुना, छह गुना* आदि प्रयोग ही मिलते हैं. (इ) *गुना* आम विशेषणों की तरह लिंग-वचन की अन्विति दिखाता है. *दुगुनी चीज़ें, दुगुने प्रयोग, पाँच गुना बड़ा मकान, पाँच गुने बड़े मकान में.*

5. (अ) समग्रता सूचक (aggregative) : जब किसी संख्या की सभी इकाइयों के समाविष्ट होने का उल्लेख करना हो, तो संख्या के साथ *-ओं* लगाया जाता है. ऐसी संख्याएँ हैं—*दोनों, तीनों, चारों, पाँचों, छहों* (देखें **छह**), *सातों, आठों, नवों~नौओं, दसों, ग्यारहों, बारहों, बीसों, तीसों, पचासों, सौओं, हज़ारों.* जब कहते हैं *बारहों आदमी बाहर गये*, तो अर्थ होता है कि कुल बारह थे और सभी बाहर गये. अन्य कुछ प्रयोग हैं—*हम चारों रोज़ साइकिल से आते हैं. वे चारों आदमी यहीं काम करते हैं. लड़ाई में सौओं कौरव मारे गये. उसकी बीसों उंगलियाँ कट गयीं.* (आ) इस संख्या का एक अन्य प्रयोग है, जिसमें कई का बोध होता है. *बाज़ार में बीसियों तेल मिलते हैं* (याने कई प्रकार के). *यहाँ तो रोज़ पचासों लोग आते हैं* (याने कई). *गंगा में हज़ारों आदमी नहाते हैं* (याने कई हज़ार). *लोग हज़ारों की तादाद~संख्या में वहाँ जाते हैं. सरकार इस योजना पर अरबों रुपये ख़र्च कर चुकी है* (याने कई अरब). निश्चित संख्या के अर्थ में *दसों, बीसों, सौओं* तथा अनेकता के अर्थ में *दसियों, बीसियों, सैकड़ों* के अंतर को ध्यान में रखें. *दर्जनों* सिर्फ़ अनेकता का अर्थ दे सकता है, यह *बारहों* का पर्याय नहीं है. *पच्चीस, पचास* तथा *हज़ार* के ऊपर की संख्याएँ समग्रता, अनेकता दोनों अर्थों में आती हैं. दस से नीचे की संख्याओं तथा अन्य बड़ी संख्याओं में अनेकता का अर्थ सूचित करने वाले प्रयोग नहीं हैं (**पाँचों*, **तीसों*, **पचहत्तरों*).

संगठन, संघटन, विघटन बृहत् हिंदी कोश *संगठन, संगठित* को मूल प्रविष्टियाँ नहीं मानता, बल्कि इनके लिए *संघटन, संघटित* देखने का निर्देश देता है. संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर इन्हें शायद अलग शब्द मानता है और *संघटन, संघटित* के एक अर्थ के संदर्भ में *संगठन, संगठित* का उल्लेख करता है. अर्थ की दृष्टि से दोनों *संघटन* के दो अर्थ मानते हैं—एक है संयोग, मेल और दूसरा है निर्माण, रचना आदि, जिस अर्थ में यह *संगठन* का पर्याय है. इसका कारण यह है कि संस्कृत में घट् धातु है, जबकि हिंदी धातु गठ की व्युत्पत्ति संदिग्ध है. प्रयोग की दृष्टि से हिंदी में संगठन,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संगठित ही अधिक प्रचलित हैं, अन्य दो शब्द नहीं.

हिंदी में दोनों के अर्थ में विशेष अंतर नहीं है. इस बात को इनसे व्युत्पन्न शब्दों में देखा जा सकता है. संस्कृत से हिंदी में आये शब्दों में ट > ड (घड़ा, बाड़ी, बड़, तोड़) तथा ठ > ढ (पढ़, कोढ़, पीढ़ा) की प्रवृत्ति देखी जा सकती हैं. इसी प्रवृत्ति के अनुसार √गठ से गढ़ तथा √घट से घड़ धातु व्युत्पन्न होते हैं. इन दोनों शब्दों में भी अर्थ का अंतर नहीं है और दोनों कोश *घड़ना* को *गढ़ना* का पर्याय मानते हैं. बृ. हि. कोश *मनघड़ंत*, *मनगढ़ंत* दोनों रूप देता है, स. हि. शब्द सागर *मनघड़ंत* का उल्लेख भी नहीं करता.

तीसरा शब्द गठन है. यह बनाने, निर्मित करने के अर्थ में आता है. *सरकार ने . . . समिति का गठन किया है~. . . समिति गठित* की है. इस अर्थ में हिंदी में *!घटन* का प्रयोग नहीं होता. *गठन* संस्कृत संज्ञा शब्द नहीं है; यह धातु रूप में संज्ञा लगता है (< गठ), लेकिन स्त्रीलिंग शब्द नहीं है. अनुमान है कि यह संज्ञा *संगठन* से प्राप्त नामधातु होगा. उक्त तीनों शब्दों के संदर्भ में सोचा जा सकता है कि गठ- के रूप हिंदी के लिए प्रमुख हैं, जबकि स्रोत के कारण कोशकार घट- रूपों को महत्त्व देते हैं.

संघटन का विपरीत अर्थ में विलोम *विघटन* है और हिंदी में **विगठन* जैसा कोई शब्द नहीं है.

संग, साथ, सहित, समेत 1. ये चारों शब्द परसर्गीय शब्द हैं, जो साथ होने या सहितता का अर्थ देते हैं. इनमें पहले दो 'के' के साथ आते हैं (*मेरे संग/साथ चलो, राम के संग/साथ . . .*). शेष दोनों बिना 'के' के, सीधे तिर्यक रूप से जुड़ते हैं (*बच्चों सहित/समेत*).

2. अर्थ की दृष्टि से संग/साथ पर्याय हैं. मेरा विचार है कि दोनों में केवल शैलीगत अंतर है, संदर्भगत नहीं. कुछ लोग *साथ* की जगह प्रायः हर जगह संग का प्रयोग करते हैं. *वे दोनों संग-संग जा रहे हैं ~ वे दोनों साथ-साथ जा रहे हैं. मैं तुम्हारे साथ बात नहीं करना चाहता~!मैं तुम्हारे संग बात नहीं करना चाहता*. इन दोनों की अर्थ-समानता को आप समस्त शब्द *संगी-साथी* में देख सकते हैं. दोनों से क्रमशः *संगत/संग, साथ* संज्ञा शब्द व्युत्पन्न होते हैं. *सहित* तथा *समेत* संस्कृत शैली की भाषा में प्रयुक्त होते हैं और इनका पहले दो शब्दों से प्रयोगगत अंतर है. ये दोनों उल्लिखित वस्तु के अन्य वस्तुओं से अंग या हिस्से के रूप में सम्मिलित होने का अर्थ प्रकट करते हैं. इन दोनों में भी प्रयोग का सूक्ष्म अंतर है, जिसे आगे के वाक्यों में देख सकते हैं–

पुस्तकों समेत उसका सारा सामान जल गया (**पुस्तकों के साथ*, क्योंकि यह भिन्न अर्थ देता है; *?पुस्तकों सहित*. इसका तात्पर्य है कि जलने वाली चीज़ों में पुस्तकें शामिल हैं, जिसे महत्त्व के कारण अलग से बताया गया है).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

*आप बंधु-मित्र समेत पधारें (*के साथ, *सहित).*

*मकान सहित मेरे पास दो लाख की पूँजी है (*के साथ, ?समेत)* इस वाक्य का तात्पर्य है कि मकान मिला कर मेरे पास दो लाख की पूँजी है. सामान्य भाषा में *सहित* को *मिला कर* से ही व्यक्त किया जाता है. पूँजी में अन्य चीज़ों के साथ मकान भी है. समेत और सहित के अंतर को स्पष्ट करने के लिए और विश्लेषण की आवश्यकता है.

3. *साथ/से* प्रसंग के संदर्भ में समान हैं. *मैं तुम से/तुम्हारे साथ बात करना चाहता हूँ.* इन प्रसंगों में *सहित* नहीं आता. एक पत्रिका में मैंने ऐसा ही एक गलत प्रयोग देखा था, जो एक फ़ोटो के नीचे विवरण के रूप में छपा था—*मंत्री महोदय अधिकारियों सहित बात करते हुए.* पंडिताऊ शब्दों का प्रयोग ही शायद इस दोष का कारण है.

संधि संधि से तात्पर्य है शब्द के दूसरे शब्द या रूप के साथ संयोग की स्थिति में उनमें होने वाले स्वन तथा वर्तनी के परिवर्तन का विवेचन तथा परिवर्तनों का वर्गीकरण. हिंदी में संस्कृत के शब्दों में संधि के जो नियम देखे जा सकते हैं वे हिंदी या अरबी-फ़ारसी मूल के उर्दू के शब्दों पर लागू नहीं होते. वास्तव में हिंदी में संयुक्त शब्दों में भी संधि तथा तत्संबंधी स्वन परिवर्तन नहीं मिलते (कुछ अपवादों को छोड़ कर). परंपरात्मक व्याकरण में संधि के तीन प्रमुख भेद बताये जाते हैं—

स्वर संधि (अच् संधि), व्यंजन संधि (हल् संधि) और विसर्ग संधि.

1. स्वर संधि के चार भेद हैं. (अ) दीर्घ संधि में सवर्गीय स्तर (ह्रस्व या दीर्घ) मिल कर दीर्घ हो जाते हैं—

अ / आ	+	अ / आ	→ आ	इ / ई	+	इ / ई	→ ई	उ / ऊ	+	उ / ऊ	→ ऊ

उदाहरण क्रमशः

वेद+अंत	वेदांत	रवि+इंद्र	रवींद्र	गुरु+उपदेश	गुरूपदेश
हिम+आलय	हिमालय	गिरि+ईश	गिरीश		
शिक्षा+अभ्यास	शिक्षाभ्यास	मुनि+ईश	मुनीश		
विद्या+आलय	विद्यालय	रजनी+ईश	रजनीश		

(आ) गुण संधि में /अ/ के साथ आने वाले अग्र तथा पश्च स्वर मिल कर क्रमशः /ए/ और /ओ/ बन जाते हैं, और /ऋ/ अर् में बदल जाता है—

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ आ	+	इ ई	→ ए	अ आ	+	उ ऊ	→ ओ	अ आ	+	ऋ → अर्

देव+इंद्र देवेंद्र	सूर्य+उदय सूर्योदय	सप्त+ऋषि सप्तर्षि
नर+ईश नरेश		
महा+इंद्र महेंद्र	महा+उदर महोदर	महा+ऋषि महर्षि
रमा+ईश रमेश		

(इ) वृद्धि संधि में /अ, आ/ के साथ /ए, ऐ; ओ, औ/ आने पर दोनों मिल कर क्रमशः /ऐ, औ/ बन जाते हैं—

अ आ	+	ए ऐ	→ ऐ	अ आ	+	ओ औ	→ औ

मत+ऐक्य मतैक्य	परम+औषध परमौषध
सदा+एव सदैव	

(ई) यण संधि में /इ, ई; उ, ऊ/ के बाद यदि कोई वर्ग-इतर स्वर हो, तो वे क्रमशः /य्/ तथा /व्/ बन जाते हैं और बाद का स्वर बना रहता है—

इ+अ → य	उ+अ → व
ई आ → या	ऊ आ → वा
उ → यु	इ → वि
ऊ → यू आदि	ई → वी आदि
यदि+अपि यद्यपि	सु+अल्प स्वल्प
इति+आदि इत्यादि	सु+आगत स्वागत
अति+उत्तम अत्युत्तम	अनु+ईक्षण अन्वीक्षण
	अनु+एषण अन्वेषण

(उ) अयादि संधि में निम्न अग्र तथा मध्य स्वर /अ, आ/ से पहले क्रमशः /अय्, आय्/ और /अव्, आव्/ में बदल जाते हैं. लेकिन हिंदी के लिए यह संधि उत्पादक नहीं हैं और हिंदी में इस संधि से निष्पन्न कुछ ही शब्द गृहीत हुए हैं—

ए → अय्	ने+अन नयन
ओ → अय्	भो+अन भवन
ऐ → आय्	गै+अक गायक
औ → आव्	भौ+उक भावुक

(ऊ) /ए, ओ/ के बाद /अ/ आने पर उसका लोप हो जाता है. लेकिन उसकी उपस्थिति दिखाने के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) लगाया जाता है. हिंदी शब्दों में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवग्रह का प्रयोग नहीं होता. देखें **अवग्रह**. *मनो+अभिलाषा–मनोऽभिलाषा.*

2. व्यंजन संधि के कई भेद हैं.

(अ) नासिक्य के अलावा अन्य घोष स्वनों (स्वरों, व्यंजनों) के पहले का अघोष स्पर्श घोष हो जाता है.

जगत्+ईश जगदीश सुप्+अंत सुबंत
दिक्+दर्शन दिग्दर्शन षट्+ऋतु षड्ऋतु

(आ) नासिक्य से पहले का स्पर्श व्यंजन सवर्गीय नासिक्य बन जाता है.

उत्+माद उन्माद वाक्+मय वाङ्मय
जगत्+नाथ जगन्नाथ षट्+मुख षण्मुख
उत्+नयन उन्नयन सत्+मार्ग सन्मार्ग

(इ) /त् द्/ के बाद /च छ ज/ आने पर वे क्रमशः /च/ और /ज/ में बदल जाते हैं और परिवर्तित स्वन बाद के स्वन के अनुरूप समीकृत होता है. इस तरह त्+ज का योग /च्च/ और द्+च /ज्ज/ बनता है.

सत्+चरित्र सच्चरित्र शरद्+चंद्र शरच्चंद्र
विद्युत्+छटा विद्युच्छटा विद्युत्+जाल विद्युज्जाल
सत्+जन सज्जन उत्+ज्वल उज्ज्वल

(ई) /त्/ के बाद /श/ आए, तो दोनों मिल कर /च्छ/ बन जाते हैं.

हनुमत्+शास्त्री हनुमच्छास्त्री उत्+श्वास उच्छ्वास
उत्+शृंखल उच्छृंखल

(उ) /त्, द्/ के बाद /ट, ठ/ हों, तो वे /ट्/ में, /ड, ढ/ हों, तो /ड्/ में, /ल/ हो, तो /ल्/ में बदल जाते हैं.

उत्+लेख उल्लेख उत्+डयन उड्डयन
तत्+लीन तल्लीन

(ऊ) दूसरे शब्द के /स/ से पहले /अ, आ/ के अलावा अन्य कोई स्वर हो, तो वह /ष/ में बदल जाता है.

वि+सम विषम सु+सुप्त सुषुप्त (सोया हुआ)

प्रमुख अपवाद हैं अनुसार, विसर्ग, विस्मरण.

(ऋ) प्रथम शब्द में ऋ, र या ष हो, तो दूसरे शब्द या रूप का 'न' /ण/ में बदल जाता है.

परि+नय परिणय प्र+मान प्रमाण
परीक्ष+अन परीक्षण शिक्ष्+अन शिक्षण
पोष् (<पुष्)+अन पोषण मर् (<मृ)+अन मरण

3. विसर्ग संधि :

(अ) विसर्ग के बाद कोई घोष ध्वनि हो, तो विसर्ग /र/ में बदल जाता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुः+गुण दुर्गुण
दुः+मति दुर्मति
दुः+भाव दुर्भाव
निः+मान निर्माण
निः+गम निर्गम
निः+विवाद निर्विवाद

स्वर से पहले यह /र/ स्वर में मिल जाता है.

दुः+आचार दुराचार
दुः+उपयोग दुरुपयोग
निः+अपराध निरपराध
निः+उत्तर निरुत्तर

/र/ से पहले का 'निः' /नी/ में बदल जाता है.

निः+रोग नीरोग
निः+रस नीरस

अन्य शब्द हैं–नीरद, नीरज, नीरव.

(आ) विसर्ग /च, छ/ से पहले /श्/ में बदलता है. यह /श/ से पहले समीकृत होता है या नहीं बदलता.

/श्/ निश्चल, निश्चेष्ट, निश्चित, दुश्चरित्र, निश्छल.

/श्~:/ निश्शब्द~निःशब्द, निश्शेष~निःशेष, दुश्शासन~दुःशासन

विसर्ग /त्/ से पहले /स्/ बनता है, /स/ से पहले समीकृत होता है या नहीं बदलता.

/स्/ निस्तेज, मनस्ताप, दुस्तर.

/स्~:/ निस्संकोच~निःसंकोच, निस्संतान~निःसंतान, दुस्साहस~दुःसाहस, निस्संदेह~निःसंदेह.

स+व्यंजन गुच्छ से पहले विसर्ग प्रायः लुप्त हो जाता है–*निस्वार्थ*, *निस्पंद*, *निस्तब्ध*, *निक्षेप*, *दुस्वप्न*. अघोष स्पर्श व्यंजन से पहले विसर्ग /ष्/ में बदल जाता है–*निष्कपट*, *निष्काम*, *निष्कलंक*, *दुष्कर्म*, *दुष्कर*, *निष्पाप*, *निष्प्रभ*, *निष्क्रिय*, *निष्पक्ष*, *दुष्प्रयोजन*, *निष्प्रभ*. /क/ से पहले न बदलने के कुछ उदाहरण हैं–नमस्कार, पुरस्कार, तस्कर, वयस्क, मनस्क. घोष व्यंजन से पहले /अः/ का /ओ/ बनता है–*मनोहर*, *मनोयोग*, *मनोबल*, *मनोज*, *तपोबल*, *तपोनिधि*, *तपोभूमि*, *तपोवन*, *यशोदा*, *यशोधर*, *पयोनिधि*, *पयोधर*, *सरोज*, *सरोवर*, *तेजोमय*, *अधोमुखी*, *अधोगति*, *वयोवृद्ध*. ये संधियुक्त शब्द हैं, इन्हें एक साथ, एक शब्द के रूप में लिखना चाहिए. /अ/ से इतर स्वरों से पहले का विसर्ग जो /अ/ के बाद आता है, छूट जाता है–*अतएव*.

(इ) विसर्ग के बाद स+व्यंजन का गुच्छ हो, तो विसर्ग का लोप हो सकता है. वैसे हिंदी में कोशकार या लेखक स्स+व्यंजन लिखते हैं. यह अनावश्यक है. कुछ उदाहरण देखिए–*निस्वार्थ*, *निस्पंद*, *निस्पृह*, *दुस्वप्न*.

यहाँ हमें रूपिमिक व्यवस्था के संदर्भ में /निः/ तथा /नि/ के व्यतिरेक तथा इनके सहरूपों की व्यवस्था के कारण बहुमुखी वैपरीत्य (opposition) दिखायी पड़ता है. इसे आगे के उदाहरणों में देख सकते हैं–

निः+स निस्सीम, निस्संदेह, निस्सार

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	निसंग, निसहाय (वैकल्पिक रूप से)
नि+स	निसर्ग, निसूदन
निः+स+व	निस्वार्थ, निस्पंद, निस्पृह
	निस्स्वार्थ/निःस्वार्थ आदि (वैकल्पिक रूप से)
नि+स+व	निस्तब्ध (बहुत अधिक स्तब्ध)
निः+त	निस्तेज, निस्तंद्र, निस्तल
नि+त	निस्तार, निस्तीर्ण, निस्तोद (गहरे चुभना, चुभन)

इन दोनों प्रत्ययों को इन व्यतिरेकों में पहचानने का एकमात्र आधार अर्थ है.

संन्यास अनुस्वार तथा पंचमाक्षर के रूप में अनुस्वार लिखने की व्यवस्था के बारे में चर्चा करते हुए हमने लिखा था कि द्वित्व नासिक्य व्यंजन यथावत लिखे जाते हैं और अनुस्वार नासिक्य का स्थान नहीं ले सकता. *गन्ना, ज़िम्मा* सही वर्तनी है, **गंना, *ज़िमा* गलत. लेकिन सं+न्यास अपनी व्युत्पत्ति के कारण उपर्युक्त वर्तनी में लिखा जाता है, जिसका विकल्प *सन्न्यास* भी बहुधा देखने को मिलता है. द्वित्व गुच्छों के सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण तीसरा विकल्प *सन्यास* अब प्रचलित होता जा रहा है, क्योंकि उपर्युक्त दोनों विकल्प हिंदी की वर्तनी व्यवस्था के संदर्भ में बहुत सहज नहीं हैं.

संबोधनकारक जो भाषावैज्ञानिक या वैयाकरण परंपरा के अनुसार विचार करते हैं, वे छह ही कारक मानते हैं. यह मत एक हद तक सही है क्योंकि कारकीय संबंध एक उपवाक्य के अंदर के वाक्यांशों के बीच प्रकट होते हैं जबकि संबोधन कारक अलग वाक्य-सा बनकर अलग-थलग रहता है. इसके बारे में और चर्चा के लिए **कारक** देखें.

1. हमें यहाँ कारक को एक भिन्न अर्थ में लेना पड़ रहा है. संज्ञा शब्दों में तीन प्रकार के रूप परिवर्तन होते हैं–प्रत्यक्ष रूप, तिर्यक रूप तथा संबोधन के रूप. इस अर्थ में संबोधनकारक रूप दिये गये हैं. संज्ञा वर्ग के आकारंत शब्द संबोधन में आ→ए का प्रत्यय लेते हैं (*लड़के! बच्चे! बेटे!*), अन्य सभी एकवचन शब्द संबोधन में अविकारी रहते हैं (*बहन! माँ! भाई! दोस्त!*). सभी बहुवचन शब्द संबोधन में /ओ/ लेते हैं (*लड़को! दोस्तो! भाइयो! बहनो! देवियो!*).

2. संबोधन प्रायः मानुषी संज्ञाओं के संदर्भ में ही होता है. लेकिन परीकथाओं में प्राणियों के संदर्भ में संबोधन देख सकते हैं और प्यार तथा गाली में व्यक्ति को प्राणी या वस्तुओं का नाम ले कर संबोधित करते हैं. इन स्थानों में भी संबोधन के सामान्य नियम लागू होते हैं (*कुत्ते! कमीने! चमचे! हरामज़ादो! मेरी जान! मेरे लाल! मेरे राजा बेटे! प्यारी बिटिया!*). व्याकरण ग्रंथ सभी संज्ञा शब्दों के संबोधन-कारक रूप गिना देते हैं. गुरु ने किसी झोंक में हे जौओ, हे कोदों, हे रासो, हे चौबेओ आदि उदाहरण गिनाये हैं. *जौ, कोदों, सरसों* आदि अगणनीय जड़ संज्ञा

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द हैं और इनका संबोधन होता नहीं है. होने की काल्पनिक स्थिति में रूप क्या बनेंगे, इसका मात्र अनुमान किया जा सकता है.

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों में संबोधन की स्थिति में विकार नहीं होता. राजा का राजू, रज्जी आदि रूप परिवर्तन नियमबद्ध नहीं, वैयक्तिक प्रयोग हैं. पांडेय ~पांडे, चौबे आदि भी व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं. इनके बहुवचन या संबोधन-कारक रूप नहीं हैं. आपके दफ़्तर में दो पांडे बंधु हों, तो अप्रत्यक्ष उल्लेख में भी आप यही कहेंगे–दोनों *पांडे को बुलाओ.*

विदेशी शब्दों का संबोधनकारक : संस्कृत में संबोधन कारक की अपनी सुनिश्चित व्यवस्था है, क्योंकि वहाँ शब्द तीन वचनों और आठ कारकों में निर्दिष्ट होता है और हर शब्द का संबोधनकारक रूप मिलता है. हिंदी में अन्य संज्ञा के रूपों की तरह संबोधन में भी सरलीकरण हुआ है. फिर भी साहित्य में या संस्कृत जानने वाले विद्वानों के लेखन में संस्कृत के संबोधन के रूप दिखायी पड़ते हैं. यहाँ कतिपय प्रमुख उदाहरण दिये जा रहे हैं–

हलंत पुल्लिंग एकवचन–*राजन् श्रीमन् भगवन् महात्मन्*
इकारांत एकवचन–*हरे मुने*
आकारांत स्त्रीलिंग एकवचन–*प्रिये सखे सीते राधे शकुंतले बाले*
ईकारांत स्त्रीलिंग एकवचन–*देवि दासि लक्ष्मि*
उकारांत एकवचन–*गुरो प्रभो*

लेकिन आम बोलचाल में ये शब्द नहीं चलते, न लेखन में इनके (मूल संस्कृत के) बहुवचन रूप चलते हैं. शिष्ट भाषा में बहुवचन रूप *गण* जोड़ कर बोले जाते हैं. *श्रोता गण, अधिकारी गण* आदि.

उर्दू मूल के शब्दों का संबोधन दो तरह से होता है. जो शब्द हिंदी की प्रकृति के अनुसार व्यवहृत होते हैं, उनमें हिंदी के सामान्य नियम लागू होते हैं (*बच्चे, बच्चो, दोस्त, दोस्तो, हरामज़ादे, हरामज़ादो*). कुछ शब्द हिंदी में विकारी नहीं होते (देखें **विदेशी बहुवचन शब्द**). ये शब्द बिना विकार के संबोधन में प्रयुक्त होते हैं (एकवचन *मेरे आका,* बहुवचन *मेहरबान, साहबान, कद्रदाँ, अफ़सरान, मेज़बान*).

अंग्रेज़ी के शब्दों में कहीं मूल रूप ही संबोधन में काम आता है. आवश्यकता पड़ने पर कोई हिंदी शब्द जोड़ कर (*बैटालियन के कैडेट, प्रोबेशनर बंधु, कामरेड/ होमगार्ड भाइयो*) अधिक प्रचलित शब्द हिंदी या उर्दू के नियम के अनुसार बदलते हैं (*?डाक्टरो, *डाक्टरान*).

6. संबोधन के साथ हे, अरे आदि शब्दों के प्रयोग के लिए **संबोधन के शब्द** देखें.

संबोधन के शब्द संबोधनकारक में हमने संबोधन की स्थिति में संज्ञादि शब्दों में होने वाले रूप परिवर्तन की चर्चा की. इस प्रकरण में उन शब्दों के साथ आने

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाले अन्य शब्दों का विवेचन करेंगे. दोनों में भ्रम होने की संभावना तो है, फिर भी सही तथा उचित शब्द के अभाव में इसे भी संबोधन ही कहना पड़ रहा है.

1. संज्ञा के शब्दों के प्रयोग के दो विशिष्ट संदर्भ हैं—बुलाना तथा उल्लेख करना (निदर्शन). इन संदर्भों के अनुसार संबोधन की शब्दावली में अंतर होता है. *कुमारी राधा* बुलाने का शब्द नहीं, उल्लेख का है. इस अंतर के साथ दो और आयाम जुड़ते हैं—सामान्य या औपचारिक प्रसंग; बोलचाल या लेखन द्वारा संबोधन.

सर्वनाम के प्रकरण में हमने देखा कि *तुम* या *आप* का चयन मात्र दो शब्दों के बीच का चयन नहीं, इसके पीछे समाज में व्यक्तियों के बीच सामाजिक संपर्क की संपूर्ण तथा जटिल व्यवस्था काम कर रही है. वहाँ हमने इस व्यवस्था के दो आयाम भी देखे. एक ओर अधिकार है, दूसरी ओर घनिष्ठता है. दोनों के योग से छह स्तरों की कल्पना की जा सकती है. बुलाने में नाम लेने का अधिकार समान या निम्न स्तर के लोगों के संदर्भ में है, उच्च स्तर के लोगों का नाम प्रायः लिया नहीं जाता. यह स्तर भेद रिश्ते, उम्र, पद आदि के संदर्भ में देखा जाता है. उल्लेख में भी जहाँ तक हो सके, पदनाम, रिश्ते आदि से काम चलाया जाता है, नाम से नहीं. *मैनेजर साहब आ* रहे हैं, न कि *शर्मा साहब आ* रहे हैं. अगर नाम लिया भी जाए, वह प्रायः कुलनाम (सरनेम) होगा, व्यक्तिगत नाम नहीं. समान स्तर में घनिष्ठ में व्यक्तिगत नाम, अपरिचित में कुलनाम. इस कारण बड़ा भाई छोटे भाई को नाम से बुलाता है, छोटा बड़े को रिश्ते से. उल्लेख में स्कूल के छात्र अध्यापक का नाम नहीं लेते, कालेज के छात्र *शर्मा जी* आदि कहते हैं. संबोधन में दोनों ही अध्यापक को *गुरु जी, मास्टर जी, साहब, जनाब* आदि कहते हैं. बच्चे पड़ोस के बड़ों के लिए *राम के पिता जी, सामने वाले अंकल* आदि से उल्लेख करते हैं. स्तर भेद की कमी, घनिष्ठता आदि के साथ प्रयोग में विविधता आती जाती है.

1.1. पहले पत्र शैली को लें, जिसमें व्यक्ति दूसरों को संबोधित करता है. उच्च घनिष्ठ में *पूज्य पिता जी*, उच्च अपरिचित में *आदरणीय महोदय* या *आदरणीय शर्मा जी*, समान में *प्रिय गोपाल, प्रिय शीला जी*, निम्न में *गोपाल, चिरंजीव रतन, प्रिय राधा* आदि प्रमुख संबोधन हैं. समान अपरिचित में *प्रिय कुमारी राधा, प्रिय श्री रमेश* आदि औपचारिक संबोधन भी मिल सकते हैं.

मंच आदि औपचारिक संदर्भों में भी उच्च अपरिचित के लिए इसी तरह के संबोधन मिलते हैं. लेकिन औपचारिकता के कारण यहाँ परिचितों के संबोधन भिन्न होते हैं. चाहे पिता जी ही क्यों न मंच पर बैठे हों, पुत्र अपरिचित की तरह उनका संबोधन करता है. समान तथा निम्न के लिए *जी, कुमारी, श्री* आदि शब्द लग जाते हैं.

1.2. अनौपचारिक प्रसंगों में उच्च को प्रायः रिश्ते आदि से संबोधित करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहाँ संभव न हो, *जनाब, साहब, महोदय* आदि या अंग्रेज़ी *सर* का प्रयोग होता है. वक्ता की अति निम्नता की स्थिति में वह *हुज़ूर, सरकार, मालिक* आदि का इस्तेमाल करता है. मैंने कुछ साल पहले दक्षिण में एक कालेज के छात्रों को अपने अध्यापक को *हुज़ूर* कहते सुना था. पता नहीं अब क्या स्थिति है. यह तो नौकर की ओर से मालिक के लिए संबोधन है.

समान अपिरिचित में व्यक्ति *सुनिए भाई, सुनिए साहब* आदि कहता है, घनिष्ठ में *गोपाल, गोपाल जी, शर्मा, शर्मा जी, अरे ओ शर्मा* आदि कह सकता है. **गाली** में हमने देखा कि परिचय बढ़ाने या जताने तथा घनिष्ठता लाने के उद्देश्य से लोग तीव्र गालियों का भी प्रयोग करते हैं. *अबे साले, ओ हरामी* आदि समान स्तर पर मिल सकते हैं.

निम्न घनिष्ठ में (घर के, पड़ोस के बच्चों के लिए) नाम से संबोधन होता है. व्यक्ति उसके साथ *ए, ओ, अरे* जोड़ता है. (*ए रामू, ओ रामू*). अपरिचित में भी *ए, ओ* चलते हैं (*ए लड़के, ओ बाबा*). निम्न अपरिचित में *रे* (स्त्रीलिंग *री*) चल सकते हैं, लेकिन ये व्यंजना में अधिक तिरस्कारसूचक हैं. *अरे* (स्त्रीलिंग *अरी* प्रचलित है ?), *अरे ओ* सामान्य प्रचलन में आ गये हैं. *अरे भई, अरे ओ*. अगर लड़ाई हो, तो गाली के शब्दों का प्रयोग होता है. इस दृष्टि से *अबे* तिरस्कार सूचक शब्द है. *अबे साले* गाली का शब्द है, सामान्य संबोधन में *अबे* नहीं आता.

(ग) व्यक्ति का उल्लेख करते समय *ए, ओ* आदि बुलाने के शब्द नहीं आते और *पूज्य, आदरणीय* आदि विरल होते हैं. ये शब्द भिन्न स्तरों पर संबोधन के हैं. उच्च में रिश्ते द्वारा या *मैनेजर साहब, शर्मा जी, जनाब रिज़वी* आदि से उल्लेख करते हैं. समान तथा उच्च दोनों में *श्री, कुमारी, श्रीमती* के साथ नाम लिया जाता है. निम्न में सिर्फ़ नाम लिया जाता है.

3. संबोधन के शब्दों के बारे में कुछ अन्य बातें देखिए—

3.1. *जनाब* उर्दू शैली का शब्द है, *जी, साहब* बोलचाल की हिंदी के. सवाल उठता है कि व्यक्ति *जी* और *साहब* में कहाँ तक अंतर करता है, किन आधारों पर दोनों में चयन करता है. *साहब* स्वतंत्र अर्थयुक्त शब्द भी है, जो संबोधन में काम आता है. *तुम्हारे साहब कहाँ हैं.* इस कारण यह शब्द भी सीमित संदर्भों में 'जी' लेता है—*साहब जी*. 'जी' मात्र संबोधन का शब्द है, आदर सूचित करता है. केवल संबोधन में ही नहीं, अन्य कुछ कथनों में भी यह आदर दिखाने के लिए प्रयुक्त होता है. जैसे *जी हाँ, जी नहीं. हाँ साहब, नहीं जनाब* आदि भी द्रष्टव्य हैं. 'जी' अकेले हामी का सूचक बन सकता है, यहाँ 'साहब' आदि नहीं आते—*तुम आओगे ? जी*. 'जी' का प्रयोग एक व्यक्ति को सूचित करने के लिए संज्ञा की तरह नहीं आता. *एक साहब आये हैं. *एक जी आये हैं.* संबोधनकारक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में *साहबान है, जिओ नहीं है.*

जी और *साहब* में चयन व्यक्तिगत, परिस्थितिगत कारणों से होता है. यह शैली की विशेषता है कि कोई *रमेश जी, गुप्ता जी* कहता है, कोई *रमेश साहब, गुप्ता साहब*. लेकिन अधिकतर हिंदी नामों के साथ *जी* आता है और मुस्लिम नामों के साथ *साहब*.

3.2. जी 'हाँ, नहीं' से पहले आता है. *हाँ जी, नहीं जी* आदि उर्दू शैली से प्रभावित प्रयोग हैं और दिल्ली के पंजाबी भाषियों में दिखायी पड़ते हैं. थोड़े-से शब्दों में, जो स्वयं संबोधन के शब्द हैं, 'जी' पहले लगता है. *जी जनाब, जी साहब, जी सरकार, जी हुज़ूर*. इन स्थानों में जी 'हाँ' का अर्थ देता है. अन्यथा *जी* शब्दों के बाद में ही आता है.

3.3. जैसे कि ऊपर विवेचन किया गया है. *श्री, श्रीमती, कुमारी* आदि उल्लेख या औपचारिक प्रसंगों में अप्रत्यक्ष संबोधन के लिए आते हैं. प्रायः *श्री रमेश* आदि से व्यक्ति को कोई बुलाता नहीं. लेकिन अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण इनका प्रचलन दिखायी पड़ने लगा है, जो बीच की स्थिति में है. यहाँ लोग अंग्रेज़ी शब्दों से ही काम चलाते हैं—*मिस्टर रमेश, मिस आशा* आदि. महिला मुक्ति आंदोलन के कारण ही शायद *कुमारी* और *श्रीमती* के अंतर को ख़त्म करते हुए *सुश्री* का प्रचलन किया गया है. यह उच्च अपरिचित औपचारिकता तक ही सीमित है. इसकी जगह *मैडम* का भी प्रयोग देखा जा सकता है.

3.4. *श्री* आदि के साथ *जी* आदि का प्रयोग विरल है. अगर बाद में नाम न लिया जाए तो अकेले *श्रीमान जी, श्रीमती जी* समान अपरिचित के संदर्भ में व्यवहृत होते हैं. ये अति आदर के कारण व्यंग्य का भी पुट देते हैं. इसीलिए समान घनिष्ठ में *श्रीमान जी, श्रीमती जी* तथा शब्दों में *हज़रत, हुज़ूर, देवी जी* **व्यंग्य** में ही आते हैं. बहुगुणा (1976) ने बताया है कि *देवी जी* का संबोधन किसी स्त्री में दैवी गुणों के कारण है. पता नहीं उन्होंने कितनी स्त्रियों में दैवी गुण देखे हैं और कितनों को इस कारण *देवी जी* कहा है. पड़ोस की वृद्ध महिला, डाक्टर, प्रख्यात नेता (या नेत्री) किसी को व्यक्तिगत वार्तालाप में संबोधित करते हुए कोई *देवी ज़ी* नहीं कहता (व्यंग्य का पुट न आने देने के कारण). लेकिन *आप देवी के समान हैं, आप तो देवी हैं* (यहाँ 'जी' नहीं है) भिन्न प्रयोग हैं.

3.5. इसी तरह गुरु *हे, अहो* आदि को संबोधनकारक विभक्तियाँ (?) कहते हैं. ये संबोधन के शब्द साहित्यिक शैली के हैं, पुराने काल के संदर्भ में व्यवहृत होते हैं. *हे प्रभो, अहो मित्र*. ये वर्तमान समय में बोलचाल की भाषा के प्रयोग नहीं हैं. 'अजी' पति-पत्नी के लिए परस्पर संबोधन का शब्द है और संभवतः 'ए जी' से व्युत्पन्न है. पहले पति-पत्नी एक दूसरे का नाम नहीं लेते थे. लेकिन अब नवयुग के पति-पत्नी एक दूसरे को व्यक्तिगत नाम ले कर संबोधित करते हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सँभालना, सम्हालना 1. ये दोनों ही रूप प्रचलित हैं. इनकी चर्चा अकर्मक रूप *सँभलना, सम्हलना* पर भी लागू होती है. यह एक शब्द है, जिसमें अनुनासिकता तथा नासिक्य व्यंजन में विकल्प की स्थिति दिखायी पड़ती है. लेकिन यह ऐसा उदाहरण नहीं, जिसमें अनुनासिकता की जगह नासिक्य आए और अन्य व्यंजन प्रभावित न हो. यहाँ विकल्प की स्थिति निम्न प्रकार से है—अनुनासिकता+भ~म्ह

2. ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसा विकल्प अन्य शब्दों में भी दिखायी पड़ता है. *अँधेरी~अन्हेरी, जंभाई~जम्हाई* आदि. इनमें अनुनासिकता वाले रूप ही अधिक प्रचलित हैं, होते जा रहे हैं.

संभावनार्थ/संदेहार्थ क्रियाएँ 1. हिंदी की क्रियाओं को हमने दो वर्गों में बाँटा—तथ्यपरक और तथ्येतर. तथ्येतर क्रियाएँ वे हैं, जिनसे निर्दिष्ट क्रिया व्यापार वस्तु जगत में घटित या घटमान सत्य नहीं, वास्तविक नहीं, बल्कि जिनके होने का अनुमान कर सकते हैं या जिनके संदर्भ में होने की आशा या आशंका कर सकते हैं. दूसरे प्रकार के रूपों को अंग्रेज़ी के व्याकरण ग्रंथ रूप की रचना के आधार पर subjunctive कहते हैं. हिंदी व्याकरण में अर्थ-वैविध्य तथा विभिन्न प्रयोगों के कारण ऊपर के दोनों नाम दिये जाते हैं.

इसकी रूप रचना बहुत सरल है. इसके केवल चार ही रूप मिलते हैं (एकवचन—*जाऊँ, जाओ, जाए,* बहुवचन—*जाएँ*). इसकी जटिलता इसके अर्थ की विविधता में है. हम नहीं जानते कि व्यक्ति आने वाले कार्य व्यापारों के संदर्भ में कितने प्रकार की मानसिक अवस्थाओं से गुज़रता है. इन्हीं अवस्थाओं की अभिव्यक्ति संभावनार्थ रूपों से होती है. कभी हम कोई व्यापार करने या उसके होने की इच्छा करते हैं, कभी व्यापार का सुझाव देते हैं, कभी किसी व्यापार की अनुमति देते हैं या माँगते हैं, अच्छे व्यापार की कामना करते हैं या बुरे व्यापार की आशंका करते हैं, किसी से व्यापार करने की प्रार्थना करते हैं या न करने की हिदायत देते हैं. इन सब संदर्भों में संभावनार्थ क्रियाओं का प्रयोग होता है. भाग्य से ये सारे संदर्भ संरचना के स्तर पर निश्चित रूप से देखे जा सकते हैं. आगे कुछ प्रमुख प्रयोग संदर्भ दे रहा हूँ.

इच्छा, कामना	*मैं चाहता हूँ*	*कि तुम पढ़-लिख कर बड़े बनो.*
	मेरी इच्छा है	
	मेरी कामना है	
आश्वासन	*आप*	*निश्चित रहें.*
		परेशान न हों.
	तुम	*तसल्ली रखो.*
	वह	*चिंता न करे.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदेह	शायद	आज पानी बरसे.
		वे लोग न आएँ.
		पानी पड़ा हो.

आशंका	(कहीं) ऐसा न हो कि वे लोग आ जाएँ ~
	कहीं वे लोग न आ जाएँ.
आशीर्वाद	भगवान तुम्हारा भला करे.
	भगवान करे कि तुम पास हो जाओ.
शाप	उसका सत्यानाश हो.
आज्ञा	मैं जाऊँ ? हम जाएँ ? वह जाए ?
	मेरा आदेश है/कहना है कि तुम चले जाओ.
माँग	हमारी माँग है कि हमें कल छुट्टी मिले.
सुझाव	चलो, कहीं चलें.
	मेरा सुझाव है / मेरी सलाह है कि आप यहीं रहें.
संभावना	यह संभव नहीं है कि वह आए.
	यह संभव है कि वह आ जाए.
	यह कैसे हो सकता है कि तुम बीमार पड़ो और मैं देखने न आऊँ ?
शर्त	अगर वह न आए तो काम कैसे होगा ?
	वे लोग आएँ तो काम हो जाएगा.
विविध	वह आए तो सही. वह आए तो ठीक है उसकी मजाल कि वह मेरे सामने मुँह खोले. वह चाहे आए या न आए. हो न हो ··· सच पूछा जाए तो ··· देखो तो मालूम पड़े. सारा काम कैसे हो ?

2. हमने ऊपर उल्लेख किया कि संभावनार्थ उन्हीं वाक्यों में आता है, जिन वाक्यों में वास्तविक व्यापार का उल्लेख न हो, बल्कि आने वाले व्यापारों के संदर्भ में बात कही गयी हो. यह बात स्पष्ट रूप से संमिश्र वाक्यों में देखी जा सकती है. संमिश्र वाक्य में तथ्यपरक व्यापार तथा तथ्येतर व्यापार का संयोजन नहीं मिलता. इसी संदर्भ में हम देखते हैं कि 'होगा' आदि तथ्येतर क्रियाएँ हैं और संभावनार्थ क्रियाओं के साथ जाती हैं. ऊपर शर्त के पहले वाक्य को देखें. जब तक मैं न कहूँ, वहाँ न/मत जाना. काम ऐसा होना चाहिए, जिससे किसी को परेशानी न हो/कि कोई बरबादी न हो. कमरे इतने बड़े हो/होने चाहिए कि हम आराम से रह सकें आदि वाक्यों में इस संयोजन की विशेषता को देख सकते हैं. आगे के वाक्य देखिए–

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुलिस ने चोर को इतना मारा कि वह मर गया (दोनों तथ्यपरक).

पुलिस ने चोर को इतना तो नहीं मारा कि वह मर जाए . . . (यद्यपि मारना और मरना वास्तविक व्यापार हैं, कारण-कार्य के संदर्भ में, संयोजन संभावित व्यापारों की चर्चा करता है. इस दृष्टि से 'इतना नहीं मारा' वास्तविक व्यापार पर आधारित संभावना सूचित करता है.)

उसे इतना न मारो कि वह मर जाए (दोनों तथ्येतर).

इन वाक्यों में जो अंतर दिखायी पड़ता है, वही आगे के वाक्यों में भी देख सकते हैं.

कमरे ऐसे थे कि हम सब आराम से ठहर गये.

कमरे ऐसे नहीं थे कि हम सब आराम से ठहर जाते.

कमरे ऐसे नहीं हैं कि हम सब आराम से ठहर जाएँ.

कमरे ऐसे हों कि हम सब आराम से ठहर जाएँ/ठहर सकें.

संयुक्त क्रियाएँ प्रायः संज्ञा तथा विशेषण के साथ *करना/होगा* के प्रयोग को ही संयुक्त क्रिया कहा जाता है. विश्लेषण की सुविधा के लिए मैं इनके साथ *देना* को भी लेना चाहूँगा.

1. *राम ने मोहन को पाँच रुपये दिये.* इसमें राम दाता है, मोहन प्राप्तिकर्ता, पाँच रुपये कर्म. मोहन के संदर्भ में यही वाक्य होगा–*मोहन ने राम से पाँच रुपये लिये.* कुछ वाक्य ऐसे हैं, जहाँ भौतिक रूप से कोई चीज़ दी नहीं जाती, बल्कि कारणकर्ता तथा भोक्ता का संबंध होता है–

राम ने मोहन को तकलीफ़ दी.

राम के कारण मोहन को तकलीफ़ हुई.

**मोहन ने राम से तकलीफ़ ली.*

कारण वाले वाक्यों में जहाँ संभव हो, विशेषण+करना का रूपांतरण भी संभव है.

मोहन ने मुझे आश्वासन दिया → मोहन ने मुझे आश्वस्त किया.

मोहन ने मुझे दुख दिया → मोहन ने मुझे दुखी किया.

कुछ ऐसे वाक्य हैं, जहाँ कर्म किसी परिणाम या स्थिति को प्राप्त होता है और यह अर्थ *देना* से व्यक्त होता है. यहाँ भी विशेषण+करना का रूपांतरण संभव है.

उन्होंने संस्था को (नयी) व्यवस्था दी → उन्होंने संस्था को व्यवस्थित किया.

उन्होंने संस्था को नया रूप प्रदान किया.

ऊपर की चर्चा के आधार पर कह सकते हैं कि अर्थ की दृष्टि से *देना* में विविधता है, लेकिन संरचना की दृष्टि से कर्ता+संज्ञा वाक्यांश+कर्म+*देना* की रचना सर्वत्र है. *जवाब देना, धोखा देना, गाली देना, दुख देना, धक्का देना,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तसल्ली देना, सलाह देना जैसे मुहावरेदार प्रयोगों में भी यह बात देखी जा सकती है.

2. *करना* के साथ संयुक्त क्रियाओं में अर्थ, रचना दोनों की दृष्टि से बहुत विविधताएँ हैं. इन्हें आगे के वर्गों में देखेंगे.

2.1. ऊपर *देना* के संदर्भ में हमने कर्ता+कर्म/धारक/भोक्ता/प्राप्तिकर्ता+कर्मपूरक+करना की रचना के बारे में देखा. इस रचना में 'दुखी करना, परेशान करना, बंद करना, साफ़ करना, बड़ा करना, ठीक करना, पैदा करना' आदि सैकड़ों रूप आते हैं.

मैंने बच्चों को विदा किया (~विदाई दी).

मैंने काम शुरू किया.

2.2. संज्ञा+करना के कई प्रयोग हैं. (अ) संज्ञा+करना से पहले *का/के/की* आते हैं, *को* या *के लिए* नहीं. *पढ़ने की कोशिश करना* सही प्रयोग है, *पढ़ने के लिए कोशिश करना* अमानक प्रयोग है और *पढ़ने को कोशिश करना* गलत प्रयोग. कई भाषाओं में *बकरी को दो टुकड़े करना* स्वाभाविक रचना है, क्योंकि *बकरी को* कर्म है और *दो टुकड़े* पूरक. हिंदी में *बकरी के दो टुकड़े करना* ही सही प्रयोग है. इस कारण प्रायः चर्चा होती है कि इसमें कर्म क्या है–'बकरी' या 'टुकड़े'? ऐसी चर्चा में हमें अर्थ तथा रचना दोनों को ही ध्यान में रखना होगा. संज्ञा+करना की रचनाओं में कर्म की चर्चा विवादास्पद प्रश्न है. कुछ उदाहरण देखिए–

मैंने जाने की कोशिश की.

बस का इंतज़ार किया.

जाने की तैयारी की.

*घर की सफ़ाई की (*घर को सफ़ाई की*

~घर को साफ़ किया).

काम की शुरुआत की (काम शुरू किया).

जाने की बात की.

गोपाल से राम की सिफ़ारिश की.

घर की याद की (देखें **याद**).

(आ) कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं, जिनका व्यापार प्रायः परस्पर होता है. *राम सीता से शादी करे, तो सीता भी तो राम से शादी करेगी.* इस कारण सहकर्ता के साथ 'से' आता है. लेकिन यहाँ भी विशेषण के रूप में अन्य संज्ञा हो, तो 'का/के/की' आएँगे.

राम ने सीता से प्यार किया.

लड़ाई की.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(घर की) बात की.
(स्कूल की) चर्चा की.
(ज़ोर की) लड़ाई की.

(इ) व्यवहार के अर्थ में जो संज्ञाएँ हैं, उनमें भोक्ता/अनुभवकर्ता के साथ के साथ आता है.

तुमने मेरे साथ *अच्छा व्यवहार किया.*
अच्छा बरताव/अच्छा सलूक नहीं किया.
धोखा/विश्वासघात/मज़ाक किया.

(ई) कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं, जिनमें कर्ता वास्तव में धारणा या भावना का आधार या लक्ष्य है.

मैंने तुम पर *विश्वास/अविश्वास किया.*
भरोसा किया.

3. संयुक्त क्रियाओं के संदर्भ में कुछ समस्याएँ भी हैं. ऊपर की सारी चर्चा में को+संज्ञा+देना, का+संज्ञा+करना की रचनाएँ ही मिलती हैं. लेकिन कुछ प्रयोग अपवादस्वरूप मिलते हैं. इस चर्चा का एक अतिरिक्त पहलू है संज्ञा तथा विशेषण का अंतर. *मैंने बात स्वीकार की* यह प्रयोग नियमानुसार है, अगर *स्वीकार* विशेषण हो. आज हिंदी में *स्वीकार* विशेषण ही है, *स्वीकृति* संज्ञा है. *उपकार, सत्कार* आदि संज्ञाएँ ही हैं. इस परिवर्तन का संभावित कारण नीचे दे रहा हूँ. आगे के उदाहरण देखिए—

*मैंने काम शुरू/प्रारंभ/*शुरुआत किया (~की शुरुआत की).*
*मैंने राम को माफ़/क्षमा/*माफ़ी किया (~को माफ़ी दी).*
*मैं एक बात महसूस/अनुभव/*एहसास कर रहा हूँ (~का एहसास· ··)*
*मैनेजर ने छुट्टी मंज़ूर/स्वीकार/*मंज़ूरी की.*

उदाहरणों से स्पष्ट है कि उर्दू के शब्दों में इन वाक्यों में संज्ञा शब्द नहीं आता. मेरा प्रस्ताव है कि हिंदी की बोलचाल की भाषा का आधार उर्दू शैली था और उर्दू के शब्दों का प्रयोग निश्चित हो चुका था. बाद में (और निकट भूत में) हिंदी भाषा का संस्कारित व्यवहार शुरू हुआ, तब इस रचना में सही विशेषण शब्दों के अभाव में शायद संज्ञा शब्द इस्तेमाल में आ गये होंगे. अब भी *शब्द प्रयोग करना~शब्द का इस्तेमाल करना, भवन निर्माण करना* आदि कई प्रयोग चलते हैं. इस अर्थ में पहले *स्वीकार* संज्ञा ही था. बाद में *स्वीकृत* आ जाने पर वह विशेषण के वर्ग में आ गया. नये प्रयोग में *तारीख़ तय/निश्चित करना, दर्द का अनुभव (~दर्द अनुभव) करना, काम का शुभारंभ/अंत करना, छुट्टी स्वीकृत करना* आदि नियमानुसार बनते-सुधरते जा रहे हैं.

3.1. *उसने मुझे दस रुपये दिये* इस वाक्य में पैसे देने के स्वरूप का उल्लेख

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं है. पैसे उधार में या दान में या बख़्शिश के रूप में दिये जा सकते हैं. *उसने मुझे सौ रुपये उधार दिये*~*उधार में दिये* यहाँ 'उधार' पूरक आदि नहीं बल्कि 'उधार में' का संक्षिप्त रूप है. इसी तरह *करना* के साथ वाक्य बनेंगे– *उसने मुझे 10 रुपये दान/भेंट/नज़र किये*. इसमें अंतर्निहित वाक्य *दस रुपये का दान किया* नहीं है. यहाँ *(दान) करना* 'देना' का पर्याय है. यह वाक्य रचना केवल 'देना' के ही संदर्भ में आती है. ऐसे विशेष प्रयोगों की चर्चा के लिए देखिए **दान, याद**.

4. हिंदी में 'कर' शब्द रचना की दृष्टि से बहुत उत्पादक शब्द है. प्रायः सभी नये शब्दों के साथ इसे जोड़ कर क्रिया वाक्यांश की रचना कर सकते हैं. अंग्रेज़ी शब्दों के साथ इसके प्रयोग देखिए–*फ़ोन करना, बाइंडिंग करना, पास करना, लव करना, इश्यू करना, प्रोग्रेस करना* आदि सैकड़ों प्रयोगों के कुछ उदाहरण हैं. यही बात संस्कृत मूल से बने क्रिया रूपों में देखी जा सकती है–*स्मरण करना, आदर करना, अधिकार करना, युद्ध करना* आदि. देखा गया है कि मूल भाषाओं में या अन्य कई भाषाओं में भी इन संदर्भों में अकेला क्रिया धातु होता है. इस कारण *बात स्वीकार करना* में 'बात' को कर्म तथा 'स्वीकार करना' को संयुक्त क्रिया धातु मानने की बात कही जाती है. लेकिन *मैंने जानने की कोशिश की* में 'कोशिश' ही कर्म हो सकता है.

4.1. संयुक्त धातु बनाने की हिंदी की प्रवृत्ति इतनी प्रबल है कि क्षेत्रीय रूप से भी इसमें बहुत विविधता दिखायी पड़ती है. *खोलना* की जगह 'खुला करना', *ख़रीदना* के लिए 'ख़रीद करना' क्षेत्रीय प्रयोग हैं. बच्चों की भाषा में *सोना* 'निन्नी करना' है, *नहाना* 'नहाई करना' है, *भौंकना* 'भों-भों करना' है. सामान्य भाषा में सैकड़ों निकट पर्याय मिलते हैं, जिनमें एक 'करना' से बना होता है– *नहाना–स्नान करना, खाना–भोजन करना, पहनना–धारण करना, पढ़ना–वाचन करना* आदि. इन पर्यायों में अब प्रमुख रूप से शैली का अंतर है. *स्वीकारना, नकारना* आदि केवल सीमित साहित्यिक प्रयोग (experimentation) हैं, जन भाषा पर इनका प्रभाव नहीं पड़ा है.

4.2. हिंदी में विदेशी शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में इस प्रकरण की चर्चा के अनुसार कुछ विविधता दिखायी पड़ती है. व्यक्ति *आप मेरी हेल्प कीजिए– आप मुझे हेल्प कीजिए–आप मुझे हेल्प दीजिए* तीनों कह सकता है, क्योंकि हम *हेल्प* को संज्ञा, विशेषण दोनों संदर्भों में मान सकते हैं. इन प्रयोगों के मानकीकरण में अभी बहुत समय लगेगा.

5. *होना* के अभाव में संयुक्त क्रिया की चर्चा अधूरी है. इसके बारे में आम राय है कि यह *करना* का मिथ्यावाचक है. लेकिन सैकड़ों प्रयोग मिलते हैं, जिनका *करना* रूप संभव नहीं है. *बारिश होना, फ़सल होना,* ठंड

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होना, ग़रीब होना, रात होना, बीमार होना (?बीमार करना) ऐसे कुछ उदाहरण हैं

ऊपर 3.1 के दस रुपये दान किये के अलावा ऊपर 'करना' के जितने वाक्य हैं, सब 'होना' से रूपांतरित हो सकते हैं. मिथ्यावाच्य होने के कारण इनमें प्रायः मूल कर्ता का उल्लेख नहीं होगा.

बच्चे विदा हुए.

घर की सफ़ाई हो गयी.

(उन दोनों में) स्कूल की चर्चा हो रही थी.

(वहाँ/?उन लोगों की ओर से) मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं हुआ.

अब तुम पर किसी को भरोसा नहीं होगा.

हमारा काम शुरू/आरंभ/*शुरुआत हुआ.

इन प्रयोगों में होना की जगह करना का चयन तथा करना वाले वाक्य का गठन संदर्भ तथा अंतर्निहित अर्थ के आधार पर होगा, किसी सामान्य नियम के आधार पर नहीं.

ऊपर उल्लेख किया गया है कि व्यवस्था देना, तसल्ली देना, आश्वासन देना, दुख देना, पुरस्कार देना आदि प्रयोग 'होना' से रूपांतरित हो सकते हैं, बशर्ते कि विशेषण+होना का रूप हो ।

6. यद्यपि परंपरा के अनुसार काम करना, पैदा करना आदि को संयुक्त 'क्रिया' कह रहा हूँ, काम, पैदा आदि क्रिया वाक्यांश के बाहर की इकाइयाँ हैं. इस बात की जाँच **न, नहीं, मत, ना** के प्रयोग से हो सकती है, जो करना, होना से पहले आते हैं, काम, पैदा से पहले नहीं.

संयुक्त शब्द संयुक्त शब्द से तात्पर्य है कि दोनों (हिंदी में तीन शब्दों के संयुक्त शब्द नहीं मिलते) शब्द सार्थक हों और दोनों शब्द मिल कर एक समन्वित अर्थ दें. कुछ भाषावैज्ञानिक वाक्यगत अर्थ देने वाले वाक्यांश संबंध को संयुक्त शब्द नहीं मानते, जैसे मिठबोला (क्रियाविशेषण-क्रिया), भिखमंगा (कर्म-क्रिया), छुटभैया (विशेषण-संज्ञा), घरघुस्सू (स्थानवाचक-क्रिया). यह सही है कि वाक्यीय संबंध बताने वाले प्रयोगों का विश्लेषण जटिल होता है, लेकिन उन्हें शब्द स्तर पर देखना विश्लेषण को आसान बनाता है.

1. वाक्यीय संबंध न प्रकट करने वाले संयुक्त शब्द समवर्गीय होते हैं. इनमें भी अर्थ का दुहरा स्तर देख सकते हैं. माँ-बाप, भाई-बहन, स्त्री-पुरुष, छोटा-बड़ा, आना-जाना विपरीत अर्थ वाले शब्द हैं और संयुक्त हो कर दोनों के मेल या दोनों के सम्मिलित (विविध) अर्थ की स्थिति बताते हैं. डाँट-डपट, भाग-दौड़, थका-माँदा पर्यायों के योग से बने शब्द हैं.

1.1. संज्ञा से बने शब्द—घर-द्वार, करम-धरम, दान-पुण्य, सुध-बुध, हाव-भाव,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाल-चाल, हेल-मेल, मार-पीट, काट-छाँट, जान-पहचान, सूझ-बूझ रूप-रंग, जप-तप, नाप-तोल, भूल-चूक, बोल-चाल, लेखा-जोखा, पूछ-ताछ, जाँच-पड़ताल, दिन-दहाड़े, डील-डौल, गली-कूचे, लेन-देन.

विशेषण से बने शब्द–*गलत-सलत* (*'सलत'* सार्थक है?), *थका-माँदा, भारी-भरकम.*

क्रिया से बने शब्द–इस संबंध में हमने **क्रिया** प्रकरण में *खा-पी, लिख-पढ़, मार-पीट* आदि संयुक्त धातुओं की चर्चा की. कुछ संयुक्त शब्द हैं, जो संयुक्त धातु के रूप में नहीं आते (*! खींच-तान कर*), कुछ संयुक्त शब्द हैं, जो संयुक्त क्रिया शब्द नहीं बनते (* . . . *की चढ़-उतर, *चढ़ा-उतरी*), कुछ शब्दों में दोनों प्रयोग हैं (*कह-सुन, कहासुनी; लिख-पढ़, लिखा-पढ़ी*). क्रिया के संयुक्त शब्द तीन प्रकार के हैं.

(अ) धातु संयोग से बने स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द–*लेन-देन, काट-छाँट* आदि

(आ) धातु+आ, धातु+ई से बने स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द–

एक ही धातु में	*मारामारी, देखादेखी, दौड़ादौड़ी*
भिन्न धातुओं में	*छीनाझपटी, उठापटकी, कहासुनी, खींचातानी, भागा-दौड़ी, लुकाछिपी, ठोंकापीटी, लिखापढ़ी, लीपापोती, मारापीटी, ?आपाधापी*

(इ) भिन्न व्याकरणिक कोटि वाले शब्द–(क) *मिट-मिटा जाना, मर-मरा जाना, गिर-गिरा जाना.* यहाँ दूसरे शब्द का पुनरुक्ति के अतिरिक्त कोई अर्थ नहीं है. (ख) *लिखी-लिखायी रिपोर्ट खो गयी. किया-कराया काम नष्ट हो गया.* यहाँ सकर्मक तथा प्रेरणार्थक का योग है. *पली-पलायी लड़की, रखे-रखाये कपड़े, कटे-कटाये, धुले-धुलाये, सिले-सिलाये* जैसे मिथ्यावाच्य तथा प्रेरणार्थक का भी योग मिलता है. यहाँ प्रेरणार्थक विविधता दिखाने के लिए आया है. मिथ्यावाच्य तथा सकर्मक का योग *बनी-बनायी, लगे-लगाये* जैसे शब्दों में मिलता है. आप देख सकते हैं कि शब्द के व्याकरणिक अर्थ भले भिन्न हों, संयुक्त शब्द का उच्चरित रूप एक-सा है, इनमें उच्चारण में तुक है. वास्तव में भिन्न कोटियों के शब्दों के चयन का आधार रचना संबंधी नहीं, उच्चारण संबंधी है. इन संयुक्त शब्दों का समन्वित अर्थ उस क्रिया व्यापार पर ज़ोर देना है. इस बात को *वह पिट-पिटा कर गया, कुछ होने-हवाने का नहीं* में देख सकते हैं. कोई पिट सकता है, अपने को पिटाए क्यों ? *होना* का प्रेरणार्थक (?) रूप *हवाना* इस संयुक्त शब्द के अलावा अन्यत्र प्रयोग में नहीं आता.

1.2. ऊपर के अधिकतर शब्द द्वंद्व समास की कोटि में आ जाते हैं. यद्यपि यह कहा जाता है कि द्वंद्व समास के दो शब्दों के बीच हाइफ़न आता है, फिर भी स्थिति स्पष्ट नहीं है. 1.1 के शब्दों में *सुधबुध, हावभाव, हालचाल, भूलचूक,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूझबूझ, पूछताछ, मारपीट आदि प्राय: मिला कर लिखे जाते हैं. *जान-पहचान, जाँच-पड़ताल* मिला कर नहीं लिखे जाते. क्या शब्द की लंबाई भी कारण हो सकता है ?

छीनाझपटी आदि शब्दों को मिला कर लिखा जा सकता है, क्योंकि ··· आ + ··· ई के कारण ये रूप अस्वतंत्र बन गये हैं. व्याकरणिक कोटि वाले संयुक्त क्रिया शब्दों को मिला कर लिखने का प्रचलन है.

संस्कारित शब्द (Sanskritised words) हिंदी भाषा के विकास क्रम में कई स्वन परिवर्तन हुए थे और बोलियों में तद्भव शब्दों का विकास हो चुका था. खड़ी बोली हिंदी में भी कई तद्भव शब्द प्रयुक्त होते थे. लेकिन पिछली शताब्दी में हिंदी और उर्दू के संघर्ष के कारण विद्वानों ने संस्कृत से शब्द ग्रहण करने की शुरुआत की. बाद में संस्कृत शब्दों के आगमन के साथ पहले से प्रचलित तद्भव शब्दों का भी संस्कारीकरण होने लगा. पहले हिंदी में *धरम, करम* जैसे रूप थे. *धार्मिक, युगधर्म* जैसे शब्दों के कारण *धरम* समाप्त होने लगा. *कर्मनिष्ठ, कर्मठ, कर्मचारी, कर्मवाद* जैसे शब्दों के बाद *करम* ख़त्म हो रहा है. यह बात लिखित भाषा में और स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है. कुछ समय बाद 'करम' मुहावरों तक (*मेरे तो करम फूट गये, करम जली*) सीमित रह जाएगा. शब्दों का संस्कारीकरण हिंदी में धीरे-धीरे चल रहा है (व्यक्तियों के प्रयत्नों से नहीं, बल्कि प्रवृत्ति के रूप में). जो शब्द कुछ दशकों पहले पंडिताऊ समझे जाते थे, वे अब प्रयोग में आ गये हैं. संस्कारित शब्द हिंदी में ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं में भी मिलते हैं.

संक्षिप्त शब्द बड़े शब्दों का उच्चारण या लेखन की सुविधा के लिए छोटा करना भाषा भाषियों की सामान्य प्रवृत्ति है. अंग्रेज़ी भाषा में यह प्रवृत्ति पुरानी है और बड़े शब्दों की जगह सैकड़ों संक्षिप्त शब्द प्रयोग में आते हैं. इस दुहरी व्यवस्था को हम हिंदी में अंग्रेज़ी से लिये शब्दों में भी देख सकते हैं—*फ़ोन~टेलीफ़ोन, फ़ोटो~फ़ोटोग्राफ़, टी०वी०~टेलीविज़न, प्लेन~एयरोप्लेन* आदि. हिंदी में बोलचाल के स्तर पर शब्दों का संक्षिप्तीकरण ज़्यादा नहीं है. गाली, व्यंग्य, अव्यक्त कथन आदि कुछ विशिष्ट व्यवहार क्षेत्रों में संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है, लेकिन भाषिक प्रवृत्ति के रूप में यह हिंदी में नहीं हैं. शायद एक कारण यह है कि भाषा के दीर्घकालीन प्रयोग के आधार पर यह प्रवृत्ति उभरती है और मानक हिंदी की प्रयोग अवधि अपेक्षाकृत कम है.

लेखन के स्तर पर संक्षेप के कुछ उदाहरण हिंदी में मिलते हैं. जैसे डा० (डाक्टर), प्रो० (प्रोफ़ेसर), उदा० (उदाहरणार्थ), रु० (रुपया), भू० (भूतपूर्व), स्व० (स्वर्गीय). *उदा०* को छोड़ कर शेष सभी व्यक्तिवाचक नामों के विशेषण के रूप में आते हैं; और वाक्य के भीतर ये संक्षिप्त रूप शब्द की जगह नहीं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिखे जा सकते हैं. *मैं डा० शर्मा से मिला जो प्रसिद्ध सर्जन स्व० तिवारी के भाँजे हैं. *मैं अपने लड़के को डा० बनाना चाहता हूँ.

संज्ञा-रूप परिवर्तन संज्ञाएँ दो प्रकार की हैं–पुल्लिग और स्त्रीलिंग और ये वचन की कोटि के लिए बदलती हैं. परसर्ग से पहले संज्ञाओं में कारक की कोटि के लिए रूप परिवर्तन होता है. यहाँ संज्ञा शब्दों में रूप परिवर्तन को विश्लेषित किया जा रहा है.

1. रूप परिवर्तन की दृष्टि से हम हिंदी के संज्ञा शब्दों को चार वर्गों में बाँट सकते हैं–

पुल्लिग शब्द	वर्ग 1	विकारी आकारांत पुल्लिग शब्द (*लड़का, घोड़ा, कमरा*)
	वर्ग 2	अविकारी आकारांत पुल्लिग शब्द तथा अन्य सभी

वर्ग 2 में *पिता*, चाचा, *मामा*, दादा, *नाना* आदि रिश्ते के शब्द, *राजा*, *नेता*, *योद्धा*, *वक्ता*, *श्रोता*, *निर्माता*, *दाता* आदि संस्कृत शब्द, *अगुआ*, *मुखिया* आदि हिंदी के शब्द सम्मिलित हैं. 'नेता' (*इंदिरा गांधी देश की नेता*), 'वक्ता' (*आज की वक्ता श्रीमती सुशीला हैं*), 'मुखिया' आदि शब्दों के बारे में कहा जा सकता है कि ये व्यापार सूचक शब्द हैं, अतः दोनों लिंगों में आते हैं. भाषा में फुटकर खाते के कारण इन्हें पुल्लिग में ही रख सकते हैं और सिवाय प्रत्यक्ष स्त्रीलिंग बहुवचन के (*आज की दोनों वक्ता या वक्ताएँ?*) अन्य बहुवचन रूपों में फ़र्क नहीं पड़ेता. प्रत्यक्ष रूप में भी अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है (*हमारी दो नेता या हमारी दो नेताएँ, दोनों गाँवों की मुखिया या मुखियाँ या मुखियाएँ?*). अन्य स्वरांत शब्द हैं घर, कवि, माली, गुरु, डाकू. कामता प्रसाद गुरु ने चौबे, जौ, रासो, कोदों आदि शब्द दिये हैं और उनके रूप परिवर्तन(!) का उल्लेख किया है. लेकिन चौबे व्यक्तिवाचक संज्ञा है और जौ आदि अगणनीय संज्ञा शब्द हैं और इन सबका रूप परिवर्तन नहीं होता. मैंने कहीं किसी को जौ या कोदों के चार-पाँच दानों को हे *जौओ*, हे कोदों आदि से संबोधित करते नहीं सुना है. रेडियो आदि विदेशी शब्द हैं. इनके रूप परिवर्तन की स्थिति स्पष्ट नहीं. *?इन रेडियों को ले जाओ*. *पहिया*, *दिया* आदि /या/ अंत वाले शब्द वर्ग 1 में ही जाते हैं.

स्त्रीलिंग शब्द	वर्ग 3	इकारांत, ईकारांत तथा याकारांत शब्द (*जाति, स्त्री, लड़की, घड़ी, बुढ़िया, चिड़िया, खटिया*).
	वर्ग 4	अन्य स्वरांत स्त्रीलिंग शब्द (*बहन, किताब, माता, लता, वस्तु, बहू, गौ*).

2. अब हम इन संज्ञा शब्दों के रूप परिवर्तन को निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट कर सकते हैं–

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	एकवचन			बहुवचन		
	प्रत्यक्ष	तिर्यक	संबोधन	प्रत्यक्ष	तिर्यक	संबोधन
पुल्लिग वर्ग 1	वर्ग सूचक शब्द	ए	ए	ए	ओं	ओ
वर्ग 2		ϕ	ϕ	ϕ		
स्त्रीलिंग वर्ग 3		ϕ	ϕ	आँ		
वर्ग 4		ϕ	ϕ	एँ		

उदाहरण–

वर्ग 1	लड़का	लड़के (ने)	लड़के !	लड़के	लड़कों (ने)	लड़को !
वर्ग 2	राजा	राजा (ने)	राजा !	राजा	राजाओं (ने)	राजाओ !
	मित्र	मित्र (ने)	मित्र !	मित्र	मित्रों (ने)	मित्रो !
	भाई	भाई (ने)	भाई !	भाई	भाइयों (ने)	भाइयो !
	डाकू	डाकू (ने)	डाकू !	डाकू	डाकुओं (ने)	डाकुओ !
	मुखिया	मुखिया (ने)	मुखिया !	मुखिया	मुखियों (ने)	?
वर्ग 3	लड़की	लड़की (ने)	लड़की !	लड़कियाँ	लड़कियों (ने)	लड़कियो !
	बुढ़िया	बुढ़िया (ने)	बुढ़िया !	बुढ़ियाँ	बुढ़ियों (ने)	बुढ़ियो !
वर्ग 4	बहन	बहन (ने)	बहन !	बहनें	बहनों (ने)	बहनो !
	माता	माता (ने)	माता !	माताएँ	माताओं (ने)	माताओ !
	बहू	बहू (ने)	बहू !	बहुएँ	बहुओं (ने)	बहुओ !

3. वचन तथा कारक की कोटियों के प्रत्यय लेते समय संज्ञा शब्दों में जो रूपस्वनिमिक परिवर्तन होते हैं, उन्हें निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं.

(अ) वर्ग 1 तथा 2 और 3 के याकारांत शब्दों में प्रत्यय से पहले अंतिम /आ/ का लोप होता है. वर्ग 1 की संज्ञाओं में बहुवचन रूप /ए/ है, लेकिन प्रत्यक्ष रूप के /आ/ का लोप हो जाता है. चाहें तो इसे रूप /आ → ए/ मान सकते हैं. कुछ भाषावैज्ञानिकों ने वर्ग 1 का कल्पित मूल रूप /लड़क्/ माना है, जिसमें /आ, ए/ आदि जुड़ते हैं. यह विश्लेषण दो कारणों से कमज़ोर पड़ता है. हमें बाकी सभी संज्ञाओं के भी कल्पित मूल रूप तथा प्रत्यक्ष एकवचन प्रत्यय की बात करनी होगी. दूसरे, भले यह विश्लेषण भाषाविज्ञान में भाषा की गुत्थियाँ सुलझाने में उपयोगी हो, शैक्षिक व्याकरणों में यह चर्चा भ्रमात्मक होगी. देखें **रूप, रूपिम.**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुखियों ने, *बुढ़ियों ने* आदि शब्दों से /आ/ के लोप की भी बात कह सकते हैं, क्योंकि वर्ग 2 के अन्य कुछ शब्दों में भी सीमित क्षेत्रों में /आ/ का लोप देख सकते हैं, जिससे ये वर्ग 1 के समान व्यवहार में आते हैं. *बाप-दादे*, *बाप-दादों*, *राजे-महाराजे*. चर्चित शब्दों की प्रयोग विरलता के कारण सही विश्लेषण पर पहुँचने में कठिनाई होती है. कहीं-कहीं हमें *बुढ़ियाएँ-बुढ़ियाओं* आदि प्रयोग भी मिलते हैं और धीरेंद्र वर्मा अपनी क्षेत्रीय विशेषता के कारण *चिड़ियें* बोलते थे. ये प्रयोग-विशेष हमारे नियम के बाहर के क्षेत्रीय प्रयोग हैं.

(आ) प्रत्यक्ष रूप के अंत के दीर्घ स्वर /ई/ तथा /ऊ/ ह्रस्व हो जाते हैं.

(इ) /इ/ के बाद स्वर आने पर /य/ का आगम होता है. वैसे दो स्वरों के बीच /य/ या /व/ के आगम की स्थिति हमेशा बनी रहती है.

-स् संस्कृत का यह प्रत्यय हिंदी के संज्ञा शब्दों से हट गया है और ये शब्द व्यंजनांत लिखे जाते हैं. *नभ* (नभस्), *मन* (मनस्), *यश* (यशस्).

2. चंद्रमस् का प्रथमा विभक्ति एकवचन शब्द चंद्रमाः है, अतः ऊपर के सारे शब्दों के संदर्भ में यह माना जा सकता है कि संस्कृत प्रातिपदिक से नहीं, बल्कि प्रथमा विभक्ति से विसर्ग हटने पर हिंदी का रूप मिलता है. अन्यथा *चंद्रमा* जैसे शब्दों के बारे में निश्चय करना मुश्किल हो जाता.

3. ऊपर के नियम 2 को अन्य पुंल्लिग शब्दों में भी देख सकते हैं, जहाँ हिंदी शब्द प्रथमा विभक्ति से गृहीत होते हैं.

4. ऊपर 1 के शब्दों में विसर्ग की उपस्थिति संस्कृत से गृहीत व्युत्पन्न शब्दों में देखी जा सकती है. *शिरस्त्राण*, *शिरच्छेद*, *पयोधर* (पयः+धर), *मनोभाव* आदि (देखें **संधि**). कहीं सादृश्य से गलत प्रयोग भी मिलते हैं, जो इस बात की पुष्टि करते हैं. जैसे *मनोकामना* (मनस्).

सक *सक* वृत्तिवाचक क्रिया है और हिंदी में दो अर्थों में प्रयुक्त होता है.

1. कुशलता, निपुणता, दक्षता सूचक अर्थ में *सकता है* आदि अपूर्ण पक्ष की क्रियाएँ आती हैं.

क्या तुम तैर सकते हो?   *हाँ, तैर सकता हूँ.*
नहीं, मैं तैर नहीं सकता.

कुशलता सूचक सक भूतकाल में आता है (*मैं हिंदी बोल नहीं सकता था*), लेकिन पूर्ण पक्ष में नहीं आता (**मैं हिंदी बोल नहीं सका*). *मैं जा नहीं सका* सिर्फ़ असमर्थता सूचित करता है, जो सक का दूसरा अर्थ है. भविष्य रूप सकूँगा निपुणता की संभावना नहीं बताता. अगर भविष्य में निपुणता प्राप्त करने की बात कहना चाहे, तो वक्ता कहेगा *मैं तैरना सीख लूँगा*. 'सकूँगा' भी सामर्थ्य-सूचक ही है. कुशलतासूचक सक न विधि में आता है, न संभावनार्थ में, न 'रहा' के साथ.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1.1. कुशलता प्रकट करने के लिए सक की जगह ले का भी प्रयोग होता है. *क्या तुम हिंदी पढ़ सकते हो ? मैं हिंदी पढ़ तो नहीं सकता, बोल लेता हूँ.* 'सक' की तरह यह भी पूर्ण पक्ष में नहीं आता और रंजक क्रियाओं की तरह नहीं के साथ भी नहीं आता. 'ले' पूर्ण क्षमता तो नहीं, किसी तरह वह कार्य पूरा कर देने की क्षमता सूचित करता है. *तुम हिंदी पढ़ सकते हो ? अच्छी तरह नहीं पढ़ सकता, धीरे-धीरे किसी तरह पढ़ लेता हूँ.* पूर्ण रूप से कुशलता के अर्थ में भविष्य रूप *लेगा* भी नहीं आता लेकिन सामर्थ्य की दृष्टि से यह प्रयोग मिलता है. **मैं अगले साल हिंदी बोल लूँगा. मैं यह काम जल्दी कर लूँगा.*

2. सक से सामर्थ्य या क्षमता सूचित होती है. *मैं बारिश के कारण बाज़ार नहीं जा सका* में जाने की असमर्थता प्रकट होती है. इस अर्थ में भी सक विधि, संभावना (*मैं चाहता हूँ कि आप जा सकें) में तथा 'रहा' के साथ नहीं आता. इसके प्रयोग की कई विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं. आगे इनकी चर्चा करेंगे. (अ) पूर्ण पक्ष में सक 'नहीं' के साथ ही आता है और असमर्थता का अर्थ देता है. *मैं कल बाज़ार नहीं जा सका. वे लोग कुछ कह नहीं सके. हम पूरी फ़िल्म नहीं देख सके. ?मैं स्कूल जा सका. *क्या तुम आ सके ?* कुछ विशेष संरचनागत परिस्थितियों में बिना 'नहीं' वाला वाक्य प्रयुक्त होता है. *किसी तरह से बड़ी मुश्किल से हम वहाँ पहुँच सके. बड़ी मुश्किल से मैं गाड़ी पकड़ सका. बड़ी कोशिशों के बाद ही मैं यह काम पूरा कर सका. क्या तुम उनसे मिल सके थे ? क्या सब समय पर पहुँच सके थे ?* (आ) अपूर्ण पक्ष में सक दो भिन्न अर्थ देता है–समर्थता या असमर्थता और अनिच्छा. *क्या आप जा सकते हैं ?* इस प्रश्न में सामर्थ्य, इच्छा दोनों के बारे में जानकारी अपेक्षित है. उत्तर में *मैं नहीं जा सकता* कहा जाए, तो उसमें भी दोनों अर्थ निहित हैं. अनिच्छा की स्थिति में व्यक्ति *मैं* पर अधिक बल (देखें **बलाघात**) देगा. अगर अर्थ भ्रम को हटाना चाहे, तो वक्ता कहेगा *क्षमा कीजिए, मैं नहीं जा सकता.* अलग से *मैं नहीं जा सकूँगा* ग्रहणीय है, क्योंकि *सकूँगा* केवल असमर्थता का अर्थ देता है. (इ) प्रायः माना जाता है कि *सकता है* वर्तमान काल है और *सकूँगा* भविष्य. लेकिन असमर्थता या अनिच्छा के लिए कोई काल की पाबंदी नहीं है. *मैं नहीं जा सकता* जैसे आज सत्य है वैसे कल भी होगा. भविष्य रूप के संदर्भ में हमने देखा कि वह संभावना सूचित करता है. यह बात *सकूँगा* पर भी लागू होती है. *क्या आप जा सकेंगे* से हम सामर्थ्य या इच्छा की संभावना के बारे में पूछते हैं. संभावना वाली बात इन वाक्यों में देखी जा सकती है–*मुझे आशा नहीं कि वह यह काम कर सकेगा (*सकता है). मुझे नहीं लगता कि तुम दस बजे आ सकोगे (~आओगे, ~*आ सकते हो).* इस आधार पर कहा जा सकता है कि आगे के ये दोनों वाक्य समानार्थी हैं–*मुझे नहीं लगता कि वह आ सकेगा. वह नहीं आ सकेगा.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी कारण *सकता है*, *सकेगा* दोनों एक ही 'काल' में प्रयुक्त होते हैं—*तुम मुझे दस रुपये दे सकते हो ? माफ़ करो, अभी मैं नहीं दे सकूँगा.*

2.1. सामर्थ्य सूचक *सक* की जगह कई जगह *पा* भी आता है (देखें **पाना**). उल्लेखनीय है कि *पाना* केवल अक्षमता या अशक्तता सूचित करना है, अनिच्छा नहीं.

3. *सक* के प्रयोग की एक संरचनागत विशेषता है. शर्त वाले वाक्यों में, बीते काल के संदर्भ में अपूर्ण पक्ष की क्रिया बिना सहायक क्रिया के आती है. *अगर वह आता, तो मैं भी उसके साथ आ जाता.* लेकिन सदैव यहाँ *सकता था* का प्रयोग होगा.

अगर तुम कहते, तो मैं जा सकता था (~चला जाता).

?अगर मैं जा सकता था, तो चला गया होता.

सचाई सच से बनने वाले शब्दों में वर्तनी की भिन्नता दिखायी पड़ती है—*सच, सच्चा, सचाई~सच्चाई.* 'सचाई' अधिक प्रचलित लगता है (देखें **द्‌वित्व वर्ण**).

सड़क, रास्ता, मार्ग, पथ 'सड़क' भौतिक अर्थ में प्रयुक्त होता है.

लोग सड़क पर काम कर रहे हैं.

सड़क पर कई गाड़ियाँ हैं.

यह सड़क कहाँ जाती है का अर्थ है इस सड़क से चलें, तो कहाँ पहुँच सकते हैं. सड़क चौड़ी या सँकरी होती है, रास्ता नहीं. लोग सड़क चलते हैं, लोग अपने रास्ते भी चलते हैं.

'रास्ता' सड़क से गंतव्य स्थान तक की दूरी के लिए तथा गंतव्य तक के गमन मार्ग के लिए आता है. लोग सड़क का नाम भूल जाते हैं और बाज़ार का रास्ता भूल जाते हैं. रास्ता लंबा होता है, सड़क सिर्फ़ भौतिक अर्थ में लंबी होती है. कुछ वाक्य देखिए—

बाज़ार का रास्ता कौन-सा है ?

रास्ते के ख़र्च के लिए पैसे ले लो.

*मुझे रास्ता दो (~*सड़क).*

मुहावरेदार अर्थ में हर कार्य का रास्ता होता है. प्रगति का रास्ता कठिन होता है. लोग दुश्मन को अपने रास्ते से हटाते हैं.

'मार्ग' रास्ते के अर्थ में प्रयुक्त शब्द है. *मार्गदर्शक* (रास्ता दिखाने वाला), *सन्मार्ग* (अच्छा रास्ता, जीवन का अच्छा मार्ग), *लंबा मार्ग* इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं. 'पथ' भी रास्ते के अर्थ में प्रयुक्त संस्कृत शब्द है. *पथप्रदर्शक, पाथेय* (रास्ते के लिए सामग्री), *पथिक* (रास्ते पर चलने वाला) द्रष्टव्य हैं. लेकिन अब सड़कों के नाम *मार्ग* तथा *पथ* से बनते हैं. *राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, राजपथ* आदि सड़कों के नाम हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत् देखें **उत्, -सत्.**

सत्रह इसे कई लोग 'सतरह' भी लिखते हैं. अ-लोप तथा मूल व्युत्पत्ति के आधार पर दोनों ठीक हैं, दोनों प्रचलित हैं. शायद आगे *सत्रह* ही मानक बन जाएगा.

सदृश 'समान' के अर्थ में प्रयुक्त इस शब्द से *सादृश्य* (समानता) व्युत्पन्न होता है. यह सामान्य बोलचाल का शब्द नहीं है, बल्कि साहित्यिक शैली का शब्द है. इसे *सदृश्य* लिखना गलत होता.

सबक पाठ्य पुस्तक के पाठ के अर्थ में इसका प्रयोग कम होता जा रहा है और *सबक सिखाना, सबक मिलना* के मुहावरेदार प्रयोगों तक यह सीमित होने लगा है.

सम्मान, सन्मान 'सम्मान' के लिए कई अन्य भारतीय भाषाओं में 'सन्मान' रूप प्रचलित है. *सम्मान* (सं+मान) अच्छी तरह से मान करने का अर्थ देता है, *सन्मान* (सत्+मान) अच्छे मान का. हिंदी के शब्दकोशों में दोनों शब्द दिये गये हैं. लेकिन 'आदर' के अर्थ में *सम्मान* ही प्रचलित है.

सर्वनाम 1. इस प्रकरण में हिंदी के पुरुषवाचक सर्वनामों की चर्चा की जा रही है. वैयाकरण आम तौर पर सात सर्वनामों की चर्चा करते हैं. ये हैं–

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम, आप
अन्य पुरुष	वह	वे

('वह' में 'यह' भी शामिल है)

परंपरात्मक व्याकरण इससे आगे नहीं जाते, क्योंकि व्याकरण की मान्य रूप-रेखा में इसकी गुंजाइश नहीं है. लेकिन अहिंदी भाषी इस परंपरागत विवरण के आधार पर आधुनिक हिंदी में सर्वनामों के प्रयोग की विशेषता नहीं जान पाते.

1.1. आधुनिक हिंदी भाषा के प्रयोग के आधार पर सर्वनामों का निम्न प्रकार से विवरण दिया जा सकता है–

	एकवचन	**आदरार्थ एकवचन/ प्रासंगिक बहुवचन**	**बहुवचन**
उ० पु०	मैं	हम	हम लोग
म० पु०	तू	तुम/आप	तुम लोग/आप लोग
अ० पु०	वह	वे	वे लोग

1.2. आदरार्थ सर्वनाम सामान्यतः एवकचन का अर्थ देते हैं और संदर्भ के अनुसार बहुवचन का भी अर्थ देते हैं. अगर संदर्भ न हो और वचन का संकेत न दिया जाए, तो मान लेना चाहिए कि ये एकवचन में प्रयुक्त हुए हैं. या यों कहिए कि यह पता लगना भी मुश्किल हो सकता है कि यहाँ बहुवचन का प्रयोग तो नहीं. कुछ उदाहरण देखिए–

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिता जी से कह दो कि हम जा रहे हैं.

आप कब तक आ सकेंगे ?

वे वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे.

इन वाक्यों में अन्यथा संकेत न हो तथा संदर्भ सामने न हो, तो व्यक्ति एकवचन का ही अर्थ लेगा. ऐसे संदर्भों में निश्चित बहुवचन का प्रयोग करना हो, तो आदरार्थ रूपों के साथ लोग, सब, दोनों आदि बहुवचनसूचक शब्द जोड़े जाते हैं.

पिता जी से कह दो कि हम सब जा रहे हैं.

आप लोग कहाँ जा रहे हैं ?

वे दोनों बाहर बैठे हैं.

1.3. इस कठिनाई का एक कारण यह है कि आदरार्थ एकवचन तथा उसके बहुवचन दोनों की क्रिया बहुवचन में होती है. यह भी उल्लेखनीय है कि दोनों की क्रिया हर जगह एक होती है.

तुम जाओ.	*तुम लोग आओ.*
तुम जाओगे.	*तुम लोग जाओगे,*
तुम आये हो.	*तुम लोग आये हो.*
आप जाइए.	*आप लोग जाइए.*
आप जाएँगे.	*आप लोग जाएँगे.*

कुछ व्याकरण *तुम* को एकवचन और *आप* को बहुवचन मानते हैं. वास्तव में *तुम, आप* दोनों ही प्रयोग से एकवचन हैं; सिर्फ़ इनकी क्रिया बहुवचन में होती है. इसी तरह अहिंदी भाषी *तुम* को एकवचन तथा *तुम लोग* को बहुवचन मानते हैं. वे क्रमशः इनके साथ *जाते हो, जाते हैं* का प्रयोग करते हैं. आदरार्थ क्रिया के लिए बहुवचन है, वास्तविकता में बहुधा एकवचन है.

1.3.1. *लोग, सब* आदि वचनसूचक शब्द केवल आदरार्थ शब्दों में लगते हैं. **मैं लोग*, **तू सब*, **वह दोनों* गलत प्रयोग हैं.

1.4. किसी समूह को संबोधित करते हुए *तुम लोग* निश्चित कोटि है, *आप लोग* फुटकर खाता (देखें **भाषा में फुटकर खाता**). तात्पर्य यह है कि श्रोताओं के समूह में सब व्यक्ति आप के लिए 'तुम' स्तर के हों, तो *तुम लोग* चल सकता है; उनमें एक भी 'आप' स्तर का हो, तो *आप लोग* का इस्तेमाल अभीष्ट होगा.

1.5. आगे एक तालिका में मूल सर्वनाम शब्दों की रूपावली दे रहा हूँ. 'लोग' युक्त शब्दों में 'लोग' सामान्य संज्ञा के समान रूपसिद्ध होगा. 'सब' प्रायः अविकारी रहता है और 'सबों ने' आदि अमानक प्रयोग हैं. 'दोनों' आदि अविकारी हैं. (विश्लेषण की सुविधा के लिए सारे सर्वनाम शब्द लिये जा रहे हैं).

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्यक्ष रूप	'ने' युक्त रूप	'को' युक्त रूप	अन्य परसर्गों (से, में, पर) से पहले का तिर्यक रूप सामान्य	'ही' युक्त	संबंधवाचक 'का/के/की' युक्त रूप
मैं	मैंने	मुझे/मुझको	मुझ	मुझी	मेरा, मेरे, मेरी
हम	हमने	हमें/हमको	हम	हमीं	हमारा, हमारे, हमारी
तू	तूने	तुझे/तुझको	तुझ	तुझी	तेरा, तेरे, तेरी
तुम	तुमने	तुम्हें/तुमको	तुम	तुम्हीं	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
आप	आपने	आपको	आप	आप ही	आप का, आप के, आप की
वह	उसने	उसे/उसको	उस	उसी	उसका, उसके, उसकी
यह	इसने	इसे/इसको	इस	इसी	इसका, इसके, इसकी
वे	उन्होंने	उन्हें/उनको	उन	उन्हीं	उनका, उनके, उनकी
ये	इन्होंने	इन्हें/इनको	इन	इन्हीं	इनका, इनके, इनकी
जो (एकवचन)	जिसने	जिसे/जिसको	जिस	?	जिसका, जिसके, जिसकी
जो (बहुवचन)	जिन्होंने	जिन्हें/जिनको	जिन	?	जिनका, जिनके, जिनकी
कोई (एकवचन)	किसी ने	किसी को	किसी	?	किसी का, किसी के, किसी की
कोई (बहुवचन)	?किन्हीं ने	?किन्हीं को	किन्हीं	?	?किन्हीं+का, के, की
क्या, कौन	किसने	किसे/किसको	किस	?	किसका, किसके, किसकी
कुछ	!कुछ ने	!कुछ को	कुछ	कुछ ही	!कुछ+का, के, की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नोट–नकारांत, मकारांत तिर्यक रूपों के अन्य रूपों में /ह/ **तथा** अनु-स्वार की स्थिति पर ध्यान दीजिए. यहीं बहुत लोग गलतियाँ करते हैं.

सर्वनाम+को रूप कम प्रचलित हैं, संश्लिष्ट रूप मुझे, हमें आदि अधिक प्रचलित हैं. *आप* तथा *कुछ* में विकार नहीं होता. यही कारण है ये परसर्ग से अलग लिखे जाते हैं. *किसी भी* प्रायः परसर्ग से अलग लिखा जाता है. विकारी रूप प्रायः परसर्ग के साथ लिखे जाते हैं. कोई और कौन के अन्य रूपों में उच्चारण तथा वर्तनी के अंतर पर ध्यान दीजिए. *किन्हीं* का प्रयोग बहुधा सीधे परसर्ग के साथ नहीं होता; बीच में संज्ञा का आना अधिक सहज है. *!किन्हीं ने, !किन्हीं पर, किन्हीं बातों पर, किन्हीं कारणों से, किन्हीं लोगों का.*

2. विद्वान द्वय ब्राउन तथा गिलमन ने अपने विचारोत्तेजक लेख (1960) में सामाजिक स्तर भेद तथा व्यक्तियों के संपर्क के आधार पर सर्वनामों में चयन तथा प्रयोग की विशेषताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है. उनका यह लेख हिंदी के ही नहीं, सभी भाषाओं के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है. लेख की चर्चा करने से पहले अपना एक अनुभव सुनाना चाहूँगा, जो उक्त लेख को पढ़ने से पहले का है. लगभग आठ साल पहले की बात है. मैं उन दिनों वयस्क विदेशी अध्येताओं को हिंदी पढ़ा रहा था. एक अमेरिकी महिला ने पूछा कि 'तुम' और 'आप' में क्या अंतर है और इनका कहाँ-कहाँ प्रयोग करना चाहिए. मैंने बताया कि उम्र या सामाजिक स्तर में जो व्यक्ति छोटे हैं, उनके लिए 'तुम' का प्रयोग हो सकता है. दूसरे दिन कक्षा में उन्होंने बताया कि अपने ड्राइवर को 'तुम' कहने पर उसने उन्हें टोका और 'आप' कहने का आग्रह किया. मैं उस समय उस महिला को इतना ही समझा पाया कि स्तर भेद के अनिश्चय की स्थिति में 'आप' का प्रयोग करना निरापद है.

उक्त लेख में विद्वान द्वय ने सर्वनामों के चयन के लिए दो आधार निश्चित किये हैं–उच्चता (power) तथा घनिष्ठता (solidarity). उच्चता का प्रतिमान वय, पद, शक्ति, धन, लैंगिकता का सामाजिक महत्त्व, संस्थागत संबंध, रिश्ता आदि कई कारकों से सिद्ध होता है. यह ज़रूरी नहीं कि उच्चता के लिए सारे कारक उपस्थित हों. घर का नौकर मालिक के छोटे बच्चे को *आप* कहता है. यहाँ उम्र का कारक धन, स्तर, पद के सामने कमज़ोर पड़ गया है. दूसरी तरफ़ घनिष्ठता का आधार है. रिश्तेदार, मित्र, घर का पुराना नौकर आदि से घनिष्ठ संबंध है, दफ़्तर का मालिक, रेस्तराँ का बेयरा, दुकानदार आदि से घनिष्ठ संबंध नहीं है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्राउन-गिलमन के अनुसार आदर्श स्थिति यह है–
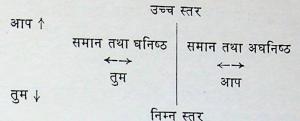
लेकिन इस स्थिति में कई कारणों से परिवर्तन आ जाता है. उच्च घनिष्ठ तथा निम्न अघनिष्ठ के संदर्भ में *तुम* और *आप* के प्रयोग में विविधता देखी जा सकती है. ऐसे संदर्भों में पहले प्रसंग में *तुम* तथा दूसरे में *आप* का प्रयोग अधिक मान्य हो जाता है. यही कारण है कि बच्चा माँ को *तुम* कहता है, अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को *आप* कहता है.

2.1. लेखक द्‌वय ने मध्यम पुरुष के केवल दो ही सर्वनामों को लिया है, लेकिन हिंदी में तीन सर्वनाम हैं–*तू*, *तुम*, *आप*. इन्हें उक्त आरेख के सहारे इस तरह दिखा सकते हैं–
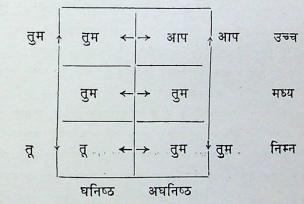
इस आरेख द्‌वारा दिखाया गया है कि उच्च घनिष्ठ में *तुम* और *आप* के चयन में संघर्ष है; निम्न अघनिष्ठ में *तू* और *तुम* में. ऐसी संघर्ष की स्थिति में अघनिष्ठ में निम्नतासूचक सर्वनाम *तू* छूटने लगता है. शायद यही कारण है कि *तू* का प्रयोग बहुत कम हो गया है और घनिष्ठ में घनिष्ठता सूचक शब्द *तुम* दूसरे की अपेक्षा अधिक प्रचलित हो चला है.

उक्त आरेख में यह दिखाने का यत्न किया गया है कि स्तर भेद निश्चित कोटि नहीं है, सापेक्षिक है. इस सापेक्षिकता के कारण *तू*, *तुम*, *आप* का चयन अत्यंत कठिन हो जाता है. ऊपर कहे अनुसार अघनिष्ठ में संघर्ष की स्थिति में उच्च सर्वनाम को प्राथमिकता मिलती है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आप औपचारिक तथा शिष्ट भाषा का शब्द है. तुम सामान्य बोलचाल की भाषा है. सामान्यतः उच्च स्तर के लोग आपस में *आप* का प्रयोग करते हैं. मध्य निम्न स्तर के लोग पहले मिलते पर *तुम* से ही बात शुरू करते हैं. घनिष्ठता के साथ ही सर्वनाम के प्रयोग में अंतर आता जाता है, जिसकी दिशा यों है–

आप → तुम → तू

यह आवश्यक नहीं कि परिवर्तन हो ही और यह भी मेरा मतलब नहीं कि *आप* से तू का स्तर हर मामले में आता ही है.

2.2. उच्चता का सिद्धांत रोचक है. लेखक द्वय ने केवल मध्यम पुरुष सर्वनामों की चर्चा की है. प्रथम पुरुष में व्यक्ति अपने लिए उच्चता सूचक हम का प्रयोग करता है. चूँकि यह उच्चता सूचक है, अपने से बड़े व्यक्तियों के सामने मैं ही अधिक अच्छा है. लेकिन कुछ लोग आदतन अपने लिए हमेशा *हम* का प्रयोग करते हैं. ऐसी स्थिति में कुछ वर्षों में हम सिर्फ़ एकवचन के लिए रह जायेगा, *हम लोग* बहुवचन के लिए.

उच्चता के आधार के सामने उम्र, लैंगिकता आदि कारक कमज़ोर पड़ जाते हैं. छोटे मालिक को नौकर *आप* से संबोधित करता है. पंजाबी, गुजराती तथा द्रविड़ भाषाओं में उच्च में स्त्रियों के लिए लिंग की अन्विति नहीं की जाती. *मेरे माता जी आये. चाची जी आप कैसे हैं* आदि उन भाषाओं में सहज हैं. हिंदी में इन संदर्भों में लिंग की अन्विति न होना गलती मानी जाएगी. लेकिन स्त्री अपने लिए हम का प्रयोग करे, तो क्रिया में लिंग की अन्विति नहीं होती. *हम *जा रही हैं.* लैंगिकता के आधार पर सर्वनाम के प्रयोगों में विविधता ढूँढ़ना अप्रासंगिक नहीं होगा. पति-पत्नी के बीच परंपरातमक रूप से क्रमशः तुम, *आप* का संबोधन होता है. लेकिन आधुनिक काल में पति-पत्नी परस्पर *तुम* का व्यवहार करते हैं, जो आधुनिकता का लक्षण माना जाएगा और कहीं-कहीं परस्पर तू का प्रयोग (शायद वह भी एकांत में) होता है. यहाँ घनिष्ठता के कारण प्रयोग समानता दिखायी पड़ती है, लेकिन उलटा स्तर भेद (*आप*, *तुम*) विरल है. पारंपरिक स्तर भेद का कारण समाज रचना में पुरुष वर्ग का अधिक उच्च होना इसका कारण है. घनिष्ठता की दृष्टि से व्यक्ति प्रायः माँ को तुम और पिता को *आप* कहता है. यहाँ भी स्तर भेद का कारण लैंगिकता है. लेकिन निम्न स्तर के परिवारों में दोनों के लिए तू तथा संभ्रांत परिवारों में दोनों के लिए *आप* का प्रयोग भी होता है.

2.3. उक्त लेख की चर्चा और हिंदी की स्थिति में एक और अंतर है. बीस साल पहले की बात है. हिंदी भाषी मित्र भारद्वाज को अपनें जीजा जी को *आप आओ* कहते सुना तो औपचारिक प्रशिक्षण के कारण मुझे कुछ अटपटा लगा था, यद्यपि उनकी हिंदी की दक्षता में संदेह का कारण नहीं था. बाद में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और लोगों से भी ऐसे प्रयोग सुने, तो अब यह लगता है कि घनिष्ठता सर्वनाम के प्रयोग में नहीं, विधि के शब्दों में है.

2.4. लेखक द्वय ने सामान्य सामाजिक संबंधों के आधार पर सर्वनाम के प्रयोग की विशेषता स्पष्ट की है. इनके अलावा अन्य भाषिक संदर्भ भी हैं, जहाँ सर्वनाम के प्रयोग में विशिष्टता दिखायी पड़ती है. कालरा ने (1976) अपने लेख में उल्लेख किया है कि व्यंग्य में निम्न स्तर के लोगों के लिए *आप* कहा जा सकता है. इसी तरह कुछ हद तक (दिखावे का) आदर दिखाने के लिए, जिससे श्रोता ख़ुश हो जाए, निम्न के लिए *आप* का प्रयोग हो सकता है. कालरा द्वारा बतायी गयी इन दो स्थितियों के अलावा गाली की स्थिति भी है, जहाँ अपमानित करने के उद्देश्य से व्यक्ति को *तू* कहा जाता है. व्यंग्य में अत्युक्ति है, गाली में निम्नोक्ति.

2.3. अहिंदी भाषी छात्रों को *तू* की आवश्यकता नहीं पड़ती. यह संबोधन केवल निम्न घनिष्ठ (या कहीं-कहीं समान) की स्थिति में होता है, जबकि अन्य भाषा भाषी शायद ही ऐसे संदर्भों में हिंदी का प्रयोग करता हो. वहाँ वह मातृ-भाषा का प्रयोग करता है. हिंदी का प्रयोग (अन्य भाषा के रूप में) वह प्रायः समान/उच्च अघनिष्ठ की स्थिति में करेगा, जहाँ तुम, आप का प्रयोग होता है. इसी कारण प्रारंभ में अहिंदी भाषी छात्र को 'तू' सिखाने की ज़रूरत नहीं है. और साथ में *तू* गाली है, जिसमें अपमान और तिरस्कार की भावना जुड़ी हुई है. अतः थोड़ी भी गलती करने पर वक्ता को असमंजस की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है. प्रसंगवश मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि भाषा सामाजिक संपर्क का सिक्का है. कोई यह नहीं देखता कि आप विदेशी हैं या स्वदेशी. अगर आप के पास डालर हैं, तो अमेरिका में आप औरों की तरह ख़र्च कर सकते हैं. इसी तरह आप गलत प्रयोग करें, तो सबसे पहले श्रोता सामान्य रूप से उस सिक्के का मूल्य पहचानता है. उसके लिए यह महत्त्वहीन है कि आप अहिंदी भाषी हैं और इस कारण गलती के लिए क्षम्य हैं. इस कारण बहुत स्वाभाविक बनने के प्रयास में लोग गलत प्रयोग करके क्लेशदायक स्थितियों में पहुँच जाते हैं. *तू* का प्रयोग इनमें एक है.

3. सर्वनामों में प्रादेशिक विशेषताएँ—कोई मराठी या गुजराती भाषी *आप* को *तुम* कहता है तो अपमानित होने की आवश्यकता नहीं. दोनों भाषाओं में आदरार्थ रूप क्रमशः *तुम्हीं* और *तमे* है (जो *आप* के समान हैं) और *तुम* के रूप *तूं* और *तुं*. वैसे ऊपर के 2.5 के अनुसार वक्ता के लिए ये संबोधन खोटे सिक्के हैं. *तू* कहने पर शायद कई उन्हें टोकते होंगे, *तुम* कहने पर मन में झुंझलाते होंगे. लेकिन वक्ता की तरफ़ से ये मातृभाषा के प्रभाव के कारण हैं. पंजाबी *आप* का प्रयोग तो करता है, लेकिन सर्वत्र *जाओ* का प्रयोग करता है, *जाइए* का नहीं. यह

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भी मातृभाषा के कारण है.

सवेरे, सबेरे ये दोनों रूप समान रूप से चलते हैं. देखें **य, ज; व, ब.** सवेरा/सबेरा पुल्लिग शब्द है और सवेरे/सबेरे अव्यय. सवेरा आदि की व्युत्पत्ति संदिग्ध है. इसका पर्याय 'सुबह' अरबी का शब्द है. सवेरे को, सुबह को आदि अमानक प्रयोग हैं.

सांख्यिकी यह लिखने में मुश्किल लगता है, लेकिन *सांख्यकी* लिखना अशुद्ध है. यह statistics के अर्थ में 'संख्या' से बना नया शब्द है.

सांस्कृतिक कई व्यक्ति इस शब्द को 'साँस्कृतिक' लिखते हैं क्योंकि संस्कृत से आये थोड़े-से शब्दों के अलावा सामान्यतः हिंदी में दीर्घ स्वरों पर अनुस्वार नहीं होता. हिंदी के शब्दों की वर्तनी मूल शब्द की विशेषताओं को सुरक्षित रखते हुए तय की जाती है. संस्कृत के अनुस्वार युक्त शब्दों से व्युत्पन्न शब्द हिंदी में भी अनुस्वार से ही लिखे जाते हैं. कुछ उदाहरण हैं—*आंशिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक, सांसारिक, आंतरिक, आंगिक, दांपत्य, मांगल्य, पांडित्य, सिद्धांत, वृत्तांत, वेदांत.* इन शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दें और कहीं अनुनासिकता का चिह्न न लिखें.

सा[1] यह 'समान' के अर्थ में प्रयुक्त शब्द है और शब्द के बाद हाइफ़न के साथ आता है. *फूल-सा बदन, चाँद-सा मुखड़ा.* इस अर्थ में यह 'जैसा' का पर्याय है. *रेशम जैसे~से बाल, शहद जैसी~सी मिठास, शहद जैसा~सा मीठा.*

2. *सा~जैसा* जिस शब्द में लगता है, वह तिर्यक रूप में आता है. *घर जैसा वातावरण, घोड़े जैसी चाल, बच्चों जैसी बातें, मुझ जैसा आदमी, हाथी-सा आकार, उन जैसा विद्वान, तुम-सा अक्लमंद, बड़ों जैसी हरकतें.*

3. आगे के दो वाक्य लीजिए—यह शहद मीठा है. वह शरबत भी (शहद-सा) मीठा है. इस शहद में मिठास है. उस शरबत में भी शहद जैसी मिठास है. लेकिन आगे के वाक्य में ऐसा सामंजस्य नहीं है.

शहद की मिठास· · · . *शरबत में शहद जैसी मिठास है.* यहाँ *शहद की जैसी* का प्रयोग भी ठीक होता. इस तरह दो प्रयोग हैं—*शहद जैसा आम, आम में शहद जैसी~शहद की जैसी मिठास. घर-सा खाना* नहीं, *घर का-सा खाना.* इसका अंतर्निहित वाक्य होगा—*घर का खाना जैसा ही खाना.*

इस दृष्टि से देखें तो संज्ञा+सा+विशेषण का प्रयोग उपयुक्त है और संज्ञा+सा+संज्ञा के प्रयोगों में हमेशा *का* का प्रयोग वैकल्पिक ही नहीं, कई जगह अनिवार्य भी है.

4. दोनों रूपों में *जैसा* अधिक प्रचलित है, लेकिन मैं यह बताने में असमर्थ हूँ कि *सा* का प्रयोग कहाँ सीमित हो जाता है.

5. सा[2] भी प्रकार्य में इसी के जैसा है, लेकिन वह विशेषणों में ही लगता है. वहाँ *जैसा* नहीं आता और वह विशेषण वाक्यांश का अंग बन जाता है जबकि

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सा~जैसा संज्ञा को विशेषण बनाता है. दोनों में समान तत्त्व है अर्थ-सामीप्य.
सा[2] अगर *लाल* कहें तो हम निश्चित रूप से लाल का ही अर्थ दे रहे हैं, लेकिन जो लाल न हो और उसके निकट हो उसे *लाल-सा* कहेंगे. *थोड़ा-सा, बहुत-सा* आदि में विशेषण के अर्थ के निकट का अर्थ है. इसके संदर्भगत अर्थों को आप आगे के वाक्यों में देख सकते हैं—*मुझे एक अच्छा-सा कपड़ा चाहिए. उनके पास एक बड़ी-सी मेज़ है.*

2. थोड़ा-सा, बहुत-सा आदि मूल विशेषण के संरचनागत अर्थ को ही बदल देते हैं. 'बहुत' के दो प्रमुख प्रयोग हैं. विशेषण का विशेषण—*वह बहुत अच्छा लड़का है*. क्रियाविशेषण का विशेषण—*वह बहुत तेज़ दौड़ता है*. जिन वाक्यों में *बहुत, बहुत-सा* दोनों आते हैं, वहाँ दोनों में अर्थ का अंतर देख सकते हैं. *उसने बहुत-सा पानी पिया* (यहाँ पानी की मात्रा का उल्लेख है). *वह बहुत पानी पीता है* (यहाँ कई बार पीने या पानी पीने के व्यापार की अधिकता का उल्लेख है). जिन वाक्यों में मात्रा वाली बात नहीं है, केवल बहुत आता है. *तुम बहुत शोर करते हो* (*बहुत-सा)[1]. *मैंने उसे बहुत मना किया* (*बहुत-सा). गिनती की संख्याओं के साथ 'कई' के अर्थ में *बहुत-सा* ही उपयुक्त है. लेकिन कई भाषा-भाषी यहाँ *बहुत* को भी सहज प्रयोग मानेंगे. *वहाँ बहुत-से लोग थे* (~*वहाँ बहुत लोग थे*). *आपने हमें बहुत-सी बातें बतायीं* (?*बहुत बातें बतायीं*) (तुलना कीजिए *आप बहुत बातें करते/बनाते हैं*).

2.1. *थोड़ा* के संदर्भ में भी ये ही बातें देखी जा सकती हैं. गिनती या मात्रा वाली संज्ञाओं के साथ हम *थोड़ा-सा* का प्रयोग देखते हैं. *मुझे थोड़ी-सी चीनी चाहिए. मेरे पास ज़्यादा कमीज़ें नहीं हैं, थोड़ी-सी ही हैं*. अन्य संज्ञाओं में हम *थोड़ा* का प्रयोग देखते हैं. *इससे मुझे थोड़ी तकलीफ़ हुई थी* (!*थोड़ी-सी तकलीफ़*), *आप थोड़ा आराम कीजिए* (~*थोड़ा-सा आराम*), *तुम थोड़ी देर ठहर जाओ* (?*थोड़ी-सी देर*).

विशेषणों के साथ 'कुछ' के अर्थ में 'थोड़ा' आता है (*मैं अब थोड़ा अच्छा हूँ. वह लड़की थोड़ी शरारती है. यह जगह थोड़ी गरम है*) और निकटता के संदर्भ में 'थोड़ा-सा' भी आता है (*वह मकान इससे थोड़ा-सा ही बड़ा है*). *वह लड़की थोड़ी-सी चंचल है* (अर्थात 'बहुत' नहीं). *यह किताब थोड़ी-सी मोटी है* (अर्थात अपेक्षा से अधिक मोटी है). अर्थ सामीप्य को यहाँ हम तुलना द्वारा ही स्पष्ट कर सकते हैं. *थोड़ी-सी मोटी* के अलावा *थोड़ा, थोड़ा-सा* के अन्य सब प्रयोगों में

[1]इस प्रसंग में यह उल्लेख करना अभीष्ट होगा कि 'बहुत-सी बातें' विशेषण युक्त संज्ञा वाक्यांश है, जबकि 'शोर करना, बातें करना/बनाना, मना करना' क्रियाएँ हैं, जिनके साथ क्रिया-विशेषण 'बहुत' आता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'कुछ' का विकल्प है.

3. सा[2] विशेषण के साथ हाइफ़न के साथ आता है.

सामर्थ्य यह समर्थ में -य जोड़ने से बनने वाला पुल्लिग संज्ञा शब्द है, जैसे *औचित्य, स्वातंत्र्य, स्वास्थ्य* आदि. लेकिन प्रेमचंद तथा अन्य कई लेखक इसका स्त्रीलिंग में प्रयोग करते हैं. रूप की दृष्टि से इसका प्रयोग पुल्लिग में ही करना उचित है.

सामान, माल 1. 'सामान' किसी व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत चीज़ों का अर्थ देता है, 'माल' व्यापार या उत्पादन में काम आने वाली चीज़ों का. *घर का सामान, खाने पीने का सामान, यात्री अपने सामान का स्वयं ध्यान रखें. तुम इस कमरे से सारा सामान हटाओ. रेलगाड़ी में सामान रखने की अलग जगह होती है. दुकानदार बड़े व्यापारियों से माल लेता है, माल बेचकर पैसे देता है.* माल से बने अन्य शब्द देखिए–*मालगाड़ी, कच्चा माल.*

2. चूंकि माल व्यापार या धंधे का आधार है, जिसके पास ज़्यादा माल होगा, वह उतना ही संपन्न माना जाएगा. इसी कारण *माल* 'धनदौलत' या 'पैसा' का पर्याय है. इसी अर्थ में प्रयुक्त कुछ अन्य शब्द देखिए–*माल उड़ाना* (धन चुराना), *माल-मत्ता, मालदार आदमी, मालामाल हो जाना* (बहुत धन प्राप्त कर लेना).

3. *माल* हर व्यापार के लिए आधार सामग्री है. इस कारण गुप्त भाषा में हर क्षेत्र के व्यक्ति के लिए ध्येय वस्तु 'माल' है. डकैतों के लिए संपन्न यात्री माल है, वेश्यागामी या स्त्री-लोलुप के लिए लड़की माल है, शराबी के लिए शराब माल है, चटोरे के लिए अच्छा खाना माल है. (*कल ज़मीनदार साहब के घर न्योता है. तर माल मिलेगा*).

4. 'माल' विशिष्ट अर्थ प्रकट करने वाला शब्द है, चीज़ों के लिए 'सामान' भाषा में फुटकर खाता है. *फ़ैक्टरी से 15 हज़ार रुपये का सामान चोरी चला गया.* यहाँ सामान कोई भी चीज़ें हो सकता है–बिकाऊ माल या यंत्र या स्टेशनरी या फ़रनीचर.

5. 'माल, सामान' ये दोनों ही शब्द सदैव एकवचन में आते हैं.

सारणी रेलवे की समय सारणी होती है, जिसमें रेलों का समय देख सकते हैं. इसे कुछ लोग 'सारिणी' भी लिखते हैं. (सरण~) सारण में /ई/ प्रत्यय लगने से यह रूप बना है, जबकि '*कार्यकारिणी*' की व्युत्पत्ति 'कारी' में स्त्रीलिंग प्रत्यय /नी/ लगने से हुई है. इसी तरह *धारण, धारी, धारिणी* आदि शब्द एक दूसरे से व्युत्पन्न हैं. *सारिणी* गलत शब्द है. *कार्यकारणी, धारणी* आदि शब्द भी गलत हैं.

साहित्यिक साहित्य+इक से बनने के कारण यह रूप सही है. इसे कुछ लोग 'साहित्यक' लिखते हैं, जो गलत है.

सुगंध सु+गंध से बना शब्द है. इसे सुगंधि लिखना गलत है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से, के साथ जिस तरह **में, के अंदर** के संदर्भ में हमने देखा कि ये आधुनिक भाषा में पर्याय बनते जा रहे हैं और हर जगह में के लिए के अंदर का प्रयोग चलने लगा है, उसी तरह से, के *साथ* भी पर्याय बन रहे हैं. मूल व्युत्पत्ति के संदर्भ में के *साथ* संज्ञा 'साथ' से बना परसर्गीय शब्द है और इकट्ठे होने का अर्थ देता है. इस कारण कई लोग *?के साथ मिलना, के साथ लड़ना, के साथ बात करना, ?के साथ प्यार करना, ?चाकू के साथ काटना, तेज़ी के साथ बोलना* आदि प्रयोगों में से का प्रयोग ही वांछनीय मानते होंगे. लेकिन से के लगभग सभी प्रयोगों में के *साथ* का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है. संज्ञा+से जहाँ क्रियाविशेषण बनता है (*तेज़ी से, प्यार से, होशियारी से, मेहनत से, सावधानी से, रुखाई से, ज़ोर से*), उन सब स्थलों में वैकल्पिक प्रयोग के *साथ* अब प्रचलित मानक बन गया है. से जहाँ कारण सूचित करता है (*तुम्हारी बेवकूफ़ी से, बारिश से, बंद होने से*), उन प्रयोगों में अर्थ-वैपरीत्य के कारण के *साथ* नहीं आता. से का तीसरा प्रमुख प्रयोग (करण) बीच की स्थिति में है. यहाँ के *साथ* का प्रयोग मिलता है (*?चाकू के साथ*), लेकिन यह अधिक प्रचलन में नहीं है.

सेवानिवृत्त शब्द भाषा में शब्द प्रचलन में आते हैं, पूरी ज़िंदगी गुज़ारते हैं और कुछ समय के बाद ख़त्म भी हो जाते हैं. लेकिन जीवित प्राणियों की तरह शब्दों की निश्चित आयु नहीं होती. न ही शब्दों की '*मौत*' का कोई जैविक कारण है. लेकिन यह सत्य है कि कई शब्दों का प्रयोग समाप्त हो जाता है. हिंदी में शब्दों के प्रचलन में आने तथा ख़त्म होने का लंबा इतिहास नहीं है, न ही यह इतिहास लिखा गया है.

सेवानिवृत्त शब्दों के कुछ क्षेत्र दिखायी पड़ते हैं. इधर सौ साल में सैकड़ों उर्दू शब्द प्रचलन से हट गये हैं और इनकी जगह संस्कृत मूल के शब्द प्रयोग में आये हैं. कई शब्दों में यह प्रक्रिया दिखायी पड़ रही है. अब बोलचाल की हिंदी से (जो आज की पीढ़ी सीख रही है) *इंतख़ाब, मश्क, रहनुमाई, इब्तिदा, अमन, ख़िदमत, फ़ेहरिस्त, तालीम, इख़्तियार, मुल्क, तजरुबा* जैसे सामान्य शब्दों का भी प्रचलन कम हो गया है. जो शब्द औपचारिक हैं, लिखित माध्यम के हैं, उनमें परिवर्तन शीघ्र आता है और जो शब्द सामान्य बोलचाल के हैं, उनमें परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे आता है.

दूसरी तरफ़ फ़ैशन के तौर पर चले नवनिर्मित शब्दों में अप्रयोग की अवस्था जल्दी आ जाती है. आज छायावादी कविता के कई शब्द नहीं रहे. *व्यथित हृदय, सजल गान, मुकुल, विदीर्ण, निविड़, उर, कुसुमित, तिमिर, निर्झरणी, संसृति* जैसे शब्द आज के काव्य में भी प्रयुक्त नहीं होते. आज का लेखक व्यथा या पीड़ा की बात नहीं करता, वह संत्रास की बात करता है. इस तरह साहित्य आदि विशिष्ट क्षेत्रों के शब्द भी विचारधारा या कथ्य में परिवर्तन होने पर सेवानिवृत्त हो

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाते हैं.

स्त्री, इस्त्री देखें **इस्तेमाल.**

स्थायी *स्थायी*, *स्थायित्व* सही रूप हैं. इन्हें स्वर से (**स्थाई*) नहीं लिखना चाहिए. देखें **-यी.**

स्थितिसूचक क्रियाएँ–है, होता है, रहता है हमने व्यापार की क्रमता को **रहा** शीर्षक प्रकरण में देखा कि हर व्यापार के तीन चरण होते हैं–*आ रहा है* (क्रमिक व्यापार), *आया* (कथन के समय तक व्यापार की पूर्णता), *आया* (*हुआ*) *है* (घटित एकल व्यापार की वर्तमान में विद्यमानता). ये तीन सोपान एकल[1] व्यापारों तक ही सीमित हैं. तीसरा सोपान स्थितिसूचक क्रिया है. इनकी तुलना में *करता है* एकल व्यापार की सूचना नहीं देता, व्यापार की घटमानता की वर्तमान में सत्यता का बोध कराता है, भले वास्तविक व्यापार के रूप में वह कथन के समय घटित न हो रहा हो. चौथे क्रिया रूप को ही 'अपूर्ण पक्ष' की संज्ञा दी जाती है, जिससे कई लोग इसे अपूर्ण एकल व्यापार का द्योतक समझ लेते हैं. यह वास्तव में अ-पूर्ण पक्ष है, 'अपूर्ण' पक्ष नहीं.

कृदंत रूपों में पक्ष की व्यवस्था का पर्याय हमें सहायक क्रियाओं में *है -होता है* के वैपरीत्य (opposition) में देखने को मिलता है. ये दोनों स्थितिसूचक क्रियाएँ हैं. 'है' एक वस्तु आदि की वर्तमान में स्थिति की सूचना देता है, जबकि 'होता है' वह वस्तु जिस वर्ग की सदस्य है, उस वर्ग के गुणधर्म की सूचना देता है. इस तरह पक्ष की व्यवस्था और काल की व्यवस्था दोनों में सामंजस्य देखा जा सकता है.

1. 'है' से हम वस्तुओं के संदर्भ में वर्तमान में गुण, स्थिति आदि की सूचना देते हैं. कुछ गुण या स्थिति सततकालीन होते हैं (*सूरज गरम है. वह मेहनती है. यह आदमी लंबा है. यह गुलाब लाल है. इंग्लैंड यूरोप में है*) और कई संदर्भों में स्थिति समय से बद्ध होती है, जिसका उल्लेख क्रियाविशेषण 'आज, इस समय, अभी, इन दिनों, आजकल, कई दिनों से' आदि द्वारा करते हैं (*आज छुट्टी है. वह आज बीमार है. आजकल बहुत गरमी है. वह अभी घर पर है*). एकल क्रिया व्यापारों के साथ भी ये ही क्रियाविशेषण आते हैं (*वह अभी नहा रहा है. वे कई दिनों से यहाँ आ रहे हैं*). 'था' इसका भूतकालिक रूप है.

सहायक क्रिया 'होता है' से हम वर्ग के गुणधर्म की सूचना देते हैं. हम एकल या निश्चित वस्तुओं के संदर्भ में 'होता है' का प्रयोग नहीं कर सकते और वर्ग

[1]यहाँ 'एकल' से तात्पर्य बहुवचन का परित्याग नहीं है. कई इकाइयों के बहुवचन की निश्चित व्यवस्था को भी हम 'एकल' ही मानेंगे. यह अच्छा है. . . . यह अच्छा है > ये अच्छे हैं. उसने किया. . . उसने किया > उसने कई बार किया.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के **गुणधर्म के** संदर्भ में 'है' का. *ये लड़कियाँ सुंदर हैं* (*लड़कियाँ सुंदर हैं), *लड़कियाँ सुंदर होती हैं* (*ये लड़कियाँ सुंदर होती हैं). अपूर्ण पक्ष की क्रिया तथा होता है के साथ भी समान क्रियाविशेषणों का प्रयोग देख सकते हैं. *वह अक्सर यहाँ आता है. वह अक्सर बाहर बैठा होता है* (*है). *वह हर इतवार को नहाता है. यहाँ हर इतवार को छुट्टी होती है* (*है). इसी तरह अन्य कुछ उदाहरण देखें. *यहाँ/बसों में हमेशा बहुत भीड़ होती है. मद्रासी मेहनती होते हैं. यहाँ मकान बहुत सस्ते होते हैं* (आजकल/इन दिनों *बहुत सस्ते हैं*). *गुलाब लाल होता है.* जहाँ हम गुणधर्म की चर्चा करें, वहाँ वर्ग सदस्य का उल्लेख बहुवचन में भी कर सकते हैं. *मद्रासी मेहनती होता है~मद्रासी मेहनती होते हैं* (*ये मद्रासी मेहनती होते हैं). इसी तरह 'यह आम' एकल वस्तु का भी सूचक है, वर्ग सदस्यता का भी. *यह आम मीठा है* ('वह आम' के व्यतिरेक में), *यह आम मीठा होता है* (लंगड़ा नामक यह आम, सिंदूरी नामक उस आम-वर्ग के व्यति-रेक में). इसी तरह 'होता है' के आवृत्त्यात्मक प्रयोगों को भी हम संदर्भ से ही पहचान सकते हैं. दो वाक्य लीजिए. *कश्मीर में अब बहुत सर्दी है* (एकल समय का उल्लेख), *कश्मीर में अब बहुत सर्दी होती है* (अर्थात अब से द्योतित अवधि में, हर साल). चूँकि व्याक्तिवाचक संज्ञाएँ वर्ग सूचक नहीं होतीं, गुणधर्म सूचक 'होता है' का प्रयोग (प्रायः) उनके साथ नहीं मिलता. *राम अच्छा होता है. *गंगा लंबी नदी होती है. इसी तरह द्रववाचक संज्ञाओं का गुणधर्म प्रायः 'होता है' से ही सूचित होता है और एकल वस्तु का उल्लेख नापे गये द्रव द्वारा प्रकट होता है. *गंगा का पानी ठंडा होता है* (*यह पानी ठंडा है*). *आम का रस मीठा होता है* (*यह रस बहुत मीठा है*). 'है, होता है' में निश्चित वैपरीत्य है, प्रयोग-भिन्नता को प्रयोगों में ही स्पष्ट किया जा सकता है.

1.1. मैंने अपने एक पूर्व लेख (1973) में माना था कि हिंदी में स्थितिसूचक सहायक क्रियाएँ तीन हैं. अब मैं अपने विचार में परिवर्तन कर रहा हूँ. क्रिया रूप 'रहता है' केवल 'है' का एक प्रकार्य है, उसी का विस्तार है. यह 'है' के वैपरीत्य में नहीं आता. 'है' के संदर्भ में हम अवधि की सूचना दें, तो 'रहता है' का प्रयोग मिलता है. साथ ही यह मूल क्रिया के समान भिन्न रूपों में आता है, जबकि 'होता है/था' के अन्य रूप नहीं मिलते. मान सकते हैं कि निरंतरता बोधक 'रहता है' सहायक क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त होता है. उदाहरण देखें—*वह अक्सर बीमार रहता है. यहाँ साल में तीन महीने छुट्टी रहती है. मुझे जोड़ों में बराबर दर्द रहता है. यह दुकान हर वक्त बंद रहती है.* इन वाक्यों में 'होता है' से वैपरीत्य देखा जा सकता है और 'होता है' वाले वाक्यों के अर्थ को ऊपर के संदर्भ में समझ सकते हैं. *वह अक्सर बीमार होता है* में मूल क्रिया है. यह एकल वस्तु के संदर्भ में है. इसलिए यहाँ सहायक क्रिया 'होता है' नहीं आती.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ हर साल तीन महीने की छुट्टी होती है में सहायक क्रिया का प्रयोग देख सकते हैं. 'है–होता है' के वैपरीत्य की तरह यहाँ भी एकल वस्तु तथा वर्ग के गुणधर्म का ही वैपरीत्य है. इसे निम्नलिखित आरेख से देख सकते हैं–
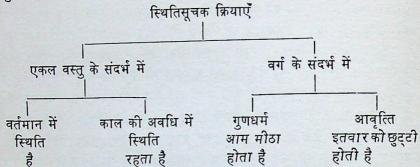
1.2. ऊपर हमने चर्चा की कि 'रहता है' का प्रयोग एकल वस्तु के संदर्भ में होता है, जबकि 'होता है' का प्रयोग वर्ग के गुणधर्म की सूचना या स्थिति की आवृत्ति के संदर्भ में होता है. यहाँ निश्चित वैपरीत्य है और प्रयोग-संदर्भ स्पष्ट हैं. लेकिन यह बात विशेषण+सहायक क्रिया वाली रचना में ही दिखायी पड़ती है. एकल व्यक्ति के साथ *होता है* नहीं आता. **राम/वह लड़का अच्छा होता है*. लेकिन क्रिया+सहायक क्रिया वाली रचनाओं में दोनों जगह एकल व्यक्ति या वस्तु के साथ *होता है* का भी प्रयोग मिलता है. यहाँ व्यक्ति के संदर्भ में व्यापार की आवृत्ति सूचित होती है, गुणधर्म नहीं. समस्या यह है कि यहाँ ऊपरी तौर पर 'होता है/रहता है' का व्यतिरेक समाप्त हो गया है. *वह बाहर बैठा होता है, वह बाहर बैठा रहता है*. फिर इनमें अंतर कहाँ है ?

वास्तव में यह रचना समस्त क्रिया है–कृदंत और स्थितिसूचक सहायक क्रिया से बनी हुई. 'होता है' से पहले 'हुआ' के लोप से संक्षिप्त क्रिया रूप मिलता है. *वह पड़ा (हुआ) होता है*. इससे व्यापार की आवृत्ति का बोध होता है. **कृदंत–निरंतरता बोधक** में हमने चर्चा की कि किसी कालावधि में व्यापार का उल्लेख 'रहता है' से होता है. यह कालावधि एकल व्यापार के संदर्भ में 'रहा' से (*वह सवेरे से यहीं बैठा रहा*) और आवृत्त व्यापार के संदर्भ में 'रहता है' से (*वह दिन भर यहीं बैठा रहता है*) द्योतित होता है. यहाँ हम वैपरीत्य को केवल आवृत्त्यात्मक व्यापारों के संदर्भ में ही देखेंगे.

ये क्रियाएँ निम्नलिखित संदर्भों में प्रयुक्त होती हैं–

अकर्मक	*बैठा होता है*	*बैठा रहता है*
	आता होता है	*आता रहता है*
अकर्मक	*?किया होता है*	*?किया रहता है*
	करता होता है	*करता रहता है*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिथ्यावाच्य पड़ा होता है पड़ा रहता है
बनता होता है बनता रहता है

'होता है' का प्रयोग उन वाक्यों में मिलता है, जिनमें निश्चित समय-बिंदु का उल्लेख हो. *मैं रोज़ सवेरे आफ़िस के लिए निकलता हूँ तो वह भिखारी बस स्टाप पर बैठा होता है. मैं स्कूटर से बस स्टाप पर पहुँचता हूँ, तभी वे दोनों लड़कियाँ सामने से आती होती हैं,* मैं ठीक साढ़े दस बजे आफ़िस पहुँचता हूँ, *तब रोज़ चाय बनती होती है.* मैं रात को दस बजे घर आता हूँ, तो बच्चे सोये होते हैं. *मैं कमरे में आता हूँ, तब रमेश पढ़ता/सोया होता है, किताब खुली पड़ी होती है, बत्ती जल रही होती है.* 'रहता है' के वाक्यों में 'हमेशा, हर वक्त, शाम को, . . . तक' आदि क्रियाविशेषणों द्वारा अवधि की सूचना दी जाती है. आगे के वाक्यों की तुलना कीजिए–

ठीक दस बजे दुकानें खुली होती हैं–सवेरे दुकानें खुली रहती हैं

रात दस बजे कोई दुकान खुली नहीं होती–रात दस बजे तक दुकानें खुली रहती हैं

आगे के वाक्यों में (*जब देखो, यह नल खुला होता है–जब देखो, एशट्रे भरा रहता है. जहाँ देखो, एक कमीज़ पड़ी होती है–?जहाँ देखो, कूड़ा पड़ा रहता है*) दोनों क्रियाओं के प्रयोग को व्यापक मानसिक संदर्भ से ही समझ सकते हैं, वाक्य रचना इस अंतर को स्पष्ट नहीं करती.

1.3. कुछ भाषावैज्ञानिकों के सुझाव के अनुसार मेरा ध्यान निम्नलिखित वाक्य युग्मों की ओर जाता है, जिनमें स्थितिसूचक क्रिया तथा कृदंत क्रिया रूप दोनों वाक्यगत पर्याय हैं.

!चिड़िया नभचर है = चिड़िया उड़ती है

!शेर मांसाहारी है = शेर मांस खाता है

वह नाटककार है = वह नाटक लिखता है

वह एक स्कूल में अध्यापक है = वह एक स्कूल में पढ़ाता है

पहले दो वाक्यों में कर्ता वर्ग सदस्य सूचित करने वाली संज्ञाएँ हैं, शेष दो वाक्यों में एक वस्तु (या व्यक्ति). इस अंतर के कारण पर्याय का संबंध अटपटा लगता है. वास्तव में पहले दो वाक्यों के तीन और विकल्प हो सकते हैं. *चिड़िया एक नभचर है* (जहाँ चिड़िया नभचर वर्ग का उपवर्ग है, सदस्य है), *चिड़िया नभचर होती है* (जहाँ चिड़िया वर्ग का गुणधर्म सूचक है), *चिड़ियाँ नभचर हैं* (जहाँ चिड़ियाँ, नभचर दोनों एक ही वर्ग के दो नाम हैं और यहाँ पूरक रचना में इस गुणी-गुण संबंध को दिखाया गया है). गुणधर्म सूचित करने के लिए यहाँ 'होता है' का प्रयोग अनिवार्य है. और 'होता है, करता है' के सामंजस्य को हम ऊपर देख चुके हैं. अंतिम दो वाक्यों में (एकल वस्तु होने के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण) गुणधर्म सूचित नहीं है. गुणधर्म सूचित करने के लिए निम्नलिखित वाक्य संरचना की आवश्यकता होगी–

हिंदी के छात्र कविता करते हैं = हिंदी के छात्र कवि होते हैं.

मेधावी कुशलता से पढ़ाते हैं = मेधावी कुशल अध्यापक होते हैं.

सवाल यह है कि 'पढ़ाता है' एक जगह गुणधर्म सूचित करता है, एक जगह नहीं, ऐसा क्यों ? इन शब्दों के परिभाषात्मक विवरण वाले वाक्यों में इस अंतर का कारण ढूंढ़ सकते हैं. नाटककार नाटक लिखता है. नाटक लिखने वाला नाटककार होता है. इसी कारण शेर *मांसाहारी* है गलत वाक्य है, शेर *मांसाहारी* होता है, यह शेर *मांसाहारी* है दोनों सही. हम यहाँ ऊपर की ही बात दुहरा रहे हैं.

1.4. स्थितिसूचक है के स्थान पर तीन क्रियाएँ इसी अर्थ में आती हैं–

ठहर *वो ठहरे साधु/विशुद्ध शाकाहारी.*

हो *यह हुई न बात.*

बात यों हुई.

रह *यह अच्छी बात रही. यह बात अच्छी रही.*

यह भी ख़ूब रही.

वह रहा मकान आपका.

यहाँ क्रिया अन्य किसी रूप में नहीं आती, अन्य वृत्तियाँ, रंजकत्व आदि इसमें नहीं आते. अर्थ की दृष्टि से यह पूरक रचना ही है. यहाँ तीन (या अधिक) धातुओं का प्रयोग और उनका पूर्ण पक्ष रूप समस्या है.

स्त्र /स्त्र/ से बनने वाले तीन शब्दों में बराबर /स्त्र/ देख कर ग्लानि होती है. पता नहीं मुद्रण की असुविधा है या अज्ञान या 'स्त्री' का प्रभाव, प्रायः इन्हें गलत पाता हूँ. स्राव, स्रोत, सहस्र के सही रूप का इस्तेमाल होना चाहिए. स्त्री को अपनी जगह रहने दीजिए, उसे बदलने की ज़रूरत नहीं.

स्रष्टा सृष्टि से संबद्ध इस शब्द की वर्तनी पर ध्यान दीजिए.

स्रोत 1. यह शब्द अंग्रेज़ी source का पर्याय है. *विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ⋯. हिंदी भाषा के शब्द विभिन्न स्रोतों से आये हैं.* 'स्रोत' शब्द मुद्रण में प्रायः 'स्त्रोत' छपता है, जो अटपटा है.

2. स्रोत शब्द का तद्भव रूप सोता है, जिसका अर्थ fountain है. *दिल्ली के पास सोहना नामक स्थान पर कई गर्म पानी के सोते हैं.*

स्वन (हिंदी के) प्रस्तुत ग्रंथ में निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों से उनके सामने दिये गये हिंदी के स्वनों का उल्लेख करेंगे. पारिभाषिक शब्दों के सामने उदाहरण दिये गये हैं.

स्वर अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ऍ ऍ॓ ऑ॓ ऑ

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	अइ अउ आइ आउ
मूलस्वर	ऊपर की सूची में /अ/ से /ऑ/ तक
संध्यक्षर स्वर	अइ अउ आइ आउ
स्वर संयोग	आई, आऊ, उअ आदि दो मूल स्वरों का सन्निवेश
नये विकसित स्वर	ऍ ऒ
विदेशी स्वर	ऍ ऒ ऎ ऑ आइ आउ
ह्रस्व स्वर	अ इ उ ऍ ऒ **दीर्घ स्वर** आ ई ऊ ए ऐ ओ औ ऎ ऑ
अनुनासिक स्वर	अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ ऐं ओं औं
अग्र स्वर	इ ई ऍ ए ऐ ऎ
	निम्न ऎ **निम्न-उच्च** ऐ ऍ **उच्च-निम्न** ए **उच्च** इ ई
पश्च स्वर	उ ऊ ऒ ओ औ ऑ आ
	निम्न ऑ आ **निम्न-उच्च** औ ऒ **उच्च-निम्न** ओ **उच्च** उ ऊ
मध्य स्वर	अ

हिंदी व्यंजन

	ओष्ठ्य	दंत्योष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	पूर्वकंठ्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प ब फ भ		त द थ द		ट ड ठ ढ		ज्ञ	क ग ख घ	क़
स्पर्श संघर्षी						च छ ज झ			
नासिक्य	म म्ह		न्	न न्ह	ण	ञ		ङ	
लुंठित				र रह					

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	ओष्ठ्य	दंत्योष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	पूर्वकंठ्य	कंठ्य	काकल्य
पार्श्विक				ल ल्ह					
उत्क्षिप्त					ड़ ढ़				
संघर्षी		फ़		स ज़		श		ख़ ग़	
अर्धस्वर		व				य			

नोट–हर ख़ाने में ऊपर अल्पप्राण तथा नीचे महाप्राण व्यंजन हैं. बायीं ओर अघोष तथा दायीं ओर घोष व्यंजन हैं.

तालिका के पारिभाषिक शब्दों के अतिरिक्त अन्य पारिभाषिक शब्द निम्न प्रकार हैं–

परुष व्यंजन	स्पर्श तथा स्पर्श संघर्षी व्यंजन
तरल व्यंजन	नासिक्य, लुंठित, पार्श्विक, उत्क्षिप्त तथा अर्धस्वर
प्रवाही व्यंजन	संघर्षी तथा अर्धस्वर
विदेशी व्यंजन	क़ फ़ ज़ ख़ ग़

स्वनिम यह प्रकरण भाषाविज्ञान में वाक स्वनों के विश्लेषण का विषय है. फिर भी हमें इस ग्रंथ के संदर्भ में इस विषय को समझने की आवश्यकता है. भाषाएँ वास्तव में स्वनों के उच्चारण क्रम से ही बनती हैं. एक वाक्य बोलते समय हम क्रम से स्वनों का उच्चारण करते जाते हैं. स्वनों से शब्द निर्मित होते हैं और हर शब्द दूसरे शब्द से भिन्न अर्थ व्यक्त करता है. भाषाओं में भाषा के स्वनों की संख्या सीमित (40–50) होती है. इन स्वनों के भिन्न-भिन्न संयोजन (combinations) से लाखों की संख्या में भिन्न-भिन्न शब्द बनते हैं. सैद्धांतिक रूप से मान सकते हैं कि हर शब्द दूसरे शब्दों से भिन्न स्वन संयोजन का होता है. तभी दो शब्दों में हम अंतर करते हैं.

1. स्वनिम की अवधारणा को हम गणित के संदर्भ में अंकों के गठन में देख सकते हैं. मूल अंक दस हैं 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 और 9. इन्हें हम वाक

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वन मान लें. इनसे बने अंकों (संयोजनों) की संख्या अनंत है. इन्हें हम शब्द मान लें. हर निष्पन्न अंक दूसरे अंकों से अंक संयोजन में भिन्न होता है और भिन्न अर्थ देता है. उन अंकों में हर मूल अंक के स्थान का महत्त्व है. कोई मूल अंक बदलता है, तो अंक का 'अर्थ' बदल जाता है. जैसे 719, 819, 729, 718. यहाँ हर अंक दूसरे से भिन्न है. इस भिन्नता का आधार है अंकों का स्थान मूल्य. हम कह सकते हैं कि मूल अंक अर्थभेदक हैं; उन्हीं से अंकों में अर्थभेद उत्पन्न होता है.

इसी प्रकार भाषा में भी लाखों शब्द बन सकते हैं. हर दूसरे शब्द मे अर्थभेदक तत्त्व हैं वाक स्वन. जैसे कमल, कमर, कवर, कवल. अर्थभेदक स्वनों को ही हम स्वनिम कहते हैं. स्वनिम की दूसरी परिभाषा यह हो सकती है कि किसी शब्द में किसी स्वन की जगह दूसरा स्वन आए और शब्द बदल जाए, तो बदला स्वन, बदलने वाला स्वन दोनों स्वनिम हैं.

अब सवाल उठता है कि स्वन को स्वनिम क्यों कहा जाए ? इस संदर्भ में हम अपने गणित की मिसाल पर फिर लौटें. गणित में हर मूल अंक 'शब्द' के हर स्थान में आ सकता है (शून्य की पहेली को इस चर्चा से दूर रखें–वह उच्च अध्ययन की बात है); कहीं दो मूल अंक शब्द रचना में समान अर्थ नहीं दे सकते. कभी 712 तथा 713 समान नहीं हो सकते. लेकिन स्वनों से बनी भाषा में कुछ भिन्न व्यवस्था भी दिखायी पड़ती है. एक उदाहरण लीजिए. तमिल में निम्नलिखित पाँच स्वन हैं.

उच्चरित स्वन	स्वन का शब्द में स्थान	उदाहरण
क	शब्दारंभ में, द्वित्व में	(कालम्, अक्का)
ग	सवर्गीय नासिक्य के बाद	(तङ्गम्) ⟨तङ्कम्⟩
ख़	स्वर मध्य में	(नख़म्, पख़ल्) ⟨नकम्, पकल्)
ग़	ल के बाद	(नल्ग़ु) ⟨नल्कु⟩
ह़	स्वर के बाद, इ से पहले	(आह़िय) ⟨आकिय⟩

नोट–ह़ तालव्य संघर्षी स्वन है.

मान लीजिए कि आप तमिल पढ़ा रहे हैं और छात्र को शुद्ध उच्चारण करना सिखाना चाहते हैं. एक ओर आप उसे पाँच अलग स्वन बताएँगे. हर स्वन को उसके परिवेश में दिखा कर अभ्यास कराएँगे. दूसरी ओर आप इन पाँचों स्वनों को एक साथ जोड़ कर एक दूसरे से संबंध तथा तुलना बता कर अभ्यास करा सकते हैं. दूसरी स्थिति में एक सुविधा है. छात्र परस्पर संबंध रखने वाले स्वनों की व्यवस्था को आसानी से, व्यवस्था के रूप में समझ सकता है. इस व्यवस्था से चलें, तो यह पाँचों स्वन किसी स्वनिम (उसे फ़िलहाल स्वनिम /क/ मान लें) के सदस्य हैं; ये स्वनिम /क/ के संस्वन हैं. याद रखें कि **स्वनिम भाषा का वास्तविक**

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्चरित स्वन नहीं है. वह मात्र स्वनों के प्रयोग की व्यवस्था है; एक काल्पनिक, लेकिन व्यवहार में उपयोगी व्यवस्था है. स्वनिम /क/ स्वनिम /प/ या /त/ की जगह आ कर (या उनके संस्वनों की जगह आ कर) अर्थभेद उत्पन्न करता है. लेकिन ऊपर के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि एक स्वनिम के सदस्य एक दूसरे के स्थान में नहीं आते; स्पष्ट ही है ये आपस में अर्थभेद नहीं करते. एक स्वनिम की जगह दूसरे स्वनिम का आना व्यतिरेक कहलाता है; उस स्वनिम के सदस्य (संस्वन) आपस में परिपूरक होते हैं. अगर दो शब्दों में केवल एक-एक स्वनिम व्यतिरेक में हो, तो उन शब्दों को न्यूनतम युग्म कहा जाता है, जैसे कमर, कमल. न्यूनतम युग्म के दोनों भेदक स्वन निश्चय ही उस भाषा के स्वनिम कहलाएँगे.

2. हिंदी के इन न्यूनतम युग्मों से आप हिंदी के स्वनिमों को पहचान सकते हैं–

कल	काल	नाल	गिरना
काल	खाल	पाल	घिरना
कील	गाल	फाल	जाग
कुल	चाल	बाल	झाग
कूल	छाल	भाल	काट
मिल	जाल	माल	काठ
मील	टाल	राल	साथ
वेर	डाल	लाल	साध
बैर	ढाल	शाल	भय
बोर	ताल	साल	भव
बौर	थाल	हाल	भर
	दाल		

2.1. अब आप हिंदी के दो स्वनिमों के बारे में देखिए–हिंदी में [ञ] का स्थान सीमित है–यह स्पर्श संघर्षी स्वनों से पहले ही आता है. इसी तरह [ङ] (एकाध अपवादों को छोड़ कर) कंठ्य स्पर्श व्यंजनों से पहले ही आता है. इसी तरह दंत्य [न्] दंत्य स्पर्श ध्वनियों से पहले ही आता है. इन तीनों को अलग-अलग स्वन मान लें और प्रयोग का स्थान बनाकर अभ्यास कराएँ, तो कोई बात नहीं; लेकिन इन तीनों का सीमित परिवेशों में आना, एक दूसरे की जगह न आना, लेकिन समान परिवेश में आना ये बातें हमें नयी व्यवस्था के संदर्भ में सोचने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे हम इनका व्यवस्थित विवरण दे सकें. आगे इन स्वनों की स्वनिमिक स्थिति दिखायी गयी है–

स्वनिम /न/ के संस्वन–

[ञ] स्पर्श संघर्षी स्वनों से पहले [ङ] कंठ्य स्पर्श व्यंजनों से पहले

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[न्] दंत्य स्पर्श व्यंजनों से पहले [न] अन्य सभी स्थानों में

स्वनिम /ड/ के संस्वन (देखें **ड ड़ ढ ढ़**)–

[ड़] अक्षरांत में, शब्द मध्य में तथा अक्षरारंभ में

[ड] अन्यत्र

प्रायः स्वनिम का नामकरण उस संस्वन से करते हैं, जो प्रयोग में अधिक व्यापक है. लेकिन ऐसी कोई पाबंदी नहीं है. यह सवाल उठता है कि स्वन और संस्वन में क्या अंतर है. दोनों ही वास्तविक उच्चरित रूप हैं. पहला हमारे वाक स्वनों के आधार पर पहचाना जाता है, पहचाने जाने पर व्यवस्था में जो दिखाया जाता है, वह संस्वन है.

2.2. हिंदी के भाषाविज्ञान के ग्रंथों में अक्सर यह लिखा मिलता है कि एक स्वन का हम हर बार अलग उच्चारण करते हैं; इस तरह हम हर बार अलग स्वन उच्चरित करते हैं. भौतिक दृष्टि से उच्चरित [अ] के कई उच्चारण भले अलग क्यों न (मशीनों द्वारा) बताये जाएँ, भाषा की दृष्टि से हम एक ही स्वन बोलते हैं, सुनते भी एक ही हैं. सूक्ष्म मशीनी भेद हमारे काम का नहीं है. इसी तरह कई उच्चारण के भेद (जो सुनकर पहचाने जा सकते हैं) भी हमारे काम के नहीं हैं. [का की कू] के तीन [क] स्वन अरबी भाषी को अलग लगते हैं, हिंदी भाषी इन तीनों में कोई अंतर नहीं पहचानता. भाषा का स्वन वही है, जो भाषा की रचना में काम आए. [की कू] के [क] स्वनों में अंतर हिंदी की रचना में महत्त्व नहीं रखता. भाषा की रचना के संदर्भ में ही भाषा के स्वन पहचाने जाते हैं.

3. जब वाक स्वन पहचान लिये जाते हैं, उन्हें स्वनिमों और संस्वनों में व्यवस्थित किया जाता है. स्वनिम एक या अधिक संस्वनों के लिए नाम है; उनके प्रयोग की व्यवस्था का पर्याय है. स्वनिम निर्धारण में निम्नलिखित आधार काम आ सकते हैं–(अ) जो स्वन वितरण की दृष्टि से संभाव्य है (अर्थात हम कह सकते हैं कि अमुक स्वन अमुक स्थानों में ही आ सकता है), वह स्वनिम नहीं होगा. (आ) एक स्वनिम के दो संस्वन उच्चारण की दृष्टि से साम्य रखते होंगे और उनमें पूरक वितरण की व्यवस्था दिखायी पड़ सकती है. (इ) वाक स्वन और स्वनिम/संस्वन में अधिक सामंजस्य नहीं है. अर्थात किसी भाषा के दो स्वन (जो दूसरी भाषा में दो स्वनिम हो सकते हैं) एक ही स्वनिम हो सकते हैं; इसी तरह कभी एक स्वन दो स्वनिमों में गिने जा सकते हैं (जैसे हिंदी /भ/ को कोई विश्लेषक ब+महाप्राण मान सकता है). इस तरह का वैकल्पिक विश्लेषण भाषा की प्रकृति तथा पूरी व्यवस्था के संदर्भ में आवश्यक हो सकता है. (ई) ऊपर की बात के संदर्भ में यह भी ज़रूरी होगा कि भाषा का विश्लेषण संक्षिप्त और सहज हो. (उ) दो स्वनिमों के बीच उच्चारण में अंतर करने की अधिक आवश्यकता है, क्योंकि अन्यथा अर्थ पर प्रभाव पड़ता है; एक स्वनिम के दो

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संस्वनों में उच्चारण में अंतर करना भाषा की स्वाभाविकता के लिए आवश्यक है, अर्थ की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं है. (ऊ) भाषा में स्थापित किये गये स्वनिम हर दूसरे स्वनिम के स्थान पर आ कर अर्थभेद करते हैं. इस संदर्भ में द्रष्टव्य है कि भाषा के कुछ स्वनिम हर स्थान पर नहीं आते होंगे (जैसे /ण/ शब्दारंभ में नहीं आता), लेकिन जहाँ व्यतिरेक हो, वहाँ अर्थ का अंतर होगा. (ऋ) अर्थभेद करने की इस व्यवस्था में एक जगह अपवाद दिखायी पड़ता है. भाषा में जब दो स्वनिम विकल्प की स्थिति में आएँ और अर्थभेद न हो, तो उस स्थिति को मुक्त वितरण कहते हैं. यह स्थिति केवल कुछ ही शब्दों में दिखायी पड़ती है और अधिकतर शब्दों में अर्थभेद बना रहता है. हिंदी में र-ड़ (*पूरी-पूड़ी*), र-ल (*दीवार-दीवाल*), द-ज़ (*गुंबद-गुंबज़*), य-ज (*यम-जम*), व-ब (*वन-बन*) मुक्त वितरण के कुछ उदाहरण हैं. वैसे और शब्दों में इनसे अर्थभेद प्रकट होता है. *पूरी*('पूरा' का स्त्रीलिंग लिंग रूप)-*पूड़ी*, *रोग-लोग*, *सदा-सज़ा*, *राय-राज*, *वार-बार* में ये स्वनिम हैं, व्यतिरेक में आ कर अर्थभेद करते हैं.

स्वीकार, स्वीकृति, स्वीकृत *स्वीकार* में -*कार* प्रत्यय लगा है, जो संस्कृत में संज्ञा शब्द की रचना करता है. *आकार*, *सत्कार*, *उपकार*, *शीत्कार*, आदि. 'स्वीकार' भी शायद संज्ञा के रूप में ही प्रयुक्त हुआ होगा. **संयुक्त क्रियाएँ** प्रकरण में हमने चर्चा की कि *मैंने गोष्ठी/चर्चा/कार्यक्रम आरंभ की/किया* आदि वाक्य रचनाओं में संज्ञा शब्द विशेषण के रूप में आते हैं. *उसने मेरी बात स्वीकार नहीं की* भी इसी तरह की वाक्य रचना है. इस तरह के प्रयोगों के कारण तथा बाद में -*कृति* से शब्द बनने के कारण अब *स्वीकार* विशेषण के रूप में ही आता है, संज्ञा की तरह नहीं. *आप की बात मुझे स्वीकार है* (ऐसी रचना में और कोई संज्ञा नहीं आती). *मुझे काम करने की स्वीकृति दीजिए* (*स्वीकार दीजिए). *आप की स्वीकृति मिलते ही* (*आप का स्वीकार मिलते ही . . .). *स्वीकार* तथा *स्वीकृत* में भी अंतर आ गया है. *आप मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें* (*स्वीकृत करें). *कृपया एक महीने की छुट्टी स्वीकृत करें* (*स्वीकार करें). *स्वीकार करना* अपने लिए प्राप्त करने, लेने के अर्थ में आता है, *स्वीकृत करना* दूसरों के लिए मंज़ूरी या स्वीकृति देने के अर्थ में.

ह 1. यह हिंदी की वर्णमाला का अंतिम वर्ण है. यह काकल्य संघर्षी व्यंजन है. यह व्यंजन उच्चारण की कई विशेषताएँ प्रदर्शित करता है. सामान्यतः शब्द के आरंभ तथा स्वर मध्य की स्थिति में इसका घोष उच्चारण होता है—*हार*, *होश*, *महा*, *विहार*. अक्षरांत मुख्यतः शब्दांत में इसका उच्चारण अघोष तथा लगभग सुना न जाए, इतना हल्का होता है. *बाहरी*, *वाह*, *देह*. लेकिन इसकी उपस्थिति

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ह के उच्चारण के साथ-साथ उच्चारण के समय की अवस्थिति से भी मालूम होती है. इन तीनों के साथ क्रमशः /बारी, वा, दे/ का उच्चारण करके स्वयं अंतर देखिए. इस न सुने जाने के कारण ही कुछ शब्दों में अंतिम /ह/ का लोप (दीर्घ स्वरों के बाद) दिखायी पड़ता है. दरगाह~दरगा, परवाह~परवा, तफ़रीह~तफ़री.

2. अक्षरांत तथा शब्दांत में /अह/ के उच्चारण के हल्केपन के कारण /ह/ की अस्पष्टता के साथ /अ/ के दीर्घीकरण की भी प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है. बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह, सत्रह, अठारह इन सभी शब्दों का उच्चारण बारा, तेरा जैसा होता है. लेकिन /आ/ से यह उच्चारण भिन्न होता है. तेरह तथा तेरा के उच्चारण की तुलना कीजिए.

3. हिंदी में लिखित भाषा तथा उच्चरित भाषा में दो प्रमुख क्षेत्रों में अंतर दिखायी पड़ता है—एक है अ-लोप, दूसरा /ह/ से बने शब्द. कई जगह /ह/ से बने शब्दों के उच्चारण में विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं. इन्हें यहाँ क्रम से देखें—(अ) ह्रस्व स्वर /अ/ के बाद अक्षरांत में आने वाले /ह/ के कारण /अ/ निम्न अग्र स्वर बन जाता है. **(व)** अ ह+. . . → **(व)** ऍ ह+. . . पहला, मेहमान, एहसान, रहना, तहमत, रहमान, सहमा, बहका, नहले पर दहला, पहनाना, कहना, पहचान, शहरी, गहरा, बहरा, गहना, ज़हरीला, लहँगा, मेंहदी, लहराना. (आ) जो शब्द **व** अ ह अ **व** के साँचे के हैं, इनमें पूर्ववर्ती /अ/ निम्न अग्र स्वर बन जाता है. बहन, महल, रहट, शहर, ज़हर, मेहर, लहर, पहल, अहल, पहन, रहम, बहम, नहर, बहल, तहत, सेहत, रहन, सहन, कहर. (इ) इन दोनों प्रकार के शब्दों में समान उच्चारण दिखायी पड़ता है. अगर **व** अ+ह **स** **(व)** के रूप हों, तो /अ/ में परिवर्तन नहीं होता. महा, कहो, कहो, रहो, महीन, शहीद, लहू.

मैंने अपने एक लेख (1966) में प्रस्ताव किया था कि स्वर परिवर्तन के साथ स्वर मर्मरित भी होता है (अर्थात स्वर /ह/ के साथ बोला जाता है), जिससे /ह/ के स्वतंत्र अस्तित्व की बात नहीं उठती. यह बात निश्चित रूप से बहन जैसे शब्दों में देखी जा सकती है जहाँ /ह/ तथा /न/ के काल मात्रा के क्रम से स्वतंत्र उच्चारण नहीं हैं. मर्मरित स्वर को चिह्न /अ^ह/ से दिखा रहा हूँ.

(व) अ ह	} →	**(व)** ऍ^ह /
(व) अ ह अ **व**		**(व)** ऍ^ह**व**

इस तरह बहन जैसे लेखन में दो अक्षर वाले शब्द वास्तव में उच्चारण में एक अक्षर के हैं. पहन-पहना में मध्य अ-लोप की स्थिति भी नहीं है, बल्कि /पेँ^ह न/ में सीधे रूप /आ/ का योग है.

3.1 कहकहे, चहचहाना, चहचहाहट आदि शब्दों में प्रथम अक्षर में स्वर

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

/ऍह/ है तथा दूसरे में /अ/ होना चाहिए. ऐसे शब्दों का मशीनी विश्लेषण होना चाहिए. /अ/ के अलावा अन्य ह्रस्व स्वरों से पहले /ह/ के आने पर भी स्वर में कुछ परिवर्तन की बात देखी जा सकती है. *बहुत* का उच्चारण /बोहत/ जैसा होता है, यह एकाक्षरिक है. *पहिया, चुहिया, बहियाँ* आदि शब्दों में /ह/ के कारण स्वर में परिवर्तन के बारे में और विश्लेषण होना चाहिए.

4. अब तक हमने ⟨ह⟩ के कारण उच्चारण में अंतर के बारे में देखा. यहाँ ऐसे शब्दों की वर्तनी की विशेषता के बारे में देखेंगे. चूँकि *पहला* जैसे शब्दों में स्वर में परिवर्तन होता है और हिंदी में ह्रस्व निम्न अग्र स्वर का कोई चिह्न नहीं है, कई शब्दों में यह स्वर ⟨ए⟩ से ही लिखा जाता है. लिखने के बावजूद इसका उच्चारण हमेशा ह्रस्व है. *मेहर-मेजर, सेहत-सेमर, सेहरा-नेवला* जैसे शब्द युग्मों में आप इस अंतर को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं.

इसके लेखन के तीन स्पष्ट रूप हैं—

सिर्फ़ ⟨अ⟩	*शहर, रहना, कहना, लहर, रहम, पहल, पहला, पहचान*
सिर्फ़ ⟨ए⟩	*मेहंदी, सेहरा, एहतियात, बेहतर, सेहत, तेहरान*
⟨अ⟩ या ⟨ए⟩	*महमान~मेहमान, अहसास~एहसास, महर~मेहर, ज़हन~ज़ेहन, अहसान~एहसान*

यह सूची केवल उदाहरण के लिए दी जा रही है और स्थानीय, शैलीगत, वैयक्तिक प्रयोगों के कारण इसमें कुछ संशोधन हो सकता है. कहने का तात्पर्य यह है कि यहाँ वर्तनी की विविधता उच्चारण के कारण है और दोनों में मानकीकरण की आवश्यकता है.

4.1. इसी तरह एक भिन्न समस्या है *बहिन-बहन* की. यहाँ उच्चारण की विविधता के कारण भिन्न वर्तनी का प्रयोग है. ऐसे तीन-चार शब्द हैं— *पहिनना~पहनना, बहन~बहिन, पहला~पहिला, पहचान~पहिचान.* पता नहीं कोई व्यवस्था है या मात्र संयोग, चारों शब्दों के आरंभ में ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजन हैं. लेकिन इस व्यवस्था को मानने पर *बहिरा, *बहिकना आदि शब्दों को भी स्वीकार करना होगा. अन्यथा क्या कारण है कि कुछ विकल्प मिलते हैं, कुछ नहीं?

पहला	*पहिला*
?	*महिला, महिमा* (*पहला* और *महिला* में उच्चारण का अंतर भी देखें)
बहन	*बहिन*
?	*सहित, रहित*
रहना	?

एक तरफ़ मूल शब्द हैं *बहन* आदि, दूसरी तरफ़ कहीं ⟨ए⟩ (*मेहमान*), कहीं ⟨इ⟩ *बहिन* वाले शब्द हैं. यह बहुत कठिनाई वाली स्थिति है. मैं सोचता हूँ कि

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सबसे पहले ⟨इ⟩ वाले शब्दों का त्याग किया जाए और इनके ⟨अ⟩ वाले रूपों को मानक माना जाए, तो एक भ्रम कम होगा.

5. हिंदी भाषी छात्रों में *कैहना, मैहमान, फैला, रैना* आदि वर्तनी के दोष दिखायी पड़ते हैं. सही उच्चारण सिखाने का यत्न करें, नहीं तो अहिंदी भाषियों में भी ये दोष आ जाएँगे. इसे दूर करने का यत्न शिक्षण में होना चाहिए.

6. उर्दू के सैकड़ों शब्द हकरांत होते थे, जो स्वन परिवर्तन के कारण हिंदी में आकारांत बन गये. उन शब्दों की वर्तनी तथा लिंग के बारे में कुछ बातों की चर्चा करना चाहूँगा. दीर्घ स्वरों के बाद का शब्दांत /ह/ नहीं छूटा है. ये शब्द दोनों लिंगों में आते हैं. पुल्लिग–*गुनाह, निकाह*; स्त्रीलिंग–*अफ़वाह, तनख़ाह, तफ़रीह, निगाह, पनाह, परवाह, तरजीह*. संज्ञा या विशेषण शब्दों में अ+ह अंत वाले शब्दों में स्वर का दीर्घीकरण और ह का लोप दिखायी पड़ता है. ऐसे संज्ञा शब्द प्रायः पुल्लिग होते हैं और विशेषण प्रायः अविकारी होते हैं. *ख़ाना, पोदीना, मेवा, मौका, लमहा, वाकया, दफ़ा, सफ़ा* ऐसे कुछ संज्ञा शब्द हैं. किन्हीं कारणों से इन शब्दों में उभयलिंगी प्रयोग की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है और कई हिंदी भाषी *पोदीना, मेवा, दफ़ा* (अर्थात बार) आदि शब्दों को स्त्रीलिंग में बोलते हैं. *सादा, संजीदा, ज़िंदा, मौजूदा, बेहूदा, ताज़ा, गंदा* कुछ विशेषण शब्द हैं. इनमें कई शब्द अब विकारी होने लगे हैं. उर्दू में -ह स्त्रीलिंग प्रत्यय भी है, जो स्वन परिवर्तन के कारण लुप्त हो गया. इस कारण हिंदी में उर्दू के आकारांत स्त्रीलिंग शब्द की भी व्युत्पत्ति होती है. *साहब-साहिबा, माशूक-माशूका, वल्द-वालिदा, मालिक-मलिका* में इस प्रवृत्ति को देख सकते हैं. इसी तरह *बेवा* भी हकारांत शब्द से बना है. मानुष संज्ञाओं का उल्लेख करने के कारण यहाँ लिंग व्यवस्था में परिवर्तन नहीं हुआ है. कुछ हकारांत शब्द (जो 'हे' से लिखे जाते हैं) जैसे *तरह, जिरह, सुलह, सुबह, फ़तह*, कुछ जो 'हम्ज़ा' से लिखे जाते हैं, जैसे *वजह*, कुछ जिनमें /ह/ के बाद हम्ज़ा लगता है, जैसे *सतह* (<*सतहह*), *तह* (<*तहह*) हिंदी में /ह/ से ही लिखे जाते हैं. उल्लेखनीय है कि ये सब स्त्रीलिंग शब्द हैं.

/ह/ के बाद भाववाचक संज्ञा प्रत्यय /गी/ और बहुवचन प्रत्यय /गान/ आते हैं और /ह/ का लोप होता है. इन स्थानों में दीर्घ स्वर नहीं होता. *ज़िंदगी, मौजूदगी, सादगी, ताज़गी, बंदगी, संजीदगी, बेहूदगी, ज़िंदगान/ज़िंदगानी* (अर्थात प्राण) आदि शब्दों में इस प्रवृत्ति को देख सकते हैं.

हरि यह भगवान विष्णु का एक नाम है. हरी 'हरा' का स्त्रीलिंग रूप है (*हरी मिर्च, हरी स्याही*). *हरि* से बनने वाले शब्दों में दीर्घ स्वर लिखना (*हरीद्वार, हरीजन, हरी राम*) दोषपूर्ण है.

हरेक इसका दूसरा रूप भी है *हर एक* (या *हरएक*). *हरेक* ही अधिक प्रचलित है. इसी तरह *कुछेक* अब *कुछ एक* की अपेक्षा अधिक प्रचलित हो चला है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हलंत संस्कृत शब्दों के अंत में /अ/ स्वर रहित व्यंजन की उपस्थिति बताने के लिए व्यंजनों के नीचे हलंत चिह्न लिखा जाता था, जैसे *जगत्, भागवत्, श्रीमत्, पृथक्, जाग्रत्, शरत्* या *शरद्, वाक्, प्राक्, सत्, महत्*. लेकिन हिंदी के शब्दों के अंत में /अ/ आता ही नहीं और सभी मात्रारहित वर्ण व्यंजन से ही उच्चरित होते हैं (देखें **अ, अ-लोप**). इस कारण संस्कृत का हलंत हिंदी में बेमानी हो गया है. चाहे आप *वाक्* लिखें या *वाक*, दोनों का उच्चारण एक ही है. इसी कारण उपर्युक्त शब्दों को *जगत, भागवत, पृथक, वाक, सत* आदि लिखने की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है.

1.1. **अतिसुधार** की प्रवृत्ति के कारण कृदंत शब्दों में भी, जहाँ हलंत नहीं आता, हलंत लिखने की गलती आम तौर पर हो जाती है. *हत्प्रभ, स्थित्प्रज्ञ, नत्मस्तक* आदि इस दोष के कुछ उदाहरण हैं.

2. यद्यपि हलंत लिखा नहीं जाता, इसकी उपस्थिति का अनुभव हलंत रहित और हलंत युक्त शब्दों के दूसरे शब्दों के साथ संयोग में स्पष्ट हो जाता है (देखें **संधि**). सत्+अनुभव *सदनुभव* होता है, जबकि मत+अधिकार *मताधिकार*.

3. आधुनिक हिंदी की मानक देवनागरी लिपि में हलंत चिह्न का एक और प्रयोग मिलता है. जहाँ संस्कृत के व्यंजन क्रम मिल कर एक अक्षर बनते थे, जैसे द्व, ह्म, द्य, वहाँ इन्हें मानक लिपि में उच्चारण के क्रम से अलग लिखा जाता है और प्रथम वर्ण के नीचे हलंत चिह्न दिया जाता है. जैसे द्‌व, ह्‌म, द्‌य आदि. इस प्रकार हलंत चिह्नों से वर्णों को अलग करने के कारण कुल वर्णों की संख्या कम हो जाती है और लेखन, टंकण, मुद्रण, भाषा शिक्षण सभी क्षेत्रों में काम आसान हो जाता है. इस प्रकार संस्कृत हलंत हिंदी में समान कार्य/उद्‌देश्य के लिए प्रयुक्त होता है, फिर भी दोनों भाषाओं में इसका वास्तविक प्रकार्य बहुत भिन्न है.

4. हिंदी भाषी अहिंदी भाषी शब्दों के व्यंजनांत शब्दों को सूचित करने के लिए हिंदी में हलंत लिखते हैं, जैसे *जगन्नाथन्*, *प्रकाशम्*, *ट्वीड्* आदि. इन स्थलों पर हलंत की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि हलंत न लगाने पर भी व्यंजनांत उच्चारण ही होगा और हिंदी शब्दों में अकारांत उच्चारण दिखाना असंभव-सा है.

5. भाषाविज्ञान में व्यंजनों को दिखाने के लिए कई विद्‌वान हलंत चिह्न युक्त व्यंजन लिखते हैं, जैसे /क्/, /प्/, /त्/. कपड़ा—क् अ प् ड़् आ. अगर /क/, /प/ आदि चिह्नों से ही व्यंजन सूचित करें, तो कोई समस्या नहीं होगी. यहाँ हलंत चिह्न आवश्यक नहीं है.

हलवा, हलुवा, हलुआ इस शब्द के ये तीनों रूप मिलते हैं. स्वर संयोग में /व/ की श्रुति न होने के कारण दूसरा रूप त्याज्य है. शेष दोनों रूप चलते हैं, ठीक हैं.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हालाँकि, यद्यपि 1. संस्कृत का एक योजक युग्म *यद्यपि . . . तथापि* पहले हिंदी में इसी रूप में चलता था. इसमें दो उपवाक्यों में कारण-विपरीत कार्य का संबंध देखते हैं. अब हिंदी में *तथापि* का बहुत कम प्रयोग है और *यद्यपि . . .* (*फिर भी*) का अधिक प्रचलन है. *यद्यपि मैंने अच्छी तरह से पढ़ाई की थी,* (*फिर भी*) *मैं फ़ेल हो गया. यद्यपि आपने मना किया था, फिर भी मैं वहाँ चला गया था.* इन वाक्यों में से *यद्यपि* को छोड़ सकते हैं. तब *फिर भी* अनिवार्य होगा. *आपने मना किया था, फिर भी वहाँ चला गया था. मैंने तो अच्छी पढ़ाई की थी, फिर भी मैं फ़ेल हो गया.*

2. यदि इन वाक्यों का उपवाक्य क्रम बदल दें, तो कारण के साथ *हालाँकि* आएगा. *मैं फ़ेल हो गया, हालाँकि मैंने बहुत अच्छी पढ़ाई की थी. मैं सिनेमा नहीं गया, हालाँकि उस वक्त मेरी जेब में दो टिकट थे. मैं कभी वहाँ जाता नहीं, हालाँकि सब मुझे बार-बार बुलाते हैं.*

2.1 कई लोग *हालाँकि* वाले उपवाक्य को शुरू में लेते हैं. *हालाँकि मैंने अच्छी पढ़ाई की थी, फिर भी मैं फ़ेल हो गया.* इस तरह *यद्यपि* और *हालाँकि* में कोई अंतर नहीं रह गया है. दोनों में प्रयोग के अंतर को समझना जरूरी है.

हिंदी–विभिन्न अंचलों से इस प्रकरण में मेरा उद्देश्य हिंदी की बोलियों का परिचय देना नहीं, बल्कि ऐसे महानगरों की हिंदी की विशेषताओं का क्रमबद्ध विवरण देना था, जहाँ हिंदी शहरी संपर्क के प्रमुख या अतिरिक्त माध्यम के रूप में व्यवहृत होती है. महानगरी संस्कृति तथा व्यापक अंतरवर्गीय संपर्क के कारण इन अंचलों में स्थानीय विशेषताएँ विकसित हो गयी हैं, जो मानक हिंदी से भिन्न हैं और भाषा के मानक रूप को संचार साधनों के माध्यम से प्रभावित करती हैं. आजकल साहित्य सर्जन तथा फ़िल्म निर्माण के क्षेत्र में इन स्थानीय बोलियों का व्यापक प्रयोग परिलक्षित होता है. इस प्रकरण में मैं चार महानगरों–दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और हैदराबाद–की भाषा को सम्मिलित करना चाहता था. दिल्ली हिंदी भाषी प्रदेश है, फिर भी स्थानीय भाषिक प्रभावों और महानगरीय संपर्क के कारण इसकी अपनी विशिष्ट शैली उभर कर आ रही है. एक बंगाली मित्र ने सुझाव दिया कि कलकत्ता के अतिरिक्त माध्यम के रूप में हिंदी का व्यापक प्रचलन नहीं है. अतः विचार त्याग देना पड़ा. बंबई तथा हैदराबाद में हिंदी विशिष्ट स्थानीय बोली के रूप में लंबे अर्से से व्यवहृत होती रही है. इन नगरों की भाषा की संरचना पर कुछ काम भी हुआ है. अन्य बड़े शहरों में बंगलूर या मदरास में हिंदी का व्यापक प्रचलन नहीं है, शायद नागपुर की हिंदी इस प्रकरण में जोड़ी जा सकती थी.

अपनी जिज्ञासा के कारण मैं तीनों महानगरों की सामान्य विशेषताओं से परिचित था, फिर भी मैंने यही उचित समझा कि स्थानीय व्यक्तियों से ही शहर की

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषा के बारे में लिखवाया जाए. बंबई हिंदी पर मेरी पत्नी नीला ने लिखा है. आप गुजराती भाषी हैं और बंबई में निवास के कारण मराठी भाषा से भी परिचित हैं. विवाह तक आप सामान्य जन-संपर्क के लिए स्थानीय भाषा का भी प्रयोग करती रही हैं. आप ने बंबई हिंदी (याने बंबइया हिंदी) में लिखे गये दो उपन्यासों (कबूतरखाना–शैलेश मटियानी, मुरदा-घर–जगदंबाप्रसाद दीक्षित), धर्मयुग, सारिका जैसी पत्र-पत्रिकाओं के लेखों, कहानियों तथा 'दामाद', 'मुक्ति', 'चुपके-चुपके', 'शान' आदि फ़िल्मों के बंबई के पात्रों के संवादों से सामग्री का संकलन किया है. शेष दोनों लेखिकाएँ केंद्रीय हिंदी संस्थान में मेरी सहकर्मी हैं. डा० मंजु गुप्ता भोजपुरी भाषी हैं और बचपन से ही दिल्ली में रही हैं. आप ने संस्थान में पढ़ने वाले दिल्ली के सरकारी अधिकारियों की भाषा से तथा दिल्ली की हिंदी का पुट देने वाले मोहन राकेश, अमृता प्रीतम, ममता कालिया जैसे लेखकों के लेखन से सामग्री संकलित की है. डा० वशिनी शर्मा हैदराबाद निवासी हिंदी भाषी हैं और बचपन से ही स्थानीय बोली का प्रयोग करती रही हैं. आप अमेरिका के कार्नेल विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका डा० बारबरा लस्ट के साथ हैदराबाद के बच्चों की हिंदी भाषा पर एक शोध परियोजना में कार्य कर रही हैं. आप ने इस परियोजना के सिलसिले में किये 60 से अधिक बच्चों से अपने साक्षात्कार से सामग्री संगृहीत की है. साथ ही आपने आकाशवाणी, हैदराबाद केंद्र से प्रसारित 'नये रंग' कार्यक्रम से भी सामग्री संकलित की है. तीनों ही लेखिकाएँ भाषाविज्ञान में प्रशिक्षित हैं और भाषा विश्लेषण का अनुभव रखती हैं.

लेख लिखवाने से पहले मैंने लेखिकाओं को यह बात बता दी थी कि स्थानीय हिंदी से तात्पर्य शहर के किसी ख़ास या प्रमुख वर्ग की भाषा से नहीं (जैसे मराठी हिंदी या पंजाबी हिंदी या हैदराबाद के मुस्लिम वर्ग की हिंदी नहीं), बल्कि उस भाषा से है जो उस शहर के सभी लोगों का सामान्य रूप से बोलचाल का माध्यम है. जिस तरह से मानक भाषा एक कल्पना या अमूर्त संकल्पना मात्र है, उसी तरह स्थानीय भाषा की कल्पना भी अमूर्त धारणा है. किसी एक वक्ता में ये सारी विशेषताएँ नहीं मिलतीं, न ही कोई एक विशेषता सारे लोगों में दिखायी पड़ती है. ये विशेषताएँ उस शहर की भाषा की अस्मिता के लक्षण हैं, उसके वाक कोष के सूचक तत्त्व हैं. प्राय: देखा जा सकता है कि एक ही व्यक्ति या लेखक मानक भाषा तथा स्थानीय मान के बीच डोलता नज़र आता है. व्यक्ति अपनी भाषायी पृष्ठभूमि, व्यवहार क्षेत्र, शिक्षा का स्तर, भाषिक चेतना आदि कारणों से न्यूनाधिक रूप में इन विशेषताओं को अपनाता है. लेख में लेखिकाओं ने स्थानीय भाषा का विवरणात्मक विश्लेषण नहीं प्रस्तुत किया है, बल्कि केवल उन्हीं विशेषताओं को प्रकाश में लाने का यत्न किया है, जो उक्त बोली में मानक हिंदी से भिन्न प्रयोग हैं. 'मानक' भाषा के निर्धारण में आप लोगों ने प्रस्तुत

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुस्तक की चर्चा का आधार लिया है. प्रस्तुत तीनों लेखों में वर्तनी तथा शब्दावली की दृष्टि से एकरूपता लाने का मैंने संपादकीय दायित्व निभाया है और लेखों की चर्चा का पुस्तक के संगत अंशों से संदर्भ जोड़ने का भी यत्न किया है.

इस अध्ययन से हिंदी के इन तीन वाक-रूपों का परिचय ही नहीं मिलता, बल्कि काल और दूरी से अलग इन भाषाओं के विश्लेषण से हिंदी भाषा के इतिहास तथा प्रसार का संकेत मिलता है. खड़ी बोली प्रदेश से आविर्भूत होने के कारण दिल्ली तथा हैदराबाद की हिंदी में कुछ सामान्य विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं और मराठी-गुजराती प्रभाव के कारण, भाषायी दृष्टि से निकट की भाषाएँ होने के कारण बंबई और हैदराबाद की हिंदी में कई बातें समान हैं. /ह, फ़/ के उच्चारण में परिवर्तन, 'कहना' के लिए 'बोलना' का प्रयोग, 'मेरे को, तेरे को' आदि नये प्रयोग अखिलभारतीय स्तर पर आधुनिक हिंदी की विशेषताएँ हैं और संभवत: आगामी परिवर्तन की दिशा के सूचक हैं. मानक भाषा से भिन्न विशिष्ट स्थानीय प्रयोग अमान्य होते हुए भी संचार साधन, लेखन आदि के माध्यम से प्रभाव डालने की कोशिश करते हैं. बंबई और हैदराबाद की भाषाओं को स्वीकृति या मान्यता नहीं मिलती. ये 'शुद्ध' नहीं हैं और व्यक्ति औपचारिक क्षेत्रों में स्थानीय बोली को छोड़ने और मानक हिंदी को अपनाने की चेष्टा करता है. दिल्ली हिंदी भाषी प्रदेश है, राजधानी है. अत: दिल्ली की हिंदी मान और मान्यता प्राप्त कर लेती है. इसी कारण *मैंने कहा हुआ है, आदत छूटनी मुश्किल है* आदि प्रयोग व्यापक प्रचलन में आते जाते हैं. इस तरह यह प्रकरण हिंदी भाषा के अखिलभारतीय स्वरूप को समझने तथा पहचानने का एक प्रयास मात्र है. दिल्ली में *मुझे चिट्ठी डालनी भूल गयी* मान्य प्रयोग है, हैदराबाद में *मैं ख़त डालने भूल गया* और बंबई में *मैं चिट्ठी डालने को भूल गया.* विभिन्न अंचलों में भाषा के प्रयोग में वैविध्य में ही इस भाषा की जीवंतता है.

बंबई की हिंदी 1. दिल्ली भारत का राजनीतिक केंद्र है तो बंबई भारत की अर्थ व्यवस्था की रीढ़. इस कारण यहाँ भारत के सभी प्रदेशों के लोग रहते हैं. बंबई महाराष्ट्र की राजधानी है. इस कारण यहाँ मराठी भाषियों की बहुतायत है. इनके अलावा यहाँ गुजराती, दक्षिण की भाषाएँ बोलने वाले, सिंधी, पंजाबी आदि हैं. इन सबके अंतरवर्गीय संपर्क की भाषा हिंदी है. बंबई में कई लाख हिंदी भाषी भी हैं. इनमें एक उपवर्ग पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार से कई पीढ़ियों से यहाँ आ कर बसे हुए मजदूरों और दूध और कोयले के व्यवसायियों का है और दूसरा उपवर्ग दफ़्तरों और व्यापारिक संगठनों में कार्यरत शिक्षित नौकरी-पेशे वालों का है, जिनकी संख्या आर्थिक विकास के साथ बढ़ती जा रही है. इस तरह समाज के हर स्तर के लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं. ब०हि० में हिंदी की पूर्वी बोलियों के तत्त्व हैं और यह दो स्थानीय भाषाओं–मराठी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और गुजराती–से प्रभाव ग्रहण कर एक लंबे अर्से में विकसित हुई है. बंबई के ज़्यादा-तर घरेलू नौकर महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट के ज़िलों से आते हैं, इसलिए 'घाटी' कहलाते हैं. उत्तर प्रदेश और बिहार के मज़दूर और व्यापारी दूसरों को 'भैया' कह कर संबोधित करते हैं, इस कारण स्वयं 'भैया' कहलाते हैं: ब०हि० वास्तव में इन्हीं घाटियों और भैयाओं के संपर्क से निर्मित हिंदी की एक विशिष्ट शैली है.

2. उच्चारण तथा लेखन की विशेषताएँ : ब०हि० के मूल में एक तरफ़ हिंदी की पूर्वी बोलियाँ हैं, दूसरी तरफ़ मराठी और गुजराती इसके प्रभाव-स्रोत हैं. इन भाषाओं की स्वनिमिक रचना मानक हिंदी से अधिक भिन्न न होने के कारण ब०हि० में उच्चारण की विभिन्नता भी नहीं दिखायी पड़ती. तीनों आधार-भूत भाषिक क्रोडों में सामान्य रूप से /ऐ औ/ का उच्चारण संध्यक्षर स्वर के समान होता है. इस कारण ब०हि० में /अइसा, कइसा, पइसा, अउरत, अउलाद/ आदि का ही उच्चारण होता है. कई शब्दों में, ख़ासकर एकाक्षरिक शब्दों में, संध्यक्षर स्वर के विकल्प में अधिक उच्च स्वर का उच्चारण भी मिलता है. मैं /में/, कौन /कोन/. इसके ही समान अंग्रेज़ी संध्यक्षर स्वर /आइ/ भी मूल स्वर के रूप में उच्चरित होता है. लाइन /लेन/, टाइम /टेम/. सभी शब्दों में /फ़/ का उच्चारण आधुनिक हिंदी की विशेषता है. इसी तरह उच्चारण में /ह/ का लोप तथा उसके कारण शब्द के उच्चरित रूप में परिवर्तन भी हिंदी की विशेषता है. इसे *पोंचना* (पहुँचना), *भोत*~*बोत* (बहुत), *पेला* (पहला), *ठैर* (ठहर), *मूँ* (मुँह), *नईं* (नहीं), *पेनना* (पहनना), *पिचानना* (पहचानना), *लेंगा* (लहँगा) आदि शब्दों में देख सकते हैं. शब्द के दूसरे महाप्राण स्वन का अल्पप्राणीकरण मराठी की विशेषता है, जिसे ब०हि० में भी देख सकते हैं. *भूका, झूटा, धंदा, धोका*. /झ/ का /ज़/ उच्चारण तथा /ज़/ का 〈झ〉 के रूप में लेखन मराठी-गुजराती भाषाओं के कारण है. मराठी भाषा में अग्र स्वरों से पहले वर्त्स्य /स/ तालव्य संघर्षी बन जाता है. /समश्या, सदश्य, रशीद, नशीब, शेठ/ आदि शब्दों का उच्चारण इस प्रभाव के कारण है. जहाँ उच्चारण की विशेषताएँ एक ओर आंतरिक स्वन परिवर्तन या अन्य भाषाओं के कारण आती हैं, वहाँ दूसरी ओर भाषा के शिक्षित मान तथा तदनुसार मानकीकरण के अभाव में भाषा बाज़ारू बनती जाती है. ब०हि० में यह प्रवृत्ति भी है. किन्हीं शब्दों में यह प्रवृत्ति संरचनागत है, जैसे *पीछू, नीचू, देखकू* (देख के), *कू* (को) आदि का स्वन परिवर्तन; कई शब्दों में यह परिवर्तन अकारण है, जैसे *मालम* (मालूम), *एकला*~*इकल्ला* (अकेला), *सादी* (शादी), *जागा* (जगह), *सुब्ब* (सुबह), *नजिक* (नज़दीक).

2.1. प्रायः नामपट्टों, इश्तहारों में और पत्र-पत्रिकाओं में ब०हि० का लिखित रूप देखने को मिलता है. उसमें कई वर्तनी दोष दिखायी पड़ते हैं, जो ब०हि० की विशेषता है. /ज़/ के लिए 〈झ〉 ब०हि० की प्रमुख विशेषता है. 〈आझाद,

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झू, मझा, झेनिथ, बेकरीझ>. मा०हि० में दो महाप्राण स्वनों का गुच्छ नहीं बनता. स्थानीय प्रभाव के कारण ब०हि० में *पथ्थर*, *चिठ्ठी*, *अठ्ठारह*, *शुध्ध* जैसे शब्द देखने को मिलते हैं. ह्रस्व-दीर्घ स्वरों के प्रयोग में वर्तनी-दोष ब०हि० की तीसरी सबसे बड़ी विशेषता है. अनेक शब्दों में प्रारंभिक दीर्घ स्वर ह्रस्व लिखे जाते हैं (*दुसरा*, *तिसरा*, *इमान*, *ढुंढ़ना*) और प्रायः सभी शब्दांत दीर्घ स्वर <ई ऊ> ह्रस्व लिखे जाते हैं.

3. रूप रचना संबंधी विशेषताएँ : 3.1. ब०हि० में क्रिया रचना का सरलीकरण दिखायी पड़ता है. निम्न स्तर की भाषा में तीनों पुरुषों और दोनों लिंगों में एक ही क्रिया रूप मिलता है, जैसे

अपन (मैं)	*करता*
तू, *तुम*	*कियेला* (किया)
वो	*करेंगा*

विभिन्न वर्गों के वक्ताओं में अति सरलीकरण की इस स्थिति से लेकर मा०हि० के समस्त रूपों के प्रयोग तक का एक लंबा प्रयोक्ता-क्रम है, जिसमें कहीं लिंग की अन्विति दिखायी पड़ती है, कहीं वचन की; कहीं दो पुरुषों के क्रिया रूपों में अंतर है, कहीं तीनों में. इस प्रयोक्ता-क्रम को वर्ग-विशेष से जोड़ कर देखना संभव नहीं है. क्रिया रूपों से सहायक क्रिया /है/ का लोप कई जगह दिखायी पड़ता है. मराठी-गुजराती भाषाओं के प्रभाव के कारण 'करता–कर रहा' का अंतर प्रायः समाप्त हो जाता है. भूतकाल की क्रियाएँ *आया*, *किया*, *देखा*, *पढ़ा* आदि मा०हि० के समान हैं. मराठी-गुजराती के प्रभाव के कारण इनकी जगह *आयेला*, *कियेला*, *देखेला*, *पढ़ेला* आदि रूप विकल्प में मिलते हैं. मा०हि० में भूतकाल के रूप 'आया, किया' तथा कृदंत विशेषण के पूर्ण पक्ष के रूप 'आया (हुआ), किया (हुआ)' देखने में समान लगते हैं. उक्त दोनों भाषाओं में इन रूपों में रचना का अंतर है. आगे के उदाहरण देखिए–

मा०हि०	**मराठी**	**गुजराती**
पुस्तक गिरी	पुस्तक पडलं आहे (नपुंसक लिंग)	चोपडी पड़ी गयी (स्त्रीलिंग)
गिरी हुई पुस्तक	पडलेलं पुस्तक	पडेली चोपडी
पुस्तक गिरी हुई है	पुस्तक पडलेलं आहे	चोपडी पडेली छे
लड़का गया	मुलगा गेला	छोकरो गयो
गया हुआ लड़का	गेलेला मुलगा	गयेलो छोकरो
लड़का गया हुआ है	मुलगा गेलेला आहे	छोकरो गयेलो छे
मैंने काम किया	मी काम केलं आहे	में काम कर्युं
किया हुआ काम	केलेलं काम	करेलुं काम

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट है कि दोनों भाषाओं में कृदंत विशेषण के रूप /-ल/ से बनते हैं, मराठी में दोनों क्रिया रूपों में रचना का अंतर है और गुजराती में दोनों जगह भिन्न रूप हैं. ब०हि० में सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण मूल भाषा के अनुरूप दोनों जगह विकल्प में /एला/ वाले रूप प्रयुक्त होते हैं. *वो गयेला* (गया), *आयेला होता* (आया (हुआ) था), *शेठ सिनेमा कू गयेले, आक्खा मुंबई तो अपन भी देखेला नई* (सारी बंबई तो मैंने भी नहीं देखी है), *यसोदा बेन से सादी बनायेला* (यशोदा बेन से शादी की), *अपन सिखेलाच नई* (सीखा ही नहीं), *बाई बैठेली* (औरत बैठी हुई थी), *लियेली* (ली), *बचेला माल, तेरा नाम लिखेला है क्या, अपुन पियेलाच होता* (मैं पिया हुआ ही था). मा०हि० में 'मैंने यह पुस्तक पढ़ी है', 'मैं बी०ए० तक पढ़ा हूँ' में जो अंतर ऊपर से प्रकट नहीं होता, वह इन दोनों भाषाओं में स्पष्ट होता है. ब०हि० इस रचना-वैपरीत्य को अपना कर भी खो देती है.

भविष्य काल के रूपों में अकारण अनुनासिकता हैं. और कई जगह /एँ, इँ~ई/ का विकल्प भी मिलता है. (वह) *करेंगा~करिंगा.* अन्य कुछ रूप हैं–*होंगा~होइंगा, देंगा, लेंगा, समझिंगा, पियेंगा, लिखेंगा, निकलेंगा.* अगर उत्तम पुरुष में /ऊँगा/ वाले रूप आएँ, तो *लेऊँगा, देऊँगा* प्रयुक्त होते हैं. संदेहार्थ क्रिया रूपों में प्रायः तीनों पुरुषों में धातु के साथ /ए/ मिलता है. *उतार देवे क्या* (उतार दूँ ?), *क्या-क्या बोले* (बोलूँ), *वो नई जावे* (जाएँ), *किधर कू जावे* (जाए), *औरत होवे तो हमेरी माँ जैसी होवे* (कबूतरखाना, पृ० 43), *बना कूँ रख देवे* (बना कर रख दें–क०, 127). संदर्भ से ही श्रोता पुरुष का अनुमान कर सकता है. विधि में धातु में /ओ/ लगता है, जो ह्रस्वीकृत हो कर उच्चारण में प्रायः /व/ रह जाता है. *आव, जाव, देव* (दो), *लेव* (लो). *दे देव* (तुम दे दो) और *दे देवे* (वह दे दे) के प्रयोग में अंतर देखें. पूर्वकालिक कृदंत रूप 'के' (*आके, जाके, देखके*) है, जो किन्हीं लोगों की भाषा में /कू~कूँ/ होता है. मराठी भाषा के प्रभाव के कारण 'था, थे, थीं' के लिए क्रमशः 'होता' आदि का प्रयोग मिलता है. *जभी हम सातारा में होता, तभी हमेरे को हैजा हो गया होता* (जब मैं · · · था, · · · हो गया था–क०, 111), *आधा कलाक पड़ा होता इधर* (मुरदा-घर, 111), *होतीच* (थी ही).

3.2. ब०हि० में 'मैं, हम' की जगह 'अपन~अपुन' का भी प्रयोग होता है. मध्यम पुरुष में 'तू, तुम' हैं, जो मा०हि० 'तुम, आप' के समानार्थी हैं. अन्य पुरुष में दोनों वचनों में 'ये, वो' आते हैं. 'आप' केवल शिक्षित भाषा तक सीमित है. दिल्ली, हैदराबाद की तरह *मेरे, हमारे, तेरे, तुम्हारे, अपने* संबंधकारक भी हैं और अन्य परसर्गों से पहले के तिर्यक रूप भी (*तेरे को, हमारे से, मेरे पर*). सर्वनाम का बहुवचन 'लोक~लोग' लगने से बनता है, जो तिर्यक रूप में नहीं आता (*हम लोक का, वो लोक को*). मा०हि० की तरह ब०हि० में भी 'अपना'

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का प्रयोग है.

3.3. लिंग, वचन, कारक : ब०हि० में पुरुषवाचक सर्वनामों के संदर्भ में क्रिया रचना के सरलीकरण की बात हमने ऊपर देखी थी. अन्य शब्दों में भी मा०हि० के स्त्रीलिंग शब्द निम्न स्तर की भाषा में पुल्लिग में ही आते हैं. *हमारा सादी हुआ, हमारा जिंदगी में, पइसा का बात, भोत तकलीफ़ हुआ, मुशीबत हो जाएँगा, मेरे को भूक लगा.* 'कबूतरखाना' में कुछ रोचक उदाहरण मिले हैं, जहाँ विशेषण-संज्ञा में लिंग की अन्विति तो है, लेकिन क्रिया अविकारी है. *औरत की जात बड़ा बेवफ़ा होता है. माँ अपनी आक्खी जिंदगी बरबाद कर दिया. बहन की आक्खी जिंदगी बरबाद हो गया* (पृ० 11). *आक्खी मुंबई जानता है* (पृ० 13). अन्य स्रोतों की सामग्री में इस विशेषता की पुष्टि नहीं हो सकी.

मानुष संज्ञाओं में 'लोक' बहुवचन सूचक प्रत्यय है. निम्न स्तर की भाषा में क्रिया लिंग-वचन से प्रभावित नहीं होती. *बाई लोग* (औरतें), *आदमी लोग, छोकरी लोक, हिजड़ा लोग का माफ़िक, रंडी लोक बहुत परेशान करता* (मु०, 154), *दो-तीन इन्सपेक्टर लोक बहुत हरामी है इधर* (मु०, 182). अ-मानुष संज्ञाओं में वचन के लिए रूप परिवर्तन नहीं होता, न ही क्रिया बदलती है. *दस दिन हो गया* (मु०, 93), *भोत मुरदा आता है आजकल* (मु०, 202), *सेठ लोग का घर में* (सेठों के घरों में–क०, 111).

मा०हि० में परसर्ग से पहले के संज्ञा शब्द तिर्यक रूप में आते हैं और क्रिया-विशेषण शब्द भी तिर्यक होते हैं. ब०हि० में निम्न स्तर की भाषा में शब्द कहीं तिर्यक रूप में नहीं आते. *ये लोग का, अच्छा-अच्छा लोग का, हमारा बरतन में, बाजू का घर में, होटल का पीछू, रहना का बारे में* (फ़िलम 'दामाद'), *आप लोग का सरीखा, सेठ का तरफ़ से, अपन को देख पेला* (पहले).

3.4. परसर्ग : ब०हि० के परसर्ग 'ने, कू(को), का/के/की, से, में, पर~उपर' मा०हि० के ही बराबर हैं. परसर्गीय शब्दों में कई विशिष्ट प्रयोग मिलते हैं. परसर्ग तिर्यक रूप में नहीं आते और सर्वत्र योजक शब्द /का/ लेते हैं. *घर का वास्ते, रहना का बारे में* (दामाद), *बटाटा बड़ा का माफ़िक* (आलू बड़े की तरह), *होटल का पीछू, आप लोग का सरीखा, ये बाजू* (इस तरफ़), *लैन* (लाइन) *का बीच में.* कुछ स्थानों में योजक शब्द भी छूट जाता है. *घर पीछू* (घर के पीछे), *ये टैम उपर* (इस टाइम पर, इस वक्त), *आँखी आगे* (आँखों के सामने). 'पीछू' अर्थ की दृष्टि से रोचक है. *होटल का पीछू* में यह स्थानवाचक है; *पीछू का सारा पैसा* (पहले का), *वो पीछू मर गया* (बाद में), *पीछू शिकायत नहीं करने का* (बाद में, फिर), *पीछू आएँगे* (बाद में, फिर) आदि में प्रयोग की संदर्भ-भिन्नता देख सकते हैं. 'कने' (के पास) वैकल्पिक प्रयोग है, सीमित है. *वो बाजू जाव* (उस तरफ़), *बाजू में* (बगल में) आदि संदर्भों में 'बाजू' बहुप्रचलित शब्द

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है. 'तरफ़' सामने की दिशा तथा कार्य-स्रोत (*सेठ का तरफ़ से*–क०, 93) का अर्थ देता है. अन्य प्रमुख विशिष्ट परसर्गीय शब्द हैं–*सरीखा* (बराबर, समान), *माफ़िक* (तरह), *वास्ते* (लिए), *तलक* (तक), *बिगर* (बिना), *खातिर* (लिए). *बरोबर* 'ठीक' के अर्थ में विशेषण शब्द है, परसर्ग नहीं. मा०हि० में 'पूछना' से पहले /से/ आता है, ब०हि० में /कू/. *पूछ लेव कोई कू भी. पूछ ले लैला कू.* गत्यर्थक क्रियाओं वाले वाक्यों में स्थानवाचक के साथ /कू/ ब०हि० की विशेषता है. *घर कू चलना, देखने कू जाना, किधर कू जावे.*

3.5. 'कहाँ, वहाँ, यहाँ' के लिए सर्वत्र 'किधर, उधर, इधर' का प्रयोग मिलता है. किन्हीं कारणों से कभी ब०हि० में कब के अर्थ में प्रयुक्त होता है. *वो कभी आएँगा?* 'जब, तब' आदि के लिए भी विकल्प में 'जभी∼तभी' रूप मिलते हैं. *जबी सतारा होती मैं* (तब मैं सतारा में थी, धर्मयुग, 28.12.80). *जभी पैसा कमाया थोड़ा* · · · (जब मैंने · · ·). ब०हि० में निपात 'ही' का पर्याय /च∼ज/ है. *मेंच, सेच, काच, तूच, येच, वोच, अपुनच, मेराच, ऐसाच, वैसाच, खतमच, यादच नईं, देखकेच, लेकेच, जानतीच नईं, का माफ़िकच* (की ही तरह), *नसीबच खराब है.*' 'येच∼येइच, उधरच∼उधरीच' में विकल्प है और एकारांत बहृवक्षर शब्दों में /इच/ मिलता है. *दुसरेइच, पेलेइच.* मा०हि० में 'यहीं, वहीं' स्थान का निर्देश करते हैं, लेकिन 'कहीं' इस अर्थ में निपात युक्त प्रश्नवाचक नहीं है. ब०हि० में पहले दो शब्दों में /च/ मिलता है और *किधर तो भी* 'कहीं, कहीं भी' इस अंतर को स्पष्ट करता है.

4. वाक्य संरचना संबंधी विशेषताएँ : 4.1. ब०हि० में दो वृत्तिसूचक क्रियाएँ 'सक' और 'चाहिए' मा०हि० से भिन्न प्रकार से प्रयुक्त होती हैं. *मैं करने को नईं सकता. वो लोक आने को नईं सकता. मैं बेन को शिकायत करने को सकती थी न* (धर्मयुग, उक्त). *तेरे बिगर रेने को नईं सकता* (धर्मयुग, उक्त). 'चाहिए' के लिए 'मँगता∼माँगता' का प्रयोग मिलता है. यहाँ कर्ता में /कू/ लगता है और 'माँगता' प्रायः अविकारी है. *मेरे को नईं माँगता तेरा कुछ भी. क्या माँगता तेरे कू? मेरे कू रुपिया माँगताच. हिसाब पूरा होना माँगता. माँगता तो पईसा पेलाच ले लेना. पन* (लेकिन) *दूसरा लोक को मालम नईं होना माँगता. औरत माँगताच माँगता* (चाहिए ही–क०, 75). *मेरे को पन एक झोंपड़ी का छत मँगता था* (धर्मयुग, उक्त). विकल्प में 'माँगता है' रूप भी मिलता है. *दुनिया में औरतच नईं होना माँगता है. सईदन का माफ़िक बाई लोग तो होनाच माँगता है* (क० 43). इस रचना में चाहना, माँगना के अर्थ में कर्ता प्रत्यक्ष होता है और कर्ता-क्रिया की अन्विति दिखायी पड़ती है. इन वाक्यों में /है/ वैकल्पिक है. *तुम जी०एम० को मिलने को माँगता है?* (दामाद). *जास्ती नहीं माँगती* (मु०, 38). *तू दस रुपिया माँगता मेरे से* (मु०, 28). *तुम इधर और रहना मँगता,*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैना बाई? उधर जाना नई मँगता? (चाहती–मु०, 104). है०हि० की तरह कहीं-कहीं 'चाहिए' के अर्थ में 'होना' का भी प्रयोग मिलता है. *मेरे को नई होना तेरा सपना* (मु०, 27).

4.2. ब०हि० की तीन आधारभूत बोलियों में मराठी और गुजराती में 'ने' की रचना की मिलती-जुलती व्यवस्था दिखायी पड़ती है और पूर्वी बोलियों में नहीं. शायद इसी कारण ब०हि० में 'ने' की दुहरी व्यवस्था है और 'ने' का अभाव शायद अधिक प्रचलित है. *तू बहुत तकलीफ़ दिया मेरे को. मैं* (स्त्री) *कभी तेरा पैसा रखी क्या? बिरादरी के लोग 'बंडल' ठोक दियेले* (क०, 114). · · · *हमेरे को लाफ़ा मारेली* (क०, 81–उस स्त्री ने मुझे 'लाफ़ा' मारा).

4.3. ब०हि० में 'हाँ' के लिए 'हौ' चलता है. 'नहीं चाहिए' के अर्थ में 'नको' प्रयुक्त होता है, जबकि इस संदर्भ में 'नई माँगता' शायद ज़्यादा प्रचलित है. ये दोनों शब्द है०हि० में भी मिलते हैं. निषेधार्थ रूप 'मत' प्रचलित है (*मत जाव, तू बोम मत मार*), जबकि क्रियार्थक संज्ञा के साथ वाक्य के अंत में 'नई' भी प्रयुक्त होता है. *पीछू कब्भी इधर आने का नई* (फिर कभी यहाँ मत आना).

4.4. **क्रियार्थक संज्ञा, विधि** आदि प्रकरणों में चर्चा की गयी है कि 'जाना, देखना' आदि विधि के भी शब्द हैं. दूसरी तरफ़ 'जाना है, करना है' आदि क्रिया रूप आगे के संभावित, सोचे हुए कार्य व्यापार का संकेत करते हैं. ब०हि० में दोनों संदर्भों में क्रमशः 'जाने का, जाने का है' का प्रयोग मिलता है और बोल-चाल में प्रायः /है/ छूट भी जाता है. बस कंडक्टर यात्री से *किधर जाने का है* पूछता है. अन्य कुछ उदाहरण देखें–*पइसा पेले निकालने का* (निकालो). *तोड़के उसमें डाल देने का और पी जाने का* (डाल देना, पी जाना–मु०, 182). *मेरे कू अपना धंदा देखने का है* (देखना है). *मेरे कू उधर नई जाने का है.* मा०हि० की तरह 'जाने का' मध्यम पुरुष में विधि के संदर्भ में प्रयुक्त होता है और 'जाने का है' में योजना की सूचना है. दोनों ही प्रयोगों में कर्ता में /कू/ लगता है.

4.5. इतिवृत्तात्मक रचना दो प्रकार की होती है. 'बोलना, कहना, बताना, पूछना' आदि पुनः कथन सूचित करते हैं. ब०हि० में प्रायः 'बोलके' का प्रयोग होता है, जो उक्ति के साथ आता है. *बोलूँगा तू बंद है बोलके. वो पूछा था तू किधर गयेला बोलके. हटो पीछू बोलता न* (मु०, 102–कह रहा हूँ न कि पीछे हटो), यहाँ /कि/ का प्रयोग विरल है, लेकिन /कि/ के अभाव में वही रचना मिलती है. *मैं बोलती छोड़ देव मेरे कू. वापिस लाओ मेरी लड़की कू बोलता.* इसके विपरीत 'लगना, सोचना, देखना, मालूम, सुनना' आदि के साथ योजक /कि/ वाले उपवाक्यों का प्रयोग मा०हि० के समान है. *मेरे कू मालम है कि वह नहीं आएँगा. अपन सोचता था कि ले लेवे. मेरे को लगता है कि* · · · .

5. शब्द प्रयोग : ब०हि० की सबसे बड़ी विशेषता शब्द प्रयोग की है. इसमें

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा० हि० से भिन्न सैकड़ों शब्द मिलते हैं. ऐसे कुछ शब्द हैं–*आक्खा* (सारा), *मस्का* (मक्खन), *नक्की* (तय), *खोली* (किराये का कमरा), *माला* (मकान की मंज़िल), *खीसा* (जेब), *फ़कत* (सिर्फ़), *बरोबर* (ठीक), *थोबड़ा* (मुँह, चेहरा), *मगज* (दिमाग), *लफ़ड़ा* (टंटा, झगड़ा), *लाफ़ा, लपाट, लप्पड़* (चाँटा), *फ़ूकट~फ़ोकट* (मुफ़्त), *खलास* (ख़त्म, ख़ाली), *खाली* (सिर्फ़, यों ही), *खोटी* (बेकार, बरबाद), *खोटी करना* (चाल चलना), *टेम खोटी करना* (वक्त बरबाद करना), *हलकट* (आवारा, शोहदा), *बाई* (औरत), *सगावाला* (रिश्तेदार), *कलाक* (एक घंटे का समय), *झोंपड़पट्टी* (झुग्गी-झोंपड़ी), *कमती* (कम), *जास्ती* (ज़्यादा), *कायकू* (किसलिए, क्यों), *घासलेट* (केरोसीन), *बटाटा* (आलू), *कांदा* (प्याज़), *भजिया* (पकौड़ी), *रगड़ा* (चने, छोले). *बोम मारना* (चिल्लाना, गुस्सा करना), *सरखा करना* (ठीक करना), *पोलपट्टी खोल देना* (भंडाफोड़ करना), *मस्का मारना, मस्का पालिस करना* (मक्खन लगाना), *खाली-पीली* (बिना मतलब, बेकार), *माल-पानी* (माल-मत्ता), *फोटो निकालना, बारिश गिरना, शादी बनाना* (करना), *मालूम चलना, चालू पड़ना, समझ पड़ना* (समझ में आना), *पसंद पड़ना, बोले तो* (माने), *मगज घूम जाना* (दिमाग फिर जाना) कुछ प्रमुख मुहावरेदार प्रयोग हैं. इनके साथ ही मराठी-गुजराती भाषी हिंदी में बोलते अपनी भाषा के कई शब्दों का भी बेधड़क प्रयोग करते हैं, जैसे *खातिरी* (भरोसा), *माहिती* (जानकारी), *भीक* (डर), *भांडी* (बरतन), *आई* (माँ), *डोक* (सिर). इन सब शब्दों के संदर्भ में वर्ग विशेष के अनुसार प्रयोग-वैविध्य का प्रसंगानुसार विवरण देना इस लेख के कलेवर में संभव नहीं है. इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि ब०हि० का शब्द प्रयोग की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्वरूप है, अपनी अस्मिता.

नीला जगन्नाथन

दिल्ली की हिंदी 1. दिल्ली भारत की राजधानी है, एक महानगर है. अतः दिल्ली की भाषायी स्थिति में भी महानगरीय अस्मिता परिलक्षित होती है. स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद इस शहर की आबादी में आकस्मिक रूप से वृद्धि हुई है. देश के विभाजन के कारण पंजाबी तथा सीमांत प्रदेश की भाषाएँ बोलने वाले लोगों का एक बड़ा वर्ग इस शहर में आ कर बसा. यह वर्ग द्विभाषी है; इन लोगों ने अपनी मातृभाषा को पारिवारिक या वर्गीय संपर्क के लिए सुरक्षित रखा और शिक्षा तथा सामाजिक संपर्क में हिंदी को अपनाया. उल्लेखनीय है कि इस वर्ग की नयी पीढ़ी, जो 1947 के बाद भारत में पैदा हुई, अपनी मातृभाषा की अपेक्षा हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति के लिए अधिक सशक्त (dominant) माध्यम के रूप में अपनाती रही है. इस वर्ग के कारण दि०हि० में पंजाबी का प्रभाव दिखायी पड़ता है. दिल्ली हिंदी भाषी प्रदेश है. धीरेंद्र वर्मा (1971) के अनुसार दिल्ली बाँगरू या हरियाणवी बोली का प्रदेश है. दिल्ली के निकटवर्ती ज़िलों में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रोहतक और गुड़गाँव में हरियाणवी बोली जाती है तथा मेरठ और बुलंदशहर में खड़ी बोली. इस तरह हिंदी की बोलियों के हिसाब से दिल्ली में हरियाणवी और खड़ी बोली बोलने वाले लोगों की बहुतायत है. वर्मा के अनुसार हरियाणवी एक प्रकार से पंजाबी और राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली है. खड़ी बोली मानक हिंदी के निकट है ही, दि०हि० की कई विशेषताएँ पंजाबी-हरियाणवी वर्ग के सामान्य तत्त्व हैं. दिल्ली में हिंदी की अन्य बोलियाँ बोलने वाले लोग भी हैं. लेकिन ये बोलियाँ अधिकतर वर्ग के भीतर के संपर्क में ही व्यवहृत होती हैं और अंतर-वर्ग के संप्रेषण में सामान्य रूप से मानक हिंदी का ही प्रयोग होता है. लखनऊ के बाद दिल्ली उर्दू भाषा का केंद्र बना और मुगल शासकों के प्रश्रय के कारण यहाँ उर्दू भाषा का विकास हुआ. अब दिल्ली में लाखों मुस्लिम हैं, जो उर्दू भाषा का व्यवहार करते हैं. उल्लेखनीय है कि पुरानी पीढ़ी के कई हिंदू भी उर्दू के माध्यम से शिक्षित हैं और मानक हिंदी की अपेक्षा उर्दू का अधिक सहजता से प्रयोग करते हैं. इन तीन प्रमुख वर्गों के परस्पर व्यवहार के कारण दि०हि० की कई विशेषताएँ अस्तित्व में आयी हैं. महानगर होने के कारण यहाँ दक्षिण की चारों भाषाएँ तथा बंगाली, सिंधी, गुजराती, मराठी आदि भाषाएँ बोलने वाले अल्प-संख्यक भी हैं. लेकिन इनकी भाषिक विशेषताएँ वर्ग के भीतर तक सीमित हैं और उनका दि०हि० पर विशेष प्रभाव नहीं है. अतः आधुनिक खड़ी बोली में हरियाणा प्रदेश की बोली का योगदान सर्वप्रमुख है. आज की हिंदी का जो रूप दिल्ली में है उसके स्वरूप को समझने के लिए इसकी आधारभूत उपभाषा 'हरियाणवी' का अध्ययन अपरिहार्य हो जाता है, क्योंकि हरियाणवी स्थूल रूप से रोहतक, हिसार के पूर्वी भाग तथा दिल्ली के समीपवर्ती इलाकों में बोली जाती है. (नानकचंद 1968).

2. उच्चारण की विशेषताएँ : (अ) दि०हि० की सबसे बड़ी विशेषता अक्षरों (syllables) के पुर्नवितरण की है, जिसके अनुसार एकाक्षरिक शब्द द्‌वयाक्षरिक बनते हैं, द्‌वयाक्षरिक एकाक्षरिक बनते हैं. कई गुच्छ टूटते हैं, कई नये गुच्छ बनते हैं. इस भाषिक विशेषता की गहराई में जाना इस लेख की सीमा में संभव नहीं है. यह बताना मेरे लिए कठिन है कि क्यों गरीब /ग्रीब/ बनता है, लेकिन /सरीन/ नहीं बदलता. इसी तरह चंद्र का /चंदर/, गलत का /गल्त/ विपरीत दिशाएँ हैं; इसका अध्ययन अपने में रोचक विषय है. मानक हिंदी से भिन्न उच्चारण वाले अन्य कुछ शब्द आगे दिये जा रहे हैं. मूल शब्द कोष्ठक में दिये गये हैं–*तिल्क* (तिलक), *प्रीक्षा* (परीक्षा), *प्रेशान* (परेशान), *प्रंतु* (परंतु), *?प्रीवार* (परिवार), *परकाश* (प्रकाश), *परसाद/परशाद* (प्रसाद). 'उन्नति' का /उनती/ उच्चारण अक्षरों की संख्या में कमी करने की सामान्य भाषिक विशेषता के कारण है. ध्यान से सुना जाए तो *प्ड़ोसी* (पड़ोसी), *स्वाल* (सवाल) जैसे कई शब्दों में

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस परिवर्तन को देख सकते हैं. इस तरह यह बहुव्यापी प्रवृत्ति है. (आ) दि०हि० की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता /आ, ऐ, औ/ तीन स्वरों में स्वर को ऊँचा करने की है, जिस कारण तीनों का उच्चारण शब्दारंभ में क्रमशः /अ, ए, ओ/ के समान होता है. आ → अ की विशेषता का आधार *स्वभाविक, समाजिक, चरित्रिक* आदि शब्दों में पंजाबी का रूपस्वनिमिक नियम माना जा सकता है, जिसके अनुसार 'अ → आ/इक' की व्यवस्था लागू नहीं होती. लेकिन कई ऐसे शब्द हैं, जहाँ यह आधार नहीं दिखायी पड़ता. कुछ उदाहरण देखिए–*रजेश खन्ना, समान्य, कमायनी, नराज़, अज़ादी, प्रचीन, अवाज़, बज़ार*; *एनक* (ऐनक), *बेठो* (बैठो); *ओरत* (औरत), *ओर* (और). उपर्युक्त दोनों विशेषताएँ पंजाबी-हरियाणवी वर्ग के वक्ताओं में दिखायी पड़ती हैं. (इ) दि०हि० की तीसरी विशेषता तीनों वर्गों में दिखायी पड़ती है. यह विशेषता है शब्द के मध्य में /ह/ का लोप तथा तज्जन्य स्वनिक परिवर्तन. यह विशेषता कुछ हद तक अखिलभारतीय है. लेकिन पंजाबी में /ह/ के लोप तथा मुस्लिमों की बोलचाल की विशेषता के कारण दि०हि० में इसका उल्लेखनीय स्थान है. *बैन~भैन, भौत* (बहुत), *भैना* (बहना), *केना~कैना, नईं* (नहीं) आदि शब्दों के साथ ही *क्या कर रा ऐ* (क्या कर रहा है), *बोल रए/रे ऐं* (बोल रहे हैं), वह *आ रिया ऐ* (आ रहा है) आदि वाक्यों में भी इस प्रवृत्ति को देख सकते हैं. ये प्रयोग ज़्यादातर अशिक्षित वर्ग की असंस्कृत भाषा के द्योतक हैं और शिक्षा के स्तर के साथ /ह/ के पुनःस्थापन की बात देखी जा सकती है. पंजाबी तथा उर्दू भाषियों में /म्ह न्ह ल्ह/ का अभाव भी देखा जा सकता है. स्वर मध्य की स्थिति में तथा शब्दांत में घोष महाप्राण स्पर्श व्यंजनों का अल्पप्राणीकरण केवल पंजाबी भाषियों की ही विशेषता है, जो शिक्षा के अभाव के कारण कई व्यक्तियों में दिखायी पड़ता है. (ई) *इत्ता* (इतना), *उत्ता, कित्ता, जित्ता* आदि में समीकरण दि०हि० की ही नहीं, समस्त हिंदी की बोलियों की विशेषता है. इसी तरह दि०हि० में /फ/ की जगह /फ़/ का उच्चारण मिलता है, जो हिंदी में एक नयी प्रवृत्ति है. (उ) /न/ की जगह /ण/ का प्रयोग पंजाबी-हरियाणवी वर्ग की मातृभाषा के प्रभाव के कारण है और बहुत सीमित है. जैसे *अपणी, पाणी, खाणा-पीणा*.

3. रूपरचना की विशेषताएँ : (अ) 'मुझे, तुम्हें' की जगह *मेरे को, तेरे को* का प्रयोग अधिक प्रचलित है. तुलना में *तुम्हारे/तुमारे* का प्रयोग कम है. आम तौर पर माना जाता है कि यह पंजाबी प्रभाव के कारण है, लेकिन प्रभाव के स्पष्ट आधार नहीं हैं. पंजाबी में कर्मकारक /नूं/ है, हरियाणवी में /नै/. दोनों में इस कारक से पहले प्रथम, मध्यम पुरुष सर्वनाम का तिर्यक रूप भी नहीं बनता. 'तेरे' का आधार पंजाबी /तूं/, हरियाणवी /तैं/ हो सकता है. हैदराबाद, बंबई जैसे अहिंदी भाषी प्रदेशों में ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रदेशों में भी ये रूप प्रचलित हैं. (आ) पंजाबी-हरियाणवी में 'आप' नहीं मिलता. पंजाबी *तुसीं आओ* (तुसीं–आप) के सादृश्य से हिंदी में *आप आओ* का प्रयोग मिलता है. अन्य हिंदी भाषियों में 'आप' के साथ *आओ* का प्रयोग नहीं मिलता. यह निश्चित रूप से पंजाबी के प्रभाव के कारण है, हिंदी भाषा की अपनी विशेषता नहीं. **सर्वनाम** में (इस ग्रंथ में) चर्चा की गयी है कि किस तरह पंजाबी के प्रभाव के कारण आदरणीय व्यक्तियों के संदर्भ में लिंग की अन्विति भेदक लक्षण नहीं रह जाती. इसी कारण दिल्ली में *मेरे माता जी आये* जैसे वाक्य सुनने को मिलते हैं. (इ) पूर्वकालिक कृदंत रूप–पूर्वकालिक कृदंत रूप '-के' से बनते हैं. *लेके, देखके, आके, पढ़के, खाके*. (ई) दि०हि० में **प्रतिबिंबित शब्द** की रचना तीन प्रकार से होती है. *चाय-वाय, टिकट-विकट, पानी-वानी* मानक हिंदी के समान हैं. **व**–श का प्रतिबिंबन भी इतना ही प्रचलित है, जो पंजाबी के प्रभाव के कारण है. *चाय-शाय, पाणी-शाणी, टिकट-शिकट, खरोंच-शरोंच*. **स**–उ/ऊ (पहले स्वर की मात्रा के आधार पर) का प्रयोग कुछ कम है. *चाय-चूय, टिकट-टुकट, पानी-पूनी, सच्चा-सुच्चा, खरोंच-?खुरूँच. पानी-आनी* (मोहन राकेश, पृ० 11), *चाकू-आकू* (वही, 15) सीमित प्रयोग हैं. (उ) मानक हिंदी में *जी हाँ, जी नहीं* चलते हैं, दि०हि० में *हाँ जी, नहीं जी*. (ऊ) 'यहाँ, वहाँ, कहाँ' के लिए *इधर, उधर, किधर* का ही प्रयोग अधिक है, यद्यपि पंजाबी में भी *इत्थे* 'यहाँ', *एद्दर* 'इधर' आदि शब्दों में स्थानवाचक तथा दिशावाचक का वैपरीत्य (opposition) मिलता है. लेकिन बोलचाल की पंजाबी में *इत्थे* आदि की अपेक्षा आज *एद्दर* आदि का ही प्रयोग अधिक होता है. शायद इसी प्रभाव के कारण दि०हि० में भी *इधर* आदि शब्द अधिक प्रचलित हो गये हैं.

4. वाक्य संरचना संबंधी विशेषताएँ : (अ) *मुझे जाना है* के लिए *मैंने जाना है* का प्रयोग दि०हि० की बहुव्यापी प्रवृत्ति है. इस प्रवृत्ति को भी लोग पंजाबी के प्रभाव के कारण मानते हैं. पंजाबी में 'को' के लिए /नूँ/ रूप है. *मैंनूँ जाणा ए* 'मुझे जाना है'. कर्ताकारक में प्रथम तथा मध्यम पुरुषों में /ने/ रूप नहीं लगता, जबकि 'ने' की व्यवस्था है. *मैं कम्म कित्ता* 'मैंने काम किया', *मैं कोशिश कित्ती* 'मैंने कोशिश की'. हरियाणवी में 'ने' की व्यवस्था है और उक्त दोनों कारकों में /नै/ रूप लगता है. *मन्नै* 'मुझे', *मैंनै* 'मैंने'; *उसनै* 'उसने, उसे'. हम मान सकते हैं कि *मैंने जाना है* का स्रोत हरियाणवी है और पंजाबी इस प्रवृत्ति को रूप-साम्य के कारण पुष्ट करती है. *मैंने/उसने काम किया, मैंने जाना है*–ये दोनों वाक्य हरियाणवी के निकट हैं. इस संदर्भ में 'मैंने, मेरे को, मुझे' तीनों रूपों के वितरण का स्पष्ट अनुमान करना कठिन है. *मैंने जाना है* का प्रयोग अत्यधिक है, *मुझे जाना है* का प्रयोग शिष्ट भाषा में होता है और *मेरे को जाना है* भी मिलता है. /को/ के अन्य संदर्भों में (*उसको बुलाओ, मुझे नहीं मालूम, तुम्हें क्या*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाहिए, उसे बुख़ार है आदि) /ने/ का प्रयोग नहीं मिलता, जबकि हरियाणवी तथा पंजाबी में इन वाक्यों में क्रमशः /नैं, नूँ/ रूप मिलते हैं. इन वाक्यों में 'मेरे को, तेरे को' आदि के प्रयोग की अधिक संभावना है. यहाँ इस वाक्य संरचना के कुछ रोचक उदाहरण दिये जा रहे हैं (लेखकों के वाक्य संदर्भ सहित दिये गये हैं, वार्तालाप या श्रवण द्वारा प्राप्त प्रयोग बिना संदर्भ के)—*तुम लोगों ने किधर जाना है? उन्होंने तो आना ही आना है* (वे ज़रूर आयेंगे या उनका आना ज़रूरी है). *हिंदी ने इस देश की राष्ट्रभाषा बननी है. चूल्हे की आग के बिना न चावलों ने दाल में मिलना है, न दाल ने चावल में* (अमृता प्रीतम, 76 : पृ० 53). *किसी ने अपना बच्चा इंजीनियर बनाना होता तो* · · · (अ०प्री०, 72 : 18). *आना उसने इस ओर था और चला गया उस ओर* (अ०प्री०, 76 : 77). *मैंने सारी आयु पुरानी सलवार पहननी है और बासी रोटी खानी है* (अ०प्री०, 76 : 72). रोचक बात यह है कि प्रयोक्ता कभी मानक रूप का प्रयोग करते हैं, कभी दिल्ली के रूप का. यह अनिश्चतता बताती है कि वे मानक तथा स्थानीय प्रयोगों के अंतर को जानते हैं. *मुझे नहीं आना था* (अ०प्री०, 74 : 51) में इस प्रवृत्ति को देख सकते हैं. (आ) दि०हि० की दूसरी प्रमुख विशेषता है *मैंने कहा हुआ है, मैंने यह फ़िल्म देखी हुई है* आदि वाक्यों की रचना, जहाँ पूर्ण पक्ष के सकर्मक कृदंत क्रिया रूपों के साथ स्थितिसूचक 'हुआ' का प्रयोग होता है. मा०हि० में अकर्मक क्रियाओं के संदर्भ में स्थिति की सूचना दी जा सकती है (*वह गया हुआ है. वे लोग सोये हुए हैं*) और सकर्मक क्रियाओं में कर्म के संदर्भ में मिथ्यावाच्य के क्रिया रूपों से स्थिति की सूचना दी जा सकती है (*खाना बना हुआ है. कपड़े धुले हुए हैं. किताब पड़ी हुई है*). कर्ता का उल्लेख करना हो, तो रंजक क्रिया 'रख' का प्रयोग होगा (*मैंने उनसे कह रखा है. मैंने चार-पाँच मकान देख रखे हैं*) या वास्तविक कर्ता का संबंधकारक में उल्लेख होगा (*यह फ़िल्म मेरी देखी हुई है. यह किताब रवि की लिखी हुई है*). व्यापार के स्थिति में आने की सूचना देने के लिए ही यह रचना प्रयोग में आती है. अकर्मक में भी सभी व्यापारों के संदर्भ में स्थितिसूचक वाक्य नहीं बनते (**मैं बोला हुआ हूँ. *वह हँसी हुई है*). सकर्मक वाक्यों में कर्ता के संदर्भ में स्थिति की सूचना स्वयमेव /है/ से व्यक्त होती है. आगे के वाक्यों की तुलना कीजिए—

उसने एक दोसा खाया	*उसने संदेश खाया है*
मैंने कल एक फ़िल्म देखी	*मैंने शालीमार फ़िल्म देखी है*
राम ने कल एक बात कही	*राम ने मुझसे कहा है* · · ·

दूसरे क्रिया रूपों के स्थान पर ही '*देखी हुई है*' आदि का प्रयोग होता है, जो अनावश्यक है. कुछ उदाहरण देखें—*मैंने उसकी कहानी में से एक-एक वाक्य कंठस्थ किया हुआ था* (अ०प्री०, 74 : 44). *पहने हुए कपड़ों से जैसे उसने उस*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धूप को ढका हुआ था, लपेटा हुआ था, छुपाया हुआ था (अ०प्री०, 74 : 73). कामिनी ने लोग तो देखे हुए थे (अ०प्री०, 72 : 10). उसने दुनिया के हर कोने से पाइप मँगवाये हुए थे (ममता कालिया, पृ० 24). दफ़्तर में उसने अपने लिए एक ख़ूबसूरत केबिन बनवायी हुई थी (म०, 23). इस ग्रंथ में अन्यत्र चर्चा की गयी है कि मा०हि० में भूतकाल सूचक पूर्ण पक्ष के कृदंत (मैंने यह किताब पढ़ी है) और स्थिति सूचक कृदंत रूप+हुआ (मैं एम०ए० तक पढ़ी हूँ) में संरचना, संदर्भ दोनों की दृष्टि से अंतर है. दि०हि० में दोनों जगह एक ही रचना आती है और दोनों वाक्यों का वैपरीत्य (opposition) रचना के स्तर पर ख़त्म हो जाता है. आगे के वाक्य मा०हि० में बिना /ने/ के आते, लेकिन दि०हि० में यहाँ 'ने' का प्रयोग द्रष्टव्य है–पहने हुए कपड़ों से जैसे उसने उस धूप को ढका हुआ था (अ०प्री०, 74 : 73). उसने अबरक के रंग के कपड़े पहने हुए थे (अ०प्री०, 74 : 19). प्रेम ने · · · बुशशर्ट पहनी हुई थी (म०, 34). इस नये प्रयोग के कारण कई संबद्ध वाक्य संरचनाओं में पुनर्वितरण की स्थिति दिखायी पड़ती है. फिर भी ऊपर 4 (अ) की चर्चा के संदर्भ में कहा जा सकता है कि यहाँ भी लेखक नये और पुराने के बीच डोलते नज़र आते हैं. आगे के वाक्य देखिए–पिता ने · · · ज़मीन ख़रीद रखी थी (अ०प्री०). वह अपने को रोके हुए थी (म०, 85). · · · ने स्कर्ट पहन रखा था (म०, 68). इस नये प्रयोग की कुछ सीमाएँ भी हैं. 'मैं कह रखूँगा' की तरह इसमें भविष्य में व्यापार की सूचना संभव नहीं है (*मैंने कहा हुआ होगा), न 'देख सकता हूँ' की तरह अपूर्ण पक्ष की. इस समय यह रचना अधिक धातुओं के साथ भी नहीं मिलती. 'मैंने+खाया/पिया/ख़रीदा/बेचा/लाया/सिलवाया/निकलवाया+हुआ है' आदि रूप संभव लगते हैं, लेकिन मिलते नहीं. इन संदर्भों में 'खाया है' आदि रूप ही मिलते हैं. लेकिन यह रचना अब इतनी प्रचलित हो गयी है कि दिल्ली के बाहर भी इसका प्रयोग होने लगा है और यह मा०हि० में प्रवेश कर रही है. दिल्ली राजधानी होने के कारण यह प्रयोग द्रुत गति से व्यापक हो रहा है. (इ) मा०हि० में कर्ता$_{\text{को}}$+कर्म+क्रियार्थक संज्ञा+है/पड़/चाहिए' की रचना में सामान्य रूप से कर्म से क्रियार्थक संज्ञा और क्रिया की अन्विति होती है. मुझे किताब लेनी है. हमें कोशिश करनी पड़ेगी/चाहिए. यद्यपि इस रचना में भी विकल्प की गुंजाइश है और मानक इतर प्रयोग (उसे मेहनत करना पड़ा. उसे मेहनत करना पड़ी) मिलते हैं, आम तौर पर निम्नलिखित प्रयोगों में मा०हि० और दि०हि० में अंतर है–

	मानक हिंदी	दिल्ली की हिंदी
(क)	चाय पीना गंदी आदत है	चाय पीनी गंदी आदत है
	गोली चलाना गुनाह था	गोली चलानी गुनाह था/थी
	मीटिंग होना तय हुआ है	मीटिंग होनी तय हुई है

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानक हिंदी	दिल्ली की हिंदी
यहाँ चाय मिलना मुश्किल है	इधर चाय मिलनी मुश्किल है
(ख) मैं चाय पीना चाहती हूँ	मैं चाय पीनी चाहती हूँ
पसंद करती हूँ	पसंद करती हूँ
(ग) मुझे पंजाबी बोलना नहीं आता	मुझे पंजाबी बोलनी नहीं आती
उसने पनीर की रोटी बनाना सीखा था	उसने पनीर की रोटी बनानी सीखी थी (अ॰प्री॰, 74 : 73)
रवि ने सिगरेट पीना छोड़ दिया (रवि · · · देंगे)	रवि ने सिगरेट पीनी छोड़ दी (रवि · · · देंगे)
रवि ने सिगरेट पीना चाहा	रवि ने सिगरेट पीनी चाही
मुझे कला फ़िल्में देखना पसंद/अच्छा लगता है	मुझे कला फ़िल्में देखनी पसंद/अच्छी लगती है (?हैं)

इस कथन का यह आशय नहीं है कि मा॰हि॰ के प्रयोग में कहीं क्रियार्थक संज्ञा में परिवर्तन नहीं होता या दि॰हि॰ में सर्वत्र यही व्यवस्था है. अंतर और वैयक्तिक विशेषताएँ दोनों स्थितियों में हैं. यह एक सामान्य रूपरेखा है. मेरे लिए जिज्ञासा का विषय यही है कि इस अंतर का कारण क्या है? (क) के वाक्यों में संज्ञा+क्रि॰ संज्ञा वाक्य का कर्ता है, कर्ता वाक्यांश है. हिंदी में कर्ता और क्रिया वाक्यांशों के बीच अन्विति होती है, वाक्यांश के भीतर नहीं. (ख) में भी संज्ञा वाक्यांश है. दि॰हि॰ में पंजाबी के प्रभाव के कारण ही शायद वाक्यांश के भीतर संज्ञा+क्रि॰ संज्ञा की अन्विति दिखायी पड़ती है. (ग) के वाक्यों में 'कर्ता$_{को}$' की रचना है. इन्हीं वाक्यों में मा॰हि॰ में वैकल्पिक रचना की अधिक संभावना है. कुछ और उदाहरण देखें–*पुलिस ने उस कमरे की तलाशी लेनी चाही* (अ॰प्री॰, 72 : 23). *परमजीत ने सिर्फ़ इसलिए दोस्ती करनी चाही थी* (म॰, 30). *वह सफ़ाइयाँ सुननी नहीं चाहता था* (म॰, 118). *मुँह में दही की फिटकियाँ आनी पसंद थीं* (म॰, 9). *पहाड़ों पर बेईमानी होनी ज़रूरी नहीं* (म॰, 128). (ई) मा॰हि॰ में 'कर्ता+कर्म+भूल गया' की रचना मिलती है, जबकि दि॰हि॰ में 'कर्ता$_{को}$+कर्म+भूल गया' की रचना मिलती है और नियमानुसार कर्म-क्रिया की अन्विति होती है. *मुझे क्या कहना है भूल गया. मुझे वह बात भूल गयी.* ऊपर (इ) के अनुसार कर्म के भीतर भी लिंग की अन्विति मिलती है. *मुझे वह बात कहनी भूल गयी.* मा॰हि॰ में 'याद रहना' के साथ 'कर्ता$_{को}$' की रचना है (*मुझे वह बात याद नहीं रही*). शायद इस विलोम के कारण ही दिल्ली में दोनों जगह 'कर्ता$_{को}$' की रचना मिलती है. दि॰हि॰ में कर्म के भीतर भी अन्विति है. *मुझे वह बात करनी याद नहीं रही*∼*कहने की याद नहीं रही. मुझे पैसे भेजने याद नहीं रहे*∼*भेजने की याद नहीं रही.*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(उ) हिंदी में कार्य के प्रारंभ की सूचना वृत्तिवाचक क्रिया 'लग' से मिलती है. *वह जाने लगा. वे लोग काम करने लगे.* यदि क्रियार्थक संज्ञा द्वारा व्यक्त व्यापार को प्रासंगिक कर्ता बनाएँ, तो ये वाक्य 'शुरू हो' से बनेंगे और वास्तविक या तार्किक कर्ता संबंधकारक में आएगा. *लोगों का आना शुरू हुआ.* उल्लेखनीय है कि 'लग' से व्यक्त सभी व्यापार हमेशा 'शुरू हो' से नहीं बनते. *?बारिश (का) होना शुरू हुआ. *उसका सोना शुरू हुआ.* दि०हि० में लगभग सभी व्यापार 'शुरू हो' से व्यक्त होते हैं. यहाँ वास्तविक कर्ता प्रासंगिक कर्ता भी है. क्रिया की अन्विति कर्ता के साथ होती है और क्रियार्थक संज्ञा भी क्रिया के अंश की तरह कर्ता के साथ अन्वित होती है. मानक हिंदी में यह रचना नहीं है. *लोग आने शुरू हो गये. वह रोना शुरू हो गया. वह लड़की दौड़नी शुरू हो गयी. बारिश होनी शुरू हो गयी. हवा चलनी शुरू हो गयी.* उल्लेखनीय है कि मानक हिंदी में 'चलनी, दौड़नी' आदि अकर्मक क्रिया के रूप ही नहीं मिलते. मैंने ऊपर उल्लेख किया है कि दि०हि० में रंजक क्रिया का रूप 'लग पड़' मिलता है. ऊपर के सारे वाक्य इस क्रिया से भी बनते हैं. इस स्थिति में क्रियार्थक संज्ञा हमेशा पुल्लिग तिर्यक रूप में आती है और 'पड़' की अन्विति कर्ता से होती है. *बारिश होने लग पड़ी, वह दौड़ने/रोने/सोने लग पड़ा. हवा चलने लग पड़ी.* 'शुरू हो' के मुकाबले 'लग पड़' का प्रयोग बहुत सीमित है. सकर्मक वाक्यों की रचना ऊपर के (इ) के वाक्यों के समान होती है जहाँ कर्म और क्रियार्थक संज्ञा अन्वित होते हैं, जबकि मानक हिंदी में यह अन्विति नहीं होती. *उसने सिगरेट पीनी शुरू कर दी* (मा०हि० में *···पीना शुरू कर दिया*). *तूने फिर बकवास करनी शुरू कर दी. लोगों ने पत्थर फेंकने शुरू कर दिये* (~*?लोग पत्थर फेंकने शुरू हो गये*). 'शुरू' का उलटा 'बंद' है. आगे के वाक्यों की तुलना कीजिए–

मानक हिंदी	**दिल्ली की हिंदी**
*हवा बंद हो गयी (*हवा चलना···)*	*हवा/हवा चलनी बंद हो गयी*
मैंने चाय पीना छोड़ दिया/बंद कर दिया	*मैंने चाय पीनी छोड़ दी/बंद कर दी*
उसका रोना बंद हो गया	*?वह रोना बंद हो गया*
लोगों का लड़ना बंद हो गया	*?लोग लड़ने बंद हो गये*
	लोगों की लड़ाई/का लड़ना बंद हो गया

संभवतः दि०हि० में चेतन (मानुष) कर्ताओं के साथ 'बंद हो' नहीं आता. कुछ अन्य उदाहरण देखें–*उसने कमीज़ पहननी शुरू कर दी* (अ०प्री०, 72 : 58). *उसने फिर नीट रम पीनी शुरू कर दी थी* (म०, 152). *···चवन्नियाँ बचाना शुरू कर दी थीं* (म०, 174) में अन्विति का विकल्प है. *···कहानियाँ लिखनी*

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बंद कर दी (अ०प्री०, 74 : 45) में /दीं/ नहीं है. *भीड़ आनी शुरू हो गयी थी* (म०, 120). (ऊ) 'अगर' की वाक्य रचना कई जगह क्रियार्थक संज्ञा से होती है. द्रष्टव्य है कि कर्ता में संबंधकारक /का/ का प्रयोग नहीं हुआ है. *आप आने/कहने से काम हो जाएगा* (अगर आप आएँगे/कहेंगे तो · · ·). यह भी रोचक है कि शर्त वाले वाक्यों में दोनों योजक एक साथ उच्चरित होते हैं. *अगर तो बारिश हुई हम सब भीग जाएँगे.*

5. विशिष्ट शब्द : फटाफट (उच्चारण /फ़/) (जल्दी), खुंदक स्त्री० (चिढ़, रोष), फोकट (उच्चारण /फ़/) (मुफ़्त), पंजी (पाँच रुपये का नोट–मुहावरेदार अर्थ में), *तड़ी मारना* (डींग मारना, हाँकना), *इंतज़ार देखना, कबाड़ा होना/करना* (ख़राब होना/करना), *कबाड़िया* (बेकार आदमी) आदि दि०हि० के कुछ विशिष्ट शब्द एवं मुहावरेदार प्रयोग हैं.

'कहना, बताना' की जगह 'बोलना' का प्रयोग दि०हि० की ही नहीं, बल्कि कई अंचलों की विशेषता है. *साब को बोलो मैं आयी थी. आप अभी एक बात बोले थे.* लेकिन दिल्ली में सामान्य रूप से तीनों क्रियाओं का प्रयोग मिलता है और तीनों में मानक हिंदी के अनुरूप ही प्रयोगगत अंतर मिलता है. ऊपर के वाक्यों में 'बोल' का प्रयोग अन्य अंचलों की विशेषता होगी, जो दिल्ली के अहिंदी भाषियों के कारण प्रचलन में आयी होगी.

मंजु गुप्ता

हैदराबाद की हिंदी 1. हैदराबाद की भाषायी पृष्ठभूमि बहुत रोचक है. यहीं कुछ सदियों पहले दकनी हिंदी का आविर्भाव हुआ. उर्दू के प्रचलन के साथ-साथ उसका रूप बदलता रहा. पुरानी दकनी और वर्तमान है०हि० की भाषा में बहुत अंतर है. आधुनिक बोलचाल की भाषा मानक हिंदी-उर्दू के अधिक निकट है. निज़ाम के शासनकाल में उर्दू यहाँ की राजभाषा थी और शिक्षा के माध्यम की भी भाषा थी. पूरे तेलंगाना में आधुनिक दकनी बोलचाल तथा संपर्क का माध्यम थी. इस कारण है०हि० में एक ओर उर्दू से प्रभावित भाषिक विशेषताएँ हैं. दकनी द्रविड़ परिवार के क्षेत्र में पली. हैदराबाद आंध्र प्रदेश की राजधानी है, जिसकी आज राजभाषा तेलुगु है. यहाँ की जनता महानगरीय है, जिसमें तेलुगु बोलने वालों की बहुतायत है. इस कारण है०हि० में द्रविड परिवार की कई भाषिक विशेषताएँ हैं. तेलंगाना के पश्चिमी ज़िलों में तथा हैदराबाद शहर में भाषा के आधार पर प्रदेशों के पुनःसंगठन से पहले अधिक संख्या में मराठी भाषी थे. तेलुगु और मराठी पड़ोसी भाषाएँ होने के नाते उनमें कुछ सामान्य विशेषताएँ विकसित हुईं. है०हि० में तीसरी तरफ़ ये विशेषताएँ भी दिखलायी पड़ती हैं. इस तरह है०हि० की विशेषताएँ किसी ख़ास भाषा-समुदाय की विशेषताएँ नहीं, बल्कि ये शहर की सामान्य बोलचाल की भाषा में न्यूनाधिक रूप में लोगों के

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषा-कोष (repertoire) में विद्यमान हैं. यहाँ के हिंदी भाषियों में भी ये विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं. शिक्षा तथा मा०हि० के प्रचार के कारण सभी लोगों में सभी विशेषताएँ नहीं दिखायी पड़तीं. सामाजिक संदर्भों में पढ़े-लिखे लोगों में क्रोड का अंतरण देखा जा सकता है, जहाँ एक व्यक्ति औपचारिक क्षेत्रों, वर्गीय संपर्कों में मा०हि० का प्रयोग करे और अन्य दकनी बोलने वालों के साथ स्थानीय भाषा का. भाषिक पृष्ठभूमि के आधार पर हैदराबाद में हिंदी बोलने वाले व्यक्तियों के दो सुनिश्चित वर्ग हो सकते हैं–(अ) मातृभाषा के रूप में हिंदी-उर्दू का प्रयोग करने वाले स्थायी निवासी और (आ) संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करने वाले द्विभाषी समुदाय के लोग, जिनमें प्रमुख रूप से तेलुगु और मराठी भाषी आते हैं. मातृभाषा भाषी वर्ग में स्थानीय भाषा से मा०हि० तक का एक क्रम (spectrum) दिखायी पड़ता है, जबकि द्विभाषी समुदाय में स्थानीय विशेषताएँ गहराई तक हैं. आगे इन विशेषताओं को चार शीर्षकों में प्रस्तुत किया जा रहा है.

2. उच्चारण की विशेषताएँ : (1) तेलुगु भाषियों में स्पर्श महाप्राण व्यंजनों का वितरण भिन्न प्रकार से है. आम तौर पर तेलुगु भाषियों में महाप्राण व्यंजनों का व्यवहार अर्जित (learned behaviour) होता है. यत्न से शब्दादि महाप्राण सुरक्षित रह जाते हैं, शब्दांत में प्राणत्व का अभाव है (अ-लोप की स्थिति में) और शब्द मध्य में स्वनिक परिवेश के अनुरूप इसका न्यूनाधिक प्रयोग है. /न्ह म्ह ल्ह/ का उच्चारण सभी में नहीं मिलता. *उनों* (<उन्हों–वे ?), *तुमारे* (तुम्हारे) आदि शब्द द्रष्टव्य हैं. (2) स्वर /ऐ औ/ का उच्चारण तेलुगु मराठी भाषियों में क्रमशः /अइ अउ/ के समान है. उर्दू-हिंदी भाषियों में हिंदी के अनुरूप उच्चारण मिलता है. (3) तेलुगु भाषी प्रायः शब्दांत अनुनासिकता को छोड़ देते हैं और शब्द मध्य में इसकी जगह नासिक्य व्यंजन का उच्चारण करते हैं. उर्दू-हिंदी भाषियों में अनुनासिकता का स्वनिमिक महत्त्व है. (4) तेलुगु-मराठी भाषी ⟨ऋ⟩ का उच्चारण /रु/ के समान करते हैं. दकनी वाली सामग्री में ⟨ऋ⟩ का कोई शब्द नहीं मिला. (5) है०हि० में /ड़ ढ़/ का उच्चारण क्रमशः /ड ढ/ है–अन्य स्वनिमिक अंतरों के साथ. (6) /ह/ का वितरण–है०हि०, ख़ास कर दकनी में शब्दांत तथा शब्द मध्य में /ह/ का लोप दिखायी पड़ता है. वाक्यों में हकारांत शब्दों में भी /ह/ का लोप दिखायी पड़ता है और प्रोक्ति (utterance) एक उच्चारण खंड के रूप में आती है. शब्द हैं–*नइं* (नहीं), *कते* (कहते), *पिनाना* (पहनाना), *पिचानत* (पहचानत–जान-पहचान), *बेन*~*बेहॅन*, *बोत*~*बोहॅत*, *रेना*~*रेहॅना*. प्रोक्तियाँ हैं *आतूँ* (आता हूँ). *कर रा* (कर रहा है), *बोल रें*/*रयँ* (बोल/कह रहे हैं/हो), *कर रई* (कर रही है), शिक्षित वर्ग की भाषा में /ह/ का पुनः स्थापन देखा जा सकता है. (7) /क़/ का उच्चारण दक़नी में /ख़/ होता है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ख़सम (क़सम), *ख़रीब* (क़रीब), *मुख़ाम* (मुक़ाम), *ख़ासिम* (क़ासिम), *रख़म* (रक़म). दकनी में /ज़ फ़/ सुरक्षित हैं. तेलुगु-मराठी भाषियों में उन भाषाओं की स्वनिमिक व्यवस्था के अनुसार शब्द में कई स्थानों में /च ज/ का उच्चारण /त्स द्ज़/ जैसा होता है. इस तरह /आज/ का उच्चारण /आज़/ के अधिक निकट है. **फ** के संदर्भ में चर्चा की गयी है कि मा०हि० में कई जगह इसका उच्चारण /फ़/ हो जाता है. है०हि० में भी यह प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है.

3. रूपरचना की विशेषताएँ : (1) वचन–आकारांत पुल्लिग शब्द तथा ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द मा०हि० के अनुरूप रूपसिद्ध होते हैं. सभी अकारांत शब्द बहुवचन में /आँ/ प्रत्यय लेते हैं. *बाताँ, लोगाँ, बालाँ, किताबाँ, कागज़ाँ, औरताँ, टिकटाँ, पेनाँ, कपाँ* (cups), *मौज़ाँ* (मौज–केला), *तांबेलाँ* (तांबेल–तेलुगु–कछुआ). ऊकारांत शब्दों में भी /आँ/ प्रत्यय लगता है. *चाकुआँ, लड्डुआँ, जोरुआँ.* इस सरलीकरण के बावजूद शब्द का लिंग सुरक्षित रहता है और विशेषण संज्ञा से लिंग-वचन के लिए अन्वित होते हैं. *कित्ते लोगाँ* (कितने लोग), *मेरी बाताँ.* यद्यपि उच्च वर्ग के तथा शिक्षित वर्ग के लोगों में बहुवचन तिर्यक प्रत्यय /ओं/ का प्रयोग मिलता है, आम बोलचाल में अलग से तिर्यक रूप नहीं मिलता. लोगाँ को, फूलाँ की किताब (फूलों वाली किताब), बंबुआँ का घर (बंबुआँ–bamboos). (2) सर्वनाम–सर्वनामों में सरलीकरण है०हि० की विशेषता है. सर्वनाम के दो रूप मिलते हैं–प्रत्यक्ष तथा तिर्यक. तिर्यक रूप प्रायः संबंधकारक भी है (जो अन्विति में मा०हि० की तरह तीन रूपों–मेरा, मेरे, मेरी–में रूपसिद्ध होता है). परसर्ग तिर्यक रूप में लगते हैं.

प्रत्यक्ष	तिर्यक
मैं	मेरे
हम	हमारे
तू	तेरे
तुम	तुमारे
ये, इन; वो, उन	इस, उस
ये, इनों/इनूँ (<इन्हों ?);	
वो, उनों/उनूँ (<उन्हों ?)	इन, उन

जिस तरह मा०हि में, बोलचाल में ये, वो दोनों वचनों में प्रयुक्त होते हैं, उसी तरह है०हि० में भी है. बहुवचन तथा आदरार्थ में 'इनों, उनों' का प्रयोग अधिक है. उनों आये. उनोंच (वे ही), इनों *क्या कि बोल रे* (ये कुछ कह रहे हैं), उनों *भी हैं क्या अंदर ?* (क्या वे भी अंदर हैं ?). 'इन, उन' का प्रयोग एकवचन में भी होता है (*इन तुमकू क्या लगती/होना* 'यह तुम्हारी क्या लगती है ?', *उन बच्चा है बोल के छोड़ दिया* 'छोड़ दिया कि बच्चा है') और यह रोचक बात है

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि ये दोनों शब्द बहुवचन/आदरार्थ तिर्यक रूप भी हैं (उन कने 'उनके पास', उनकू 'उन्हें', उनका). मा०हि० की तरह *लोगाँ* (लोग) से वास्तविक बहुवचन का प्रयोग मिलता है (*हम लोगाँ, अपन लोगाँ, तुम लोगाँ, इन लोगाँ, उन लोगाँ*). सामान्य रूप से 'तुम' का ही प्रयोग होता है, 'आप' शिष्ट भाषा तक सीमित है. है०हि० में 'अपना' का प्रयोग नहीं है. *मैं मेरे घर कू जा रा. तुमारी किताब बताओ* (अपनी किताब दिखाओ). 'हम' यहाँ श्रोतारहित प्रथम पुरुष बहुवचन है 'अपन' श्रोतासहित प्रयोग. यह द्रविड़ भाषाओं की विशेषता है. इसी अर्थ में एक व्यक्ति भी अपने लिए 'अपना' का प्रयोग कर सकता है, जैसे मा०हि० में एक व्यक्ति अपने लिए 'हम' का प्रयोग करता है. देखें **अपना.** 'कौन भी' (कोई) तथा 'क्या भी' (कुछ) है०हि० की विशेषताएँ हैं. *कौन भी नईं* (कोई नहीं), *कौन भी नईं करे* (किसी ने नहीं किया), *ये कौन भी नईं खाता* (यह कोई नहीं खा सकता/खाता), *कौन सा भी ले लो* (कोई-सा/कोई एक ले लो), *क्या भी नको खाओ* (कुछ मत खाओ), *मैं क्या भी नईं करा* (मैंने कुछ नहीं किया), *क्या भी नईं कर रा मैं* (मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ), *क्या तो भी देके जाओ* (कुछ तो दे कर जाओ). (3) 'क्या कि' (कुछ) प्राय: निषेधार्थक संदर्भों में ही आता है. *कौन आये थे ? क्या कि* (नहीं मालूम). मा०हि० के तकिया कलाम 'क्या है कि' से इसकी तुलना कर सकते हैं. *वो क्या कि बोल रा* (पता नहीं कि वह क्या कह रहा है) में इस प्रच्छन्न निषेध को देख सकते हैं. इसी दृष्टि से यह 'क्या भी' से भिन्न है. आगे के वाक्य में 'क्या कि' नहीं आ सकता, भले उसमें 'नहीं' है. *क्या भी नईं कर रा मैं* (**क्या कि नईं कर रा मैं, *क्या कि कर रा मैं*) (मैं कुछ नहीं कर रहा), *क्या भी नको खाओ* (कुछ मत खाओ). (4) पूरक वाक्य की संरचनाओं के अतिरिक्त (*ये बच्चा है*) अन्य स्थानों में सहायक क्रिया 'है' का लोप होता है. उच्चारण क्रम में 'है' के लोप के कुछ उदाहरण ऊपर देखे. अन्य उदाहरण हैं *मैं चलतूँ, लाड़ाँ कर रई* (लाड़ कर रही है), *मार रा उन* (वह मार रहा है). सहायक क्रिया 'था' का प्रयोग सामान्य रूप से होता है, लेकिन क्रिया रचना के सरलीकरण के कारण वर्णन में इसका भी लोप देखा जा सकता है. बच्चे के मुँह से उदाहरणार्थ एक कहानी प्रस्तुत है—*एक चूहा गलीच फिरता. उसके दुम में काँटा चुभता. हज्जाम मामू को बुलाता. बुलाके मेरा काँटा निकालो बोलता. बस्ता लेके भाग जाता.* यहाँ वास्तव में 'है, था' के लोप का ही सवाल नहीं, बल्कि पक्ष व्यवस्था में भी सरलीकरण परिलक्षित होता है. वर्णन में प्राय: हर जगह अपूर्ण पक्ष की क्रिया देखते हैं. पूर्ण पक्ष में भी 'आया, आया है, आया था' आदि रूपों में काल का अंतर सहायक क्रिया के लोप के कारण ख़तम हो जाता है. भविष्य के संदर्भ में भी अपूर्ण पक्ष का प्रयोग (*कपड़ा लाते?* 'कपड़ा लाओगे') सरलीकरण के कारण तो है ही, अपूर्ण पक्ष के फुटकर खाते की तरह इस्तेमाल

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के कारण भी है. हमने ऊपर उल्लेख किया कि पूरक वाक्यों में 'है' आ सकता है. उल्लेखनीय है कि कई जगह इसके स्थान पर 'होता' का प्रयोग मिलता है. *ये इसकी अम्मी है न? नईं होती. उन आदमी नईं होता, बच्चा है.* (5) कई जगह अपूर्ण पक्ष की रचना के स्थान पर (बिना आवश्यकता के) निरंतरताबोधक कृदंत का प्रयोग मिलता है. 'यह काम होता है' की जगह 'काम होते रहता है' इस प्रवृत्ति का द्योतक है. ऐसे संदर्भों में कृदंत तिर्यक, अविकारी रूप में आता है और केवल 'रहता है' लिंग-वचन के लिए अन्वित होता है. *सलमाँ बाताँ करते रैंती, वो क्या कि बोलते रैंता* (न मालूम वह क्या कहता है/कहता रहता है), *याँ एइच होता रैंता* (यहाँ यही होता है). (6) 'ला लेना' है०हि० की विशेषता है. सामान्य रूप से है०हि० की रंजक क्रियाएँ मा०हि० के समान हैं. लेकिन रंजक क्रिया में पूर्वकालिक कृदंत का व्यापक प्रयोग (पकड़ लेके, कर लेके, खा लेके) यहाँ की विशेषता है. 'चला जाना' में ऊपर (5) के उदाहरणों की तरह 'चले जाना' रूप मिलता है (*वह चले गया*) और इसमें भी पूर्वकालिक कृदंत आता है (*चले जाके*). इसी तरह रंजक क्रियाओं में 'रहा' का प्रयोग भी व्यापक है. *उनों कर ले रैं* (वे कर रहे हैं). (7) क्रियाविशेषण–'यहाँ, वहाँ, कहाँ' आदि के स्थान पर प्राय: *इधर, उधर, किधर* का प्रयोग मिलता है, यद्यपि *याँ* (यहाँ), *काँ कू* (कहाँ) *जा रे* आदि प्रयोग भी मिलते हैं. गत्यर्थक क्रियाविशेषणों (*बाज़ार कू जाना, घर कू जाना*) तथा समयवाचक क्रियाविशेषणों (सवेरे कू, पाँच बजे कू) में 'को' का प्रयोग शायद द्रविड भाषाओं के प्रभाव के कारण है. *जब कू* (उस समय) विशिष्ट प्रयोग है और *सुबह में, शाम में* अधिक प्रचलित प्रयोग हैं. (8) परसर्ग : है०हि० में चार परसर्ग हैं–को/कू, से, में, पर. परसर्गीय शब्द अधिकतर मा०हि० के अनुरूप हैं. *के कने* 'के पास' का पर्याय है. *इन कने फूलाँ हैं देखो* (इनके पास फूल हैं, देखो), *मेरे कने नईं आओ. काय कू* (<काहे, 'किसलिए'), *के सरका* (<सरखा 'की तरह'), *बिगर* (बिना, बगैर), *ये/येई बास्ते* (इसलिए, इसीलिए) यहाँ के विशिष्ट प्रयोग हैं. (9) निपात–है०हि० में 'ही' के लिए 'च' का प्रयोग मिलता है, जिसका स्रोत मराठी भाषा है. इसके कई रूप-स्वनिमिक भेद हैं. ऊकारांत, ओकारांत तथा ईकारांत शब्दों में /च/ लगता है. *घर कूच जा रा* (घर ही जा रहा है), *परसोंच* (पहले ही), *नकोच* (नहीं ही), *उनोंच* (वे ही), *नईंच* (नहीं ही), *गलीच* (गली (में) ही). अकारांत (ह्रस्व) शब्दों में /ईच/ लगता है. *इधरीच, निश्चलीच* ((नवीन) निश्चल ही). आकारांत तथा एकारांत शब्दों में /इच/ लगता है. *एइच* (यही), *अच्छेइच, सुबेइच* (सुबह ही), *घर मेंइच, छोकराइच, थोड़ाइच, इत्ताइच* (इतना ही). 'ही' का रूप /ई/ कहीं अकेले आता है. *सोई* (वही). *सोइच, परसोंइच* में /इ/ (<ई 'ही') तथा /च/ का योग अधिक बल के लिए है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. व्याकरणिक विशेषताएँ : (1) है०हि० में 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता. क्रिया अकर्मक वाक्य की तरह कर्ता के साथ अन्वित होती है. *तुम फिल्म देखे क्या ? मैं हत्या नईं करा. पुलिसवाला मारा. शोभा शादी कर ली थी.* 'ने' का प्रयोग अर्जित व्यवहार है और अर्जन की स्थिति के बाद 'बोल' में भी 'ने' का प्रयोग देखा जा सकता है, *अम्मा ने बोला था.*[1] (2) है०हि० में 'चाहना' चाहिए' का प्रयोग नहीं मिलता. संज्ञा+चाहिए की रचना में 'होना' का प्रयोग होता है. *तुमारे को क्या होना? मेरे को एक साड़ी होना.* 'चाहना, चाहिए' के अन्य संदर्भों में मूल वाक्य के अर्थ के अनुसार क्रियार्थक संज्ञा वाली रचनाएँ मिलती हैं. मध्यम पुरुष के वाक्य सुझाव, अप्रत्यक्ष विधि या निषेध की तरह आते हैं, अतः कर्ता प्रत्यक्ष होता है; उत्तम पुरुष में कर्ता+को की रचना मिलती है; अन्य पुरुष में इन दोनों का संयोजन है. कुछ उदाहरण देखें–

तुम्हें जाना चाहिए	*तुम जाना*
तुम्हें नहीं जाना चाहिए	*तुम नको जाओ/तुम जाना नईं*
मुझे जाना है/मुझे जाना चाहिए/मैं जाना चाहता हूँ	*मेरे को जाना (है)*
क्या तुम्हें जाना है/क्या तुम जाना चाहते हो	*तुमकू भी जाना (है) क्या ?*

'मैं एक कमीज़ चाहता हूँ' की जगह मेरे को · · · *होना* की ही रचना मिलती है. (2) है०हि० में 'मत' का प्रयोग नहीं मिलता, बल्कि 'नईं' ही निषेध में आता है. *मेरे कने नईं आओ. मिठाई नईं खा.* 'नईं' वाक्य के अंत में आ सकता है. *क्या कि बोल नईं* (कुछ मत कह). 'नको' है०हि० का विशेष प्रयोग है, जो मराठी से आया है. सामान्य रूप से किसी बच्चे को किसी कार्य के लिए संकेत से मना करने के लिए जिस तरह मा०हि० में 'नहीं गुड़िया' कहते हैं, उस तरह यहाँ 'नको गुड़िया' का प्रयोग मिलता है. 'नको' दूसरी तरफ़ 'नहीं चाहिए' के अर्थ में आता है. कुछ प्रश्नोत्तर देखें–

तुमकू मिठाई होना ?	नको
तुम खाना खाओ/तुम खाना खाते क्या ?	अबी नको

(4) संबंधसूचक सम्मिश्र वाक्य (relative sentences) : मा०हि० में जिस तरह 'जो · · · वह' से विशेषण उपवाक्य की रचना होती है, वैसी रचना का

[1]मैंने इससे मिलती प्रवृत्ति हिंदी भाषियों में भी देखी है. भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि बोलियों में 'ने' का प्रयोग नहीं होता. ये बोलियाँ बोलने वाले व्यक्ति अक्सर 'ने' छोड़ देते हैं. हाल में एक मगही भाषी सज्जन से बात कर रहा था तो अनुभव किया कि वे 'ने' के प्रयोग की दृष्टि से सचेत हैं. सब जगह उन्होंने सजगता से 'ने' का प्रयोग किया–यहाँ तक कि 'ला' के साथ भी.

–जगन्नाथन

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है०हि० में अभाव है. यहाँ अस्वतंत्र उपवाक्य वाक्यांश स्तर पर अंतर्निहित संरचना के रूप में आता है, और यहाँ 'सो' योजक शब्द है.

आपने जो बात कही थी वह · · · आप बोले सो बात · · ·

विशेषण उपवाक्य वाक्य के कर्ता, कर्म दोनों के लिए आता है. आगे के दो वाक्यों में क्रमशः कर्ता और कर्म का विशेषीकरण है. ध्यान दें कि है०हि० में ये दोनों वाक्य सतही स्तर पर समान लगते हैं. कर्म-विशेषण वाक्य प्रायः अकर्तृक होता है.

वह आदमी जो कोट पहने है · · · कोट पैने सो आदमी

यह वही फ़िल्म है जो हमने देखी है यह देखे सोई फ़िल्म है

इन अकर्तृक वाक्यों में योजक से पहले का कृदंत अविकारी होता है. *फ़ोन पर बोले सो बाताँ याद रखो* (**बोली सो बाताँ*), *इसमें रखे सो चिट्ठी* (**रखी सो चिट्ठी*). शायद इसका कारण है कि 'बोले' ('ने' के अभाव में तथा कर्ता के उल्लेख के अभाव में) अंतर्निहित क्रिया वाक्यांश है, न कि विशेषण शब्द. कुछ रोचक वाक्य देखिए–*काला कोट पैने सो है बोलके मालूम होता* (लगता है कि · · · वह है जो काला कोट पहने है). *स्टैंड रखे सो ऊपर चढ़े देखो* (? देखो कि जो स्टैंड रखा है उस पर चढ़ा हुआ है). क्रियाविशेषण उपवाक्यों की रचना योजक शब्द 'वैसा, तब, उधर' से होती है. *गन्ना खींच ले रे/रँय वैसा कर रई* (यह ऐसा कर रही है, जैसे वे गन्ना खींच रहे हों). *मैं आयी तब कौन भी नईं था* (जब मैं आयी · · ·). *लोगाँ बैठे हैं उधरीच* (जहाँ लोग बैठे हैं, वहीं~वहीं, जहाँ · · ·). (5) इतिवृत्तात्मक वाक्य (quotatives) : मा०हि० में पुनःकथन 'कि' से सूचित होता है, जबकि है०हि० में 'बोलके/करके' से या इनके अभाव में भी. हिंदी में पुनःकथन का उपवाक्य स्वतंत्र या मूल उपवाक्य के बाद 'कि' से जोड़ा जाता है, जबकि है०हि० में वह उपवाक्य के भीतर कर्म के स्थान में आता है. कुछ वाक्य देखिए–

उसने कहा था कि मैं आता हूँ वह आतूँ (बोलके) बोला

माँ ने मुझसे कहा था कि तुम जाओ अम्मा मेरे को जाओ बोली

आपसे किसने कहा कि आप जाएँ आपको कौन जाओ बोले

· · ·कहा कि कुछ मत खाओ क्या भी नको खाओ बोली

'बोलके/करके' का प्रयोग द्रविड भाषा परिवार की विशेषता का प्रभाव है. 'बोलके' इतिवृत्तात्मक शब्द ही नहीं, प्रयोजन या उद्देश्य सूचित करने के लिए भी आता है. आगे के उदाहरण देखें–*मैं छोड़ दिया बच्चा है बोलके* (मैंने इसलिए/यह सोच कर छोड़ दिया था कि बच्चा है), *मैं ज़रूरी जाना बोलके गया* (मैं इसी कारण गया था कि जाना ज़रूरी है), *अच्छा है बोलके लिया था* (यह सोच कर लिया था कि अच्छा है), *मैं ख़ाली बोलना बोलके बोला* (मैंने यों ही

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कह दिया था कि कुछ कहना है~मैंने यों ही कह दिया था). वर्णन में, ख़ास कर बच्चों के कहानी सुनाने में एक भिन्न प्रकार की इतिवृत्तात्मक रचना दिखायी पड़ती है जहाँ इतिवृत्तात्मक शब्द कते (<कहते) है. *एक राजा था कते. वो लोगाँ शाम में आ रें कहते.* यहाँ 'कहते' का प्रकार्य मा०हि० के 'ऐसा है, बात (यों) है, कहा जाता है' (ऐसा है कि एक राजा था. · · ·) के समान है. स्मरणीय है कि है०हि० में 'कहना' का प्रयोग नहीं मिलता. यहाँ यह केवल इतिवृत्तात्मक शब्द है. (6) 'कि/या नहीं' की जगह क्रिया की पुनरुक्ति देखी जा सकती है. *तुम सीता को देखे नहीं देखे?* (देखा कि नहीं?). *उनों आये नईं आये? तुम जाओगे नईं जाओगे?* (7) 'अगर करूँ/करूँगा' की रचना के स्थान पर 'ने' रहित पूर्ण पक्ष की क्रिया का प्रयोग होता है और 'अगर' लुप्त रहता है. *तुम खाना नईं खाये तो पीटूँगा. वो काम नईं करे तो मारूँगा.* बीते काल के संदर्भ में 'अगर · · जाते' की रचना भिन्न होती है. *तुम क्यूँ नईं गये. तुम जाते थे तो साब पैंसे देते थे* (तुम जाते तो साहब पैसे देते). *साब पैसे देते थे. तुम काय कू नईं गये?* (साहब पैसा दे देते. तुम क्यों नहीं गये?) (8) कृदंत : है०हि० में पूर्वकालिक कृदंत की रचना 'के' से होती है. *बोलके, करके, देखके, लाके, देख लेके, ला लेके, उतर जाके, पूछ लेके.* मा०हि० के 'बिना देखे' आदि के स्थान पर भी पूर्वकालिक कृदंत का प्रयोग होता है. *बिगर देखके, बिगर पूछके चला गया.* इसी तरह 'उन्हें यहाँ आये दस दिन हो गये' आदि वाक्यों के कृदंत के स्थान पर पूर्वकालिक कृदंत का प्रयोग मिलता है. *उनको इधर आके दस रोज़ हो गये.* मा०हि० का प्रयोग है 'आने के बाद'. **कृदंत** में चर्चा की गयी है कि 'आना' का व्यापार पूर्ण होने की स्थिति में ही 'बाद' की सार्थकता है. है०हि० के 'आये बाद, गये बाद' आदि प्रयोग पूर्ण पक्ष के प्रयोग की इस विशेषता की ओर इंगित करते हैं. (9) बहुधा प्रश्न बिना 'क्या' के बनते हैं. *मेरे को लेके जाते?* 'मुझे ले जाओगे'. *कपड़ा लाते?* 'कपड़ा लाओगे'. और 'क्या' आये तो वह अंत में आता है (*कपड़े ला लूँ क्या? छोकरा चले गया क्या? उनों भी आते क्या?* 'क्या वे भी भी आ रहे हैं'. *उनों आतुं बोले क्या?* 'क्या उन्होंने कहा था कि वे आएँगे'). अंत में 'क्या' का प्रयोग द्रविड भाषा परिवार की विशेषता है, जहाँ प्रश्नवाचक वाक्य निश्चयार्थक वाक्यों के अंत में कोई रूप जोड़ने से बनते हैं. (10) क्रियार्थक संज्ञा वाली कुछ रचनाओं में करने आदि तिर्यक रूपों का प्रयोग होता है. 'करना जानती हूँ' की जगह 'करने आता' का प्रयोग होता है और कर्ता में /को/ लगता है. *मेरे को तिरने आता* (तैरना आता है). विकल्प में 'गाने को' भी मिल सकता है. *मेरे को गाने को आता.* इसी तरह भूल जाना के साथ भी करने आदि रूप मिलते हैं. *मैं ख़त डालने भूल गया.*

5. **शब्द प्रयोग :** दकनी से जुड़ी होने के कारण है०हि० में पुरानी भाषा से

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राप्त कई शब्द आधारभूत शब्दावली में आते हैं. *मौज़* (केला), दीदे (आँखें) तथा अन्य मुहावरे दीदे *मटकाना*, दीदे *निकालना* क्रमशः अरबी और फ़ारसी के हैं. *हौला* (पागल) (<हौल, अरबी, 'डर' ?), *कल्ले* (गाल) (कल्ला, फ़ा०, 'जबड़ा' ?) द्रष्टव्य हैं. तेलुगु-मराठी के प्रभाव के कारण है०हि० में सैकड़ों शब्द प्रचलित हैं, जो मा०हि० में नहीं हैं. तेलुगु से आये शब्द हैं *तांबेल* (कछुआ), *जुट्टु* (चोटी), *चिल्लर* (रेज़गारी), *पोट्टा* (लड़का), *पोट्टी* (लड़की) (ये दोनों शब्द नर, मादा के लिए प्रयुक्त हैं और यहाँ तिरस्कारसूचक हैं), *?पातरनी* (तितली); मराठी से आये शब्द हैं *सपोटा* (चीकू), कम और ज्यादा के अर्थ में *कमती, जास्ती, मुंड* (<मोंड) (*मुंड चाकू* 'कुंद चाकू', *मुंड लड़का* 'ढीठ लड़का'), *घट्ट* (<गठ ?) (*घट्ट दाल* 'गाढ़ी दाल', *घट्ट आदमी, कलेजा घट्ट करना*), *हौ* (हाँ), *नको*. *गंगाल* (बड़ा पीतल का बर्तन) का स्रोत दोनों में से एक है. हिंदी भाषा के अपने कई शब्द है०हि० में मा०हि० से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होते हैं. 'परसों' पहले के अर्थ में आता है. 'जभी' कब का के अर्थ में आता है (*मैं जभी खाना खा लिया*). 'चुपके' यों ही, अकारण के अर्थ में प्रयुक्त होता है (*वह चुपकेइच रो रई*). *खाली* (यों ही) शायद मराठी के प्रभाव के कारण है. 'बाबू' सामान्य रूप से छोटे बच्चे, अपरिचित छोटे व्यक्ति के लिए संबोधन का शब्द है. इसी तरह छोटी लड़कियों के लिए 'अगे' संबोधन का शब्द है.

वशिनी शर्मा

हिमाचल *हिमाचल* (हिम+अचल) का अर्थ है–हिम का पहाड़, अर्थात बर्फ़ से ढका पहाड़. *हिमांचल* (हिम+अंचल) का अर्थ होगा, हिम का क्षेत्र. इस कारण से भी हिमालय पर्वतों को कोई-कोई *हिमांचल* भी कहता है. प्रयोग में *हिमाचल* ही है और भारत के एक प्रदेश का नाम *हिमाचल* प्रदेश है, 'हिमांचल प्रदेश' नहीं.

होना 1. कई वैयाकरण तथा भाषावैज्ञानिक क्रिया रूप 'है' तथा 'होना' में संरचना की दृष्टि से कोई अंतर नहीं मानते और दोनों को धातु 'हो' से निष्पन्न मानते हैं. हमारी परिभाषा के अनुसार 'है' कालसूचक सहायक क्रिया है और 'हो' व्यापार सूचित करने वाला क्रिया धातु. 'होना' से ऐसे निश्चित कार्य-व्यापार की सूचना नहीं मिलती, जैसे 'चलना, खाना, सोना' आदि से मिलती है. इस दृष्टि से 'होना' भी स्थितिसूचक क्रिया ही है. अर्थ की यह अनिश्चितता 'करना' में भी देखी जा सकती है, जिसका अपना कोई अर्थ नहीं है, बल्कि *बात करना, काम करना, मदद करना* जैसे प्रयोगों में ही 'करना' का अर्थ स्पष्ट हो पाता है. 'करना' का मिथ्यावाच्य होने के कारण 'होना' भी अनिश्चित अर्थ वहन करने वाला व्यापारसूचक क्रिया धातु है, 'है' की तरह सहायक क्रिया नहीं. निस्संदेह कुछ वाक्यों में 'है–हो' पर्याय लगते हैं. जैसे, मुझे दुख *है*–मुझे दुख *हो रहा है*, मुझे दुख *था*–मुझे दुख *हुआ*. दुख मानसिक अवस्था है, इस व्यापार को दोनों

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकार से प्रकट कर सकते हैं. लेकिन *राम वहाँ है, यहाँ ठंड है, वह घर दूर है, यह किताब अच्छी है* आदि वाक्यों में केवल स्थितिसूचक रचना ही आ सकती है. इन्हें व्यापार के रूप में नहीं दिखा सकते. *राम डाक्टर है, राम डाक्टर हो गया* के वाक्यों में स्थिति तथा व्यापार के वैपरीत्य को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है. इसी तरह *15 तारीख़ को उसकी शादी थी, 15 तारीख़ को उसकी शादी हुई, मीना के साथ उसकी शादी हुई (?थी)* के वाक्यों में भी स्पष्ट अंतर है.

2. 'होना' मिथ्यावाच्य है, 'करना' से रूपांतरित होता है. ऊपर के *राम परेशान हुआ* आदि वाक्यों में कर्ता वास्तव में अनुभवकर्ता है, अनुभव की स्थिति में पहुँचता है. मिथ्यावाच्य 'होना' कर्मप्रधान वाक्य होता है. *काम हुआ, भाषण हुआ* आदि वाक्यों में इसका प्रयोग देख सकते हैं. स्थितिसूचक 'होना' का प्रेरणार्थक रूप 'करना' (*परेशान करना, दुखी करना*) सकर्मक वाक्यों में आता है.

3. 'होना' से निष्पन्न 'होता है' स्थितिसूचक सहायक क्रिया है. (देखें **स्थिति-सूचक क्रियाएँ—है, होता है, रहता है.**) इस प्रकार्य में 'होता है' के 'हुआ' वाले रूप नहीं बनते. इसी तरह स्थितिसूचक 'है' के तथ्येतर क्रिया रूप 'होगा, हो, होता' बनते हैं, जो देखने में धातु 'हो' से निष्पन्न लगते हैं. *अगर काम हो—अगर बारिश होती हो; वह वहाँ न होता—काम न हुआ होता* के व्यतिरेक में इस अंतर को देखा जा सकता है.

हो (कर) आना 1. हिंदी में *यहाँ आ कर जाओ* का प्रयोग मिलता है, लेकिन **मैं बाज़ार जा कर आता हूँ* का नहीं. 'जा कर आना' की जगह *हो आना* का प्रयोग होता है. *"मैं बाज़ार जा रहा हूँ. पाँच मिनट में आ जाऊँगा. रुके रहना." "कोई बात नहीं. हो आओ. मैं यहीं बैठा हूँ." "गणेश तुम! दिल्ली हो आये?~ दिल्ली से लौट आये?" "हाँ, आज ही लौटा हूँ."*

2. *हो आना* 'कर' के लोप से बनी क्रिया है, इस कारण इसके साथ पुनः 'कर' नहीं लग सकता. **मैं बाज़ार हो आ कर आप से बात करूँगा.* सही प्रयोग है *मैं बाज़ार से लौट कर आप से बात करूँगा.* देखिए **रंजक क्रिया, पू० कृदंत.**

क्ष 1. इस वर्ण का पुराना रूप है—क्ष. यह रूप अब मानक लिपि में स्वीकृत नहीं है.

2. ⟨क्ष⟩ मूलतः संस्कृत वर्णमाला का सदस्य है, जो ⟨क+ष⟩ के योग से बना है. वर्तमान हिंदी में इसका उच्चारण /क्श/ है.

3. इस कथन से स्पष्ट हो सकता है कि ⟨क्ष⟩ केवल संस्कृत से आये शब्दों में प्रयुक्त होता है या ⟨क्ष⟩ वाले सभी शब्द संस्कृत के होंगे, जैसे *लक्ष्य, क्षोभ, क्षमा, तीक्ष्ण, शिक्षा* आदि. अन्य भाषाओं से आये हुए शब्दों में /क्श/ के क्रम को

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिखाने के लिए इस वर्ण का इस्तेमाल नहीं होता और उनमें ⟨क्श⟩ ही लिखा जाता है. जैसे *नक्शा, रिक्शा, डिक्शनरी, एक्शन*. उर्दू तथा अंग्रेज़ी से आये शब्दों में कहीं क्ष न लिखें.

4. चूँकि सभी संस्कृत के आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, यह अपने आप निकलता है कि ⟨क्षा⟩ अंत वाले सभी शब्द स्त्रीलिंग होते हैं. जैसे, *रक्षा, शिक्षा, दीक्षा, परीक्षा, भिक्षा, अपेक्षा, उपेक्षा, द्राक्षा, लाक्षा, प्रतीक्षा*. शायद उच्चारण-साम्य के ही कारण हिंदी के कुछ क्षेत्रों में *रिक्शा* का स्त्रीलिंग में प्रयोग होता है, जबकि यह एक विदेशी शब्द है. स्वाभाविक रूप से *रिक्शा* पुल्लिग ही होना चाहिए.

5. हिंदी में लिंग व्यवस्था पर प्रकाश डालने वाले विद्वान कई शब्दों में स्वनिक आधार पर लिंग के नियम देते हैं. ऐसे ही /ख/ अंत वाले शब्द स्त्रीलिंग शब्द माने जाते हैं. स्वन के आधार पर लिंग के पीछे वास्तविक आधार है रूपस्वनिमिक व्यवस्था तथा रूपों में हुए स्वन परिवर्तन. ⟨क्षा⟩ अंत वाले शब्द स्वन परिवर्तन के कारण ⟨ख⟩ अंत वाले बने और हमें लगता है कि /ख/ अंत वाले शब्द स्त्रीलिंग में हैं. ऐसे कुछ उदाहरण हैं–*भीख, परख* (<परीक्षा), *काँख* (<कक्ष), *लाख* (<लाक्षा), *सीख* (<शिक्षा).

5.1. हिंदी भाषा के लंबे काल में ⟨क्ष⟩ का स्वन परिवर्तन दो रूपों में हुआ– क्ष > ख (या क्ख), क्ष > छ (या च्छ). वर्तमान हिंदी में एक ही शब्द के क्ष वाले तत्सम रूप भी मिलते हैं और ख, छ वाले तद्भव रूप भी मिलते हैं. जैसे *पक्ष~पाख, लक्ष~लाख, भिक्षु~भिक्खु, परीक्षा~परख, मक्षिका~मक्खी, पक्षी~पंछी* (दोनों पु०), *लक्षण~लच्छन*.

ज्ञ 1. यह संस्कृत मूल के शब्दों में आता है. हिंदी में *यज्ञ* के अलावा 'जानना' के अर्थ में ही ज्ञ के अन्य सभी शब्द आते हैं. हिंदी में ज्ञ वाले शब्दों की संख्या बहुत सीमित है. *ज्ञान, विज्ञान, विज्ञ, प्रज्ञा, ज्ञाता, अज्ञेय, अज्ञान, ज्ञानी* इन सभी शब्दों में 'जानना' के अर्थ को देख सकते हैं.

2. ज्ञ का मूल उच्चारण /ज्ञ/ था, जो कि व्यंजन गुच्छ न हो कर नासिक्य विवर से निसृत तालव्य संघर्षी-स्पर्श स्वन था. इस तरह यह सिर्फ़ एक स्वन था, दो स्वनों का योग नहीं. हिंदी उच्चारण /ग्य/ को कई विद्वान व्यंजन क्रम मानते हैं. लेकिन यह /ग्य/ व्यंजन क्रम नहीं, बल्कि तालव्यीकृत कंठ्य व्यंजन है, जिसे आई०पी०ए० में /g^y/ कह सकते हैं. इस कथन की पुष्टि में कहा जा सकता है कि कहीं /ग्य/ के बीच में अक्षर सीमा नहीं पड़ती. शब्दों का अक्षरिक गठन देखिए–*वि/ग्यान, अ/ग्यान*. कहीं मेरे सुनने में विग्/यान् का उच्चारण नहीं

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुआ है. इसी कारण 'अज्ञेय' का उच्चारण अ/गेय जैसा होता है, क्योंकि अग्र स्वर से पहले /ग्य/ का तालव्यीकरण समाप्त हो जाता है. अन्यथा इसका उच्चारण /अग्+येय/ होता.

3. आधुनिक युग में आर्य समाज के प्रभाव के कारण, जो वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान का पक्षधर है, 〈ज्ञ〉 के संस्कारित उच्चारण को लाने का प्रयत्न किया गया. लेकिन भाषा रूपी नदी के प्रवाह को उलटा नहीं जा सकता. अतः मूल नासिक्य उच्चारण के प्रयत्न में एक नये उच्चारण का प्रवर्तन हुआ– /ज्यँ/ के रूप में. आज भी कई संस्कृत के विद्वान तथा शुद्धतावादी इसका /ज्यँ/ उच्चारण करते देखे जा सकते हैं, जो भाषा के कृत्रिम परिवर्तन के प्रयत्न का परिणाम है.

4. इस समय भारतीय भाषाओं में इसके उच्चारण में विविधता है. हिंदी, पंजाबी, बंगाली, मणिपुरी में यह /ग्य/ है, गुजराती में /ग्न्य/, मराठी में /द्न्य/, उड़िया, तेलुगु, कन्नड में /ग्न/, तमिल, मलयालम में /क्ञ/ या /न्ञ/ है.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदर्भ ग्रंथ

अमृता प्रीतम. *दिल्ली की गलियाँ*. दिल्ली : राजपाल, 1972.

———— *वह आदमी, वह औरत*. दिल्ली : राजपाल, 1974.

———— *यह कहानी नहीं है*. दिल्ली : पराग, 1976.

उप्रैतिः, मुरारी लाल. *हिंदी में प्रत्यय-विचार*. आगरा : विनोद, 1964.

काचरू, यमुना. हिंदी के कृदंत विशेषण पद. *भाषा : हिंदी भाषाविज्ञान अंक*, 1973, 190–98.

कालरा, अशोक. संभाषण के विभिन्न पक्षों का समाज भाषावैज्ञानिक अध्ययन. श्रीवास्तव तथा सहाय, 1976 में. पृ० 138–83.

कालिका प्रसाद, सहाय, राधावल्लभ तथा श्रीवास्तव, मुकुंदीलाल (सं०). *बृहत् हिंदी कोश* (तृ० सं०). वाराणसी : ज्ञानमण्डल, 1963.

कालिया, ममता. *बेघर*. दिल्ली : रचना प्रकाशन, 1976.

केंद्रीय हिंदी निदेशालय. *परिवर्धित देवनागरी*. दिल्ली, 1967.

गुरु, कामताप्रसाद. *हिंदी व्याकरण* (1957 सं०). वाराणसी : नागरीप्रचारिणी सभा, 1920.

गोस्वामी, कृष्णकुमार. *शैक्षिक व्याकरण और व्यावहारिक हिंदी*. दिल्ली : आलेख प्रकाशन, 1981.

जगन्नाथन, वी० रा०. हिंदी का आक्षरिक गठन तथा संधि विस्तार. *भाषा*, 1966, **5–4**, 187–92.

———— *हिंदी और तमिल की समानस्रोतीय-भिन्नार्थी शब्दावली*. आगरा : केंद्रीय हिंदी संस्थान, 1969.

जैन, राजमल. *विरामचिह्न*. दिल्ली : ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978.

तिवारी, भोला नाथ. *हिंदी भाषा*. इलाहाबाद : किताब महल, 1966.

दीमशित्स, ज० म०. *हिंदी व्याकरण की रूपरेखा*. दिल्ली : राजकमल, 1966.

दीक्षित, जगदंबा प्रसाद. *मुरदा-घर*. दिल्ली : राधाकृष्ण, 1974.

द्विवेदी, देवीशंकर. *भाषा और भाषिकी*. (1974 सं०) कुरुक्षेत्र : प्रशांत प्रकाशन, 1968.

नारंग, वैश्ना. नाते-रिश्ते की आधारभूत शब्दावली. श्रीवास्तव तथा सहाय, 1976 में. पृ० 189–202.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वहुगुणा, ललित मोहन. हिंदी के संबोधन की आधारभूत शब्दावली. श्रीवास्तव तथा सहाय, 1976 में. पृ० 220–28.

भसीन, शारदा. रंग की आधारभूत शब्दावली. श्रीवास्तव तथा सहाय, 1976 में. पृ० 203–19.

भाटिया, कैलाशचंद्र. *हिंदी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का भाषा-तात्त्विक अध्ययन*. इलाहाबाद : हिंदुस्तानी ऐकेडेमी, 1967.

मटियानी, शैलेश. *कबूतरखाना*. दिल्ली : आत्माराम, 1960.

मिश्र, विद्यानिवास. *हिंदी की शब्द संपदा*. दिल्ली : राजकमल, 1970.

मोहन राकेश. *पहचान*. दिल्ली : राजपाल, 1975.

राजभाषा आयोग (1956). तिवारी, भोलानाथ तथा चतुर्वेदी, महेंद्र. *पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ*. दिल्ली : शब्दकार, 1978 से उद्धृत.

लेप्रोवस्की, वी० पी०. हिंदी में संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग (अनूदित). *हिंदी अनुशीलन : धीरेंद्र वर्मा विशेषांक*, 1960, 155–65.

वर्मा, धीरेंद्र. *हिंदी भाषा का इतिहास*. इलाहाबाद : हिंदुस्तानी एकेडेमी, 1961.

——— *ग्रामीण हिंदी*. इलाहाबाद : हिंदी भवन, 1971.

वर्मा, मदनलाल. *समाज बोलता है*. आगरा : प्रदीप प्रकाशन, 1974.

वर्मा, रामचंद्र. *संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर* (7वाँ सं०, 1971). वाराणसी : नागरी-प्रचारिणी सभा, 1933.

——— *अच्छी हिंदी* (16वाँ सं०, 1972). इलाहाबाद : लोकभारती, 1944.

वाजपेयी, किशोरीदास. *हिंदी शब्दानुशासन*. वाराणसी : नागरीप्रचारिणी सभा, 1957.

——— *राष्ट्रभाषा का व्याकरण*. वर्धा : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, 1958.

——— *अच्छी हिंदी*. मेरठ : मीनाक्षी प्रकाशन, 1968.

शर्मा, नानकचंद. *हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास*. होशियारपुर : विश्वेश्वरानंद वैदिक संस्थान, 1968.

शिवनाथ. *हिंदी कारकों का विकास* (सं० 2). वाराणसी : नागरीप्रचारिणी सभा, 1971.

श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ. काल और पक्ष. *भाषा : हिंदी भाषाविज्ञान अंक*, 1973, 199–210.

———, तथा सहाय, रमानाथ. *हिंदी का सामाजिक संदर्भ*. आगरा : केंद्रीय हिंदी संस्थान, 1976.

सक्सेना, बाबूराम. हिंदी में लिंग-भेद के द्वारा सूक्ष्म अर्थ-भेद का द्योतन. *हिंदी अनुशीलन : धीरेंद्र वर्मा विशेषांक*, 1960, 151–54.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सतीश, उमाशंकर. हिंदी में टैबू प्रयोग. श्रीवास्तव तथा सहाय, 1976 में. पृ० 184–88.

सहाय, चतुर्भुज. *हिंदी वाक्य संरचना*. वाराणसी, 1978.

सिंह, काशीनाथ. *हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ*. इलाहाबाद : रचना प्रकाशन, 1976.

ABBI, ANVITA. *Semantic grammar of Hindi: A study in reduplication.* Delhi: Bahri Publ., 1980.

BAHL, K. C. *A reference grammar of Hindi*. Chicago: University of Chicago, 1967.

——— *Studies in the semantic structure of Hindi*. Delhi: Motilal Banarasidass, 1974.

BHATIA, K. C. Consonant sequences in standard Hindi. *Ind. Ling.*, 1964, **25**, 206–12.

BHATIA, T. K. On the scope of negation in Hindi. In KACHRU, B. K. (ed.). *Studies in the linguistic sciences* (*working papers*) Vol 3–2. Urbana, Department of linguistics, University of Illinois, 1973. Pp 1–27.

BROWN, R., and A. GILMAN. The pronouns of power and solidarity. In GIGLIOLI. P. P. (ed.). *Language and social context.* London : Penguin, 1972. Pp 252–82.

BURTON-PAGE, J. G. Compound and conjunct verbs in Hindi. *BSOAS*, 1957, XIX–3, 469–78.

CHAFE, W. A. Givenness, contrastiveness, definiteness, subjects, topics and point of view. In LI, C. N., 1976. Pp 25–56.

CSTT. *Glossary of designational terms*. Delhi: Ministry of education, Government of India, 1964.

DAVE, RADHEKANT. A format analysis of the clear, nasalised and murmured vowels in Gujarati. *Ind. Ling.*, 1967, **28**, 1–30.

FOWLER, H. W., and F. G. FOWLER. *The King's English* (1973 ed.). London: OUP, 1906.

GUPTA, B. B. The problem of gender as a concord category in Hindi. *Ind. Ling.*, 1965, **26**, 49–65.

HOOK, P. E. *The compound verb in Hindi.* Ann Arbor, Mich.: Center for south and south-east Asian studies, University of Michigan, 1974.

——— The distribution of the function of the compound verbs in New Indo-Aryan. Hyderabad. Presented at II ICSALL, 1980.

JAGANNATHAN, V. R. Subjunctive in Hindi. In *Proceedings of the second all-India conference of linguists*. Poona: Linguistic society of India. 1972. Pp 110–18.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

JAIN, D. The semantic basis of some Hindi imperatives. *Ind. Ling.*, 1975, **36-2.** 91–103.

JESPERSON, O. *Language: Its nature, development and origin* (1968 ed.). London: George, Allen and Unwin, 1922.

KACHRU, Y. *An introduction to Hindi syntax*. Urbana: Department of linguistics, University of Illinois, 1966.

——— The syntax of Dakkhini: A study in language variation and language change. Hyderabad. Presented at II ICSALL, 1980.

KEENAN, E. L. Towards a universal definition of subject. In LI, C. N., 1976. Pp 303–34.

KELKAR, A. R. *Studies in Hindi-Urdu I.* Poona: Deccan College, 1966.

KELLOG, S. H. *Grammar of Hindi language* (1938 ed.). London: Kegan Paul, 1875.

KLAIMAN, M. H. On post positioning and related phenomena in Hindi. *'Gaveshna'*, 1974, **23**, 51–72.

——— On the status of subjecthood hierarchy in Hindi. *Ind. J. Drav. Ling.*, 1979, VIII–1, 17–31.

LAKSHMIBAI, B. *A case grammar of Hindi.* Agra: Central Institute of Hindi, 1973. (Originally, Cornell University, 1971. Ph.D. dissertation).

LI, C. N. (ed.). *Subject and topic*. New York: Academic Press, 1976.

MALLIK, B. P. The underworld argot. *Ind. J. Ling.*, 1974, I, 57–77 and 151–68.

McGREGOR, R. S. *Outline of Hindi grammar*. London: OUP, 1972.

MEHROTRA, R. C. Hindi syllabic structure. *Ind. Ling., Turner Jubilee Volume* II, 1959, 231–37.

——— Hindi phonemes, *Ind. Ling.*, 1964, **25**, 234–46.

MEHROTRA, R. R. Modes of greeting in Hindi: A sociolinguistic statement. In SINGH, K. S. (ed.), *Readings in Hindi-Urdu Linguistics.* Delhi: National, 1978.

MISRA, K. H. *Terms of address and second person pronominal usage in Hindi: A sociolinguistic study*. Delhi: Bahri Publ., 1977.

NARANG, G. C., and D. A. BECKER. Aspiration and nasalisation in the generative phonology of Hindi-Urdu. *Lg*, 1971, **47**, 646–67.

NIDA, E. *Morphology*. Michigan: University of Michigan Publication in Linguistics 2, 1945.

OHALA, MANJARI. The schwa-deletion rule in Hindi. Agra: Fourth all-India Conference of Linguistics, 1973. (A revised version

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

titled The treatment of phonological variation: An example from Hindi. *Lingua*, 1977, **42**, 161–76).

PARTRIDGE, E. *Usage and abusage* (1957 ed.). London: Penguin, 1947.

RIDOUT, R., and C. WITTING. *The facts of English*. London: Ginn & Co, 1964.

ROBERTS, PAUL. *Understanding grammar*. New York: Harper & Row, 1954.

SAHAI, R., and V. Narain. The structure of nounphrase in Hindi. *Ind. Ling.*, 1964, **25**, 111–18.

SHAPIRO, M. C. The analysis of Hindi morphologically related verb sets. *Ind. Ling.*, 1976, **37–1**, 1–44.

SHARMA, A. *A basic grammar of Hindi* (1972 ed.). Delhi: Central Hindi Directorate, 1958.

SINHA, A. K. The notion of subject and agent in Hindi. In VERMA, M. K. (ed.). *The notion of subject in South Asian languages*. Madison, University of Wisconsin, 1977.

SRIVASTAVA, R. N. Review of studies in Hindi-Urdu I by KELKAR, A. R., *Lg*, 1969, **45**.

SUBBA RAO, K. V. *Noun phrase complementation in Hindi*. Urbana: University of Illinois, 1973. Ph.D. dissertation.

VALE, R. N. *Verbal Composition in Indo-Aryan*. Poona: Deccan College, 1948.

VAN OLPHEN, H. H. *The structure of Hindi verb phrase*. Austin, Texas: University of Texas, 1970. Ph.D. dissertation.

——— Functional and non-functional conjunct verbs in Hindi. *Ind. Ling.*, 1973. **34–4**, 237–50.

VERMA, M. K. The particles 'hii' and 'bhii' in Hindi. In *Studies in Hindi Linguistics*. Delhi: American Institute of Indian studies, 1968.

——— *The structure of the nounphrase in English and Hindi*. Delhi: Motilal Banarasidass, 1971.

VERMA, S. K. The semantics of 'Caahiye'. In Proceedings of the second all-India Conference of Linguists. Poona: Linguistic Society of India, 1974, 75–83 (Also a revised version in *Foun. Lang.*, 1974, **12**, 127–36.)

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुक्रमणिका

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुद्रण दोष

पृष्ठ	पंक्ति	सही रूप	छपा रूप
7	12	दो अक्षर	अक्षर
	22	/मे+यर/	⟨मे+यर⟩
	24	ब्वाइ	ब्वाॅइ
22	33	*गधे	गधे
23	9	मैंने छींका	मैं छींका
78	12	कौन	कहाँ
261	17	मूँगा	मूँग
271	10	जा आओ	आ जाओ
273	34	अघोष व्यंजनों से	व्यंजनों से
291	30	अक → इका	अ → इआ
299	7	गुजराती तथा मराठी	गुजराती, मराठी तथा सिंधी

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

This handbook of modern Hindi usage comprises an authoritative and informative set of rules of grammar and usage (on such topics as word usage, rules of syntactic and morphological construction, explanation of phonemic and graphological features and new dimensions of language use). All the entries have been alphabetically arranged for easy reference.

Dr V. R. Jagannathan is the author of *Hindi ki Adharbhut Shabdavali* (C.I.H., 1966), a pioneering attempt at compiling a basic Hindi vocabulary; *Hindi aur Tamil ki Samansrotiya-Bhinnarthi Shabdavali* (1969), a comparative study of Hindi and Tamil vocabulary; *Spoken Hindi: A Microwave Approach* (Bahri, 1973), an important contribution in the field of language teaching; and the first two parts of *Gahan Hindi Shikshana* (OUP, 1973 and 1976), an intensive Hindi course prepared by the Central Institute of Hindi. He has edited all the four parts of this series.

Dr Jagannathan is a Professor in the Central Institute of Hindi and currently heads its Delhi centre.

CC-O. Dr. Ramdev Tripathi Collection at Sarai(CSDS). Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SBN 19 561184 5